श्री धर्मसेन-गणि-महत्तर विरचित

प्राकृत-भाषाबद्ध

वसुदेवहिंडी-मध्यम-खण्ड

(भाग-२)



संपादक

डॉ. रमणीक शाह

प्राकृत ग्रंथ परिषद् ग्रन्थाङ्क : ४४

श्री धर्मसेन-गणि-महत्तर विरचित

प्राकृत-भाषाबद्ध

वसुदेवहिंडी-मध्यम-खण्ड

(भाग-२)

संपादक

डॉ. रमणीक शाह

निवृत्त अध्यक्ष, प्राकृत-पालि विभाग,

भाषा-साहित्य भवन, गुजरात युनिवर्सिटी

प्रकाशक :

प्राकृत ग्रंथ परिषद्

अहमदाबाद

विक्रम संवत २०७१ ईस्वीसन-२०१५

प्रकाशक :
कान्तिभाई बी. शाह
मानद् मंत्री, प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी,
आ.श्री.विजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर,
१२, भगतबाग सोसायटी, नया शारदामन्दिर रोड,
पालडी, अहमदाबाद-३८० ००७.

© मयंक आर. शाह

आवृत्ति : १

प्रकाशन वर्ष : ई.स.२०१५

मूल्य : रू. ५००=००

कम्प्यूटर अक्षरांकन :
मयंक शाह
४४/४५१, ग्रीनपार्क एपार्टमेन्ट,
सोला हाउसींग, नारणपुरा,
अहमदाबाद-३८००६३.

मुद्रक :
देवल ऑफसेट
१२, शायोना एस्टेट, दूधेश्वर रोड,
शाहीबाग, अहमदाबाद-३८०००४.

अर्पण

आदरणीय स्व. गुरुवर्य डॉ. हरिवल्लभ भायाणी को

अनुक्रमणिका

१.	प्रस्तावना	पृ. १–१६
२.	वसुदेवहिंडी – मज्झिम–खंडो	पृ.१–४११
	भाग–२ : परिच्छेद–१९–३६	
	परि–१९ तारावदी–लंभो	१–२९
	परि–२० अच्छरा–लंभो	३०–४३
	परि–२१ चंदलेहा–लंभो	४४–६०
	परि–२२ ससिप्पभा–लंभो	६१–८०
	परि–२३ लीलावदी–लंभो	८१–८९
	परि–२४ गोरीदत्ता–लंभो	९०–१२४
	परि–२५ पभंजणवेगा–लंभो	१२५–१३५
	परि–२६ चउकन्ना–लंभो	१३६–१३९
	परि–२७ पंचकन्ना–लंभो	१४०–१७८
	परि–२८ उव्वसी–लंभो	१७९–१९५
	परि–२९ चतुकन्ना–लंभो	१९६–२२३
	परि–३० मयूरसेणा–लंभो	२२४–२२८
	परि–३१ ससिलेहा–लंभो	२२९–२८४
	परि–३२ रयणवदी–लंभो	२८५–३०१
	परि–३३ मुत्तावली–लंभो	३०२–३७२
	परि–३४ विमलप्पभा–लंभो	३७३–३८५
	परि–३५ अंतिम परिच्छेओ	३८६–४०४
	परि–३६ वसुदेवहिंडी–संगहणी	४०५–४११

*

प्रकाशकीय

'वसुदेवहिंडी' नाम संस्कृत-प्राकृत भाषा-साहित्य के विद्वानो को परिचित है । 'वसुदेवहिंडी' गुणाढ्य द्वारा विरचित पैशाची भाषा की लुप्त महाकथा 'बृहत्कथा' का महाराष्ट्री प्राकृत भाषाबद्ध जैन रूपान्तर है । अनुमानत: ईसवी चौथी शताब्दी में संघदास गणि नामक जैन आचार्यने उसकी रचना की थी । उसमें कथानायक वसुदेव के परिभ्रमण का वृत्तांत है । परिभ्रमण दरमियान वसुदेव ने २९ कन्याओं का पाणिग्रहण किया था । इसी कथा को आगे बढाते हुए धर्मसेन गणि नामक आचार्य ने प्राय: ईसवी सातवीं शताब्दी में 'वसुदेवहिंडी-मध्यम खंड' की रचना की थी ।

मध्यम खंड के ३६ परिच्छेद रूप (१९००० ग्रंथाग्र परिमाण) प्रकरणो में से १८ परिच्छेद (६६०० ग्रंथाग्र परिमाण) रूप पूर्वार्ध का स्व.डॉ.हरिवल्लभ भायाणी के साथ डॉ. रमणीकभाई शाहने संपादन किया था, शेष १८ परिच्छेद (११,७०० ग्रंथाग्र परिमाण) रूप उत्तरार्ध बाकी था । उसी उत्तरार्ध का संशोधन-संपादन प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी के विद्यमान अध्यक्ष डॉ.रमणीकभाई शाह ने श्रमपूर्वक किया है, जो प्रकाशित करते हुए हम आनंद अनुभव करते हैं । आशा है संस्कृत-प्राकृत भाषा-साहित्य एवं प्राचीन भारतीय कथा साहित्य के प्रेमी इससे लाभान्वित होंगे ।

इस ग्रंथ के प्रकाशन-खर्च की संपूर्ण जिम्मेदारी श्री हळवद जैन संघ ने निभाई है, एतदर्थ हम ट्रस्टीगण प्रति आभार व्यक्त करते हैं । ट्रस्टीओ को इस हेतु प्रेरित करने के लिए परम पूज्य आचार्य श्री नरचन्द्रसूरिजी म.सा. और उनके अन्तेवासी परम पूज्य श्री धर्मतिलक विजयजी गणि के हम ऋणी रहेंगे ।

परम पूज्य आचार्यश्री शीलचन्द्रसूरिजी म.सा. के मार्गदर्शन का लाभ हमें सदा मिलता रहा है - उसके लिए प्रणामपूर्वक आभार ।

अहमदाबाद
दिनांक : १५-६-२०१५.

कान्तिभाई बी. शाह
मानद् मंत्री

संपादकीय

श्री धर्मसेन गणि महत्तर विरचित महाराष्ट्री प्राकृत भाषाबद्ध वसुदेवहिंडी-मध्यम खण्ड का पूर्वार्ध ई.स.१९७६ में लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित किया गया था । उसका संपादन-संशोधन डॉ.हरिवल्लभ भायाणीजी के साथ मैंने किया था । उस संपादन हमने पांच पाण्डुलिपियों के आधार से किया था । उन पाण्डुलिपियों में एक ही महत्त्वपूर्ण और प्राचीन तालपत्रीय पाण्डुलिपि थी - जो खंभात (गुजरात) के शान्तिनाथ हस्तप्रत भण्डार की थी । वह भी अत्यंत अशुद्ध थी । फिर भी उसके आधार से हमने कई अशुद्धियों का निवारण किया था । उस हस्तप्रत में मध्यम खण्ड के कुल ३६ लंभको में से १८ लंभक तक का पाठ ही उपलब्ध था । पूर्वार्ध (६६०० ग्रंथाग्र) से दुगुना (११७०० ग्रंथाग्र परिमाण) शेष १८ लंभकों का संशोधन-संपादन अत्यंत अशुद्ध कागजी हस्तप्रतों के आधार से करना अति दुरुह था इसलिए हमनें स्थगित कर दिया था ।

तालपत्रीय प्रति के उत्तरार्ध का अंश प्राप्त होने की आशा फलित न होने पर कई वर्षों के बाद श्री भायाणी साहब ने मुझे कागजी प्रतों पर से उत्तरार्ध का संशोधन-संपादन करके प्रकाशित करने के लिए आग्रह किया । परिणाम रूप मैंने कागजी हस्तप्रतों पर से प्रस्तुत पाठ संपादित किया है ।

गुणाढ्य की पैशाची भाषामय वड्ढकहा (बृहत्कथा) का सबसे प्राचीन रूपान्तर होने के कारण, महाराष्ट्री प्राकृत भाषा की सबसे प्राचीन उपलब्ध गद्य रचना होने के कारण, प्राचीन भारतीय संस्कृति के अध्ययन की विपुल सामग्री से भरपुर होने के कारण एवं विषयवस्तु की दृष्टि से जैन पुराण परंपरा का प्रथम ग्रंथ होने के कारण वसुदेवहिंडी का महत्त्व स्वयं स्पष्ट है । इस तरह वसुदेवहिंडी के इस उत्तरार्ध का प्रकाशन कइ कारणों से आवश्यक था । अत: उपलब्ध सामग्री की सहाय से शक्य संशोधन करके यह भाग प्रकाशित किया जा रहा है ।

समग्र मध्यम खंड की विस्तृत प्रस्तावना और शब्दकोश स्वतंत्र ग्रंथरूप से प्रकाशित होगा ।

आज परमपूज्य स्व. आगमप्रभाकर मुनिवर्य पुण्यविजयजी को हृदयपूर्वक स्मरणांजलि देते हुए हर्ष का अनुभव करता हूँ जिन की कृपा से वसुदेवहिंडी मध्यम खंड जैसे ग्रंथ का संपादन हो सका । मेरे गुरु एवं पूर्वार्ध के सहसंपादक आदरणीय स्व. भायाणी साहब को इस उत्तरार्ध का अर्पण करते हुए मैं अपूर्व आनंद एवं कृतज्ञता का अनुभव करता हूँ – उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन से ही मैं यह कार्य संपन्न कर पाया हूँ ।

परमपूज्य आचार्य श्री शीलचन्द्रसूरिजी का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनके स्नेह और प्रेरणा से मैं यह संपादन कार्य पूर्ण करने के लिए उद्यत हुआ और जिन्होंने प्रयत्न करके उपयोगी हस्तप्रत-सामग्री उपलब्ध कराई ।

पाटण की दो महत्त्वपूर्ण प्राचीन हस्तप्रतों की झेरोक्ष नकल देने के लिए श्री कैलाशसागरसूरि ज्ञानभंडार, कोबा के प्रति भी यहाँ आभार व्यक्त करता हूँ ।

अहमदाबाद
दिनांक : १५-६-२०१५

रमणीक शाह
संपादक

हस्तप्रत-परिचय एवं संपादन-पद्धति

प्रस्तुत संपादन में निम्न ६ हस्तप्रतों का आधार लिया गया है -

(१) **पु.** - परम पूज्य स्व. आगम प्रभाकर मुनिवर्य श्री पुण्यविजयजी द्वारा प्राप्त ३०३ फूलस्केप पत्रों में लिपिबद्ध हस्तप्रत । मुनिश्री के प्रगुरु पूज्यपाद प्रवर्त्तक कान्तिविजयजी अथवा गुरु पूज्य मुनि श्री चतुरविजयजीने कोई राजस्थानी लहिये के पास यह प्रत लीखवाई हो ऐसा अनुमान किया जा सकता है ।

प्रति के आदि-अन्त निम्न हैं -

आदि - ।।६००।। मया भणिया जइ पुण तुब्भे अजाणमाणा.....

अन्त - (पृ. ३००-३०३)

.....अहमवि रणा(ण्णा) दूर(इ)ज्जमाणो पियासहितो महापुरे सुहं अभिर[मा]मि इति ।।छ।। श्री वसुदेवहिंडीप(ए) मज्झिं (ज्झि)म कंडं सम्म(म)त्तं ।।छ।। सेसं पुरा[ए] हिंडी[ए] दट्ठव्वं । णमो भावसिद्धाण(णं) णसो(मो) वसुदेवताए । वसुदेवभारियाओ ।। तं जहा । साम.....बालचंद्रा य ।।छ।। एवं वसुदेवभारियाए सत्तं(तं) समत्तं ।। समु(म)त्ता य वसुदेवहिंडी संग[हणी] । सं(स)मत्तं वसुदेवहिंडीए मज्झिम खंडे(डं) ।।छ।।श्री।।छ।।

(२) **की.** - ला.द. भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अहमदाबाद के हस्तप्रत संग्रह की क्रमांक १०५०३ की कागजी प्रत । लेखन-संवत् १६०८ (ई.स.१५५१) । १०.८" x ४.५" (२७.५ x ११ से.मी.) माप के २४४ पत्र ।

इस प्रत में पूर्वार्ध के ५ से १८ तक के लंभक हैं और उत्तरार्ध संपूर्ण है ।

आदि - ।।६०।। अह य समतिक्कंते सुहेणं तम्मि.....

पत्र ८०/२ पर पूर्वार्ध-समाप्ति सूचन इस तरह है -

अणाभोगकए णत्थि दोसो ।।छ।।छ।। मया भणिया....

अंत इस तरह है -

।।छ।। एवं वसुदेवभारियाए सतं समत्तं ।।छ।। समत्ता य वसुदेवहिंडी संगहणी समत्तं व(च) वसुदेवहिंडीए मज्झिम कंडं ।। श्लोकाग्रेण गण्यमानं ससंग्रहणीकं एकोनविंशति सहस्राणि ।।छ।।छ।। ग्रंथाग्रं १९००० ।।छ।। संवत १६०८ वर्षे श्रावण वदि भोमे ******* (यहाँ पर कतिपय अक्षर दबाकर बाद में अलग हस्ताक्षरों में निम्न सूचन लिखा गया है -)

श्रीउदयरत्नसूरि तत्पट्टि श्री सौभाग्यसुंदरसूरिणां(णा) लिष्यापिता ।।छ।। श्री शुभं भवतु ।। श्री श्री ।।

(३) **पा** - यह फोटोस्टेट नकल है, ९'' x १०।।'' साईझ की २४७ फोटो प्लेट में ४९४ फोटोपत्र हैं । यह फोटोस्टेट नकल ला.द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अहमदाबाद के हस्तप्रत-संग्रह में है, जिसका रजि. नं.३३७०४ है । हेमचन्द्राचार्य ज्ञानमन्दिर, पाटण के हस्तप्रत संग्रह की कागजी हस्तप्रत नं.११३१० की यह फोटो कापी है । १२'' x ४।।।'' साईज़ के २४८ पत्रों की यह प्रत अनुमानत: विक्रमीय १६वीं शती की है ।

इस प्रति में व.हिं. मध्यम खंड के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध दोनों समाविष्ट है ।

आदि-अंत निम्न तरह हैं -

आदि - ।।६०।। ॐ नमः सर्वज्ञाय ।। जयत्यनेकान्तकंठीरवः ।।

अथेदमारभ्यते द्वितीय खंडं । जयइ नवनलिणिकुवलय....

पूर्वार्ध समाप्ति एवं उत्तरार्ध प्रारंभ (पत्र १०६/१) इस तरह है -

अणाभोगकए नत्थि दोसो ।।छ।। वसुदेवहिडि(हिंडी) ।।

गंथाग्रं ६६०० ।। उभयं १७८०० ।।छ।। मया भणिया....

उत्तरार्ध समाप्ति-

एवं वसुदेवभारियाए सतं समत्तं ।। समत्ता य वसुदेवहिंडी संगहणी ।। समत्तं च वसुदेवहीं(हिं)डी मज्झिम कंडं ।।छ।। श्लोकाग्रेण गण्यमानं ससंग्रहणीकं एकोनविंशति सहस्राणि ग्रंथाग्रं ।।१९०००।।

(४) ली. - शेठ आणंदजी कल्याणजी जैन पुस्तक भंडार, लीमडी की १३.५"x५" साइझ के पत्रों की कागजी प्रत । इसके १५८ पत्र ही हमें मिले थे अत: अंतिम प्रशस्ति आदि की सूचना नहीं दी गई है ।

आदि -

।।६०।। ॐ नम: सर्वज्ञाय ।। जयत्यनेकान्तकंठीरव: ।। अथेदभारभ्यते द्वितीय खंडं ।। जयइ नवनलिणिकुवलय.....

पूर्वार्ध पत्र १२९ पर पूर्ण होता है -

।।छ।। वसुदेवहिंडि(डी) ग्रंथाग्रं ६६०० ।। उभयं १७८०० ।।छ।।

(५) वा. - वाडी पार्श्वनाथ जैन भंडार, पाटन की यह कागजी प्रत अब हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर, पाटन में हैं । उसका क्रमांक ६७०५ है । उसमें १२। x ४।।। ईंच (३१ x ११।। से.मी.) नाप के १४९ पत्र हैं । (पत्र १५ दोबार लिखा गया है । इसका लेखन वर्ष विक्रम संवत १४८६ (ई.स. १४३०) है । इसमें मध्यम खंड पूर्वार्ध अपूर्ण है - प्रथम चार लंभ अप्राप्त है, उत्तरार्ध संपूर्ण है ।

आदि-अंत इस तरह है -

अह य समतिक्कंते सुहेणं तम्मि दियसे.....

पूर्वार्ध का अंत (पत्र ४७/१ पर) - वसुदेवहिंडि ग्रंथाग्रं ।।६६००।।उभयं १७८००।छ।।.....

उत्तरार्ध का अंत (पत्र १४८/२ पर) -

।।छ।। वसुदेवहिंडीए मज्झिमकंडं समत्तं ।।छ।।...सेसं पुरा...हिंडीए दट्ठव्वं । णमो भावसिद्धाणं ।। णमो वसुदेवताए वसुदेव-भारियाओ तं जहा....।।छ।। एवं वसुदेवभारियाए सतं समत्तं ।। समत्ता य वसुदेवहिंडीसंगहणी ।। समत्तं च वसुदेवहिंडीए मज्झिमकंडं ।।छ।। श्लोकाग्रेण गण्यमानं ससंग्रहणीकं एकोनविंशति सहश्रा(स्रा)णि । ग्रंथाग्रं ।। मंगलं महाश्रीः ।।छ।। शुभं भवतु ।।छ।। श्रीसंघस्य मंगलमस्तु ।।छ।। श्री श्री श्री श्री श्री ।। संवत् १४८६ वर्षे वैशाख वदि १ वार भूमे श्री श्री षरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरिविजयराज्ये ।। श्री अणहिल्लपाटके नगरे भांडागारे प्राग्वाट्ज्ञातीय महं नरपाललिखितं ।।छ।।छ।। श्रीश्रीश्री ।।छ।।छ।।

(६) **मो.** - यह हस्तप्रत पहले मोदी जैन ज्ञानभंडार, पाटण में थी, परंतु बाद में हेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर, पाटण में रक्खी गई है । उसका रजि. नंबर १००९६ है । उसमें १३।। x ५। इंच (३४ x १३ से.मी.) परिमाण के १७६ कागजी पत्र हैं । पत्र ६१-६२ और ७२-७३ जुडे हुए हैं । यह प्रत विक्रमीय सोलहवीं शताब्दी की होने का अनुमान है ।

इसमें पूर्वार्ध के प्रारंभ के चार लंभ नहीं हैं और उत्तरार्ध संपूर्ण है ।

आदि-अंत निम्न तराह हैं -

आदि (पत्र-१) - ।।६०।। अर्हं ।। वसुदेव मध्यखंड प्रारभ्यते ।। अह य समतिक्कंते सुहेण तंमि दियसे.....

पूर्वार्ध अंत - ।।छ।। वसुदेवहिंडि ग्रंथाग्रं ।।६६०० ।। उभयं ।। १७८०० ।।छ।।

अंत - अहमवि रण्णा दुइज्जमाणो पियासहितो महापुरे सुहं अभिर-[मा] मि इति ।।छ।। वसुदेवहिंडीए मज्झिम कंडं समत्तं ।।छ।। सेसं पुरा हिंडीए दट्ठव्वं ।। णमो भावसिद्धाणं णमो वसुदेवताए ।। वसुदेवभारियाओ तं जहा.....एवं वसुदेवभारियाए सतं समत्तं । समत्ता य वसुदेवहिंडी संगहणी । समत्तं च वसुदेवहिंडी मज्झिम कंडं ।। श्लोकाग्रेण गण्यमानं ससंग्रहणीकं एकोनविंशति सहस्राणि । ग्रंथाग्रं ।।१९०००।।

सभी प्रतियाँ **खं.** (खंभात के शान्तिनाथ भण्डार की ताडपत्रीय प्रत) की परंपरा की अर्थात् इसी एक ही प्रति की प्रतिलिपियाँ हैं । ताडपत्रीय प्रत में भी अनेक अशुद्धियाँ थीं किन्तु इन अशुद्धियों से कइँ गुना ज्यादा अशुद्धियां इन कागजी प्रतो में मिलती हैं । प्रतलेखको ने एक अक्षर के स्थान पर दूसरा अक्षर समझकर सेंकडो नहीं बल्कि हजारों स्थान पर अशुद्ध पाठ लिख दिया है । उन अशुद्धियों का निदर्शन निम्न दिया गया है जिन्हें देखकर इन हस्तप्रतों की अशुद्धि की कल्पना की जा सकती है ।

शुद्ध पाठ	प्रतो में प्राप्त पाठ	उदाहरण
ध	की जगह व	धवल-ववल
व	की जगह च	वंचेउण-चंवेऊण
च	की जगह व	चिरेण-विरेण, वंचग-वंवग, चेव-वेव
स	की जगह म	अवीससंतेण-अवीसमंतेण
म	की जगह स	मे-से, मरेज्जह-सरेज्जह
ट्ठ	की जगह द्ध	उवट्ठाण-उवद्धाण, उट्ठवेमि-उद्धवेमि
ज्झ	की जगह ब्भ	तुज्झ-तुब्भ, वज्झ-वब्भ
च्छ	की जगह त्थ	भरुगच्छ-भरुगत्थ

त्थ	की जगह	च्छ	परमत्थ-परमच्छ
न्न	की जगह	न्त	सव्वन्नु-सव्वन्तु
भ	की जगह	त	पक्खुभिद-पक्खुतिद, भरित-तरित,
ओ	की जगह	उ	मुहाओ-मुहाउ
च	की जगह	ठ	कंचुगी-कंठुगी
ध	की जगह	थ	आराधियं-आराथियं
घ	की जगह	थ	घोट्टियं-थोट्टियं, लदाघरे-लदाथरे, घडो-थडो
ब	की जगह	प	तंबच्छी-तंपच्छी
घ	की जगह	प	लदाघरए-लदापरए
ट्ठ	की जगह	ट्ट	कट्ठं-कट्टं
घ	की जगह	य	घादेउं-यादेउं
ए	की जगह	प	एदं-पदं
भ	की जगह	रु	आभट्ठो-आरुट्ठो
प	की जगह	य	पडिदो-यडिदो
ब	की जगह	व	बंधुजीवय-वंधुजीवय, बहुयाइ-वहुयाइं
भ	की जगह	स	पभूत-पसूत
घ	की जगह	व	घण-वण
न	की जगह	त	नियत्त-तियत्त

तदुपरांत अनेक स्थानों पर अक्षर, शब्द एवं वाक्यांश छूट गये हैं, तो कई स्थान पर अक्षर, शब्द, वाक्य की पुनरावृत्ति की गई है । अनेक स्थान पर आवश्यक अनुस्वार लिखा नहीं गया है, तो कई स्थान पर अनावश्यक अनुस्वार रक्खा गया है । कई स्थानो पर पडिमात्रा न समझने के कारण और कई जगह वाक्य के पूर्णविरामरूप दंड को न समझ कर पूर्ववर्ती अक्षरों में जोड दिया गया है ।

प्रस्तु उत्तरार्ध के संपादन के लिए उपरोक्त छ प्रतियों की कमोबेश मदद ली गई है। इनमें **पु.** और **पा.** दो प्रतियों के आधार से पाठ निर्णय किया गया है। **वा.** एवं **मो.** संज्ञक प्रतियाँ **पु.** से मिलती हैं। **वा.** कागजी प्रतों में सबसे प्राचीन (ई.स. १४३० में लिखित) है। शायद **पु.**प्रति इसी **वा.** की ही प्रतिलिपि है। **पु.**प्रत की अशुद्धियां समझने और दूर करने के लिए **वा.** एवं **मो.** की मदद ली गइ है। इन तीनों प्रतियों को **पु.** ग्रुप में रक्खा है। **पा.,की.** एवं **ली.** समान है, इन तीनों के पाठांतर **पा.** के अंतर्गत रक्खे गये हैं।

मूल पाठ **पु.** और **पा.** प्रति के आधार से संपादित किया गया है। जहाँ पर दोनों में अलग पाठ मिलता है वहां शुद्ध पाठ को मूल में रखकर अशुद्ध पाठ पाठान्तर के रूप में दिया गया है।

पु. संज्ञा अंतर्गत **पु.,मो.** एवं **वा.** का समावेश किया गया है।

पा. संज्ञा अंतर्गत **पा.** एवं **की.** का समावेश किया गया है। **ली.** के थोडे पाठान्तर अलग अर्थात् **ली.** संज्ञा के साथ दिये है, किन्तु **ली.** प्रति का इतना ही अंश प्राप्त होने के कारण आगे के पाठांतर नहीं दिये गये है।

अशुद्ध या शंकास्पद पाठ वर्तुलकार कोष्ठ में प्रश्नचिह्न के साथ(?) दर्शाया गया है। अनावश्यक अक्षर अथवा शब्द वर्तुलाकार कोष्ठ ( )में रक्खा गया है। आवश्यक अप्राप्त अक्षर या शब्द चोरस कोष्ठ [ ] में रक्खा गया है। सामासिक शब्दों को लघुरेखा(-) से भिन्न करके दिखाया है। जहाँ पर पाठ में अक्षर अथवा शब्द छूट गया लगता है वहां चोरस कोष्ठ में बिन्दुओं [.....] से दिखाया गया है।

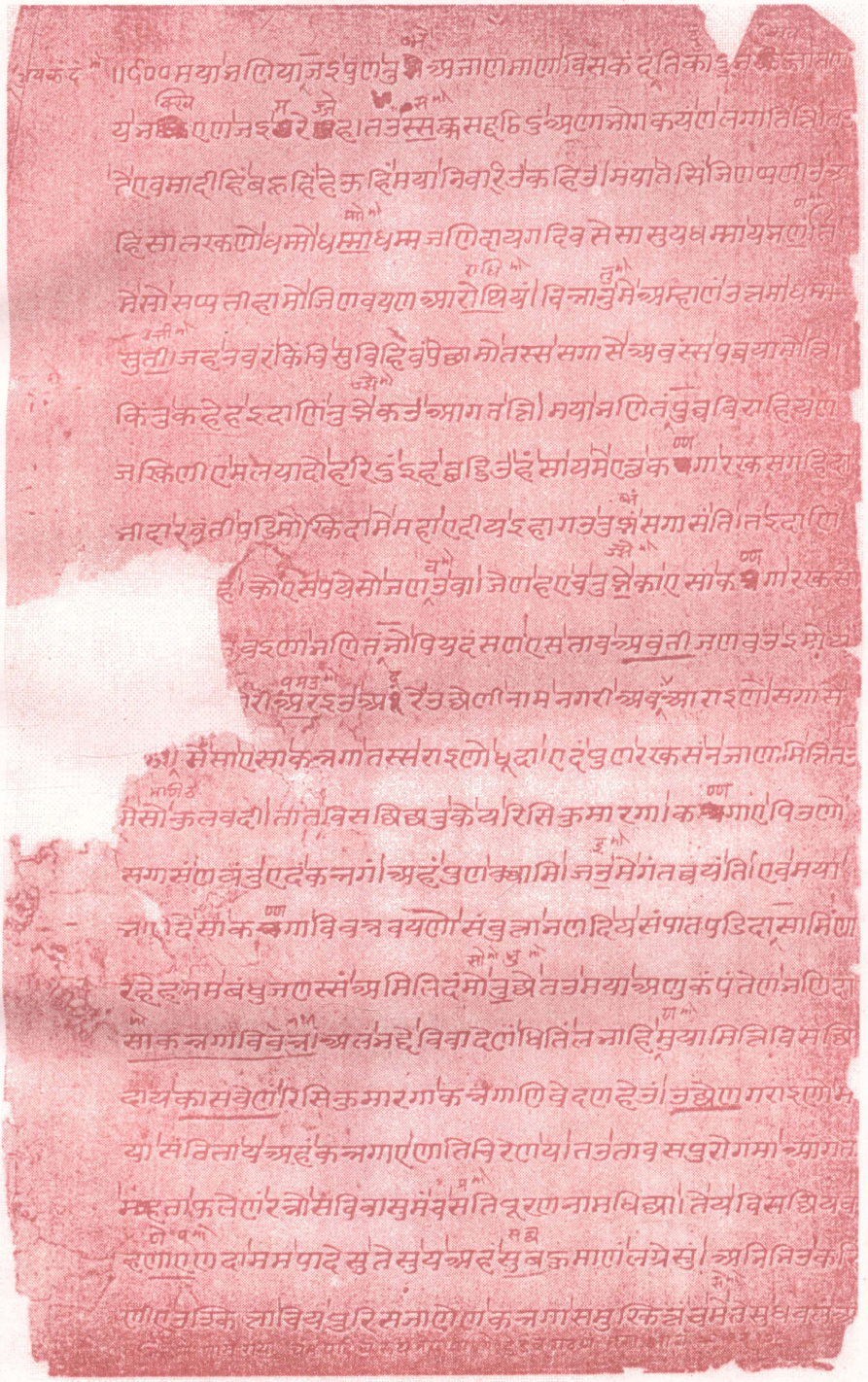
जिस तरह प्राचीन हस्तप्रत की अनुपलब्धि की समस्या है इसी तरह ग्रंथ में मिलते अनेक शास्त्र आदि के वर्णनों के पाठ-निर्धारण की बडी समस्या है। व.हिं.म. उत्तरार्ध में अनेक शास्त्रों एवं कलाओं के लंबे लंबे वर्णन आते है, जैसे कि -

१. चित्रकला परिच्छेद-१९ तारावदी लंभक

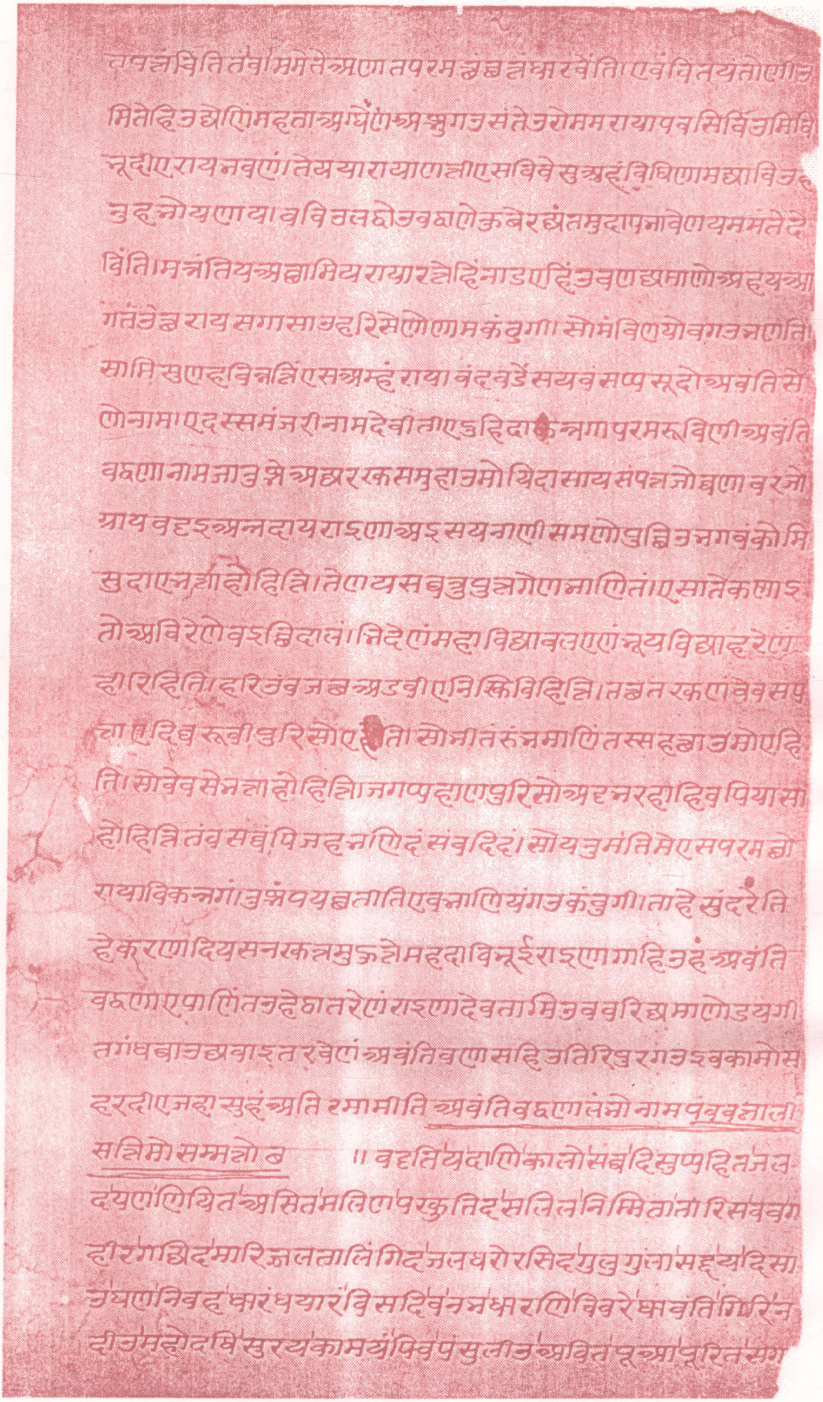
२. सुगंधी द्रव्य-मुखवासादि का विज्ञान परिच्छेद-२० अप्सरा लंभक

३.	नीतिशास्त्र	परिच्छेद-२४ गौरीदत्ता लंभक
४.	सुगंधी वर्णक-इत्र एवं पुष्पविधि	परिच्छेद-२७ पंचकन्या लंभक
५.	रत्नशास्त्र	परिच्छेद-२७ पंचकन्या लंभक
६.	शकुनशास्त्र	परिच्छेद-२८ उर्वशी लंभक
७.	कामशास्त्र-गणिकाशास्त्र	परिच्छेद-३१ शशीलेखा लंभक
८.	वीणाशिक्षण-संगीतशास्त्र	परिच्छेद-३१ शशीलेखा लंभक
९.	स्त्री-पुरुष लक्षण (सामुद्रिकशास्त्र)	परिच्छेद-३२ रत्नवती लंभक
१०.	गंधयुक्ति	परिच्छेद-३२ रत्नवती लंभक
११.	स्वप्नशास्त्र	परिच्छेद-३३ मुक्तावली लंभक
१२.	नव रस, नृत्य-वाद्य संगीत	परिच्छेद-३३ मुक्तावली लंभक

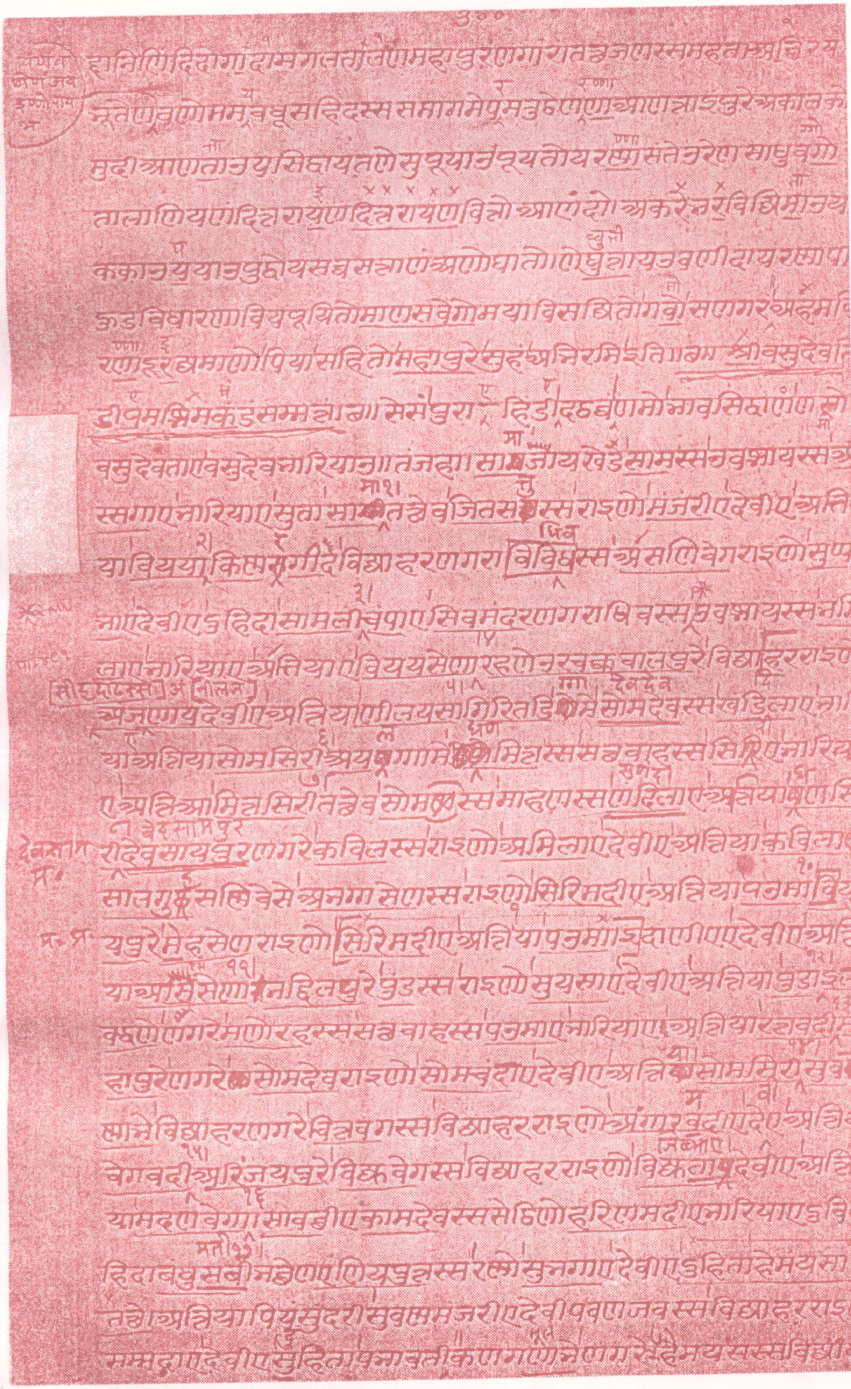
इन सभी विषयों का - शास्त्रों का - वर्णन अत्यंत विस्तारपूर्वक दिया गया है । इन वर्णनों में प्राप्त शास्त्रीय शब्दों की शुद्धि उस विषय के प्राचीन उपलब्ध ग्रंथादि के आधार से करने का प्रयत्न किया गया है ।



पु. प्रति प्रथम पत्र



पु. प्रति द्वितीय पत्र



पु. प्रति पत्र–३००



ब. प्रति पत्र-४७



ब. प्रति पत्र-४८

वसुदेवहिंडी-मज्झिम-खंडो

(बीइओ भागो)

१९. तारावदी-लंभो

वट्टति य दाणिं कालो सव्व-दिसुप्पदित[१]-जलद-[२]घण-णिइत-असित-मलिण-पक्खुभिद-सलिल-निम्मित[३]-तारिस-[४]वंच(?)गहीर-गज्जिद-मारिज्ज-लतालिंगिद-जलधरोरसिद-[५]गुलुगुल-सद्द-निद्दय[६](?)-दिसाओ । घण-निवह-धारंधयारं विसदि व नभं धरणि-विवरे । धावंति गिरि-नदीओ महोदधिं[७] सुरय-कामुयं पिव पंसुलीओ[८] । [९]अवि त पूआ-पूरित-[१०]सागरा गिण्हति मरगद-मणि-कंचुयं [११]पिव धरणी । [१२]पफुल्ल-कुडय-केतय-कलंब-कदलि-[१३]सिलिंध-ऽज्जुण-णीम-अदुलक(?)-[१४]कुसुमसोभ-विदा(?या)वडा सोभदि धरणी । पमुदिद-केगायमाण-वणमोर-[१५]मुइद-बप्पीहय-मत्त-चातय-समोरसिद-[१६]संनाद-[१७]संसूइद-गतपदिया-हिदय-वेदणाकुल-विसोलवरिदो[१८](?) [१९]इंदोवय-सरिस-रुधिर-नह-मग्ग-[२०]वितितो कामुओ व्व पाउसकालो ।

तं च अहं नरपति-भवण-मंदरोदर-गओ [२१]कालागरु-धूव-सुरभि-वासित-तणू **अवंतिवद्धणा**-सहिओ पउर-परिभोगो माणेमि कालं ति ।

[२२]अन्नदा य अहं भवियव्वदाए वाइदमदीओ **अवंतिवद्धणं** सपरियणं वंचेऊणं केण-इ अदीसमाणो विमुक्क-सव्वालंकारो केवल-[२३]**कुबेरकंत**-मुद्दालंकिद-करग्गो भमिदव्वय-दा(?दो)हलेणं एगागी पमदवण-खडक्किदाएहिं बाहिं निग्गओ [२४]सप्पयोगं **उज्जेणीओ** । ताहे च पेक्खंतो णव-पाउस-कालो(?ल)-पसाधितं महिं अन्नोन्न-वण-गहण-दंसणूसुओ **सिप्पा**-णदि-कूलं अणुसरंतो, छिन्न-हरद-तीरे ठियानि य पउमुप्पल-वणाइं पेच्छमाणो, मुइद-कोकिल-पउर-कोलाहलानि य वणसंडाइं ऊ(?सु)णयमाणो पविट्ठो हं एक्कं महा-मेहंधयारं वणसंडं ।

तस्स य मज्झे लदा-घर-विवर-गयाए कलुणं रुयंतीए विलगाए रुन्न-सद्दं सुणामि । चिंतितं च मे— कट्ठं, का एसा एत्थ सुन्ने एगागिणी[२५] वराई रोवति ? त्ति जादाणुकंपो गदो य मि तं पदेसं । पेच्छामि य तत्थ परम-सोग-घत्थं राहु-घत्थं पिव चंदलेहं पियं **सोमसिरिं** [२६]चयण-कालाहदं सुरवधुं पिव विलवमाणीं । आभट्ठा य मया—पिए **सोमसिरि** ! अलमलं रुन्नेणं। एसो

हं आगओ । कहय कहय केण-इ इहाणिदा य कहय, मा भायसु त्ति। एवं भणंतो [२७]सुरुन्नोरु-तंबच्छीए तीए निज्झाइओ हं । दट्ठूण य ममं ससंभमुद्धाइया रुयमाणी पडिदा मे पादेसु । [२८]हत्थुविदूण य मया समुवगूढा भुयासु । परिसंतयंतेण य पुच्छिदा– सुतणु ! [?कि]धो सि इहमागदा ? सा [२९]दु [प]भणिदा-सामि ! अहो ते [३०]मे महंतमवत्थंतर-गदाए व(?थ)क्के दंसणं दिन्नं। सो हु दुरायार कुविज्जाधरो **माणसवेगो** तुह अच्चंत-सत्तू नियय-जणणीए पासाओ कामकारं अलभमाणो ममं घेत्तूणं तीए चोरियाए एस इहागओ हिदय-[३१]रुइदं पदेसं । एत्थ य ममं निक्खिविऊणं [३२]पुव्व-घोट्टिय-मह(?द)-पाण-मत्तो, ममं च अभिवीसासयंतो । संपदं ताव एस परमत्थो, एत्थ लदाघरे सुवदि गाढ-निद्दाभिभूओ, उट्ठिओ पुण संतो, न नज्जइ, किं पि साहसं ववसिदुकामो ।

तओ मया [३३]समासासयंतेणं भणिदा– पिए ! दरिसय कत्थ सो दुरायारो, जओ दप्पं पणासेमि । तीए उ दरिसिओ मे लदाघरए णित(?णिच्चित)-पसुत्तो । तओ मया चिंतितं, [३४]न जुत्तं मे वीसत्थं सत्तुं घादेउं, न एस खत्तधम्मो । उट्ठवेमि । तओ उट्ठिदं समाणं पडिवन्न-सत्थं घादेहामि त्ति । तओ मया समच्छरेणं आभट्ठो– उट्ठेहि, रे **माणसवेग** ! त्ति। तओ उद्धाइओ वेगेणं मम पहणिउकामो खग्गं कड्ढिउं पयत्तो । मदा य आयुध-विरहिएणं दर-कड्ढिय-खग्गो वाम-भुया-जोत्तेणं गहिओ गले वाम-[३५]जाणु-पणय-पडिपेल्लिय मे पट्ठीए ताहे दाहिण-मुट्ठिणा वज्जसारेण पुव्व-पीलिद-कंठे पहतो सिरे तह, जह से निग्गयाइं दो वि णयणाइं । आगदं च से मुहेण नासापुडेसु य बंधुजीवय-कुसुम-संकासं लोहितं । समक्कंत-जीवितो य से(?सो) धसि(?धस त्ति) धरणीयले पडिदो । भणिता य मे **सोमसिरी**– पिए ! [३६]पाहि से पुव्व-पइन्ना-पूरणत्थे लोहितं ति । तीए य अग्गंगुलीए अग्घातं से लोहितं । भणति य मं – अज्जपुत्त ! नियय-कज्जे मया किर सह रमिउकामेणं कप्पपादव-प्पसूदं सुंदरं मधु इधाणीदं, इहेव लदाघरे अच्छदि। तं आगच्छ, तेण चेव [३७]पाइ से पियामो त्ति ।

तओ हं **माणसवेग**-संतियं खग्गं [३८]हत्थे काऊणं गओ तीए सह लदाघरयं । दिट्ठो य मे तत्थ हेम-घडो मधु-पुन्नो । **सोमसिरी** तस्स चेव [३९]वदण-ठंदं(ठिदं) अदि-महंत-कणग-भायणं तं मधुस्स पूरिउं भणति ममं– अज्जपुत्त ! एतं ताव [४०]तुमं मम जीविय-सावियो भविय पुरिसुत्तरिओ लोगे

त्ति अविसमंतो(?वीससंतो) पिहिपाइं[५१] (?)। तओ विदिदं मया सह पाहिसि। तीए दु अणुयत्तीए मया अवीसमंतेण (? अ वीसासंतेण) पीतं पभूइ(?यं) मधुं। [५२]तम्मि य पीत-मेत्ते चेव मया सगलं मत्तमिव जगं मन्नियं । परव्वसीभूतं च मे चित्तं[५३]। सा च(?य) **सोमसिरी** खणेण अद्दंसणं गया सह पाण-घड-चसय-खग्गेसु । आगासे य वायं सुणामि जहा—एस सि वज्झ ! मया **माणसवेगेणं** उम्मत्त-पाणं पाइओ [५४]कदा वि पुणो चेयं [?ण] लंभीहिसि। एवं वोत्तूण गओ अद्दंसण ।

अहमवि अप्पाणं [५५]वंचिऊणं **कुबेरकंत**-मुद्दं गाढं साडय-कोडीए बंधिदुं, साडयं च कडीए गाढ-बंधणं काउं गुडिद-बद्ध-गंठी सत्तु-भयेण अप्पमत्तो ठिओ मि । पट्ठिदो य मि **उज्जेणिं** । तेण खणेण जाओ हं पणट्ठ-[५६]सुदीओ, उवहद-सव्विंदिओ, परिब्भमिउं पयत्तो । **उज्जेणिं** गंतुकामो अन्नदो चेव गओ हं ।

तओ विविहेसु जणवदेसु परिब्भमंतो मह य चरिदेसु य जणं [५७]तोसयंतो रुआविं(?वें)तो य जणपद-[५८]रिब्भरूवाणुतातसमग्गो(?) हं, हसंतो कट्ठ-लेट्ठासु [५९]परुप्परोहट्ट-तुडीसु य, साहामिओ इव समारुहंतो, उवसग्गणपराओ पंसुलीओ थेवंतो(?) कोप्परेणं । कत्थइ[६०] रूवल(?लु)द्धेसु अणुकंपिएसु य पभूतत्थ-विसग्गि(?)-परितोसिय[६१]-तेगिच्छिय-पडिसिट्ठो अणुसोइज्जमाणो, कत्थइ गिरि-कंदरंतरेसु पयदि-गंभीरेसु एगागी वसमाणो । ण य मे उम(?म्म)त्त-पाणाइन्न-दोसेणं ईसिं पि छुहा बाधदि । दिणे दिणे सज्ज-पीतं पिव मन्नामि, [६२]तप्पच्चएण य महंतं वेदणं वेदेमि । **कुबेरकंत**-मुद्दा-पभावेण मे जीविदं ण उक्कमति । वट्टइ वासा-काले सुवतीयजलंवरी(?) तड-कुडिल-पलंबंबुद-निवह-समोत्थदा गिरिणो । वर-कक्कर-सिहर-[६३]सूदित-दुयाभोगा धरित्ति व णिवडमाणो विहलं नहंगणं विसहामि य एगागी स्त्रेसु विसम-जलद-गज्जिद-गंभीर-सद्द(?द्दु)द्धाइत-[६४]सुट्ठुंसुहा(?) उम्मत्त-पाण-विस-वेग-सत्ताइं बहुसो य(?...) मालुगा-वण-पलास-तल-हेट्ठा संठिओ सुमिण-गदं पिव जल-बिंदु-टवटवा-सद्दं सुणामि ।

एवं मे दुक्खं विसहंतस्स समइच्छिओ वासा-कालो । उवागओ वियसित-कुसुम-कास-पच्छादिद-दिसाभोगो निप्फन्न-सव्वयस्स(?)-परिमंडिओ [६५]विसेसदो पभूत-सालिवण-नलिण-कुवलय-नीलुप्पल-कमल-विस-कुलअण(?)-सत्तिवन्न-बंधुजीवग-कुसुम-पविराइतो सुरभि-सीतल-

पसन्न-सलिलो समुइद-कारंडग-कुलल-सारस-चक्कवाक-कुंच-कलहंस-कलकल-रवाकुलो तन्नाय-मंद(?दु)र-वसभ-ढेक्किंत-[५६]गोलय(?)-हुंबारवोत्थरित-डिया(?)[५७]मुहोपणीत-थेवंतर-विट्ठित-[५८]सालिवण-गोवियापउराअ(?)[माणो] विसेसित-सुरभि-सत्तच्छद-कुसुम-गंध-मह-मदगल-दाण-वासित-वणंतो सरद-कालो ।

इय एरिसम्मि काले *मह मदि-महमाण-माणिदे नीराइते सुहयगदेसु परिविसय(?)-निज्जिय-संपट्ठिएसु वलवदीसु पविहरिदेसु सुसाधु-पसन्नेसु य जादिस णहंगण-दिसामुह-सलिलाभएसु(?) इय सरय-काले* वट्टमाणे कत्थइ [जण]वएसु कत्थइ महाणगर-महागाम-सन्निवेसेसु गायंतो णच्चंतो हम्ममाणो य, कत्थइ थिमिय-सभावो, कत्थइ कुडावधारण-दूततर-गती, कत्थइ परिभुत्त-छड्डिय-निम्माल(?ल्ल)य-कुसुम-कय-सेहरो, कत्थइ तंड-तुरगावरोहण-परिखेडिउं जणं हसावंतो एवमुम्मत्त-पाण-परव्वसो परिब्भमंतो अणियत-वसही [५९]अवितित-कयाहारो अन्नदा य एगम्मि अडवि-मज्झे गमणुव्वाओ निस्साहारो दीण-वयणो सिद्धत्थ-पादवस्स अधे निसन्नो हं [६०]आससिदुं पयत्तो ।

अह य सहसा दियसकर-मंडलं पिव विदारेउं मणिमय-भिंगार-पवर-सुरभि-सलिल-भरित-गहित-हत्था उवतिता णहतलाओ मम सगासम्मि देवता । तदवत्थ-गदेण वि मे सा दुज्जोनिदा(?) भगवती **अच्चिमालिणी** जक्खिणी । तीए य णिंदंतीए अत्ताणयं भणिओ हं– पुत्तय ! धीरो होहि । अहं लच्छीकरेमि ते । मम ए[?स] अणुवओगो जं सि एयच्चिरं परिकिलिट्ठो । भणदि य मे [६१]उज्जद-भिंगार(?रा)–पियाहि पुत्तय ! इमं ओसढमिति कादुं सीयलं पाणियं ति । तओ हं [६२]तत्थ वण(?घण)-विन्नत्थाए अंजलीए तं सलिलं अमतमिव जण-निसिद्धं पातुं धरणीए ठिओ(?ठाविओ) हं । आढत्तो य मि तं पाणं सज्ज-पीदमिव सहसा वमेदुं, जह निग्गच्छइ विसमिव [६३]अंगद-पिल्लिदं, तह तह निव्वुत्तिं लभेमि । पुणो पुणो पा(?पी)ऊण सलिलं नीसेसं [६४]वमितं मे तं ओसह-पाणं । ताहे तीए य पक्खालित-वदणस्स अन्नं सुधामदं नाम पाणं उवणीदं च मे पीदं । तेण य पीत-मेत्तेण मम पसन्नाइं इंदियाइं, तक्खणं चेव बहु-गुणतर-जणिदुच्छाहो पोराणय-सरीरो उ [६५]अधियतर-पसन्न-वपु-लायन्नो संवुत्तो हं । भणति य मे जक्खिणी– पुत्त ! **कुबेरकंत**-मुद्द-पभावेण जीविओ सि । कुरं खु सत्तुणा उम्माद-मत्त-पाणं पाईओ सि । सोहा-सरिस-रूवं कादुं **माणसवेगेण** पुत्त ! छलिओ सि । ते

एस मि [६६]तयाविउ(?मोयाविओ), कदो य सि भासाविया(? साभाविओ) । इदाणिं तं वच्च इहासन्ने अत्थि **भरुगच्छं** नाम नगरं । एस से [६७]पधो । एवं वोत्तूण वत्थ-जुवलं च मे दादुं अद्दंसणं गदा ।

अधा हं सुत्त-विबुद्धो इव सव्व-वेदणा-विमुक्को, तं किलेसं सुमिणयमिव सुमरंतो, तं वत्थ-जुवलं परिहेऊणं संपट्ठिओ । तओ पत्तो य **भरुकच्छ**-पुरवर-प्पदेसं । तस्स य बाहिं जिण्णुज्जाणे अति-गहण-वच्छ-पच्छादितंधकारे अहि-णकुलोलूक-कोक्कंत-सउण-गण-निसेविए परिलुक्क-भग्ग-वेदिगा-परिगत-बहु-वामलूर-पय-मत्त-कय-किरि-बिल-संकुले तम्मि पविसिउं निद्दाभिभूओ चिरस्स समासादित-सरीर-सुहो नियय-वासघरे इव जहा वीसत्थो पसुत्तो हं । तओ पओस-काले पडिबुद्धो हं । चिंतित च मे-कत्थ मे इदाणिं [६८]तव्वाइवणं(?) सुवामि त्ति ।

अह य रतणीए समइच्छिए पढम-जामे तओ तम्मि उज्जाणे पुव्व-परिचितेणं सरेणं सइरुल्ललित-सद्दं सुणामि । एक्केण य तत्थ भणितं-उ(?ख)णं तो विमग्गेह, एदम्मि पदेसे तेण णिधिणा होतव्वं । पच्चभिजाणिओ य मे सो सरो **भागेरहिदत्तादीणं** भाईणं **बंधु-सुबंधूणं** य । तं च सद्दं सोऊण उट्ठिओ हं भूमि-सयणाओ, दिट्ठा य मे दीविगा-गहित-हत्था । तप्पभाए पगासिद-देहा पच्चभिजाणिया इमे अदूर-देस-ट्ठिया । तओ मया सइरं वाहिया ते य पिसाय-संकाए विपलाइउं पयत्ता । मम य स-नाम-गोत्तेसु आकारिते 'मा भायसु' त्ति 'अहमेस अमुग-णामधेज्जो, आगच्छधेइ' । तं च मम सरं सोऊणं भणितं **सम्मददेवेणं**—एस खलु भो ! अज्जपुत्तस्स सद्दो अतीव अणुहरइ, अवि णाम अम्हेहिं णिधिं मग्गमाणेहिं अक्खओ निधी अज्जपुत्तो लद्धो हविज्ज। ताहे दीव-प्पभा-पगासित-पधा उवगता मम समीवं, पणता य मे सव्वे य कमसो अवतासिता मे । ममं च परूढ-केस-मंसु-रोम-णहं दट्ठूणं नातिचिरं चिंतापरा आसि । भणंति य मे— अज्जपुत्त ! का ते एसा अवत्था? मदा य तेसिं **पेढपुरातो** अवहरणादीयं उम्मत्त-पाण-विमोक्खणावसाणं च णिययं सुह-दुक्खं निरवसेसं सिट्ठं ।

तओ तेहिं अहं पुव्व-[६९]भालि[दे]णं पदेसेणं णिस्सीणीए पागारं लंघावेदुं पवेसितो हं पुव्व-परिग्गहिदमावासं । पभाते य तेहिं सद्दाविओ [७०]**देवकित्ती** । तेण अह मज्जिओ हं, पयत्तेण कल्लाणगेसु य अब्भंगिओ हं, उद्दालिओ मज्जिओ य [७१]अहोद(? सुहोद)-वत्थ-परिहिदो **कुबेरकंत**-मुद्दा-

विभूसित-[७२]विग्घ(?दिव्व)प्पभावो सादु-भुत्त-भोयणो सुहासण-वरगओ वयंसे पुच्छामि– कधयध तदा **पेढपुराओ** [७३]ममम्मि(?) सत्तुणा गय-रूवेणं अवहिते समाणे **हरिचंद-पोत-कोसलेसु कणगवईए** तुब्भेहिं य कत्थ वा **अंसुमंत-णंदोपणंदा** गदा **रुइरदेवो** य ? । तेहिं भणितं– अम्हं ताव तुब्भेहिं अवहिदेहिं सेसा सव्वे वि विदिदतर(?)-तुहावहरण(?णा) णिच्च-परिणयाण(?परियणा) विसादं वच्चामो जहा उवितमेयं(?) अज्जउत्तस्स । इतरे पुण राइणो विसन्ना, विसेसेण य राया **हरिचंदो** संतेउर-णगर-पउर-पुरोहितो परमं सोगपदं समवगाढो, विसेसेण य देवी **कणगवती** । तओ अम्हेहिं समासासिओ राया सपरियरो(?णो) 'मा भायसु, उवि(?चि)तमेय(?यं) अम्हं सामिणो आगास-हरणं ति । एवं सोऊणं निव्वुदा संवुत्ता राइणो जा(?ज)णपओ य, गदा य **को[स]लिय-पोता** सयाइं रज्जाइं । **रुइरदेवो** वि मातुलेण सह **कोसलं** गओ । **अंसुमंतो** पुण **णंदोवणंद**-सहिओ अन्नाए दिसाए तुह मग्गणा-हेउं निग्गओ । अम्हे हि(?वि) नियबल-वाहण-सहिउ(?आ) **सावत्थि** गदा । तत्थ देवी **पियंगुसुंदरी बंधुमदी** य अतीव सचिंताओ जायाओ। तत्थेव य देवी **नीलयसा** अच्छइ, तं नीसाते(?)[७४] य तत्थ देवी **हिरन्नवदी** आगदा । सा य **पियंगुसुंदरीए** तुह सरीर-वट्टमाणिं पुच्छिता । तीए भणितं– कुसलं से संपती(?ति), किंतु बहुयाइं सो सुह-दुक्खाइं पडिवेढिणा(?) हिंडति ति । तओ अम्हेहिं **हिरन्नवई** पुच्छिदा तुह कज्जे–देवि ! अम्हे अज्जपुत्तस्स गवेसणाए पट्ठिता । तं कहि(?कहय) कत्थ अज्जपुत्तं पावेज्जामो ? त्ति । तीए विज्जोपदेसेण भणितं—वच्चह तुब्भे, तस्स सरद-कालेणं **भरुकच्छे** मेलीहिध। अहमवि तत्थ तुमं दरिसावं दाहामि । होहिति तत्थ मए वि किं[चि] कज्जं, एवं मे देवदाए परिकहिदं ।

एवं तीए परिकहिए समाणे अम्हे किंचि [७५]पत्थयण-जायं घेत्तूणं अविण्णादा राइणा निग्गया मो **सावत्थी**ए [७६]वहवहा(?) इमं नगरं गदा अम्हे [७७]हिंससूआहि(?) दुक्खे त्ति गणिउं वास-काले परिक्खीण-पत्थयणा य जाउ(?आ), ताहे एत्थ अवारिं[७८] गहेउं कय-विक्कय-वट्टि-लाभेणं चलमाणा वाणिज्जं काउं पयत्ता नाडय-चरितम्मि य, इमम्मि पासादे सुहं परिवसामो । अप्पाणीकओ य अम्हेहिं [७९]इहमच्छंतेहिं [?.....] नगर-जणवएण कायाहि(?) धरणीए पावियं(?) करेमो[८०] । खन्न-वीसु(?)-कम्म-वाणिय त्ति इहं नज्जामो। अज्ज य रयणीए अम्हं आवासणस्स सम्मिद्ध(?मिव)स्स घरे कोलाहलं पयत्तं। तं च सोउं अम्हं एक्को [८१]जोगंजित-णयणो अदिस्समाणो छिड्डाविक्खित्ताणं तत्थ

गओ । सो तत्थ [८३]वाही-मारणंतिय-वेदण-परिगय-सरीरो उस्सारित-परिजणो समणस्स परिकहेइ जं एद[?स्स] नगरस्स पुरित्थिमेणं अम्ह संतियं जिन्नुज्जाणं । एदस्स मज्झे णग्गोह-पादवो अत्थि । तस्स मूल-खंधीए [८३]पुव्व-प(?पे)रंते एत्थ मे महग्घ-मणि-रयणग-पडिपूरिओ निधी निक्खित्तो । तं उद्धरेज्जाह त्ति । एदं च सोऊण सो निग्गओ, कहितं च तेण सेसयाणं । अम्हे सव्वे गदा जिन्नुज्जाणं । निधिं च विमग्गमाणेहिं तत्थ तुब्भेहिं दिट्ठा य। दिट्ठो य सो निही तुह दंसण-समकालमेव, [८४]आणत्ता(?गता) य इह सह तुब्भेहिं । एयं वो अम्हेहिं निवेदिदं सव्वस्स गयं ति । तओ मया सह समागया नियत्त-चोरिक्का सुहं परिवसंति ।

अन्नदा य अहं आवास-पासादस्स वालक्कपोरिका(?वालग्गपोलिका)-संठिओ नरवति-मग्गं अवलोएमाणो अच्छामि । पेच्छामि य तत्थ ऊसरण-जणतइसोइ(?) कंचुकीए [? .....] । तओ मे पासत्थिया पुच्छिदा वयंसा— किमेदं उस्सारणा-कारणं ति । तेहिं भणितं- सामि ! एस सुणह, एत्थ **भट्टारगो** नाम राया, तस्स **तारा** नाम अग्ग-महिसी । तीए दुहिता **तारावदी** नाम रायकन्ना उदार-उक्किट्ठ-जोव्वणा चदुसट्ठि-कला-पंडिया पुरिसव्वेसिणी सुणिज्जइ । एदस्स नामं वि सादं(?सोदुं) णेच्छइ । सा अभिक्खणं अम्हाणं [८५]जर-रच्छाए(?) **कोरिंटगुज्जाणं** गच्छइ [८६]आगभिया(?) अउग्गएयदंडदो(?) एसा सुणिज्जइ । ता जाव एसा अतिच्छिया ताव अवतरह अवलोयण-गओ त्ति । मया भणितं— ण ताव अवतरामि, [८७]किं मे सा काहि त्ति पेच्छामि ताव एत्थ दिट्ठीहिं । तओ दिट्ठा मया सा आसन्न-गता संसाधित-कणग-कंचुक-जालंतरेण लक्खइ वाकह(?वम्मह)-पडागं व घेत्तुकामा तेलोक्कं, तेलोक्क-लच्छि व्व सुंदरी, सुंदरेहिं गत्तेहिं गत्त-पादस(?पदेस)-पप्फुडित-वम्महा, वम्महस्स णिहाणभूदा, भूदग्गामाधियवरा तरल-तार-विज्जुलता सव्वा, सव्व-कला-[८८]विसारदा, सारद-ससिणो कलाए जल-गंभीर-[८९]पध-सरिस-वि(?व)पु-लावन्ना, लावन्नाकड्ढिद-पवर-सिरि धारणी गुण-सयाणं, सताण मज्झे [९०]व तब्भतणू(?) दिट्ठा मे **तारावती** तारापती-सम्मत्त-सरिस-मुहचंदा, इंदो(?चंदो) इव सोम्म-दंसणा, दंसणेण अतिप्पसादयंती सव्व-लोगं, सव्व-लोगच्छेरयभूदा चतुर(?रा) च तुरग-वर-गदाहिं रायसुताहिं परिवुडा, अन्नद(?)वर-गदा, चलित-चारु-चामर-भरा, समूसित-सितातपत्ता, पत्ता य तं पदेसं ।

तओ मया पुच्छिओ **सम्मतदेवो**—जति ताव एसा पुरिसव्वेसिणी तओ कीस इमं एद्दह-मेत्तं आडंबरं लोगुस्सारणं च कीरइ ? तेण भणितं– सामि! एवं सुणामो एदीए किर एवं रुच्चइ । जउ ऊसारणा कीरइ, [११]ते तु रायकुल-निओएणं । इतरहा पुण एदीए पिउणा पुरिसाणं अनिवारिअ-प्पवेसं कदं । किं-कारणं, वरं से कहिं चि दिट्ठीए सज्जेज्ज त्ति ।

तओ एवं [१२]मे एसा दिट्ठा, पविट्ठा य मे हिदयं, समतिच्छिदा गदा य मे चक्खु-विसयातो । पुणो य मे पुच्छिदा वयंसा—कतरेण पुण पहेणं(?पहरेण) एसा उज्जाणाओ पडिनियत्तइ त्ति ।

तेहिं भणितं- एसा उज्जाणितं समणुभविद(? दुं) तओ पुव्वावरण्ह-काले पुणो वि एदेणेव पहेणं पडिनियत्तइ त्ति । तओ हं तीए पुण दंसणूसुओ तत्थेव तेत्तियं कालं समभिलोगयंतो ठिओ ।

अहावरण्ह-काले तहेव कन्नगा-परिवुडा गय-करेणुयाधिरूढा आगया तेणेव पदेसेणं, ताव य मे अवलोकिता, जाव अइच्छिदा चक्खु-पहाओ । गओ हं तं दट्ठुं, तग्गय-मणा(?माण)सो तहेव । तओ अवतरित-नियत्त-ण्हाण-भोयणो परिगिलायमाण-णयण-वयणो महंतं कामाकल्लयं उवगओ ।

अन्नदा य ममं विदित-परमत्थो **सम्मतदेवो** भणइ– अहो ! इमं अदेस-कालोववन्नं वसणं जादं, सक्कति पुण एदं पडिवादेदुं कारणं जइ एत्थ **अंसुमंतो** सहायो हवंतो मे । मया भणितं— कओ **अंसुमंतो** लभामि ? वयंस! णवमत्थाण-गदं मे मणव(?मम्मह)-विसं वट्टति, जइ पुण दसमत्थाणं गदं उवारुभति, तओ अवस्सं उक्कमति जीवितं मे । तं अहीण-काले सयमेव कोरेहि एत्थ जुत्तं ति । तेण भणितं– विन्नविस्सामि ताव ।

तओ सो मुहुत्तंतरस्स निग्गम(?त)-पडियागओ ममं भणदि– अज्जपुत ! सुणह परमत्थं। इत्थीण किर विविहो संपादणोवाओ । तं जहा, विसिट्ठ-कुल-ववदेसेणं गच्छिदा(?), च्छंदाणुवत्तीए [१३]असद्दहणा, अत्थेण लुद्धा, रूवेण चंचला, मद्दवयाए सुरोहणा, कला-कोसल्लेणं पंडिया, अणुकूलेणं दढग्गाहिणी, निट्ठुरेण खर-सत्ता, [१४]स-चरिदाणुवत्तीए सव्वाओ वि । तं सुयं मया, एसा किर अतीव चित्तकम्म-कुसला, तम्मि चेव अतीव अभिरदिं गदा। अन्नं पि जं चित्तकम्म-कुसलं सुणति तं [१५]आणवेइ, गंतूणं पासइ । सो य से अतीव वल्लभो वि दिट्ठो य अवस्सं संभासं करेइ, संभासाओ पीति-पणय-रति-वीसंभाइणो गुणा परिवड्ढंति । 'संभास-हदा य इत्थी', एसा लोइय-सुदी।

तं एस परमत्थो । कीरउ कोइ चित्त-कम्मारंभो । तओ सा तं सोऊणं अवस्सं एहिति पुच्छिदुं । ताहे इधागदाए सीलं नाऊणं उवायं काहामो ।

ताहे मया भणितं—जइ एवं तओ मे सिग्घं सज्जिज्जदु चित्त-गिहं ति । ताहे तेहिं इदा(?हिद)याभिनिवेसाणुवंति(?वत्ति) काम-जणणं उत्ताणं च समाढत्तं कुड्ड-परिकम्मणं । अवि य, कप्पिताओ भित्तीओ, समीकयाओ य सव्वओ समंता ते मधुरमिदाएक्कारुधीएमामएणं(?) पक्कड्ढियाए सुहुम [९६]पिट्ठेसु उवाय-परिकम्मिएसु व्वग(?)तिभाग-मिलिएसु पलेवितं कुड्डं पडगा फलगाणि य, एदेण य लेवेणं तिन्नि लेवा दिन्ना, एस वट्टिका कम्म-भूमि-बंधो कुड्डस्स, पुण विवत्तेणं इमो अन्नो [९७]दुव्वावरो, बंधो तत्थ ताव आदि त एव पीत-मट्टियाए मधुराए चिक्कणाए तुसद्धभाग-मेलियाए सुहुम-कप्पिय-तदब्भव-मीसिताए निंबक्क-पत्त-गोमय-[९८]मासचुण्ण-संजुत्ताए पउगकेदविदाए(?) लेवियं कुड्डं । एदेण लेवेणं [९९]तणदुवेलिदाए(?) [१००]मट्टिदा दिण्णा । तओ अन्नाए पंसुलाए मधुराए मट्टियाए वालुगा-तिभाग-मेलिदा-तुसादि-वज्जियाए कम-[१०१]परिक्कमदिदाए(?परिकम्मिदाए) [१०२]लेसूडत्तय(?)-रस-सम्मीसियाए दिन्ना दुवे लेवा तल-कम्म-विहाणेण य । समट्टीकतेसु तेसु कम्म-परिसोसिएसु तओ खीर-पाणिय-च्छासीए दोसु य मक्कोल(?)भागेसु कदा करतल-मट्टी कुड्डस्स, तम्मि उव्वाते सेतियाए पेलवीकदाए कुच्चएण [१०३]पसादितं कुड्डं ।

तओ मे कदाओ कसिणाओ [१०४]कद्दओ(?) य तिविधोउ(?धाओ) वट्टीओ कप्पिदाओ, तं जह- [१०५]बियंगुला जह(?व)-मज्झा [१०६]सुईमुहा य, एयासु सुपिट्ठीसु अहंकासु(?) आढत्तो हं दिव्वं माणुसं [१०७]बहुविहं चित्तं णिरुवेउं। ताणि य [१०८]चित्त-कम्माणि पत्तेयं तिविहाइं— उत्तमाधम-मज्झिमाइं। तत्थ पुण लच्छेवदेस-निप्फन्नाइं उत्तम-कम्मिदाइं[१०९] उक्किट्ठ-दाइम्मो(?) तिसु लेहासु तं जहा— [११०]णगराए सव्वगीए पंडिकाए (?) । एदासु रेहासु निरूविदाइं रूवाइं तं जहा— उब्भादगं अक्कब्भागदं सातीसागदं [१११]आयागदं खीणच्छायागदं [११२]चित्तयं मंडाहुत्तयं पराहुत्तयं उल्लोग-कदं अवलोग-कदं मज्झत्थं [११३]भावइ(?) । एदेसु भेदेसु जधोवदेसत्थितं [११४]कंठकरियं(?) चित्तं चित्त-कम्मं वत्थुब्भागया अड्डब्भागदा णयवकारादीयाइं(?) तिकोकाणि(?) कुकुडंगदीयाणि(?) य णिरूविताइं सुहाइं सुहाणुसारेण य सरीराइं । तत्थ दु पंचविधा पुरिसा निवेदिता, तं जहा— हंसो, ससगो, रुयगो, भद्दो, मालव्वो य। तत्थ य पिथु[ल]-पीण-गंड-वयणो सुप्पतिट्ठिद-चलणो पीणायत-ग्गीवो हंसो,

[११५]किसय-वयणो ससो, वट्ट-वयणो रुयगो, चतुरस्स-वयणो भद्दो, दीह-वयणो य मालव्वो । हम्मि(?हंसी)- विगलितादीताओ(?) य इत्थीओ निरूविताओ। तत्थ ईसिं पसत्थ-वयणा कुडिला वरा मीणंडसरिस-गंडा, पलंब-दसणा कमल-पत्त-लोयणा निउण-भाव(?ल)-जुत्ता पिधुल-जहणा याणगरीलेहा(?) पयति-संपन्न-वेसग्गहणा(?) माधूरीय(?) वन्न-वया-वेसं[११६] संजदा(?) सुकुमाला [११७]सज्झिकी(?)णाम लेहा, चिबुकोट्ठ-गंड-नासा-विभूसिता तणुकेसी णाति-प्पमाण-णयणा सुरइत-कर-चरणा पिधु-पीण-दीह-बाह सुरवदिणाविदेया(?) लेहा, तत्थ सव्वे य सुहस्स-नियय॑गुलि-प्पमाणेणं चउरंगुलाइं चिबुक-नासा-निडालाइं । दुवे अंगुलाइं कला भन्नइ । कलामित्ता अच्छि-गोलका, दुवे कलाओ कन्ना, भुमयाओ वि चतुरंगुलाओ वंकेण, भुमया समा उवरिम-दसण-बंधा, अवंग-समा कन्न-[११८]सोभा, नासापुड-समा(?मो) कन्नस्स अहोबंधो, कन्नसमावट्टीए कन्न-पाली, लोयणब्भंतर-कोणसमं नासापुड-पेरंतं, अच्छि-तारयाओ आवसमा(?), [११९]सेढीए [१२०]आह सिक्क(?)चिबुकाउ, अद्धंगुलाइं कन्न-वेहा, चउरंगुला तिरेहावलि-मालिता गीवा, बारसंगुलं मुहं, हिक्काओ(?) मुह-समं [१२१]वयण-चूबुगंतरं घण-चूवयतो(?) मुह-समं बाहु(?) सीसं, हिदयातो मुह-समाणा णाभी, नाभीओ मुह-समं गुज्झं, दुवे मुहाइं ऊरु-प्पमाणं, चतुरंगुला जाणू, जाणूओ दुगे [१२२]मुहाणि(?) जंघा, चतुरंगुला [१२३]खुलुगा । छक्कलाओ पादा, तत्थ ति-पादंगुट्ठो, पदेसिणी य तियंगुलाइं, सेसंगुलीओ णदेण(? णहेण) हीणाउ, अंगुली-रहिदस्स य पादस्स [१२४]आयामद्धोरु(?) दंत णं(?) सुलक्खणस्स गीवा-जाणु-खुलुएसु [१२५]वि तिसुहं निप्फज्जइ । एवं स-सीस-पादावसाणं सव्वं पि सरीरं नव-सुहाइं(?) अट्ठारस अंगुला बाहु पबाहू [१२६]साभ-संकुला, तिन्नि कलाओ करदला, दीहत्तणेणं पंचंगुलाइं, रुंदत्तणेणं पंचेव य अंगुलाइं । हत्थस्स मज्झिमंगुली णहं(?) [१२७]णहेण हीणाउ पदेसिणी अणामिका [१२८]उवहीणा कणिट्ठिता, समो य अंगुट्ठो, अहवा चउरंगुलं सो वि, चउरंगुलं च वदण-विवरं, कलामित्तं उट्ठ-पुडगं, कंबु गी[वा], चिबुग-विक्खंभो य दुवे कलाउ, [१२९]णो णेत्त कन्नंतरं बत्तीसंगुलाइं सिरि(?र)-परिणाहो, सोलसंगुला [१३०]लेप्प-साधिया वा केस-भूमी चित्त-कम्मे दुयंगुला केस-भूमी, खय-वड्ढी वा पमाणाओ दुवे मुहाइं, उरं पुरिसस्स दिवड्ढं, मुहं कडी इत्थीए दुवे मुहाइं कडी दिवट्ठं(?), उरं सुहं, बारसंगुल विक्खंभो, वत्तूरु(?)मज्झं च पुरिसित्थीणं, अत्थि [१३१]तिभागा तारा ताव तिभागे य बज्झते दिट्ठी ।

अहवा पुरिस-लक्खण-समासो इमो होइ—किरुत्तम पुरिसा [१३२]अट्टस्स(?ट्ठस)य-मं(?अं)गुलाण उव्विद्धा, छन्नउदि अहम-पुरिसा, चदुस्सधा(?) मज्झिमिल्लाओ, एत्तो तिसु वि(?)-पमाणो(?णा) जे हीणाधिया ते ण पसंति(?सि)ता, तेसिं वि पुण वीसाधियं बारसाधियं च सदं उस्सेहो णिद्दिट्ठो । तत्थ ताव उद्धं उवचितेसु अंसुएसु परिपुन्न-भुय-ग्गीवो अविरलंगुलि-पाणि-पादो विमड(?)गति वियड-जंघो हंसगती रत्ताधर-णयणो सुप्पइट्ठिय-चलणो य पुरिस(?सो) हंसो नाम । अरविंद-णयणो दीहर-नासा(?सो) य दीहरग्गीवो दीहत्थणंतर-ज(?ऊ)रु-कडितड-च्छिदो(?) य ससगो त्ति । उव्वद्ध-पिंडि-जंघो [१३३]समतुंद-घणोदरो दढ-क्खंधो सुप्पसन्न-घण-कवोलो पुरिसो रुयगो त्ति नायव्वो । वित्थिन्न-कडीबद्धो तणु-मज्झो [१३४]मुच्छवामुणिट्ठो(?) य समचतुरंस-सरीरो पुरिसो भद्दो त्ति नायव्वो । थिर-घण-[१३५]उवियत(?)सत्तो दीहोरू गूढ-संधि तणु-मज्झो सुहुमो पलंब-बाहू मालव्वो होइ नायव्वो ।

एवं अन्नाणि विविधाइं दुपय-चतुप्पद-णर-सुर-विज्जाधर-नाग-मिहुणाणि य निरूवियाइं सलक्खणेहिं । तहेव फुल्लावलि त पउमलता-वसंत-सागर-तरंग-तरु-निवह-[१३६]पवर-पउमसर-महिधर-वर-भवण-विमाण-सयणासणाइं वा ईहामिय-उसभ-करि-तुरग-मगर-मयूर-रुरु-चमर-सहि(?सीह)-संवर-सुग-सारिग-चकोर-पारावत-णव(?र)-किन्नर-गंधव्वादीण य विभत्तीओ रह-सगड-सीय-संदण-खंधावार-वणाराम-काणणाणि य निरूवियाइं । अवरेहिं त [१३७]गो-तन्नय [१३८]कन्नाग [१३९]सुन्नालियासु आढत्तो हं वन्नगेसु चित्तेदुं [१४०]यविय(?) तिय कुवियातियकुव्विगा(?) सोहणाइं, तिन्नि उदग-थाणाइं उत्तम-कमियस्स(?) य तन्नगो सोय (?) पडिसुद्धा सुवट्टिया कदा पुव्व-वन्नगं व सव्वस्स मधुरा संजदा, एवं णगा पुण, तं जहा, लच्छोवदेस-निप्फन्ना कंचि थंभिया सेडिता हरिताल-गुलिका-कुंकु-कुट्ठ-चीणपिट्ठं [१४१]राय-वधो हिंगुल गांगेरउ लक्खा मसी य तत्थ वन्नग-विसेसो हरिताल-सेडियाए कंडग-वन्नयं [१४२]हरिताल-सेडियाण गरुएण य माणस्सिललयं(? मणसिलयं), हरिताल-सेडियाए य पत्त-वन्नयं, [?....] सेडियाए वालय(?)-पट्टएण य कावोतं या(?)-सेडियाए लक्खविआए पउमराग-वन्नयं, [१४३]हरिताल-गुलियाए सेडिया- वयाणवियाए(?) वेत्तोदयं । एत्थेव गेरूय-लदाए पियंगु-वन्नयं । सिंदूर-सेडियाए सिंदूर-गब्भ-वन्नयं, हिंगुलय-सेडियाए हिंगुलय-गब्भ-वन्नयं,[?]सेडियाए(?), गेरूय-

गुलिदावदूसियाए तुसार-वन्नयं, पत्तेय-वन्नेसु वि केइ वच्छा (?) अत्थि ।

एदेसिं च सव्वेसिं पि वि(?व)न्नाणं अणुरूव-ति-भाग-वन्न-जणणीओ पेलव-वन्नएसु वट्टणाओ हवंति ।

भविदत्थ(?) वच्छ-पादया(?)-वन्न-विसेसो वि ता मे तत्थ वब्भोमिया(?) । चिंतितो(?ताइं) इत्थ चित्त-कम्म-दोसाइं, ते जहा, दुद्दिणं सीदवादं उक्कट्ठं छुवंति पि(? भि)त्ति-कुड्डु-दोसं चेति । इमे अट्ठ गुणा संजोएमि, तं जहा, मधुरत्तणं वट्टणा सुकुमालत्तणं [१४४]वट्टण दिट्ठ संठाणं, इंगिदाकारं, देहालंकारं चेट्ठिदं ठाण-लंभं चेति सोडीरमवट्टंभो(?) कीरइ, वीरत्तणं च पुरिसेसु, तणुयत्तमेओ(?) अत्ताविय-विक्कह(?)-भावो य इत्थीसु। सोभाए खचितं किंचि सोभायवट्टिदं विवित्तं [१४५]समुत्थं च, खय-वट्टीसु दुक्करा भूम पट्टि-पमाणं लेहा तह वन्नयक्कम-विसुद्धी वेसालंकारेसु य देवीसु य संजतं सुद्धं एवं [१४६]खवद्धि वट्टि विसुद्धी [१४७]मुणिज्जइ । अवि य—

कुज्जा मणोचियं किंचि, कुज्जा पमाणओ जहा ।
[?...] य रमते दिट्ठी जहा य न विणस्सति ॥

विसेसेण य मुह-णयण-नासासु मधुरत्तणं करेमि । [१४८]अवि द—

सुहमुद्धं सरीस्स, सव्वं वा मुहमुच्चते ।
ततो व णासिया सिट्ठा, णासियाओ वि लोचणे ॥

हत्था पादा कन्नगा अणलंकिदा दुमणिज्जा ।
कट्ठवेविय-विट्ठं(?) वत्थप्पिदति(?) दुक्करा ॥

चित्ते(?त्तं) लक्खण-जुत्तं मधुरत्तण-विरहितं न सोभइ ।
तक्खणं(?) पि हु [....] महुरत्तण-संजुत्तं चित्तं ॥

एवं सव्वहा मधुरत्तणं दोसे च्छादयति। जं पुण मधुरं सलक्खणं च तं पहाणतरं ।

अविद, अत्र विसेसा णं चित्तकराणं जं चित्तकम्मस्स जं पुण कीरदि सगुणं तं भन्नइ उत्तमं चित्तं । [१४९]उ ते तु चीणपिट्ठं लक्ख-कुंकुम-बहल-हरितालं जं होइ चित्तकम्मं तं गामेल्ला पसंसंति । चत्तलेहा(?) मधुरा य वट्टणा सुट्ठिदं च पादेसु जं होइ चित्त-कम्मं तं आयरिया पसंसति । निउणा अच्छि-वियारा [१५०]णे(?णि)उणा गई णिउण-चिट्ठ पब्भट्ठं, निउण जणे च्चिय जाणइ ण एस विसयो खलु [?अण्ण]-जणस्स । एवं अहं चित्त-कम्मस्स गुण-

दोसे जाणंतो निउणं चित्तेमि[१५१] सव्व-वन्नयं मधुर-वट्टणावट्टितं विसेसओ लक्खाणिमायं(?) चित्तं । किंतु नाणत्तं पढमं [१५२]चित्त-कम्मस्स धुरे[१५३] देवच्छंद-गदा सीहासणत्था परियंक-समुस्सेहा पुव्व-लक्खण-जुत्ता जिण-पडिमा निवेसिता सिरिघरं च ते ततो (?.....)चित्तकम्मं एवं गत्तावरधिच्छेद(?) पणासंजुत्तं(?) णिमहितं मो ।

अन्नदा य ममं **सम्मयदेवो** आगंतुं भणति— सामि ! सुदं मया इह गमणागम-वियारीणं चेडियाणं सगासे जहा किर सुदं **तारावदीए** धम्मवाणियाणं चित्तसालाए [?केण-इ चित्तगारेण] अतीव सुंदरं चित्तमारद्धं, णिम्माद-सारं वट्टइ । तस्स दंसणत्थं सा अज्जं इहं एहिति । एयं मे आवणगदस्स चेडीए सिट्ठं । तं लट्ठं जायं तुमं पि ताव एत्थ चित्तकारग-वेस-पडिच्छन्नो उप्पकम्मक(?)विलग्गो तं इहागतं जहा-सुहं दच्छिसि य । सा वि तुमं तओ अवस्स उवसमइ जइ कट्ठभूता ण होहिति । तं च सोउं दु(?तु)ट्ठो हं जाओ। तओ हं कासाय-कुप्पासय-संवुत्तो उक्कसिय-गाढ-णडिय-चूडी(?डा)बंधो असोग-किसलय-कत-कन्नपूरो विज्जाधर-पट्ट-दुपडंतय-नियंसणो चित्तकारय-वेसधारी कु(?तू)लिया-गहण-व(?अ)ग्ग-हत्थो चित्त-मंचियारूढो कंवल-चापय-पाणि य सज्ज-रस-वाविदेणं हत्थ-गएणं कोसएणं रूवाणं थंभणोथुप्पादण(?)-करण-वावडो तीयागमणं पडिच्छंतो अच्छामि ।

ताव य सा वि कतोसारणा परियण-घणाणुयाता सहीजण-संपरिवुडा आगदा चित्तगेहं **तारावती** । पविसिऊण य अंतो जिण-पडिमा-कयप्पणामा कमेण आढत्ता चित्त-कम्मं दट्ठुं । चिरं व पेच्छंती [१५५]विम्हिय-मुहला य चित्तं चित्त-पुत्तलिया इव संवुत्ता । तओ सा सहीसु पुच्छिया— सुयणु ! अम्हं पि ताव चित्त-कम्म-विसेसं कहयह । किं अत्थि दट्ठव्वं ति । तीए भणितं— लक्खणं [१५४]मापूरितंगं(?) वन्नग-विसेसो य दीसइ । सहीसु भणितं— मधुरत्तणे ताव दिट्ठी पसज्जति, वन्नगेसु उज्जा(?ज्ज)लत्तणं सुविभत्तिता य लक्खिज्जइ। लक्खे(?क्खणे)णं पुण चित्तस्स को अवियारो ? । तीए भणितं— लक्खणेणं विणा रूवं चेव ण णिप्फज्जति । कारावगस्स य लक्खण-मंतं गुणकरं लक्खण-रहिते लच्छ(?क्ख)स्स लच्छा(?क्ख)वेंतस्स य दोण्ह वि हाणी । अवि य,

सुपतिट्ठियम्मि भागा अइ [१५६]किस्सए(?) कारयस्स धणहाणी ।
विसमट्ठितम्मि वसणं पियलं(?) अप्पाउयं चित्तं ॥

तं पेच्छ इमं चित्तं । [१५७]चित्तेरहं अतीव-बहुजण-समम्मि विव णिण्णुणत(?) विभावित-प्पभावितप्पदेसं(?) । अवि य,

ससति व फुरति व भणति व, [१५८]पच्छिच्छेदेहिं(?) नातिउयति(?) व्व।
सज्जीवं पियं दीसति, लीला-गति-विब्भमादीसु ॥

किक्कंडगा-वट्टिगा उ, सुइगा वन्नगा रागयादिउ(?) ।
भूसियाउ अभिपरमट्ठं(?) च रूव-कम्मं कट्ठबद्धं पि ॥

[१५९]वमसुसु(?)-विभत्तं वल्लि-लता-गुम्म-कुसुम-तरुवरा य ।
फुरंति च अक्कमंति च धरणि चदुप्पद-मणुय-जाईओ ॥

सुविणिट्ठाइं सलिलासयाइं सेल-सिहराणि य पसन्नाणि च ।
पच्चक्खंतरं गायंति व पाणियाइं मम भोगाणि ॥

ववत्थाइं पुरति व रुक्ख-पलवास(?) किरणाइं पिव ।
भूसणाइं [१६०]लभंति मम व हसंति व जोसिता(?) सुहाइं ॥

अहो य विचित्त-कम्मे वि पासाद-भवण-गिहाणं वत्थ-सलक्खणो दंसितो खत-पूरित-पुव्वरित पभूत [१६१]पंगू य [१६२]रक्खसिंद सोमीइसाणी व वइदेविं(?) णिविट्ठ देवतायायण(?)-अग्गिमित्तजम्मकहपगरणे(?) रतिमित्त घरवारुवारुलिपाणघरसलिलालंजरवायव्वा(?) त सालक्ख(?) सोम्म कोट्ठागार दूसघरालंकारयाणि गाढाणि चिट्ठाइ (?) ।

ताहे सहीसु भणिदा— किमिदं ? को वा गुणो सम्मीसाणंद(?)-पवासु ? तीय भणितं— पसत्थ-वत्थ(?त्थु)-लक्खणं । अवि य,

उदगपाई पसत्थ, [१६३]सोमप्पवा अत्थकरी,
[१६४]इसाण पभुत्तत्तणकरी, ईदा(?) विट्ठिकरी,
अग्गेयी अग्गिभयकरी, जम्मा मरणभयकरी,
णेरती छुहा-भय-करी, वारुणी य सलिल-भयं,
वायव्वोपकप्पवाए(?)य पाहुणगादि-भयं विवित्तासु वियितव्वा ।

एस संखेवतो गुणो वत्थूण ति । भणदि य— वाहो(? अहो) चित्तस्स चित्तया ! पहाण-लक्खण-जुत्तं व इमं चित्त-कम्मं । किंतु एक्को दोसो। चित्तकारेणं [१६५]सउद्धेण(?) चित्तितं चित्त-कम्मं ति ।

सहीसु भणिदा— पिय-सहि ! किह एदं पि नाम जाणिस्सइ ? त्ति।

तीए भणियं— सुणिज्जइ चित्तकारो किर णियय-पयतिं अवस्स

[१६६]दायेदि । तेण कारणेण जाणामि, पेच्छह हरिसत्थाण-गदाण वि रूवाणं मुहे णयणेसु य विक्कवत्तं दाइयं ।

तओ तीए एव भणिए तासु पुच्छिओ हं– हे सुय[ण] ! अत्थि किंचि एरिसं जं अज्जदुहिया आणवेइ ?

मया अउम(? य उ स-)हासेण बाहिर-सट्ठु(?त्थ)ताए भणितं– एवमेतं, अभिनव-कालंमे(?कालम्मि) पिया सहिभावे नियं(?) तदा तीए उक्कंठिएणं इमं चिंतितं(? चित्तितं) चित्तंमे(?चित्तम्मि) ।

एवं च मम वयणं सोऊणं तासु भणित– साधु कतं । अहो ! अज्जदुहियाए जाणितं ति ।

तओ अहमवि ममवट्टिओ(?समवत्थिओ) परम-विम्हिओ य जाओ [१६७]तं च सुट्ठुयरं निज्झायंतो ण तिप्पामि । तग्गत-मणसस्स य मम तं णिय-च्छंतस्स अणंग-सर-सल्लिदस्स हत्थातो पडियं मे तं वन्नग-सरावं तीए देहासन्नेण दुफ(? उप्फु)संतं । तीए वण(? ण्ण)ग-कलंकिद-वत्थाए परम-कुविदाए सभिउडि-बद्ध-वदणाए सलित(?)मुल्लोकयंतीए भणिदं– अहो ! अविणीता धम्मवाणिय त्ति । केवलमागंतुगा तेण वासोयामि(?), सन्नद्धा (? अन्नधा) अवस्सं सिक्खापदं वो उवदिसंती । एवं भाणिदुं परम-कुविदा [१६८]तुरगोरा(? तुरगारूढा) गदा स-भवणाभिमुही ।

तओ अहमवि [१६९]मुखतं(?) गओ। भणिदं वयंसेहिं मे-एयम्मि ताव कज्जं एवं परिणतं । इदानिमन्नोवादं(?यं) चिंतेह । **भागेरहियसेण** भणितं– नत्थि एत्थ उवाओ, जा अज्ज-दंसणेण चेव सन्नो(?मन्नू)वगदा दुक्ख-साधणिज्जा हु सा । **भागेरहिदत्तेण** भणितं– अप(?ध) किन्नाम दंसणं सक्कं जं [१७०]कादुं णिच्छिओ न चाएइ एवं सा य विरहिदस्स दु तणं पि गरुयत्तणमुवेइ ? । सज्जा होह उज्जाण-विणिग्गदं चिय एदं समक्खिवामो अहवा सुरंगाए त्ति । मया एत्थ किंचि पच्छंदं, तं ताव उदिक्खामो । जइ ताव तहा कज्ज-सिद्धी तओ सुंदरं, अह ण होहिति तओ हरणमवि व[?व]सीहामो त्ति ।

तओ गदेसु केसु वि दिणेसु दारिट्ठो[१७१] ममं भणइ– सामि ! णागरगा चित्तगारगा आगदा, ते वो दट्ठुमिच्छंति । मया य पविसंतु ति अणुन्नाते पइट्ठा। पणाम-पुव्वं च मम तेहिं उवणीद-चित्त-पट्टगा पसारिता, बेंति य–पेच्छह

अम्ह-संतिय हत्थ-कोसल्लं ति । दिट्ठं च मया चित्त-कम्मं सयं पिव [१७२]वीस(?स्स)कम्म-निम्मविदं । तत्थ य निवेसिदा धुरे[१७३] णगरी **कोसला**। तओ अस्सेण अवहीरमाणो अहं चेव लिहिओ, हंसोरसिय-सर-गतस्स य मम संतियं चरियं [१७४]समासओ णिभणि(?रूवि)तं । तं च दट्ठूण विम्हिओ जातो हं– [१७५]कओ एदे लच्छा(?) मम संतियं चरितं जाणंति ? तओ **सम्मतदेवेण** भणितं– अज्जपुत्त ! किं ण जाणह इमं **अंसुमंत**-संतियं चरित-चिट्ठिदं ?। जाणामि से हत्थं । किं च मम [१७६]ते अवणामं तं कदं इमं खु तं [१७७]इदं लिहिदं । अदूरे तेण भवियव्वं।

तओ य एक्को चित्तकरो सर-वन्न-भेदणि-गुलियं मुहाओ मोत्तुं पडिओ मम पादेसु । संजाणिओ मे **अंसुमंतो** । तओ मया ससिणेहमवतासिओ पूइतो य मे सवयंसेण । तस्स य समागमे समधिगतं पिव पयोयणं मे । भुत्त-भोयणावसाणे य पुच्छिओ मया– सोम्म ! किह सि मम देवतेसु इहाणीओ? तेण भणितं– अहं तया [१७८]चेव वहिति (?) तुमम्मि हत्थिणा अवहिते **णंदोवणंद**-सहिओ तुह मग्गणत्थे विणिग्गओ जणवतेसु परिब्भमंतो **कम्मणिज्जं** संपत्तो । तत्थ य मे अतिसयनाणी सुविहितो पुच्छिओ तुह कज्जे। तेण भणितं– वयंसा ते **भागेरहिदत्ता**दिणो **भरुयच्छं** गदा, ताण मिलीहिति सरद-काले । तओ मया एदेसिं पासे माणुसो लेहेसु पेसिओ, जइ वो अज्जपुत्तो मिलिओ हवेज्ज, अंतरे वा मए किंचि कज्जं हवेज्ज से तो मम लिहेज्जाहि । एस अहं **कम्मणिज्जे पुण्णभद्द**-सत्थाह-नीसाए अच्छामि । णवरि कस्सइ कालस्स लिहिदं मम **सम्मयदेवेण** सिग्घमेहि त्ति । तओ **णंदोवणंद**-सहिओ आगओ हं । तत्थ य मे अच्छंतेण विणोद-हेउं एदं तुह संतियं चरितं पडए समालिहिदं, इहमागदेण य मे णागर-चित्तकाराण दाविदं। तेसु य लेह-पडितुट्ठेसु भणिदं– अत्थि एत्थ धम्म-वाणिओ [१७९]चित्तग-चित्तकरो, तस्स दंसिज्जउ । धम्मवाणिय-सद्देण य मया **सम्मतदेव**-पउत्थ-लेहत्थ-पच्चएणं जाणिता तुब्भे । तुह कोउग-उप्पादेउकामेण योग-गुलियाए परावत्तियं [म]ए रूवं, आगदो य ते पाद-मूलं । संजाणिओ य मि लेह-दंसणेणं **सम्मतदेवेणं** ति ।

तओ मया पुच्छिओ– कत्थ ते **णंदोवणंद** ? त्ति।

तेण भणितं– अद्ध-पहे कारणेणं विलंबिदा, अचिरेणं एहिंति ते पाद-मूलं ति।

तओ गदेसु य केसु-इ दिणेसु अहं अवलोयणक-गदो जणवादं सुणामि, अहो अच्छेरयं तावसा किर केवि अइसय-नाणिणो **कोरिंटग**-वणुज्जाणे संपत्ता । ते किर जणस्स-ऽणागदातीत-वट्टमाणाइं संपादयंति । अहो नाण-सत्ती !

नवरं च मया **अंसुमंतो** सद्दावेउं भणिओ— वयंस ! ण जाणसि ममं **तारावदि** सणसंभाविदं(?) जउ एवं निव्वावी(?वा)रो अच्छसि ? किं न सुतं ते एदं कारणं ? ति । तेण हसिऊण भणितं— सच्चा हुं इमा गाहा सुणिज्जइ। तं जहा—

सुलभे जणम्मि णासहि वारिज्जसि
जत्थ तत्थ ते पसरो ॥

[१८०]वरह जं च विसूरसि
[१८१]अणंग-भेदेण(?) सो वस्सो ॥

तं तुब्भे अन्नत्थ वि सिद्ध(?सुट्ठु)तर-रूवासु पत्थिज्जमाणा [१८२]विअद्ध-गुट्ठि करेह, इमं पुण पुरिसव्वेसिणि त्ति काउं सुट्ठुतरमभिनिवेसं गओ सि । [१८३]को ते एस एरिसो हतहावो(?) ? किं खु इमो वितिओ **पुंडादेवि**-पुव्वंतो(?पच्चंतो) आगओ त्ति । मया भणियं—वयंस ! जइ एस नत्थि तओ अन्नासु वि मे ण कज्जं ति ।

तओ तेण पहट्ठ-वयणेणं भणिदं— अज्जपुत्त ! अलं विसादेणं । धिर्तिं करह । संपाडियं वो मया पयोयणं ति ।

तओ मया सहरिसेणं भणितो— भद्दमुह ! कहय, किह ते संपादिदं? ति ।

तहा सो भणइ— सुणह, ममं पुव्वं चिय एदं कज्जं लेहेसु **सम्मतदेवेणं** निवेदितं । तओ हं इहागओ संतो अन्नत्थ आवासं ओगिण्हिऊणं पढमं चिय चित्त-कम्म-कोसल्लिएण **तारावर्ति** समल्लीणो । परितुट्ठा य सा मम संतियाए लेहाए । तीए य चित्त-कम्म-कुदूहलाए सव्व-परियण-समक्खं मम अनिवारित-प्पवेसं समादिट्ठं । ताव य हं तीए परम-सन्निकरिसं गदो । मम वयण-बुद्धि-पन्नासेसु य जणणि-सहिओ अतीव कुसइ(?) दित्नं च मे दु दंसणं । इहागओ च्चिय अहं अभिक्खणं तीए दंसणं देमि । अज्ज य अहं अल्लीणो से आवासं, ण य तं तत्थ पेच्छामि । पुच्छिओ य से मया परियणो—

कत्थ रायसुया ? तेहिं भणितं– सा अज्ज काइं पि हिदएणं अणुचिंतयंती दुम्मणो(?णा) पमह(?द)वणे अच्छइ त्ति । तं सोऊणं पविट्ठो हं पमदवणं । दिट्ठा य मे सा तत्थ पडय-लिहिदं चित्तकम्मं निरिक्खमाणा कट्ठकम्म-कदा इव जक्खिणी, लक्खिता मे पगलिंतंसु-नयणा तं चित्त-पडयं निज्झायंती चेव रोवइ । किंतु तहागदाए वि आभट्ठो हं तीए । निज्झाइयं च मया वि तं चित्तकम्मं । न जाणामि कस्स वि उवदेसेणं विज्जाधरीसु अहमहियाए हीरमाणस्स अज्जपुत्तस्सेव चरिदं नीसेस नामं च पागडं लिहिदं, उप्पत्ती य वो **हरिवंस**प्पसवा । तं च मे दट्ठूणं चिंतित– केणेस पच्छन्न-रूव-चरिदो वि णाम एव-निउणं निवेदिदो ? एयम्मि देस-काले आगदा तत्थेव **तारादेवी**, तीए जणणी । तीए ऊसारित-परियणाए भणिओ हं– पुत्त ! तुमं च दाव बुद्धिगुणोववेओ, अत्थि मे तुह उवरि सव्व कज्जेसु पच्चओ वीसंतो(?भो) य । तेण ते इमं रहस्स-कारणं परिकहेमि । एसा मम दुहिता अइसय-नाणिणा समणेणं अद्धचक्कवट्टि-पिउ-भारिया आदिट्ठा । सुणंतीए य से समक्खं तेण तस्स वंसुप्पत्ति-प्पभावो रूवं चरिदं च विज्जाधररूवगतस्स वण्णिदं । तं च एसा सोऊण अन्न-पुरिसस्स नामं पि सोउं नेच्छइ । पिउणा पुण तं नादुं सत्थं(?च्छं)दा विसज्जिया । किं-कारणं, जो विज्जाधर-लोग-गओ कओ सो एत्थ एहिति । एसा पुरिसव्वेसिणी जत्थ तत्थ व कुलय-पुरिसे भावं बंधतु त्ति सच्छंदा सयंवरा य विसज्जिता । ण य एसा तं मोत्तुं अन्नं मणसा वि इच्छइ । परमे य जोव्वणे वट्टइ । तस्स य जीवा(?जहा)सुयाइं उप्पत्ति-रूव-चरियाइं चित्त-पडेसु आलिभा(? हा)वेदुं तग्गत-मणा णिरिक्खमाणी आसा-मित्त-पडिबद्धा कालं गमेइ । भणिदं च तेण साहुणा, **कोरिंटग**-वणुज्जाणे से तेण सह समागमो होहिति त्ति । तेण कारणेण एसा तत्थ णियतं(?) पधावइ। अज्ज य पिउणा भणिदा– कीस कंचि रायसुतादिं ण वरयसि त्ति । तओ तग्गत-सा(?भा)वा रोइदुं पयत्ता । पुणो य एसा सोववासा सुमिणे देवदाए भणिदा– जो ते अंतरा चित्त-कम्म-कोसल्लएणं अल्लियति त्ति सो ते तेण भत्तुणा सह समागमं काहिति । **कोरिंटगुज्जाणे** सो य । तुमं तं चिंतेहि(?ह) ताव बुद्धीए एदीए तेण सह समागमोवायं । तओ मया भणिदा– देवि ! [जं] [?आ]णवेध चिंतेहामि उवायं ति । एवं वोत्तूण णिग्गओ हं । चिंतितं च मे– एसा दढ-ग्गाहेण विज्जाधर-लोग-ग्गओ त्ति अज्जपुत्तो हिदएण परिग्गहिओ । तं च एदाधसि(?) जति अणुवाएति ण दंसेमि तओ कदाइ ण पत्तियज्ज एगओ साति(?)-मोदग-दिट्ठंतेणं । ताहे य मया तेसिं

हिदया[णु]कुलं उवायं चिंतेउं पुणरवि गंतूण भणिया देवी—देवि ! आगया किर **कोरिंटग**-वणुज्जाणे अच्छेरय-लच्छि-संपन्ना सव्व-मणोगत-संवादका केवि किर अतिसय-नाणिणो तावसा, ते किर विज्जा-पभावेण सत्ता सक्कमवि सुरलोगाओ इहाणेदुं, किमंग पुण अद्ध-चक्कवट्टि-पियरं विज्जाधर-लोग-गतं ति। तीए तं रुइतं । गदा य मया सह चित्तकुसुम-कोरिंटग-वणं रिसि-सगासं च । ते य तीए पुच्छिया । तेहिं भणिता— देवि ! जाणामो अम्हे वि तं तिभुवण-विक्खातं महा-पुरिसं ति । तीए भणितं— भगवं ! तुब्भे अब्भुत-माहप्पा सुणिज्जह । तं पुण अत्थि ते कस्सइ आहव्वण-मंत-विज्जा य ओसही वा जेण तं इहाणेज्जह ? । तेहिं भणितं— एवं नाम अत्थि । दे कस्स-इ आहम्मणा मासत्ती(?), [?.....]आणेह सुए सूरोदय-काले इहइं **तारापतिं** कन्नं । आणेह य पुव्वतरं सव्व(?वि)भूतियं बलि-कम्मं । तओ अज्ज पओस(?से) पुव्वाणलं नाम तेसु अग्गि हुणिस्सामो । तेण य पदोसिगओ(?) होम-कम्मेणं कंपिदं विज्जादेवय-[१८४]बोधविदमवि(?) देवतब्भत्ता(?) करिस्सं, पच्चूस-काले इहाणेहामो । विधिहिय(?) अणागतातीत-वट्टमाणेसु वाकरणेसु य पत्तियाविया देवी । तओ सा परितुट्ठा सह मया स-गिहं पडियागया । सज्जज्जती य संपदं बली निज्जिहिति अज्ज, तहिं सुय **तारावती** तहिं गमीहिति । तुब्भे(हिं) वि अज्ज रयणीए तहिं गमीहिह त्ति ।

मया भणिदं— वयंस ! सुंदरं जादं । ते रिसिणो केवि कवड-प्पयाइं(? प्पओया) नियय्मभिरुइतं अज्जं(?अण्णं) किं पि अद्ध-चक्कवट्टि-पितरं तहिं ठवेहिंति, विभंग-नाणिणो वा वितह-दंसणा हवेज्ज, तओ मया तत्थ किं करणिज्जं ? ति ।

तेण भणिदं— विणासिता हु मया ते वितह-दरिसणा । अत्थि तेसिं अवितहा सत्ती । पुहवीए य संपदं एग एव अज्जपुत्तो अद्ध-चक्कवट्टि-पिता आणत्तो भावसिद्धेहिं । ण वीसं(? विइओ) एक्क-स[म]एणं एक खेत्ते अद्ध-चक्कवट्टि-पितरो अत्थि । किं च तुब्भं एदेण पेयालिएणं । तुब्भं सा, णत्थि अन्नस्स । अज्ज रयणीए तत्थ गंतव्वं ति ।

तओ हं तस्स वयणं पमाणीकरेउं ट्ठिओ हं, विदिदाइं चिय मम **अंसुमंत**-चरियाइं । चिंतेमि य[१८५]— अहो ! से सत्ती अणन्न-सरिसा । आणिएणं चिय पुव्वदरं पयोयणं धरेउं पच्छा मम दंसणं दिन्नं । अहो ! जुत्ता

इमा गाहा एएण सफला कदा, जहा,

ते मित्ता ते[१८६] मित्ता, जे इह पभुणा समीहितं संतं ।
कज्जं अकालहीणं णवरि कतं चेव दंसंति ॥

तओ संपत्ते पओस-काले **अंसुमंता**णुमते अहं गहिद-खग्ग-खेडय-पाणी विहित-रुइर-विज्जाहर-सरिस-वेसो गओ **अंसुमंतेण** सह उज्जाणं । तत्थ य तेण निद्दिट्ठे पदेसे पढम-रयणिं गमेउं पभात-काले पवर-पादवारूढो साहुलि-[१८७]विव गोवित-सरीरो रिसीणा सर-च्छोह-मेत्ते वि(?ठि)ओ हं । तओ पभा[या]ए रयणीए **अंसुमंतो** गओ णगरं । तओ तेण सहिया देवी **तारा तारावतिं** कन्नं विहिद-रुइर-वेसं सपरिवारं घेत्तूणं सिबियाए आगदा रिसि-सगासं । पणदा य सा सह सुदाए रिसीणं । तेहिं य सव्व-पयत्तेण आलिहिदं रयणीए(?धरणीए) पंच-वन्नियं मंडलं विसालं । ततो तम्मि विविध-वन्नग-विभूसिए सव्वोवहित-बलि-कम्मे पुव्वाभिमुही निवेसिता **तारावई** । जालितो य से पुरओ अक्क-समिधाहिं तेहिं हुयासणो । ताहे ताण रिसीणं एक्को आहुइ-पुन्न-सुवय-हत्थो महता गंभीरेण सरेण इमं अलियक्खर-णिबंधं विज्जा-रूवं पढिउमाढत्तो, जहा—

नमो ते विगत-फडा-मउड-कडप्पं डंडं,
तडि-तडि-कुडिल-गदीं वर-धरण-महा-भुयग-पतिं ।

इमं गिरिमाणय वर वरद वरह वासुगि ।
आकड्ढाकड्ढ आणय विज्जाधर-लोग-गदं,

अद्ध-चक्कवट्टि-पियरं, इहाणय भय-तारियं । स्वाहा ॥

एवं एयं विज्जं पुणो पुणो पढिउमारद्धो । अह तं सुणमाणस्स मम हिदए चिंता समुप्पन्ना-को वि मन्ने एदेसु एत्थ उवयोग(?गो) करणिज्जो सो य सुट्ठु सिलिट्ठ-संधी होहि त्ति । जइ पुण मम संपदं कोइ आगास-गमणोवाओ होंतो,[१८८] तओ सिलिट्ठ-संधी हवंतो, विज्जाधर-वेसाणुरूवं चरिदं दरिसिदं होंतं । एतीए य उवगओ बहुमओ होंतो । अहो ममं(?अहं) मह पुन्नेसु अपुन्नो चेव जस्स मे मणोरहा जह-चिंतिता ण पूरेंति । इतरहा एदेसु वि भणिद-मेत्तं मग्गह(?) इह इमुज्जाणेसु गदो होंहिति(? होंतो) अद्ध-चक्कवट्टि-पिया । एदीए पुण चिंतेदव्वं जाव दूरं आणिदो सो एदेसु ण सक्किओ इह मंडले अवतारेउं, अहो ण सुंदरासेवी(?) । एवं चिंतयंतस्स मम कन्न-मूले अइरूव(?)-वाया पादुब्भूया—वच्छ **वसुदेव** ! सुमराहि तं चेवलियं(?

वेरुलिय)**माल**-वियाह-समय-दिन्ना पुरा पम्हट्ठ-पदक्खरं भगवतिं **महामाणसिं** विज्जं ति । एव-भणिदे केणचिदेणं **ताहे** मे दव-दिन्नोवयोगेणं सुमरिता सा **महामाणसी** अविकला । सुमरित-मेत्तीय य तीए अहं गरुलो इव णदं(?भं)-गणं समुप्पइत्ता मण-परिणाम-वसेणं **तारावति**-सगासं समोवडिओ । वयंसा य मे अणुइदाकास-गमणेणं ममं अजाणमाणा उज्जदायुधा मम वधाय समुद्धाइता। ते तत्थ **अंसुमंत**-वयणाहूदा सव्वे बेंति-ठाहि ठाहि रे रे कुविज्जाधर ! अम्हं पि नाम ससि(?सामि)णिं हरिउमिच्छसि त्ति । वहिणादुकाका(?वहणाय उज्जुआ) य कहेंति(?कहिंचि) साभिन्नाण-वयणेसु जाणाविता, दंसिया य दव्व-प्पभावा **कुबेरक्कंता** मुद्दा । तओ ते तस्स पडिच्छायणा-हेउं असि-वर-खेडेण पणच्चिदा परम-हरिसिता सव्वे पणदा य ममं ते सविणयं । **तारावदी** य लज्जा-मुंविद(?मुद्दिद)-णयणा सलिलतमवलोकयंती न तिप्पइ मे । वक्कंता य तहा स(?) रिसिओ खणेण अद्दंसणं गदा । तओ मया परम-तुट्ठेणं **तारावति-तारा**-विम्हय-निमित्तं विउव्वियं **महामाणसि**-विज्जाए विमाणं । तत्थ य सवयंसओ सह **तारा-तारावतीसु** सपरिवारासु समारूढो हं । तओ उप्पतित्ता तीय संतिए पमदवणे समोवईओ । तं च कारणं अखिलं **ताराए** निवेदिदं स्नो । तेण य संतेउर-पुर-पउर-पुरोहिएणं परम-तुट्ठेण महता विभूतीए विधिणा गाहिओ हं तीए पाणिं ।

ताहे पुण्ण-मणोरहो सुरवधु-सहितो इव सुरो जहा-सुहं अभिरमामि । तओ हं पुव्व-सुकय-फलेणं पाविऊणं परं पीतिमुवागओ हं । ततो बिदीय-दिणे **अंसुमंतेण** सह उवागदा मम सगासं **णंदोवणंदा** य । पणमंता य मया अवतासिया, भणिया य— कत्थ वो एदच्चिरं अब्छिद(?ह) त्ति । ते दु ईसिं पहसिउं भणंति— सामि ! इहेव चिरं ठिया मो । मया भणियं— णूणं निन्नेहा संवुत्ता वो जे इह चेव संता दंसणं ण देह त्ति । तेहिं भणियं— सामि ! **अंसुमंतस्स** एस दोसो जउ भे अम्हे दंसणं ण उवागया। **अंसुमंतेण** भणितं— अज्जपुत्तस्सेव एस दोसु(?सो) त्ति । मया भणितं—कहमेतं ? ति।

तओ सो मे **तारावति**-विरहे सणीयं परिकहेइ, जहा, तव पढम कामाकल्लय-काले मम **सम्मयदेवेण** जहाभूतं लिहिदं लेहेसु । तं च सोऊणं मया इहागच्छंतेणं उवायं कादु-कामेणं पढमं चिय परियत्तित-रूवा **णंदोवणंदा** पविसंता चेव अन्नत्थ ठविया मे । **तारावतिं** च चित्तकार-रूवेण ओलग्गामि। विविधाणि य सुरु(?रं)गादी य हरणोवायाइं चिंतेमि । अन्नदा य एएसिं

कोरिंटगुज्जाण-गदाणं पासं संपउ(?) किंचि उवायं काउकामो अंतरा य एक्कए गहण-वण-प्पदेसे कुसुमित-लदा-वण-गहणे दिव्व-रूवं देवदं पेच्छामि । तीए दु मया संभंतेणं कदो पणामो, भणिदा य मे कदंजलिपुडेण—भगवति अमोहदरिसणे ! का सि तुमं ? कओ वा इहमागदा ? सा मे भणइ— पुत्त! अहं ते भगिणी-पइणो **वसुदेवस्स** पुव्वोवकार-पडिपु(?तु)ट्ठा **अच्चिमालिणी** नाम जक्खिणी जणणि-समाणा । तस्स य इहागयस्स **तारावति**-दंसणेण अकल्लयं जायं, तीए दु अलंभे संसय-लग्गं से जीवितं वट्टइ । तं च कारणं ओधिणा णादुं इहागया हं । तुमं च तस्स अद्धसरीरभूओ । तओ मया दंसणं दिन्नं । तओ मया परम-तुट्ठेण भणितं—भगवति ! एवमेयं । तं आणवेह किमिदाणिं एत्थ जोग्गं ति । तीए भणितं— पुत्त ! जहा तस्स उ(?तु)ह च रुच्चइ तह से तं कण(?ण्ण)गं ए[?त्थ] संपादेमि त्ति । मया भणिया— देवि! भिच्चा से **णंदोवणंदा** इह उज्जाणे तुमं[१८९] पडिधत्तिदेवे(?) रिसिरूविणो कता तुमे कण्णोवजंपिकाए लोगस्स [१९०]पसिणाइं संवादयतु । तओ तुह पसादेणं सव्व साहु भविस्सइ । अवि य, इह उज्जाणे रिसिणा तीए पदि-समागमो समाणत्तो । तं सकारणं पूरिदुं भवदु त्ति । एवं मया विन्नत्ते देवीए तह त्ति पडिवन्नं । तओ तीए एदे रिसिरूविणो कदा, संवादेदि य सा जक्खिणी एसु सह गदा पुच्छग-जणस्स पसिणाइं । तं [१९१]चक्कोडं [?व] नगरे पसरियं च रायकुले एवं पउत्तो जणो पुच्छिओ । [१९२]मया य **तारावति**-जणणी पुच्छमाणी तत्थेव णीता । तओ जाता मे कज्ज-सिद्धी । नवरं पुण मंडल-गदाए कन्नाए पुरओ **णंदेण** उच्चारिया अलिय-विज्जा । किं-कारणं परं पच्छा भणीहामो, पेच्छह भो ! एत्थ उज्जाणे [१९३]वच्छ-पुरिसं, अवस्स आगओ होहिति त्ति इहइ अद्ध-चक्कवट्टि-पिता । चिंतितं च मे— जइ पुण देवी अंतद्धिता एदम्मि समए अज्जपुत्तं इह मंडले अवतारिज्ज । ताव य तुब्भे सयमेव तत्थ आगासेणं समोवदिदा । अम्हेहिं य चिंतितं नूणं एस को वि विज्जाधरो कन्नं अवहरिउमिच्छति त्ति। तओ जुद्ध-सज्जा समुद्धाइता, जाणाविदो य तुब्भे अप्पं। विम्हिओ मि चिंतेमि— कओ अज्जपुत्तस्स आगास-गमण-सत्ती जाता ? ताव य देवीए **अच्चिमालिणीए** अंतद्धियाए कधितं मम कन्ने— पुत्त ! एयस्स **वेरुलियमाला** नाम वधू खयर-राय-दुहिता । तीए से **महामाणसी** नाम विज्जा त(?स)प्पयोगा दिन्ना। सा य एयस्स [१९४]पन्हपदा(?विम्हरिदा) आसि। सा य से मया अंतद्धियाए सारिदा । जइ से विज्जा न होंती तओ हं एदं सयमेव अंतद्धिया इह मंडले ट्ठाहवंति । तं एसो तीए उप्पतिदुं

[१९५]इधोपडदो(?इधोवडिदो) त्ति । तओ तीए एव कधिदे तुट्ठो हं । तुब्भेहिं य इहागंतुं वियाहिया कन्ना । **णंदोवणंदा** य एगंतं अवसरिता समाणा साभावियरूवा कया जक्खिणीए अज्ज वो मया(?म) पासं उवणीया । जक्खिणी पुण मम एसिं च अमोहवसित्तणेण कुंडल-जुवलाइं दादुं, तुह य पुच्छणं काउं अद्दंसणमुवगया । तओ मया चिंतितं— एवं णाम [१९६]अणाभोग-कओवगारस्स भगवती निच्चकालमुवकारिणी जादा । अहो ! भगवती **अच्चिमालिणी** पुव्व-भव-बद्ध-सिणेहा इह मम निच्च-कालं पसादसमु(?यतु) सु(?म)ह जणणी विव ।

एवं च **अंसुमंत**-भासिदं सोऊणं भणितं ममा(?या)— सव्वं ममेस दोसो, जओ **णंदोवणंदा** अल्लीणा । तओ [१९७]पू[इ]ता मे सव्वे वि वयंसा। रमामि य **तारावदि**-सहिओ रोहिणि-सहिओ इव तारापती ।

अन्नदा य अहं सवयंसो सह पियाए सपरिवारो एसहिओ(?पसाहिओ) कोरिटंग-वणुज्जाणं गओ । तत्थ य विरचिदाए सकुसुमाए पाणभूमीए पाणं उवजीवामि मधुमत्तो पवर-नाडइज्जासु उवगिज्जमाणो । नवरं च पिया मद-[१९८]चतुर(?) लीला-विलासिणी सयमेव सूसरं विपंचिमासारयिदुं पुरओ तंति-विकड्ढणोणत-सरीरा थण-भार-वियावि(?व)डा वि तिवलि-भंगुरोणामित-मज्झदेसा सुरभि-कुसुमामेलय-सुद्ध-बंधुर-संगहिदुग्गओणदेक्क-गंड-पल्हत्थ-कुंचित-कस(?सि)ण-केसा भारोणमद-सयं-वारुण-पसाधिदायतेहिं नयणेहिं ईसि ममं अवलोगयंती गंधव्व-कन्नगा इव सुगंधव्वा सुद्ध-सुज्जा(?सज्ज)-मुच्छणा-मुच्छिताए विवंचीए कमसो समच्छ(?त्थ)रंती मद्ध(?मधु)-मुहला मधुमास-मधुकरि व्व गाईउं पयत्ता । जहा—

जयदु जिण-चंद-वयणं, सुनिम्मलं पूइतं सुरिंदेहिं ।
जेण अदिट्ठो [?दिट्ठो], बहु-जण-इट्ठो पियदमो मे ॥

किं नु सुकयं कदं मे, अन्न-भवे [१९९]इह भवे य जेणाहं ।
सुर-वर-कुमार-सरिसं पत्ता भवणब्भुदं कंतं ॥

जुवती का मम सरिसा, जादं पुव्वसरं(?) अणंगं वा ।
गगण-चरं धरणी विव, पत्ता पतिं कासवं देवं ॥

एवं च गीदयं सोऊणं भणिओ हं **अंसुमंतेणं**— अज्जपुत्त ! चिरप्पभिई खलु अज्जदुहियाए एस मणोरहो । अवि णाम होज्जा सो दियहो

जत्थ हं गगण-तलुप्पतितं पतिं वलग्गा णिरिक्खेज्जा । तं पूरेह से मणोरहं ति ।

तओ हं पियं अंके विलाएदुं(?) खग्ग-खेडय-सहाओ णहंगणं समुप्पईओ । उप्पयण-समयं च सव्वेसु वि भणियं सहीसु ण सा **वेरुल(?लिय)मालाए** अम्हं मणोरह पूरियाउ(?) त्ति । अह य आगासे वाया पादुब्भूता—

तेसिं सिरी अंक-गदा, जोसिं(?जेसिं) जोव्वण-सुहाभिलासित्तणं ।
सयं विणिविट्ठ-हिदया, जग्गंति से(?ते) दुज्ज(?ग्ग)ता गुरुणो ॥

एदम्मि पअत्थए(?) दिज्जंते अहं गगण-तलं पलोएदुं पयत्तो । पेच्छामि य पंच-रिवुणो अ(?उ)ज्जय-खग्गे णभ-तले ते मम वधाय एज्जमाणे परम-कोव-वियत्त-वयणे, तं जहा— **नीलकंठं, हेपडं(?प्फगं), माणसवेगं, वायुरहं,** [?.....] चेति । चिंतितं च मे— एदे समयं पुणो उवट्ठिता मे । अविसाओ एत्थ कारणं । अवि य,

तिदसपती-रज्जं पि हु सुलभं, अविसाइणो ववसिदस्स ।
जस्सुच्छाह-समग्गं देव-बलं अग्गओ जाइ ॥

ते य मया खत्त-धम्ममुद्दिस्स रभसागया भणिदा-पहरद(?ह) भो ! अहवा [अ]हं पहरामि ति । तेहिं भणितं— अम्हे वि खत्तिया, खत्तिय-धम्मं न छड्डेमो । तं भणाहि, किं एक्केक्कं जोधयिदुमिच्छसि उदाहु सव्वे स[म]यमेव ? मया भणिया— सव्वे वि समयं आगच्छह अहवा तुब्भं रुच्चति त्ति । तेसु भणितं— अत्थि ते सत्ती अम्हं सव्वेसिं समयं जुद्धं दादुं ? ति। मया भणिया— बाढं, समत्थो हं तुब्भं अन्नेसिं च जहागयाणं । ते दु मया एवं भणिदे विम्हिय-मणा सव्वे समयं मोत्तूण सत्तूरूवाइं चिं(?मि)त्त-रूविणो संवुत्ता । दुवे ताव तावस-रिसयो **भरद्दाय-सच्चा** दुवे पुण विज्जाधर-राइणो, एक्को ताव ससुरो **सीहदाढो**, अन्नेक्कं पुण णाहं जाणामि, पंचमा पुण **सीहदाढ**-जणणी देवी **हिरण्णवती** ।

तओ मया तेसिं सव्वेसिं वि गुरु-भावेण कओ पणामो । तओ हं पयत्तासीस-सद्देण भणिओ हं **भरद्दाएण**— भद्दमुह ! एस ते विज्जाधर-राय-चक्क-प्पमाण-भूओ भविस्स-ससुरो खयर-राओ **देवरिसभो** तुह दंसणत्थमिहागओ । एदं णे परम-गोरवेणं पत्थेज्जाह (?पेच्छेज्जाह) त्ति । तओ

मया सबहुमाणं कओ से पणामो । तेसिं च दंसणे भीता समासत्था **तारावती**। तीए वि कतो पणामो । अवदिन्ना य मे(?मो) सव्वे वि धरणि-तलं वयंस-सगासे । **अंसुमंतेण** भणिदं– अज्जपुत्त ! वरं खु दाणिं [२००]एस-किच्चाणं सव्वेसिं महिगोयरत्तं सव्वेसिं वा खयर-भावो । जइ पुण सच्चं जेव तुब्भे गगण-पतितेसु सत्तूसु गहिदा होंता तओ अम्हे केवलं पेच्छया होंता । मया भणितं– एवमेवं ति । तओ तेसु वि वंदिता विज्जाधर-राइणो **हिरण्णवती** य । तओ तत्थ **भरद्दाओ** ममं जयाए(?वे)दुं भणइ– अहो ! सव्व-कालमवि उत्तमं सत्तं ते ववसायो य एवं नाम एक्केण महिगोयर-जुवदि-वावडेणं तुमे पंचण्हं जुद्धाय पडिवत्ती [२०१]ब्भीवयं(?) ते [अ]हो असाधारणं सत्तं ति । ताहे चेव **देवरिसभो** तियसंसइमो(?) भणदि य मं **भरद्दाओ**– वच्छ ! दुप्पणिव्वय पमत्तह [२०२]अम्हे निज्झाज्झया(?) जग्गामो देवी **हिरण्णवती** अहयं च । ण तु अम्हं खणमवि हिदयादो पम्हुससि । किंतु तह भ(?भा)विणा सुते(?) जं सि सत्तुणा वासारत्ते उम्मत्त-पाणं पाइओ, तं अणुवओग-दोसेणं अतीतं विन्नादं मो सच्छंद-ललितत्तेण य दूरत्था विणासितम्मि, तेण णाहामो केवलं मेत्तं, पुण संपयं एदेण तुहागास-गमण-लंभेण अज्ज अतीव परितुट्ठा मो । **वेरुलियमालाए** तुह विज्जं देंतीए अम्हे वि अणुग्गहिदा ण केवलं तुमं ति। तह वि भणामो ते अवणीददु एसा धम्मत्थकामाणं उवघाद-जणणी विसय-सुह-निविट्ठा रति-तण्हा । अवि य,

[२०३]मज्झत्थ दूद-वडियं(?) [२०४]डघरुमसा(?) अच्छहु मणमि(?) गव्वा ।
इहाइ णवरं सत्तमसत्तं(?) नरिंदाण वसणाइं ॥

तं मा एदेसु पमादं वच्चाहि । अवि उदिन्नाउ वि रिवि(?वु)णो वड्ढंति तेसु य अवीसत्थेसु वीसत्था सि पुत्त न हु सुंदरं एयं आसयस्स तु [२०५]दोदेल्लणं असितोपरिहज्जइ(?) तुह पक्ख-पडिवन्नेसु य वाविज्जमाणेसु ण पुत्त एगंत-रदिपरायणस्स भविउं, इंदिय-बल-पराईयं खु पुरिसं व्वपति(? चयति) लच्छी, सयणो, परियणो य मित्ताणि य से अमित्तीहवंति । नियय-वग्गेण वि परिवज्जइ खीण-फलो इव दुमो पक्खीसु, सव्व-सुहि-परिवज्जिओ य निरालंबो सत्तुवसं उवणमइ, सततमणत्थेसु य संजुज्जइ, सरीर-दोव्वलमविसज्ज(?) विसय-विणिज्झिओ इंदिय-वेगल्लं च पावइ । तं एस परमत्थो, मा एक्क सि एस भंजावितो(?), जावज्जीवा य पुरं छड्डेहि । तम्हा उत्तिट्ठ विज्जा-गहणाय ति ।

तओ तेण एवं पलत्तें भणितं मया– अहो ! अणुग्गहिओ हं एदेण गुरु-जणाणुरूवेणं हिदोवदेसेणं । एस अब्भुट्ठिओ हं गुरु-जणाणं आराधेउं ति। तओ मया मेलिता मंते सव्वे वि वयंसा । ते वि तमत्थं सोदूणं भणिंति– अज्जपुत्त ! लद्धं खु एवं अवि णाम अम्हे वि तुह समासय(?गम)-गुणेणं मंदर-गिरि-[२०६]सुक्कणा(?) इव तंमयंदं(?) उज्जामो, खयर-जण-संसग्गीए कदाइ वयमवि आगास-गामिणो हविज्जामो त्ति । मया भणिदं– सव्वं सक्काम(?क्कमे)यं ति। तओ पुच्छिता मे **तारावती**– पिए ! वच्चामि अहं गुरुजणाहुदो सतु(?त्तु)-वियणत(?विजयाय) । तं तुमं भणेसि, किं अवअच्छसि इत्थ, उदाहु मया सह वच्चिसि ? त्ति । तीए य सघग्घर-कंठाए भणितं– अज्जपुत्त ! पियं मे तुब्भेहिं सह गंतव्वं, तह· वि जं तुब्भे आणवेह तं करेमि त्ति । मया भणिया– सुयणु ! अहमिदाणिं सत्तु-विय(?ज)याय अब्भुट्ठेहामि, तं सेयं तुह ईहेव अच्छिदुं ति।

तओ सा परुदिदा कलुणं, सुचिरं च रुयमाणी परिसंतेउं नियत्तइ ता पेईए चेव । नवरं च **भागेरहिदत्ता**दिणो भायरो **सम्मय**देव-विरहिदा चतुरो वि समप्पिदा मे विज्जा-गाहणत्थे र(?रि)सिणो **भरद्दायस्स** । तेसिं च मे भणिदं– तत्थ-गदा भारिया-जणस्स से कुसल-वट्टमाणिं पुच्छिज्जाहि । **बंधु-सुबंधु-णंदोवणंदा** य विज्जा-गाहणत्थे समप्पिदा जणणि-सहियस्स **सीहदाढस्स** । अहं पुण **अंसुमंत-सम्मतदेवेसु** सहिदो **देवरिसभं** खयराहिवं उवगओ । उप्पतिता य मो भिन्न-महानील-विवर-संनिभं गयणयलं पब्भावा(?) मो वि [?ण]हेण विहगा इव **वेदड्ढा**भिमुहा, गदा य मो सव्वे सएसु सएसु आवासासम-पुरवरेसु, पत्ता य अम्हे **देवरिसभेण** सह विमाणारूढा, ततो [**?ता**]**तपुर**नामं तस्स संतियं खयर-नगरं। **देवरिसभ**-पुत्ता य पंच-जणा **दमण-दमयंत-अनिलवेग-पवणवेग-तेयसारा** अंतेउराणि य मम [म]हग्घं [?अग्घं] घेत्तूणं विणिग्गदाइ, कयग्घ-पूओ य निवेसिओ हं सवयंसो नियय भवण पुरोहडा मो सुर विणोद सरिसीए परम-तुट्ठेसु य भणियं **अंसुमंत-सम्मतदेवेसु**– देव ! तुह पसादेणं आगास-गमणं वि ताव परिवव्वएण दिट्ठं ति । मया भणिदा– सोम्म ! सोभणं वो निमित्तं कुसुमित-[प]मदवणावतारेणं मणाम(?) अचिरेणेव कुसुमित-पगिन्न-विज्जा भविस्सह ॥

॥ इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए
तारावदी-लंभो णाम एगुणवीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥१९॥

पाठान्तर

१. ०प्पहित - पु. ला. । २. यणियित्त पा. । ३. निम्मिता पु., निवित पा. ला.। ४. ववगकीर पा., चवगहीर ला. । ५. गुलुगुला- पु. ला. । ६. -सद्द य दिसाओ पु. । ७. महोदधेसुदधे सुरय कामयं पा. । ८. पंसुकीओ पा. । ९. अवि तं आ पूरित-पा. । १०. ०सगारागद मणिकंबुयं पु. । ११. पि धवणी पु. ला. । १२. पहुल्लकडकेतय पा., पफुल्ल कडयकलंच ला. । १३. सिलदज्झज्झनाणीम.... पा., सिलिंदज्जुनाणीम.... ला. पु. । १४. कुसुमायोभ- पु. ला. । १५. सुइंद पा. ला. । १६. सत्तद समुइगं पा. ला. । १७. ससूइद पु. । १८. विसोलचरिदो पा. । १९. इंद्दोवेयसरिदो ला., इद्दोवेयसरिस पा. । २०. चिंतिओ पा. ला. । २१. कालागुल पु., कालागसु पा. । २२. सा अन्नदा पु. । २३. कुबेरक्कंतमुद्दालंकद० पा. । २४. सव्वप्पउगं पा. । २५. एकाकिणी पा. ला. । २६. वयणकोलाहदं पु. । २७. सुरुन्नोरुत-तंपच्छीए पा., रन्नोरुततंपच्छीए पु. ला. । २८. हत्थुविद्धूण पा. । २९. भणह पा. । ३०. ममहंमवत्थं पु. । ३१. रुययदं पा., रुयियं पु.। ३२. पुव्वथोट्टिय पु., पुव्वघोदिय पा. ला. । ३३. सासयंतेण पु., समासायंतेण पा. । ३४. न जुत्तयादेउ न एस पु. । ३५. जण्णुएणि य पडि० पा. । ३६. ताहि मे पुव्व० पा. ला.। ३७. पीइ से पा. । ३८. हत्थपुरं वहच्छ काऊणं पा., हत्थफुरं वहत्थे काऊणं ला. । ३९. वदणं ठंदं अदि० पु., वदणद्धदं अदि० पा. । ४०. तुम मन जावियस्स विउभविय पु. ला. । ४१. पिहियाइं पा. ला. । ४२. तंपि य पीत मेत्तो पा. ला. । ४३. चेतं ला. । ४४.कदा सि पुणो वेयं लभेहिभि पा. । ४५. वंकिऊणं दूणं पु. ला. । ४६. ०मुदीओ पा. पु. । ४७.भासयंतो पु. ला. । ४८. रिब्भदूवा० पा. । ४९. प्परपरो पु., प्परपरोहड० पा. । ५०.कत्थवि पा. । ५१. ०सिय पडिसिद्धो पु. । ५२. तप्पएण..... महंतं वेदेमि पु., तप्पव्वएण... पा. । ५३. त्तमित दुपाभोगा धारित्त व पु., भूसित दुयाभोगा धारित्ति ला. । ५४. सुद सुहा पु., मुदुं सुहा ला. । ५५. विसेसदो पसूत ला. । ५६. णालय ला.। ५७. मुहोपगीत च्छेदंतर - ला. पु. । ५८. सालीवणे मोवियाए उरा ला. । ★.....★ पाठः केवलं पा. प्रत्याम् । ५९. अवतित पु. । ६०. आससिद्धं पा. ला., आगसिद्धं पु. । ६१. उज्झदर्पिगार पु. । ६२. तन्नवणविन्नत्थाए पु. । ६३. आगदपिल्लिदं पा. । ६४. थिमितं उसहपाणं पु. । ६५. उवावियतर पु. । ६६. तयाविओ पु., दिमाविओ पा., विमाविओ ला. । ६७. पंथो ला. । ६८. 'तव्वाइवणं' केवलं पा. प्रत्यां अस्ति । ६९. भातितेणं पु.। ७०. दिवाकित्ती पु., देवोकित्ती ला. । ७१. अहोह- पु., अहोव पा. । ७२. विप्पभावो ला. । ७३. ममब्भि ला., मज्झिम पा. । ७४. नीखावे ला. । ७५. एच्छयणं जायं ला.। ७६. वहवेहा ला. । ७७. हिससूआदि ला. । ७८. आवारिं ला. । ७९. इहगच्छंतेहिं ला.। ८०. पावियं मे करेमो । ला. । ८१. योगंजित ला. । ८२. वाहो मा० ला. । ८३. पुव्वे पुरंते ला. । ८४. आणित्त पा. ला. । ८५. जरभत्थाए पा. । ८६. आगनिय

अउयपयदंडदोदो पा. । ८७. किम्मेसा ला. । ८८. विसारिया ला. । ८९. -एव - ला. पा. । ९०. वतब्भट्ठणू पु. । ९१. नच्चु राय० ला. । ९२. मे एदु साहिट्ठा ला. । ९३. असहणा पा. । ९४. चरिदा० पा. पु. । ९५. आणावइ, गंतूणावेइ गंतूणं पासयं पासइ। ला. । ९६. पिट्ठिसु पु. । ९७. दुवावरो धंधी पा. । ९८. मासु चुण्ण पा. । ९९. तणु दुवेलदाए पा. ला. । १००. समट्ठिदा पु. । १०१. परिकेदिदाए ला. , परिकेमेदिदाए पा.। १०२. लेपूडत्तयस्स पु. । १०३. पसादितुं ला. । १०४. कहूओ ला. । १०५. तियंगुला पु. । १०६. सूईसुहा पा. पु । १०७. चदुविहं पु. । १०८. चित्तधम्माणि पा. ला. । १०९. कम्मदाइं पु., कम्महाइं पा. । ११०. णगरए पु. पा. । १११. अयागदं पा. ला. । ११२. चित्तयं खीणचित्तयं मंडा० ला. । ११३. चेइ ला. । ११४. कंडक्करियं ला. । ११५. किंसय ला. । ११६. भेसं ला., भसं. पा. । ११७. सव्विकी पा. । ११८. साभा पा. । ११९. सडीए पा., सढीए ला. । १२०. अह सिक्का ला. । १२१. वघणचूवमंतरं पा., वयणचूवुमंतरं ला. । १२२. दुहाणिं पु. । १२३. खुलगा ला. । १२४. आयामट्ठोरुं ला. । १२५. तिवितुह पा., तिसुविसुहं ला. । १२६. सोभ-संकुला पु. । १२७. णाहणवणाउ ला. । १२८. उच्चहीणा ला. । १२९. णं णेत, ला., णांतकन्नं० पा. । १३०. लेप्पे पा. ला. । १३१. तिभापा ला., तिभाषा पा. । १३२. अहस्सय पु. । १३३. समनुवं पु., मगतुंवं पा., ममतुंदं ला. । १३४. सुज्झवा० पा., मुच्छवी० ला. । १३५. उवियमसान्नो पा. । १३६. पविरि पा., पविर ला. । १३७. गो-वन्नय पा. । १३८. कन्नरो पा., कन्नपग ला. । १३९. सुन्तालि० ला., सुतालि० पा. । १४०. याविया ला. । १४१. राय-वट्ठुधोउ हिंगुलु गांगेरु पा., राय-चट्ठुओउ हिंगुलु गांगरु ला. । १४२. हरिताल-गुलियाण सेडिया-गवन्नयं पु. । १४३. हरिताल-गुलियाए दियाए वेत्तोदयं । पा. ला. । १४४. सुकुमालत्तणं दिट्ठ-पा. ला. । १४५. सपुच्छं पा. । १४६. खवद्धि पिसुद्धि पु. । १४७. सुणिवज्जइ पु., मुणिं विज्जइ ला. । १४८. अवि ह पा. । १४९. तउ तत्त चीण० ला. । १५०. णेउणि गई पा., णेउणा गइ ला. । १५१. चित्ते मे पु. । १५२. वियत्त पा. । १५३. धुर पु. । १५४. विम्हियेसुहालय पु. पा. । १५५. मापूरितंयंगं पु. । १५६. किसइ पा. । १५७. चित्तरहं पु. । १५८. पच्छित्थिदेहिं पा.। १५९. तमयुयु पा.। १६०. ललंति पा.। १६१. पंझू पु.। १६२. रक्खसिंदा सो इसाणी पा.। १६३. सोम्मप्पवा पा.। १६४. इसाणी पा.। १६५. सउत्थाद्धेणं पा.। १६६. दापेहि पु.। १६७. तिं पु.। १६८. नरागारागदा पु.। १६९. सुखतं ला.। १७०. कादुहि णित्थिओ पु.। १७१. दारिट्ठि पा., दारिट्ठु पु.। १७२. च वासकम्म पा.। १७३. धुरी पा.। १७४. समाउणिभणितं पु.। १७५. कओ देलच्छ सम पु.। १७६. ते ण आवणामं पु.। १७७. इहं पु.। १७८. वेवह ति पु.। १७९. चितंग चित्तकारो पा.। १८०. धरह पा.। १८१. अणंगदेणमो पु., अणंगमेदणमो ला.। १८२. विअवंगुट्ठिकारे इमं ला.। १८३. कति एस परिसोह तहावो ला.। १८४. वोधविदमदिदेवतधूता ला.। १८५. ति पा.। १८६. ते य सुत्ता पु.। १८७. विंद पा.।

१८८. हंतो पु., हिंतो पा.। १८९. तुमे पडधित्तिदेवे पा.। १९०. परिसिणाइं पा.। १९१. वकेडंतंवकोडं णगरए पा.। १९२. मया विवतिय तारा० पा.। १९३. वत्थतुरि पुरिसं पा.। १९४. एहुपदा पु.। १९५. इदाकडिदो पा.। १९६. मणाभोम- पा.। १९७. सूवामे पा.। १९८. वपुर पु.। १९९. इह भविव्व जे पा., इह द्विद्ध जे पु.। २००. एसव्वाणं पु., एसकिज्जणं पा.। २०१. ब्भीवयाता पा.। २०२. अम्ह भिज्झज्झया पा.। २०३. मब्भेच्छि पु., मज्झित्थ पा.। २०४. डथरुमसा पु., घरुमना अव्वहु पा.। २०५. दोवेभूणं पु.। २०६. पुक्कणा पा.।

२०. अच्छरा-लंभो

अहा हं तत्थ रमणिज्जे सावस्सए सपादपीढे कणग-भद्दासणे सुह-निसन्नो सवयंसो अच्छामि । अहागदा तत्थ कन्नगा नील-दुगूल-परम-रमणिज्ज-परिहिता विसाल-णयण-जहणा पवर-थण-कलस(?सा) सजोव्वण-गुणा । सा य संजाणिया मे दिट्ठ-मेत्ता– अए ! एसा हु कन्नगा जीय मि तदा मलय-चंदण-वणाओ अवहरिउं असितगिरि-सिहरे छड्डिओ हं । सा य ममं रत्तासोय-किसलय-दल-कोमलेहिं कर-कमलेहिं अंजलीं काउं पणमंती भणइ– देव ! अहं वो **देवरिसभ**-खयराधिव-सुत्ता **अच्छरा**-नाम-धारिणी कम-[1]जुवले पणिवदामि । मया य सबहुमाणं [2]आभट्ठा । सा य मे अभिवादणं कादुं पुणो पुणो साभिलोगा, गया स-भवणं ।

तओ हं सवयंसो मज्जित-जिमिओ सुरभि-वत्र-समालद्धो[3] जहा-सुहं नाडएसु उवगिज्जमाणो अच्छामि । नवरं [4]च राया **देवरिसभो** सयमागंतूणं **अंसुमंत-सम्मतदेव(?वे)** घेत्तूणं गओ बाहिं । तो(?तओ) य णेण दोवि दिक्खिदा विज्जा-पुरच्चरणेणं । तओ आगंतूण ते[ण] अहमवि भणिदो– देव! अज्जेव सोभणं दिणं, पडिवज्जह तुब्भे वि अज्जेव य **कोसिय**-विज्जा-पुरच्चरणं ति । मया य सहरिसेण तह त्ति पडिवन्नं । तओ राया ममं भणइ– सामिकुमार ! एत्थ कद-भत्त-परिच्चाएणं तिन्नि सत्त-रत्ताइं अधियासेदव्वाइं । तत्थ पढमं सत्त-रत्तं वसिमे सुन्न-घर-गदेणं [5]आसपादएणं अंधयारे रयणीए एगागिणा धितिमंतेणं, बिदियं जल-गएणं उरत्थाहेलं(?णं) [6]वित्तभुदेणं(?चित्तभूदेण), ततियं [7]सुसाणे अभीतेणं पडिमोवगएणं । सव्वेसिं पि वा असंतो [8]सव्वाइं पि एग-चरियाए पढम-चरिया-विवज्जियाए । तं पढमं ताव पडिवज्जह इह चेव सुन्न-घर-[9]चरिओववासं(?) ति ।

तओ हं [10]तेण दिक्खिओ कय-भत्त-परिच्चाओ कय-कोतुयमंगलो य कय-देवता-पूओ रतीए ठविओ हं एगंते, सुन्न-घर-गओ धरणि-तल-गओ य

तहियं दब्भ-सत्थरय-निसन्नो गुरु-जणोवदिट्ठाओ [? विज्जाओ] जवंतो अच्छामि एगागी । अन्नत्थ य कओ वि [११]पिधप्पिधा(?) ठविता तं **अंसुमंत-सम्मतदेवा** । तओ निसीधे रयणीए विज्जाधर-जण-संपाद-विरहिदाए वेलाए नीसद्दपसुत्तो(?त्ते) विज्जाधर-जणे, तत्थ आगच्छंतीणं कन्नगाणं सद्दं सुणामि मधुर-कलहंस-विरुत-सरिसं [१२]परिवत्तमाण[?णे] पुर-रव-मीसिदं । पेच्छामि य सहासा[ओ] परम-चारु-रूवाभूसणाओ विलया[ओ] कम्म(?प्प)दुम-लताओ [विव] तं मम विज्जा-पुरच्चरण-गिहं अणुप्पविसंतीओ । तत्थ य एगा दीविया-धरितग्गकरा पुरओ पकड्ढय(?), अन्नाय तत्थ गंधोदय-भरिएणं भिंगारेणं आगंतूणं आविरिसीकदं(?) तं सुन्न-घरं, संथय(?अन्नाए) सुरभि-कुसुमोवगारं कदं । तासिं च मज्झे सुमज्झं पाउसिय-पेस-गहितालंकारं पवर-कणग-पट्ट-कुसुम-विरइत-णीत(?)-वेणी-धरं धवलंसुय-परिहितं तक्खण-सुरलोग(?गा)गतं अच्छरं पिव **अच्छरं** पेच्छामि । सा य एक्काए भणिया सहीए— वयंसि ! सुक्ख-वीसंभ-कमोवगदं सुह-प्पसुत्तं राय-कुलं वंचेदुं आगता सि । पिओ य ते पइक्के लद्धो । तं उवसप्पह एतं । अणुभवदु भवदी चिर-चिंतिदाणं मणोरहाणं फलं । विगद-गव्वा भविय अल्लियय(?ध) अज्जपुत्तं, मुय माणं । कामो हु अवभुज्जमाणो रसं देहि(?दि) । आलिंगय सिग्घं पिअदमं। किमेत्थ विलंबसि ? ।

तओ सा सहीसु एवं बहुविहं भन्नमाणा उवागया मे पासं । अहं पुण विग्घावाय-भीरु विज्जं गुणयंतो कट्ठ-भूओ अच्छामि । भणिया य सा पुणरवि सहीसु—एदं दिट्ठं चेव आलिंगदु भवदी । पणइज्जमाण(?जणाण) महग्घाइं काम-सुहाइं । अवधण(?णध) लज्जं । न दु दुक्ख-लद्धे पिए विरहोवगए भद्दाय माणस्स अवकासो दिज्जइ । आरंभदु भवती रदि-कम्मं, तं [१३]थक्को हु एसो सुरत-संगामस्स सुरद-महा-रदि-कंखिदयाणं पढम-पयास-समागम-दयाणं(?) [१५]णिवुदमाणं(?) दुट्ठदयाणं(?) होइ सुहं, न दु माण-हदाणं । एवं तत्थाहेउं(?) अवक्कंताओ से सहिओ ।

तओ सा पविलोल-सिढिल-भूसणा ण्हाणुलेवण-मल्ल-सुरभि-वासित-देहा सुरभि-धूव-धूवित-पारियादय-सुरभि-कुसुम-[१५]हरिद-केसहत्था, थणेसु णीहारिणा गंधेण वासयंती सुन्न-घरं, कयंजली भणइ— अज्जपुत्त ! पसीदध ममं पढम-पणइणीए अदेस-कालागद त्ति । मा मे अवराधं परिगणेह, भत्त-जण-पद(?)-सरणागत-वच्छला अणुकंपिया य किर होंति सप्पुरिसा । एसा

हं भावेण पणएण य रसेण तह सिणेहाणुरागेण उक्कंठिया य सुरद-रइ-सद्धालुगी(?णी) य नाम उवगदा हं तुह सगासं ।

एवं बहु भणंतीए जाहे अहं ण देमि वाहरं तो ताहे सा हत्थेसु मम पादे घेत्तूणं सिरेण पणया रोईदुं पयत्ता, पुणो य [१६]पुव्वन्नया(?) धट्ठदं अवलंबिऊणं सविब्भमा पयत्त-बहुर(?ल)-मधुरोवयार-सिंगार-करणा लडह-कडक्खावलोयण-कर-चरण-सिराधर-वियारा सवम्महा पेल्लिति मे अवगतत्थेव(?वत्थे)सु थणएसु जवल-जहण-कुंकुंदरोरु-भुया[१७]जवण(?ल)-वयण-सोणीसु प(?फ)रिसयंती पुणरवि पगलिदंसु-णयणा भणइ– अज्जपुत्त! जइ मे पणय-भंगं करेह तओ अज्ज पुरओ ते पेच्छंतस्स अवस्स अत्ताणयं विवाडेमि। तं मा मे अणंग-सर-सल्लिदं मरंतिं उवेक्खाहि । पुणरवि विज्जा, ण ते अहयं । पुणो य भग्ग-पणया भणइ- किं मम पिय-पडिआइक्खिय-पणियावं(?पणयाए) जीविएणं ? बहुप्पभादा हु रयणी वट्टइ त्ति । एवं भाणिउं उट्ठिया मे पासाओ ।

ताहे णागयं(?दं)तयग्गे तीए नियपु(?उ)त्तरिज्जेणं उल्लंबिओ अप्पा । तओ मया चिंतियं– कट्ठं जादं, साहसिणी एस विमाणित-पणया ण किंचि करेइ । तं जइ एसा एत्थ अत्ताणं विवाडेइ तओ मे महंतो अयसो हवेज्ज। ताव य सा वि गय-दंत-विलग्गा इव वेययं(?वल्लियं) पलंबिदा णागदंतग्गे। [१८]चिंतितं च मे– खद्धमग्गेणं(?) एस एव कारणं पिया [१९]दुहिदा । अदो(?हो) हुताए(?) तीए मम कदेणं निरवेक्खाय अप्पा परिचत्तो । तं मा मे अयसो [हो]दु । कामं पुणो वि विज्जा-पुरच्चरणं गच्छेहामि, मोएमि ताव एदं ति। तओ रहसेणं उट्ठिओ हं । भणिया य मे—सुतणु ! अलं विसादेणं। मा साहसं कुणसु । विज्जा-साहणेण वि मे अलं तुह विपत्तीए । कामं तुमे पसन्नाए पुणो अन्नमयं विज्जा-पुरच्चरणं पडिवज्जिस्सामो । एव भणिओ य तीए अलियि(?ल्लि)दुमाढत्तो हं । नवरि य सा अट्टट्टहासं मोत्तूण खणेणं अद्दंसणं गदा। तओ अहमवि विग्घ-वंचिओ, हा हा अहो अन्नाणमिति भणंतो द(?त)म्मि दब्भ-सत्थरे पडिए(?ओ) ।

तओ पभाताए रयणीए उवगओ राया मम समीवं, कओ अ से मया विणएण पणामो । भणदि य पहसिऊणं– सोम्म ! वंचिओ सि विग्घ-विभीसियाए । मया य लज्जिएण तह त्ति पडिवन्नं । तेण भणितं– एत्तो परं [२०]दिट्ठ-पट्ठ(?च्च)ओ [२१]सुसिक्खिओ हवेज्जासि । तओ अन्नमयंतेणं(?) पुणो

वि पुरच्चरणेण दिक्खिओ हं । तत्थेव सुन्न-घरे ठिओ हं कय-निच्छओ धणियं । तओ बिदिय-रयणीए वि णिसीह-वेलाए तहेव मदण-[२२]वाघुण्णिय-णयणा ससहीजणा उवागदा मम सगासं **अच्छरा** । सा य मे विणएणं कय-पणामा भणइ मधुर-चदुर-ललिदक्खर-भासिणी— अज्जपुत्त ! सुतं मया अदीदाए रयणीए मम रूव-धारिणीए विग्घदेवयाए इहमागंतुं बाधिता तुब्भे । तं च मे सोऊणं चिंतिदं अहो अहं बहुमदं(?दा) अज्जपुत्तस्स, जेणं मम कज्जे अप्पा पुरच्चरण-पडिवन्नेणं वंचाविओ । तहं(?ओ) परम-तुट्ठा अज्ज सयमेव आगदा हं । तं आलिंगदु अज्जपुत्तो अज्ज ममं, सफलो मे होदु परिस्समो।

तओ मे चिंतितं(? भणिदं)— वच्च, ण छलेसि मे अज्जं, जइ सच्चं जो वि मरसि [२३]तहवि ते ण पत्तिज्जामि । सा य मे बहूणि अणुकूलाइं मयाइं(? वयणाइं) हिदयक्खोभणाइं भणमाणी आलिंगइ परिचुंबति य मे जहण-कुय-भुयोरु-जुवलेसु-पेल्लइ, मे निब्भच्छिय-पणया य रोइदुं पयत्ता, सुबहुं च विसूरिऊणं निब्भच्छिद-पणया स-भवणं गदा ।

एवं दिणे दिणे रतीए विविधाइं सहामि विग्घ-रूवाइं । पुन्नं च मे कमेण सत्त-रत्तं । पभाते य अट्ठम-दिणोदए उवगओ मम सगासं राया, भणति य— कुमार ! तीरियं ते पढम-सत्त-रत्तं ति, तओ मसाण-सत्त-रत्तं पडिवज्जधेति । तओ तं पडिवन्नो हं मसाणे पडिमोवगओ मुणि व्व निच्चल-सरीरो । तं पि य विविध-वेयाल-विभीसिया-परिगओ बद्ध-दिसो(?) अक्खुडित-चेतो ठिओ हं । तओ हं पूरितम्मि तम्मि नीओ हं राइणा स-भवणं, भणदि य— बिदिय सत्त-रत्तं पि ते तीरियं, एदेण य तुह पारिसद-विज्जाओ पागेव सिद्धाओ थोआवसेसाओ वट्टंति । तं धारेह ताव वीसमाहि य कदिइ दिणाइं, ताहे पुणो जल-सत्त-रत्तं काहिसि त्ति । तओ मया तस्स वयणेण पारितं । चिंतितं च मे— अणुकंपइ मम राया [२४]दुव्वलद्धिदिदं (?) काऊणं भुत्त-भोयण-सु(?सं)मुहं च उवगम्म मम विणएण **दमणो** विन्नवेइ—अज्जपुत्त! राया भे विन्नवेइ, जहा, पुणो वि वीसंता जल-सत्त-रत्तं काहिह । किंतु सुणामि किंचि [२५]भावियच्छं(?) एसा मम कन्ना **मंदभागिणीय** देवीए अत्तिया, अम्ह(?) भगिणी **अच्छरा** नाम । एदीए भत्तार-कज्जे पुव्वं मया **सुरभी** नाम चारण-समणो पुच्छिओ—को मे सुदाए भत्ता होहिति ? तेण य **अद्ध-भरहाहिव**-पिदा निद्दिट्ठो । भणियं चारणेण— सो संपदं **भरद्दायास**मपदे तस्सेव [२६]जामादुगो तेसुयओ(?) वट्टदि । पुणो य रन्ना पुच्छिओ— भगवं ! बलवका मे सत्तुणो **माणसवेग-महासिहराइणो** । किह से(?ते) उवसमं गच्छेज्जा ?

तेण भणितं– सो ते जामादुगो [२७]तेसु य सुप्पयुत्तं काहिति त्ति । तं च सोऊणं परितुट्ठो राया । संदिट्ठं च रन्ना **भरद्दाय**-रिसिणो जहाभूतं चारणसमण-वयणं । एएण कारणेणं अहं तुह जामादुगस्स पेच्छओ आगच्छीहामि त्ति । तओ केण-इ वाउलत्तणेणं ताव न गदो जाव [२८]तुमं अन्नवो(?दो) गओ ।

अन्नदा य राया गदो बाल-वयंसस्स **भरद्दायस्स** रायरिसिणो आसमपदं। तेण य सह संमंतेदूण तुमं [२९]**भर(?रु)गच्छा**ओ इहाणीओ विज्जा-कन्नाण संवरण-कज्जे । तं एस परमत्थो । कमेणं गेण्हीहिसि विज्जाओ। संपदं ताव कन्नाय पाणिं गेण्हह त्ति ।

तओ मया भणिदं– जं मे गुरवो आणवेंति त्ति । तओ तत्थ आगयाओ अविधवाओ, पगीदाओ मे मंगलाइं, कयं च मे वराणुरूवं पडिकम्मं। **पा(?वा)रिसेणेण** य उवज्झाएण हुतवहे पक्खित्ताओ समिहाओ लायंजलीओ य । उवणीया य मे पासं **अच्छराण** वि सोभग्गं समक्खिवंती, मदणालस-खेद-मंद-मंद-चारु-गामिणी पवर-मणि-कणग-रसणा-सुत्त-वर-चित्त-पज्जलित-भूसण-धरी समुग्गद-समंडलायाग(?स)-गामिणी विव चित्ता किमिराग(?गा)रुण-भासुर-प्पभोरु विज्जा-पट्टसाडय-नियंसणा ससि-जोण्हामल-वर-चल-दूस-संवरित-सरीरा कणग-कुंडल-दोलायमाण-चारु-वयणा ललिद-वर-चिहुर-विरइद-मोलि-मउड-[३०]सुडिबंधुरद्धर-पवर-कोरिंट-पारिजातय-कुसुम-माहवि-णिद्ध-[३१]मुद्ध-तरंगायमाण-पदिभाग-[३२]णिइत(?)-सित-कुसुम-पविरइत-तारय-दित्त-सिरोरुहा ।

तओ राइणा सयमेव गाहिओ हं तीए पाणिं । निव्वत्तेसु य वर-कोदुगे[सु] ससुर-जणमभिवादेउं, तेसु पउत्तासीसो पविट्ठो हं वधु-सहिओ वासगिहं । तत्थ य विसज्जिद-सहिजणे वास-घरे पवर-सयणिज्ज-तले पिया [प]रिस्सइऊण(?) परिचुंबिदा भणिया य मे– सुहं भवतीए ? त्ति । सा धु(?हु) अति-हरिस-पमोद-[३३]विग्ग(?)-हदया ण किंचि पडिवाहरइ । ताहे पुणो वि भणिया मे– सुतणु ! तदा सि ममं भारिदा-जमल-सगासाओ अडवीए अवहरिउं छड्डेसि(?) । एयं च एरिसं ममावराधं कुमारि-भावे द(?ध)ट्ठदाए कादुं किमिदाणिं वत्त-पाणि-ग्गहणा हत्थागए ममम्मि लज्जालुई जादा ? । [एवं] मया भणिदा(दे) उट्टिउं पट्टिदा कुल-घरं, तेण गहिदा य मे रभस-परिदाया(?) वत्थ-साहुलीए । तओ णियत्ता भणइ– दिएणं(?) अवलंबह, किं वत्थ-पल्लवेणं ? किं वा सि [भारिदा]-जवल-पासाओ

विदो(?हिदो) त्ति तं वेरमणुसरसि ? मया चिंतितं—साधु कदं । अणुप्पन्न-पीति-पणयाणुरागस्सेव को दु वयस्स(?) उल्लालणा(?) पयत्ता । भणिदा य मे— सुयणु ! किं वा वो य एदं वेर-कारणं जो पिय-विप्पयोगं करेइ ? तओ सा एवं भणिदा समाणी लज्जोणत-वयणा अधोमुही गच्छंती मया परिस्सईउं अंकमारोविया, कयग्गहाकड्ढिता य [३५]परिचुंबिता, उप्पाडिया य मे भारिदा । सुरय-केलि-किलंतो य [३५]पाउसिय-पउत्त-सुइ-सुह-गंधव्व-विसया-वहीरमाण-हितयो पसुत्तो हं । पुणरवि य सुरदासेवणावसाणे सुह-लद्ध-निद्दो [३६]पाभादु[ग]-पाढग-गंधव्वाओज्ज-सद्देणेव पडिबुद्धो हं । पवर-ससुर-त्तरचति(?नरवति)-कलिद-जयजय-सद्दाभिणं[दि]दो य समुट्ठिओ मुक्क-णिचचणो(? णिधुवणो) गहिद-मुहधोवणो सुकय-पडिकम्मो सुहं पविहरामि । एवं मे वच्चंति कइ वि दिणाइं ।

अन्नदा य उप्पन्न-पीति-पणयाणुरागाणं अवरत्त-काले य पडिबुद्धाणं सुह-संकहामंतरेण **अच्छरा** ममं भणइ— अज्जपुत्त ! सुणह अत्तणो अडवि-च्छडण-कारणं ति । अहं ताव पुव्वं चिय चारण-समणेणं गुरुसु य तुह निद्दिट्ठागमे [गमे]मि य तुह दंसणूसुई कइ दिणाइं । पुच्छामि य सयमेव विज्जं—कत्थ संपयं अज्जपुत्तो ? तीए कहिदं— अज्ज संपदं **अनिलयसा**-सयासे वट्टइ । एवं अभिक्खणं पुच्छामि, सा कधेइ-संपदं **वेरुलियमाला**-सगासे, संपदं **इंदसेणा**-सगासे, एवं **लक्खणाए, सुकोसलाए** । एवं जाव संपदं **नागपुरे मलयसेणा**-सगासे अच्छइ । तओ मया सह सी(?सही)जणाए तत्थ गंतूण दिट्ठो सि चंदणवण-गओ । पुव्वं च चारण-समण-सगासे तुह वन्न-[नि]रूवणा सुदा मे । तं च अवधारेउं कहा-पसंगेण मया सहीणं पुरओ तुब्भं रूव-गुणुक्कित्तणं कदं । तासु य तत्थ तुह रूवं दट्ठूणं सपरिहासासु कासु वि भणिदं— हला ! ण सुंदरं से रूवं ति । मया भणिदं— हला ! जइ दाणिं सुंदरो मंगुलो वा एस मे भत्तारो । तस्स य दिणस्स परदा(?) रादीए मया तत्थ गंतूणं **मलयसेणा**-गीय-वाइदक्खित्त-हिदयो अंतद्धियाए ससहीजणाए दिट्ठो सि मे चिरं । तओ हं तुह दिव्व-चरियस्स पिया-जुवल-सहियस्स कीलं पेच्छमाणी बहुं जूरामि । चिंतेमि य— अहं ताव एदस्स कारणा(?णेण) विसमावत्था[ए] वट्टामि । एसो पुण ममं दिट्ठं पि ण संजाणइ । अहो ! विसमा लोग-दिट्ठी । तओ मे तत्थ-गदाए वि दु(?पु)च्छिदा **आभोगणी**— भगवति ! केवच्चिरेण एसो मम सगासं एहिति ? तीए भणियं— **उज्जेणीए अवंतिवद्धणं, नागपुरे भरुयच्छे तारावदिं,** एताओ परिणेउं तओ तुह सगासं

पाविहिति । तओ मे दुक्खियाए भणियं आगासे—अहो ! अज्जपुत्तेण चंदण-वण-नीसाए चिरं एत्थ विलंबिदव्वयं । इओ तं च अन्नं पुण विदियं कारणं नाम । एत्तो वि छुडियस्स विलंबो **अवंतिवद्धण-तारावदीओ** । चिंतेमि य—अइ चिरस्स मे भत्ता पावियव्वो । पभाए य चंदण-वणे पिया-सहिदस्स चेव तुह दंसणं दिन्नं । दीह-कालंतर-वियोग-भीदाए य बिदिय-रादीए अवहरिउं **असितगिरि**-सिहरे छड्डिओ सि । किं-कारणं, एत्थं लहुं **अवंतिवद्धणा**ए मिलीहि ति । भणिदा य मे सहीसु- कीस ते एस निरत्थओ परिस्समो कओ ? मया भणियं— जं कारणं तं पुणो कहेहामि । सुचिरं च निज्झाइऊणं किह वि तओ अवक्कंतो(?ता) ससदी(?ही)य । कम्हि काले पिदा य मे गओ **भरद्दाय**-सगासं । तत्थ य संपत्तीए तुहं चेव संबंधेण आगओ जणणि-सहिओ राया **सीहदाढो** । तओ तेसु ताण सह किं पि सामत्थेणं रिपु-परिभवं असहंतेहिं विज्जा-साहणत्थे मम पाणि-ग्गहण-कज्जे य इहाणीदो सि, विज्जा-पुरच्चरणे य विग्घ-देवदाए मम रूवेण खोभितो । तं च सोऊण परितुट्ठा हं, जहा हं अज्जपुत्तस्स बहुमदा, धन्ना हं जेण मह कदेणं पुरच्चरणं परिचत्तं ति । बिदीय-रादीए अहं सयमेव उवगदा पासं, तुब्भेहि य माणेण निब्भच्छिदा हं । पारिदे य सत्त-रत्ते वि य कमेणं तओ गाहिओ सि तातेण मम पाणी, एदं ते तं मया अडवि-छड्डण-कारणं परिकहियं ति । तं च मे अवराधं खमह, त्ति जंपमाणी पडिदा मे पाएसु ।

मदा य गाढमालिंगिऊण चुंबिदा पिया । मुहं च परिचुंबमाणस्स मम तीए अग्ग-जीहाए पक्खित्तो मुहे **पारिजाओ** नाम मुहवासो । तेण य मे तस्स गंध-मोदेण [३७]सुरलोग-गओ इव आसि अंतरप्पा मे [३८]णिरदं अक्खित्तो हं । मदा य पुच्छिता **अच्छरा**— पिए ! कत्तियाण दव्वाणं समुदएण एसो [३९]णिप्फज्जइ मुहवासगो ? त्ति । तीए भणिदं— एग [४०]एव च एदं पारियादय-कुसुम-वासितं दिव्वं लवली-[४०]हवं(?) ति । मया भणिदं— दुल्लभो हु एस मुहवासो महि-गोयराणं ति । तीए भणितं— कीस दुल्लभो ? मया भणियं— जेण संपदं सव्व-कुसुम-गंध-राया पारियातो महि-गोयरेसु नत्थि । [तीए भणिदं—] अज्जपुत्त ! विणा वि पारिजादय-कुसुमेसु सक्कदि एस गंधो अखिलो अन्नेसु वि दव्वेसु उप्पादेउं । मया भणिया— पिए ! आह ताव किह एस गंधो अविसेसिओ अन्न-दव्वेसु उप्पादिज्जइ । सा भणइ—सुणह, [४१]एला-णहरसमागता(?) गरं(?रु)-वालंग(?लवंग)-मुत्था-सभियाणं(?) चदुरो चदुरो

भागा, चंदणा-गरु-तुरुक्क-तयाणं पंच पंच भागा, जातिफल-जातिपत्तिय-लवंग-कक्कोलगाण छच्छभागा, [४२]कप्पूरोल्लक(?)-कुंकुम-कत्थूरियाणं सत्त सत्त भागा, तत्थ मुत्था-तय-विरहियाणि सोसियाण(?णि) ईसिं[४३] उत्ताविज्जंति, अगरु-चंदणाणि वि ईसि उत्ताविज्जंति [४४]कडुच्छए । तदो सव्व-दव्वाणि वि जाइफलादि-वग्ग-वीई(?बीय)पूरग(?) छल्लि-विरहियाणि य पीसिउं मधु-सक्करा-सहिदाइं मद्दिज्जंति, जंपु(?बु)पत्त-पुडग-गदाणि य कुसु(?स)-[४५]वेहि(?ढि)ताइं काउं, पच्छा मधुर-मट्टियाए लेविज्जंति, करिसग्गिना(?णा) मउएणं पव्वं(?च्चं)ति । पच्छा पत्ते निधा(?ट्ठा)विज्जंति, सीदीभूताणि य णव-भायणेसु कयाइं सुरभि-कुसुमेसु वासिज्जंति, [४६]पुण लद्धीए गंध-तिलेण(?तेल्लेण) अब्भंगिज्जंति, जातिफलादीणि य दव्वाइं बीयपूर-तरु-गंध(?) तत्थ पक्खिवे, सहयार-तेल्लेण य [४७]मखए(?मक्खए), तुरुक्कागरुधूवेसु अ धूवए । पुणरवि तं गंध-कुसुमेसु वासए । तओ गुलियाओ कीरंति । नामेण **पारियाओ** [४८]मुहवासो खयर-वल्लभो एसो, गंधेण कुसुम-गंधं जाति भवे(?) पारियादस्स ।

तओ मया भणिदा— सुतो मेयं मुहवासो । अन्नं पि ताव कंचि गंधव्व-जुत्ति-विसेसं पडिकहेध त्ति ।

सा भणइ-सुणह, एला-कपूर-मियमद-कुंकुम-तुरुक्क-चंदणाणं एक्कमेक्को भागो, सिरिवासग(?)-गूज्ज(?गुंजा)रस-कुदुरूक्ख(?कुंदुरुक्क)-गुग्गुल-सल्लगीणं दो दो भागा, मच्छगंभ(?)-रु[?रु]रसाणं अट्ठट्ठ भागा, मधुमत्ता य फलवण(?)सहिदा पंच भागा, कप्पूरस्स तिल्ले वेधिज्जंति इति एस **गंधराया** पियदम नामेण **पारियातो** त्ति सुरलोगम्मि पगासो दिट्ठो(?इट्ठो) विज्जाधराण च । तो(?ततो) धूवं सुणाहि, अगरु-तुरुक्क-सज्जर[?स]-कुंदुरु[?क्क]-णहचंदण(?)-सक्कराणं सक्के(?व्वे)सिं पि सम-भागा एसो दु अपरिच्छद-धूवो नामेणं **गंधहत्थि** त्ति । कुलवधु-हिदउम्मादं करेइ । विईसि(?) महग्घो तेणेह चंदण-सियवालय(?)-नि(?मि)यमद-मंसीइ(?) मियमदो ईसि सेसाइं सम-भागं मलिलेण दु कारये गुलिया, एस च्छायासीता गुलिदा धूवं जिणवद(?र)-जोग्गं तु, सक्करा-विरहिदा सकप्पूरा समालंभणं जिण-चक्कि-केसवाणं तुहं वा । एत्तो, वण(?ण्ण)गं सुणह- [४९]गंगेई(?) भागा पंचवीसा, अभयसीराण(?) वि पत्तेयं पंचवीसं, पियंगु-तगर-वालगाण अट्ठट्ठ-भागा, तय-णलिगा(?)-णहचंदण-गुग्गुल-रसाणं दो भागा, [५०]सुहमेलाए तित्रि

कवि कप्पूरण वि पत्तेय वोन्निफल(?)-गणपाद(?)सहितो मियमदो वेधी(?) जातिकुसुम-वासितो एस **विज्जाधरो** नाम वन्नगो । इतो **अंगारसहणाम**(?) सुणह संखेवियं, एला-खारकोवालकोयकट्ठं(?)-व(?त)मालपत्तं च ससि-विधियं(?) जादिकुसुम-वासं [५१]अंगाहसणगं(?) विणा वि [५२]ससिणो (?रुसिणो) अजितेंदियाण काम-राग-वद्धणं करेंति ।

एवं तओ पिया मम परिकहेइ इसेदिजोईदाउ(?) वि, ताओ य उवजीवंतो तीए सहिओ सुहं अभिरमामि ।

अन्नदा य पिया असोय-वणियाए अच्छंती सहीसु भणिया— पिय-सहि ! कंचि ए(?ते) तट्टिदारद(?भट्टिदारअ)-समागमे निव्वुतं हिययं ? तीए भणितं—हला ! कओ मे णिव्वुई ? दुगुणतरा अणिव्वुई जादा । तं होउ अलं । न मे भट्टिदारएण कज्जं ति । एयं च तासिं वीसत्थ-[५३]वोलिदं(?) अहं एगंते लताघरंतर-ठिओ सोऊणं पियाए पणय-कुविओ णस(?सुण्ण)-मणसो जाओ । पओस-काले य अहं मज्जिय-जिमितालंकितो [५५]समलद्धो उवागओ वासघरं पवर-रयणुज्जोय-भासरं । तत्थ य मया दिट्ठं(?ट्ठा) **कामदेविगा** णाम वासघर-पाली स च्चिय सेज्जापाली वि [५५]सज्जिद-सयणिज्जा उदेक्खमाणी । सा य [५६]सज्जा सालिगण-वट्टीया उभउन्नउ(? उभओन्नआ) दुहदो कद-वब्भोयणो(?बिब्बोअणा) मज्झोणत-गंभीरा गंगा-पुलिण-सन्निगासा उयविय(?)-खोम-दुगुल्ल-पट्टं पडिच्छइ, ता अच्छरमलयणवतय-कुमंतलिक्ख(?) सीहकेसर-[५७]पव्वच्छयाभिरामा(?) सुविरइद-रयत्ताणा रत्तंसुअ-[५८]सुतुदा(?) विपुला आईणग-रूतपूर-णवणीय-सिरीस-कुसुम-[५९]गणिय(?)- सहासा मज्झ-देसे अतीवोणत-पलंब-गंभीराधिगद-ट्ठाणा इव लक्खिज्जइ ।

तं च दट्ठूण चिंतिदं मे— अहो ! इमं खयर-रायकुलं [६०]सति विभवम्मि वि विय(?) सुह-सयणीयं कारवेउं ण जाणइ । एवं चिंतयंतो तत्थ सुरभि-कुसुम-सयुत्थ(?मुच्छइ)दाए सेज्जाए णुवन्नो हं । पियाए य उवरि सरोसेणं मया भणिया वासगिहपाली— अतीव मे सिरं सवेदणं अज्ज । जह मे कोई सइदस्स ण अल्लियदि ण बोधदि य मे तह णं करेज्जासि । त्ति वोत्तूणमुत्तरीए सइरं अत्ताणं संवरेउं अलियं सुत्तं । जाव वासगसज्जा ससहीजणाणुयाता पत्ता **अच्छरा** देवच्छंदगं पिव मम वासघरं । पविसंती य निवारिता वासगिहपालीए, भणिदा य— भट्टिदारिए ! चिट्ठ चिट्ठ ताव, [६१]मा

पविसीहिसि, केमेव [६२]सुव्वमाभासध(?) त्ति मा सद्दं करेह । इदाणिं चेव भट्टिदारओ सिर-वेदणाए बाधिज्जमाणो, मा मे कोई बोधिज्ज त्ति निवारेउं, निद्दावसमुवगओ । तं एदेण कारणेणं एत्थ चेव दारे णीसद्दा उ चिट्ठह, णिय-ल(?उ)वधाणं वो इह पदेसे देमि त्ति । तं च सोऊण मया चिंतितं— साधु अहो ! इमं रायकुलं विणीतं विणय-मज्जाया-ठविय-मेरायं जं मे वयणेणं नियय-सामिणि ससहिजणं णंवदुधा(णव-वधु)-भावे वट्टमाणिं पविसंतिं निवारयति एसा । सा य तहा सनिद्दुरं णिवारयंति भणिया पियाए— हला ! एस ठिदा हं । अज्जपुत्तेण जहादिट्ठं भूमिं नादिक्कमिस्सामि । तओ सा सहीसु भणिया— वयंसि ! एदम्मि रदि-पणय-वीसंभ-णिरच्चएसु णत्थि मज्जादा । पविसउ भवदी । कदाइ एसो कम्हिय(?इ) कारणे कुविओ हवेज्ज पियदमो मे(? ते), तओ पसादयदु भवदी। ण य निय-चेडिया-वारियाए [६३]ते था(?ठा)ईयव्वं, ण य जोग्गं एदीए अइरियाणं वारणं ति । तीए भणितं— हला ! मा एवं भणह । एसा हु संपदं अज्जपुत्त-वयण-[६४]णिओग-साणुग्गहा, ममाओ वि अधियतरी [६५]वट्टति । ण य णरिंद-संतियाओ [६६]आणागम-ओडाणा(?) महग्घाओ । अज्जपुत्तो हं(?मम) परमीसरो [६७]एत्थ नाहं । [६८]तं च पप्प अहं से समाण दासी, एसा वा णिओग-साणुग्गहा अवि य त्ति । तासु भणितं— सच्चं एवमेवं ति । तह वि सिणेहे वदिक्कमो नत्थि।

तदो सा सहीसु [६९]अब्भत्थिया पविट्ठा, सणियं च मम पाद-मूलं उवगंतुं भणइ— अज्जपुत्त ! किं मया वो अवरद्धं जेण मम पवेसो वारिओ त्ति । अहवा [७०]अत्थि अवराहो होइ तओ सयमेव निग्गहं कुणह । अहवा पणय-सिरा एस वो पादे पसादयामि, मरिसेह मम पाद-सुसूसियाए, दास-जणे को कोवो ? अवि य,

पणय-णिरव्वय-[७१]सोहिद-पहाणं मुहरस-पाण-विलोहिआणं ।
चदु [७२]विलाससालिनियाणं किह [७३]रूसिज्जइ कामिणियाणं ॥

एसा सुरद-सुहल्ली, वच्चइ मोहमभिणंदीआ(?) रत्ती ।
[७४]ण सि मे सुहेण लद्धो, पसीअ पिअ ! [७५]णिभणनुमकालो(?) ॥

एवमाइं बहूणि पियाणि मम्मणगादि भणइ । पडिवयणं च अलभमाणी पणय-[७६]मन्नु-खिन्ना भयमाणी मम्ममणं भणइ— सुहिओ होदु सहि-जणो जो मे बला एयस्स आणं ण(?अ)तिक्कमावेमि(?ति) । संपदं परम-कुवियस्स पसादो पडिवयणेणं पि ण लभामि । एवं भाणिउं पगलितंसु-लोयणा सघग्घर-कंठा

दीहं णिस्ससिऊणं समुट्ठिया य दाराभिमुही । गहिदा य मे वत्थ-पल्लवे, आकड्ढिऊण य अंके निवेसिया । अवतासिया इमो(?य मे) भणिदा— सुयणु ! अत्थि ते अवराहो तह वि का सत्ती मम तुहोवरि कोवं निव्वाहेउं ? एवं भणंतेणं अभिमद-वयण-पसादिदा [७७]चिरज्जरवणुब्भाहदा(?) य निव्वाविया सुरद-[७८]सलिलेणं । भणदि य मे तरा(?रता)वसाणे [७९]सुमुही—पियदम ! ण जाणामि अत्तणोवराहं । तं कहेह मे दोसं ति । कधितं च से मया असोगवणियाए सहीसु वीसत्थ-[८०]वोल्लिदं । तं सयं च सोऊण भणितं तीए— पीयदम ! सव्वं(?सच्चं) मया तया भणितं एदं तं, तं पुण कारणं सुणह मेत्थ । [८१]जेण जो जम्मि पदेसे परिचरितो भवइ, सो तम्मि पदे[से] विरागं गच्छइ । अवि य, अह पुव्वि चेव तुह दंसणूसूई, सहि-समक्खं [८२]बहुं जहज्जरजरिदा(?) आसि । तुह समागमे य अज्ज अहं तांहिं भणिदा सपरिहासं— हला ! अत्थि ते किंचि पियदम-समागमे निव्वुदं हिदयं ? मया भणिदं— कओ मे निव्वुई ? दुगुणतरा अनिव्वुई जाया । अलं मे भट्टिदारएणं ति । एवं मया तत्थ भणितं, तं पुण कारणं सुणह । अहं तु पुव्वि तुह परोक्खस्स केवलमेत्तं गुण-ग्गहण-विलोभिता परम-दुक्खिदा आसि । पच्छा पुण तुह समागमे उद्दीण(?उदिण्ण)-मक्खित-मधु-दक्खिणो(?ण्णो) इव करभस्स जहा तुह रसासाद-लद्ध-सुहाए तुह पासादो अंगुल-मेत्तमवि वियोगं असहमाणीए एदेण कारणेणं जूरमाणीए तं तहा भणितं । तं मरिसेदु पियदमो मे ।

मया आलिंगिऊण भणिया— पिए ! नत्थि पियजण-पणय-भणिए छलो त्ति । भणिदा य— सुयणु ! कीस भे एसा स(?से)ज्जा मज्झे अदि-पलंबा कीरदि ? तीए भणिदं— ममेरिसा रुच्चइ । मया भणिया— कीस तुह एरिसा रुच्चइ ? सा भणइ— सामि ! सुणह, खलु कामिणि-जण-वण्णिदा ति-विधा सेज्जा । तं जहा, पिय-वादिणी, अपिय-वादिणी, मज्झिम-वादिणी य त्ति । तत्थ जा पिय सा मज्झ-पलंबा कीरइ । किं-कारणं, जेण पिउजणो परम-कुविओ सरंतो वि एगंतमंतं अवसोयव्वो च्छिन्न-सरीरो मज्झे चेव पडिपडइ । मज्झस्स मज्झिमा चेव सेज्जा, [८३]णंदियदाणा(?), दिन्नादा(?) वा कीरइ । एगंतेण [८५]कड्ढिमज्झिम-वाता ण[८५] कीरइ । जेण इच्छाए सरीर-संवासं असहमाणी इत्थी [८६]देवस्स एग-पासल्लीणा मज्झ-विहत्ता(?) सुहं सुवइ । मया पुण तुह सयणिज्जे सव्वंगिअ-संपत्ति-सुहं महंतीए अतीव मज्झे गंभीर-पलंबा कारिता, तीए अ गुणेणं सुत्तस्स जागरमाणस्स वा कुविदस्स पसन्नस्स वा विजुज्जणा नत्थि ।

तओ एदं सोऊण चिंतितं मे—साधु अहो ! सेज्जा-रदि-गुण-विदाणिदा अच्छरा इव **अच्छरा** । एवं अहं तीए सहिदो सुरवरो इव जहासुहं अभिरमामि । अवि य, आलिंगण-परिचुंबण-कररुह-विघट्टण-दसणाधर-संजोयण-पदकारण(?)-मुक्क-सिक्कार-भावाणुकारिणीय सहिदस्स सहास-केलि-कलह-कुविद-पसायणोवगूहण-पुणन्नव-पीति-रस-रसायणोवयोय(?)-रमणिज्जतर-सुरयामद-पमोदं अणुभवंतस्स गदा रयणी ।

अन्नदा य अहं पुणो रन्ना **देवरिसभेण** विज्जा-पुरच्चरणेणं दिक्खिओ हं सत्त-रत्त-गहिदोववासो य नीतो हं पुत्त-सहिएण राइणा **वेदड्ढ-गिरि**-प्पभ(?स)वं विसमावत्तिं(? त्तं) महा-नदिं । तत्थावतारेउं भणदि राया— ताद **वसुदेव** ! एत्थ ते णदीए उरत्थाह-जल-गदेणं विगद-[७]व्वेणं(?वत्थेणं) अभीएणं एगागीणाऽविलंबित-भूएणं विज्जाओ जवंतेण सत्त-रत्तं वसिदव्वं । सहिदव्वा य उवसग्गा ते । एवं भाणिउं ससुदो वि पडिगओ राया । अहमवि जल-गओ एगागी सूर-किरणाभिमुहो सीतातव-वात-वरिस-मडि(?हि)दोवरिकायो सत्त-रत्तं बहूवसग्गो परिवसामि । अवि य, तत्थ सिसुमार-मगर-मीण-[८]तुंड-विघट्टिय-देहो सहामि अवत्थं अधियतरं व सहिज्ज [९]तुप्पात(?)-विसम-गज्जिद-खर-फरुस-णिट्ठुर-णिसट्ठ-णादा आढत्ता ममोवरिं जलधरा जलं मोत्तुं । सा य णदी पूरेण आगदा । तओ हं महदा जलवेग-तरंग-परंपराहओ [१०]मदो स्सीहां(?) वुज्झमाणो आसु-जलोघेण वाघुण्णिद-सरीरो हीरिउं पयत्तो हं। बहुसो य [११]पयदिगमेसु(?) हीरमाणो, कत्थइ गामागर-णगर-खेड-कब्बडादीणि पेच्छमाणो, कत्थइ अरन्न-देसेसु राय(?गय)-कलभ-रहस-परिमलियाइं दुम-गण-गहणाइं अवलोगयंतो, कत्थइ आवत्तेसु [१२]उल्लोल-निव्वोलणासु वि हीरिज्जंतो णादि-व(?चि)रेण चेव महदा जल-वेगओ पवेसिओ महा-समुद्द-जलोघे । अधि[य]-लवण-जलुप्पुरिद-सव्व-सोदो विसादोवगओ चिंतेउं पयत्तो— नूणं अजोग्गो हं विज्जाणमंतराइयबहुलो निच्च-कालं महेच्छं तं च परम पच्चएणारद्धं व लहुं विणासेति(?मि) । कओ मे एण्हि विज्जाओ जीविदं वा ? ताव य सहसा पच्चक्ख-मच्चुणा विगराल-घोर-दाढाकरालेणं महामगरेणं गलिओ हं । तओ मे चिंतितं—चिरमिदाणिं मे मगरोदरे वसिदव्वं। एवं चिंतयंतो बहुविधं तह वयणे सुणामि विज्जा-जाव-नगवारं(?) । एवं चिरं निमीलिद-लोयणो उल्लोलेसु मगरेण य उव्वत्त-परियत्तं कीरमाणो विज्जाओ जवामि । नवरं च सहसा णभयले सद्दं सुणामि- अहो! पारिदं भट्टिदारएण पुरच्चरणं, सिद्धाओ से **कोसिय**-पुव्वियाओ विज्जाओ त्ति।

तं च गिरं सोऊणं हरिसिएण य मे उम्मीलियाइं नयणाइं । पेच्छामि य उवरि-णभ-ट्ठिदं ससुरं ससुयं । [.....?.....] । तं च सोऊण सचिंतो जाओ हं । तओ राइणा भणिदं– अलं विसादेणं । सव्वं साहु भविस्सइ । इदाणिं सिग्घं समुप्पदाहि त्ति । तओ हं विरु(?ह)गो इव वि(?ण)हं समुप्पईओ, गदो य सह राइणा **तातपुरं** । तत्थ य अहं बाहिं **तातपुरस्स** महदा कय-कोऊय-मंगलोवयारो **वरुणगिरि**-सिहरम्मि सिद्धायदणस्स पुरओ कत-विज्जा-पूय-निज्झातणो विज्जाधर-जण-मज्झे विहित-विज्जाधर-वेसो भणिओ हं राइणा-तात **वसुदेव** ! एस सि मया **कोसिय**-पुव्वय-विज्जाधर-गण-पुरओ विज्जासु संविभत्तो सि । भणदि य विज्जाधरे राया– एस भो ! **गो(?को)सिय**-पुव्वओ मम सीसो विज्जाधरो त्ति । तओ तेण पूएदुं पाराविदो हं विधिणा [१३]वरंतुमगरंद(?) ।

तदो पच्छा पिया-सहिओ इव सुरवरो अन्नमयं(?) ण्हाद-विलित्तो कय-जिण-पूओ पूएऊण य फासु-एसणिज्जेण भत्त-पाणेणं पभूदेण [१४]अणुमतेण य [१५]विधि-संपउत्तेण सुविहिद-जणं(?) ताहे पुणो [१६]पेत्थासाहारमहारिदो(?पत्थमाहारमाहारिदो) हं पसन्न-मणसो य सह-पियाए जहा-सुहं अभिरमामीति ॥

॥ [१७]इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए अच्छरा-लंभो णाम वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. जवले पु. । २. आसट्ठा पा. । ३. समालब्भि पु. । ४. गदा देव० पा. । ५. आपासयादएणं पा. । ६. वित्तभुवणं पु., विततुवेण पा. । ७. समाणे पा. । ८. अच्छइं पा. । ९. वरिउववासं पु., चरिउवावास पा. । १०. तेणादक्खिओ पा. । तेणत्तिक्खिओ पु. । ११. प्पिधा वित्ता तं पु. । १२. परिवत्ताण पु. । १३. चक्को पा. । १४. णित्थिदमाणं पा. । १५. हदरिकेस० पु., हरितकेस० पा. । १६. एवत्तया पा. । १७. ०जवणसोणीसु पा. । १८. चिंतिचमे खद्ध मग्गेणं । एस एव एक्कारणं पु. । १९. पुदिदा पा. । २०. हिट्ठपट्ठओ पा. । २१. सुमुक्खिओ पु. । २२. वायुंणिय पा. । २३. तं वि हं पा. । २४. दुद्धलद्धिददं पा. । २५. ताावियत्थं पा. । २६. जामादुगो उवट्टदि पा. । २७. तेसु अ सुप्पउत्तं पा., तेसु य ह सुप्पयुत्तं पु. । २८. तुमंअन्नदा० पु. । २९. भरहगच्छाओ पु. । ३०. सुंडिबंधूर० पा. । ३१. सुट्ठ पा. । ३२. णिइत-कुसुम० पा. । ३३. वित्थे- पु. । ३४. परिचुंबिता य मे भारिदा पा. । ३५. पाउसिय मुहि गंधव्व- पा. । ३६. यभादु गंधव्वा ओव्व- पा. । ३७. सुरलोगस्स गओ पा. । ३८. णिराहं पु. । ३९. एव खदं पारि० पु.। ४०. हेवं पु. । ४१. एला हर समागता गातरवालग मुत्था सलियाणं चदुरो २ भागो पा. । ४२. कप्पूरोल्लोल कत्थूरियाणं पु. । ४३. ईसिं सि पु. । ४४. कवुच्छए पु. । ४५. चेहिताइं क्काउं पयव्वा मधुर मट्ठियाए पु. । ४६. जद्धलद्धीए पु. । ४७. मेखए पु. । ४८. मुखवासो पु. । ४९. गंगेया नागा पंच० पा. । ५०. सुहमेलाए तिन्नि वि पु., सुहामलापच्छिकवि पा. । ५१. आगारस० पा., अंगारसहणुणं पु. । ५२. संसिणा पा.। ५३. वालिदं पा. । ५४. समलिद्धे पा. । ५५. सज्जिणिज्जा पु., सज्जिदसव्विदसयाणिज्जा पा. । ५६. सेवा पु. । ५७. पव्वुत्थ पा. । ५८. सवदा पा.। ५९. ग्गाणिय सलासा पा. । ६०. सति वि विभवंसिसिविय पा. । ६१. साए वि साहिसि पु. । ६२. सुव्वमाभासधत्तिमासधत्ति मासद्दं पु. । ६३. त थाइअव्वं पु., ते घाइअव्वं पा. । ६४. णियोग-साणुग्गहो पा. । ६५. विज्जति पु. । ६६. आणीममउडाणा पु. । ६७. एह पा. । ६८. तं वपप्पहंस समाण० पु. । ६९. अपूत्थिय पविसिव्वा सणियं पु. । ७०. अच्छि पु. । ७१. सोहिदयहाणं मुहुरं विसयाण वि लोहियाणं पा. । ७२. विलासुसा० पा.। ७३. रूविज्जइ पा. । ७४. ण विसि मे सुणेह लाद्धो पा. । ७५. कुणितुमकालो पा. । ७६. मंवुक्खित्ता पु. । ७७. विरज्जूरवणुब्भहेदा पा. । ७८. सलिलिणं पु. । ७९. सुसुहा पु. । ८०. वोलिदं पु. । ८१. तेण पा. । ८२. वहुं दुरिदा आसि पा. । ८३. णादिय दाण पा. । ८४. कड्ढिमज्झिमता पा. । ८५. णी पु. । ८६. वेसस्स पु. । ८७. व्वधेणं पा. । ८८. त्थुंड पा. । ८९. तुप्पी तं पु. । ९०. गदोस्सीहं पु., महोस्सीहं पा. । ९१. एगवदि- पा.। ९२. उल्लोभनिवोलिणासु पु. । ९३. वरंतुमंगरदं पा. । ९४. मणुमत्तेण पु., मणुमन्नेण वि य पा. । ९५. विवि संपउत्ते गे सुविद पु. । ९६. पेच्छासाहारमहारिदो पु. । ९७. अच्छरा-लंभो नामग्ग सत्त चत्तालीसइमो सम्मत्तो पु.।

२१. चंदलेहा-लंभो

अन्नदा य सिद्ध-विज्जा वणाओ [आणिदा] **अंसुमंत-सम्मतदेवा** सयमेव राइणा मम सगासं । ते य सिद्धविज्जे दट्ठूणं परं परितोसमुवगदो हं। चिंतेमि य—मे ख(?ए)त्तो अन्नं पियदरं [किं] अत्थि । ते य मे सपत्तीएण अभिणंदिया पूइदा य रन्ना **देवरिसभेण कोसिय**-पुव्वय-विहित-विज्जाधर-वेसा आगास-गमण-दव्व(?) इच्छ-विउव्विद-[विमा]णा कामगमा विज्जाधरा जादा, सेवंति य मे **दमण-दमयंत-पवणवेगानिलवेग-तेयसार**-सहिदा **अंसुमंत-सम्मतदेवा** ।

अहमवि किच्छाहिं पाविऊणं आगास-गमणं तओ दिणे दिणे **अच्छर**-सहितो इव सुखरो सच्छंद-रइ-कीला-परायणो सुविउल-विमल-गगणतल-वत्तणी-[1]विलग्गो सत्तमेणं वाउपहेणं कदाइ विउव्विद-पवर-विमाणारूढो, कदाइ तुरग-गय-सीयसंदणादीसु, कदाइ रुरु-चमर-सफल(?)-हरि-हरिण-मयूर-वाहण(?) जलद-पडल-पड(?)-पग्गमादीसु, पिय-कंठालग्गो पेच्छंतो सरस-[2]सिदसल(?)-सागर-[3]हरग-पुराराम-गाम-गोउल-सीदा(?)-सीमंतर-वणकरि-कुल-करुल्लूरिद-वणराइ-संकुलं अवणिदलं, दूरदो पलोयमाणो हिममंत-मलय-मंदर-महिंद-केलास-णिसध-गंधमादण-विज्जुप्पभ-सोमणस-सेल-वासहर-वक्खार-सेल(?सेलेसु) जमग-कंचणग-पवर-[4]उसुमार(?गार)-सिहर-रयण-वरोदार-कुहर-कंदर-दरिमुह-पवरोज्झर-तरु-विराइद-णंदणवण-भद्दसाल-सोमणस-पंडगवण-देवकाणणादीसु रयणद्दीव-वणेसु य विविध कप्पपादव-कुसुमित-लदा-विदाण-णाणाविध-पंचवन्न-वर-सुरभि-कुसुम-थवय-वियसिय-गंध-पसरिद-समाहूद-मुइद-मधु[?यर]-महिद-कुसुम-सुत्थिद-[5]कणत्थ(?)-छप्पद-गुमुगुमुगुमेंत-परसिद-परहुद-मयूर-केगायमाण-रमणिज्जेसु वियरमाणो वर-कमल-संड-मंडित-हरदोवसोभित-दिसेसु पमुइत-विज्जाधर-सुर-मिहुण-परसिद-पगीत-गंभीरेसु सुर-खयर-पुर-वणुज्जाणेसु य जहासुहं पविहरामि ।

अन्नदा य अहं णिसभ-गिरि-कंदरोदरे पिया-सहिओ दियसं अभिरमिऊण पओस-काले वेदड्ढोवरिएणं णियत्तो पेच्छामि तत्थ वेदड्ढ-सिहर-संठिदे देवरमणे उज्जाणे णेगाओ दिय(?दीवय)-पंतीओ समग्गा(?ग्ग)हिदाओ य मूईयाओ(?) य पेच्छामि । पुच्छिदा य मया **अच्छरा**— सुयणु ! को पुण एस विज्जाधर-जण-छणो इव विरइदो दीसइ? तीए भणितं—अहमेयं जाणामि । अत्थि **वेयड्ढ**-दाहिण-सेढीए अम्ह विसय-सीमास(?ए) एत्थ य **कामपुरं** णाम णयरं पुर-वरं । तत्थ य **तिसिहर**-भादा **हेप्फयस्स** चुल्ल-त्त(?ता)ओ राया **महासिहरो** नाम । तस्स एवति-कालं महा-विज्जा-सिद्धी ण आसि । महा-पुरच्चरण-पडिवन्नस्स य से अज्ज महा-विज्जा-सिद्धी जादा । एदेणं कारणेण विज्जाओ साधियाओ त्ति । एत्थेव य ताण णिज्जातणय-पूयं संतं(?ते)पुरो सपुरजण-ज्झा(?जा)णपदो य एस सो करेति त्ति ।

तदो मया भणिया— पिए ! पेच्छामि ताव इहं पूयाओ त्ति । तओ मु(?झ)त्ती अवदिन्नाणि मो, विविधासु य विज्जाधर-णट्ट-गुण-गीद-वाइद-समाउलासु पेच्छासु वक्खित्त-लोल-णयणाइं परिब्भमिउं पयत्ताइं । एगत्थ गहण-[६]जणंतरे अदिट्ठ-रूवं अतीव-मधुरं लक्खणमंतं च गिज्जइ । **अच्छराए** भणितं— अत्थि पुण एअं अज्जपुत्तो जाणति कोसल्लएणं किं एसा इत्थी पुरिसो वा गायति ? त्ति । मया भणितं— इत्थी, ण पुरिसो । तीए भणितं— किह एयं ति जाणह ? मया भणितं— इत्थी-भावेणं पुरुसेहिंतो पभूद-मयणामदणो(?) य सिंगार-करण-[७]सन्नुट्ठिओ(?) होइ । एसा य गीदद्धणि सिंगार-रस-वसाणुया अलंकारावच्छिदा ललित-पद-करण-मयु(?धु)-संयोगा य । एदेण कारणेणं जाणामि इत्थी एसा गायति त्ति । तीए भणितं—तं जइ इत्थी, तओ किं तरुणी, परिणदा व परिणीता, कन्नगा वा सामा गोरी वा ? वि(?त्ति) एदं कधयहेदि(?ति) । मया भणितं— तरुणी कन्नगा य । कम्हा, परिणयाए इत्थीए वा दु सिढिलत्तणेण [८]गादुच्छाह-सिढिलदा होदि । तओ उच्छाह-[९]पुव्वले(?दुब्बल्ले)णं, अत्थाण-परिक्खालिओ अमधुरो खणे खणे पडिहायमाण-तारो सरो होदि । एसा पुण आरुहणुव्वहण-[१०]खमणसमत्था उच्छाह-रसिदं गायइ, तेण जाणामि तरुणि त्ति । जं पुण एसा सभावदो अति-तार-जोग-तिक्खं उवदेसक्कम-मधुरं अपत्त-रसासंकिद-पदं सलज्जं च गाइय(? गायइ), तेण कारणेणं जाणामि एसा कन्नगा । पुरिसेण

परिभुज्जमाणीए इत्थीए विसिट्ठतरं धट्ठत्तणं होइ, सिंभिय-पुरिस-सभाव-वदियरेण य सलिल-धाराउ[११] जलिद-हुदवहो इव कन्नगा-पित्ताणलो सभावं मद्दवत्तणं च गेण्हइ । तेण य कामेणं पत्त-काम-रसा अइक्कंत-कोमारभावा कणग-सोट्ठव-समणुभूद-भावग्गहण-पदाण-रत्तं राग-जणणं परम-मधुरं च रसाणुआ गायति एवं च से णत्थि, तेण जाणामि एसा कुमारी गायति । जं पुण भणसि किं एसा सामा गोरी वा, तं भणामि सामा एसा ण गोरी । किधं, जेण एस गीद-सद्दो मधुराद्दो वि मधुरदरो । तीए भणितं– किं जारिसं सामा गायति तारिसं अन्न-वन्ना ण गायइ ? । मया भणिदं– ण तारिसं अन्ना गायइ। कहं, जेण इह खलु पहरा-दमदा(?) इत्थीणं पुरिसाण य [१२]पत्तीउ वन्निदाउ तत्थ सभावओ इत्थी पित्ताधियादिट्ठा पुरिसो सिंभाधिओ त्ति । तत्थ किर जदा इत्थी पुरिस-जोग-काले गब्भादाणे य वेदुक्कडा दो(?हो)दि तदा पित्ताधियताए सामो गब्भो संभवइ । पुरिस-वेदेण य उक्कडेण सिंभाधियताए गोरो हवइ । सिंभो(?भ)- अतियारेण एगतरस्स अइ कालो अइ धवलो वा होइ । उभयुक्कडदाए उभय-मद्दणदाए वा अन्नदरो वा मिस्सो वन्नो होइ । एगदरस्स मंदमंदुक्कडदाए मंदमंद-परिहाणीय वा पउमगोरो वन्नो अवदात-सामो वा होदि। पित्तुक्कडस्स य वन्नस्स सिंभ-परिहाणीए अ सभावदो महुरो सरो संभवइ । अति-कसिण-वन्नस्स पुणो ति पित्त-णिसेयुक्कडदाए अच्चत्थं दिणकर-कराणल-ताविदस्स व वेतताउज्जस्स(?) अइ उड्ढंदूरताए(?) अइ-निट्ठुरो सरो होइ । एदं पुण निट्ठुरत्त-विरहिद-[१३]सिंगार-करण-सरसत्थुआ(?)-केवलमुवदेसक्कम-णिप्फन्नं पयदि-मधुरं गिज्जइ, तेण जाणामि एसा कुमारी गायइ । वामिस्सो पुण वन्नो वामिस्सं चेव गायइ, परं गोरी य पित्त-परिणदी(?)-रसा वि मधुरं गायति त्ति ।

एवं मया कधिते भणति– एहि, वच्चामो इत्थ इदाणिं पच्चक्खं चेव पि(?पे)च्छामो एदं ति । गदाणि य मो तत्थ । दिट्ठा य मो **महासिहरि (?र)**-विज्जाधर-राय-सदसि रंग-मज्झयार-गदा चदुव्विधातोज्ज-तालाणुवत्तीए नच्चमाणी णिद्धच्छवी पयति-पसन्न-सामन्न(?ल)-वन्ना कन्ना, अवि य जो रूव-जोव्वण-लक्खण-गुणेहिं दूरदो ओभामेदि **मीणग्गा-रंभ-तिलोत्तमादियाओ** वि सुर-विलासिणीओ सा य वर सुरभि-मास-वियसिय-पयंडोरीय(?पुंडरीय)-सुद्ध-णयणा, सम(?र)य-समुत्तिदुमंडलालो(?भो)ग-सोम्मतर-वदणा, ललित-वर-चारु-कुकुंदरोवहद-सिरि-समुदय-विउल-

जणह(?हण)-नितंबा, पवर-बिंबाधरोट्ठी, मुट्ठि-गेज्झ-मज्झपदेसा, चामीकर-पवर-णियर-भूसण-धरी तरुण-तवण(?णा)गार-सरिस-वसणुत्तरीया, पीण-थण-तुंग-संयद-पयोधर-जुवल-मालिदोरसा, सजल-जलदावलि-णिद्ध-सुह-साम-वन्ना मणोहरं नच्चमाणी ।

सा य दिट्ठमेत्ता चेव पविट्ठा मे हिदयं । चिंतेमि य– अहो ! से रूव-सामिद्धी सिंगारदावे(?) चतुरदा लडहदा य । भणदि मे **अच्छरा** सणीयं– अहो ! अज्जपुत्तेण एसा कन्नगा गीद-सद्देणं जहा-रूव-ठिदा वागरिदा । पुच्छिदा य मे पिया– सुदणु ! का एसा इय रूववदी कन्नग त्ति । तीए भणिदं– एसा **महासिहरस्स** राइणो **चंदवदीए** [देवीए] अत्तिया **चंदलेहा** नाम। तदो सा रायसुत त्ति य सुट्ठुदरं मे बहुमदा जादा ।

तं च अहं अतीव हिद(?ट्ठ)ओ पलोएमाणो एगिंदिओ अणिंदिओ इव संवुत्तो । लक्खिदो य अहं तदवत्थो **अच्छराए** । तओ तीए ईसाए सरोस-चलित-भिउडि-भोग-भंगुर-तरंग-वग्गीविद(?)-निडालाए हत्थे घेत्तूण आकड्ढिओ हं । तओ घेत्तूण य मं सललिद-निरिक्खिएणं तज्जयंती णभं समुप्पइया । गयाणि मो **तातपुरं** । तत्थ य नियय-वासघर-सयणिज्ज-तल-गओ कामस्स पयदि-वामत्तणेणं **अच्छरं** अच्छरं पिव रूववदिमवमन्नमाणो गमेदि(?मि) तं निभं(? सं) । **चंदलेहा**-रूव-हद-हिदयस्स य ण मे नयणेसु निद्दा ईसिं पि समल्लीणा ।

अइच्छिदाए रयणीए पच्चूसे गहिद-[मुह]धोवणस्स उवट्ठियाओ मे पदिदिवस-पडिकम्मकारियाओ, ण य मया पडिकम्मं इच्छिदं तु । तओ मे **अच्छरा** भणइ– अज्जपुत्त ! कीस भे पडिकम्मं न इच्छितं ? किं वा भे इमं हिमाहदं पिव पंकयं जहा परिव्वायं सर(?) मुहं लक्खीयति ? मया भणिता– न एरिसं किंचि, सभावेणं चिय एदं एरिसं ति । तीए भणितं– एयं एरिसं पुरा आसि। अत्रं किंचि सुपडिबद्धं उत्तरं चिंतेहि त्ति । तओ मया भणिदं– सुट्ठु तुमे लक्खिदं । अत्थि ते(?मे) महती सिर-वेयणा वट्टइ, तेण मे एरिसी मुह-च्छाया। तओ तीए चूत-पल्लव-सुकुमाल-रत्त-सरिस-प्पभेणं हत्थेण आलभिऊण भणितं– नत्थि ते काइ सिर-वेयणा । [मया भणितं-] तओ किं लक्खेमि(?सि) ? । तीए भणितं– **चंदलेहा** ते हिदय-तल-पविट्ठिया मम्माणि [१५]घट्टयति । एवं ते लक्खेमि । मया भणितं– नत्थि एरिसं किंचि। तीए भणितं– एरिसं एयं, विज्जा मे परिकहेइ । मया भणितं– नत्थि

एरिसं किंचि, महं पि विज्जा परिकहेइ । तीए भणिदं– अज्जपुत्त ! न वट्टइ(?), मा विज्जं अब्भाइक्खह असंतयवेण(?) । मया भणिया– ममं पुण कीस विज्जा असब्भाते(?वे)णं अब्भाइक्खदि त्ति ? । तीए भणितं– सामि! ण विज्जा एस भं(?) भणइ । मया भणितं– किं ताव विज्जाए पत्तियामि उताहु अत्तणो देहस्स ? तं अवेह एत्तो । नत्थि एरिसं किंचि, ण से सब्भावं परिकधेइ(?मि) ।

एवं वि णिब्भच्छिदा णिग्गया मम समीवाओ । आगदा य **सम्मतदेव-दमणादयो** य मम सगासं । तेसु वि भणिदो हं- अज्जपुत्त ! तुब्भे अज्ज ण साभाविया लक्खिज्जह । किमेतं ? ति । तओ तेसिं पि मे सिर-वेदणा चेव परिकधिदा । ण य मे भोयण-वेलाए भोयणं रुइतं । भणितं च **सम्मतदेवेणं**– अज्जपुत्तस्स **भरुगच्छे तारावति**-दंसणुप्पन्न-कामाकल्लय-गहि[द]स्स मया एरिसा मुह-च्छाया लक्खिदा जारिसा हु संपदं लक्खिज्जइ। मया हु तेसिं चिर-निगूहितं चेव, भणिदा य मे ते रायसुता- अवसरह एत्तो। मा रोलं करेह । धणिदं निद्दाईओ हं सुविदुमिच्छामि । तओ ते अवसरिता। अहं पुण **चंदलेहाए** अवहिद-हिदओ कत्थइ रतिं अविंदमाणो काम-पिसाय-विनडिओ उम्मत्तभूओ जाओ मि । तत्थ मे पल्लंक-तल-गएणं अच्छमाणेणं आसण-ठिए कणग-कुड्डे **चंदलेहा** जहादिट्ठ-रूवा [१५]सामासवट्टंगा(?), सुय-विसेसिया(?) [१६]वितित-[१७]सिमुकम्मीलणा(?)[?आलिहिदा] परिसुद्ध-निमिदा मे चिं(?तं) च अणिमिस-नयणो पेच्छमाणो काम-छिड्डिओ(?) [१८]तीए आ(?स)गास-गतमिव अत्ताणं मन्नामि । उम्मत्त-खित्त-चित्तो तीसे अंजलिं कादुं भणामि-पिए **चंदलेहे** ! किं सि ममं पुरिकुविदा ? वाहरसु ममं । ममम्मि दासे को कोवो? एस ते अंजली । पसीयाहि मे सुयणु ! दासयस्स ।

तहागय-रूवं च ममं जाल-गवक्खंतरेण आसन्न-ठिता पेच्छति मे **अच्छरा**, वयणाणि य मे सुणदि । तओ सा निग्गहित-भूसणा सणितं वासघर-दारेण अइगदा वासघरं । पविसंती य मे [१९]छद्देल्लय(?)-वसेण वि दिट्ठा, तुरियं च मया दोसु वि हत्थेसु पुच्छिदा पोत्तिल्लिदा । तओ ईसावस-चलिद-सभा(?सहास)-[२०]सरोसा ममं भणति– चोर ! णणु गिण्ह गिण्ह वमाणो(?) [...?...]वि मया गहिदो सि हत्थे, एसा ते एत्थ कुड्डे **चंदलेहा** लिहिदा आसि । तीए चंद(?वंदण)-कम्म करेंतो सयमेव मया दिट्ठो सि ।

मया य संकावस-लद्ध-सन्नेणं भणिदा– उम्मत्ता सि तुमं । अलियं

पलवसि । ण एरिसं किंचि । ततो सा पणय-कोव-भिउडि-भंगुर-णिडाला भणदि– णिरास[२१] ! ह(?ध)ट्ठो सि, पच्चक्खे वि [२२]अ चू(?छ)लिउमिच्छसि। एवं भणंतीए तीए गहिओ हं वाम-हत्थेणं [२३]चूडि-बंधे, [२४]उज्ज-हत्थेण य गाढं चवेला(?डा)ए तालिओ गंड-देसे । ताहे ईसावस-कुविदा रोस-दुपेक्ख-णयण-वदणा विणिग्गदा पुणो । गदाए तीए मया पुणरवि तब्भविदेणं आलिहिदा **चंदलेहा**। पुणरवि तहेव तीसे पुरओ आढत्तो उम्मत्तणयं दाएदुं । पेच्छति य मे तहेव जालंतरेणं **अच्छरा** । ततो ममं तदवत्थगदं नाउं, बहुसो य पलवंतं पेच्छिदूणं अवगद-ईसा-रोस-मच्छरा, 'हा एस उम्मत्तीभूओ' [त्ति] चिंतयंती, मम दुक्खेण तक्खणं चेव परम चधे(?) पुणरवि उवागदा मे सयासं। तओ मया तीए सदूरागदाए पुणो वि पयुम्मट्ठा(?) [२५]पत्तुया(?) । सा य वर-मधुर-ललिद-वयणा रहसागदा भणइ– पियदम ! अभयं ते मम सगासाओ । साविता मम जीविदेणं, [२६]मा से(सं)पदं आल(?लि)क्ख एस त्ति णितंउम्मि(?) सहि, पेच्छामि ताव एदं केरिसा वि आलिहिद त्ति । अवि य,

आलिक्ख सपत्तिणियं, लिह लिह पेच्छामि मा पुण पुच्छा[मि]।
जा तुह हिययस्स पिया, सा मम भगिणी विसालच्छ ॥

एवं भणंती निसन्ना मे अद्धासणे, बाहु-लदासु य मे गाढं आलिंगिऊणं भणदि मुहं मह परिचुंबमाणी– अज्जपुत्त ! अगित्तो(?अग्गतो) [२७]ते मरीहामि । खमिज्जदु मम निग्घिणीए, जीए मे पुव्वि तुह अलंभे अणुभूद-विसम-कामागल्लय-वेयणाए वि, जाणंतीए मयणस्स वामत्तणं, तह वि तुमं एवग्गदस्स पहारो दिन्नो । परमदु(?मरिसदु) मे एस बाहु । ण ते मया पुव्वि एस अवत्था विण्णादा । जाणामि अह परम-दुक्खं । तं अलं विलावेणं। धिदिं लभ । सव्वं साधु भविस्सइ । अह ते अप्पणा चेव तहा काहामि जहा तुमं अचिरेण **चंदलेहाए** [२८]सममेहिसि । वरं मे वहु-सामन्नं पि तुह संतियं, निव्वुदं हिदयं ण य मम संतियं ति । अलं मे तेण सुहेण जं तुह हियस्स सुहावरोहेणं। तओ ति(?नि)य पहाण-[२९]नाइकाए कालन्न(?) [?.....] ।

अतएव भणिते समाणे सागर-सलिलं पिव चंदोदय-विसप्पितं पुणरवि सभावे ठितं, तप्पच्चएण य कर-गदं पिव **चंदलेहं** मन्नामि । गदं च मम अकदाहारस्स तं दियसं । रादीए वि बिदिय-दिवसे वि मया णिच्छिदं परिकम्मं भोयणं वा(?च) । तओ मे विरहे **अच्छरा** पादे पडि[दुं]

भणिदा(?णदि)— अज्जपुत्त ! ण्हाहिदाणुभुंजाहि दिविदीए(?धिदीए), एसा ते अहं अचिरेण च हिदयगते मणोहरे(?रहे) पूरेमि । तओ मया भणिया— पिए! पहाण-नाइगा सि, किं न जाणसि सयं जहा मे मदण-वस-गतस्स तीए कज्जे ण मे भोयणं रुच्चइ । न याहं एयं कज्जं उक्कमंतेसु वि पाणेसु तुह गुरुजणस्स विदिदं काहामि । तं अलं मे ण्हाण-भोयणेणं । चिंतेहि ताव मम तीए सह समागमोवायं जाव न उक्कमंति मे पाणा ।

तओ तीए अहं समासासिओ भणिओ य- पियदम ! अविदाणियं चेव गुरूणं करेमि ते तीए सह समागमं । नवरं पुण जेमेध विदाए(?धिदीए) त्ति। तीए य आणत्तासु उवणीदं मे परियारियासु भोयणं । तं च कणग-[३०]पातिकह(?) सह तीए जीमेदुं पयत्तो हं । पक्खिवइ मे सा समा[स]सेंती सयमेव मम मुहे कवलाइं । जेमावेदुं च धणीए आयंतं सुइब्भ(?भू)दं **अच्छरा** ममं भणइ- पियदम ! सुणह परमत्थं । मम पिउणो **महासिहरस्स** य राइणो चिर-पयत्तं अहि-मंगुसं वेगं(?रं) **माणसवेगेण** सह, तहेव नवरं तेसिं अम्हं च परोप्परं दुसमंवारो(?दूद-संचारो) वि नत्थि । एदेसिं व सकंतेण मम पिउणा तुब्भ [३१]अंगीकदा केवलगा य दो वि ते दाहिण-सेढीए विसेस(?से)ण **महासिहरो ससिप्पहो** य खयरपदी सुणामो सुनाभो य जहा किर भादि-वध-जणिद-मण्णु तेणं तुब्भे विय गो(?)सिदु-कामेणं बलवगेणं वि होऊण बलियदरा सविज्जा-महदरी **जालवदी** विज्जा साधिदा अजेया सव्व विज्जासु परं सेव्व-भेदेण समत्था सव्वत्तिभुदा(?) य **वज्जमुही** सव्व-विज्जाच्छेदणी, सा वि से धूदाए **चंदलेहाए** सिद्धा । तेण से विसेसेण बलवगो चलिओ य [३२]अदिववारो(?) ण सक्कइ केणइ वि च्छलेउं जो पयदिविसम-दुप्पवेस-वास पुरं [३३]ति ऊणमदि वक्खप्पयार(?) विज्जाधर-पवर-पुरिस-सूयगा सारक्खिदं अदीव-दुद्धरिसं न य सो केणइ उवाएण तुह अम्हं वा कन्नं दाउमिच्छइ । अलंघणीओ य सामोवप्पदाण-भेद-दंडादीसु सो । सो(?सा) हि कन्नगा **वज्जमुहि**-परिग्गहिदा सयं विज्जाधरी हरिउं पि न तीरइ तुंग-पागार-गोपुर-[३४]सणिगुत्त(?)-सत्तम-पुरंतेउर-वासिणी सयंपभा भविवि(?) अहो असक्का । एक्को पुण णवरि उवाओ होज्ज जइ सा केणइ उवाएण तुह रूवं पेच्छेज्ज । अवि य—

ण [३५]बुज्झ[इ] चंद-दंसणेण वि कुमुदं वा रवि-दंसणेण य ।
तुह [३६]मुह-दंसणेण य [३७]स जोव्वणवदी भावं न [३८]वंदेज्जा ॥

तम्मा विसादं वच्चाहि, उट्ठेहि, पच्छन्नं चेव दो वि तत्थ वच्चामो । मया भणितं— केणोवाएण तत्थ गंतव्वं ?

तीए भणितं— सुणह । तीए किर कन्नगाय अदीव मयूरा वल्लभा । पंजर-गदे य मयूरे धरदि । मयूराणं [३९]चलित-गति-लवियेहि णच्चिद-चिट्ठिदेसु रज्जमाणीए सहमहंतं(?) पि न रोयइ, पेदिय-रज्जे वि सव्वहं चेव स-पुर-जणाणु(?जण)पदे मयूराणं अभयदाणं दवाविवयं । तओ तत्थ दो वि जणाइं मयूर-रूव-ठियाइं वच्चामो । गंतूण य दंसेहि से नियय-रूवं ।

तं मया तह त्ति पडिवन्नं । तदो वयंसाण अणुमदेणं चेव निग्गदाणि मो पुराओ । ताहे कहं(?यं) मया पीवर-चंदकुज्जल-कलाव-पवर-मंडिदं मरगद-मणि-किरणंकुर-णियर-सरिस-कंठं [४०]पदिसु(?)-सिलिट्ठ-विसिट्ठ-संठाण-सोभिदं वेरुलिय-मणि-सरिस-मणहर-पिच्छ-वदुक्कड-मउड-मत्थय-विभूसियं सित-गंड-मंडित-मुद्ध-वयणं ईसि-आतंब-[४१]गुल्ल(?)-पिच्छोवसोभिदं नादि-कसिण-पक्खभारं पक्खंत-व्व(?प)सरिद-हेमंतिय-बालदिणकर-किरण-[?णि]कर-सरसि(?सरिस)-वेउव्वियं मया पेरंतादंवणिद्ध(?)णयण-मणोहरं नीलकंठ-रूवं कयं ति, पियाए अतिरेय-सुद्धं मयूरि-रूवमिति । उप्पदिदाणि य मो रयय-पट्ट-याहट्ट(?)-संनिभं गयण-तलं । खणेण य पत्ताणि मो **कामपुरं** णयरं । उवदिदाणि य मो रायघर-पवर-मंदिर-कन्नंतेपुरोवरिम-हम्मिय-तले । तत्थ य मे ठाऊणं आकन्निदो **चंदलेहाए** पुरओ पवाहिदाणं मधुर-गंधव्व-सद्द-पडिभिन्नाणं महदि-वीणा-विवंचि-कच्छभि-सुघोसगादीणं अहोज्जाणं(?) सुइ-सुहो निग्घोसो । चिंतित च मे, नूणं कन्ना गंधव्व-विणोदेण अच्छइ । तओ मया हम्मिय-गिरि-सिहर-समारूढेणं पवण-घणादोज्ज-मुरव-मंद्र-जा(?ज)लद-गज्जिदाणुवत्तिं करेंतेण तस्स पद(?ह)र-परिच्छेदे य पढम-घण-गज्जिद-सद्द-परितुट्ठेण व महा-मयूरेणं तहा-मणहरं केगाइयं । सो य मम केगारवो सुसराए पिय-मयूरीए, अन्नासु य नगर-भवण-हम्मियारूढासु मयूरीसु, पंजर-मयूरेसु य मधुर-मुक्क-राव-बहुलेसु समयं अभिणंदिदो । जमय-समय-पयत्तेसु य मयूर-वुक्कारिदेसु पयंपियं पुरवरं, पुट्ठिदं पिव णहतलं, परिहसिदानि व हम्मिय-तलाइं, पूरिदाणि व दिसा-मुहाइं, पवियंभियाणि व पुर-वर-पागार-गोउर-सिहराइं ब(?च) हुंकारिताणि व पडिसुया-सद्द-गब्भिणाइं गिरि-नितंबाइं । तेण य विज्जा-पउत्त-खित्तेण मम मोर-केगाइदेणं आकंपियाओ [४२]संमिलियाओ [४३]तत्थ णेगाओ वण-

मयूरि(री)ओ। अधाहं तत्थ चल-ललिद-चवल-चंचल-वर-विलसित-कलाव-विसद्-विरल्लिद[४४]-रइद-पिंछ-भारो पणच्चिओ मणहर-वर-कल-मुक्क-केगारवो । तेण य मम केगारवेण अक्खिप्पमाण-हिदया मूइतादोज्ज-गीत-सद्दा उद्धाहिता[४५] ललित-गलिद-चल-मसूणा रूंजिद-रवाउला **चंदलेहा** सही-जण-संपरिवुडा संपत्ता मम सगासं । तओ सा परम-हरिसित-णयण-वयणा पहाइदा(?) सह सहीसु । कर-ताल-वलय-रवाउलं नच्चामि य अहं वीसत्थो तीए हिदयहरं । भणदि य सहीजणं— हला ! जइ नाम एस अच्छेरय-रूवधारी मयूरो कह वि गहणं उवणेज्जा तओ मे परं विनोद-ठाणं [४६]उवज्जिदं हवेज्ज। सहीसु भणिदं—जाव [४७]धरमाणीसु विज्जासु कीस व ण गिज्जदे एसो ? मया(?तीए) भणिदं— जदि एस गहिदो धेति(? धिर्ति) भावेइ तओ एस गहिदो होदि, इदरहा गहिदो वि अगहिदो चेव । भणदि य— ण एस कदाइ एत्थ णच्चिद-पुव्वो, अज्ज पढमं इहमागओ । तं ण ताव एयं गेण्हामि, वीससदु ताव एसो । अवसरह य तुब्भे इदो । मा आउलं करेह। गच्छह तुब्भे स-घराइं । अहमेदं वीसत्थं गेण्हीहामि । एव भणिय(?ए) सयमवि य अवक्कंता एगागिणी पविट्ठा अत्थणगं, निसन्ना य कणग-भद्दासणे । अवसरिदाओ य तदो सहीओ से ।

तओ हं **अच्छरा**ए अणुमएणं मुक्क-णच्चण-वावारो पवणुद्धद-पवर-पेहुण-वियावड-गदी सणियं चक्कममाणो मधुर-मुक्क-केगालावो अलिद-चरिदव्वय(?)-वंवु(?अंबु)वाहण-वक्खेवेणं अल्लीणो हं तीए संतियं वंदमालि(? चंदसालं) । सा दु ममोवरि बद्ध-चक्खु-लक्खा अच्छदि । अहं व(?दु)वारिक(?)क्खेवेणं गओ सरिऊण तीए अत्थणयं अत्थणयं पिव लच्छीए। सइरं अलि[य]-संकालुयो आरूढो हं तीए हत्थब्भास-गदं विडंग-जालं । तत्थ य अधो पलंबाविद-पवर-पेहुण-कलावो लील-ठिद-बरिह-विरयण-विक्खित्त-मुहलो परिसंठिओ हं । **अच्छरा** पुण कत्थ वि [४८]अत्तरहिद्धिट्ठादा(अंतद्धिदा ?) । नवरि य अहं पक्ख-विरयणा-वक्खित्त-मुहलो त्ति सयमेव गहणं अभिकंखमाणो गहिओ हं तीए, सहरिसाए य निवेसिओ उच्छंगे । तीए य कोमल-कर-कमल-फासेणं मम रोमंचियं अंगं। तीए वि य मम सरीर-फास-वस-वलिद-चल-तणूम(?तणुरु)हाए पुलयाइदं विय सरीरयं । ततो किं किमेदं ति य अत्थाणे मयण-[४९]संधुक्खणकरं लिंगं ति परगणं(?) तीए खलिदूसासोरसभाग(?)-पकंपित वित्थारित-मुद्ध-लोयणाए समक्खित्ताइं सव्वगत्ताइं, अवलंबिऊण य ममं वाम-हत्थेणं धुत-कोमल-

वलय-मुहलंगुलीए निवेसिओ य तीए थण-जुवले दाहिणो हत्थो । ससंकिदा य मे मुहं पलोएदुं समाढत्ता, अणुवरदानि य मम तीए य अन्नोन्न-फासेणं कलंबायंति अंगाइं । भणदि य मे ससंकिद-हिदया— सामि सुंदर मयूरा ! अच्छेरयभूताणि चरिताणि दीसंति ते । न तुमं मयूरो । साहसु ताव को सि तुमं ? । तओ तीए [ए]व लविदे मया **कुबेरकंत**-[५०]मुक्का(द्दा)-विदीविदं दंसितं नियय रूवं । दट्ठूणं य तक्खणं चेव ममं उच्छंग-निसन्नं परं [५१]विम्हयं उवागया रायसुया । सुचिरं च निव्वेउं तओ पच्छा हरिस-वस-विवंसविद(?)-लोयणारविंदा ससद्धसा चलिद-रोमंचा दर-पवेविद-गात-लट्ठी समुट्ठिदा आसणाओ । व(?ठ)वितो य तहियं तीए जलिद-किरणो महा-मत्ती(?), तं च दट्ठूण मया इंगिदागार-कुसलेण अक्खित्ता **चंदलेहा**, आरुभिया य मे तीए संतियं सयणिज्जं । [५२]तत्थ य सावसिय(?)-पुव्व-पणओवयारेणं अभिवीसासेउं गाढालिंगण-परिचुंबणादीसु पम्हआविया(?) मे, आढत्ता य मे कल्लाणय-गिट्ठी(?) विव जहा रदि सदोहदा(?) [५३]दुं(?) रभस-कय-ग्गहणाकड्ढण-मुक्क-सिक्कार-दसण-नह-निघाद-[५४]पयणु [५५]समच्छरिय(?) सणियं सव्वंग-[५६]सुह-समाणिद-करण-निमीलिदच्छी संजोइता मे विंताजोएणं(?) ति । रतावज्झा(?सा)णे य समुट्ठिया कर(?य)-करणिज्जाणि [५७]खे(?घे)त्तूणं कुमारि-भाव-सूइ- (?य)गाइं वत्थाइं, तओ पच्छा भणति-अज्जपुत्त ! णं अंतद्धिया ताव नवद(?भवह) जाव रयणी उवेति, मा पुण लद्ध-पवेसस्स संका समुप्पज्जिहीति । तओ हं तीए वयणेण भवण-गओ चेव अंतद्धिओ जाओ। विहाडियं त तीए अत्थाणय-दारं । आगयाओ य से तत्थ परियारियाओ । तासु भणिदं— कीस सि एवच्चिरं ढक्किद-दुवारा अच्छसि ? तीए भणितं— जण-संबाधं असहमाणी निद्दाभिभूता तालिओ(?अ)-दुवारा एवति-कालं सुत्ता हं । एक्काए लद्ध-पणयाए परियारियाए भणितं— अज्जदुहिदा केवलं कुमारी चेव, इतरहा पुण भणती पिय-जणं निद्दायापीतकिलामिताधरो(?) जीविव(?) दीसते । तओ तीए लज्जियाए[५८] केसमणिदे(?) [५९]आचारसयणं(?) विलाइहं-कमलि[?णि] [....?....] ।

ममंकदेस-निसन्ना इदरा इव **अच्छरा चंदलेहं** सहि-जण-कहालाव-वक्खित्तं नाऊणं अंतरद्धिकरणीए ममल्लीणा भणदि य मे सइरं कन्न-मूले— अज्जपुत्त ! अभिवादेमि ते । पियं च ते पुच्छामि, दिट्ठीए चिट्ठिदा पुन्ना ते मणोरहं(?हा) ति । मया भणितं— पुन्ना मे मणोरहा तुह पसादेणं मि(? ति)

[तीए भणिद]– इदाणिं वच्चामो, मा पुण इह वसंताणं कोइ पमादो होति। मया भणितं– जइ मे तुमं पसादमंता तओ इच्छामि अज्जमेगरादिं वसिदुं ति। तीए तह त्ति पडिवन्नं । नवरं न च केणइ वक्खेब-पुव्वेणं **चंदलेहाए** पुणो वि निच्छूढाओ परियारियाओ, दारं च ढक्केदूण मम पासे निसन्ना भणदि– अज्जपुत्त ! अज्जाहं पभाद-काले पुप्फिफ-फलिदं सहयार-पादवं सुमिणे समारूढा । तस्स य सुरभि-फल-रस-णिग्घोट्टणं करेमाणी विबुद्धा हं । तेण य सुमिण-फलेण तुमे सह समागदा हं । तं साहह, कदरं मम देवतं पसन्नं जाणइ(?) से(?सि) इहाणिदो त्ति । मया भणिया–सुयणु ! जाणासि ममं, को चि अहं ? ति । तीए भणितं– कीस न ते जाणामि ? तुमं सकल-महियल-तिलय-रू(?भू)ओ **वण्हि**-कुलंबर-पुन्नचंदो चंदमुह-**वसुदेवो** त्ति । मया भणिया– सुयणु ! सिहरदसणा ! कहमेतं जाणासि, जहा, **वण्हि**-णभ-भूसणो [हं] **वसुदेवो** त्ति । तीए भणितं– कीस न ते जाणामि, सो सयं [६०]पदिमत्ते(?) रावणमत्त(?) लामर्णिसक्कसतुक्कदं(?) **वज्जपाणिं णहभूसणं** च ससंकं सूरसागर मंदरादीए य लोगविवखात(?तो)जा सो ण चेव जाणइ जो तुब्भे ण जाणहि(?इ) । अवि य, सुणह । मम पिउणा पुव्वं निमित्ती पुच्छिओ, को मम धूदाए भत्ता होहि ? ति । तेण भणितं, रायं फुडं भणा[मि], मा रूहि(?ट्ठ)सि । जा ते जेट्ठ-भादरं विज्जाधर-चक्कवट्टिं **तिसिहरं** मारेहिति, सो **चंदलेहाए** भत्ता भवीहिति । मम पिउणा भणितं– को वा **तिसिहरं** मारेहिति ? तेण भणिदं– **हरिवंस**-कुलुब्भवो **वण्हि**-णत्तणो(?णंदणो) च **बल-केसव**-पिता **वसुदेवो** मारेहिति । सो य ते जामादुगो होहिति त्ति। तादेण भणितं– जो मम भादुगं घादेहिति सो मम हंतव्वो दस्सू, ण सो मम सुदं परिणेहि त्ति। एवं भाणिदुं विओ(?ठिओ) । पा(?घा)तितो य तुमे **तिसिहरो** । जातो य मे पिता तुह उवरिं बद्धवेरो ।

अन्नदा य मया सयमेव **आभोगिणी** पुच्छिदा– कत्थ मे संपदं भविस्स-भत्ता ? । [तीए भणिदं]– संपदं **देवरिसभ**-सुताए **अच्छराए** सगासे अभिरमदि । केणइ कालेणं इहेव सह(?सुह)भवण-गदाए तुह मोर-रूवेण आगंतुं मिलीहिदि । तं च सोऊण मया तुह मोर-रूव-ठियस्स मरण-भयं रक्खमाणीए पियरं विन्नवेऊणं सव्वहिं चेव स-रज्जे मयूराणमवज्जं अगहणमणाघादो य घोसाविओ, पिया य मे तप्पभिति मयूरा । तेसु चेव पंजर-गदेसु नियतं अभिरमामि । तुह **बद्धवेरेण** य मम पिउणा साधिया

देवरमणुज्जाण-गदेण भगवदी **महाजालपदी** । तेण य कारणेणं तम्मि चेव उज्जाणे स-णगर-पउर-पुरोहिएण राइणा अहोरादिओ महामहो कओ, कारिदो(?दं) च मया पदोस-काले णच्चिदं गीदं च । विज्जाधर-सुंदरीओ य तत्थ पिया-सहियाओ अभिरमंतीओ लक्खिताओ मे । तेसिं च मे ईसायंदं(?) तओ मया पुणो वि पुच्छिदा विज्जा **आभोगणी**— भगवदि ! कत्थ संपदं विधि-निद्दिट्ठो भविस्स-भत्ता मे ? तीए भणियं— अज्ज चेव **अच्छरा**-सहिओ इहमागंतुं तुमं णच्चमाणिं पेच्छिऊणं गओ **तातपुरं** । तं च मे सोऊणं महदी धिदी जाया अवि नाम सो मम रूवं दट्ठूणं पयतेज्ज मे कज्जे । तओ हिज्जो पुणो वि पुच्छिदा विज्जा—भगवदि ! केवच्चिरेण मे पिएण सह समागमो होहिति ? तीए भणितं— पुत्त ! सुए ते मोररूवेण मिलीहिति त्ति । तओ परितुट्ठा हं अति ज(?ऊ)सुय-हिदया रयणीए मज्झे अलद्ध-निद्दा सव्वमलियं ति वो पियं दुक्खेण [६१]पत्तिज्जंति पभात-काले य सुमणे सहयार-पादवारूढा फल-रसं निग्घोट्टेमाणी विबुद्धा हं उइद-क्कमेण य भुत्त-भोयणा गंधव्व-विणोदेणं अच्छामि, केकाइदं च तुमे हम्मिय-तल-ठिए पंचंवं(?) इयर-मयूरेसु अभिणंदियं । तेण य सद्देण अहमवि तुमं आगदं ति मन्नमाणी सहरिसा आरूढा हंतिय(?हम्मिय)-तलं । दिट्ठो य सि मया इदर-मयूरि-परिवारिओ । दट्ठूण य अन्न-मयूरेहिंतो अच्छेरय-रूवं(?वो) कलियं मे अवितहं— एस मे भत्तारो । हरिसिदाए य मे मयूरो णच्चइ त्ति तालाणुकारेणं णच्चियं । मया वि तुह दंसण-तुट्ठाए आणंदो [६२]सेणंमि(?मणम्मि) [६३]संगहियव्वो ताव जाव [६४]विमोवेल्लो (?) त्ति । तं एस परमत्थो । पुत्ता मे मणोरहा । किंतु संपदं कहेह, कयरं मे देवयं निच्च-काले पूयणिज्जं, जेण तुब्भे इहमाणिया । मया भणितं— सुयणु ! पियाए **अच्छराए** इहाणिओ हं । तीए भणितं— दुक्करं एयं। कहय, कत्थ मे सा पियकारिणी ? तओ तीए ममाणुप(?म)दे दिन्नो **चंदलेहाए** दरिसावो । पडिया य से **चंदलेहा** पादेसु। पणमणुन्नदाए य अवतासिदा । दिन्नो य से **अच्छराए** सरीर-लग्गो नियया भरण-निज्जोगो । निसन्नाओ य दो वि एक्कासणे । सुह-संकहासु य सुहेण समइच्छियं दियसं। अब्भंतर-परियारियाण य **चंदलेहाए** कदो रहस्स-भेदो । तासु य मे कयं विणय-कम्मं। उवणीयं च मम तासु पधाणं पाण-भोयणं । तं च सह पियासु उवभोएदुं अभिरमिऊण य पओस-काले पिया-जवल-सहिओ पच्छा एक्क-सयणिज्जे पिया-मज्झ-गओ हं पसुत्तो (हं) । [६५]खणदवेगामय(?) गहिद-मुह-धोवणो परियारिओवणीद-पसाहणो कद-पडिकम्मं अच्छामि पच्छन्नं चेव अभिरमंतो ।

अह य मुहुत्तोदिदे सूरे **चंदलेहा**ए संतिया अब्भिंतरिया **वणराई** नाम परिया[रिया] [६६]तरित-लतिहल(?)-गमणा भय-विसाद-वियावडा अत्तणो उरं पिट्टयंती उवागया अम्ह सगासं । सा य विणय-गदा **चंदलेहं** विन्नवेसि(?ति)-सामिनि(?णि) ! रक्खह आयरेणं पडिमंताणं च । नादं खु एदं कज्जं रन्ना । **चंदलेहा**ए भणियं– किह पुण हला ! रन्ना एदं नायं ? ति । सा कहेइ– जह किर राइणा नेमित्ती तह वियासणओ अब्भ(?अज्ज) पुच्छिओ– कत्थ मे संपदं भादि-वेरिओ अच्छदि ? तेण य णिग्घिणेण भणितं– देव! एस सो संपदं कन्नंतेउरे **चंदलेहा**ए सह अच्छइ त्ति । तं च सोऊणं कुविओ भणइ राया– एस णं अज्जेव तं दुरायारं सह **चंदलेहा**ए जमसासणं पेसयामि। तेणं संणाहिदा विज्जाहर जोधा णीसद्द-संख-पडहा, मा य किर ते भत्ता पलाह(?इ)ति त्ति । तओ राइणा जालापति-विउव्विदेहिं जालेहिं अलंघेहिं बद्धाइं सव्व-दिसा-मुहाइं । एस संपदं राया सभड-वंदो सन्नद्धो इदो अभिपडइ तुह भत्तुणो य ते वधाए । तं चिंतेह इदाणि जं एत्थ उत्तरं ति ।

तओ हं **चंदलेहा**ए भणिओ– अज्जपुत्त ! अत्थि [मम] **वज्जमुही** विज्जा जालपदि-विहाडणी । तं उट्ठेहि तीए जालाइं भेत्तूणं पलायामो त्ति । मया भणियं–सुयणु ! पलाइत्ता कत्थ गंतव्वं ? इहेव ठिओ जुज्झामि त्ति । तीए भणियं– सामि ! बलवगा अतिप्पभूदा य विज्जाधर-जोधा, तुब्भे य असहाया निरायुधा, किहमेदं [जुज्झिस्ससि]? । मया भणिदं– पिए ! मा भायसु । अविज्जाधरेण वि मया **तिसिहरो** विज्जाधर-चक्कवट्टी सबल-वाहणो हतो । एदेसु मे इदाणिं विज्जाधरस्स का [६७]गन्ना ? तीए भणितं– जइ इ(?ए)वं चेव तओ गेण्ह सिद्धं चेव महाजालपडि(?दि)-विहाडणिं जा इदं **वज्जमुहं(?हिं)** । मया तह त्ति पडिवन्नं । संकामिता य मम तीए **वज्जमुही**। ताव य विज्जाधर-भड-वंद-सहिओ सन्नद्ध-बद्धकवयो गहिदायुध-पहरणावरणो जुद्ध-सज्जो उट्ठिओ **महासिहासि(सिहरो)** । तओ अहमवि सुसंनद्धो पिया-जुवल-सहिओ गहिय-विज्जा-विकप्पिय-पवर-पहरणावरणो विणिगदो हं कन्नं[ते]पुरा[ओ] । [?.....]हि राइणा, भणदि य– वज्झ ! [६८]रादियाय(?) चिरस्स मे अंकमुवगओ सि । तं पेच्छसि दाणिं जम-सासणं सह **चंदलेहा**-पंसुलीए त्ति। मया भणियं–[न] नज्जइ को वि जम-सासणं पेच्छीहिति त्ति । **चंदलेहा**ए भणितं– तात ! मरिसिज्जदु पुव्वावराधो, इदाणि[६९]मति[धिस्स] घरमागयस्स जामादुगस्सेति । तेण भणियं-सच्छंद-

गामिणी ! जवतिणी(?) ! न मे तुमं धूदा न वा एस जामादुगो त्ति । तीए भणितं– तात ! तुह पुरतो सव्वन्नु-भासित-निमित्ताणत्तो मे एस भत्ता, न मया सयंवराए एस गहिदो । तं उवसमह । अलं कोव-करणेणं । ताव यं तेण वि जन्न-सन्नेणं(?) गयणेण उप्पतितो जमय-समयं [७०]उवद्धो(?) हं महदा विज्जाधर-बलेणं । तओ हं तक्खणं चिय [७१]विउरुव्विय-विउल-बल-भायओ(?) जुज्झिओ सह विज्जाहरेहिं, पियाहिं य मे विउरुव्विय-विविध-रूवधरीहिं विज्जाबलवियाहिं नग्गिद-खग्ग-खेडय-हत्थाहिं [७२]अहमेव जुज्झामि ति मम वारयंतस्सेव तासु अब्भाहयं विज्जाधराणीयं खणेण य मम तवोबल(?) [७३]पराइदुं पयत्तं नियय-जालपदि-गहिद-दिसं व ण चाएदि पलाएदुं, भीतं तत्थेव परिब्भमइ । पजुज्झिदो य मया सह सयं राया महासिहरो इव महिकंपवुत्तो(?महिं कंपयंतो) **महासिहरो** । अत्थि(?त्थ)-पडियत्थेसु मया सह जुज्झमाणो सुचिरेण पराइओ । मया पुण मोहेदूण य [७४]ण मयानणदिट्ठीओ(?) बद्धो मे **नागमुहि**-विज्जा-पउत्तेसु नागपासेसु राया, ठविओ य मे एसा (?तस्स) पासे विज्जाधर-जण-निवारणा-हेउं च दंसिदो मे अन्ने मायामओ **महासिहरो** । तस्स य मे जुज्झमाणस्स खग्गेणं पाडियं सिरं । तं च मारियं दट्ठूण सव्व विज्जाधरा विसादमुवगदा, भीता य मम सरणं उवागता। तेसिं च मे दिन्नं अभयदाणं । **महाजालपरि(?दि)**-पउत्ताणि य वज्ज-जालाणि मया **वज्जमुही**ए विहाडियाणि । तओ अन्नमयं [७५]पसीदं(?) एवभूदाणं रायाणं च मारियं दट्ठूण [७६]पधिट्ठिदाइं (?) परुदिदाणि य अंतेउराइं पविद्ध-वलया-मेहल-विलुत्त-कंचीदामाइं सरसरस्स मोहं उवगदाइं । **चंदलेहा** वि य तक्खणं चेव विगद-मरण-भया पियरं दट्ठूण मारितं **महासिहरं** पिव वज्ज-णिवात-संचुन्नियं 'हा हा अहो ! अकज्जमिति(?) कतं' ति जंपमाणी कलुण-कलुणं विलविउं पयत्ता, पदिदा य मे मुच्छाए उवरिं सुचिरेण य समासत्था भणदि य कलुणं विलवमाणी– हा सामि ! अज्जपुत्त ! कीस ते मम पिता मारिओ? परित्तायसु ममं, जादा हं जावज्जीवं अयसभाइणी । कीस ते मम पिता न रक्खितो ? एवंगदे वि चिंतेह किंचि उवायं निप्पडिकारे वा ममं विसज्जेह, जा हं अत्ताणं अयसाहया विवाडेमि त्ति ।

तओ मया तीए एवं रुयंतीए दंसिदो एगंते विज्जा-पास-बद्धो पिया। भणिता य मे– सुयणु ! अलं विसादेणं । एस ते पिता अवरज्जं(?ज्झं)तो वि मया न चेव मारितो तुहाणुवत्तीए, विज्जा-पास-बद्धो पच्छन्नो विधारिओ। विज्जा-विउव्विदस्स य पडिरूवस्स मया सिरं [७७]णिग्गितिदं(?) । तं च

[७५]सया(?यं) एत्थागदमेव दट्ठूणं निव्वुदाइं अंतेउराइं **चंदलेहा** य । तुट्ठा य मम विज्जाधरा भणंति– साधु ! अहो ! एस एदेण सप्पुरिसेणं वसइदूण(?) ण मारिओ । पसंसति संथुणति य उब्भियंजलीओ विज्जाधर-लोगो । ताहे मोत्तूण मया नागपासेहिंतो भणिदो सो राया–वच्च, मुक्को सि मया, जं ते सरिसं तं करेज्जासि । एव भणिए पडिओ मम पादेसु भणदि य–साधु, सुपुरिस ! जं ते वसहिदूणं पि अणुकंपंतेण न मारितो हं अकत्थो । सुट्ठु ते कतं जं ते मम मूलं न हारियं । थेवेण मु(?पु)ण तवेणेदं मया रज्जं पावियं, तुब्भे पुणो तवाधिया । निज्जियं वो इमं रज्जं सह मया । समयं जीविय-णासेणं मूल-णासो हवंतो मे, रक्खितं मे तुमे मूलं । तं एस ईदाणिं तुह पसादेण वड्ढि-कज्जे अज्जेव पयतितो हं जिण-प्पणीए लिंगे निच्छिओ पव्वयामि । किंतु भणामि ते मम जेट्ठ-भाइ-सुओ **हेप्फओ** राया, सो पितिय-भुत्तीए [७६]पदिउट्ठिओ, अहं पुण अपुत्तो । पुत्तो जीविद-दायओ पिय-जामादुगो य तुमं चेव । तओ एदं विउलं वित्थिन्नं मम संतियं रज्जं पडिवज्जाहि । एस अहं निच्छिओ [७७]निग्गओ मिस्सेयमि(? निस्सेयम्मि) य महदा-जत्त-विलग्गेण विणसंवाइदो(?) निवारेउं निरवेक्खो **धम्मदेवाणं** थेराणं संतिए पव्वइओ । अंतेपुराणि य से काणि अणुपव्वइदाणि, काणिइ तत्थेव ठिदाइं । मया सयमेव समासासितं तं अरायगं रज्जं । उप्पइऊणं य अहं पिया-जवल-सहितो गओ **तातपुरं** । तत्थ य मेदं सव्वं जहाभूतं कारणं णिवेदिदं **देवरिसभस्स** रन्नो । तं च सोऊणं णंदिदो सभड-वंदो राया, भणदि य–साधु कदं । इदाणिं मो निक्कंटयं जादं ति ।

तओ तेण पूइतो हं सह **चंदलेहाए**, विसेसेण य संतेउरेण बहुमाण-महग्घ-वदा(?त्था)दिगाहिदा **चंदलेहा** । तओ मया **देवरिस**भ-सहिदेणं **कामपुरं** गंतूणं तत्थ विज्जाधर-पयदीण पुरतो अभिसित्तो महदा रायाभिसेसे(?ए)ण **महासिहर**-रज्जे राया **अंसुमंतो** । तत्थ य **हरिवेगासुवेग-धरणिंद-णाग-[?...]वेसु** पंचसु **महासिहर**-रायसचिवेसु खत्तिएसु दिन्नाओ **अंसुमंत**स्स रन्नो पंचसु रायभूमीओ पंच कन्नगाओ सुरवधु-सरिस-लावन्नाओ ।

तं जहा– **उज्जोदा जसवदी सुजसा सुरभी सुरंगमा** य । ताहिं य से सह महदा विभूतीए वत्तं पाणिग्गहणं । भुंजदि य तासु सहिदो तं कामपुरं पिव पच्चक्खं **कामपुरं** पगासो। अहं च देवरिसभ-सहिओ गओ **तातपुरं** । अभिरमामि य तत्थ **अच्छराए चंदलेहाए** सहिओ, विसेसओ कुलघर-विउत्ताए **चंदलेहाए** धिर्तिं उप्पादिंतो ॥

॥ इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेव-हिंडीए
चंदलेहा-लंभो णाम एगवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥[४१]

पाठान्तर

१. वलग्गो पु. । २. सिदासण पा. । ३. हरपुगरागगाम-पा. । ४. उसुगार पा.। ५. कणतु पु. । ६. जाणंतरे पु. । ७. सत्तुट्ठिओ पु. । ८. गादुत्थहे पा. । ९. पुव्वजेणं पा.। १०. खमणासमत्था पा. । ११. धारीउ पा. । १२. पतीउवंतिदाओ पा. । १३. सिंकारणअरसत्थुआ पा. । १४. थट्टयति पु. । १५. सामावट्टंगा पु., समोसवट्टंगा पा. । १६. चिंतित पा. । १७. मिसुकम्मीलणा पा. । १८. ताए पा. । १९. त्थदोल्लय पा. । २०. सारोसा पु. । २१. हद्धो पु. । २२. अवलरिउमिच्छसि पु. । २३. व्वडिबंधे पु. । २४. उक्कहत्थेण पा. । २५. पुत्तुया पु. । २६. मा मे पदं आलक्ख पसं त्ति णितं णितं उम्मि सहि पा. । २७. मे पु. । २८. सहसमेहिमिवरमे बहु सामन्नं पा. । २९. नायका ही अतएव पा. । ३०. पातिगंद पा. । ३१. अगाकदा वलगा पु. । ३२. आदि० पा. । ३३. भिऊणंमदि पु. । ३४. मणिगुत्त पा. । ३५. चुज्झ पा., बुज्झ वंदं सणगै वि पु. । ३६. मुह संदंसणेण य सजोवादीभायं न पु. । ३७. स जोव्वणजवदीभावं पा. । ३८. वेंवेच्छ पा. । ३९. चलिलंत गतिलविदा पेत्तिणव्विट्टिद्वि चिट्ठिदेसु पा., चलितगतिल्लविपेहिण विदविट्ठिहेसु पु. । ४०. पट्टिंसु पु. । ४१. लुल्ल पा. । ४२. संगलियाओ पा., संमलियाओ पु. । ४३. संतत्थ पा. । ४४. विरल्लिह पु. । ४५. सद्दाइतो पु. । ४६. उववज्जिदं पु. । ४७. धारमाणीसु पा. । ४८. अत्तरहिदिट्ठाद पा. । ४९. संपुक्खरणकरं पा. । ५०. सुविदीविद पु. । ५१. वम्हियं पु. । ५२. तत्थ य पुव्वएण पु., तत्थ या मोयसिय पुव्व पणओवयारेणं पा. । ५३. दं पु. । ५४. पायणु पु. । ५५. समत्थरिय मणिय सव्वंग पु. । ५६. सुहमाणिद पु. । ५७. क्खेब्भूण पु. । ५८. कस० पा. । ५९. अवरेमयणं पा. । ६०. पदिसत्ते रावणमज्झे य व्व लामणिं सक्कत्तुक्कदं पा. । ★.....★ अंतर्गतः पाठः पा० प्रत्यामेव विद्यते । ६१. पत्तित्तिज्जति पु. । ६२. सेसंमि पा. । ६३. समहियव्वो पु. । ६४. विमोवेलो पु. । ६५. खणदावगा पु. । ६६. तिप्पितनितिहेल पा. । ६७. न्नगा पा. । ६८. तादियाय पा. । ६९. ०मभिघर० पा. । ७०. उवट्ठो पु. । ७१. विउवलभोए जु० पु. । ७२. अहदमेव पु. । ७३. पसाइंदु पु. । ७४. पमया तणसिट्ठीओ पा. । ७५. पतीदं पा. । ७६. पाधिढिदादाइं पइं पा. । ७७. णिगिंदेंतेदं । तं पा. । ७८. सया पच्छागदमेंव पा. । ७९. पदिउद्धिओ पु. । ८०. मिसओ मिसो य पा. । ८१. ॥ छ ॥ इति मज्झिमक्खंडे चंदलेह लंभओ नाम अष्टचत्तारिंशतिमः ॥छ॥ पु.

२२. ससिप्पभा-लंभो

अन्नदा य **कामपुरतो** महारय-**अंसुमंतो** य(?आ)गओ मम सगासं । तदो तेण सह [सुह]-दुक्ख-कदा(?हा)हिं सुहं अच्छमाणस्स आगओ तत्थ **भाणुवेगो** नाम **देवरिसह**-पडिहारो । सो मे जाणु-णिसुढ(?ढि)दो विन्नवेदि— सामि ! तुब्भे दट्ठूणंकामो विज्जाधर-राय-**हेमदाढो** दारे चिट्ठदि त्ति । मयाऽणुणादे पविट्ठो पादेसु य निवडमाणो अवतासितो मे । पुच्छिदो य मे सुहासणोवगओ [1]सव्वगदं खेम-कुसल-वट्टमाणिं । तेण य सव्वं खेममावेदिदं। सो य **देविरिसभेण** बहुमाण-महग्घविओ पूईओ संतेउरेण मए य । तदो मज्जिद-जिमियाणं एगदो सुह-निसन्नाणं सो मे विणओवगओ भणति— अज्जपुत्त ! [**नंदोव**]**नंदा बंधु-सुबंधुणो** य ते य वयंसा ते य **सीहदाढो** राया सह जणणीए घेत्तूणं रायरिसि-आसमपदं पत्तो, **भागेरहिदत्ता**दिणो कुमारा जे रायरिसिणो मम पिता ते वि सिद्धविज्जा जादा । तओ रायरिसी आणवेति— तेसिं किर सव्वेसिं पि विज्जा-निज्जादणं दट्ठुमागच्छेइ ।

मया दु परम-तुट्ठेण बाढमिति भाणिउं आपुच्छिओ मे गमणूसुएण राया **देवरिसभो** । तेण वि पुत्त(वुत्तं)— जुत्तमिदं, अहमवि तत्थ वच्चामि त्ति । संपत्थिओ य समुहो(?) अहमवि **अंसुमंत-सम्मतदेव**-सहिओ **हेमदाढेणं** समुप्पईओ, उप्पदितो य [2]समउ(?अं) राया **देवरिसभो** । गदा य मो रिसि-आसमपदं। तत्थ य उवदिदा मे(?मो) । गुरु-भावेण य मे विणयपूईओ **भरद्दाओ सीहदाढो** य राया सह **हिरन्नवईए** । तेसु य जयावितो हं । दिट्ठा य मे तत्थ **भागेरहिदत्तादिणो** चत्तारि भायरो, **बंधु-सुबंधुणो** य । ते य मे सव्वे वि पणमंता अवतासिया पीति-संपउत्तेणं । पत्ती-जणो य मे **पभावइदेवि**-पमुहो अग्घेण निग्गओ, मम दंसणेणं जणिद-हरिस-वियसंत-नयणो बाल-दिवाकर-किरणालद्धो इव पंकय-सरो अदीव सोभिओ । दिट्ठा य मे तत्थ पिया **ललिदवेगा** । **अनिलयसं** पुण तत्थ न पेच्छमि । तत्थ

तओ सव्वाओ वि मे पियाओ पणमंतीओ सव्व-सरीर-सुहं पुच्छियाओ । कया य मे तेसु वयंसाणं विज्जाणुन्नगत(?म)त्थ **भागेरहिदत्ता**इणो भातरो माणव-मुंडग-वि(?वे)सालंकिदा कदा, इदरे पुण **बंधु-सुबंधु-णंदोवणंदगा** य मातंग-वेस-धारिणो कदा । ते य सव्वे चि पेच्छंतो न तिप्पामि । भणिदा य मे ससुरा- मग्गह दक्खिणं ति। तेहिं भणितं–पुत्तय ! स च्चिय अम्ह दक्खिणा तुमे किंचि कालं वीसमीऊणं तओ **महागोरि**-पुरच्चरणं पडिवज्जियव्वं ति । मया णय-सिरेण तह त्ति पडिवन्नं ।

अह य तत्थ **भागेरहिदत्ता**दीणं पंचण्हं वि भाइणं **बंधु-सुबंधूणं णंदोवणंदाण** य एएसिं नवण्ह वि जणाणं पंचसु **हेमदाढ**-सचिवेसु तं जहा- **मेरुणा पिंगलेण वरिलेण रविसेसे(?णे)णं धणेण सुप्पभेण सुदंसणेण दिणकरेण सुमणेण**- एएसु दुहिदाओ दिन्नाओ, तासिं च कमेण नामाइं तं जहा– **हरिणी, सउरा[३], वरुणी, अलसोदवेगा, मदणा, सजया, सुवच्छा, सुरभी** य । तासु य सह तेसिं विभूतीए वत्तं पाणिग्गहणं । दिन्नं च ससुरेसु तेसिं विविधं सावदेज्जं। पुच्छिताओ य मया नियय्यंतेउर-गतेणं नियय-पत्तीओ– अत्थि इहं का वि देवी **अनिलयसा** ? तासु मे सिट्ठं जहा– एवइ-कालं इहमच्छिया अम्हासु रायरिसिणा य विसेसेण कद-बहुमाणा । भगिणीसु य **विरया-ललितवेगासु** सह सुहं वसिदा । अज्ज य तुहागमण-काले णाद-परमत्था परम-लज्जिदा 'मया पिओ वंचिओ त्ति कह से इदाणिं दिट्ठिं धरेहामि ?' [?त्ति चिंतिउं] तओ उप्पदिऊणं **पिंगलगंधार**-सुताए बाल-सहीए **पभावईए** कन्नाए पासं गदा। मया भणिदं– [अ]कज्जं जादं । कह तुब्भेहिं सा ण विधारिया णीसे(?) अवणीदा होंती ? तासु भणितं– अति तेयस्सिणी सा, तेण न संचाइदा विधारेदुं । [४]अत्थं(?भणं)ति य मे पियाओ– अज्जपुत्त ! इदाणिं तुब्भे परियत्तिअ-रूव-लावन्ना दिणकरो इव अतिरेय-तेय-जुत्ता दुन्निरिक्खिता जाता। तत्थ मया भणियाओ– **कुबेरकंत**-मुद्दाए एस पभावो त्ति।

तओ हं मज्जिय-जिमिओ **ससिकंतदेव**-दत्तालंकार-भूसिद-सरीरो देव-लीला-वियावडो संपत्ते य पदोस-काले चदुत्तीसाए(?णं) वि पियाणं पत्तेय-पास-ठिओ विज्जा-पभावेणं तावदियाइं चेव रूवाइं काउं सुरपदी विव विउव्व(?विउव्विअ)-[५]णिट्टि(? धि)-कलिओ जहा-सुहं अभिरमामि । पभात-काले य पुणरवि ताइं वेउव्विय-सरीराइं साहरिऊणं एग-रूव-ठितो

पविहरामि । अभिरमंति य परम-मुदियासु अ नियय-पियासु पिय-वयंसा मे । एवं अभिरमंतस्स सुहेण वच्चंति मे कति दिणाइं । जाता य तत्थ सुपसत्थेक-[६]सुमिण-लंभ(?) सुमुही(?) आवन्न-सत्ता देवि-**विज्जुमदी** । नवरं च एग-देसमुवागदाणं पाण-भूमीए गीदादोज्ज-सद्द-मुदिदाणं तत्थ भणितं **अंसुमंतेण**— अहो अम्हे अज्जपुत्तेण सव्वे वि णियय-सिरि-सरिसेणं विभागेणं(?विभवेणं) संविभत्ता मो । **हेमदाढेण** भणितं— किमेत्थ अच्छेरयं ? **मेरुगिरिं** जइ कागो वि आसयदि सो वि कणगप्पहो होइ । मेरु-सरिसो य अज्जपुत्तो । अवि य,

किह सो ओलग्गिज्जइ, जो ण वि पत्तम्मि विभव-कालम्मि ।
सि(?मि)त्तं मेरु व्व तणं(?नूणं) करेति सरिस-प्पभं सव्वं ॥

एवमादि संकहासु अच्छामो । नवरं च ततो पाणभूमीओ सद्दावेऊणं ससुरेसु **सीहदाढ-भरद्दाए**सु भणिओ हं— देव ! सुणह, **सालहिमवंत**-सेल-सिहरे **आदिगरस्स** भगवओ छदुमत्थ-कालियाए आदावण-चलण-साणुग्गहाए भूमीए अत्थ **रमणिज्जओ** नाम नाग-निलओ[७] महा-हरओ । तस्स तीरे **सम्मतदेवेण** विज्जाधर-चक्कवट्टिणा सव्व-रयणमयं जिणायदणं कणगमय-जिण-पडिमा-पूरिदं विणिम्मवितं । तत्थ य गंतूणं केवलं पुरिसेसु महिमा कायव्वा । एक्कं ताव एदं कारणं, बिदितं तत्थ तेण विज्जाधर-चक्कवट्टिणा जिण-पवयणे पच्चयंतेणं दिव्वाइं नागदेवया-परिग्गहिदाइं उत्तम-मणि-कणग-रयण-परिमंडियाइं खग्ग-खेडयाइं तम्मि हरदे य पक्खित्ताइं । सो य किर चक्कवट्टी भ(?ह)रदवत्थए(?व्वे)णं **रमणिज्जे**णं णागिंदेण भणिदो— कस्स मे एदाइं दादव्वाइं ? ति । **सम्मतदेवेण** भणितं— एदाइं चक्कवट्टिणो वा **बलदेव-वासुदेवाण** वा तप्पिअराण वा अन्नेसिं वा जगप्पहाण-पुरिसाणं एदाहं(?इं) स-कम्म-फल-संसिद्धी[ए] उवणमंति, ण दु पागदाणं । मया पुण भावओ इदाणिं परिचत्ताइं । [एवं] वोत्तूणं गओ धीरो विज्जाधर-संघ-परिवुडो [८]दिक्खंतो गदो य परमं पदं । ततो तत्थ उभय-सेढि-वासिणो विज्जाधर-राइणो वरिसे वरिसे मग्गसिर-मास-सुद्ध-पंचमीए सव्वे समागता सिद्धायतणस्स महिमं काऊणं ताव हरदं महेंति । तओ उत्तम-पुरिसत्तण-सद्धाए य तत्थ निब्बुडंति, अलद्ध-खग्ग-खेडय-रयणा य पुणो स-ठाणाइं वच्चंति। एदेण य कारणेणं अज्ज तत्थ सगल-विज्जाधर-रायवंस-समवायो होति । तं उत्तम-पुरिसत्तण-सद्धाए य तुब्भे वि सवयंसा उट्ठेह, तत्थ वच्चामो, पेच्छह **रमणिज्जय**-सिद्धायणयं(?यणं) ति ।

तओ हं बाढमिति भाणियं(?भणिउं) सह ससुरेसु वयंसेसु य उप्पदिदूण णहयलेणं गदो हिमवंत-सेल-सिहर-ठिदं हरयं । तत्थ य जिणाययण-पाद-मूले 'नमो **नाभेयस्स** भगवतो' मो(?वो)त्तूणं मंतितोवदिदा(?) मो, तत्थ य वंदिऊण य चेइदाइं पयाहिणं जिणघरं(रस्स) च काऊणं **देवरिसभ**-राय-पुव्व-[५]परिग्गह(?हे) आवासिता मो । नवरं च तत्थ विविध-राग-वसणा संमा(?झा)णुराग-रंजिया इव बलाहगा समोवदिदा विज्जाधर-राय-संघा । दिट्ठा य मे तत्थ सव्वे वि मित्ता सत्तुणो य कमल-निलये हरए समोवहंता । उवगदा य मम सगासं सव्वे वि संबंधिणो खयरीसरा । तेसु य पणय-सिर-बंधुरेसु जयाविदो हं । परम-पीदि-संपउत्ता य पेच्छंता मं ण तिप्पंति । उवगदो य मम सगासं राया **वायुवेगो** । सो मे उवगंतुं भणइ— कुमार ! तुट्ठो हं, साधु कतं जं सि साहीणागास-गमणो संवुत्तो सि । तं च सोऊण मम तस्सोवरि बहुमाणो जादो । तस्स य दंसणेणं आवडिदा [१०]य मम हिदये भगिणी से कन्ना **पभंजणवेजा** । नवरं च विज्जाधरा पुव्वयरं जिणायतणं मते(?णमि)ऊण पच्छा [११]मोपथासा(?सोपवासा) धूव-पुप्फ-गंध-मल्ल-बलि-संभारेणं तुरिय-सद्द-गंधव्व-गीद-वाइद-रवेण य पूरंत दिसा-मुहाइं नाग-पूयाए गर्मिति दियसं । पदोस-काले य सव्वे वि नियमपरा खिति-तल-गदा कुसत्थरण-ताविद-सरीरा अग्गाहिद-दीवा देवदाराधणपरा गमेंति राइमवि तधेव ।

तदो पभाते कद-[१२]सम्मोवसाणाणं कय-जिण-थुति-वंदणाण य पच्छा **देवरिसभो** नाणाविहेसु पट्टेसु [१३]आहुणदि णाग-देवते, पुच्छति य णिय परितंतं(?जनं)— अत्थि केणइ तुब्भं देवस्स मम जामादुगस्स सुंदरं निमित्तं सुमिणो वा दिट्ठो त्ति । **तओ दमणेण भणियं—अलमत्रेसु निमित्तेसु, अज्ज अज्जपुत्तो मया सुमिणे धवल-हत्थि-मत्थयत्थो कणग-कलसेसु अभिसिच्चंतो दिट्ठो, दीवो य से अत्र विज्जाधर-राइ-प्पदीवाणं पासादो विसेसेण जलिदो** त्ति । तं च निमित्तं अब्भुट्ठिऊण अभिणंदिदं सूरुग्गमण-काले य महदा भंभा-भेरि-पडह-झल्लरि-आलिंगणि-णादेणं ण्हाद-सुइप्पयदा सव्व(?वि)भूदिय-बलि-हत्था विज्जाधर-राइणो खग्ग-खेडयग्ग-हत्था रयणुप्पत्ति-कंखिदा अल्लीणा हरदं। तओ अहमवि ससुर(?रेण) निदो(?भणिदो)-देव ! विज्जाधर-देवद-सन्निहिद-पाडिहेरं **नाग-निलयं** हरयं तुमं पि विधिणा पूएहि त्ति । तओ अहमवि महदा मंगल-कोदुग-सदेसु ण्हादो विज्जाधर-परिवुडो व पुप्फ-बलि-

हत्थो अल्लीणो हरयं विज्जाधर-जण-जणिओस(?)[.....] अहं विधिणा हरदं ययतु(?पूइतु)माढत्तो, पक्खित्ता य मे परम-गंभीर-जल(?ले) बहु-सक्कवा(?) बली । नवरं च अन्न-विज्जाधर-पक्खित्ताओ बलीओ घण-वीइ-परंपरा-ओहदाओ पुणरवि सलिलेण तीरे पक्खिवंति, मम पुण संतिया बली सहसा पादुब्भूदाए सलिलंसीए(?) संघट्टेउं अंतोहरयं अणुप्पवेसिता । तओ मम पक्खिएसु परम-तुट्ठेसु भणितं—जो यराया(?) वि भविय हरदे बलिं पक्खिवति। साधु हो ! उत्तम-पुरिसस्स हरि(?र)देण पडिच्छिया बलि त्ति । महदा य गंभीरेण समुद्द-सद्दाणुकारिणा सरेणं रसिदं अतिरेय-सद्द-द(?च)लित-सलिलेणं। एयम्मि देस-काले मम दोक्खालुणा परोवतावित्तणेणं भणिदं सासूयं **माणसवेगेणं**— पेच्छह भो ! महिगोयरस्स बद्ध(?धट्ठ)त्तणं जो य [१४]वाधेया(?) वि भविय हरदे बलिं पक्खिवति । तं साधु कदं जं मे कुद्धेसु देवदेसु निन्नासं नीदा बली।

अह य तम्मि देस-काले विज्जाधर-राय-चक्काणुमदे[सु] उग्घोसियं [१५]बलद्धक्ख-घंटिएसु—भो ! भो ! सुणह । हरदे खग्ग-खेडय-रयणाइं देवदा-परिग्गहिदाइं अच्छंति । जस्स सत्ती अत्थि सो ताइं अवगाहिदुं गेण्हदु[१६] । अज्ज संवच्छर-[१७]दियस-रदणलंसुएइ(?) । तओ आढत्ता विज्जाधर-रायाणो कद-बलि-विहाणा हरदे निब्बुडिदुं । ते य हरदे [१८]देवमाणे(?) दट्ठूणं मया रो(?पा)स-ठिओ **दमणो** भणइ—कहेहि मे एदे स-नाम-गोत्तेसु खयराहिवे । सो मे कहेइ— एस ताव **आसाढ**-जणपदाधिवो माण-बल-गव्विओ **माणसवेगो**, एसो य वसंत-मासो इव विइत्त-दट्ठव्वो **सुभूसणो**, जह(?)पुत्तो राया **वायुवेगो**, एस य राया अरुणब्भ-संनिगास-घण-विइत्त-मउडो **निसढो** नाम, एसो य अतीव-माण-महादप्प-गव्विओ अजादसत्तू विज्जाधरराय-बलवगो केणइ अलंघिअ-बलो ससि-भत्तो राया **ससिकंतो** नाम, एवं सविभूदीए(?) एस **पिंगलगंधारो**, एस य **पवणजवो** सरं अवतरइ, एस य **वासवो** इव **सक्कवासवो** नाम राया, एस वज्जपाणी **सुपाणी**, एस **चंदाभो**, एस **चित्तगदी**, एवं **हरिकंत, वज्जदाढ, सुडा(?दा)ढ, वंदरदेव, जंबग, रयणंगय, सीहदाढ, विज्जुवेग, [१९]गारग, नीलकंठ, हेप्फग, हरिवेग, मादंगदेव, वेरिसुंड, [२०]पडजाण(?), मयूरसेण, वाहग्गीव, सुवेग, महिंदविक्कम, चंडवेग** आदिणो अन्ने य बहवो विज्जाधर-रायाणो उभय-सेढि-वासिणो हरदे बुडुमाणा दाइदा मे **दमणेणं** । ते य जवेण निबुडुमाणा सव्वे

हरद-जाल-गलच्छ-णोल्लिदा उप्पिलावेदुं तीरे पक्खिप्पंति [२१]णंदेदेवि(?) चेव हरदे समवगाहिदुं एवं सव्वे वि रायाणो हरदेणं णिप्पणईकदा अप्पाणं परिमाणेदुं लज्जिदा ठिदा ।

ताहे अहं ससुरजणाणुमदे कद-बलि-विधाणो 'नमो जिणाणं' ति वोत्तूणं हरदं समवगाहिदुं पयत्तो । एयम्मि देस-काले महा-समुद्द-गंभीर-निनादो-पक्खुभिद-जलो पकंपितो हरदो [२२]कल्लच्छलेदुं पयत्तो । कलकलारवो य गंभीरो सलिल-मज्झे पवियंभिउं पयत्तो । अह य सहसा विविध-मणि-रयण-छत्त-भिंगार-कक्करि-कलस-भरिद-हत्थाहिं नाग-वधूहिं वि काहिं वि गीद-गंधव्व-गहिदादोज्ज-वियावडाहिं उभओ पासं पुरतो य दइयाहिं संपरिवुडो विविध-गहिदग्घ-पूओ पउमिणि-पत्त-कदेहिं जलरुहेहिं खग्ग-खेडय-रयण-हत्थो अट्ठ-फडा-विकड-संकडुक्कड-मउडो जलिद-मणि-सिहो देवकुमार-सरिस-विग्गह-धरो उद्धाइओ जलाओ जल-हाडग(?)-कुंडलो णागकुमारो । तेण य सव्व-विज्जाधरचक्क-पुरओ मे उवणीदाइं खग्ग-खेडयाइं । भणदि य— एयाइं मे **सम्मतदेव**-पक्खित्ताइं चिरं मया तुह कदे परिरक्खिदाइं । एवं भणंतेण आरोग्ग-ह(?ध)ण-विभव-बलायु-वद्धणो सव्व-दोस-नासणो दिन्नो मे **णागसिरो** नाम महा-मणी । कणग-कुंडल-वत्थ-जुवलाणि य मे दाउं जले निब्बुड्डो ।

एयम्मि समए मम पक्खिएहिं विज्जाधरेहिं जय-सद्दुक्किट्ठि-नादेहिं आदोज्ज-सद्देहिं य पूरियाओ दिसाओ, उग्घोसियं च महदा सद्देणं सयमेव रन्ना **देवरिसभेणं**— जयति भव्व-**केसव**-पिदा उत्तम-पुरिसो **वण्हि**-तणओ **वसुदेवो** त्ति । सत्तूणं च मे तम्मि समए हुंडियाइं(?) षिव हिदय-बंधण-बलाइं । कदा य मे तत्थ महदा णाग-महिमा । तओ उप्पईऊणं सयाइं आलयाइं पयाता विज्जाधर-राइणो । विसज्जिओ य मे **कामपुराभिमुहो** राया **अंसुमंतो** । भणिदो य मे ससुर-जणो— वच्चह, ताव तुब्भे जहाभिप्पेहं, अहं तु सवयंसो सइरं **हिमवंतं** पेच्छंतो एहामि । तह त्ति य ते कद-पारणा पट्ठिदा । गदेसु य तेसु तओ अहमवि **भागेरहिदत्ता**दीसु नवसु वयंसेसु **दमण**-दसमेसु सहिओ **दमण**-देसिय-पहो उप्पतितो नहंगणं सइरं च पविलंबस्सणे(?माणे) गमणे अवलोगयंतो **माला-हिमवंती(?तं)** विविधोसहि-जलिद-पवर-तरुगण-धादु-मणोसिला-भंग-सोभियं विविध-ताल-बकुल-पुलिंद-[२३]भिल्लय-विनिवेस-[२४]भरं कुहर-पवर-पलंबिउ(?अ)कर-निवाद-निक्कडि(?ड्डि)द-

पडिद-हिमकूड-पंडुरं ।

सरिसोवरिम-सिहरं तं गिरिवरं दट्ठूणं भणिआ य मे वयंसा य– अहो! [२५]इमस्सलो(? इमो सेलो) सेलपइणो(?) सोभइ सिहरं [२६]वच्चइह(?) ता गयणं पीतिं उप्पादेति आणत्ति(?) । तेसु भणियं– देव ! कहं न सोभति जो **आदिकर**-चलण-वदियर-लंछिदो महा-पूयाए धादु(?)-महिसर(?)-सेवितो, [२७]ति-लोए गोरवं गदो, **सगर**-सुतावतारिताए य तिपहका(?गा)ए धवल-जल-विमल-पड-पादाए णागुव्वलिद-करण-[२८]वरकरिणीए गाढं समवगूढो । एयं च तं **महालयं** नाम सिहर-वरं जत्थ भगवओ **उसभसामि**-तणओ संवच्छर-मणसिओ(?) पडिमाएसु **बाहूबली** आलयमुवागओ, महि(?हा)पुरिसस्स आलयं तदो महालयं ति । तओ मे तस्स भगवतो भत्तीए कओ पणामो । तओ पेच्छंता[णं] हिमगिरि-सिहर-विवरेसु यमू (?पसू)दाओ दित्त-पज्जलिय-जालाकुलाओ ओसधीओ गिरि-दंसण-लोभिल्लदाए य विलंबमाणाणं हिमगिरि-सिहरे चेव अत्थवासघरं उवागदो अंसुमाली । जादो य संझाणुराग-रंजिओ हेममयो इव महिधरो । एक्कम्मि गिरि-सिहरे उवदिदा मो । तत्थ य मो मणुन्न-पदेसे विहिणा उवासिया संझा, कद-त्थुदि-जिण-संथवा य पुणो संपाडिया मो सणियं नहंगणेणं पेच्छंता [२९]उक्कालं(?) अवलोकयंता य अधोभाग-पदाइं अंधकार-हिरिदाइं मसिमूसा-पूरिदाइं पिव गिरि-कंदरोदराइं, विविध-दरी-निगुंज-दुम-गण-गहण-तिमिरं च ससि-किरण-पडिभिन्न-सिहरं ।

तत्थ य सिएसदं(?) पिव विइत्त-रूवं कत्थइ चंदकर-पगासित-सिहराभोगं हेट्ठा तिमिर-गहणं [३०]अंधकारदो(?) विव समुत्तरंतं अद्दिं पेच्छामो, कत्थइ किन्नराणं गंधव्वाणं आकण्णंता विविध-जंबुल्लणा[३१] मुहला, एगत्थ-पदेसे अम्ह सद्देणं संजात-कंदप्प-मच्छरा आसमुहि-रूव-धारिणी अकारण-कुविता उद्धाइता **किंपुरीसी** नाम वंतरी । तीए य अम्ह भेसणत्थे तालिदं पादेण एगं अच्चूसितं गंड-सेल-सिहरं । तं च सहसा विक्खुभित-सेला(?)-सहस्स-भासरं समंततो पल्हत्थं, तेण य पडंतेण संचालिओ वि हिमगिरि । अवि य, पवर-सिहर-पडण-संखोभित-सिलातल-रणंत-गंभीर-[३२]निनाद-पाद-वोसुद्ध(?वोसट्ठ)-[कु]सुम-लदा-भंग-जणिद-कुसुम-सुरभि-वास-यरविय(?)-वर-पसुत्त-मधुकर-विबुद्ध-रुंटंत-विविध-सत्त-सगुण-प्पबोध-पयलिद-कचिद(?)-[३३]दरिभड(?)- हरि-सद्दूल-घोर-समोरसिद-रुंजिद-विसाल-गयकुल-विपलात-कडतडोसुद्ध(?)-वियड-कड-संभग्ग-विविध-

दुमगण-सद्द-गंभीर-भासुरं विउल-पत्थर-खडखडखडित-परिं(?डिं)सुआ-सद्द-रुइरं पडिदं धरणियले । एवं च तं भयाणगं पि सेल-सिहर-पडणं सावद-कुल-संभमं च च्छणमिव पेच्छमाणा समदिच्छिदा मो ।

तओ ताहे सिग्घतर-समुद्ध-गदि-वेगा खणेण पत्ता मो णव-सरद-धवल-जलधर-संघाद-विब्भमागारं **वेदड्ढ**-गिरिवरं । तस्स य एग-पएसं दित्तोसहि-निवह-प्पभाते रयणीए विदिय-सरूवं पेच्छामो, ईसिं पि नत्थि किंचि रूवं अविभाणितं स-तिमिरं वा, एकत्थ य जलिदोसधि-णिविह(?ट्ठ)-मंतपयं उसीवि(?ओसधि)-परिखणा(?क्खण)-तप्परं रयण-चित्त-मोलीए विभूसिय-सिरं कदिवय-विज्जाधर-सहिदं एक्कं महाविज्जाधरं पेच्छामो । तं च दट्ठूणं भणिदो हं **दमणेणं**– देव ! एस सो **ससिकंतो** नाम राया **वायुरह-माणसवेगाण** मित्तो अलंघिद-सीमो रिवुगणेसु, कदाइ एयस्स भी[?दा] विज्जाधरा तरित-कारण-संपट्ठिदा वि ण य कदाइ एयस्स सीमं अक्कमंति । मया भणितं– अहं से सीमं अक्कमीहामि । **दमणेण** भणितं– देव ! केणइ अणक्कंत-पुव्वं अक्कमंतस्स किल सीमं न ते समवायं देमि(?ति) । मया भणियं– **दमण** ! अलमेयाए वितहाए कहाए । एदं मे कहय, किं नामधेयो से एस जणवदो पुरं वा ? तेण भणितं– पेच्छ, जणप्पभावो एसो **कुलोविग्ग**(?) नाम जणवदो दिव्वोसहि-पज्जलिद-पागार-घर-गोपुरं व सदा वि दिवस-भूदं रयणीए वि तिमिर-विरहियं एयं च से **दिव्वोसहिपुरं** नाम पुरवरं, किंतु न जुत्तं एदं लंघेउं । मया चिंतितं– अवाय-भीरु **दमणो** संकदि एदस्स । अहो तेयस्स माहप्पं । तओ **भागेरहिदत्तेण** भणियं– जो बीहेइ सो एग-पासेण वच्चदु। अम्हेहिं अवस्स लंघेदव्वाइं रिवु-पुराइं आगमेदव्वानि य परिच्छि(?च्छि)दाइं ।

एवं तं अणुणेदुं ताहे अंतद्धिय-रूवा अल्लीणा मो पुरवरं। पेच्छामो य तत्थ अन्नं पि समुज्जलियमिव रयण-पभाए गिरि-सिहर-संकासं कास-कुसुमप्पभं पासादं पुरवरस्स एक्कदो गिरि-सिहर-निविट्ठं । तं च दट्ठूण पुच्छिओ मे **दमणो**– को एस पासादो ? त्ति । तेण भणियं– एयं एअस्स रन्नो दिव्वोसहि-सप्पभं भगवओ सोमस्स आयदणं । तओ **भागेरहिदत्तेण** भणितं– अज्जपुत्त ! अवसव्वेणं(?) णं(?ण) रिपु-पुरस्स गच्छामो एस अत्थोवदेसो त्ति। मया भणिदं- सच्चं एवमेदं तहवि नगर-देवताइं माणणीयाइं । तओ पयाहिणं चेव पेच्छंता वच्चामो त्ति । तओ पयाहिणं वच्चमाणा कमेण अल्लीणा

मो तं सोम-निभेलणं । मया दु सकोदुएणं भणिओ **दमणो**– पेच्छामो ताव एदं अमदगब्भासंगं ति । ततो **भागेरहिदत्तेण** भणितं– आमं, जुत्ता मयं दट्ठूणं जुत्तं पुण कदरेसु जहा अंतद्धिय-रूवेसु दट्ठुं(?), पागड-रूवा चेव पेच्छामो । असमत्थदाए गोमायुगा पच्छन्न-चारिणो, सीहो पुण सीह-नाग(?)पागडो वियरइ। सीहाधिअसत्तीया(?) तुब्भे । तं पागड-रूवा पविसह त्ति ।

तओ तस्स वयणेण अम्हे पागड-रूव-धारिणो पदाहिणं अल्लीणा मो रिक्खपदि-गिहं । पेच्छामो य तत्थ मुह-मंडव-दारए सपदाओ वर-कमल-गब्भ-गोरीओ विविध-राग-वत्थ-परिहिदाओ दिव्व-रूविणीओ [३४]सयंवरिपलिलाओ(?) दस कन्नगाओ । तओ तासु हु(?अ)म्हे सोम-गिहं पविसिउ-कामा भणिदा– दि(?ठा)यध, ठायध त्ति, रे ! के तुब्भे ? कीस व अदिन्न-पवेसा पविसध ? लब्भिद(?ह) एयस्स अविणयस्स फलं ति । तओ तम्मि देस-काले अंतो सोमगिह-मंडवस्स अन्नं चदुर-मधुरक्खरं वयणं सुणामो-हला ! अलमलमेदेसु निवारिएसु । पविसंतु हला ! अहमवि एदे दट्ठुमिच्छामि । तं च सोऊण मया चिंतितं– साधु अहो ! इमं सद्द-मधुरं च वयणं भणिज्जइ। कासमेणवदं(कीस मण्णे एदं ?) ति परम कोदुहलोवगयस्स मम पुच्छमाणस्स **दमणो** परिकहेइ– सामि ! एसा अंतो मुह-मंडवस्स ससिकर-गोक्खीर-हार-दधि-दगरय-रयद-संख-चोक्ख-निम्मल-धवल-देहा लोगच्छेरय-जोव्वणा **ससिकंतस्स** रन्नो **कुमुदाए** देवीए अत्तिया ससि-सगल-सोम्म-वदणा सारद-ससि-प्पभा [इव] **ससिप्पभा** नाम कन्ना नूणं पिउणो आणाए एत्थं ससंकालए [३५]अवरातिदा(?) संधीओ(?) [३६]परिक्खंती(?) जवंती अच्छइ । एदाओ दस वि कन्नगाओ पिदुणो से ससरीर-सा(?स)माणाणं सचिवाणं **हरिवेग-अलिणमंजरि(?र)-जलिदस्सणं(ण)-असणिवेग-रवियर** य **माणाजाव**(?मणोजव)-**कइलास-अरुणवेगाणं** सुदाओ इमेसु नामेसु सुणिज्जंति तं जहा— **रदा सुलसा वसुला वसुमती रत्तवदी चित्ता रोहिणी अणुचरी धरणी णभोजहा** य । एयाओ बालसहीओ। एदासु सहिता एसा भगवंतं सोमं पज्जुवासइ एस नंदीसतिउयह(?) त्ति ।

दिट्ठा य मे सा कन्नगा कुमुद-कुंदेंदु-मुणाल-धवल-हधर(?हार)-सरिस-वन्ना वर-कणग-रयण-फलग-सुलग(?)-सुत्तग-विइत्त-कंत-सोभंत-भाडग(?)-वियारंत(?) सुविहिद-रुइर-गाद-लट्ठी धवल-दूगुल-पविराइद-देहा

सारद-सकल-ससि-जोण्हा [३७]वियसेय(?)-समुत्थदा इव रयदगिरि-कंदरा, कुमुद-निवह-समक्कंत-जाला इव जन्हवी, **ससिप्पभा** ससि-प्पभा इव सव्व-णयण-मण-हारिणी । सा य मम दट्ठूणं तासिं कन्नगाणं अन्नदरं पुच्छइ– हला! के पुण एदे मम अहिणव-कोऊहल-निमित्त-भूदा विज्जाधरा ? ताए भणितं– अइरियाओ अम्हे वि न जाणामो के व एदे त्ति । किंतु पविसमाणा अम्हासु णिवारिया आसि, केवलं तुमे चेव विदिन्नावगासा इह विधारिता ।

तओ सा बाल-रवि-किरणावदालिद-कमल-दल-सन्निभेसु णयणेसु ममं समभिलोययंती भणइ– हला ! खलु मदा एस विज्जाधरो केसिय(?)-रुइर-वेस-धारी कदाइ दिट्ठ-पुव्वो । अहो ! से उत्तमा रूव-सिरी । तओ ते सव्वे वि मे वयंसा सणीयं सप्पयोगं मम अग्गओ [३८]ठवेंति(?), भणंति य सइरं– हं भो! दिट्ठी सच्चं सुप्पन्नो(?) विलयाभुदंणि(?) एस ते नागदमणी-महोसही पत्थावे । तओ तीए संदिट्ठाए एक्काए कन्नगाए पुच्छिदा वयंसा– अहो! तुब्भे आइक्खह ताव अणुवरोधेणं, को एस केसिय-रुइर-वेस-धारी वामेग-कुंडल-धरो उट्ठंत-सूर-मंडल-विभूसिओ इव उदयगिरि, समवलंबमाण-मालालंकित-सरीरो धवल-कंदग(?कुंद)-रागो, सजलदनील(?)-वर-धरो, विग्गहमंतो इव कुसुमायुधो, अज्ज(?ज्जु)ण-मय-कणग-माला-विभूसिओ हाडग-मउड-केयूर-दीविद-सुह-संगद-सुगत्तो पविगसित-कमल-पलास-सरिस-नयणो भमर-निगुरुंबो लील(?णील)-कसण-केसो [३९]अणामिद-चारुचाव-किण्हब्भराइ-सरिस-भुमयो बहु-दिवस-वन्नणिज्जो कदर-वंसओ पुण एस विज्जाधरो ? त्ति ।

तओ मया चिंतितं— इमे **भागेरहिदत्तादि**णो कुमारा काम-संकहा-योजणे ण कुसला, **अंसुमंतो** वि(?वे)सियतंय(?त)-विस(?सा)रदो जुवति-जण-मयण(?मण)-संपादण-कहालाव-कुसलो हिदय-गहण-वयण-पडिवयण-समत्थो य । सो य मया सयं मया चंडालेणं(?) स-पुरं विसज्जिओ, तं एग्गदो वि न मे कोई अवरज्झदि, अवरज्झइ मे परं कामएव(?वो) जो मे अणण्णं **अंसुमंतं** अभिजंजइ(?) त्ति । ताओ य कन्नगाओ पडिवयणं अलभमाणीओ पुणो वि पुच्छंति– कहेह, को एस विज्जाधरो ? त्ति । तओ मया **ससिप्पभा**-भिदएणं सइरं भणिदं– किं एत्थ **अंसुमंतो** अत्थि, जो भे देस-कालोववन्नं पडिवयणं दाहिति ? । तओ **सम्मतदेवो** मं सासूयं भणइ– अहो! अज्जपुत्त **अंसुमंत**-पक्ख-गओ । अन्ने वि संगामे जुज्झंति, न पुण

सव्वे जसभागिणो भवंति । किंतु जो स-सामिणो कम्माणि संपादणे सुपगासेति तेसु कित्ती वियंभइ । तं च तुब्भे वि बहुस्सहा(?) ममं पुण तुब्भे निप्फन्न-बहुसदेसु वि कारणेसु अवमन्नह मे । तं पेच्छह इदाणिं मम उवयार-संकहा-चदुर-हिदय-ग्गहण-संपादण-दक्खिन्नं सिक्खा-गमण-करणुद्धियं(?) ति । इय भाणिउं ताहे सो [४०]साडोवलाणं(?) काऊण [४१]सामन्नतरं(?) च आसरिऊणं च [४२]हासरसवायसाणु(?)गदो, [४३]मुक्खत्तणमिव [४४]विलवयंतो(?), ताओ कन्नगाओ, अणवत्थिद-[४५]सभावा(?वो) भाणिउं पयत्ता(?त्तो)— भो भो खयर-सुंदरीओ ! भणह दाणिं । किं भणह, केरिसा वो सरीर-वत्ताओ, अधिदो(?अवि वो) कुसलं आरोग्गं, [४६]अग्गिणो(?) वा [४७]जणंति(?) त्ति ।

तओ ताओ तस्स असंबज्झमाणेग-कंदप्प-पुच्छा-जणिद-हासाओ तवणिज्ज-प्पभा-विसुद्ध-सुचि-विमल-मुत्ताहलग-पूरिदेसु ईसिं अवभादिएसु वयण-पुंडरीएसु फुडिय-फलहय-सरिस-दसणप्पभा-पहसिएसु ईसिं पप्फुरिद-रत्ताधर-सोभिएसु सललिदं पभ(?ह)सिदाओ । तासिं पभा(?हा)स-विणिच्छूढ-वयण-प्पहो सयमिव य अंतो-जणिद-हासो बाहिर-करणीद(?) पुण वेड्ढा-[४८]गहिओ इव ताहिं पु(?दु)ह-पिच्छओ जाओ। तासिं च एक्कीए भणितं— अहो ! एदेण तरुणेण एएसिं एसा महदी वि नाम-रूवा गारव-सामिद्धी वायाए विणासिदा, क(?म)न्नामि, एए दट्ठुमेव सोभणा ण दु मंतावइदुं । [४९]अहो ! एसा [५०]अ सललिदव्व वच्छराणि [५१]अच्छेरया(?) अक्खर-पंतीए [५२]सुह निग्गदा । अहो ! हु इमे अ(?आ)लोग-[५३]पुंडरीया सामलि-पुंड समाणा खयर-जुवाणग त्ति ।

तदो **सम्मददेवो** एवमादि बहुं तासु उवहसिज्जमाणो अलद्ध-वयणावगासो हसिदुकामो **सुबंधुं** भणइ— हा रे ! अहं खु विलयाण जाण (?) पडिवयण-कहा-संपादणं सुट्ठु जाणामि । तं पुण पसुत्तं पि इमाओ रत्तवईओ ण सुट्ठु जाणंति । तं तुमं पि मया चेव केसियमुच्छं(?वेसियसत्थं) सुट्ठु सिक्खाविओ सि, सयमवि य कुसलो सि । तं उवसप्पसु एदाओ जो [५४]एइंति य सुपयासु सह [५५]सुलिद्दाओउ (?)त्ति-[५६]पडिउत्तिओ(?) मया ण सोभिदं एत्थं ति। तओ **सुबंधुणा** भणिदं— जइ ताव एवंविधो गुरुजणस्स वयण-संभास-वदियरो तओ सीया(?सा)ण केरिसो भवीहिति । तुमं चेव पुणो उवसप्पाहि णं ति।

ताओ य कन्नगाओ सणीयं परोप्परं संलवंति— अहो ! तरिदं एयम्मि

विज्जाधरे अज्ज-दुहिदाए निविट्ठं हिदयं ति । सा य ममं सिणेह-सलिल-पूरिदाए कुवलय-दल-मालोवमाए पयदि-सिणिद्धाए दिट्ठीए [?पेच्छइ] पियदमणे(?) मणहरंगी । अहमवि य तं तहेव रूव-गुण-विम्हिओ पेच्छंतो न तिप्पामि । अहय सा पुणरवि सहिओ सणीयं **ससिप्पभा** भणदि– मा रु(?ह)सिहि, हला[?ओ] ! सब्भावेण वो पुच्छामि अजाणमाणी । किं न खलु एस भगवं कुसुमायुधो गहिद-कुसुमबाणो मम वधाय इहागओ ? उदाहु सई-जण-विउल-पुक्खरणि-हंसो सयं सुरपदी हवेज्ज सह सामाणिय-सुरेसु इहमागओ त्ति अहवा अमर-वर-जुवदि-सेविय-कइलास-सेल-सिहर-[५७]अवहासय-कुव्वरो कणग-रुइर-रह(?हो) **कुव्वरो**[५८] इमो हवेज्ज ? त्ति । तं अलं हासेणं । जाणह ताव को एसो त्ति ।

तओ सहीहिं से पुणो वि य पच्चासन्न-ठिओ पुच्छिओ **दमणो**– हे सुहय ! पुच्छामि ते को पुण एसो अइ-दुल्लभ-कुलुप्पत्ति-वंसो विज्जाधरो त्ति । तओ **दमणेण** मम तुरिदमसंभंतं अप्पक्खरं महत्थं हिदयग्गाहं [५९]अंब(?)-रमणीयं मधुरं च भणियं– किं अज्ज-दुहिता **ससिप्पभा** एदं न जाणइ ? तासु भणितं– न व त्ति । तेण भणिदं– किमिदाणिं अज्ज-दुहिता गगणतल-गदं ससिं अणुसप्पइ, ओलग्गदि य जदि एदं **जदुकुल**-सकुल (?सकल)-पुण्ण-चंदं सयल-महिदल-वि(?ति)लयं सयल-विज्जाधर-रिक्ख-भोइयं सयल-तिहूयण-विउल-निव्वडिद-जसं पुन्नसिलोगं पुरिसगंधहत्थि **वसुदेवं** देवमिव पच्चक्खमागयं न याणइ । अन्नं च पुच्छामि वो, कीस अज्ज-दुहिदा एदं तिभुवणुप्पन्न-गोरवं दट्ठुं सयमेव न पुच्छइ ? तासु भणिदं– एसा वेद्दालुणी, तेण सयमेव न पुच्छइ त्ति । [तेण भणियं–] अहो ! अत्थाणे लज्जा-पदं अज्ज-दुहिदाए जा **वसुदेवं** देवमिव घरमागदं सयमेव न पुच्छइ। अवि य,

जेत्थेव इंदं पासे(?) य वज्जपाणिं पुरंदरं ।
तत्थेव वरं मग्गेज्ज दुल्लभं इंद-दरिसणं ॥

बहु खु खयर-रायकन्नगाणं एसो मणोहर(?रह)-सदेसु वि दुल्लभ-दंसणो, जमुद्दिस्स संपदं निखिल-विज्जाधर-राय-कन्नगाणं रूव-जोव्वण-[६०]निवडियाणं भूसण-पसाधण-गहण-तत्ती पवत्तदि एयम्मि मयमणाणं(?) सव्वो अ पुरिसो गो(?) पडितायइ । तं फुडं भणामि वो, जति गगण-तल-गदं ससिं आगमेह(?) किमत्थं पुण ससंकक्का [६१]तिरेयगा(?गं) मम(?)

पच्चक्खं देवदं अज्जपुत्तं नागमेध ? अहो ! [६२]भो ! एदं अजाणमाणीणं निरत्थयं जीविदं विज्जाधर-राय-दुहिदत्तणं विज्जा-गहणं [६३]ओसधीओ य ।

ततो तीए नियय-सहिओ लविदाओ– हला ! निरुवचारसीलाओ । पेच्छह नणु जवे(?हे)ह सो खयर-कुमारो ममं सोवयारो अज्जदुहिदेति आलवेइ, तहा किन्न तुब्भे वि एदं पुरिससंसिं अज्जपुत्त त्ति आलवध ? एताओ उब्भालेदुं तओ सयमेव तीए भणितं– सव्वो(?अव्वो) ! विन्नादं मे नूणं खु एस सो जो सुणिज्जइ पिओ पिय-सहीए मम **पभावतीए** त्ति । तओ **दमणेण** सहास-मुहलेण भणितं– न केवलं अज्ज-दुहिदाए **पभावतीए, माणसवेग**-भगिणीए **वेगवतीए, अमिदगदि**-सुदाए **गंधव्वदत्ताए, सीहदाढ**-सुदाए **नीलजसाए, असणिवेग**-सुदाए **सामलीए, विज्झा(ज्जु)वेग**-सुदाए **मयणवेगाए, हेमया(य)स**-सुदाए **हेमयसाए,** सत्तण्हं य **भरद्दाय-रायरिसि**-सुदाणं, **मेहरध**-सुदाए **मेहमालाए**, पंचण्ह तीए सगोत्तीणं, **पभंजण**-सुदाए **विरयाए, वाउरह**-सुदाए **अनिलयसाए**, तस्सेव सुदाए **ललितवेगाए, मादंगदेव**-सुदाए **चित्तलेहाए, हरिवेय**-सुदाए **हरिकंताए, देवरिसभ**-सुदाए **अच्छराए, महासिहर**-सुदाए **चंदलेहाए**, एवमादीणं अन्नासिं च बहूणं भत्ता एसो ।

तओ तीए [६४]सवम्हिदं(?विम्हयं) कडक्ख-क्खेव-चक्खु दु(?उ)-क्खित्तेक्क-भु[?म]याए भणिदं– अहो ! ते [६५]पढममजातं(?) भासितं [६६]पच्छा ते अहमवि एसुणा(?) [६७]अविक्खिरिदं(?) हेअजाणु[६८]आमाहं(?) । एदस्स भारिया-समूहं पेच्छामि, सोभग्गं वा [६९]अधिज्जदुभासण(?) त्ति । तओ **दमणेण** भणितं– रायपुत्त(?त्ति) ! न ताव मे वयणत्थं अवगच्छामि(?च्छसि) जं भणिद होइ । परम-किलेस-लद्ध-संगमो हु अज्जपुत्तो एदावदि-एसिदीणं(?पसिद्धाणं) राय-दारियाणं [?मोत्तुं] तुब्भं पुण सहागओ त्ति एवं निवेदयामि । तं एदं न जाणह त्ति [७०]जण-णयण-तक्करं [त]ओ णिरत्थयं जियध ।

एयम्मि देस-काले सा सहीसु भणिदा– हले ! अलं एदेहिं एगि(?)-मधुगरेहिं, अणुवादगं [७१]वज्झाहि । पविसहि दाणिं सोम-गिहं, परिजवध ओसहीओ । संपइ खु ओसहिया-दव्व-सतण्हो राया ससुहि-वग्गो इहागच्छती ति । एवं च लवंतीसु परंमुही बला परावत्तिदा सा आढत्ता सोम-गिह-गब्भागारं पविसिउं ।

अह य पुव्वं चिय विज्जा-पुरच्चरण-कज्जे कुलतावस-रूवधारी लविओ मया **दमणो**— सोम ! मा से पवेसं दाहिसि त्ति । तओ सो मया अणुन्नाओ सहसा उप्पइउं खगो इव तासिं पुरओ सदोवदिदो । तओ वयंसीहिं से भणियं— अव्वो ! अव्वे(?) अव्वलिके(?) हले हलो(?) त्ति । अन्नो वि दिट्ठं दाणि वो सि [७२]आणवद्धत्तणं । अरे रे द्धाध(?) वायह, दाणिं [७३]पाविहि एदस्स अविणयस्स फलं । कीस इमं अविदिन्नं भूमिं अक्कमह ? अहो कुलतावस-कुमारग ! अत्ताणं ताव वेदाहि, [न] इमं आसमपदं । एदं खु खलु [७४]निग्गहाणुग्गह-सज्झ-फलं रायकुलं ति । तओ तीए एव भणिए **र(?द)मणेण** तक्खणं चेव तत्थुप्पन्नं किन्नर-विरुदं अतिसयंतेण गीदं इमेण अत्थेण जहा—

[७५]अणुसप्पंतं निहुदं, गुरू दइव-गुरु-विदिन्नं मणागं ।
इच्छसि वारेदुं जे, णूण णियत्ता सि(?)-धम्माओ ॥

गुरु-दार-चलण-सेवा-चलिओ विणएण पणय-पुव्वागं ।
ण णिरुज्झइ दास-जणो ए दिट्ठी [७६]सव्व-लोए वि ॥

एयं [७७]गीययं सोऊण **ससिप्पभा**ए चलित-मति-चदुर-[७८]समाए(?) ईसिं अभिनिवित्ति समलोकेदूणं अणुन्नादमिव मयणोवसप्पणं अध य मद(?)-गीदय-जणिद-हासासु लविदं सहीहिं से— अहो ! निब्भयदा धूट्ट(?धट्ठ)दा य एएसिं । केण मन्ने एसा एएसिं अभिणव-विज्जाधराणं भूमी अज्ज-दुहिदाए (?अ) पदंसिदाउ, जह देसी(?एदेसिं) आवसधं पिव मया वारि-लोभेणं समल्लीणा । केण मन्ने एदेसिं अणुप्पेसिदं जओ इहमागदा न य नाम एदेसिं इह पविसंताणं पदणुं पि भयमत्थि त्ति । **दमणेण** भणिदं— ण णाम सरभाणं सीह-गुहं पि पविसंताणं भयं भवदि । किं-पुण, भणामि तुब्भे सयमेव पढमदाए अम्हं [? दूअं] अणुप्पेसेउं, किं-पुण इदाणिं अइ [७९]सिग्घं खे पहसिदं(?) वो ? अदो(?अहो) कन्नगाणं अत्थिरं चित्तं ।

तओ ताहिं अन्नोन्नमधिगद-कोदुलंहा(?हला)हिं सासूयं भणिदं— अरे ! कुलतावस-कुमारक ! को वा अम्हेहिं तुब्भं दूओ विसज्जिओ ? तओ **दमणेण** भणितं— सुणह, जो सददमणिवारिओ सव्व-भूत-चित्त-प्पमाधी(?) सव्व-जगदीवा(?) सेविओ सव्व-पणयास-[८०]हुदो(?) सरसं बंध-करण-तप्परो अत्थाणेसु वि कदाभिनिवेसो दुल्लभाणुसंबंधी सुलभ-परंमुहो जस्स य पयदि-सुत्ति-विब्भममयं धणुक्कं कुसुम-मया अनिवारित-प्पयारा [?सरा]

[1]अहाहट्टाणा(?) से(?सो) अणंगो तुब्भाहिं अम्हं अज्जपुत्तस्स दूओ विसज्जिओ त्ति ।

तओ ताओ एदं **दमणेण** भासियं सोऊणं सव्वाओ वि ममं पहसिताओ भणंति य विम्हिदाओ— अहो ! से तत्थुप्पन्नेसु पडुआ । बेंति य— अलमिदाणिं परिहासेणं । सिग्घं अवसरह इतो पुरवरातो, मा पुण रन्नो सगासाओ सरीर-संसयमवि पाविहि त्ति । **दमणेण** भणितं— सावराधेसु विज्जा-साधएसु [2]नेव य ससुर-जणो तिक्खं दंडं समाइरुतइ(?) । तओ एदं सोऊणं परितुट्ठा **ससिप्पभा** । भणिदं च तीए— मा एस हला, निवारिज्जइ। उवगच्छदु मम उवयार-चदुर-मधुरक्खरो एस कुलतावस-कुमारगो त्ति । ततो आसन्नतरं से समुवट्ठिओ दमणो । पच्चभिजाणिओ य तीए, तओ ससंभमाए भणियाए(?भणियं)— सायतं **देवरिसभ**-राय-तणयस्स, इदाणिं जुत्तं, न मया णादं जहा एस नागरग-विज्जाधरो **दमण(?णो)** त्ति माणा(?) आपदिं गतो, विणओ पंडिच्चं सरस्सदी य कुलतावस-रूव-धारित्तणेण पच्चभिजाणिओ सि मया । तं पुच्छामि ते इदाणिं, किं ताव तुमे नियय-देह-संभूयाणं सपडिबद्ध-वयणुत्तर विणय सरस्सदि विज्जाणं आराहण-निमित्तं इमं कुडिल-दंडाजिण-जडा-वक्कलधरं कुल-तावस-रूवं कदं ता(?) उदाहु इदर-सामन्न-विज्जा-साधण-कज्जे ति । चिंतेमि य किं मन्ने मुत्तिमती सरस्सदी तुमे समाराधिता तेण ते इमा समधिगद-जन्नु(?)भराभिधाणा अत्थ-मधुरा वयणक्खर-पंती । तं कहय मि(?मे) दाणिं कदा ते इमस्स कुलतावस-व्वयस्स [3]सत्ती(?मुत्ती) होहिति ? तेण य उम्हिदं(?) भणितं— अइरियाओ तुज्झं अज्जपुत्तेण सह चिराभिलसिए वियाह-महामहे मम च दयमवत्ती(? वय-मुत्ती) होहिति त्ति । तओ तीय ईसिं लज्जोणद-वदण-कमलाए भणियं— कुमार ! किं मे हिदयं उल्लिचसि ? एत्थ कारणे तुमं चेव समत्थो(?त्थि)दव्वो(?)। किं ममेदं हिदयमायदिक्खमं(?) निवेदि ? । तओ तीए एव लविदे **दमणेण** लविदं— जइ अहं चेव समत्थिदो, तओ सुणह उदाहरणं—

कोई किर गुरुकुल-सेवी छत्तो, सो उवज्झाएण गामंतरं कस्सइ भिक्खुदस्स पासं विसज्जिओ, जहा 'अमुकस्स सगासाओ अमुगं कज्जं संपाडिहि' त्ति । सो य 'जहान(?ण)वेसि' त्ति वोत्तूणं गओ । वच्चंतो य अद्ध-पहे महा-रोद्देणं रक्खसेणं गहिओ । सो य महदा भय-भीओ थरथरेदुं पयत्तो । तओ सो रक्खसेण भणिओ— किमिदं भो माणुस ! थरथरायसि ?

अहं खु मासोववासी, एक्कसि पारेतुं मासं चेव उवसामि । पारण-काले जं पढमं चिय दुप्पदं चउप्पदं वा लभामि तेण पारेमि । तम्मि वा विमुक्के बिदियम्मि समुप्पन्ने वि मम निवित्ती । पुणरवि मासं चेव उवसामि । एदेण कारणेणं पारणग-पढम-समयावडियं तुमं न मुयामि । कीस थरथरायसि ? ते असिवा(?) नत्थि त्ति मोक्खो त्ति । तओ तत्थ तेण भणितं– नाहं एयं रुयामि जहा हं तुमे खज्जामि, धन्नो हं सग्गे योयजो(?) हं वेसानरस्स आहुती (?) तुह मासोववासिस्स मुहे पडामि । किंतु गुरुणा हं केणइ कज्जेणं भिक्खुदस्स पासं विसज्जिओ, तस्स मे आणत्ती न संपादिद त्ति एदं रोयामि । तं सामि! रयणिअर ! जइ जाणह गुरु-कारणं, मा हंतमि(?हण्णसि) त्ति । तओ ते हिदयरुइदेणं समएणं पत्तियावेमि जहा हं तस्स भिक्खदस्स तं गुरु-संदेसं निवेदेउं अज्जेव तुह मज्झे(?मग्गे)णं आगच्छामि । तओ विसज्जेहि मे कद-समयं । अवि य,

किज्जंति सेदु-बंधा, आयस-बंधा य रज्जु-बंधा य ।
कुलयाण समय-बंधा, जीएण समं विवज्जंति ॥

रक्खसेण भणितं– जइ एवं तो पत्तियावेदुं वच्चाहि, छुहाइतो हं, लहुं एहि त्ति । ताहे सो चट्टो रक्खसं हिदय-रुइदेणं समएणं पत्तियावेदुं गंतुमाढत्तो। थोवंतर-गदो य समय-बंधणा-हेदुं पुणो पडिनियत्तो, तं रक्खसं भणदि- देव! किं पि विन्नवेमि । अहं ताव चट्ट-विणय-सालं सेवामि, जं च किं च कारणं वा मम हरामि(?), तम्मि कज्जे गुरुं समत्थेमि । सो य गुरू मे हियं उवदिसइ । सो य गुरू मे इह संपदं नत्थि । तं तुब्भं चेव मे करेह (?कहेह)। पुच्छामि वा इमं कारणं–एस ताव पंथे मम इदाणिं पच्चवायो पडिभायइ, अहं च समय-गुरु-भारक्कंतो वट्टामि । तं तुब्भे हिदं समवादं उवदिसह, जोग्गं मम इदाणिं एदेण पंथेण पडिनियत्तिउं न वेदि(?ति) । तेण य रक्खसेण हसिऊण भणिदं– भोयो(?भद्द)मुह ! जइ ते अहं चेव समवादं पुच्छिओ, तओ ते कहं वितहं उवदिसामि ? वच्चमाणो पुणो इमेणं सपच्चवाएणं [ण] आगच्छीहिसि, एस ते उवदेसो त्ति । तेण भणितं– देव! समओ कह कीरउ ? तेण भणितं– वच्च, न ते समओ त्ति । तओ से समय-विमुक्के खेमेणं गओ छत्तो ।

तं जइ ताव तेण रक्खसेण वि होतुं समत्थिदेणं वितहं न उवइट्ठं, तहा तुमे वि अहं चेव समत्थिओ समाणो किह ते अहिदं उवदिसीहं ? सच्चं भणामि, सेयं ते एदं पुरिस-रयणं समासयिदुं ति ।

तओ तीए सणिदं भणिदो **दमणो**– कुमार ! अहं ताव इहं पिउ-नियोगेणं कन्नाजण-रक्खणिज्जाओ दिव्वोसहीओ उवरक्खामि । एयाओ य सव्व-रसायण-पहाणाओ सव्व-विस-वेदाल-भूद-पिसाय-रक्खस-उस(?)-निवारिणीओ रिवु-बल-विणासणीओ य सोम-प्पभाओ सोमगिह-गदाओ य इह धारिज्जंति । न य एदाओ इतो मोत्तुं अन्न-खेत्तेसु अत्थि, ण य अत्थि अन्न-राइणं, न य संतेसु विज्जासु वा [५]सोमक्कासु(?) सिणापादुं(?) [५]जरेदुं(?) वा तीरंति । एदासिं च कुल-विज्जा [६]तहत्ते(?न्ने) न सिक्खाविदा, इड्ढियरि जत्ताउ(?) य एदाओ पिज्जंति । ततो(?तातो) य अज्ज बाहिं अन्नासिं ओसधीण सपरिवारो परिक्खं करेइ । मम य आणा दिन्ना दिन्नंताव(?) सोमगिहे ओसधीओ परिजत्ता(?वा)हि । तदो अज्ज पदोसे पच्चूसे वा ओसधि-पाणं काहामि त्ति । तदत्थं ससहीजणा इहमागदा हं । तं न याणामि इदाणिं किं करणीयं ति ।

दमणेण भणियं– रायपुत्ति ! सुदं चिय ते होहिति जहा, एस उत्तम-पुरिसो अज्ज **रमणिज्ज**एणं नागिंदेणं पूइदो । एवं से सव्व-विज्जाधर-पुरतो पाधन्नं निवडियं । सुणामि य एदाओ ओसहीओ मोत्तुं जगप्पहाणं अन्नं पुरिसं पीदमेत्ताओ निद्दहंति, उत्तम-पुरिसं पुण सयमेव यंति । तं भणामि उ सव्वाओ वि एदाओ ओसधीओ घेत्तूणं अज्जपुत्तं भत्तारमुवगंतुमरहध पियरं च सारक्खिदुं। एव कते तुमं अज्जपुत्तपादाणं सव्व-भारियाजणस्स उवरिं ठाहिसि। तओ तीए तह त्ति पडिवन्नं । मया य सन्निओ **दमणो**– सिग्घं गेण्हाहि ओसहीओ त्ति । सो य पविसिउं सोम-गिहं पडिनिग्गओ भणइ मं– सामि ! मज्झ पविट्ठ-मेत्तस्सेव विज्जा(?ज्जु)-सीहाओ विव दुदं पज्जलियाओ **ओसधीओ, न सहामि णं समल्लिइदुं पि कओ पुण घेत्तुं ति । तं सयमेव वित्रासधेइ । तओ हं सयमेव पविट्ठो सोम-गिहं । पेच्छामि य आहुति-सित्ता** एव हुदवह-सिहाओ जहा जलंतीओ ओसहीओ । ताओ य मया आलित्त-**मेत्ताओ चेव हिदय-समाओ संवुत्ताओ । मंतविधि-पुव्वेण य मया उद्धियाओ ।** तासिं च महोसहीणं कुल-विज्जा-विरहियं अणुइद-ग्गहणं दट्ठूणं विम्हपुप्फल(?वुप्फुल्ल)लोयणा **ससिप्पभा** घोट्टेइ ममं नयण-कमलंजलीहिं ।

ताओ य कन्नगाओ साददेसं(?) **दमणं** भणइ– अवहिदा दाणि तुब्भेहिं **ससिप्पभा** ओसहिओ [य], वयं पुण इदाणिं एदीए विउत्ताओ कत्थ धिदिं लभीहामो ? तेण भणितं– जुत्तं तुब्भं पि इदाणिं अज्जदुहिदं अणुयाएदुं,

एवं सहि-भावाणुरूवं ति । तओ ताओ सव्वाओ वि **ससिप्पभाए** सह एगओ कद-समवायाओ दस वि जणीओ समदं चिय यंसे(?) समयं सयंवराओ उवगदाओ । तेसु य ताओ परम-रूव-जोव्वण-सोभग्ग-ह(?घ)त्थेसु हिदयेसु समयं अवलंबिदाओ । तओ **ससिप्पभा** ससि-प्पभा इव सम्माणुरागत्तं(? संझाणुरागरत्तं) जलधरं पिव ममं समल्लीणा । सा य मे मद-कलिदेण व इसा(?दिसा)गएणं धवल-मुणालिया इव दुदं समुक्खित्ता । उप्पदिदा य मो महा-जवा णहंगणं।

दुद्धरिसं ति य तयं ठाणं चिंतेउं तओ **भरद्दाय**-रिसि-आसमाभिमुहा पयाया मो । छज्जामि य नहंगणे पियमुव्वहंतो गरुलो इव धवलं नाग-कन्नगं हरमाणो । कमेण य पत्ता मो पउत्त-रिसिजणाउलं आसमपदं । तत्थ य उवदिदा मो । कन्नगाण य भूसण-रवेणं हरिण-वर-विमिद(?)-मयजूह-विहग-संघादे य अवबोधयंता उवगदा रिसिं । सो य मो कन्नगा-सहिएहिं इसिं लज्जावणद-वदणेहिं विणएण पूइदो । तेण य थेवं पहसिय-मुहेणं भणियं– किल अणुदिट्ठं वो नियय-जोव्वणाणुरूवं इहागच्छंतेहिं य अत्थाणुरूवं ति । मया 'जहाणवेह' त्ति भणिए भणइ– दुट्ठभेमो(?) पुरिसो सीविसो(?) आकयितो(?) त्ति । तओ ताव तीए नियय-वासगिहं पवेसिया **ससिप्पभा**। ताए य रयणीए रिसिणा भाणिता **ससिप्पभा**– पुत्त ! जं सि पिउणा विज्जारूवं सिक्खाविता तीए परिजविऊणं देसि देवस्स भत्तुणो ते एदासिं अन्नयरं महोसहिं, जा णं एसो अवराइदो पुणो भमइ । तीए परिजत्ताए य दु-भायण-कदा खणेण दुवीभावमुवगदा, कद-कोदुय-मंगलोन(?लेण) य पीता मे (?) । पीदमित्ताए गुरूअत्तमुवागदाइं गत्ताइं, सयणीयं च उवगंतुं णट्ठ-सन्नो पिया-सहिओ सुचित्ताकुलस(?)रिसिणा वयंसेसु य सदा(?) उवचरिज्जमाणो विगद-वेदो चिरं सुत्तो हं । अट्ठमे य दियसे वेदं लभिऊण पडिबुद्धो हं । समासासेउं च परियणं रिसिं उवगदो हं । तेण य हं कय-विणय-कम्मो भयत्ता(?)सिसेण भणिदो– पुत्त ! इदाणिं सि सव्व-रिवूणं दुद्धरिसो अधियतरो य सि **मंदरदेवाणं** संवुत्तो सि । तुट्ठा मो अज्ज जं तेहिं दिव्वोसही जरिता। वच्च इदाणिं एगागी चेव समुद्दंगमाए विसमवाहिणीए नदीए ससीसो ण्हाइदुं एहि त्ति । तओ गदो हं नदिं, मज्झियनियत्तो य आसमपदस्स बाहिं काग-वद्ध(?)-बग-सिदाल-चरितं मि(?सि)वा-राव-संकुलं बहु-नर-करंकाकुलं च महा-निरयाहिदण(?)समाणं रणभूमिं पेच्छामि। तओ उवगदो हं रिसि-समीवं।

सो य मे पुच्छमाणस्स कहेइ– ताव(?द) **वसुदेव** ! सुणाहि । तुहं पीदोसस(?)-विप्पउत्तस्स परियणस्स य ते रक्खणत्थं अप्पमत्तो ठिओ हं । **आभोगिणि**-प्पभावेण य विदिद-परमत्थेण य मया आवाहिदा तुह पक्खिदा विज्जाधर-रायाणो सबल-वाहणा । अह य दिव्वोसहि-सहिदाए दुहिदाए हरणेणं जणिदं जणिद-तिव्व-मन्नू सव्व-बल-समुदएणं इहागओ राया **ससिकंतो** । एत्थ य अदूर-देस-ठिएणं **कुलिसवेगो** नाम णियय-सेणापदी मम सगासं पेसिओ जहा– अप्पेहि दुहिदरं ओसहीओ य, अहवा मज्झादं छड्डेमि त्ति । मया भणितं– भो **कुलिसवेग** ! ण आसमं आगओ कोवि सत्तु वि अप्पणिज्जइ(?अप्पिज्जइ), किमंग पुण संबंधिणो । जं पिय-ओसधिं अभिलसइ तं पि भणाहि(?मि) से(?ते) णणु सा पहाणतर-पुरिसप्पदा, को य एस अत्थाणे मच्छरो ? जं पि य भणइ दारियं देहि त्ति, तं संजित्थ(?)वस-गदो कज्जाकज्जं अमुणमाणो एवं सो भासउ(?सि) इदरहा पुण णं विकराल-परिपालिया वि कन्नगा अवस्समेव जहा-सत्तीए पहाण-पुरिसे जोयणिज्जा । किं तु वा तुमं पियावदी(? पयावदी) भविस्सदि(?सि) । अह पुण समत्थामि ते उ, को ते अन्नो **हरिवंस**-भूसणाओ **वसुदेवादो** विसिट्ठयरो कन्नाए वरो होहिति त्ति ।

एवं बहुप्पगारं भन्नमाणो वि जहा उवसमं न गच्छइ, ताहे पुव्वदरं समाहओ तुह पक्खिएसु खयर-राईसु तुह [८७]भग्ग समग्गेसु य ते [८८]सुसूडीओ(?) से चिरस्स स-बल-वाहणस्स [८९]विढप्पो, तुह रक्खण-निमित्तं च मया जिण-भवण-पागारेणं परम-पडिमोवसोभिदेणं विज्जाधराणं अलंघणिज्जेणं वेउव्विदेणं वेढियं मे आसि सव्वओ समंता आसमपदं । सो हय-मच्छरो पलादो स-नगरादो, अवगदो मग्गं च नाऊणं अज्ज मे [९०]पडिसाहरिओ विज्जाधराणं अवेवच्चिय(?) जिण-भवण-पागारो । पडिबुद्धो य सि अज्ज तुमं, पारेहि दाणि पत्थमाहारं ति ।

तओ मया **ससिप्पभा**-सज्जिया [९१]परपच्चादी(वि?)दा रसायणी खीरा, पच्छा भुत्त-भोयणस्स य मे सव्व-सुहीसु कयं मे वराणुरूवं पडिकम्मं, पसाधिता य महदा विभूदीए **ससिप्पभा** । तओ रिसि-सहिएणं सयमेव **देवरिसभेण** राइणा महदा विभूदीए गाहितो हं **ससिप्पभाए** पाणि ।

एवं अह तत्थ [९२]एगुणपत्तालीए(?पन्नासीहिं) पियाहिं सहिओ विज्जा-पभावेणं विउव्विय-तावदिय-मित्त-रूवो जहा-सुहं उवललामीति ॥

[९३]इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेव-हिंडीए
ससिप्पभा-लंभो णाम बावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. सव्विगदं पा. । २. समुउ पु. । ३. सउवी पा. । ४. अबं पु. । ५. णिट्ठ पु.। ६. सुमिणे पा. । ७. तिलओ पा. । ८. निक्खंतो पा. । ९. परिग्गद पा. । १०. य से कन्ना पु. । ११. मोएवासा पा. । १२. सव्वेम्मोवासणाणं पा. । १३. आहुणोदि पा. । १४. वाधिया पा. । १५. बलद्धरक्ख पा. । १६. गोण्हह पु. । १७. हियस पु. । १८. देवमाणो पा. । १९. गारेग पा. । २०. पट्ठयाण पा. । २१. णाददेभि पा. । २२. झोलन्तलेदु पा.। २३. सिल्लपवानिवेस पु. । २४. भमर पु. । २५. तामस्सलो पु. । २६. वद्धहता पा. । २७. त्तिलोए पु. । २८. वक्खरिणीए पा. । २९. उकीलं पा. । ३०. अंहकारंदो पु. । ३१. जन्नुल्लणा पु. । ३२. निनादपादवो॰ पु. । ३३. हरिभड पा. । ३४. सयंयिलिलाओ पु.। ३५. अवरादिदा सधीउ पा. । ३६. पक्खिती पु. । ३७. मियं समुच्छदा पु. । ३८. द्धंवेंति पा. । ३९. आणामिद पा. । ४०. साडोवलाणं पु. । ४१. मासन्नतरं पु. । ४२. ०वाणसाण पु. । ४३. मुक्कतण॰ पा. । ४४. विलद्धयंतो पा. । ४५. सरोवो पा. । ४६. असिणो पु.। ४७. जणंत त्ति पा. । ४८. गाहिओ पु. । ४९. अम्हा पा. । ५०. आ पा. । ५१. अच्छिरया पु. । ५२. सुहे निग्गहा पा. । ५३. सुंदरिया पा. । ५४. इत्ति पु. । ५५. सुलिट्ठाओ उ पा.। ५६. पडितुत्तिओ पु. । ५७. अवहयण कुव्वारो पा. । ५८. कुव्वारो पु. । ५९. अव-रु॰ पा. । ६०. विनडियाणं पु. । ६१. तिरेणगा समसंपच्चक्खं पु. । ६२. सो पा. । ६३. गउसाधीउं । पा. । ६४. सदम्हिद पा. । ६५. पनुममं जातं पा. । ६६. पेच्छा तो अहमिव पु. । ६७. अविकिरं दं पा. । ६८. ०अमोहं पा. । ६९. अधिपहुभासणि पु. । ७०. जेण णेयण- पा. । ७१. वज्झादि पु., वाज्झाहिं पा. । ७२. अणेवट्टत्तणं पा. । ७३. पाहिहिह पु. । ७४. निग्गह-सज्झ पु. । ७५. अणुसंप्पतं पु. । ७६. साव्व॰ पु. । ७७. गाययं पु.। ७८. सभाए पा. । ७९. सिग्घारव पहुसिद पु. । ८०. हुब्भदो पा. । ८१. आहाहद्धाणा पु. । ८२. न चे य पा. । ८३. मत्ता पा. । ८४. सोमकासु पु. । ८५. जारंडं पु. । ८६. तमहं त्ते पा., तह त्ति पु. । ८७. भग्गह सम॰ पा., भग्ग समगोसु॰ पु. । ८८. सुमुडिओ पा.। ८९. विदाप्पा पा. । ९०. पडिसहोरिउ वच्चिय जण-भवण पागारो परिवुड्ढो य मि अज्ज पा. । ९१. परव्वादीदा पा. । ९२. एकुल॰ पु. । ९३. ।।छ।। वसुदेवहिंडीए मज्झिमखंडे ससिप्पभा-लंभो नाम एगुण पंचासइमो समत्तो ।।छ।। पु॰ ।

२३. लीलावदी-लंभो

अह अन्नया कयाइं अहं तु संतेउरो सह सुहीसु आसमपयाओ निग्गंतूणं पत्तो विविध-सुरभि-कुसुम-तरुगणालंकिद-तीरं **तिदस**-महा-निन्नयं । तत्थ य विज्जाधर-पयत्त-सज्जिदाए परम-रम्माए पाणभूमीए सुह-निसन्नो सह सुहीसु पियासु य विविधादोज्ज-वावड-[१]करासु उवगिज्जमाणो [२]रव-पाणं निसेवामि । नियय-पियासु य सहिदा परम-मुदिद-मणसा अभिरमंति वयंसा मे । पाणासेवणुप्पन्न-मदण-विगारो य अहं आवणयाओ[३] उट्ठेउं पओग-पुव्वयं पविट्ठो एक्कं कुसुमिदं सुरभि-लदा-घरयं । तत्थ य मे ठियस्स इंगिदागार-कुसला य आगदा तत्थ पिया **ससिप्पभा** । सा य मे तत्थ पाणाच्चयोग-[४]वेगल्लेणं मदण-वेंभला मधु-मदण-मदाघुणि(?ण्णि)द-लोयणेणं कुसुम-निव(?धु)वणे य रुइदेणं करणेणं कमणेणं(?) निधुदा मे रहि(?दि)-कम्मं ताव [५]साणयणदिम(?) दिन्नाणि (?) मे । तत्थ य दिट्ठो(?)[६], मउ(?तओ) पुणरवि पाणभूमिं उवागदो हं ।

ताहे **ससिप्पभा** वि कद य करणिज्जा एक्कतो समुत्तरिदुं सुरभि-दुम-लदा-कुसुम(?मु)च्चयं काउं पयत्ता । सा य मे सवयंसस्स पेच्छंतस्सेव सहसा **माणसवेग**-दस्सुणा खित्ता, हीरिदुं पयत्ता नहयलेणं । तओ हं ससुहि-वग्गो जवेण निक्कड्ढिउग्ग-खग्गो पधाविओ से मग्गेणं, 'ठाहि ठाहि दुराचार, कत्थ मे पलाहिसि' त्ति भन्नमाणो । हरदि महाजवो न य सक्कदे कहिं चि आयासेउं। विलवदि य कलुणं कलिणा हीरमाणी **ससिप्पभा** । सो य पुव्वाभिमुहो **वेदड्ढ**-दाहिणेणं हरदि महाजवो, अणुसरिज्जमाणो य अम्हेहिं धावदि मण-जइण-पवण-वेगो पत्तो य सो खणेणं खंड-प्पवाद-[७]गुहा-वरोमण(?) संनिविट्ठ-**गंगा**-तीर-गदं **मेभवणं** नाम आसमपदं, तत्थ समोवडिदो । तत्थ य **कोसिओ** तावस-कुलपदी, तस्स सगासे **माणसवेगेणं** ठविदा **ससिप्पभा**। उवट्ठिदो य से मग्गेणं अहं सवयंसो । गओ अद्दंसणं **माणसवेगो** । तं वेवे(?चेव) हिदय-विब्भय(?म)करं जायं **माणसवेग**-चरिदं ।

वंदिदो य मे सयं सपरिवारेण **कोसिओ** उवगारवसेणं । तेण य दिन्नासिव्वादेणं भणिओ हं– पुत्त **वसुदेव** ! धिर्दि लभह । मुहय(?यह) कोधं। न एस **माणसवेगो** । सागदं वो । सव्वं साधु भविस्सदि । भि(?णि)सीहध त्ति । तेण कयग्घपूओ सपरिवारो निसन्नो हं । अल्लीणा य मे अक्खेव-भय-हित्थ-हिदया **ससिप्पभा**, [?.....]संगा य मे परिसंति(?ठि)ता, निसन्ना य मे पिट्ठदो । तओ भणइ मे **कोसिय**-रिसी– पुत्त ! सुणह **ससिप्पभा**वहार-कारणं ति ।

अत्थि **वेद्डढ**-दाहिणाए सेढीए पुव्व-देसम्मि य **मयूरा** नाम जणवओ। तत्थ **मयूरपुरं** नाम नगरं । तत्थ य आसि पन्नत्ति-सिद्ध-विज्जो राया **पन्नदि(?त्ति)कोसिओ** नाम । तं ताव ममं वियाणह । मम य देवी **लीला** नाम । तीय दो पुत्तभंडाइं, कुमारो **मयूरसेणो** कन्ना **लीलावदी** नाम। अहं च कालेण भुत्तभोगो विसयेसु जाय-वेरग्गो **मयूरसेण**स्स रज्जं दाऊण तावसो पव्वईओ इहासमपदे ससीसगणो ठिओ हं । **मयूरसेणो** य संपदं रज्जं पालेइ। काले य **लीलादेवी** पंचत्तमुवगदा । **लीलावदी** य कन्ना भाउणा विज्जा-गाहणत्थे मम सगासं आणिदा । इहं च सा मया विज्जाओ गाहिता पत्त-जोव्वणा वट्टदि । भाउणा य से ममं संदिट्ठं जहा– अरहध कन्नाए सयमेव अणुरूवं वरं उववादेउं ति । तओ मया तं निमित्तं महता तवेण देवदा एसा [आ]राधिउं पुच्छिदा– भगवति ! को णु हु **लीलावदी**ए भत्तारो होहिति त्ति। तीए भणितं– एसा अद्ध-भरहाहिव-पिउ-भारिया होहिति त्ति । तीए(?मया) भणितं– भगवति ! सो मे कहं नायव्वो ? तीए भणितं– सो संपदं **भरद्दाय**-आसमपदे परिवसति, तस्सेव जामादुगो वट्टइ । विसेसेण संपदं **ससिप्पभाए** भावाणुरत्तो तर्हि वसइ।

तओ मया सच्चेव देवदा संदिट्ठ(?ट्ठा)– भगवदि ! जह जाणसि तह महं जामादुगो इदा(?हा)णेहि त्ति । तीए तुह विपक्ख-भूतं **माणसवेग**-रूवं काऊणं तुह सवयंसस्स इहाणना(?णा)हेदुं पेच्छंति(?ते)ण ते पिया अक्खिविदुं इहाणीया । आगदा य से मग्गेणं तुब्भे वि । सा य देवदा **ससिप्पभं** मम सगासे ठवेदुं अद्दंसणं गया । तं एस परमत्थो । एदेण कारणेणं इहाणिदो सि त्ति । तं भणह इदार्णि एत्थ कारणे जं जोग्गं ति ।

मया भणितं– एत्थ कारणे **ससिप्पभा** पमाणं ति । रिसिणा य भणिदा **ससिप्पभा**– पुत्त ! अणुयत्तदि ते भत्ता । कण्णा य एदस्स देवदा-

निद्दिट्ठा। भणाहि, दाणिं जं एत्थ जोग्गं ति । तओ तीए चदुर-मधुरं देस-कालोववन्नं भणितं— तात ! मा 'पदिसंभण(?एरिसं भणह), रयणागरो महाणुभागो मे भत्ता, अरहति कन्ना-रयणाणं संगहं कादुं ति ।

तओ मया तीयाणुवत्ति कादुं पच्छा अब्भुवगयं कन्ना-संवरण-कारणं ति ।

एयम्मि देस-काले जाण-विमाणेहिं विज्जाधरेहिं य सहसा नहयलं छादयंतो, अंतेउर-परिवारो **कोसिय**-संदेसेणं पत्तो राया तहिं **मयूरसेणो** । पणमिऊणं तहे(?हिं) य च सो पियरं ताहे पणतो ममं सपरिवारो । विउव्वियं च तत्थ तक्खणं चेव चादुरंतयं, कदं च मम नव-वराणुरूवं पडिकम्मं, पडुप्पवाइद-तुरिद-गंधव्व-गीद-वा[इ]द-रवेण य नीओ हं चादुरंतयं, उवणीदा य मम समीवं सुकद-पडिकम्मा **लीलावदी** विव सिरी (?सिरी विव) तेय-भासिरी, चारु-वर-जहणा, थण-जुवल-चक्कवागोवसोभिता, सोणि-महा-हरद-विभूसिदा, नाभि-'कुंजावत्त-पवादिणी, करदल-सुकुमाल-चलण-रत्तुप्पल-विरइदावलिद-लोयण-पउमखंड-परिमंडिया, जोव्वण-[?वण-]पवाहिणी, सिग्घ-वेगा, सुरद-सलिल-विमल-विपुल-तरंगाउला, दंसणजुइ-रायहंसोवसोभिया, बिंबाधर-विद्रुम-खंड-मंडिया, गुण-सद-मय-मिहुण-पक्खि-वंद-सोभिदा एव सुर-गंगा इव पच्चक्खा **लीलावदी** मणि-रयण-हेम-वर-भूसणुज्जला, सकलोदिद-सरद-निसाकर-बिंब-सोम्म-तण-वयण-चंदा, सित-सुहुम-खोम-वर-जुवल-संगात-गातयट्टी, कणग-तविद-णिसेस-गोरा, पेलव-रयत-विराइता इव कणग-सेल-कंदरा य, रायहंसी व माणस-सरं समल्लीणा मम सगासं ।

इंदभूइणा य उवज्झाएणं विहिणा तीए पाणिं गाहिदो हं । विज्जा-विगप्पिदे य रयण-पासादे विरइद वर-रयण-सयणोवयारो गुरु-जण-दिन्नाणुन्नो आवासिदो हं तत्थ । खयर-जण-णट्टोवहार-पाणासेवणेसु य मे गलिदं दिवसं। पदोस-काले य सहीसु उवणीदा मम सगासं **लीलावदी** । संपादिदा य मे वच्छत्थलं पउमद्दहं पिव लच्छी । समुप्पादिद-वीसंभा य समुवगूढा मया सुरद-लोलुएणं नयण-वयणाधर-परिचुंबिदा मुद्धयंतर-पासोरु(?)-णह-विघट्टिया जहा-सुहं संपाविदा मे लोग-करणिं । अभिरमंतस्स य मे पभाता रयणी । तओ विमुक्क-तलिमो हं कद-दव्वावस्सओ सुहं पविहरामि । गयाणि य मे तत्थ सुहेणं दस-दिवसाइं ।

अन्नदा य मे **पन्नत्तिकोसिओ** भणइ– देव ! जत्थ तुह रुच्चइ तत्थ विसज्जेहि दो वि वधूओ, तुमं पुण मम समीवे कासि चि सुह-साधणिज्जाणं विज्जाणं आगमं करेहि त्ति । मया तह त्ति पडिवन्नं । तओ **लीलावदी** भाउणा सह पेसिया **मयूरपुरं**, **ससिप्पभा** पुण पुच्छिदा मे– पिए ! जाव अहं विज्जा-साहणं करेमि ताव भणाहि, कत्थ गंतुमिच्छसि त्ति । तीए भणियं– सामि ! विज्जा-समत्तीए जत्थ तुब्भे गंतुमिच्छह तत्थ मे विसज्जेहि त्ति । तओ मे सा वयंसेसु सह विसज्जिया **तातपुरं अच्छरा-चंदलेहाण** सगासं । तेण(?तओ) य मे कासि च सुह-साहणिज्जाणं विज्जाणं उवट्ठियं पुरच्चरणं । ताओ य मे थेवेण कालेणं सिद्धाओ । कद-पारणो च अच्छामि जहा-सुहं ससुर-सगासे।

अन्नदा य तत्थ सहसा वणरिसीहिं आरसियं-भो ! एसा हु का वि रोद्द-रक्खसी परम सिन्ना(?) य घोर-वदणा उवट्ठिदा रिसि-भयंकरी, सिग्घं पलायध त्ति । तओ दिट्ठा मया वि सा वणरिसि-भयंकरी करि-मत्थ-कण्णा परम-लोय(?म)हरिस-जणणी जणणी विव कलिकाल-जगधराणं भया रक्खसी । तओ तं वणोगस-लोगं परम-भीदं समासासंतो अग्गदो भूओ से अहं । सा य ममं जुद्ध-सज्झं दट्ठूणं तक्खणं चिय मुक्क-रक्खसि-रूवा दिव्वकरा जक्खिणी संवुत्ता । पच्चभिजाणिया य मे भगवती जीय मिउमहपणादो(?) सो(?मो)इदो । पणदो य से अहं पादेहिं । सा य पउत्तासिसा भणइ– साहु पुत्त ! अहो ते सव्व-कालमविउज्जिदं(?) सत्तं । पुव्व-परितुट्ठा दंसणूसुई य ते अहमिहमागदा, सत्तं च ते परिमाणिदं पि पुणो परिमाणयंतीय रक्खसि-रूवं कदं मे । पडिवन्ने य तुमम्मि छड्डिदं रूवं । तुह य पुत्त ! संपयं महा-रिवूसु मह पच्चासन्नो(?) [.....?.....] संहिदा गदा य अद्दंसणं जक्खिणी ।

तओ भणिओ हं परम-तुट्ठेण रिसिणा– तात ! **वसुदेव** ! बहुमदा हु विज्जाधराणं एस ओसधी, खयर-चक्कवट्टीसु वि मग्गिदा सुणिज्जइ दुसमासादित-पुव्वा । अहिणव-पत्ता य एसा बहु-विग्घा दुक्खेण वि(?थी)री भवति । किंतु मे एसा न कदाइ कस्सइ दंसइदुमवि दादव्वा देवया-दत्ता। न य ते एदाइं दियसाइं तुमे इदो आसमपदाओ कदाइ बाहिं निग्गंतव्वं । तं च सोऊणं वारिद-वामत्तणेणं कोदुगं मे जायं– कीस मे एस निवारयति ? तओ हं कदाइ विणीसरिय रिसि-आसमपदाओ समुप्पन्न-कोदुगो वण-विवरमणुसरंतो नाइ-दूरं पवर-नदी-सलिल-पुलिण-कुसुमित-पादव-लता-

विदाणाइं पेच्छमाणो [पविट्ठो] परीमित-[त]रु-मणहरं रत्नं ।

नवरि य एगम्मि गहण-वणंते गीत-सद्दं सुइ-विसय-मणहरं सुणामि। तमहमणुसरंतो नाइ-दूरं गंतूणं एक्कं तावस-कन्नगं पेच्छामि, सव्वादर-निम्मिदं पिव विधिप्पि(?प)दिणा सव्वलोग-मण-नयण-तक्करिं [१०]सुदणुं । तमहं मत्त-मधुकर-विरुत-गीत-स्सणं उवगंतुं भणामि— सिहरदसणे ! वड्ढदु तवो सिवकरो ते[११] । सा य हरिण-वधु-सरिसाए दिट्ठीए ईसिं अभिलोएदुं सललिदं संपट्ठिदा तओ सुदणू कड्ढंती विव ममं हिदयं करग्गंगुली-गहिदं । तओ नाइदूरे विदियं पि तं अइसयंतिं तं पिव रूवेणं, तहा तदियं, चउत्थिं च पेच्छामि । तओ हं ताओ समेच्च सरद-काले पसन्न-मुह-लोयणाओ चउरो इव दिसाओ पेच्छंतो णे(?चे)व न तिप्पामि। ताओ य ममं लज्जोनद-लीला-लोयण-विआवडाए दिट्ठीए आकरिसंतीओ इव संपट्ठियाओ अवरिमाभिमुहिओ महा-नदीओ इव अवरोदधिं सहंतीओ(?) । अणुगच्छामि य अहं ताओ विज्जुलदाओ व्व जलधरो ।

अन्नत्थ य पदेसे पंचमि-चंदोवम-निडालं पंचमं पि कन्नगं दुम-लदा-कुसुमुच्चय-लग्गं पेच्छामि । तं च लच्छिं पिव पिय-दंसणं तासिं सव्वासिं पिव आधिवच्चमिव करेमाणिं लक्खेमि दुव्वा-कंडग-निद्ध-नील-वन्निं जिणमाणिं पिव लायन्नेणं सव्व-सुरवधु-सत्त-संसग्गि, उग्गिलमाणिं पिव पवरारविंद-सरिसेसु णयण-भुजगेसु दंसण-विसं । चिंतिदं च मे— अहो ! दरिसणिज्जाओ इमाओ रिसि-कन्नगाओ जावविदाव(?)-भूसणाओ अइ मणोहर-सुरूव-भूसणाओ मत्त-कोकिल-पलाव-सूसणाओ । अहो ! दुल्ललिओ कदंतो जो एदारिसाण वि वणे वसहि विदेइ ति । तं चाहमुवगम्म भणामि— सिहरदसणे ! वड्ढदु तवोलता भे पत्था कालेण दुमदा णिंति । सा सललिदं सहासं च भणइ— सागदं दीहायुरिति । पुणो य मया भणिदा— सुदणु ! किं न संतुट्ठा सि एदेणं चिय जं ते सकुसुमो अणंगो सरीरे परिवसइ, जओ अन्नेसिं पि कुसुमाणं संगहं करेसि ? तीए भणियं— कुसुम-दारिद्द(हारिं द)हामो जओ वणे रूढाइं उच्चिणामो त्ति । एवं वोत्तूणं ललिद-गमणा संपट्ठिदा सह तासु कन्नगासु ।

अहं च तासु मयण-महा-मंत-समाकड्ढिद-हिदओ अणुयामि तासिं मग्गं मुद्ध-मय-पप्फुदच्छीणं । तओ तासु भणियं-सामि ! अम्हे ताव गुरुजण-नियोगेणं कुसुमुच्चय-कारियाओ वणे स-कम्माणुट्ठाणं करेमो । तुमं पुण किं निमित्तं अमा(?णु)गच्छसीति । मया भणितं— अहमवि [गुरु]-नियोगेण

कुसुमच्चयकि(?क)रण-हेदुं तुब्भे अणुगच्छामि । ताहि य भणितं– कहय, को दे गुरू? केरिसं वा कुसुमुच्चयं करेसि ? मया भणिदं– गुरू मे भगवं अणंगो जस्स कुसुममया चेव बाणा, केदू उदधिचरो मकरो । तस्स नियोगेणं अहं तुब्भं अक्खीण-जोव्वण-कुसुमाणं पवर-विलया-कप्पपादवलयाणं दिट्ठी-दीहर-करग्गंगुली[ए] कुसुमुच्चयं करेमाणो ममदो(?) भे परेमि(?) । तं च सोऊण ताओ समयं ललियं च पहसियाओ । चिंतिय च मे– वरं खु दाणिं अरन्न-वासहरो जो एवं सिरि-भरियं मुहं करेइ ।

तओ हं ताओ पुरदो पददिप्पाओ(?) तिप्पसुद-मद-भिन्न-करडो इव मयगलो भद्द-करि-कन्नगाओ इव अणुसरंतो पत्तो एक्कं महा-गंभीरं पादवाइन्नं आसमपदं । दिट्ठं च मया तत्थ उडवग-द(?दा)र-निसन्नं तरुण-वयं चेव तावस-मिहुणगं सुरूवं । गंतूण मयाऽभिहिदं– वट्ट(ड्ढ)दु तवो कुलपतीणं । भणिदं च मे पुणरवि– अहं वो **जादव**-खत्त-पसूदीए **अंधगवण्हि**-तणयो **वसुदेवो** अभिवादयामि त्ति ।

तओ रिसिणा भणितं– जाणामि ते जावत(? **जादव**)-खत्त-प्पसूदं **वसुदेवं** ति । तं सागयं ते भद्दमुह ! वयमवि खत्तिया रायरिसिणो य त्ति। तासु य कन्नगासु भणियं– उवहरह रायपुत्तस्स अग्घं ति । तओ तेसु संपाडियग्घपत्तो उवविट्ठो हं तेसिं पुरतो कारणत्थी । तओ तक्कालोववन्न-कहा-विरामे भणितो मे कुलपदी- कस्सेदाओ कण्णगाओ त्ति । तेण भणितं– सव्वाओ वि ममेदाओ त्ति । मया भणितं– केरिसं पुण भत्तारं ताओ उववादेदव्वा ? तेण भणितं– भवारिसं खत्तिय-भत्तारं उववादेदव्वाओ त्ति । मया भणिदं– जइ जोग्गो हं तओ मे पयच्छहेति । तेण भणितं– जोग्गो सि कन्नगाणं, किं-पुण भणामि, जदिदं देवदा-दिन्नं अत्थसत्थ-विदियं ओसहिं मम पयच्छसि । तओ ते एदाओ कन्नगाओ निखिलमवि तिलोक्कसारदो विसेसं ति किमंग पुण एक्कं ओसधिं एवं चिंतिऊण पडिवन्नं मे 'देमि' त्ति, एसा हु सा मम हत्थे चेव, गेण्हह, देह य मे कन्नगाओ त्ति ।

सो मे भणइ– जइ एवं तओ तिन्नि वारे भणाहि, भो दिव्वोसहि ! दिन्ना सि मया एदस्स इसिणो । सुणंतु सव्व भूताणि सु(?भ)णंतो त्ति । तओ हं तं ओसधिं नियय-मउडंतराओ हत्थेण गहेउं तस्स दादुकामो तावेव भणिदुकामो य तासिं पंचण्हं वि कन्नगाणं अतीव विवन्न-वयण-च्छायं इंगिदाकारेणं नाऊणं संकियमदीओ संवुत्तो हं । एयम्मि देसकाले गगण-तलेणं

तरितमावडंतस्स **पन्नतिकोसियस्स** रायरिसिणो जमग-समगं देवताए य सद्दं सुणामि जहा— हा सच्छंदिय वच्छ **वसुदेव** ! ण खलु ओसही दायव्वा । एस हु **कलीमंदर**-देवो त्ति ।

एयम्मि समए सो कुलपदी सपरिवारो सह कन्नगासु भीदो मोत्तूण रिसि-वेसं विज्जाधर-रूवधारी तरिद-जवो णहंगणं समुप्पइओ । ताओ य कन्नगाओ पलायण-समए पंच वि दिव्व-वेसाभरणहारीओ संवुत्ताओ ससिणिद्ध-दिट्ठी-संपेसणेसु य आपुच्छंतीओ इव ममं संभव(?म)-विसमावलोयणाओ(?) घेत्तूण य मम हिदयं खणेण अद्दंसणं गदाओ ।

आगदो य मम सगासं **कोसिय**-रिसी जवेणं, भणदि य पणय-कुविदो- अहो ! ते इंदियाणं चालव्वं(?वल्लं), जाण दोसेणं वयणं मम अइक्कमसि । केवलं देवदाए ओसधि-दाइदाए परित्ताइओ सि, इदरहा पुण वंचिओ विणासिओ सि उवायम्मि(?) हवंतो त्ति ।

अह य उवरिं गह(?ग)ण-तल-ट्ठियं भगवतिं जणणि-समाणिं **अच्चिमालिणिं** जक्खिणिं पेच्छामि । सा य मे विणएण पूइदा, भणदि य— पुत्तय ! विपुलारि-पक्खो, पमत्तो य सि । कहमेदं होहिति त्ति । मया भणिदं— तुमं मे जणणी निच्च-काल-ऽपमत्ता जग्गसि । कओ मे भयं भविस्सति त्ति। तीए भणियं— भगवति अपमत्तो(?अपमत्ताणं) मोययति । त्ति वोत्तूणं वत्थ-जुवलं मे पयच्छदि, भणइ— किह वि संपत्तीए ओसधिं दाउकामो मया ओसाधय(?) मुणिदो सि । तुरियमागंतूण मया **कोसिय**-रिसिणो गगण-गदाए सिद्धिं(?सिट्ठं)— एस जामादुगो ते ओसहिं पुणो य पयच्छइ, भ(?भे) णं निवारयसि त्ति । तओ सह एदेण इहमागदा हं । इतो परं अप्पमादमिति(?) वोत्तुं अद्दंसणं गया ।

तओ मया विलिएणं [पुच्छिओ] **कोसिअ**-रिसी— को पुण एस एरिस-रूवी(?वो) इहमागओ ? त्ति । तेण भणियं— एस वेदड्ढंतरा-सेढि-वत्थव्वो विरोप्पाए(?) तुहोवरिं बद्ध-वेरो **कलीमंदर**-देवो निच्च-कालं ते छिड्डावेक्खी विज्जापभावेणं गसितोसधि-लंभ-कारणो सपरिवारो अंतद्धियात(?) रक्खस-बलो ओसधीए अवहरणत्थं इहागओ । पंच य [?तस्स] भगिणीओ परम-रूव-धारिणीओ ताओ य णेण तुह रइंदिय(?)-पराइदस्स बंधण-हेदुं पयत्ताओ । ममं च तत्थ तुमम्मि अदीसमाणे चिंता समुप्पन्ना—मा णाम सो

उदारओ इंदिय-चावल्लेणं कदाइ ओसहिं हराविज्ज त्ति । ताव य मणेण(?) सह(?णह)तल-गदाए भणिओ हं देवदाए– हो **कोसिग** ! दे(?ए)स ते जामादुगो दिव्वोसहिं हरावेइ । ता णं निवारय त्ति । तओ तीए वयण-समयं चेव दुतं उप्पदिदुं सह तीए इहागओ हं । सो य मम देवदाए सहियस्स आसमे [आगदं दट्ठूणं] सपरिवारो दुतं पलादो त्थ । एयं मे तेण परिकहिदुं मया तओ संतमिति पदेण पडिवन्नं अवराधो त्ति । ताए(?हे) तेण सह सओसधीओ गओ हं आसमपदं। तत्थ य जहासुहं पविहरामि ॥

[१२]इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए
लीलावदी-लंभो णाम तेइसमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. करीसु पा. । २. रयपाणं पा. । ३. आवाणयाओ पा. । ४. वेंतलेणं पा. । ५. माणोयणदिमदित्तणि पा. । ६. दिट्ठा पा. । ७. गुहवरेसेण पा. । ८. एसिंदिसि भणइ पा. । ९. गुंजावत्त पु. । १०. सुरिसुदणुं पा. । ११. भे पु. । १२. ।छ।। लीलापतिलंभो नाम पंचसइमो सम्मत्तो ।छ।। पु. । ।छ।। लीलापतिलंभो नाम पंचासइमो ।छ।। पा.।

२४. गोरीदत्ता-लंभो

अन्नदा य **तातपुरादो दमणो** आगंतूणं **पन्नत्तिकोसियं** भणइ– सामि! विज्जाधर[१]-राया **देवरिसभो** [विन्नवेइ] विसज्जेह[२] किर अज्जपुत्तं, पेच्छह(?उ) हरिकूड-पव्वदे जिण-सदण-जत्तं ति । तेण य विसज्जिदो [हं] घेत्तूणं ओसधिं **दमण**-सहिओ गगण-तलं पलाणो । नादि दूरप्पयादो(?दे) य [३]दित्त-घोर-रूवं बीभच्छ-दरिसणिज्जं गहिद-दित्त-खग्ग-पाणिं वितिरिच्छं[४] पुरदो गगण-तलेणं धायमाणं **वेदालं** पेच्छामो, जो कालङ्ग[५]रत्त-जलधरो इव परम-भीसण-तिमिर-गंभीरो । भणदि य ममं **दमणो**– अज्जपुत्त ! एस [६]**वेदालो** तरिदं अंतरिक्खेणं [७]अति(?भि)पडइ । अणुसरामो ताव एदं । न हु खलु मे मित्तं विणासि(?से)ज्ज । मया भणिदं– को तुह मित्तो ? तेण भणितं– मित्तो मे **वक्कणास**[८]-णगराधिवो खयर-राया **वायुवेगो** । सो य मे अज्ज आगच्छंतेणं तत्थ **वेदड्ढ**-[९]कतचं(?पव्वयं)तरेण(?) [१०]नियय्युज्जाण-कुसुम-लदा-[११]घरंतरे अणारक्खो एगागी केवलं पिया-सहिओ पसुत्तो दिट्ठो मि(?मे) । मए य पुव्विं तस्स(?स्सो)वरिं गहिद-पणय-कोवेणं पइरिक्क-गदो य मद-वसेण धणियं पसुत्तो त्ति य कादुं नाभासिओ[१२] । तस्स य सत्तू **वेदयाणो** नाम राया । विज्जा-पभावेणं जाणामि णं एस तेण विसज्जिओ **वेयालो** दाइतु[१३](?) खयरपतिं विणासेज्ज ति । मया भणिदं– वच्चामो तत्थ तरियं, ममं पि सो उवगारी चेव ।

तओ वेगेण पधाविओ सो । जिणिदूण य **वेदालं** पुव्वतरं अम्हे परागता **वायुवेग**-सगासं । दिट्ठो य मे सह पियाए पसुत्तो अतिमुत्तय-सुरभि-[लदा]घरोदरे । ताव य उवट्ठिओ **खग्ग-वेयालो** । तयभिपडंतस्स य से मया दंसिया अस्सत्थदिविया महोसही । तीए [१४]थंभिओ विउ(?ठिओ) नभग्गो(?ग्गे), [१५]दिवाधिउ(? वेदाविओ) य **वायुवेगो** । दिट्ठो य एतेण **वेयालो** । तं च परिहंतूणं[१६] सहपियाए पडिओ मम पाएसु[१७] । परामुहं च अदूरे संठियं **दमणं वायुवेगो** भणइ– वयंस ! अलं मण्णुणा[१८] । इदाणिं

दो वि अम्हे पुत्त-भिच्चायमाण(?) दासत्तणं उवगदा मो सहमाणो(?णा) [१९]पुव्वागेणं(?) विज्जाधरग-गणेणं(?) ति । तओ **दमणो** पसंत-रोसो तं उवगम्म[२०] परिस्सयदि । तओ पसंत-चित्ता संवुत्ता ।

तओ मया भणिओ **वायुवेगो** राया— किं पुण तुब्भं [२१]कोव-कारणं ति । तेण पहसिऊण भणियं— देव ! सुणह कोव-कारणं । अह कदाइ अम्हे[२२] दो वि जणा **वाणरमलयं** कारणेणं गदा मो । तत्थ य पच्छन्न-रूवीहिं समदिच्छमाणेहिं [२३]**गामणिवद्धणगस्स** रन्नो दुहिदा **सागरदत्ता** नाम[२४] कन्ना परम-रूववदी हम्मिय-तल-ठिया दिट्ठा मया, सा रूव-लुद्धेहिं दोहिं वि समयं समखि(?क्खि)त्ता । हरमाणा य 'मह एसा' 'मह एस' त्ति इंदिय-पराइदा दो वि मुक्क-मित्त-भावा भंडिउं पयत्ता । तत्थ य अम्होवरि-गगण-तल-गदाए देवदाए भणियं— भो भो खयराधिवा ! सुणह । [२५]सा ण तुब्भेहिं, अन्नेण वा केणइ परिभुंजिउं तीरइ । एसा पुव्वि चेव कय-कल्लाण-भागिणो **हरिवंस**-कुलंबर-ससिणो **बल-केसव**-पिउणो **वसुदेवस्स** भारिया भविस्सइ । तओ तुह णाम-गहण-समयमेव अम्हेहिं परम-भीदेहिं **जडिल-कोसिदास**मपदे छड्डिया । तप्पभितिं च पयत्ता अम्हे परोप्परं न[२६] भासामो । एयं दोस-कारणं ति ।

एव कधिते मया तेसिं कदं पत्तियं । आपुच्छिऊण य **वायुवेगं** गदा मो **तातपुरं** । उवगदा य मो **देवरिसभं** । तेण य पणमंतो ससिणेहमवदासिओ हं । तेण य वीसज्जिओ पविट्ठो हं अंतेउरं । दिट्ठाओ य मे तत्थ तिन्नि वि पियाओ— **अच्छरा, चंदलेहा, ससिप्पभा** य मम [२७]विरहुक्कंठ-परिदुब्बलंगीओ । विसेसेणं **चंदलेहा** वि सुद्ध-बिदिया-काल-समुग्गदा एव चंदलेहा [२८]परिकिसंगी दीसइ । तओ मया चिंतितं— नूणं पिउणो कुलघरस्स य वियोगे सचिंता कालं गमेइ तओ किसयत्तणं पत्ता । पुच्छिदा य मे— पिए ! किमत्थं एवं दुब्बला सि[२९] ? सा मे भणइ— **सामि** ! सव्वमेव इमं **रायकुलं** दुहविदं तुह विरहेणं, किंतु जाहे मे सुदं हरद-जत्तातो तुब्भे अन्नदो गदा तओ [३०]अपरिव्विय[३१]दव्वासाए(?) विसेसओ मे **दुक्खं जायं** तुह [३२]पिवासाए(?) । [ए]दं दुब्बल[?दा]-कारणं ति । अज्ज य तुह दंसणेण सव्वं वीसरियं मे। तओ अभिप्पसादेऊण य ताओ तिन्नि वि जणीओ जहा सुहं अभिरमामि ।

संपत्ताए य **हरिकूड**-जत्ताए आगदा मम सगासं **अंसुमंतादयो** वयंसा मे । **देवरिसभेण** य रन्ना सणिगाएण सहिओ गओ हं संतेउरो विमाणेणं

हरिकूड- [३३]जत्तं । आवासिया य मो हरिकू(?ड)-सेल-सिहरे । तत्थ य समागया उभय-सेढि-वासिणो सव्वे विज्जाधर-रायाणो । पुच्छिओ य मे **मय(?दम)णो**– वयंस ! को एस नियोगो जेण सव्व-विज्जाहरा [३४]सरायाणो मिलिया ? सो मे कधयदि– देव ! अत्थि दाहिणाए सेढीए **अच्छरतिलगं**[३५] नाम विज्जाधर-नगरं । तत्थ पुरा आसि **चित्तगुत्त**-सुओ विज्जाधर-राया **चित्तवेगो** नाम । भाता य से **विचित्तवेगो** हरित्तिय(?) [३६]भन्नदि(?) कणीयसो य । **चित्तवेगो** पुत्त(ण?)विसेसेण उप्पन्न-विज्जा-[३७]विसय-पच्चय-[३८]चक्क-रयणो विज्जाधर-चक्कवट्टी जाओ । कणीयसो पुण **विचित्तवेगो विमलगुत्तस्स** अणगारस्स सगासे धम्मं सोऊण [३९]तिव्वुप्पन्न-सद्धा-संवेगो सहोदरं आपुच्छिऊणं पव्वइओ, लज्झित(?)-तवो[४०] य कालेण एत्थ पव्वदे काल-गओ सक्क-देविंदत्ताए उववन्नो । इहं से निसीधिया । अहा-संनिहिदेहिं इह णं निसीधियाए गंधोदय-कुसुम-वासं च मोत्तूणं पूइदं से सरीरयं । तं च काल-गदं सोऊणं भादि-सिणेहाणुराग-विउच्छेद-दुक्खिओ **चित्तवेग** चक्कवट्टी इहेव पत्तो निसीहियं तस्स वंदओ । तत्थ य सो भादि-कलेवरं दट्ठूणं दुक्खिओ मोहमुवगओ [४१]कहं वि किच्छाहिं समासासिओ । आगदा य एत्थ तम्मि [४२]समए **विचित्तवेगा**यरिया **विमलगुत्ता** थेरा । तेहिं य से भादि-मरण-सोइयस्स धम्मो कहिओ, अणिच्चदा-विसेसा य पच्चक्खं पिव दंसिया । सुद-धम्मो य तक्खणं चिय [४३]अवउज्झिय विज्जाधर-चक्कवट्टि-भोग-सामिद्धिं[४४] पव्वइओ सो महाभागो, अणुत्तर-चरित्त-गुत्तो य अणुसरिओ उदधिं ।

अह तद्दिवसं चिय [४५]सपुहुत्ते(?) कत्तवित्तक्काइं(?) [४६]सुक्क-ज्झाण-भेदाइं-समइक्कंतस्स सुहुम-किरियातीतस्स य अनियट्टिकरणं पविट्ठस्स केवलनाणं समुप्पन्नं । भादा य से **विचित्तवेगो** सक्क-देविंदो सव्विड्ढीए वंदओ पत्तो । कहिदो य तेण भगवया देवासुरादीणं उभय-सेढि-वत्थव्वाण य चक्कवट्टि-णीसाए समागयाणं सव्व-विज्जाधर-राईणं धम्मो । सो य भगवं तद्दिवसं चेव सिद्धिपदमुवागओ । कदा य से देविंदेणं लोगच्छेरय-भूदा परिनिव्वाण-महिमा । तस्स य संतियं चक्क-रयणं भूदासणं च सक्क-निओगेणं इहेव पदिट्ठविदाइं । देविंदेण य इमं एत्थ सव्व-रयणामयं जिणायदणं विभव-सस्सिरीयं [४७]निरूविय। एत्थ य **नाभेय**स्स भगवओ भादुणो य पडिमाओ ठावियाओ सव्व-कणगामईओ चक्क-रयणं व धम्म-चक्कं [४८]निधायेदं(?), बाहिं निविट्ठस्स भूदासणस्स उवरि रयण-मंडवो कओ । भणितं च किर इंदेण

[४९]*एत्थ जिणायदणे अज्जप्पभिति **अलगापुरि**-समुब्भव-रदण*पडिमा-पूरिद-पडिमा-घरे अविहाडिद-कवाडे मम वयण-निउत्ताओ देवदाओ धूव-पुप्फं दाहिंति, अंतो से वाहि(?बाहिं) पुण वरिस-**वद्धमाणग**- जत्ताए उभय-सेढि-वत्थव्वेहिं विज्जाधर-राईहिं अवस्सं अ(?स)न्नेज्झं दादव्वं। जो वा **भरह-खेत्त**-वासी विज्जाधर-राया सपरिवारो इह न देहिदि सन्निज्झं, सो अवस्सं भट्ठविज्जो भविस्सइ । समागदेसु य सव्वेसु बाहिं महिमा कादव्वा, कारणं पुण, परं जो चक्कवट्टी वा कारणं संकंतो(?) विज्जाधर-चक्कवट्टी वा चरिम-भवत्थो सम्म-दिट्ठी य न दुसेया(?) खयर-चक्कवट्टिणा एदे तिन्नि, एदेसिं वा जो आसन्न-वंस-प्पभवो पिया पुत्तो वा सो सयं उग्घाडेहि त्ति । जिणायतण-दयिदि(?) य तस्स [५०]नीसावलोगे(?) मम सहत्थमदिविणिम्मिदाओ जिण-पडिमाओ एयं च भूयासणं, सो [५१]वाहो(?हे)हिदि ण अन्नो कोई । एवं वोत्तूणं सुरलोगं गओ । सुरवइणो य [५२]तस्स दोसु वि पच्छिम-भवेसु **हरि** त्ति नामं पविदिदं तेण य अंकेण एस महिधरो [५३]तप्पभिर्ति **हरिकूडो** भन्नइ, तप्पभिर्दि एत्थ उभय-सेढि-वासिणो विमलंति[या] विज्जाधरा महिमं च से करेंति । [५४]एदस्स पयत्तस्स [५५]अणेगाइं जुगंतराइं अदीदाइं । सुणिज्जदि य परंपर-सुदीए जहा आसि किर अंतरा उग्घाडियं केसु-इ विज्जाधर-चक्कवट्टीसु । किलीसंति य अज्ज वि बहवे उत्तम-पुरिसत्तण-[५६]संठिदा खयरा वरिसे वरिसे जिणघरमुग्घाडेदुं भूयासणं च वाहेदुं ति ।

एवं तेण परिकहिदे समाणे तओ गया मो जिणायदणं सदा-कुसुम-संताणय-पादवोवसोभियं वणुद्देसं । तत्थ य तिगुणादीयं पदाहिणं [५७]काऊण वंदिऊण य बाहिं भत्तीए चेदियाइं एगदो परिसंठिया मो सपरिवारा । पेच्छामि य सवयंसो **दमण**-दाइदे उत्तर-वेदड्ढगे विज्जाहर-चक्कवट्टि-नरिंदे[५८] विविध-विराइद-विचित्त[५९]-कणग-मणि-हाडक-मोलीधरे अहताधातरत्तपइन(?)-सवत्थ-सुकदुत्तरीए वामेग-कुंडल-धरे वर-संख-फालिद-विमल-कन्निया-भूसिए विविध-मल्ल-गंध-विचित्त-भूसणधरे **कंचणदाढ-दुरणुचर-चंडाभ-दुहणु-जंबव-वेगिंद-मंदरदेवादिणो** बहवे जिण-महिमं करेमाणे । चिंतेमि य—अहो! हु महाणुभावत्तणं जिणायदण-खेत्ताणं, जं एदे परोप्परं तिव्व-बद्ध-वेरा वि विज्जाधर-रायाणो एत्थ समागदा पच्चक्खं जिण-पाद-मूलं गदा इव चिर-विगद-मच्छरा होंति त्ति । वट्टइ य महब्भ-निनादादोज्ज-गंधव्व-गीद-वाइद-धुइ(?थुइ)-सय-सहस्स-गंभीरा महा-महिमा विज्जाधर-राईणं, छत्त-चामर-बालवीयणि-संचारेसु चलंति सव्वदो दिसामुहाइं, जयजया-सद्द-निवहेसु

य फुट्टइ व धरणि-तलं नभंतरालं, रसंति व कलकला-राव-निब्भराइं दिसा-मुहाइं, जायं च पक्खुभिद-महोदधि-सरिसं जुत्ता(?)-मंडलं ।

अह य देवकुल-द्दारं महया बल-पओगेसु वि किलिसंता ण सक्कंति खयरपइणो तं जिण-घरं विहाडेदुं । अहाहं ससुरेसु सुहीसु य खयरालेसु (?खयरलोएसु) वि तत्थ समागदेसु भणिओ हं —तात **वसुदेव** ! एदे सव्वे वि हु विमुहीभूदा विज्जाहर-राइणो न तरंति जिण-घरं विहाडेउं । तं महाणुभागो सि तुमं, उग्घाडेहि जिणायदणं, पेच्छदु ताव सकलो वि इमो विज्जाधर-लोगो उसप्पिणि-पढम-तित्थगर-मुहं पिवं सतिसदिव्व(?अतिसय-दिव्वं) पडिमा-मुहं इहइं । एए दु बाहिं महिंदद्धय-कय-प्पणामा संपट्ठिता इव लक्खिज्जंति खयराधिवा । ततो हं विहिणा ण्हाओ परम-सुरभि-धोत-पोत्तिजुगल-परिहिओ ससुराइसु अणुगम्ममाणो महदा धूव-कुसुम-मल्ल-बलि-गंधोवहारेसु तालाविद-पवर-धूव-सूसरादोज्ज-गीद-वाइद-रवेणं अल्लो(?अल्लीणो) जिणायदणं । बेंति य **वायुरहंगारक-माणसवेग-नीलकंठ-हेफग-मंदरदेवाइणो** सत्तूणो मे[६०] — अहो ! महिगोयरस्स धट्ठत्तणं जो सुरपदि-पदिन्नं लंघेदुमिच्छदि त्ति । तं च सोऊण **वायुवेगेण** भणितं—होदु अरे ! अलं वो एदेणं अच्चंत-दुज्जणत्तणेणं पलोट्टाजाहत्तणेण(?) । को भे सामिणा सह विरोधो ? किन्न दिट्ठं वो **सम्मतदेव**-संतिए खग्ग-खेडय-ग्गहणे सु(?ए)दस्स माहप्पं जओ एवं संलवह त्ति । तओ तेण एवं भणिया समाणा ते सासूयं किंचि हसिऊणं तुसिणिया ठिया ।

अह य मया उवि(?व)गंतूणं विणय-[६१]पणयुट्ठिएणं सुरभिणा पेहुण-कलावेणं पमज्जियं सिद्धायदण-दार-[६२]ढक्कणं, अब्भुक्खियं च रयद-भिंगार-सुह-णिसट्ठाए सुरभि-सलिल-धाराए, ताहे परम-सुरभि-गंध-मल्ल-झलंकियं काउं तओ कप्पूरागरु-[तु]रुक्क-गंध-धूवं पुणरवि य कणग-भिंगार-धारा-[६३]विराधोतं(?) कादुं तओ मे सुरभि-कुसुम-[६४]करंविदा(?)-विविध-भक्ख-पाण-पुन्नमल(?)-सुरभि-[६५]सासक-विभूसिदा निवेदिदा मे विइत्तावली, ताहे पुणरवि धारिय-धूवो कयंजलिपुडो पणत-सिरो कय-सिद्ध-नमोकारो [६६]इएण(?) सु(?स)वामि—जदि हं भव्वो[६७] भव्व-केसव-पिया वा सच्चं उत्तम-पुरिसो वा वि तदो [६८]देंतु(?विहाडेंतु) ममं सम्मदिट्ठिणो देव(?देवा) दारं ति।

एव य भणिय-मेत्ते सयमेव करकरस्स ओसरियं कवाडं । दिट्ठा य मे तत्थ सरस-मंदार-पारियातग-संताणय-दिव्व-सुरभि-सहयार-कुसुम-जुत्तिसु

कयच्चणाओ कणग-हाडय-अज्जुण-सुवण्ण-मणि-रयण-मोत्तियाभरण-भार-गंभीराओ गोसीस-चंदण-[६९]घुसिण-सुकद-चच्चिकाओ अव्वाद-मल्ल-धारिणीओ दिव्व-निओग-समुच्चरंत-सुरभि-धूव-घडियाकुलाओ विविध-पूया-भंडग-विगप्प-विणच्छि(?)-लच्छि-समुदय-समुज्जलाओ सव्व-कणगामईओ सक्खं सक्क-मइ-विनिम्मियाओ अणुत्तर-रूवाओ जिण-पडिमाओ।

ताहे [७०]तालाविद-संख-पडह-भेरि-झल्लरि-दुंदभि-गंभीर-तूर-सद्द-भरित-दस-दिसाभोगा, णमो जिणाणं ति तिव्व-पुणरत्त-मुक्क-वक्का पणदा य भावेण सह मया सव्व गुरुणो मे। महदीए विभूतीए मया ण्हाविदाओ जिण-पडिमाओ, गंध-मल्लेहिं य खयर-विम्हयकरेहिं पुईआओ मे चारिद-धूवेण, विधिणा वंदिदाणि मे संतेउर-गुरुजण-सहिएणं वेदियाइं, कमेण य अवसेसेसु वि विज्जाहर-राईसु महदा विभूसियं(?विभूदीए) जणिद-पवर-णट्टोवहार-चलमाण-चामर-तूर-गंभीर-संभंत-भन्निए [७१]सवणदर(?)-खयर-वधू-संसत्त-थुइ-सत-गुअंत(?)-तिगुण-पदाहिण-भमंत-सिरि-संकुला पदंसिदा महिमा, उवेंति य परमच्छेरय-कंखिदा विज्जाधरा विज्जाधरीओ य जिण-पडिमा-रयण-दंसूणूसुईओ, पसंसइ मं विज्जाधर-लोगो, अब्भसियंजलीओ(?), [७२]परं विम्हयं उवगदा य [७३]दगच्छयिकतिणो(?) मे।

एयम्मि देस-काले पवर-कोकणग-गब्भ-गोरी, वियसिय-[७४]कमल-विउल-नयणा अकमला इव कमल-निलया सिरी, तणु-सुहुम-[७५]निवसित-सिवय-संगदा, [७६]मदगच्छ(?)- किरण-सन्निभोवरिम-खोम-पविराइदा, तवणीय-रुइर-रयण-पज्जोविय-महग्घ-भूसण-धरी, अंगेगदेस-विपइन्नेण विगलिद-हार-तरल-किरण-जालेण वेगच्छिद-पयोधरा, उत्तम-पसत्थ-रूव-धारिणी सहीजण-संपरिवुडा धरिद-सिय-छत्त-चामरा सिद-सिवय-विमल-जोण्हा, सरायहंसेक्क-पुंडरीया इव धवल-फेण-निवहोत्थदा जण्हवी, आगदा तत्थ पवर-विज्जाधर-कन्नगा। चिंतियं च मे—अहो से रूव-संपदा ! किं णु खलु इमा विज्जाधर-जण-निसेविया गोरी, भगवती **लच्छी उव्वसी** वा **सई** वा सुविहिद-जण-[७७]निवेसि(?सेवि)या च्चखमा(?पच्चक्खा) सिद्धी वा जुवदि [७८]मुत्तिमई सुति हवेज्ज ? अहो से उत्तमा-रूव-सामिद्धी !

अह य मया तत्थ अदूर-ट्ठिओ सणियं पुच्छिओ **दमणो**—का एसा कन्नग ? त्ति। सो य मे कहेइ—देव ! एसा **गोरिपुर**-पत्थिवस्स

भाणुप्पभस्स रन्नो [७९]**आणमणीए** देवीए अत्तिया **गोरिमंतस्स** विज्जाधर-राइणो [८०]**पालग-भूदकाणं** च बलवग-खयर-कुमाराणं भगिणी गव्विद-वंसप्पसूदा गोरि-[८१]उवासिदंगजाण(?) गोरि-सिद्ध-वेज्जा(?विज्जा) **गोरिदत्ता** नाम । सा य ममं दंसण-लज्जादिभारक्कंतोणद-वयणा स-केस-भार-[८२]नमिदेक्ककमल व कमलिणी संभासमाणि(?) व्व अहंसुहिं(?) कुयवरेसु[८३], अहोमुही भविय जिणायदणासन्न-संताणग-पादव-समल्लीणा भणिया सहीसु—सुयणु ! अजुत्तं देवदाधिगमणे छत्त-चामर-धारिणि त्ति । तीए भणियं—अपुव्व-जण-दंसणेणं पम्महुट्ठा हं विणयं, तं अवणेह णं ति । तहा अवणीद-छत्त-बाल-व्वयणा(?वियणी) अल्लीणा जिण-घरं । तओ तत्थ जिण-पडिमच्चण-पणामोनद-गाद-लट्ठी गंध-मल्लाइं समारोवइउंती(?रोवयंती) मुत्तमिदवद-(?उन्नमिद-वदणा) घण-पीण-पयोधराकड्ढिद-तणुतरोदरी दर-पल्हत्थ-कंची-गुणेगदेसा गाढदरं मम हिदए पविट्ठा ।

अहाहं गुरु-वयणाणुन्नाओ सह गुरुसु भूआसणत्थाणं उवागओ । नवरं च तत्थ पुव्वदरागं महा-विभूदीए धरिद-सिद-छत्त-चामराडोवो उवागओ एक्को विज्जाधर-राया । तं च दट्ठूण पुच्छिओ मे **दमणो**—को एस खयर-राईणं ? तेण भणियं—देव ! एसो भाया तीए कन्नगाए, **वायुरहंगारगाणं** मित्तो, सत्तू य अम्हं तु । एदस्स य संतिओ एस **हरिकूड-विसयो** त्ति । सो य तं पदेसं उवगंतूणं गव्विद-मदी कओवयारो उवविट्ठो तम्मि भूदासणे ।

अह य आगासे वाया पादुब्भूया—एसो सुकदमज्जिय-फलोदओ साधु-विणय-गुण-जुत्तो **बल-केसव**-जुवल-पिया लग्गो भूयासणं दिव्वं । जं णेण कयं विउलं वेयावच्चं सुसाधु-वग्गस्स नीयावत्तीय पुरा, तं से समुवट्ठियं एयम्मि देस-काले मि(? ति) । हदा(?द)-तुरिद-गीद-वाइद-निनादुक्कुट्ठि-सीहनाय-गज्जिद-फोडिद-कलकलारावेण य मम पक्खिएसु विज्जाधरेसु पूरिदाइं दिसा-मुहाइं । तहा-निविट्ठो य अहं अभिसित्तो विभूदीए ससुर-विज्जाधरेहिं महया रायाभिसेएणं । चलमाण-चारु-चामर-खयर-पणच्चिय-पगीद-गंधव्व-जय-जया-घोस-महुर-वयण-सुइ-मह-सद्दाभिणंदिओ विज्जाधर-जण-जणिद-परमब्भुद-पीति-समुदयो सुकद-रायाभिसेय-लच्छीओ अहद-पवर-वत्थ-जुवल-परिहिओ गंथिम-पूरिम-वेढिम-संघाडिम-सुकद-मल्लालंकार-भूसणो मणहर-मणि-मउड-सेहरुक्कडो जय-सद्द-कयालोगो चलमाण-चारु-चामर-भरो सकल-समूसिय-सिदादपत्तो पग्गहिद-वायवीय-

निडाल-पट्टो । तओ भूदासणाओ समुट्ठेउं अमय-कद-जिण-[८५]मतिमाणो पडिलाभिय-सुविहिद-जा(?ज)णो ससुर-जण-सकल-निवेदिदट्ठ-बल-रज्ज-कोस-वाहण-[८६]परित्थरो(?) पडिमावसाणे खयरपदि-[ब]लाणुयादो संतेउरो पवर-विमाणारूढो पुरतो पतइवडयार(?)-खयर-[८७]पहकर-सहस्स-संवुओ गओ **तातपुरं** । तत्थ य पिया-जण-सहिओ अभिरमंतो गमेमि [८८]कइ वि दिणाइं। विसज्जिया य मे स-द्वाणाइं ससुर-खयराधिवा सवधुजणा पाएण आसमपदं रायरिसिणो **भरद्वायस्स** । केवलं तु[८९] **अच्छराए चंदलेहाए ससिप्पभाए** य सहिदो अभिरमामि ।

अन्नदा अहं सपत्तीए सकज्ज-विणिग्गदासु **अच्छरा-चंदलेहासु** वासघरे **ससिप्पभा**-सहिओ सइरालाव-कहासु अच्छामि । अह य आगदा तत्थ [९०]**अच्छरा**-संतिया **हंसी** णाम चेडी । सा मे विणय-पणया विण्णवेदि-सामि! [९१]अज्जदुहिदा **अच्छरा** पमदवणे माधवि-लया-मंडवक-गदा सद्दावेति भे—आगच्छह लहुं ति । तं च तीए [९२]सद्दावणाभिओगं किंकरोवमाणं सोऊणं परं विमुहत्तणमुवागओ हं । अचिरेण य पुणरवि बिदिया चेडिआ तहेव आगंतुं भणइ—देव ! इयं किर अज्जदुहिदा **अनिलयसा** सहीजण-परिवुडा इहं पत्ता, पुणरवि संपत्थिया, कत्थ वि किहकिहवि [९३]तिग्गह(?)लग्गाए आयरिया **अच्छराए** एवंचिरं (?एवच्चिरं) धरिता । तं संदिसह [९४]किमेसा [९५]अच्छहु(?दु) नवेति ?

तओ हं **अनिलयसा** आगय त्ति य सोउं तरित-तरितमुट्ठेऊणासणाओ अइ-संभमेण पादुया-गहण-खलिद-वियावि(?व)डो [९६]वियडिप्फडो य रभसा वि पल्हत्थ-गलिदुत्तरिओ वेगेणं पमदवणंतेण संपट्ठिओ हं । नवरि य **ससिप्पभाए** सलिलय-चतुर-परिहास-लीलाए धणिद-पयादो गहिओ हं उत्तरिज्जेगदेसे, भणइ य मे सोपहास-वयणा—अहो ते **अनिलयसा**ए उवरिं बहुमाणो, संस(?सेस)-जणे य ते अग्गहणदा ! [९७]यंसिदा(?) सा दूरत्था वि अभिगम्मइ, पास-ट्ठियाओ य अवधूयंति अम्हमीसाओ । दे ता[९८] साह[ह] [९९]ममं पि कन्नामयं(?) कारणं ति । मया भणियं—सुयणु ! सा मे जीविद-दाइदा पणय-कोव-संदूमिया[१००] य, तओ अवस्समणुणेयव्वा मया । एदेण कारणेणं इच्छामि लहुं विसज्जियं ति । **ससिप्पभाए** भणितं—जस्स नाम जणस्स चित्तं एवं रक्खसि, किहं नाम तस्स वि विणयं करेसि त्ति । एवं परिहसिऊण तीए विसज्जिओ हं, गदो य पमदवणं ।

[१००]अह य **अनिलयसा** ममं दूर एव एज्जंतं दट्ठूणं आह—किर चिरस्स विणिग्गओ त्ति । पगाढदरं य पणय-कोव-कुविया भिउडि-कुडिल-निडाला धरिज्जमाणी वि **अच्छराए** उम्माहे(?ए)उं तं पयाता, तं च पुणरवि वेगागतं वत्थ-पल्लव-लग्गं भणदि—वयंसि ! [१०१]मुयसु(?), न ते निब्बंधो करणिज्जो, दुज्जण-जण-जणिद-विकारमिणं ते भवणं, नाहं एत्थ विलंबिदुं सक्केमि । तं च वयणं सोऊणं अहं [१०२]तो(?तत्तो) नियत्तो, पेसिओ य मया तीए पासं तत्थ पुव्वागओ राया **अंसुमंतो** य । सो य इओ उवगम्म भणइ—अइरियातो(?) अहं वो अदिट्ठ-कोव-प्पसाओ(?) [१०३]पढम-पणइ-परम-दंसणूसुओ पाद-किंकरो पादाणं वो पणिवयामि । एवं भणंतो चेव पडिओ पाएसु, भणति य पणय-सिरो—अरुहध भाव-पणयस्स मम पढम पणयणा(?), पसीदसु सुहदं उवगंतुं। इय तेण [१०४]संपलत्ते मधुर-[१०५]वयण-सायण-सीयल-सलिलाभिसेएणं इव हुतवहो पसमिओ से रोस-हुदासणो । लद्ध-पणय-पसाद-पसरेण य तेण निउण-बहु-सागरत्तण(?)-कुसलेणं कदा ममाभिगमण-जोग्गा **अनिलयसा** ।

तओ तेण संदिट्ठो अल्लीणो से अहं सवयंसो पासं । तओ मया भणिया—पिए ! [१०६]चिर-संजिच्छे(?) [१०७]किमिदाणिं अहं पि [१०८]दंड-हतो कारामि । [१०९]किं तुमं तदा ममं सत्तु-वसगं काऊणं तुमं चेव रुद्दरा जादा। अहो [११०]से(?सि) चित्त-सभावा, विसालच्छि ! तओ मया एवं भणिए लज्जा-भरोक्कंत(?वणत) वयणा अहोमुही ठादूणं अंसुपातेसु परुइदा, भणइ [य]—पिययम ! सच्चं से(?सि) मया चंडालीए सत्तूणं महापसू विव समप्पिओ सि, गाढ-बंधण-पीलिओ य सि । अत्तणो जणस्स य पुन्नेसु किह किह वि जीविओ । धिरत्थु मम पाव-कम्माए । एवं भणंती पडिया मे पाएसु । ताहे मया असोगतरु-किसलय-कमल-कोमलंगुलीएसु करदलेसु घेत्तुं समुट्ठाविया, भुया-जुवलेणं य अवतासेउं निसन्नो हं [१११]लदा-घर-गदे कुसुम-[११२]न(?क)लिदे [?सयणीए] । तत्थ य मे अंक-निसन्ना परिसंतयंतेण पिया मे विओग-दुक्खं कार्णि(?) च मम बंधावण-दोस-[११३]कारणमंतरेणं । पेच्छामि य तत्थेव सहिजण-परिवुडं **पिंगलगंधार**-सुयं पणमंतिं मं **पभावतिं** कन्नगं। सा य मे सबहुमाणं आभट्ठा, पुच्छिदा य मे—सुयणु ! कओ इहमागया सि? तीए भणितं—देव ! एसा मे **अनिलयसा** बाल-सही । एतीए सह इहागदा हं तुह पाय-वंदणा-हेउं । मया भणियं-सुयणु ! सुस्सागतं ते । एव भणिते

लज्जिता इव अवक्कंता गता स-नगराभिमुही **पभावई** । तओ **सम्मतदेव**-रुदितोवहास(?)-पिति-[११५]सरण-वदेसंभंत(?)-कालं निग्गयंतओ र(?स)-वयंस-[११५]परिजण-पइरिक्कीभूए लदा-घरे चिर-काल-विरह-दुक्खहिएण(?) परमुक्कंठिआ नव-पाउस-कालुद्धत-पंका इव महा-गंगा सरदेण व मया अभिप्पसाइया सम्माणिदा य हिदयाभिलसितत्थेणं ।

एवं तत्थ तीए समागमे मुइद-हिदयो चउसु वि पियासु सहिओ जहासुहं [११६]रमितो हं । भणति य मं **अनिलयसा**-अज्जपुत्त ! अहं [११७]तदा अइ निग्घिण-कोव-परिगया तुब्भे सव्वावत्थासु अति-ईसालुणी परिच्चइदुं तओ णिग्गदा **मायंगदेव**-पुरओ बेंतिय(? चिंतियं) पच्छाणुताव-परिगदा[?ए]-किं मे एदं अभव्वं कयं ति । जस्स कदेण मया विउलं कुलं रज्जं तिजाउ (?विज्जाओ) जीवियं च तणमिव मन्नामि परिचत्तं सो चेव मया [११८]निरवेक्खाए नूणं समप्पिओ एक्कदो जीय-संदेहो, ता मे एतंउतओ(?) बिदियो वगडिल्ले(?) विमोइओ मे । अहो हु(?ह)ताहं [११९]दारुणा खदपूरिम(?)-कारिम-कारिया दुरायारी । पुणो य मे चिंतियं—महाणुभागो हु मम भत्ता, णत्थि से किंचि पावं । किंतु संपदं मया य नियय-सील-रक्खणं पइणो [१२०]पत्ती(?) किह जणेदव्व त्ति । तओ तेसिं [१२१]वियोग-दिवसं वेलं च लक्खेदुं चिंतिदं मे-सपत्तीजणो किर महिलाणं [१२२]कुसले वि अकुसलकारी चेव तासु य पसंसिया रक्खिदा वा सुरक्खिदा भवइ चिंतियं(?) । एयं चिंतेऊणं तओ गदा हं **भरद्दाय**-रिसिणो आसमपदं पुव्व-पत्तीण ते सगासं । तत्थ य तासु सह [१२३]अत्ताणं णायतो (?) रक्खमाणा वि(?ठि)या हं । तुह य तत्थागमण-काल-समए अदि-णिग्घिण-कम्म-कारिय त्ति य सयमेव विलइद-हिदया तओ पलाइऊणं गया **पिंगलगंधार**-सुदाए बाल-सहीए य **पभावतीए** सगासं । सा वि य तुह पसादेण सिद्ध-विज्जा तुह चेव गुरूसु भाव(?) णिसिद्धा, तं पि कज्जं जाणियं मे तओ एसा वि सवत्ति त्ति कादुं तीए सगासं ठिया हं । सोऊण य त(?ते) खग्ग-खेडय-रयण-लंभं पूयं च नाग-विहियं परम-तुट्ठा दंसणूसुई, चिंतेमि— [१२४]धन्ना मे(?ते) पूय(?पिय)-मुह-कमलं च पेच्छंति[१२५] । **हरिकूड**-जत्ताए जिणायदणुग्घाडणं भूदासण-वाहणं च रायाभिसेयं च ते [१२६]अंतद्धिया दट्ठुं चिंतेमि य—धिरत्थु मे जा हं सत्तु-जण-हिदय-होडणकराइं सुहि-जण-मण-णयण-परम-पीति-[१२७]विभवकराइं पियदमस्स लोगच्छेरयाइं [१२८]महिमाइं सयं कम्म-दोस-[१२९]वसिया(?वसेण)

लज्जंती पच्चक्खं पायडा न पेच्छमि । तओ पडिगदा **पभावति**-सहिदा हं **मातंगपुरं** । तत्थ वि चिंतापरा गमेमि कइवि दिणाइं ।

अन्नदा य मे भणिता **पभावती**—वयंसि ! उक्कंठिया हं, [१३०]नीणसि मे पिययम[१३१]-सगासं ति । तीए भणितं—वयंसि ! [१३२]अहो ! वज्जमया सि जा तस्स पुरिसच्छेरयभूदस्स णिधिणो वियोगं एवं चिरं विसहिदा सि । तं अहो य इच्छामि अहमवि भत्तुणो ते दंसणूसुई अवधुणिऊण पेम्म-सुह-पेरियं माणं उट्ठेहि, लहुं वच्चामो त्ति । तओ तीए सहिया उप्पदिदुं इहागदा हं **अच्छराए** सगासं । तीय दोसु वारेसु संदिट्ठो वि जहा णागओ सि पमदवणं तदा मम पुणो वि दुक्खं जायं । अतो परं सेसम्मि गहिदत्थो जाव इमो वेलो(?) त्ति **ललिदवेगाए** तुब्भे उवगय त्ति, सा वि मे महती धिदी जादा, बीभिदं च मया निच्च-कालं रन्नो **वायुरहस्स**, मणो(?मण्णे) मम कज्जे गाढदरं बद्ध-वेरो छलेण पहरेज्ज वा । अज्ज मे तुह समागमे निव्वुदं हिययं ति ।

तओ मया भणितं—सुयणु ! कमल-पलास-सरि[स]च्छ ! सुस्सागतं ते । किंतु भणामि ते, **वायुरहो** मे पहाण-सत्तू, नयाहं तस्स तुहाणुवत्तीए किंचि वि मंगुलं करेमि । तं भणह, किमेत्थ जुग्गं ति । तीए भणियं—अज्जपुत्त! सो भाया, तं च मे पिओ । किमेत्थ भणामि ? तं सव्वहा जहा ते स[?त्तं] तत्थ ण परिहायइ तहा करणीयं ति । एवं तीए गहिद-हिदयो जहासुहं पविहरामि ।

तओ गदो **अनिलयसा**-पूइओ सपुरं **अंसुमंतो** । अह गदेसु केसु-इ दियसेसु मम अवियाणदो सबलेणं बलवता **रुप्पणाहपुराधिवेणं पेदयाणेण** विज्जाधर-राइणा, मया किर तेण पयुत्तो **वायुवेगो**परिं **वेदालो** पडिहओ त्ति तओ बद्ध-वेरेणं अब्भाहओ मम पुरुज्जाण-विणिग्गओ **अंसुमंतो** य तेण विज्जा-बलवएणं छायोक्कामिणीए विज्जाए अक्कमिऊण माराविओ । मम पक्खिएसु य **कामपुर**-विज्जाधरेसु अहीण-कालं घेत्तूणं मम सगासं उवणीओ। तं च विगय-जीवं निच्चेट्ठं दट्ठूण 'हाहा हदोहमि'ति भणंतो पडितो हं तस्सोवरिं विगत-चेतो कहं चि सकप्पूर-सीतल-जल-कण-मित्थंतुक्खेचय(?)वाद-वीयितो परियणेण समासासिओ हं । ममं य तदवत्थं दट्ठूणं अद्दण्णं सव्वं वि रायकुलं । एयम्मि देस-काले पत्ता तत्थ विदिद-कारणा देवी **हिरन्नवती** । तं चाहं जणणिं पिव दट्ठूणं परम-दुक्खितो भणामि-देवि ! परित्तायहि, मुसिओ हं अकत-पुन्नो सुभाएसामिसु(?)-मित्ताओ मोइदो कयंतेण एएण मदेण,

कुलघरंतेउर-रज्जाइं विरोप्पा(?) एत्थ ट्ठियाइं, तं जइ एस नत्थि तओ अहमवि नत्थि, सह एदेणं जम-मुहमुवागदं परित्तायसु मे त्ति ।

एवं कलुणं बहुं च विलवंतो तीए भणिओ हं—पुत्त ! किमिदाणिं सक्का कादुं ? अलं विसादेणं । साधारेहि अत्ताणं ति । मया भणियं—देवि! अलं विसादेण(?) **अंसुमंत**-विरहिदेणं रज्जेणं जीविएणं वा । एसो हं सह एदेण धूमद्धयं पविसामि । तओ तीए ममाणुकंपाए भणितं—पुत्त ! सुणह कारणं, एस **अंसुमंतो** अकाले उक्कामणीए विज्जाए मारिओ ण सत्थ-घादेणं । तं मारणी-विज्जा-वि हू(?हु) णं खयराणं हवइ, न दु मद-संजीवणी कस्स-इ पउरा दीसइ । ममं पुण मद-संजीवणी अत्थि । सा पुण मया **पेदजाण**स्सेव पिउणो सगासे गहिदा साधिदा य । तेण भणियं—'गच्छ, सिद्धा ते विज्जा एसा । किंतु जदा सि मए मम सुदेण ग मारियं सत्तुं अब्भअणामएण(?) जीवावेहिसि तदा मद-संजीवणीं पडुच्च भट्ठ-विज्जा होहिसि ।' तं केवलं एस दोसो, इतरहा सुणेज्जइ छायोक्कामिणि-विज्जा-मारियस्स उरग-विसय-पमुहस्स जहा अहोरत्तं स-देहे जीवियं वट्टइ जदि नत्थिज्जइ(?) वा तओ सक्कदि संजीवणीए जीवावइदुं । तं एस परमत्थो, जीवावेमि तं वयंसं, हं पुण अज्जेव भट्ठ-संजीवणी होहामि ।

तओ मया परम-दुक्खिएणं कयंजलि-पुडेणं भणिया देवी—देवि ! जइ तुह विज्जा-भंसो न होइ जहा य **अंसुमंतो** जीवइ तह णं करेहि त्ति। तीए भणितं—वच्छ ! नत्थि कोइ एरिसो उवाओ त्ति । मया भणियं—देवि! अत्थि उवाओ । तं विज्जं ताव ममं संपयच्छह जाइतं, जा हं सयमेव **अंसुमंतं** जीवावेमि त्ति । तओ तुब्भं पडिदाहामि त्ति । तीए तुट्ठाए तह त्ति पडिवन्नं इमं—वच्छ ! लद्धो हु एस उवाओ त्ति । एवं तीए दिन्ना मम जाइदा मद-संजीवणी विज्जा । तीए य मया परिजविऊण उदग-चुलुदं अब्भुक्खितो **अंसुमंतो** । ताहे सो सुह-प्पसुत्तो इव निद्द-क्खए समुट्ठिओ । आणंदिओ य अहं सवयंसो तं च सपरियणं खयर-रायकुलं । तस्सुट्ठाणे कदत्थमिव अप्पाणं मन्नामि ।

तओ मे पडिणिसिट्ठा देवीए संजीवणी विज्जा । ताहे मया वि छट्ठ-तार-जत्ते(?) मियंके दंडयत्तं(?) दाऊणमागारेऊणं संजुगे मारिओ **पेदयाणो** राया, उपविदं च से मया **रूप्पणाभं** पुरवरं तं च विउलं महा-रज्जं सबल-वाहणं संतेउरं मया पंचण्ह **भागेरहिदत्ता**दीणं भाईणं णिहद-कडयं काउं । दिन्नं

मे **पेदवाहण**-रज्ज-परिसंठिएसु राय-सचिवेसु पंच-कद-जोग-कन्नगा-संबंधीसु, तेसु पंचसु वि । तओ पडिगओ हं **तातपुरं** चेव । **देवरिसभेण** य अहं महदा अग्घेण पडिच्छिओ । भणति य—देव ! निहदा दे मम सत्तुणो **हेप्फयस्स** कुल-राइणो त्ति । अवि य

णिहदे **तिसिहर-सिहरे** तह य मया **सिहर-पेतयाणेसु** ।
को अन्नो तुह समरे ठाहिति जइ होइ इंदो वि ॥

तं एस परमत्थो एदेसु पुरंद[र]-सम-विक्कमेसु अमिद-सुविउल-वचसु(?) खयराहिव-संकुल-पच्चएसु महिदल-गच्छंतेसु को अन्नो खयराधिवो समत्थो तुह संपुहगोवादुं(?) । मया भणिओ **देवरिसभो**—किं एसो वि **तिसिहर**-वंसस्सेव **पेदयाणो** ? त्ति । तेण भणितं—एसो वि **तिसिहर** वेणान्नो(?) चेव तम्मि य वयंस(?) से संपदं हेट्ठओपुरिस(?) नामाणं (? नामेणं) **सेसो** त्ति । मया भणियं—अचिरेणं सो वि णीसेसो भविस्सति त्ति। तओ परम-मुइदो अभिरमामि ।

अन्नदा य आगओ तत्थ सह सत्थेणं रायरिसी **भरद्दाओ** । सो य मया **देवरिसभेण** य अभिवादिओ । तओ सो **देवरिसभेण** सह किंपि समवायं [करिऊण] ममं भणइ—आगच्छ, वच्चामो दोहि णं समुद्दवेला-लग्गं महिंद-सेलं, तत्थ अन्ने एगागिणे(?णा) विविध-णिदबद्धकत्थेहिं(?) होदूणं सोहेव(?साहय) सव्व-सत्तु-दुद्धरिसं महाणुभावनाह(?हि)ट्ठियं **महगोरिं** विज्जं । मया परम-तुट्ठेण तह त्ति पडिवन्नं । तओ हं तत्थ त्थाव(?ठवे)दूण परम-दुम्मणाओ ताओ चदुरो वि भारियाओ तं उ(?) मम **वसुदेव** दारिक्खकस्स(?) जंतो दद्धरासी-गदे दिणयरे तिस्सजत्ते (?विस्सजुत्ते) मियंके उच्च-ठाण-गदेसु य सेसेसु गहेसु, सुंदर-तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्ते सह-ससुरेसु नहंगणं समुप्पइओ अवलोएंतो य **दाहिणड्ढ-भरहं** कमेण य पत्तो हं महिंद-सेलं । तत्थ य मे सच्चेणं उवइट्ठं गोरि-पुरच्चरणं, तं जहा कट्ठ-मोणं च—'तत्थ ताव तुमं कट्ठ-मोणेणं लंबिद-भुओ किंचि वि अणभासमाणो उज्झग-मणेक्क-निच्छिद-मदी मित्तारि-निव्विसेसो वातातव-वरिस-सीउण्ह-खुप्पिवास-सहो सव्वोवसग्ग-सहो य कट्ठ-भूदेण अप्पाणेणं निराहारो सरूविगदो(?) एगइ(?दि)साभिमुहो अकडतडक्खं(?) वि महिधरेसु वि उज्जमे व परक्कमंतो अणिमिस-नयणो दिण-राईसु ताव वट्टाहि [?हि]दएणं विज्जं जवंतो जाव तो तिन्नि-वारा आगासे वा[?या] सुदा जहा,- 'पुत्त !

पारेह पुरच्चरणं, सिद्धा ते अहं सपरिवारा **गोरि** त्ति ।'—एवं भणिए सिद्धं वियाणेज्ज(?) । तेण स कालेणं अहमवि तत्थ [१३३]यच्छीए(?) ।

एवं मे सव्वं पि परिकहेदुं सिरोदय-पुण(?ण्ण)-रासि-विलग्गे गुरु-लग्गे य उवइट्ठ-पुरच्चरणा जहागयं पडिगया ते ।

अहमवि विविध-खाणु-कंटग-कुस-पूइ-ल(?त)च्छिद-चलणो दुक्खेण वसुमइं विगाहामि । एवं सरत्ति(?) हिदयं परिपदामि(?) । एगत्थ य पदेसे सव्वमाणो(?) गिरि-कडग-दुत्तरंतर-संभूदेणं विपुल-दढ-खंधेण चंदण-वर-पादवेण रुद्धो हं । तओ हं तत्थ दुत्तरिउमाराह(?) पडिहय-गदी किलीस्संतो अच्छामो(?मि) । अह य तत्थ नाइ-दूरे कुसुमित-लदा-विदाण-विवर-गदाण मम चरिद-संकहा-समक्खित्त-हिदयाणं कन्नगाणं सद्दं सुणामि । चिंतियं च मे—काओ णु खलु एयाओ हवेज्ज ? किह वा इमं अमाणुस-सेवियं देसं आगदाओ ? कदो वा एयाओ ममं जाणंति जओ मे णाम-गहणं चरिद-कित्तणं च करेंति ? ममं उद्दिस्स मयण-वावार-निमित्तोदाहरण-वीसंभ-कहा-विलग्ग-वयण-पहाओ काओ णु एदाओ ? । दिट्ठाओ य मे वन-विवर-गदाओ महदा रूव-गुणोववेयाओ पंच-कन्नगाओ । मया **माणसवेग-बद्धेणं** संभंतेण निज्जंतेणं कंदुय-लीला-विलग्गाओ **वेदड्ढ**-सिहर-भूसणे य वर-कार(?ण)णे दिट्ठाओ ताओ **पभंजण[वेगा**-प]मुहाओ पंचसरासंगभूयाओ कन्नगाओ । ताओ य नव-पाउस-काल-सलिल-पुन्नाओ विव पुक्खरणीओ जहा फुट्टंति जोव्वणेणं। नवरं च **पभंजणवेगाए** ललिद-लदाघर-विवरंतरेण दिट्ठो हं अदूर-देस-ट्ठियाए चंदण-दुम-खंध-निरुद्ध-मग्गो किलीसमाणो । दट्ठूण सा सविहि(?म्हि)दा ससं(?ममं) जहसिजणे(?सहीजणेसु) सावलोगा इमं भणइ—अहो ! इमं अच्छेरयं वत्तं । हला ! पेच्छह जहा अचिंतिदमविन्नादो एस वा सो हियय-वल्लभो जणो इमं देसमागओ त्ति । एवं भणंती ममं तासिं दंसिऊणं ताहे सा सुरभि-पउम-रय-मयरंद-मुच्छिता मधुकरि व्व गुमुगुमेंती किंनर-विरुय-नीहारिणा सरेण इमं गीदयं गायइ । जहा,

जस्स कहा-रत्ताओ गलियं पि दिणं न चेव जाणामो ।
पावंय(?पाविदो) सो अपावो कित्तिद-णामो समरेरत्तो(?समरंतो) ॥

विवरं जंपइ लोगो अगुणजणे(?) चिंतियम्मि सुद-लंभो ।
एस पुण पुरिस-सीहो सुरो व्व संकित्तणे पत्तो ॥

तओ सा एयं गीदयं गाइदूणं ससहीजणा कुवलय-दलय-सासाला(?) सत्थामहिं(?सच्छेहिं) लोयणेहिं अकिरंती(?) विव ममं अल्लीणा । तओ सव्वासु तासु कदो मम पणामो । अह य ताओ विहित-विज्जाधर-नियलावयाराओ(?) ममं तहागयं दट्ठूणं परोप्परं संलवंति—अवस्सं ताव अज्जपुत्तेणं **गोरिव्वदी**एणं होयव्वं जओ एस कट्ठमोणोवगदो पादव-निरुद्ध-गति-पहो इव(?ध)मच्छति त्ति । **गोरिव्वदियं** च सोऊण दट्ठूण वा विज्जाहर-कन्नगाओ अवस्सं उवसप्पिऊणं करेंति वर-जुवइ-वेसालंकियं, तेण य तहा-कएणं निरुवसग्गं से होहिति, लहुं च से विज्जा सिज्झति । न य से तहारूवस्स सत्तुणो पहरंति । तं जइ ताव अन्नस्स वि अणज्झमाणस्स खयर-कन्नयाओ विलया-वेसं विधेंति, वयं पुण कीस ण वि इमस्स आसमतकम्मितस्स(?) महा-मणोरहत्थहस्स(?) जुवइ-वेसं विधेमो ? त्ति । एवं कद-सरागाओ ताओ ममं सव्वदो परिचारेऊण आढत्ता मे जुवइ-वेसं करेदुं।

तओ पढमं चिय घट्टिताए किमिरागसो(?) पट्टसाडियाए मियमद-वासियाए आचरिपल्लयं(?) नियंसियं, पिणद्धो य मे विविध-मणि-कणग-रयण-मुत्ताजालय-पत्थिओ(?) पह(?)-कंचुओ उरसे(?), कदा य मे तासु पीण-थण-निरंतर(?.....) मया मणहरण(?), बद्धो य वामे वंकिद-सीसो सुरभि-कुसुम-गब्भो सीहकेसरो नाम आमेडओ रयण-जाल-सविकप्पो । कयानि य मे कन्नेसु गोखीर-धारा-धवलाइं संखप्फालिय-विमल-पत्ताइं । एवं चलय-मेहलय-कलाव-करण-रसणा कणग-खिंखिणि-मणि-हेम-जाल-परिहसा(?) मणि-मुत्तक-पवर-गेवेज्झकावलि दीणारमालिया तिलय-तिसरय-हारद्धहार-ससिलेह-वालगादीएणं नियथालंकारेणं जहक्कमं मालिओ हं । तह य विविध-सुरभि-वन्नग-वियप्प-वासित-सुरभि-समालद्ध-देहो सविगप्प-तु(?त)-च्छिद-वयणो सुरभि-भज्झ(?)-लंजण(?)-वलय-पत्तलेहियावंग-विरय-मुद्ध-वेल्लग-मुहो(?) कदो हं । भणदि य- अहो अज्जपुत्तस्स सव्व-जण-णयण-कंतं सव्वओभद्दक-रूवं जह कीरइ तह सुहावेइ । अवि य,

अणुकूलमणणुकूलं वेसग्गहणं तु अज्जपुत्तस्स ।
सव्व-जण-णयण-कंतं जह कीरइ तह सुहावेइ ॥

नवरं च **पभंजणवेगा**ए निय-वयणंतराओ विविध-जत्ति(?जुत्ति)-वासियं अलयत्तयं गहेदुं पलिलालंभे(?) णिययाणण-रसेणं मद्दिदं । तेण य

रत्तासोग-किसलय-जुदी स-कर-तरलंगुलीसु अंगुट्ठएण दु समावीलियं ममाधरं रयति(?रइतं) । तासिं च मज्झे एक्का **चंदावली** नाम विज्जाधर-राय-कन्नगा। सा य **पभंजणवेगं** ममाधर-रयणा-यरग्गलं(?) सस्सुहिं वच्छ[त्थ]ल-विसत्त-(?)थण-हारं दट्ठूणं सहासा सहिजणावबोधं करेमाणी इमं गीययं गायइ । तं जहा,

सरिस-कुल-जोव्वणो वि हु,
म(?अ)दिसइदो सुयणु ! सहि-जणो तुमए ।
जोंत(?)-पयोग-पडियं पियस्स सुरयामतं पीतं ॥

दोलेऊण य सीसं सव्वासिं कय-रक्खणाण अम्हाणं ।
एक्का पियस्स वच्छं थणेसु घण वंसबं(?) घुणसि ॥

सव्वासिं पि निविट्ठं विणय कालेण भूसणं दइओ ।
जं पुण मदियगं [१३४]वरदत्तं नवरि णिघोट्टियं तुमए ॥

एवं तीए गीद [?.....] वर-कमल-सुरभि-काणणाओ अन्नोन्न-हत्थ-तल-पदाणु-अइसिद्धं(?) पहसियाओ । तओ ताओ चिरं अवितण्हाओ ममं पज्जुवासिऊणं पच्छा तं दुम-वरं मम-पह-निरुद्धकं उम्मूलेऊणं विज्जा-माहप्पेणं एगदो पक्खिवंति, ममं च पहे अवतारेउं हिदय-इच्छियं दिसं गताओ। अहमवि न तासु अन्नेसु वा उवसग्गेसु पदणु वि कंपितो । एग-दिसाभिमुहस्स य मे वत्तमाणस्स समदिच्छियं मे सत्त-रत्तं ।

अह य सहसा आगासे आगारियं-पुत्त ! सिद्धा ते अहं **महागोरी**, णवरं पुण एत्तियं पदं एवं तिन्नि वारे भाणीय मुयध कट्ठ-मोणं ति । तं च मे देवदा-वयणं इट्ठमणिट्ठं च जादं मे, चिंतिदं च मे-णूणं सनियाणोवगदा मे भोगा उवणमंति, न पुण हं विज्जा-भायणे(?णो) त्ति । ताव य तत्थ उवट्ठिदो विदिद-कारणो **सच्च**-तावसो । तेण वि भणिओ हं—पुत्त ! पारेह कट्ठमोणं। सिद्धा ते **महागोरी** भगवती, [१३५]न परिवारा(?) न पुण सासदा । तओ मया मुक्क-कट्ठेणं कद-प्पणामेण भणितं—किह मे असासती **महागोरी** संवुत्ता ? तेण भणितं—दुन्निमित्त-दोसेणं । जो नाम पढम-दिवसे चेव पादवेणं निप्फिडियारं(?) पहो रुद्धो, जं च सि सरागासु अवसो कण्णगासु[१३६] व्व भक्खेण(?थूभकेण) विट्टालितो त्ति । किं-पुण भणामि ते, अलं विसादेणं । जदा ते कदाइ पडिपदीहिंति(?) तदा साधीणाओ अयत्ते य पुणो

[१३७]साहेहिसि। किंतु सुणह गोरिव्वदयस्स समत्ति-काले ससिगोराए वरंगणाए ससि-गोराए वा असइतओ(?) अन्नाए विहाण-जुवदीए(?) परिग्गहिता सो(?) मम [१३८]दाणी ओसही सागरवेला-गएणं एगागिणा एगिच्छि(?) विदिन्ना विज्जा जविदा जविदा पढमं पारेदव्व, [१३९]सा य **मलयसागरंत**राले अत्थि, ण दु अत्थि अन्नदो सुलभा । तत्थ य ओसहि-विहाण-विज्जा-विधि-वियाणिया य **ससिप्पभा**, सा य रायरिसिणो **देवरिसभेण** य रण्णा एगागिणी वंदसमयं(?) विसज्जिता । सा य तत्थ संपयं सागर-वेलाए य रयद-भायणत्थं तं ओसहिं जवंती रक्खंती य ते अच्छइ । तत्थ गंतूणं तं ओसहिं सट्ठाण-गयं **ससिप्पभ**-दिन्नं च रक्खिऊणं तओ अणाहारं पारेज्जासि । पारेऊण य इच्छाए **तातपुरं** वच्चेज्जासि त्ति ।

एवं वोत्तूणं परिगओ **सच्चो** । ताहे अहमवि विज्जाविहिद-खग्ग-खेडय-हत्थो नहंगणं समुप्पइओ, पत्तो य तं विविध-सोभा-समुदय-समाउलं **मलय**-महिधरं ।

अवि य,

तं महोदधि-महा-सलिल-विमल-कल्लोल-लोल-वीथी-तरंग-वित्थलिद-कुच्छि-देसं विसम-महा-साणु-सिलातल-सहस्स-संघात-सोभि[त]-उसित-रम्म-सिहरं गहिर-गिरि-पवर-परिसर-दर-विवर-कुहर-घर-भासरोदर-निकुंज-गंभीर-पादव-निरुद्ध-मुद्ध-रसमाण-सजलधर-मधुर-फुट्टंत-सद्द-संघट्टं वर-विविध-सुरभि-चंदण-नंदण-संड-सरिस-मंडिद-दिसं विसधर-विस-विसम-जालावलित्त-मलयदुमालग्गं मुक्क-सुंकार-पवर-सीकरधरं पि विविध-विहय-धण(?)-संघाद-विरुद-णादिद-सिहर-भासर-निगुर(?रु)जं, हिंताल-ताल-पिय-साल-लवली-लवंग-पन्नग-गंगवर(?)-मरिय(?)-मंजरी-निवह-पवण-चालिद-ललिद-झणं(?झुणि)-मणोहर-णादिद-दिसायं विविध-पन्नग-सिद्ध-गधव(?गंधव्व)-सुरविलासिणी-विज्जाधर-मिहुण-मोहणालग्ग-कुसुम-भर-भरिद-पादव-घरोदरं उम्मत्त-कोकिल-मयूर-कल-प्पलत्त-वर-भमर-पवर-पहक्क(?ट्ठ)-मधुकर-महुर-मधुर-वर-गीद-रवाणुबद्धं सित-वसण-त्थिमिद-सुविहिद-चारण-मुणि-समण-संसित-सुरभि-कुसुमित-लया-विदाप(?ण)-विराइदंतघरसोभं मत्त-गय-जूह-पसरिय-पसुइद-वियरंत-सुरभि-दाण-जल-सित्त-चित्त-वर-भित्ति-सिलातलं गहिर-गुहा-मुहोज्झर-पलंब-पसरिद-जल-वेग-तुरिद-सरिदा-णिवाद-निम्मूल-पायवो(?वं) मुद्ध-गय-जूह-

मेह-परिलुलिद-गज्जिदुद्धिम(?)-गुलुगुलासद्द-भरिय-वर-सिहर-तलं रुरु-चमर-मिय-महिस-वराह-सीह-सद्दूल-वंद-संदाणिद-दिसाभोगं वियड-तडयडिय-रयणुक्कड-कडग-भिगुडि-गय-रुदिय-फुड-कड-तडं मंड(?तड)-तडाराव-फुडिद-मयगल-पहद-विडंतमदिद्धरद्धंत(?)-रसिर-गंभीर-निग्घोस-दमिल-वधु-कन्न-लोयणाकन्न-सुभय(?)वासं तल-निहडक्खाय-सिक्खणिं(?) तदेव संपणयं वण-चवल-चालिद-रसंत-पा(द)व-लता-संकुल-वलंत-भासरं गंभीर-समुद्द-मुक्क-हुंकार-क्खोभिय-निगुंजं सिहरत्थ-विदुर(?)-महिधर-वेरुलिय-मणि-वियत्त-[क]कुद-परिमंडिद-सदावि(?) सुरभिचंदण-मयलं(?) (?लयं)रि(?)लच्छीए ।

अह य तत्थ संलीणो हं चंदण-मलय-लग्गं सागर-सुवेतं(?लं) । दिट्ठा य मे तत्थ सागर-सलिलावगाढे पहुदे(?) ओसहीं रक्खमाणी **ससिप्पभा** । अहाहं परियत्तिय-वेउव्विअ-वेसधारी **वायुरह**-रूवेणं अल्लीणो तीए सगासं । सा य मे उवसप्पंतं सलज्जा वि सरोसद्धच्छि-कडच्छएणं वारयदि वस(?), ताहे मया आसरिऊणं भणिया—सुयणु ! अहमेताए ओसहीए कदेण इहागओ हं, तं अवसर दाणिं तुमं इतो जा हं एतं गेण्हामि त्ति । सा मे अपच्चभिजाणंती भणदि-ओ ! निलज्जो सि । अवेहि एत्तो । नत्थि ते एसा। अन्नं ओसधिं [१४०]गेण्हाहि । एदं तं खु अज्ज सिद्धविज्जो पिओ मे [१४१]पाहिति। [मया] भणिया—साह को ते पिओ त्ति । तीए भणितं— सव्व-खयर-नर-गणीसरो **हरिवंस**-कुल-तिलओ वसुमदि-पदी **वसुदेवो** त्ति । मया भणिया— सुयणु ! अलमेताए वितह-मणोरह-फलाए बुद्धीए । सो ते भत्ता असिद्ध-विज्जो चेव रिवूसु विणासिओ । तओ चेव अहं इहं सगउयाइं(?)[१४२], तस्स नत्थि गमणागमणं, तं एहि सुयणु ! मया सह, विज्जाधर-लोग-दुल्लभं जोव्वण-सिरिं राय-सिरिं च अणुभवाहि । अलं च ते मण्णुणा । गओ ते परलोगं सो भत्ता । तीए य भिउडि-कुडिलाबद्ध-वयणाए भणितं—पडिहओ [१४३]थुक्कतो(?) य सि तुमं एवं भणंतो अलियवादी । न हु मम भत्तुणो किंचि अकुसलं ति, महाणुभागो हि सो । ण सो कस्स-इ गम्मो, न मरए सो । अन्नं च जदा मे भत्तुणो किंचि अकुसलं होहिति तदा तं अ सुणेंतीए ममं वि बहु हिदयं न [१४४]वसं(?) पायद-पुरिसातो तुमातो अन्नाओ भयं भवइ ।

एवं तीए भणंतीए साभाविय-रूव-ट्ठिएणं मया दंसिओ से अप्पा ।

तओ सहरिस-वयणा पडिया मे पादेसु । अवतासिदा य मे परम-तुट्ठेणं । तओ तीए कय-मंगलोवयाराए परिजविऊणं विज्जावितो हं विधिणा तं ओसधिं तं च वी(?पी)यस्स सममदपुत्रो इव अंतप्पा पडिभायइ, तं समयं ताहे पुणो तीए उवणीदं परमन्नं पूयंपियणं(?) च पारिदं मे सव्विंदिय-पसाद-जणणं पवित्तं च । तओ हं तीए सहिओ रम्मासु चंदण-दुमाउलासु विहग-विरुद-मधुर-सद्दाउलासु **मलयगिरि**-कंदरासु कुसुमित-लदा-घरंतरेसु य अभिरमिऊणं पियाए कंठावलग्गाए सह गगण-तल-गओ, सहचरि-सहिओ इव चक्कवाको सर-संकमण-सद्धालू, पेच्छंतो विविध-तरु-वर-णगर-सरिद-सागर-कोट्ठ-मंडियं वसुधउलं गगण-तल-गओ, तत्थ तओ कमेण **वेदड्ढ**-महिधरं **तातपुरं** च । तत्थ य उवदाणि मो, पयद-खयर-संपादितऽग्घ-पूओ य अल्लीणो हं **देवरिसभं** । तओ तेणं संतेउरेण वयंसेहि य पिय-वयण-जय-सद्दाभिणंदिओ पविट्ठो हं अंतेउरं । तत्थ य परम-पीति-संपउत्तो गमेमि कइ चि दिणाइं ।

अन्नदा य तत्थागओ **भरद्दाय**-रिसी । सो य मे **देवरिस**भ-सहिओ किंपि [...?...] सामत्थेणं । ताहे सव्व-वयंस-समक्खं चेव ममं भणइ—तात **वसुदेव** ! सुणह जहा तम्हि जि(?जी)ए का णु धिदी तम्हि मदे अधिदी वि का होदु जो उवकारऽवकारे असमत्थो मित्त-सत्तूणं ? तं अतीव सत्तूसु ते अतियारो वट्टइ, खवलेंति(?) अभिक्खणं ते तुह पक्ख-पडिवन्नं खयर-गणं ते पुण इमे दस्सुणो **माणसवेगंगारग-हेप्फग-नीलकंठ-मातंगदेव-पवणजव-वायुरह-ससिकंता**दयो संपदं सव्वे वि एगदो [१४५]कासगहंथायं(?) काऊणं गोरिकूडे समागदा किंपि कय-समवाया तुब्भं किर उवरिं वाहेदु-कामा। तं कीरदु एत्थ अणागदं चेव उत्तरं । अणागयस्स पाणियस्स पालि-बंधं पसंसंति पंडिदा, आगदे पुण अकयसेतुणा दुक्खं निवारणं कीरइ । सव्वत्थ वि पसिद्धं लोगे अग्गप्पहारी जयइ । अहवा सुणह परमत्थं, इह खलु जय-कंखिणा आदित [१४६]एव सोसदंडा(?)अणुपुव्वसो दट्ठव्वा । ततो पर-छिद्दाणि अप्प-छिद्दाणि य नायव्वाइं, तेसिं च अणुलोम-गहणं उच्छाह-वड्ढीय दंसणीया पवर-बल-पहाण-जोधा य भेदणीया अवसप्पणं संसप्पणा [१४७]ममद्दणा(?) व जात जंत रस विप्पयोग [१४८]जोग जोगदा हाणावाय फल[१४९]हरिसणाणि(?) य [१५०]कीरंति । सव्वोवाएसु य निराकिदेसु सामोवप्पयाण-भेदेसु ततो दंडं समारभते । अवि य,

पर-गुज्झ नियग-गुज्झो देव्व-रक्खाहि[१५१] पयइ-गंभीरो ।
पुहवी-[१५२]जण-सामन्नो एवं गुणिओ जणं हरइ ॥१

न य पर-मम्म-संघट्टे नेव [१५३]निवेसं सकित्तणं कुज्जा ।
किं-पुण मुणेज्ज मम्मं[१५४] तं काले [१५५]आउहं होइ ॥२

होउं निग्घिण-हिदओ [१५६]वा उपदुं(?) व समर संकुणह ।
[१५७]नमिउ अरिस्स पाए[१५८] पच्छा सासं[१५९] निमंताहि[१६०] ॥३

खंधेण व(?च) वह अरिं जाव दु कालस्स पज्जओ होइ ।
अह वा आगयम्मि काले उवले [१६१]वघरो (?) पमोत्तव्वो ॥४

घेत्तुं मा मुयह रिवुं, बहुसो कलुणं पियं च जंपंतं ।
कलुण-पलावो वि सिही सविसं तु भुयंगमं गसइ ॥५

विस-सेसं वण-सेसं हुतवह-सेसं व सत्तु-सेसं च ।
थेवं पि पुणो वड्ढइ, तम्हा तं कुणह नीसेसं ॥६

गरहध सोयवयणरं(?) विविधोवाएहिं कुणह वीसत्थं ।
कालेण य होह पुणो [१६२]एदं निव-लक्खणं भणिदं ॥७

जो दुकए पडिकुव्वइ दुट्ठे दुट्ठो दु हिंसिते हणइ ।
दोसो ण तत्थ दीसइ [१६३]कलिट्ठसट्ठीय(?) निद्दोसो ॥८

ताव भयं पेच्छेज्जा, जाव [१६४]भयंतो न चेव अल्लियइ ।
भयमावडियं दट्ठुं, पहर अभीयो(?) इ(?अ)मंदो व ॥९

चिंतय बगो व्व अत्थं, पक्कम सीहो व्व सत्तु-हरिणेसु ।
अवलोक्क(?क)य पक्कणो इव, ससओ व्व दुदं पलाएज्जा ॥१०

एक्केक्कं सीह-बगे, चउरो विय कु[?क्कु]डा वि सिक्खेज्जा ।
पंचेव वायसादो, छच्च सुणे गसभे तिन्नि ॥११

णिहु(?) इंदिय करणीए, [१६५]विपउ व्व चिट्ठेज्ज सुणिहुद विउसो ।
पत्ते दु देस-काले, कुणह जहा-चिंतियं कज्जं ॥१२

थेवं बहुं पि कज्जं, जं कादुं [१६६]दुज्झे(?) बलीण इच्छेज्जा ।
तं एक्कं विक्कमेण(?वि कमेण) दु, सीहो व्व अजाणियं कुणह ॥१३

गोसग्गे य विबोधं, जुद्धं बंधुसु संविभागं च ।
[१६७]भज्जं कमिदुं व पियं, कु(?क्कु)ड-सिक्खा दु चतुरो वि ॥१४

[१६८]पढमुद्धाई(?) गुत्तं च मेहुणं अप्पमादवट्टित्तं ।
गहणं सइ काले आलयस्स इदि काग-सिक्खाओ ॥१५

सुह-निद्दो य सुबोधो, अणालसीत्तं सदेय(?) [१६९]थोवेणं ।
सूरत्तणं दढ-भत्ती, एदाइं सिक्ख साणादो ॥१६

अविसन्नं वहध भरं सीओण्हं मा य गणह सदा ।
विणियदं(?) असंतुट्ठो रासभ-सिक्खा इमा तिन्नि ॥१७

[१७०]भद्दो वियणमतिरित्तमायित्ति(?), य पइ(?य)दि-दूसिय-भावो ।
नीयं पि असंपत्तो हवदि सकज्जुज्झदो सप्पो ॥१८

कुणध य हत्थि णिम्मिल्लं मुयह पच्चक्खमकुल[१७१]-संवादं ।
[१७२]अकुस्समाण(?) बधिरो कालम्मि य [१७३]सव्व-निवहम्मि ॥१९

[१७४]मोहेज्जो य अमूढो सत्तंरत्तो(?) य रंजए परं पि ।
नीयं पि सप्पिऊणं पहरध पुव्वावकारीसु ॥२०

जो जम्मि समणुरत्तो तस्स पुणग्गहण-संसिओ(?) होइ ।
तो पविसीहसि लोगं हुत्ति(?) कप्पूर(?कप्पर)-वेसो वि ॥२१

अणुकूलो चिय काले सम्मं लोगस्स पावए पुरिसो ।
सुनिउण-ज्झाय-प्पच(?पच्च)ओ इदि(?) पडिवण्ण-उच्छाहो ॥२२

सव्वत्थ अवीसत्थो विसेसओ संकिओ अवीसत्थो ।
[१७५]वीसंभ-समुप्पन्नं भयं तु निम्मल्लदो(?) हणइ ॥२३

सीहमवि म[?द]दिप्पो भीदं पि न मुंचते कमल्लीणं ।
तम्हा दु अप्पमत्तो हवेज्ज अरि-सीह-सप्पेसु ॥२४

नियय-सहावं गूहव(?ध) निउणालक्खेह णिच्चं पर-भावं ।
[१७६]सुनिउणं पेयालणं बुद्धि-समिद्धा परं जयह ॥२५

पदुदारम्मि(?) विसम्मि य सए य दारे पदम्मि संकंते ।
एदेसु अ वीसत्थो वसदि णरो मच्चु-वदणम्मि ॥२६

वीसासेण मुणेण व एसो बद्धो त्ति वीस*लेणे व ।
जो जस्स हु विस्ससदी सो जीवति तस्स इच्छाए ॥२७

दक्खुणकूलमलुद्धो(?) वीस*सई निच्चं कारणण्णू य ।
ण हणेज्ज(?) पर-मम्मे लोगो रत्तो [१७७]स-मम्मेहि (?) ॥२८

सुयणे मा य [१७८]विबंधसु(?) मा य कदग्घम्मि संगदिं कुणह ।
सव्वेसु अवीसत्था संतेव(?) य सव्व-भूदाइं ॥ २९

सव्वो वि कारणत्थी सेवदि यऽवमन्नदे य कय-कज्जे ।
अम्हं(?तम्हा) कुरु कज्जाइं सव्वस्स वि सावसेसाइं ॥३०

आसकुड(?) काल पइकालं विग्घेण जायए विदुसो(?) ।
विग्घं निमित्त-जत्तं तिसदेदुं(?) [१७९]मधुर-नियडि(?ड)-जुत्तं (?)॥३१

अइ-दुट्ठ-निट्ठुरायारं तं गुल-लित्तं व विसं जणं तु ।
दूरेण वज्जेज्ज अत्थेणं वि लुद्धं व विणएण ॥ ३२

गेण्हह सया वि अणुकूलेण य दुक्खं वि दूसई(?)भाव-करणेणं ।
[१८०]बलिएण कुणह संधिं लुद्धं अत्थेण गेण्हह ॥ ३३

तहेयं [?.....] ।

[१८१]अहसया(?) भीदगत्तं(?) दंडेण य दुज्जणं हणह ॥ ३४

ण तु अइ तिक्खो सिद्धिं पावदि एगंत-निट्ठुर-निवाद[१८२] ।
एवं च तिक्ख-पसरो किं [१८३]वण-दंसो व लभइ कालो(?) ॥ ३५

कदाइ पुज्जइ हेमंते हुदवहो व्व तिक्खो वि ।
अत्थं कत्थइ मओ उ णयरि(?) जलूगा वि साधेइ ॥ ३६

मऊएण वि य मऊयं, हम्मइ मऊएण दारुणं चेव(?) ।
नत्थि मऊणो असज्झं तम्हा तिक्खो मई(?) चेव (?) ॥ ३७

मुक्खा नलिच्छि(?) सप्पा सीहा सलिलं च राउलं चेव ।
जीविद-हरणे कज्जं सत्त वि जत्तेण रक्खेज्जा ॥ ३८

पच्चक्ख-दिट्ठ-दोसे जो मित्ते पुण वि संगयं कुणइ ।
अस्सदरी इव गब्भो(?) सो से जीय-क्खयं कुणइ ॥ ३९

जो अरिणा सह संधिं कादुं जे अब्भुवेइ वीसंभो ।
सो कदलीए फलं पिव संधीआमूलघादी सो ॥ ४०

पेम्मस्स विराधिद-संधियस्स पच्चक्ख-दिट्ठ-दोसस्स ।
उदयस्स च ताविय-सीदलस्स विरसो होइ [?....] ॥ ४१

चोरेसु वधो दंडो, दंडमणाभासणं च मित्तेसु ।
महिलाण अपरिभोगो, विप्पे यऽणिमंतणा दंडो ॥ ४२

नियय-गुरू गुण-लग्गे अणुसासइ णरवइ दुरायारे ।
इहइं निगूढ-पावे अणुसासइ ते जमो नियमं ॥ ४३

धम्मेण धम्म-सहियं मज्झ-जणं लोगसंगहविधीय ।
नीय-जणं दंडेणं तिवग्ग-अणुसासणा एसा ॥ ४४

न हणेज्ज हणेज्जा वा एक्कं बाणो दुपेसिओ संतो ।
निवर्दि हणइ सरट्ठं मतिमंत-विसज्जिदा बुद्धी ॥ ४५

विदुसेसु मा विरुज्झह दूर-गओ मा य वीसस कदाइ ।
दीहा हु विदुस-बुद्धी दूरे वि ठिया विणासेइ ॥ ४६

काउं सहस्स-नयणं अप्पाणं हवइ निब्भवो(?ओ) पुरिसो ।
न कदाइ अप्पमत्तो सोयइ भावंविउमि(?) त्ति ॥ ४७

जस्स परो न वि जाणइ धारइ मंतं च मंतिदं संतं ।
नवरि कदं चिय दीसइ* सो [१८४]भन्नइ पंडिओ लोए ॥ ४८

नीया निज्जं दु कुलदेवेव गेण्ह इत्थि-रयणं तु ।
गेण्ह वि माउअ(?) मयंकं णगं व आमज्झ(?) पडियं पिवक्खु॥४९

सुपाणिपादं वि दिणालिंगोदराणि(?) रक्खेज्जा ।
मणसा य णयाणमो(?) गेमण(?) वयणा य बुद्धीए ॥ ५०

न य वीको(?) नेव सट्ठो(?) न य माणी अत्थ-साहणं कुणइ ।
न य कोइ वयण-भीरु न पदीदंसा(?) समत्थो वि ॥ ५१

कालं देसं अहियं हियं च गुण-दोसमत्तणो वा ।
जाणंति जे कमावक्कमं च किं ते न जाणंति ॥ ५२

तं एस परमत्थो । एदं तं मया **कोदु(? डि)ल्लयसत्थ**-णवणीद-भूदं सुत्तं पदंसियं । एयं सयमेव पेयालेदुं जं संपदं जोग्गं देसकालोववन्नं वा च्छगुनूण(?)याधियारेण सजत्तं(?) वा तं पदेसिहि त्ति ।

तओ मया **भणियं—बहु तुब्भेसु भासियं असंबज्झमाणंगं(?) न एत्थ न किंचि सारं पेच्छमि । किं-कारणं, जेण पच्चक्खं चिय दीसइ जह,**

णय-सत्थं न याणिदं, णेयदुं(?) वि(?दि)नगरो पसंसेइ ।
नवरि पदाबुब्भवियं(?) दंडेण तमं विणासेइ ॥

भण को व्व अडवि-मज्झे हरिस्स चंटेइ सत्थ-सत्थाइं ।
विक्कम-रसियस्स सदा जं सोमयरायदं(?) लभ(?ब्भ)इ ॥

तं चायदु मे मणयो(?) रिसिवर अज्ज वि नच्छउ(?) एस ।
सत्तूण ताव अहयं दंडेण मयं पणासामि ॥

एवं भणिदूण मया दिन्नं सव्व-बलाणं आणा, आगाहिदा य मे **असणिवेगादिणो** सव्वे वि ससुर-विज्जाधर-रायणो । **सलोयसीह**(?)-**हेमदाढो**(?ढ)-**मयूरसेणादिणो** सव्वे बल-*सहिया समुवागदा उत्तर-सेढीए **चित्तगहि**(?इ)-**हरिवेगा** सबल-वाहणा ससुरा मे विदिदमय(?)-समर-कारणा य पुन्नोदयाकलिणो सव्व-बलेणं निरुवकारिणो वि मम मिलिओ राया **वायुवेगो** । तओ हं **वायुवेग**-समागमे परम-तुट्ठो सव्व-बल-समुदएणं सुंदर-तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तोदय-सुद्ध-मणोणुकूले रोद्दे रिवु-क्खय-करे पयाण-काले [१८५]दुदियच्छे(?) दिणयरे सेसेसु वि सत्तु-मम्माभिघायसु महग्गहे [१८६]पुच्छ-तार-ट्ठिदे य ससंके, कद-कोदुय-मंगलोवयारो विधिणा पूइद-जिणबिंब-[१८७]सुविहेअ-जणो(?) ताहे जयसिद्धिद-सुहपसत्थ-वयणाभिणंदिओ चलिओ पहवरे भेरि-झल्लरि-दुंदुभि-पडुपडह-संख-खरमुहि-काहला-हुंकार-भरिद-णह-मग्गो अणेग-भड-वंद-कलकलप्पमुक्क-हक्कार-सेंद(?सद्द)-सट्ठिद(?)-ऽट्टहास-निब्भर-दिसा-चक्को खयर-वधु-सावलोग-नयण-माला-सहस्स-संपाद-समणु-बज्झमाण-देहो हय-गय-रज(?ह)-जोह-विमाण-निवहेसु छादयंतो नहंगणं रहस-समुप्पइद-खयर-वर-जोह-लंघिद-दिसाभोगो लहु-करण-पवर-सुकरण-रइद-विमाणारूढो सवयंसो अंबरं समुप्पइओ, पवर-नरवइ-परिवुडो सामाणिय-सुर-वर-सहिओ असुर-बलुद्धरण-कप्पिओ व्व सुरपदी पुरओ आगदा(?)-सपइदेहिय(?)-पाढय-सूद-मागध-गणेहिं महुर-मंगलोवयार-जुत्ताहिं गिराहिं महुर-मंगलो अभिथुव्वमाणो सिग्घं नहदलेणं पयातो हं पवणागलिद-धय-हुसकलादिकदंलिकावेइययं(?) ति, विविध-वरासिय-पवर-चमर-वर-हार-वासिय(?)-सिरिदाम-छत्त-वर-मल्लदाम-गंवल(?)-पुरंत[१८८]-सिरी-समुदयो, विहुरोगलंत-सित-वर-कुसुमच्छादिद-नहंगणो, हय-हेसिय-गय-घंटारवेण वर-घणघणाणुणादेणं भड-वंद-कलकलेणं फुट्टंत-नहंगणाभोगो खणेण य पत्तो हं महंत-भड-मच्छरावासं(?), रमणिज्जं गोरिकुड-सिहर-वरं, अवसव्वेऊण य रिवु-पुरं पविट्ठो हं ।

तत्थ य मत्थ-भूमि-भागे महदा य मित्त-मंति-बल-पडिबल-ऊसहिएणं(?) म(?स)यासं मंतेऊण तहे पियरेत्तूणं(?) जहा मम कप्पा गंधव्व-हव-युद्धं(?) पादलयाधदि(?) । तेसु य पडिपेसिदं मे जहा,

सुधपडादे(?) जुद्धमिति । ताहे मया विहिद-विधिणा सक्काराकदा(?) मे अच्छाह-रसिया खयर-जोधा ।

तओ अत्थमिए दिणगरे संपत्ते पाओसिय-जामे गंभीर-खोभियारि-पक्खे खयरपदीसु य अप्पमादहरं(?) नमिऊणं ताहे वीर-सयणमुवागओ हं । तम्मि य पज्जलिय-जलंत-विमल-जोइक्ख-पंति-चित्तले पदोस-काले पउत्त-जागरिय-खयर-संचार-संकुले [१९९]ठविद(?)-दिसापाल-बल-बहलो सत्थोवदेस-मेत्त-पाणो वायोयणे(?) सुमुह-जोहे(?) किं-पुण पमाणसत्थे पाणस्स निद्दिट्ठं जहा,

एग-सरएण पन्नो दोहि य सूरो दु पंडिओ तीहिं ।
उवरुवरिं पेच्छंतो गहेसि रसं भन्नते(?) मज्झं ॥

एवं सत्थोपदेस-निप्फन्नं पाणपदप्पमाणमाणो(?) पयोयण-मत्त-भुत्त-प्पमत्त-पासुत्ते जोध-वग्गे, केसु-इ पढम-पविरल-निद्देसु सरिद-विवंचिदंति(?) प्पहाराणुसार-गीद-रस-खित्तेसु पविलंबमाणेसु, केसु-इ विविध-कहा-कोसल्ल-गंधव्व-संसालण(?)-सत्थत्थ-गुण-पेयालण-संघरिस-संपलग्गेसु, केसु-इ कल्लं किर जुद्धं होहिदि त्ति कड-वरुच्छाह-रण-रस-रत्त-हियएसु य एवमादि गमिद-पढम-जामातीएसु पच्छा पुण णीसेसे वि खयर-बले बाहिं पउत्तारक्खे अंतो निद्दावसं उवगदे अहाहं दरप्पसुत्तो सहसा अपुव्वगाणं कन्नगाणं सुइर-प्पभासियमालावं सुणामि । तत्थ एक्काए भणियं—अवसुत्त-विज्जाहर-जोहं पि हु अदो(?हो) अदरिसणीयं(?) से बलं । बिदियाए भणियं—अह पुण जाणह कदरो वि एत्थ **अंसुमंतो** हवेज्ज ? सो अम्हासु पुव्वदरमुवगंतव्वो । सो किर चदुर-महुर-वयण-कहा-कोसल्ल-संपादण-सहो । सो य अज्जपुत्तस्स अद्ध-सरीर-समाणो मयण-संधिपालो य। तं ताव जाणिदुं पुव्वदरं उवगच्छेहेइ ।

एवं जंपंतीओ ताओ सुहप्पसुत्तस्स **बंधुणो** पासमुवगदाओ । तं अवलोएउं तत्थ एक्कीए भणियं—न एस हला ! **अंसुमंतो**, न **एसो** हला एवं अणायरक्खंनाएणं(?) सुविदि । एसो हु विसम-खित्त-हत्थ-पादो अणवच्छदिद-वियड-गत्त-वयणो ण सो एवं असंगदं सुविदि । विद्ध-करनिल्लो(?) हु सो । तत्थ य अन्नाए भणियं— णूणं खु एस संपराइय-कला-वायाम-खेदिद-सरीरो **सुबंधू सम्मतदेवो** वा होहिति । अन्नाए भणियं— अले ! जाणसि खु तुमं सव्वेसिं पि अज्जपुत्त-वयंसाणं

नामधेज्जाइं। तीए भणियं—हला ! तप्पभावेन चेव जाणामि । अवि य,

उत्तम-संसग्गीए ऽपायड-पुरिसा वि पायडा होंति ।
अब्भ-सरिसो वि राहु ससि-संगे पायडो होइ ॥

तओ ताओ अइक्कमिउं उवगदाओ **अंसुमंत**-सगासं । तओ एक्कीए भणियं-हला ! एस **अंसुमंतो** त्ति । मया(?अन्नाए) भणियं—किह पुण एदं जाणेसि ? तीए भणितं—जाणामि एस नियतं पि आसन्नतरो अइरगस्स(?)। पेच्छह, जहा दाहिणं भुयं अभिजाद-ट्ठाणे निवेसेउं ललिद-चदुर-विन्नत्थ-गत्तो संगद-सुभय-संवुदाणु(?ण)णो विगद-दरुस्सासं(?) का(?को)वणय-सभाव-वज्जिदो परम-सुहुमुस्सासो अइ-संको(?) वि वित्थर-परिहीणा(?) अणुजण-पयदीदीहा(?) सव्वेवसुत्तादेसजाणओ(?) वाम-पासमाणीयंगदसाईअ(?) एस **अंसुमंतो** असंसयं दिट्ठं(?ट्ठो) मे तदा **हरिकूडे** संगर-जत्ताए अज्जपुत्तस्स जिणच्चणं करेंतस्स मंदार-पारियादय-वा(?)-सुरभि-कुसुम-माइंद-कुंति(?)-वाणीर(?) पारिहत्थीग(?)-संताणय-कुसुम-पच्चोविय(?) सेवासाहत्थि(?) उवणयंतो । तओ जाणामि णं एदं ति ।

तओ **अंसुमंतो** सणीयं विबोधिओ सयं । सो य निव्वयापे-सणीयं(?) समुट्ठेदुं सलि(?ल)लितं भणइ—किं भो परम-तेयस्सिणीओ ! मम समाण-दासत्तणं अभिलसह ? अरहदि रोयदि वो परम-सामीपाद-सेवा । तार्हि भणियं—महाराय **अंसुमंत** ! एवमेदं, किंतु सुणह ता महं विन्नप्पयं ति। तेण भणियं—भद्दवो ! वीसत्थाओ भणह त्ति । तओ तासिं कन्नगाणं एक्का पोढदरी **हेमवदी** नाम । सा भणइ— सुणह, अत्थ(?त्थि) **गोरिकुड**-सामिणो **भाणुप्पहस्स** स्त्रो **आणमणीदेवी**ए पुत्तो **गोरिपुराधिवई** राया **गोरिमंतो** नाम, भादरो से **वालग-भूदगा** दोन्नि, तेसिं भगिणी महदा अज्जदए(?) **गोरिदत्ता** नाम गोरी गोरि त्ति भन्नइ जा तुब्भेहि य **हरिकूड**-जिणायतण-जत्ताए दिट्ठा, दिट्ठि-सुहप्पसादणी सा अन्नदा कदाइ अचिरुग्गदे सविदरि सहीजण-संपरिवुडा हम्मिय-तलारूढा णहदलावलोगिणी अच्छइ, पेच्छइ य नहतलेणं अत्थ (? तत्थ) समदिच्छमाणिं **माणसवेग**-भगिणीए **वेगवदी**ए संतियं पडिहारि[णी] **हरिणी** नामं । ति(?तं) च **गोरिदत्ता** संजाणिऊणं भणइ—हला **हरिणि** ! उवत्ताभि(?हि) त(?ता)व इहं, किं चि पुच्छामि ते । तदो सा वो(?ओ)वतीता तीय सगासे, कद-पणिवादा य पुच्छिदा **गोरीए**– हला **हरिणि** ! किं च पुण सि विणा-**वेगवदीए** एगागिणी हिंडसि ? । तीए लवियं— **वेगवदीए**

[.....?.....] अविगद-पडिहाससीलाए दीहं काउकामाए भणियं— जो **अमिदगइ**-सुताए **गंधव्वदत्ताए** भत्ता । **गोरिदत्ता**ए भणियं— को **गंधव्वदत्ता**ए भत्ता ? तीए भणियं— जो **सीहदाढ**-सुताए **नीलयसा**ए भत्ता । तीए भणियं— को **नीलजसाए** भत्ता ? **हरिणीए** भणियं— जो **विज्जुवेग**-सुदाए **मदणवेगा**ए भत्ता । एवं उतरूत्तरेसु वच्चमाणी **हरिणी गोरिदत्ता**ए भणिया—अव्वो ! णामं से कुलं च साहेहि मे । तीए भणियं—**जदु**-कुलंबर-[११०]विवसासुलो(?) **वसुदेवो** त्ति । तओ तीए एव कहिए कद-पूया विसज्जिदा गदा **हरिणी** ।

अन्नदा **गोरिदत्ता पवणजव**-सुताए **पभावदी**ए संतियं सहिं पुच्छइ— हला ! ण सुट्ठु दार्णि **पभावदी** दीसइ । कत्थ सा ? । [तीए भणियं–] भत्तारं उवगदा **भरद्दाय**-रिसिणो आसमपदे वसइ । **गोरिदत्ता**ए भणियं— किं कोइ तावसो से भत्ता जओ आसमपदे वसइ ? । तीए भणियं— ण तीए तावसो भत्ता, **अंधयवण्हि**-तणओ **वसुदेवो** । तेण तत्थ अन्नाओ वि अट्ठ **भरद्दाय**-सुदाओ **हेमजसादी**ओ परिणीदाओ । तेण कारणेणं सो तत्थ परिवसइ। तं च सोऊणं सा विम्हयं गदा, भणदि य—अहो ! से सोभग्गं ति । तओ कदाइ **गोरिदत्ता** पुव्व-सहीणं दंसणूसुआ **ललिदपुरिं** गदा। तत्थ य तीए पुच्छिदाओ काओ वि रायंतेपुर-परियारियाओ— हला! कत्थ पुण **अनिलयसा ललिदवेगा** य तासिं च [?.....] भुत्तय(?)-सुदा **विरय** त्ति?। तासु य भणियं— ताओ तित्रि वि **हरिवंस**-सरोरुहं भमरंगणाओ इव जोव्वण-मयरंद-समिद्धं **वसुदेवं** पतिं उवगदाओ । [एवं] सोदूण तीए भणियं—अहो ! **वसुदेव**-कप्पूरेणं वेदिदं सयलं विज्जाधर-कच्छ-पुडयं ति।

तओ कदाइ सव्व-विज्जाधर-समवाए उत्तर-सेढियाणं **जलदसण**-सुयाणं **अरुणपदि**मादियाणं पंचण्हं जणीणं, **हेममाला**ए य **मेहरध**-सुयाए, **चित्तगदि**-सुयाए **चित्तलेहा**ए **हरिवेग**-सुदाए **हरिकंता**ए एदासिं **गोरिदत्ता** परियणं पुच्छइ–कत्थ ताओ राय-सुयाओ त्ति । तासिं च परियणेण भणिया— सव्वाओ वि ताओ **वसुदेवं** महोदधिं पिव महा-णदीओ उवगदाओ । तीए य सोदूण चिंतियं—साधु कदं, एत्थ **वसुदेवो** [१११]विसरूवी(?) बहुधा परिणदो । दिट्ठा य तीए तत्थेव **चंद्राभ**-खयराधिव-सुदा **बालचंद्रा** । पुच्छिदाओ य **गोरिदत्ता**ए तीए परियारियाओ—हला ! किह पुण **बालचंद्रा**

विज्जाधर-राय-कन्नगा सामन्नं च **वसुदेवं** ण उवगदा ? । तासु भणियं—एसा वि तस्स चेव दिन्ना । तुमं पुण अत्तणो गोवालं जाणेज्जासि । तओ सा गरहमिदं(?) काऊणं तओ अवक्कंता ।

अन्नदा य **देवरिसभ**-सुदाए **अच्छराए** सगासं गदा [**गोरिदत्ता**] । दिट्ठाओ य तीए तत्थेव **चंदलेहा-ससिप्पभा** । तओ तीए **अच्छरा**-परिजणो पुच्छिओ—हले ! किमेदासिं तिण्ह वि सहित्तणमत्थि जतो एयाओ इहमागयाओ त्ति ? । परियणेण य लवियं— एताओ तिन्नि वि एग-भत्तारं **वसुदेवं** उवगदाओ तेण एदाओ एगओ उवगदाओ त्ति । तओ **गोरिदत्ताए** भणियं—अहो ! हु **वसुदेवा**सीविसेण सकलो मयण-विस-घारिदो कदो लोगो।

तओ कदाइ **पन्नतिकोसिअ**-सुदाए सह समा[?ग]दाए **वसुदेव**-संवरणं सुदं । तओ तीए भणितं—हला ! हिआसा किमेत्थ भणदु । अहो हु **वसुदेव**-मारुदस्स णत्थि किंचि अलंघिदं !

अन्नदा य **पिंगलगंधार**-सुदा **पभावती** तीए उववणे दिट्ठा । तओ **गोरिदत्ता** तीए परियणं पुच्छइ— हला ! किह पुण **पभावदी वसुदेव**-दिट्ठीविसस्स पहे ण पडिदा ? । परियणेणं भणियं—एसा पिदुणा विज्जा-साहण-कज्ज-परितुट्ठेणं तस्स चेव समप्पिया । तओ तीए भणियं—अव्वो ! किं **वसुदेव**मयं चिय सव्व-जगं जायं ? एवं **वेरुलियमाला**-पच्चंतं पि सोदूणं भणइ—नत्थि **वसुदेव**-कलिणो किंचि अलंघियं ति । एवं च खयर-राय-मंडल-कन्नगाण मे [१९]गदासुहं(?) संवरणं सोऊणं **गोरिदत्ता** कामित्तणेणं अज्जपुत्त-संकंत-भावा अवगद-विगहासा(?) अवगय-निद्दा-भोयणा मुक्क-ण्हाणंजणाभरण-विलेवणा दीहुस्सास-वेअम्हिय-अणुवरद-ढाभा(?) दीण-मण-णयण-वदणा बहुल-पक्ख-चंदलेहा इव पइदिवसं परिहायमाणी गमेइ कालं।

पुणो य तीए सयमेव अज्जपुत्तो **हरिकूडे** पच्चक्खं दिट्ठो । तओ सा गाढदर-मदण-बाण-संपाद-विहिदा क्त्थइ वि धिदिं अविंदमाणी अभिक्खणं कल(?र)-कमल-पल्हत्थ-वदण-कमला कमलिणि व्व सिसिर-तुसाराभिहदा अच्छत्थं मिलायमाणी अणवरदं च दाहज्जर-परिगदा सकप्पूर-सलिलुक्खेय-यवाद(?)-संधुक्खिद-सरीरा हार-चंदण-मुणाल-खीरकदंब-कल्हार-णालग-भिसिणिपत्त-कदलितोवक(?)-सेवण सीदल-जल-द्रोहिणि(?)-कमलुप्पल-पइन्न-मयलंछणोदय-समयं हम्मिय-तलोवसेवणादीसु वि अलद्ध-हिदय-णेव्वुई

रदिपदि-विडतप्पच्छायोबहुसिदा(?योवहसिदा) चंद-कंती विव निप्पभा गमेमि(? ति) कालं । इमं च वो संपदं महा-समर-भंडणं पयत्तं । अज्ज य आपगलिदंसु दुद्दिणं पयारिद-वयण-चंदा सकरुणं परुदिदा सही-जणं भणइ—हला ! नाहं सक्केमि इदाणिं भादुणो अज्जपुत्तेण सह भंडणुज्जदस्स सगासे अच्छिदुं ।

एवं भाणिदुं अज्ज पदोस-काले मरण-कद-ववसाया अम्हासु विर(?रु)ज्झमाणी वि णिग्गदा नगरादो, इदो हु(?हुं)ती पविट्ठा य एत्थ अदूर-देस-ठियं सदा-कुसुमं गोरिवनं काणणं, तत्थ य अइसरिदुं अज्जपुत्तंतेण कदप्पणामा, णियय-उत्तरिज्जेणि(?ण) उवट्टिदु(?)-कामा मरण-कय-निच्छया मत्था(?तत्था)गदाहि कहं चि अम्हाहिं बाहाहिं विधारिदा । भणदि य—वयंसि ! मा मे ह(?ध)रेह । का मे जीवियासा ? जइ मे भादीणं अज्जपुत्तेण सह वेरं ण होंतं तओ तस्स मम य केण-इ उवाएण समागमो होंता(?तो), संपदं पुण च एदेसिं अ एव-बद्धवेराणं क(?कु)ओ तेण सह समागमो ? त्ति । अवि य एदेणं किर अज्जपुत्तेणं मम भाउणो **भूदगस्स अवंतिपदि**-दुहिदा **अवंतिवद्धणा** णाम कन्नगा तिं(?तं) हरमाणस्स सा **असिदगिरि**-पदेसे हत्थादो(?) अत्थिणा(?) जं वसगोत्तो(?) से **पेदजाणो** राया मारिओ, तेण कारणेण **माणसवेगा**दीण य वयंसाणं साहज्ज-हेदुं इमं वेरं पवट्टियं । एदेण य कारणेणं सयण-विरोधी नत्थि मे अज्जपुत्तो, तस्स य अलंभे अलं मे जीविदेण । तं मुयह यडत्ता(?) अत्ताणं विवाडयामि त्ति ।

तओ सा सहीसु भणिया- वयंसि ! जीवंतीए सयणो परियणो य, मदाए पुण णत्थि कोइ वि सक्को अणुगामिउं वा । तं अलं वो कुलमाणेणं वेद्दालुत्तणेण वा । एण्हि चेव अज्जपुत्तं उवगच्छिऊणं रक्खह अइ महग्घं जीवियं अत्तणो सहिजणस्स य । एवं भाणिउं ताहे कासु सहीसु विधारिदा । अम्हे पुण कदि चि जणीओ अज्जपुत्तस्स निवेदणा-हेउं इहागदाओ तुह पुव्वदरं समवल्लीणाओ । तं तुब्भे दाणिं निवेदेह सयमेव एदं कारणं देवस्स अम्हं अइरियाए मणवल्लभस्स । चिंतेध य तुब्भे वि सह देवेण तीए जीवावणोपायं ति ।

तं च सोऊणं अहं हिदएण चिंतेमि— न सुंदरं एयं, न वीससियव्वं एत्थ समए इत्थिआणं, इत्थि-मूलिओ हु पाएणं अजिइंदियाणं विणासो निज्जइ ।

अह य **अंसुमंतो** सणीयं मम सगासं उवकहिऊणं तं कारणं अपरिसेसं ममं निवेदयइ । मए भणिओ—भद्द ! मुहत्तणं(?) सत्तूणं, सत्तूसु जाणितो हं जहा एसो इत्थि-लोलो त्ति । तओ ण वीससिदव्वमेव तासिं, कदाइ एदाओ पउत्ताओ हवेज्ज । तओ सयमेव सुवियारियं करेहि त्ति । **अंसुमंतेण** भणितं—देव ! एत्थ काइं वव्वणा(?वंचणा) वयण-पहेण चेव एत्तियं परिच्छिज्जदि तं णत्थेत्थं वंचणा । अविगय-विज्जा ण एरिसम्मि समए सत्तु-गिहादो दासी वि आगच्छंती, किं-पुण कुल-प्पहाणा कन्नग ? त्ति । तं वच्चह अविग्घेणं, पावह ती(? तं) कलि-कुल-सव्वस्सं कन्नगं ति । मया भणियं—वयंस ! जइ एवं तओ वकितो(?) हवेज्जाहि जाव अहं आगच्छामि। अह मह(?ए) ती(? त)ह त्ति पडिवन्नं । तओ हं विज्जा-पभावेणं नियय-सरीर-कुल कज्जोउवतोब्भिऊणं(?) तासु कन्नगासु सह उप्पडिऊणं गओ तीए सगासं। दिट्ठा य मे सा य तत्थ काणणे सुरभि[-लदा]-घरोदर-गदा देवदा इव तस्स उज्जाण-लद्धयस्स(?), विज्जु-लता इव जलधरंतर-गदा, सहिजण-संपरिवुडा पारिसद-विज्जा-सहिदा इव **गोरिदत्ता**, पगलियंसु-सलिल-वरिसिणी सत्तु(?तु)सार-बिंदु-वरिसिणी विव कमल-लोयणा सुदणू । सा य ममं सजह(?)गदं दट्ठूणं सरुदिद-मम्मण-वयण-चदुर-मधुरस्सरा भणइ— सामि ! सागतं वो । वास-सहस्साणि वो पाया पयाणं आदिसत्तुं(?आदिसंतु)। सुणह य तुरिद-कारणं विन्नत्ति य । अहं वो मयण-धम्मोकं(?क्कं)ता निवेदिद-नियय-जीविदा पाद-सुस्सूसिय त्ति । तं जह तुब्भे लद्ध-विय(?ज)या णिवह (? णिवत्तह) ताव स(?म)दा **गोरिदत्ताए** किमणुट्ठेयं ति। मया भणिया— वरोरु ! अलं परिहारे(?से)णं । मुय विसादं। उवगूहसु ममं। चिर-चिंतिदो मे एस तुमे सह समागमो । तं एहि संपदं मणोहराणू(? रहाणु)रूवं चेव अणुट्ठेमो त्ति।

एवमादि बहुं पियं भणंतेणं वीसंभिदा मे, उप्पन्न-पीदि-पणयाणुराया य मया गंधव्वेणं विवाह-धम्मेणं वियाहिदा । तम्मि य ओसारिद-सहिजणेण विज्जा-विहित-भवणोदरे पवर-णिधरणे(?णिधुवणे) समारोविया मे सा सुभया, तत्थ य गाढालिंगण-पुणढत्तमुणिदा(?) वण(?घण)-वीसासिदा सम्माणिदा मे रदि-रसायण-पाणोदयोयणेणं(?) सहुमहयोयिद(?) परागदो य गूघणत्तुंपणं(?) चेव पीवराधरा सुरभि-कुसुम-तलिमो(?मे) । एवं तत्थ परम-पीइ-संपउत्तस्स सह पियाए अभिरमंतस्स गलिदा णिसा । सग्गिय(?)-वेलाए य ससहीजणाए **गोरिदत्ताए** सहिओ गओ हं पिय(?)-खंधावार-णिवेसं णिययावासं व । तत्थ

य खणंतर सयणोवणदो कदा दुगणादिकुरेसु(?) विबोधितो हं । अणुसमयं च मंगल-जय-सद्द-गीद-गंधव्व-सद्द-संदाणिदस्स अरुण-किरण-पूदं उवणीदं मे मुह-धोवणं पडिकम्मं च राय(?) । तदो सुकद-पडिकम्मो **गोरिदत्ता**-सहिओ रोहिणि-सहिओ इव निसाकरो परम-विम्हउप्फालिय-नयण-कमलेहिं दिट्ठो हं खयर-राईहिं । तेहिं कय-प्पणामेहिं भणियं—देव ! देवजितो(?) देवस्सु(?) णेत्ति(?) उवागदा ते गोरिमंतलच्छी(?) पादच्छायं ति । ताहे मया आणत्ता विज्जाधरा- सिग्घं विरचि(?चे)ध गरुल-वूहं ति । तओ विरइदो गरुल-वूहो । उवट्ठियाणि य मगर-वूहेण य सत्तु-सेन्नाइं ।

तओ हं सुकद-सन्नाओ(?हो) गहिद-पवर-पहरणावरणो खयर-विधि-विधाण-विरइद-वरद-सन्नाह-पहरण-करणिल्लस्स(?) ठिओ हं सयमेव गरुल-वूहस्स मत्थए । अह य पेच्छामि तत्थ रत्तीए आगंतूणं चत्तारि मम वधूओ नियय-बंधूणं समरिदूणं विन्नवण-पराओ, तं जहा—**अनिलयसा वायुरहस्स, वेगवई माणसवेगस्स, पभावदी पवणजवस्स, ससिप्पभा ससिकंत**स्स —भणंति य ताओ तेसिं सचदुकम्माओ पुरओ विरइदंजलिपुडाओ समउल-कमलाओ व्व कमलिणी(ओ)- मरिसेह [१९३]भादयतत्ति(?), अम्हं भत्तुणो तुब्भं एदस्स एक्कदरस्स वि मरणे अम्ह वसणं उवणमेज्ज । तं अलं संबंधिणा सह जुद्धेणं । उवसमध ।

ततो ते तासु विन्नप्पमाणा महोसधि-भीदा इव महोरगा दीह-मुक्क-नीसासा भणंति—

धन्ना खलु ते पुरिसा जाणं कुले णोवजायते कन्ना ।
जा विसम-पट्टि(?डि)दा गिरि-णदि व्व कुल-पादवे घुणइ ॥

एवं ते संलवंता सरोसं चिंतापरा संवुत्ता । **गोरिमंतो** पुण नियय-भगिणी-चरिदं अजाणमाणो मा[...?....]रूढो सगव्वं व भणिदो— भो ! अम्हं पि कुले अत्थि कन्नगाओ जोवणवदीओ य, न पुण ताओ एवं मयण-परव्वसा कुल-पुरिसाणं लज्जा(?) उभयं(?) एवं समगं रंगावतारणं करेंति । तं च तस्स गव्व-कारणं मया भंजिदु-कामेण आहूदा **गोरिदत्ता**, भणिदा य मे-पिधुलसोणि ! वच्चह एत्थ रिवु-बले **वेगवइ**-पमुहाओ चउरो धम्मभगिणीओ एदाओ सव्वाओ हत्थे घेत्तूणं इय हुंतीओ परावत्तेहि । भणाहि सव्वाओ वि सिग्घं आगच्छह, मा पेच्छह त्ति पावगं । सा य 'जहाणवेह' त्ति वोत्तूणं पेक्खउ रिवूणं उवगता तासिं सगासं, सद्दाविआओ य तीए ताओ, तीए य सह मम

सगासं उवगदाओ । मया य वयण-विणब्भच्छिदाओ(?) य एक्कओ अवक्कंताओ ।

अह य **गोरिमंतो** बालग-भूयगा-भगिणिं मम वसगं समुवट्ठियं च दट्ठूण परं कोवमुवागतो । अह एदम्मि अंतरे राया **पवणजवो पभावइ**-पिया, **विरया**-पिया य **पभंजणो**, दो वि सबला वलिऊणं, मिलिद-महाणदि-सोत्ता इव सागरं, मह बलं उवागदा, पणमंता य गुरू-भावेणं पुव्वदरं वंदिया, महदा महि(?) माणेण य दो वि जणा पूईदा । खंधावाराओ उक्कट्ठं च परम-तुट्ठेहिं मम पक्खिएहिं विज्जाधर-बलेहि जयं ति परम पदे त्ति । तओ **वायुरहेणं गोरिमंतेण** य भणिया णिदा णियय-पक्खिद-खयराधिवा य दोवगदा(?) खलु अहं मज्जादोजा(?) । एत्थ जमल-हिदया संपयं कण्णोसो(?ण्णाओ) । तं आणह संपदं एदे सत्तुणो त्ति । अहो ! महिगोयर ! नीसाए खयरा वि खयं गद(?) त्ति । एवं संलवंतेसु तेसु य पयट्टियं रण-भंडणं ।

तओ उद्धंत-संख-पडह-तूर-णंदा(?णादा)रसिदाइं लग्गाइं परोप्परं खयर-बलाइं । पयत्तं घण-घोरंधयारं देवासुर-सरिसं महा-जुद्धं, मिलिद-दिप्पद-गइंद-संदण-विमाण-तुरग-पाइक्क-रिसिदरिसियवुमुक्कवक्कणिकोप्प(?)-कप्पिद-रिवु-सीस(?) णिसिद-असि-सत्ति-कुंत-कप्पणि-तिसूल-वल(?)-फलह-स्तल(?)-सव्वल-खग्ग-मोग्गर-मुसुंढि-पवर-सर-पहकर-निवाद-विसम-महिधर-सिहर-संघट्ट-फुट्ट-हुंकार-मुक्क-वुक्कार-पसरिद-[१९४]दहमधिवसूरि(?) रिवू रिदविहरल(?)विफल्लययोधपविद्धमुद्धनिद्धुद(?) कबंध-बंधुर-भलंत-किलकिलकिलंत-गंधाणुपाद-पवडंत-भड-कलेवर-फुडंत-सद्दट्ठधर-महिदल-पडंत-घण-दिन्न-घात-भासुर-नीसट्ठ-पडिद-लोहिद-लोलागद-भगभगभगेंत-दूसह-घोर-सिवा-राव-संकुलं वियंभइ जुद्धं ।

एयम्मि देस-काले राया **वायुरधो** खत्त-धम्मेणं आगारेदुं उवट्ठिओ ममं । जहाभिमाणी सो य अत्थावत्थेसु सुचिरं मया सह मायामएसु हत्थेसु छिन्न-हत्थो जुज्झिदो पराइदो य मे अयत्तेणं । विज्जासु य आवरेऊणं मया नागपासेण बद्धो छूढो य मे नियय रह-कुवरे मम सेन्न सन्निवादमसहंता य **नीलकंठंगारग-हेप्फग-माणसवेगा**दिणो हिमहिदलसेत्ता(?) पलादा दिसोदिसं। इदरे पुण **ससिकंत-मायंगदेव-गोरिमंता**दयो ताव मे ण मुक्का जाव भीदा येणं(?) संबंधवसेण य मम चेव सरणमुवगदा, पडिया मे सपरिवारा पादेसु। रायाणुरूवेण य विणएणं उवगदाणं सयं-अब्भुवगय-

वच्छलत्तणेणं दिन्नो अभयो, पूइदा य मे जहा परम-तुट्ठा जाया ।

अहाहं **गोरिमंतेणं** परम-तुट्ठेणं सपरिवारो सबहुमाणं सरायचक्क-परिवुडो संतेउरो य पवेसि(?सावि)ओ **गोरिपुरं** । तत्थ य मंगल-कओवयारे(?रो) इंद-विमाण-सरिसे रयण-पासादे आवासिओ हं । आवासिदा य सेसा वि राइणो य **गोरिद(?मं)**त-दिन्नेसु पासादेसु । तदो महदा [?.....] पूइतो हं खयर-राय-सरिसाए रयण-समिद्धीए **गोरिमंतेण**, मम पुव्वगं पूइदा सव्वराइणो मोयाविदा य उवगूहंतेण अभित्थुणंतेण य काइ **गोरिदत्ता**(?) । तओ सव्व-राईसु चेव सहिओ गओ हं **तातपुरं** । तत्थ य कदग्घ-पूयो आवासिओ हं रयण-मंदिरे, सेवंति य मे पयदा राइणो ।

अन्नदा य बंधणागार-गओ **वायुरहो** दूएणं ममं विन्नवेसीय जहा-सामि! अहं वो जुद्धे पुव्वि पच्छा य निज्जिओ इदाणिं पुण विसेसेणं वसइदूणं(?) मन्ने **अनिलयसा**-बहुमाणेणं न मारितो भे, तं पसायं करेह, मुयह मम बंधणाओ जा णं वणं पविसिऊणं परलोग-हिदं अणुट्ठेमि ति । तओ मया **अनिलयसा**-बहुमाणेण जादाणुकंपेण य मोयाविओ मे बंधणाओ । ताहे आगंतूणं पडिदो मे पादेसु । पणमंतो य मया अवतासेउं परिसंठिओ, भणिदो य मे दिण्णासणो—रायं ! बलंवत(?) अलं मन्नुणा वण-वासेण । भुंजह निव्वुओ स-रज्जं ति । सो भणइ-सामि ! माणग्गहितो हं तुहोवरि तदो, एव-चिरं धीरिदो सो य मे माणो, परिमाणिओ चेदिदो य मे अप्पा, दिट्ठो पुरिस-विसेसो पुन्न-विसेसो य । को संबंधो इयाणिं रज्ज-पालणस्स खंडिद-भुया-सिहरस्स य मम । नत्थि साधुत्तणं अवंगाणं अहीण-पंचेंदियाणं समणत्तणं । एस पुण अज्जेव वणं विसज्जेह मं ति ।

तओ मया भणियं—जइ एवं आपुच्छह **पभंजणं** भगिणि-जणं च इमं । तओ सो मिलिओ दुल्लत्तयस्स(?) भगिणीण य, तेसु य आपुच्छंतो महा-जुत्त-लग्गो सुविण-वाइदो णिवारेउं गओ तावसासमं निरवक्खो । अभिसित्तो य मया **ललिदा**-रज्जे **पभंजणो** राया । एवं अहं पडिसासित-पडिवक्खो भुंजामि भोए इति ।

॥ इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेव-हिंडीए
गोरिदत्ता-लंभो णाम चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. विज्जाधरो पु. । २. विसव्वेह पु. । ३. दित्तितराघोर- पा. । ४. वितिरिच्छि पु. । ५. रेत- पा. । ६. विदालो पु. । ७. अतिपउइ पा. । ८. कक्कणाभ पु. । ९. कतंचं० पु. । १०. नियतुज्जाण पु. । ११. घरंमरअणरेक्खो पा. । १२. नाभिसिओ पु. । १३. दायितं पा. । १४. वंभिओ पु. । १५. विवाधेउं पा. । १६. परिहत्तणं पु. । १७. पडिओ पट्ठियाएमु पा. । १८. मेणुणा पु., मेण्णुणो पा. । १९. पुत्तगेणं पु. । २०. उवगम्मइ पा.। २१. कास- पा. । २२. अह्मे पु. । २३. गामनिवडण० पा. । २४. नाग पु. । २५. सा तुब्भेहिं अन्निण पु. । २६. त पु. । २७. विरहोकंठ- पु. । २८. परिकेसंगा दासइ पु. । २९. ति पा. । ३०. अपपरि पु. ३१. -दवासोए विससउ म दुक्खं पा. । ३२. पिवासो एवं दुव्वल कारणं मि पा. । ३३. जुत्तं पु. । ३४. समयणा मिलियं पु. । ३५. अखरतिलगं पु. । ३६. भंभदि पा. । ३७. दिसय-सव्वय-चक्क० पु. । ३८. वज्ज-रयणो पा. । ३९. तिवुप्पन्न-सद्दा सं० पु. । ४०. लज्झित-सुतदेवा पा. । ४१. कहं चि वि किन्नाहि पा. । ४२. समण विवि भूत्तवेगोयरिया पा., समए वियत्तवेगो० पु. । ४३. अवइज्झिय पा. । ४४. समिद्धि पु. । ४५. सपुहत्ते कत्तवित्तक्काइं पु. । ४६. सुकल्लणा भेदाहिं पा. । ४७. निसूचिअं पच्छ य पु. । ४८. निधीएदं पा. । ४९. ★★ चिह्नान्तर्गतः पाठः पु. प्रतौ नास्ति । ५०. नीसावलोणी मम सहित्थ पा. ५१. वाद्देहिंदि पा. । ५२. तस्स सु वि पच्छिम वि पच्छिम भवेसु पा., तस्स दोसु वि भावसु पु. । ५३. ★★ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः पा. प्रतौ नास्ति । ५४. एदस्स विदि पयस्सत्त आणगाइं पा.। ५५. अणेगाइं इंद जगंतराइं सुणिज्जदि य पर परंपरसुदाए पु. । ५६. सद्दिदा पा. । ५७. काऊण यत्ताहिं भत्ताए वेंदियाइं पु. । ५८. नरिंदगे पा. । ५९. विइत्त पु. । ६०. मंदरदेवाइणो मे पु. । ६१. पणयुट्ठिएण पु., पणउव्विणंणं पा. । ६२. डक्कणं पु. । ६३. विराधितं पा. । ६४. करंदविंदा पा. । ६५. सासाक पा. । ६६. इणसुदामि यदि हं पु., इएसुहासि जदि हं पा. । ६७. भद्दो पा. । ६८. देतु पु. । ६९. -फुसल- पु. । ७०. तालाविदं पु. । ७१. सवण खयर वधू खयर-संमत्त-पा. । ७२. परिविम्हियं पु. । ७३. य कलिणो से पा. । ७४. कमल नयणा पु. । ७५. निवासित पा. । ७६. मदगत्थ पा. । ७७. निवेसियच्चखमा सिद्धी पु. । ७८. सुतिमई सुतिम हवेज्ज पा., सुत्तिमई हवेज्ज पु. । ७९. आणमणणणीए पु. । ८०. पालदभूदकाणं पु. । ८१. उवाइदं० पा. । ८२. नमिदे कमलिणी पा. । ८३. कुविवारसु पा. । ८४. मभिमाणे पा. । ८५. परित्थद्धो परम पडिभाव्वसाणे पा. । ८६. पहरुसरसंहस्ससंवुओ पा. । ८७. कयि वि पु. । ८८. सु पा.। ८९. अच्छरी संति हंसा णामि चेडी पु. । ९०. अंब-पा. । ९१. सज्जवणातिओगं पा.। ९२. नग्गह पा. । ९३. किमिएसा पु. । ९४. अच्छए न वेदि पु. । ९५. वियहिप्फडो पा.। ९६. इसिदा पा. । ९७. व पु. । ९८. ममं तप कन्नामयं पा. । ९९. संदूसिया पु. । १००.

अवि पा. । १०१. मुयर पु., सुयसुयर पा. । १०२. भो पा. । १०३. पढम पढम- पु. । १०४. संपलात पु. । १०५. वयरासीलयल पा. । १०६. वर संजिव्व पा. । १०७. क्केमिदीणिं पु. । १०८. दंन्नु-हतो पा. । १०९. तुमं तदा पु., किंमं तदा पा. । ११०. सेविन्न सभावा पु. । १११. नदी-पर-गदे पु. । ११२. भलिदे पा. । ११३. कारप्पसंतरेण पु. । ११४. मरणवदेससंभंत कलं निग्गहंतओ पा. । ११५. परिजणजणे पइ० पा., परिजणे पइरिक्कासूए पु. । ११६. परमित्तो पा. । ११७. तहा पु. । ११८. निखेखाए त्तणं संम. पु.। ११९. दारुणग्घेदपूरिम. पा., दारुणा खदपूरिम कारिया पुरायारी पु. । १२०. पहि किह जण दव्वे त्ति पा. । १२१. वियोगदिव्वसं पा., वययागदिवसं पु. । १२२. कुसील वि पा. । १२३. अन्नाणं पा. । १२४. धन्नाम पूय० पु. । १२५. पेच्छंती पा. । १२६. अहंतट्ठिया पु. । १२७. विभयंकाराइं पा. । १२८. महिमाणाइं य कम्म० पु. । १२९. विसया पा.। १३०. जणेसि पे पिय० पु. । १३१. पियस्स पा. । १३२. होअं पु., अहे वेज्ज पा. । १३३. गच्छीए पा. । १३४. रय पा. । १३५. त पा. । १३६. थूभकेण पु. । १३७. साहेहिति पा. । १३८. दाणा ओ० पु., दाणीम ओ० पा. । १३९. सा य य दो म मलय० पा. । १४०. घेत्तादि पु. । १४१. पीहि ति पु. । १४२. सगउथाइ पु. । १४३. वुक्कातो पा. । १४४. वसे प्पय तुरिसातो पा. । १४५. कीसंगहंघायं पा. । १४६. ०पवसोभदंडा पा.। १४७. ममद्दा व पा. । १४८. जोगदहाणावाय पा. । १४९. हिरिस० पा. । १५०. कारंति पु. । १५१. रक्खाइं पु. । १५२. जह पा. । १५३. तिवेसं पा. । १५४. मंतं पु. । १५५. आउहा पा. । १५६. वायुंयुदुं ब पु. । १५७. निमिउं पा. । १५८. पासे पा. । १५९. मीसं। १६०. निगंताहि पा. । १६१. घरो पमत्तेयव्वो ॥४ पा. । १६२. गदं पा. । १६३. किलिट्ठ० पा. । १६४. भयंभो पा., सयंतो पा. । १६५. विपउ ट्ठव्व पा. । १६६. दुज्ज पा. । १६७. दुज्झं पा. । १६८. पेढ० पा. । १६९. वोवेणं पा. । १७०. वियणीम० पा.। १७१. ०सकुल पा. । १७२. अजुस्समाण पा. । १७३. सिव्व० पा. । १७४. माहेज्जो पा. । १७५. वोसंभ पु. । १७६. तिसनिउणपोयालणं पु. । ★★ पु. । १७७. सेमंसेहि पु. । १७८. विधबंधसु पु. । १७९. धमधमधुर पु. । १८०. छलिएण पा. । १८१. अहामया पा. । १८२. निवादो पा. । १८३. वणदंसो व णवइ पा. । १८४. ★.....★ एतच्चिह्नान्तर्गत पाठः पु. प्रतौ नास्ति ॥ १८५. दुहियतो पा. । १८६. पुत्थट्ठतार० पा.। १८७. सुविहिह पा. । १८८. फुरत पु. । १८९. उविद पा. । १९०. विवस्सावसुलो पा.। १९१. विसुरूवी पा. । १९२. गादोसुहं पा. । १९३. भात्तुवा तत्ति पा. । १९४. दहमधिवसू पु. ।

२५. पभंजणवेगा-लंभो

अह य तत्थ सव्वे वि मम संबंधिणो विज्जाधर-राइणो वयंसा भणंति एगदो मिलिऊणं- अरिहदि इदाणिं [1]जिदविग्गहो अम्ह सामी महदा विज्जाधर-रायाभिसेयारूढो एसो । तओ सव्वेसु वि सप्पहरिसेसु 'तह त्ति' पडिवन्नं । अह य गुरु-नियोगेणं आणिदाओ **भरद्दाया**समपदाओ सव्वाओ वि मम वधूओ सयमेव **हेमदाढेणं**, अन्नाओ य जाओ दाहिणसेढीए, तं जहा—**सामली गंधव्वदत्ता नीलयसा मयणवेगा लीलापदी** य—ताओ य आणियाओ, **वेगवति**-पमुहाओ य चदुरो पुव्वगताओ [2]समर-कालं उत्तर-सेढीए, दो य आणियाओ सह पिदूहिं **हरिकंता-चित्तलेहा**ओ । तओ समागदासु सव्वासु वि विज्जाहर-लोग-वत्थव्वासु मम पियासु पयत्ते मम हरिसब्भुदय-कल्लाणे पमुइदेसु सव्व-विज्जाधर-राईसु य अह य मम **अंसुमंतो** विन्नवेइ-अज्जपुत्त! इमम्मि तुह पयत्ते संबंधिजण-मण-णयण-तुट्ठि-कारए अभिसेए इमं सकलं पि य मुदिदं विज्जाधर-राय-मंडलं, परं परम-चिंतोवगदो विमुहो य राया **मायंगदेवो** लक्खिज्जइ । तं सयमेव समाहूय पुच्छह एयं जं कारणं ति । तओ मया सयमेव गंमम(?गंतूण) सविणएणं पुच्छिदो **मायंगदेवो**— देव ! किमेदं चिंता-कारणं ति । सो य पगलियंसु-लोयणो सलिलधरो इव **पाउसकाल-जलधरो** सजल-जलधर-गिरो भणइ- देव ! अहं अविन्नाद-पुरिस-विसेसो निग्गयकारी य तुह उवरिं यं(?तं) च सव्वं पि मम उवगयस्स खमियं तुब्भेहिं, किंतु संपयं जा सा **नीलयसा**-लेहवणे(?) मया सह पिय-धूदुगा बद्धा तुह वधू **वेरुलियमाला** सा अज्ज वि बंधणपीलिदा अच्छइ । इमं च तुह अभिसेयऽब्भुदय-महिमा णं संपत्तं । तुह यावि गेब्भ(?)-मंडलं सव्वं पि इह सन्निहिदं पेच्छइ भे सिरि-समुदयं, परं मम सुदा इहं नत्थि । एदं मे चिंता कारणं ति ।

एयं च सोऊण मया तक्खणं चेव **मायंगदेव**-पुरिसेहिं सह **अंसुमंत-सम्मतदेव-दमणा** विसज्जिदा **मातंगपुरम्मि** । ते य अचिरेणेव सपरियणं

वेरुलियमालं घेत्तूण मम सगासमागदा । पणमंती य मया अवतासिया ससिणेहं रुयंती य दुक्ख-विधुरा पियं भणंतेणं अभिप्पसादिता पूइदा य मे। तओ सुंदरे तिहि-करण-दिवस-णक्खत्त-मुहुत्ते पयत्तं मे अभिसेयऽब्भुदयं, मह विभूदीए सीहासणोवविट्ठो महदा तुरिय-निनादेणं नट्ट-गुण-गीद-वाइद-रवेण य जय-जय-सद्दाभणंदितस्स पयत्तो मे अभिसेयो ।

अह य तम्मि नाणा-मणि-रयण-खंभसय-सन्निविट्ठे अब्भुवगद-पहसिद-मूसिद-सिय-कमल-जलधर-पंजरंतर-मणि-रयणुम्मिल्ल-पुंडरिय-तिलय-पंकय-वियसिय[३]रयणद्ध-चंद-वारवित्ते(?) फुल्ल-पउमावलि-वसंत-सागर-तरंग-मणि-रयण-भत्ति-परिमंडियाभिरामे नाणा-मणि-कणग-रयण-मुत्ता-विकप्प-विद्रुम-विभत्ति-वर-सालभंजिया-कलिदे सकमल-कणग-घंटिया-किणकिणेंत-वर-पंचवन्न-दूस-पडागोवसोभियम्मि ससि-किरण-पंडुरे सव्व-रयणामयम्मि अभिसेय-मंडवे अंतो-बहिं च विक्खित्त-सरस-सुरभि वर-पंच-वन्न-कुसुमोवयार-कलिए नाणाविध-दूस-वंगोरि(?)-रयण-करंडय-विकप्प-फल-हरिद(?)य-पादविरूढक(?) विइत्त-साभ(?) सिद्धत्थय-हरिदालिया-पत्त-तय-रोयाग-[त]रु-समुगल(?सुमंगल)-वारोवसोभिद(?दे) सुकय-बलि-विधाण-नाणाविध-खज्ज-भोज्जण्ण-पाण-पूद-विणत्थ-संकुले य कओ दुव्वंकुर-हरिदालिय-मणि-रयण-विहित्त-पेढोवरि सुकद-कणगामय-सपादपीढ-सीहासण-गओ उवरिम-भाग-संठिद-ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-रुरु-चमर-सरभ-संवर-करि-कुररग-सोभिदा(?दे) विदाण-मणि-ग(?क)णग-मुत्त-दामोवंतसमदिकंत-चामर-भारहकार(?)-गंभीर-विविध-वर-कुसुम-दामोवसोभिदमुदारे बहु-जण-मण-णयण-विम्हयकरे वर-पंचवन्न-पइसर(?)निबद्ध-राय-सिद्धत्थय-सणाह-करबद्धकंकणो तत्थ हं गहिद-किमिराग-साडय-नियंसणो पढमं चिय मरुगंधिय-तेल्ल-तुप्पिद-सरीरो सयमेव विज्जाधर-राईहिं अट्ठि-मुहाए मंस-तय-रोम-मुहाए य संवाधे(?हे)उं सुरभि-वासेहिं य उव्वट्टणएहिं उव्वट्टिओ य, तहि य सुद्धंत संख-पडह-भेरि-दुंदुभि-निनादेणं अलिदति(?) पुक्खरादोज्ज-हुदुडा(?हुडुक्का)-सद्द-संमीसिद-नट्ट-नाडग-सहस्स-गंभीर-पडिभिन्न-मणहर-घोस-संदानिय-जयजयसद्द-निग्घोसेणं हक्खुत्ता णाणा-विगप्प-सोहा अभिसेय-दालसाओ(?) । तदो पासट्ठिय-सललियाभरण-खयर-तरुणि-सुरभि-वास-संचारिद-चारु-चामरा-भरो समूसियातपत्तो पमुदिद-खयर-गण-बंदि-मागध-मूद(?थुदि)पाढय-सहस्स-संथ[?व]माणो, हरिसिद-वधु-वदणय-कमल-दिणगरत्तणं कुणमाणो,

अभिसित्तो हं कमेण महदा विमूदीए गंधोदय-पुप्फोदय-सुद्धोदय-तिविध-सलिलाभिसित्तो अधिय विरायंतो ।

कल्लाणक-पवर-मज्जणावसाणे य मिअमद-चंदपडि(?)-गागलु-(?गुग्गुलु)-सुरभि-वासिताए गंधकासाईए लूहिदंगो [४]अदडवड(?)-सुरभि-वासिद-सुहुम-हयलालापेलवं दूस-जवलं परिहिदो हं । तओ सरसेणं सुरभि-गोसीस-चंदणेणं विलित्तो हं राइणा विछित्ति पिदुपादोवसोभियस्स य आरुहिओ हं मे हाडग-मणि-रयण-[५]मुंठिउसूल(?)-पदरग-समुज्जलो हेट्ठा विणत्थ-कणग-यूथिका-वासुल-पारिदा(?जा)द-[६]वमालामिलिद(?)-गवलिद(?) बालमंदार-कमलपत्त(?) गज-गदिसु [७]खित्तो(?) चूलामणि-रयण-किरण-पज्जलिद-दुन्निरिक्खो रिक्ख-पडिसरिस-भासो सिएसकुडो(?), अज्जुण-सुवन्नमयाणि य सुरपति-प्पिय-पवर-मरगद-खंड-समुब्भासिताणि पिणिद्धाणि मे **ससिकंत**-देव-दिन्नाइं कन्नेसु कुंडलाइं, वेरुलिय-पवर-नालोवसोभिद-वर-पंचवन्न-मणि-[८]पारिकल्ल(?)-कलितो मुत्ता-पदरक-लग्ग-कक्केदण-रदण-विदीविओ य कदो मे दाहिण कन्ने कन्नपूरओ, सकल-विमल-नित्तूल-सुलक्खण-सोवीरकरो दिप्पमाण-सोभिद-सिलिट्ठ-कीडपक्खय-पवर-मरगय-मज्झदेस-सोभिणि य आविद्धा मे गले कंठिया पविभाग-निविट्ठि-वर-पउमरागमणि-खंडिया(?) पज्जोविय-कणग-वज्ज-संदाणिदा वेब्भ(?)-मुत्ता-दुगुल पिट्ठदो दुवस्ससेकिरी(?) पिणद्धताका(?) तह य नित्तूल-[९]विमल-सलगअट्ठारिदविगक्कक्करि(?) वालमच्छिया पदरय-केऊर-कडग-हाडगंगुलेज्जकहुरवत्थ(?)-वेगसुत्तग(?)-विइत्त-सुसोभिद-रयण-पालंब-पादचुपग(?)आमदिय(?आदि य)-सुकदाभरणो इंद-विमाणुग्गदो इव कप्परुक्खो नाणा-मणि-कणग-रयण-निउणोवि(?चि)द-मिसिमिसिमिसेंत-आबद्ध-वीरवलओ पच्चक्ख-सुरपदी विव विराइत्थ अन्नमयं च सव्व-[१०]भूसण-[११]तारहिकुसरो(?) य [१२]णवरावेन्नगादि(?) सुकद-वच्छित्ति-विरइद [१३]मकपियक्का(?) कुंकुम-तयपत्तोसीर-मिगमद-सुगंध-खयर-जवरिद(?)-संचारिद(?)-खेवयवाद(?) निव्वविद(?)-विलेवणो सरदिंदु-समत्त-मंडल-क्खंभ-सरिस-कणग-घरुह(?)-विवित्त-पुरुदो(?) [१४]वरिदे विमलादंसम-णुलोक(?) मसोयसिरिदामादि-सुकद-मल्लोवसोभस्स ताहे मे उवणीदं कणगं जणीकतं पवर-चामीकर-पत्ततया(?)-समभागं परम-सुहुम-रुचिदं परम-सोभग्ग-जणणं सव्व-नयणामयं दोसहरं सोदंजणं । ताहे मे तदो माहिंद-

वेरुलियमालागार-दप्पणावलोगिणा अंजिआणि मे नयणाइं । ताहे खयर-रायऽग्गमहिसीहिं कणग-पाद-णिहिट्ठ-पणियमज्झिट्ठिय(?)-कणगं पुरुहुपत्तगसु(?) कदाकरुपट्टिव(?)वेढिद-सुरभि-तेल्ल-दीविगासु कद-सीसमप्पोहारासु(?) कणग-भिंगार-निसट्ठ-सुरभिमखिल दीह धराणुबद्धं पुरओ आदिकर-मंडला णिव्वाविगा दीविया । तदणंतरं च समपत्त(?)क्खय-सहियं पाव-दिट्ठि-निवारणत्थं लवणं दहंति ।

एदम्मि देस-काले खयर-राईसु सेसेसु वि पुणो निवेदिदाइं निसट्ठा(?) नियय-रज्जद्धरज्जाइ कयंजलि-पणाम-जय-सद्दा य पुरदो परिसंठिया मे कयाभिसेयस्स सुरपइणो *इव पुरओ सुर-निवहा । तओ हं कयाभि[?से]ओ महदा विभूतीए पूइद-जिण-बिंबो पडिलाभेसीय परम-भत्तीए सुविहिद-जणाणंतरमेव पूइदा मे खयर-राइणो* य सपरिवारा । एवं कयाभिसेओ दइदा-जण-मज्झ-गओ जहा-सुहं अभिरमामि ।

एयम्मि देस-काले पसूदा पुत्तं देवी **विज्जुमती** सुरूवं पवर-लक्खणंकियं । तस्स य मे विभूदीए कतं जातकम्मं । पुव्वं च तस्स दोहल-काले जणणीए से अणाधट्ठा(?) अहेसीय, पुणो य मदिय-कुलं-पुरिस-परंपरागयं अणाधट्ठि त्ति से कदं नाम । सो य **अणाधट्ठि** धादीजण-संपरिवुडो सुहेणं परिवड्ढइ ।

अन्नदा य ममं **वक्कणाभपुर**-पत्थिवो राया **वायुवेगो** विन्नवेइ—देव! इच्छामि तुब्भेहिं सपत्तीएहिं सवयंसेहिं विज्जाहर-रायचक्क-सहिदेहिं च **वक्कणाहपुरा**भिगदेहिं अप्पाणं अणुग्गहिज्जेतं(?व्वं) ति । मया य तस्स बहुमाणेणं अब्भुवगदं गमणं । तओ हं सव्विड्ढीए सहपत्तीसु सवयंसो विमाणारूढो सव्व-विज्जाधर-राय-वाहिणि-सहिओ गओ तेण सह **वक्कनाभ**-नगरं, आवासितो य मि तस्स तेण विहिद सपरिवारो जोग्गे कणग-पासादे । विहिदा य मे **वायुवेगेण** राइणा विउला अग्घ-पूया, ताहे य सेसाण वि खयर-राईणं । विधिणा य सपरिवारो सुकद-मज्जणाभरणो च्छेयारालिग(?)-विहिद-पज्जत्त-भोयणो **वायुवेगेण** देवदाएमिव भत्तीए सेविज्जमाणो पइ-दिवसं परिवड्ढमाण-भोगसिरि-समुदओ गमेमि कदिइ दिणाइं ।

अन्नदा य अहं अचिरुग्गदे दिणयरे अवलोगणयगतो रम्माइं नगरोववणाइं दट्ठूणं सणू(?मू)सुओ **सम्मददेव**-सहिओ परिजणच्छलेणं बाहिं विणिग्गओ रयदगिरि-विवर-परिसरेसु अणुसरंतो । तत्थ य **वायुवेग**-संतियाइं

कुसुमित-लदा-विदाण-पादव-सुरभि-थवयाभिरामाइं उववणाइं पेच्छमाणो अल्लीणो हं एक्कं **वेदड्ढगिरि**-सिहर-निज्झर-प्पवहं पुलिण-पदं **पुलिणवीथी** नाम सकमलुप्पल-सोभिदं णिण्णगं ति । कुसुमित-लदा-विदाण-कमल-संड-मंडिदं अणुसरंतो पेच्छामि तत्थ सुरभि-सीदल-सलिल-तीर-तरंग-कदं सिकदा-घर-रमण-लग्ग-हिदयं **वायुवेग**-भगिणिं कण्णगं **पभंजणवेगं** । तं च मे दट्ठूणं पसुत्त-दिसं पिव जहा सोदामणि-दंसणेण य तीसे मुद्धाइदं दुहि(?)-मदण-विसं मे । पुव्वं च गोरिव्वदिय-काले तिंदूसग-खेलणादि-दंसणेण य तीसे अवसरि(?)उप्पन्न-पीति-पणयाणुरागो अतीव अज्झोववन्नो हं। न य सा सिकदा-घर-रमण-लग्ग-हिदया ईसिं पि ममं अवलोएइ । भणिदो य मे **सम्मतदेवो** - वयंस ! चिरप्पभिदि बहुमदा मे एस कन्नगा । किह पुण मे एसा अवलोगेज्ज ? त्ति । तेण भणियं— किह तुब्भं एदीए अवलोगयंतीए?। मया भणियं— इच्छिज्जदि हु हिदय-वल्लभो जणो ण य [१५]वहिकरेण(?) व संबज्झमाणो त्ति । तेण भणियं—जइ एवं तओ पीणेट्टया-प्पहार-परंपराए पाडेमि से सिकदा-घरयं जा ते सामरिसावलोयणं करेदि । एवं [१६]भणंतेणं तेण य तुब्भ णदीओ पणामिदा रयद-पत्थर-पीणेट्टया, तेसु य उभय-करग्गंगुलि-संपेसिएसु तालिज्जंतं पि ण पडिदं सिकदा-घरं । किंतु तीए कुवलय-दल-मालाणुकारिणीए नयणुप्पल-रिंछोलीए सललिदमवलोकितो हं.। ताहे अदि विम्हिदा पुणो [१७]परमिदा(?) य ।

तओ मया आसन्नयेरं आसरिऊणं सणीयं पादंगुट्ठेणं पाडिदं से सिकदा-घरयं । तओ तीए कमल-दल-कोमलेणं करेणं [१८]अमयं पिव जोसयंतीए ईसिं पहसमाणीए मोणव्वदेणं चेव [१९]पेल्लिओ मम चलणो, तह पुणो हेट्ठामुही आढत्ता अन्नं सिकदा-घरयं । तदो मया भणिए करणे(?) [.....] कीस पुण इदाणिं मज्झत्थं किं पि न वाहरसि ? । जइ एवं पि भन्नमाणी न किंचि पडिभणइ ताहे से मया पुणो वि पादेणोल्लियं सिकदा-घरं । तम्मि पणोल्लिदे समाणे खर-भिउडि-बद्ध-वयणा 'किमेस अत्ताणं न [२०]मुंपादि(?) त्ति वोत्तूण अवणिऊण य मम [.....] [२१]उव्विद्ठइ रतीव(?) मुहुत्तं(?) म जीविदासि जाव ते किंचि परिकहेमि (?मम जीविदेण साविदा सि जाव ण किंचि परिकहेसि) त्ति । तओ सा पयदि-मधुरा वि णिट्ठुरा ममं भणइ—अहो ! न नज्जइ का तवाहं जओ मे स-जीविएणं सावयसि ? । एवं भणंती खणमेत्तं विलंबिऊणं मम वाहरमाणस्स व सगासेणं उप्पदिदुं गदा णिरासा सणगरं ।

तओ हं तीए अणुप्पहेणं पणय-विमाणणेणमवमाणिओ हंगतो(?) चिंतिदुं पयत्तो—किं णु खलु अलियमेव तं जं एसा मया गोरिव्वदिएण ममोवरिं अणुरागं समुव्वहंती लक्खिदा ? अहो ! असासयं(?या) पीदिं(?दि), न य सिणेहाणुरागेण जाव तीओ(?) । एवं चिंतयंतस्स मम अवमाण-पणय-भंग-संदूसिय(?या) व[य]ण-च्छाया संवुत्ता । भणिओ य मया **सम्मददेवो**-सोम्म! ण तुमे ममेसा अणुइद-विमाणणा मे पत्तीणं वयंसाण वा अन्नस्स वा कस्सइ कहणिज्जा । [२२]विमुड्डहं(?) स(?म)दा वि एदं जत्थ तत्थ व कंड(?ठ)-गप्पाणगदं(?गदप्पाणं) बाल-सहाव-सरिसं बहु-भासित्तणं पलोट्ट-जीहत्तणं च ते भणियं (?) निवेदिदा मम बहुभासित्तणेण(?) तओ एयं मे संपुडियं मुहं, गहिदं मे अज्जप्पभिति मोनव्वदं ति ।

तओ हं पणय-विमाणणा-विवन्न-वयण-च्छादा(?दो) गदं(?दो) नगरं नियय-वासं च । तत्थ य अंतेपुराभिणंदिमो(?ओ) तलिम-तल-गदानुसिट्ठीओ(?) वि(?ठि)ओ हं । अह **पभावदी** ममं विवन्न-वयणं लक्खेदूणं भणइ- केण पुण एयं पवर-सुरभि-बद्ध-सुद्ध-पुखुरीय(?पुंडरीय)-सरिसं अज्जउत्तस्स वयण-पुंडरियं विवन्नयमुवणीदं ? किं नु हु से केण-इ निग्घिण-हिदएण मन्नुं समुप्पाडियं ? ति । **सामलीए** भणियं— को णु हु सो एरिसो माणुस-विसेसो होहिति जो अम्हं [२३]नायगस्स मन्नुं उप्पाएहि ? त्ति । मदा भणियाओ— न खलु मम कोई विप्पियं करेइ, किंतु उण्हे परिब्भमिऊणमागओ हं तेण मे उसिण-परिदावेणं एरिसा मुहच्छाया संवुत्ता । **पभावती**ए भणियं— पुरा वि णं तुब्भेसु उण्हे परिब्भमिद-पुव्वयं, न पुण कदाइ एरिसा मुह-च्छाया अहेसि । एवं भणंती **सम्मद**देवं पुच्छइ— कत्थ पुण अज्जपुत्तो गओ आसि ? सो य हत्थ-संवरिय-मुहो तासिं कोदुकुप्पादण-निमित्तेणं दिट्ठीए सण्णेहि जहा—एदेण मे मोणमादिट्ठं ति । तओ **पभावतीए** भणियं—[२४]निक्कारणमरहदि(?) एदेण बाहिं विणिग्गदेणं को वि हिदय-वल्लभा खयर-कन्नगा दिट्ठा होहिति । तीए य से पणय-भंगो कओ [?होहिति]। **सम्मददेवो** य णेण भणिओ—'न एदं कारणं तुमे कस्सइ कहणिज्जं ।' तओ एस सामिणो विवन्न-वयणया, **सम्मददेव**स्स य मोण-कारणं ति ।

तओ एवं **पभावदी**ए परमत्थदो [२५]कड्ढिदे हिदयेय **सम्मतदेवे**णं कहकहस्स [ह]सिदं, लंघिदा य मोणग्गला, भणदि य—साधु कदं अहो ! विणा वि आभोगिणीए परमत्थो वित्रातं(?तो) देवीए **पभावती**ए । किं-भणह,

देवि ! देवस्स नदि-तीरे **पभंजणवेगा** पणय-भंगं काउं सद्दावेंतस्स पलाया, नाहं एवं भणामि त्ति । तओ **पभावतीए** भणियं—हला ! गहिदो च्चिय अत्थो। तओ सव्वाओ वि मे पत्तीओ सललियं पहसियाओ । तओ **अणिलयसाए** भणितं—हला ! नूणं न ताव अज्ज वि सा कन्नगा पडिपुण्ण-जोव्वणोदया होइ । तओ तीए अज्जपुत्तस्स पणयभंगो कओ । तओ सासूयं सपरिहासं च भणियं **वेगवदीए**— नूणं न सव्वो जणो पेलव-हिदओ जहा **वेगवदी** । निग्घिणो वि हु जणो अत्थि त्ति । **अनिलयसाए** भणियं—जो निग्घिणो न भवति सो तहा तलसारिज्जइ जहा हं तलसारिदा आसि । **वेरुलियमालाए** भणियं—[२६]घाणेते(?) हला ! किं न दंसियं दुज्जणं ति । **हेमजसाए** भणियं—होदु हला ! अज्जपुत्तम्मि अधिदिपत्ते मा ताव एत्तियं कालं [२७]करेह त्ति ।

अहं तु तुसिणीओ न कस्सइ किंचिदवि विहारं(?) देमि । अल्लिइदूण य मम सगासं सइरं परिहाससीला **हेमयसा** भणइ मं कन्न-मूले—कायर ! अलं ते अत्थाणे अधिदिका(?क)रणेणं, अलं च तीए णिग्घिणाए कुल-माण-गव्विदाए । अहं चिय ते रूव ठिदा अणूणं [२८]सुणं करेहं(?) । तीए य एवमादि मुद्ध-वयण-पणासिदावमाण-दुक्खो सणीयं पहसीओ हं । एव य तासिं सासूयाइं परिहास-वयणाइं सुणंतो अच्छामि ।

अह य आगओ तत्थ राया **अंसुमंतो** । तस्स मे तं कारणं निवेदिदं । तेण य भणिओ हं—सामि ! अलं विसादेणं । भयदि चेव तुह राया **वायुवेगो** । एस अहं अज्जेव तुह कएण मग्गामि त्ति(?तं) कन्नगं, दाहि णियमा सो तुहं । किं पुण गंभीरत्तणं । एत्थ जोग्गं होंतं सयमेव सो तुह भगिणिं पयच्छंतो । मया भणियं—सोमा(?म)! [२९]लंकारहरणेणं(?) अज्जेव मग्गिज्जउ त्ति । तेण तह त्ति पडिवन्नं । गदो य सो **वायुवेग**-सगासं । तेण य सबहुमाणं भणिओ—सोम्म ! संदिसह जेण कारणेणं [आगओ सि] ति। **अंसुमंतेण** परिहार-पुव्वेणं भणिदो—रायं ! विसज्जेह किर देवं **तातपुर**-गमणूसुय-मणं । अदि महंतो किर ते अम्ह णीसाए विज्जाहर-रायचक्केणं उवरोधो, चिरं कओ तेण तुह अवतिण्हा ति अम्ह सामि संपट्ठिदा(?) । सो य मे सइरमुस्सारेउं भणइ- महाराय **अंसुमंत** ! नत्थि मे महदि-अणुग्गहे अवरोहो । मणोरहेसु मे सामिपादा घरमागदा । जेण य कारणेण सामिणो मया उवेच्च *गंतूण इहाणिदा तं दियस-वेगल्लदाए ण ताव पडिपूरइ । अविय,

किं न इक्खामि(?) तए य **वायुमित्त**स्स विज्जाधरपइणो **विज्जुमती**ए देवीए अत्तिया मम कणीयसा भगिणी **पभंजणवेगा** एसा विरोप्पाए(?) मया देवस्स समिच्छिया(?) । तदत्थं च तुब्भे इहमाणिया । तं एयं कज्जं तुमं सयमेव सामिणो निवेदेहि । सुए चिय पाणिग्गहण-दियसं ति ।

एयं सोऊण **अंसुमंतो** परम-णीतो(?मुदितो) मम पासं समल्लीणो । तेण दु जहाभूदं सव्वं मम णिवेदिदं । तं च सोऊण मया चिंतियं-साधु कदं **अंसुमंतेण** । दुल्लभा हु एरिसा । अहो एदेण अपानुगंतेण(?) वि मम हिदयं घडियंचिय(?) कारणं ति । तओ बिदिय-दिणे **वायुवेगा**णत्तीए परिजणेण मे पयट्टियं पडिकम्मं कंचणपीढ-निसन्नं । ममं सयमेव **वायुवेग**ग्गमहिसीओ सह मम पियासु आढत्ताओ संपसाधेउं । पुव्वं छेय-कास-वसुरदणक्खम्मस्स(?) कमेण कयं मे अब्भंगुव्वलण-मज्जण-विहाणं । तओ अभिमद-जण-विणय-मणोभिलसित-पवर-वेस-भूसणो घण(?)लच्छि-सुकयालंकार-परिमणि(?मंडि)ओ अधिरं चिरयित्थ(?) अधियत्थ(?) पियाओ मे से पहासीसावयणडिताओ(?) वि मंगल-सुकद-कोदुग-करणुज्जदाओ सललिदं परिहसंति ।

तओ दइदाजण-सुहिजण-खयरपदि-पयदंसहिद(?)-परिमुदिद-परियण-परिवुडो **वायुवेग**-राइणा अंतेउरं पडिणीतो हं । तत्थ वि कंचणपीढोवविट्ठस्स पुणरवि समंत-कय-कोदुय-मंगलोवयारस्स मद(?ह)दा तुरिय-गीद-वाइदा(?दर)वेण कय-कोदुय-मंगला वेदि-समीवे ट्ठियस्स मम समीवं उवणीदा **पभंजणवेगा** पया(?भा)वइ-सम्मोणउउब्भाएणं(?) तप्पओ(?) य मधु-लाया-सुखसानररोदद्ध(?)ऽनक्खदेसु च । तओ हं तीए तरुण-चगोर-सलोयणाए रोदाग-कुसुम-सरिस-कर-चरण-जीह-तालाधरोट्ठीए(?) । तं च सरिस-सुकय-णक्खोवरायाए(?) राइणा **वायुवेगे**ण गाहितो हं पाणिं । पओस-काले च नियय़ावास-गदस्स स(?उ)वणीदा मे पासं सहीसु **पभंजणवेगा** । तत्थ य रयण-पासादंतो आगासपालिया-विमल-चदुक्खंभ-सीसायासरिद (?) कणग-संकुला बद्धंतप्पसय(?)-सयणीयसु कणय-रयोत्ताण-पट्टतूलि-बिद्धोअण(?णिधुवणं), अवरं च कणग-मणि-रयण-मुत्तिओचूल-चमर-भारावलंबिद-सुरभि-कुसुमद्ध(?)-सुकद-विविह-पउमावलि विगड-विगप्पोवसोभियं णर-पंचवन्न-दूस-गिरिपडय(?)-दुपुडापरंत-लग्गसणि(?) कणग-घंटिया-जाल-पचलिद सयणिज्ज-संकलालग्ग-

किंकिणि-किणिकिणेंत-कल-निस्सरं(?णं) । रदि-सुद(?ह)-जोग्गं तं निधुवणं समारोविया ते(?मे) **पभंजणवेगा** तत्थ य मे । सा चल-भुमया-भाग-भंगुगुलिद(?)-णयण-भमर-पक्खमाला-विराइद-वदण-कमला इसी सक्करंती सरीरयं अवहरदि वणयं(?वयणं) तहा वि से मया बला आकड्ढिऊण लवणं(?) समरेणचपरिण(?) सुरभि-मयरंद-मंधेय(?)-पउमं पिव चक्खियं मे ।

अह पियाओ वादि(?)सुह-मंडवोवविट्ठाओ संगहे वि परम-मुदिदाओ संगहिद-पवर-पडिनिवेसु(?) वीणा-विवंचि-विविध-संजणिद-निग्घोसाओ सललिय-कंदप्प-केलि-कोलाहल-पियाओ मम हिदय-गद-भावं सूययंतीओ अधेदीव(?) मधुरक्खरालाव-कवलवल्लकी(?)-निनादेण वल्लकी उवगीदाओ । अवि य-

लज्जाभर-पल्हत्थं अपगब्भं आदि नववधूयणं ।
केसर-सर-पल्हत्थं सभरं पंकयं चेव ॥

जह जह ह(?अ)वहरइ मुहं, नववधु पविलोल-[?ण]यणं तलिमे ।
तह तह पियस्स मदणो गाढतरालिंगणं कुणइ ॥

ज़ं जब्भति(?जुज्झति) नव-वधुआ कर-कलह-विलोल-लोयणा सयणे ।
रभसुगुजदिदवच्छाइं(?) तं वियस्स(?) मायणस्स(?) पढमत्थं ॥

एयं य तासिं समही(?) सगीदत्थसुयं(?) सुणंतो तासिं कलवलय-परिहेर-करणक(?) णेपुर-रसणा-कलाव-संघाद-जणिद-कलकलहास-णिणाद य चलिगतरं(?) जणिद-मयण-रागो सह णववधूए अइव सुरदिदसमणित(?) घणिद-हहायविकयथूण(?)करणायास पविलोल-सेय-रुसिदंगीए किंपि तक्कालमसंमदा(?) रदि-सुहाए समं अभिरमामि । एगंत-रदि-पसत्तस्स मे अलद्ध-निद्दस्स सुहेण समदिच्छिया रत्ती । निसावगमे य ममं नव-रइ-संतरोवभोग-जणिद-खेदं संगीद-सद्द-पडिबोध(?धि)यं विमुक्क-सयणिज्जं उवगंतूण पियाओ मे सुह-सइदं पुच्छंति । महा(?या) तु बाढं सुह-सइदमिति भणियाओ । [तओ] **पभावती**ए भणिदं—हला ! न खलु अज्जपुत्तो सुह-सइदं पुच्छिदव्वो । न एदस्स किंचि सइद-लक्खणं । हा तु कामं पिय-जवदरिदि(?) विमद्द-रभसोवगूहण-जहण-पर(?रि)मलण-नितंब-कंतोरु-गाहण-किलंतस्स सुह-जागरियं पुच्छेति ।

एवं तासु परिहसिज्जमाणो गहिद-मुह-धोवणो तासु चेव कद-पडिकम्मो विणिग्गओ हं वासघरादो, सारदिय-सितब्भ-निवहा विव वउलुएहीं(?) बाहिं सुकद-पुप्फावहा[रा]ए उवट्ठाणसालाए । नाणा-मणि-कणग-रयण-सपादपीढ-सीहासणत्थो वंदिओ हं खयरीसरेहिं सत्थ-निद्धट्ठु(?) नालिगा-गणिद-काल-भिन्नत्थाणि(?)मंडलो वीसामिद-राय-मंडलो पुणरवि अंतेउरं अइगओ । आगया य मे पासं चिर य[...] [?विरइ]द-र(?रु)इर-पडिकम्म-सोभा लच्छीदो पि हु गुणतर-जणिद-लावन्न-सिरि-समुदया* **पभंजणवेगा** । कय-प्पणामा य मयाऽणुन्नादासणे निसन्ना । अभिरमामि य तीए सहिओ जहासुहमिति ।

॥ इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेव-हिंडीए पभंजणवेगा-लंभो णाम पंचवीसइतमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. जिद किल विग्गहो पा. । २. सरस काल पा. । ३. रयणह वंद वारचित्ते पा. । ४. अदडवड पु., अहड सुरभि पा. । ५. मुंडिउंमूल पा. । ६. वमलो० पा. । ७. खित्ते पा. । ८. परिवल्ल पा. । ९. विमल अट्ठा० पु. । १०. भूसणि पा. । ११. ताराहि० पा. । १२. णदरा० पु. । १३. सकापि० पा. । १४. यंरिद पु. । १५. वदिकरेण पा. । १६. भणंतेण य तुब्भ पंदीए पाणामिदा पा. । १७. परिमिदा पा. । १८. अमलं व लाभयंतीए पा.। १९. पेहिओ पु. । २०. मुपामिदि पा. । २१. उव्विहइर ताव पा. । २२. विमुदुहं पा. । २३. कायरस्स पा. । २४. नक्का० पा. । २५. कहिदे पा. । २६. धोणे ते पा. । २७. करेहिसि । पु. । २८. सुरउदक सुणं करेहा पा. । २९. लंकारहीर० पा. । ★ ।छा। वसुदेवहिंडीए मज्झिमकंडे वा पंचासइमो पभंजणवेगालंभो नाम सम्मत्तो ।छा। पु. पा. ।

२६. चउकन्ना-लंभो

एवं तत्थ य पिया-वंद-मज्झ-गओ **वायुवेग**-खयरपदि-पयदोवणीय-पउर-परिभोगो सग्ग-सुहमणुभवामि ।

अह अन्नया कदाइ कोमुदि-दियसे अहं सवयंसो सव्व-पियाजण-पडि(?रि)वुडो कीला-पुव्वं **पुलिणवदि**-णदी-तीरं संपत्तो । अह य तत्थ जहा-सुहं अभिरमंतो पेच्छामि नाइदूरे णदी-तीर-गइं महर्दि दारु-विभयं(?चितयं) तक्खणग्गाहित-हुदवह-पमाणं । पासा(?स)दो य स जलण-प्पवेस-कय-निच्छयाओ चउरो परम-रूववदीओ [1]पुव्व-दिट्ठाओ इव खयर-कन्नगाओ पेच्छामि । भणिओ य अहं वयंसेहि- देव ! पेच्छह जहा इमाओ परम-रूविणीओ चत्तारि कन्नगाओ, चतुरो विव [2]दिसाकुमारीओ एगदो समुवागयाओ किंपि कारणं जाद-निच्छयाओ जातवेदसं अकंडे पविसंति । तं पुच्छह एदाओ कारणं ति । मया भणियं—[3]दिट्ठ-पुव्वाओ पुव्विं मया एदाओ **पभंजणवेगाए** व सगासे कन्नगा-काले, ण पुण निव्वेद-कारणं जाणामि ।

तओ दट्ठूणं तत्थ तक्खणं चेव आउलीभूदा **पभंजणवेगा** सललिद-चदुर-गदि-गामिणी तरिद-तुरियं गदा तासिं सगासं, णादिचिरेण य पडियागंतुं ससंभमा भणइ सेयर(?)-परुदिय-खलिद-मम्म-वयणक्खरा—अज्जपुत्त ! परितायसु त्ति । एदाओ चदुरो वि कन्नगाओ रिद्धमय-विहन्नय(?) सरिसा कन्न-भुमयाओ(?) मम रोसेणं जलिदं जादवेदसं पविसंति । तओ मयाणत्तासु पियासु समयं गहिद विधारिताओ, मया वि उवगंतूणं निवारिताओ । पुच्छिदा य मे **पभंजणवेगा**—सुयणु ! केण पुण कारणेणं एदाओ तुह रोसियाओ ? त्ति । तीए भणियं—महाराय ! न ताव अहं एदं कारणं तुब्भं निवेदइतुं सक्केमि। एदाओ चेव पुच्छह त्ति । तओ मया संदिट्ठो **अंसुमंतो**—सोम ! पुच्छाहि णं एदाओ किउ(?किं) एयं साहस-कारणं ति ।

तओ तेण 'जहाणवेह'त्ति वोत्तूणं सप्पयोगं पुच्छिदाओ—

किमेदमदिदइदमत्ताणं जलणे [४]पक्खिवेहि त्ति । एवं पुच्छिज्जंतीणं तासिं एक्कीए भणितं—को [५]अम्हे पुच्छति ? त्ति । **अंसुमंतेण** भणियं—सयमेव देवो पुच्छइ त्ति । तासु भणियं—एदस्स चेव भो देवस्स [६]निव्वेदेणं अम्हे अग्गिं पविस्सामो। तं च सोऊण मम बुद्धी उप्पन्ना—को णु खलु एत्थ मम अपराधो य ? कोदुगेण य मे पुणो निब्बंधेण रुयमाणी पुच्छिया मे देवी **पभंजणवेगा**—पिए ! साह[ह] ताव मे किमेदं *कारणं ति । सा भणदि—महाराय ! अलमेदाए, ममं पि अणुजाणह जा हं एदासु चेव स[?ह] जलणं पविसामि । न धरेमि एदासु विणा अहमवि जीवियं ति । तओ मया भणियं—देवि ! अलं विसादेणं दि (?ति) । ताव एदं कारणं ममं परिकहेइ(?ह), जा तुहमवि तदाणुरूवं अणुट्ठेमि त्ति ।

ताहे सा कहेइ—महाराय ! सुणह । एदाओ कन्नगाओ चउरो [वि] विज्जाधर-पव[र]-राय-दुहिदाओ । एक्के(?क्की) क्क(?सु)वन्नकूड-पइणा(?णो) **सत्तूमित्तस्स** खय[र]पदिणो **चंदिमाए** देवीए अत्तिया **चंद्रावली** नाम । बिदिया **असोगपुर**-पदिणो **चित्तसत्तुस्स रयणीए** देवीए अत्तिया **संज्झावली** नाम । तदिया **मयंगलोह**वि(?लाहिव)स्स **विहसियसेणस्स असियदयसाए** देवीए अत्तिया **चंदवदी** नाम । चउत्था **मेहपुर**-पत्थिवस्स **निसलस्स** स्त्रो **कमलिणीए** देवीए अत्तिया **कमलमाला** नाम । एदाओ चत्तारि वि मम बाल(?ल्ल)प्पभिदि उप्पन्न-परम-पीति-सिणेहाणुरागाओ अभिक्खणं एक्कओ अभिरमामो । पत्तजोव्वणाहिं य अम्हाहिं तुब्भे वद्धा(?) ववहार-कज्जे नीणिज्जमाणि[?हिं] दिव्वा(?ट्ठा), पविट्ठा य वो समयं पंचण्ह वि जणीण हिदयाइं । परोप्परं च आवकहाए अवियोगत्थिणीहिं [?भणियं]-हला ! एसो पुरिस-व(?गं)धहत्थी अम्हादि(? हिं) अविओगत्थं सव्वाहिं वि समयं भत्ता वरेयव्वो । अणापुच्छिओ एक्का पुव्वदरं उवगच्छइ तओ सेसियाहिं ताहिं ताए य महापादकिणीय समयं विक्कमणिच्चोदेणं(?) अनलो तप्पेदव्वो । जो य तत्थ पादको सो पुव्वासि(?भि)गामिणीए त्ति । एवं कय-संगाराओ जहासुहं अभिरमामो ।

अन्नदा य सव्वाओ वि एगदो समुवागदाओ कीला-पुव्वं महिंद-सेल-प्पएसं गदाओ । सत्थ य त(?तु)ह चेव गुण-संकहा-रत्ताहिं कुसुमुच्चयं करेंतीहिं दिट्ठो सि तुमं तत्थ **गोरिपुरच्चरण**-पडिवन्नो । कदं च ते अम्हाहिं जुवई-रूवं । एवं च वच्चंते काले अन्नदा य अहं एगागिणी तुब्भेहिं इह

नदी-तीरे वालुका-घरएहिं रममाणी दिट्ठा । जं पि य तत्थ तुब्भं मया पणय-भंगो कओ तं पि एदेण चेव कारणेण । जं च मया पढम-समागम-काले रयणीए रुदिगं(? यं) अंगावहरणं च कदं मे तं पि एदेण चेव कारणेण । नयाहं सयंवसा तुब्भे उवगदा, भादुणा बला क(?व)रणं कारिदा हं । तं एस परमत्थो । एदेण कारणेणं एदाओ कन्नगाओ अहं तुब्भं च अवराहेण अत्ताणयं परिच्चयंति त्ति ।

एवं च सोऊण मया मेव(?) **अंसुमंत**-सहिएणं मधुर-वयणेसु सुहीकदाओ । पेसिया य मया तक्खणं चिय तासिं पिदीण लहु-करणा वारेज्ज*-कारणा समयं विज्जाधरा हु(?दु)दा । तओ "ते तासिं पिदरो तं तेसिं मरण-ववसायं सोऊण "हित्थुप्पिच्छा(?) सदेविजण-सचिव-सहिदा अम्ह समीवं जवेण समल्लीणा । ते य विदिद-कारणा ममं पणमिऊणं भणंति—देव ! जीवाविया मो तुब्भेहिं कन्नाणं जीवियं द(?दा)यंतेहिं । एवं भणंतेहिं समयं दिन्नाओ कन्नगाओ, **चक्कनाभेय**-नयरे महदाविभूदीए मातापितेण गाहिओ हं तासिं चतुम्ह(?ण्हं) वि पाणिं । तओ तेसु वि निसद्धद्धर(?)-रज्जो सव्वंतेउर-सहिओ सग्गसुहं(?) अभिरमामि त्ति ॥

॥ "इति धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेव-हिंडीए चउकन्ना-लंभो नाम छव्वीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. पच्च-दिठाओ पु. । २. वेदाकुमारीओ पु. । ३. दिट्ठयपुव्वाओ पा. । ४. पक्खिवामि पा. । ५. अहे पु. । ६. निवेदणं पा. । ★ ★एतच्चिह्नान्तडति पाठः पा प्रतौ एव विद्यते । ७. मे पु. । ८. हिच्छुप्पिच्छा पु. । ९. छ वसुदेवहिंडीए मज्झिम कंडे चउकन्ना लंभओ नाम भारिया गणणाए च्छप्पंचसइमो समत्तो छा॥ पु. पा. ।

२७. पंचकन्ना-लंभो

'एवाहं तत्थ पवराभिगिज्झा-वंद-मज्झ-गओ वि दु सभावाणुरूव-मज्जण-विलेवणाभरण-नट्ट-गुणगीद-वाइदऽक्खित्त-हिदओ विज्जाधर-राईसु सेविज्जमाणो सग्ग-सुहं गमेमि कइ दिवसे ।

अन्नदा य अहं दतो(? तदो) सव्विद्धीए पवर-विमाणारूढो संतेउरो गओ **तातपुरं** । **देवरिसभेण** य रन्ना संतेउरेण कदग्घ-पूओ आवासिओ हं सक्क-विमाण-छंदागारे रयण-पासादे । तत्थ य अणुवमं विसय-सुहमणु-हवमाणो गमेमि कदिइ दियसे ।

अन्नदा य अहं छत्तीसाए(?हिं) विज्जाहर-राय-दुहियाहिं सत्तरसहिं य महिगोयर-राय-धूदाहिं एवं तिपंचासएणं वधु-वंदेण सहिओ अच्छरा-संतियं **रइकरंडयं** नाम पमदवणंतं पविट्ठो हं, तं च सुरभि-सव्वोदुग-कप्पपायव-लदा-विदाण-संछन्नं विविध-विहंगम-कलनिनाद-सुरभि-मधु-मइद(?)-मुदिद-मधुकर-पणोदितं विविध-वल्लि-मंडवग-सोभियं उवरिं हेट्ठा य सुरभि-कुसुम-सत्थरोत्थरियं सकमल-वावि-सोवाण-फलिह-मणि-रयण-वालुगा-बद्ध-सच्छ-सलिलोवसोभियं मणि-कणग-रयण-सोभिय-पेच्छाघर-मंडियं विविध-कलाविगप्प-साधीण-सुकरणं सुर-कीला-रइ-जोग्गं । तत्थ य विविधासु कीलासु खेलिऊणं पच्छा सुरभि-वर-कप्पपादव-कुसुमलदा-पवर-मंडवग-गदो ण्हाद-कदालंकारो गहिद-खोम-जुवलो निसन्नो हं सावस्सग-कणग-पीढे । तत्थ य मे सुह-निसन्नस्स सवयंसस्स उवणीओ मम **मयणवेगाए** परम-सुरभि-गंध-समिद्धो कणग-सिप्प-गदो वन्नगो । तेण य सवयंसो सबंधु-वंदो समालद्धो हं, तस्स य गंधेण आमुक्क-सकल-संताणग-पारिजाद-मंदार-कुंद-चंदण-वणुद्देसा अभिपडिया गंध-लोभिदा अम्हंतेण भमर-मधुकर-गणा । तेण य गंधेणं अमर-वर-वन्नग-गंधं पि अइसयंतेणं आपूरियं पमदवणं । तओ मया गंध-रिद्धि-विम्हिद-मणेणं पुच्छिया **मदणवेगा** एवं—पिए ! किं नामधेयो

पुण एस वन्नगो ? केवतिएसु वा दव्वेसु एस निप्फज्जइ त्ति । तीए भणियं— [२]कारिय(?) एस किर अकारदस्स अम्हं कुलपुरिसस्स **लंकापुरि**-सामिणो खयरपदि-**रामण**स्स सुलभ-मंद-दव्वो पुव्व-संगदिएणं देवेणं परितुट्ठेणं [३]सुविदिट्ठो(?), तओ **विभीसणं** पत्तो । **विभीसणादो** य जग-पुरिस-परंपराए णं **आरिंजयपुरि**-[४]पत्थिवस्स मम पिउ **विज्जुवेग**स्स आगओ। इमाइं च से विधि परिकम्मियाइं, तं जहा—

अगरु-तगराण करिसं कररूह(?)-करिसं च हुट्ठ(?)-करिसं तमालपत्तस्स एसो मियमय-[५]भालत्थेवेन्नगा(?) रायासु(?) केससिविधो(?) लंकाधिवस्स दइओ भण्णइ **मदणंकुसो** नाम ।

एवं एदं गंध-विधाणगं परिकहेदूणं तओ तीए उवणीदाइं मम सवयंसस्स पियाणय-विविध-कुसुम-सुरभि-पंचवन्निय-विगप्प-विरयण-विगयादि-[६]र्चिध(?)-सोभिताइं वासिय(?)-सिरिदाम-गंडमाला, [७]दुंभगल(?)-कण्णपूरग-[८]कंवेगुण(?)-[९]मूकुट-आमेलग-सेहर-[१०]कलद्दण(?) पप्प-[११]पूरणादीयाइं बउल-चंपग-जाति-जूधिया-सुल(?)-संताणग-पारिजात-मंदारिंदीवर-रत्तुप्पल-तमालपत्त-[१२]कहाणामत्तल्लिय(?)-जवा-बंधुजीवय-सहयार-कुंतिमादि(?)-वर-कुसुम-विधाणाइं । तेसिं च वर-कुसुम-विधाणाणं काणिइ इमेण विधाणेण परिकम्मियाइं—

वर-सक्करासवोदय(?) पूसिद(?)-सीयल-[१३]घडमा(?)-सुरभि-[१४]वन्नगाणुलेवणाइं [?इं]दीवर-चंपग-बउल-मालदि-सुकय-वासाइं दमणग-मंसी(?)-मरुद(?व)ग-[१५]पिउक्का(?)-कुंकुम-तमालपत्त-सहियाइं । इमो य सिं(?) धूवो सज्जरस-[१६]णीगहणुसो(?) लज्जं(?)कंठसमसगं(?) पुप्फ-पूरगादिणे-(?दिण्ण)-धूवो गंधदीविणो(?) । एवं सव्वेसिं पि उवणीदाइं कुसुम-विधाणाइं । पुव्वि सकय-मणि-कणगाभरण-[१७]विविलिदाइण(?) [१८]पियाणय मे सव्वासिं पि सुकदाभरणाणं उक्करसोल्लिय(?)[१९] [२०]परिमुक्कालत्त-[२१]कोसमग(?)-हिंगुल-सितादि-समभागे* दिन्न-धूवो एग्घणपदतूवलिकद(?) पुप्फ-एय(?)समभाग-कदवासिओ अधर-पट्ट-रागो दिन्नो **मदणवेगाए** दमणछए(?प)साहणकरो अलंभगो, तह य हिंगुलुगंजणवालग(?)-भ(?ह)रिदाल-मणोसिलालत्तगेसु य समभागेसु* जादी-चंपग-उप्पल-सुकयवासेसु परम-सुहुमेसु सव्वासिं पि तीए कदा विसेसगा [२२]तिलगदावन्न(?)-मंजरि-पत्तलेहिगा भत्ति-विगप्पा णेगविहा । तह य विविध-

वास-वासिदा मणयंजण-सुरभि-त्तत्थय(?) विधि-कप्पा ।

एवं सव्वंतेउर-सहिओ आसादिय-सव्व-सुकदाहरणो सव्व-वयंसेसु सह समसीसीए अभिरमंतो [२३]पणिमित(?) पमदवणं, तं च मम पसाद-समुत्थं वयंसाण मे महिगोयर-पुव्वगाणं खयर-रिद्धीणं । तओ आसारित-विवंचि-समुव्वरंतीए पियाए **गंधव्वदत्ताए** [२४]समुद्धसज्जे(?) गीदं इमेणं अत्थेण—

अहिणव-[२५]पल्लव-भंगं, अकिलेसेण ते समाणेंति ।
जो [२६]दप्पिया मायंगाण मद्दवा [२७]रीसयो होंति ॥

एदं गीदं गादूणं [२८]त(?ता)हे इमं बिदियं पि गायइ, जहा—

उत्तम-सिरिं पि पत्ता मित्त-जणे व(?य) उवणमंतस्स ।
सब्भावा समसीसं वोलेउं नवरं कुलिणा न जाणंति ॥

एवं तीए गीदे समाणे समयं पणय-सिरेसु भणियं वयंसेसु मे— अहो! अवितहमिणं गीदं । साधु कदं अइरियाओ(?) त्ति । एवं च तत्थ विविध-वेणु-वीणा-रवोदीरिद-गंधव्वासु पियासु सेविज्जमाणो मधु-पाणं उवजीविउं हं पयत्तो । कणग-मणि-चसग-भायणेसु मरगद-भायण-सिप्पीसु य परम-सुरभि-परिप्पयंत-नीलुप्पल-तिलअ-बकुल-कमल-जादिफल-लवलि-लवंगेल्ल-पारिजात-कुसुम-गब्भिणेसु दइदा-जण-ससवधोवणीद-विविध-लदावण-गहण-[२९]पीदट्ठपीहवक्खणी(?)-कुविद-पसाधणोवगूहण-लडह-कडक्खायक्खण-असमत्त-बलो [३०]अणद्ध-मुद्ध-जंपण-खलिदक्खर-महुर-मम्मण-वयण-विब्भम-ईसावस-रोस-पसरिद-[३१]पयत्त(?)-सविलास-मद-वियंभिद-रदि-रभस-करण-रमण-भास-[३२]वसभलण(?)-ललगे(?) खेलण-[३३]विज्जो(?) अ विलास-केलि-कलह-गीद-वाइद-गंधव्व-कब्ब-नड-नाडय-णट्ट-[३४]संघट्ट-करण-कुडव-संघट्टण-मज्झ-गओ पाणोवायायण(?)-[३५]सुहो सुहं अभिरमामि ।

तत्थ य तासिं महिगोयर-राय-दुहियाणं सव्वासिं पि विविध-राग-रत्तादंता, विज्जाधरीणं पुण पवर-दगरय-तुसार-भारहरवट्टि(?)-मुणाल-मुत्ताफल-कप्प(?)पप्फुरिद(?)-मल्लिया-कुंदकुसुम-ससि-धवल-विमल-किरणारुणा दसणा । तासिं च ते कक्केल्लग-जादिफल-लवलि-लवंगेल्लकपूर-पूरएणं पूयफल-कप्पिएणं संख-चूण्णग-रुभितेणं(?) परम-सुरभि-तंबोलेणं मधुणा य लालिदा सरदारुण-[३६]वलहसिला(?)-मज्झ-गया व[३७] हंसा(?)

अदीवरअ(?)सोभि[?दा] दंता । [३८]इदरासिं पुण महिगोयरीणं विसेसेणं बंधुजीवय-कुसुम-पतिसन्निभा इंदधणु-मज्झ-गदा इव इंदगोवया जहा पसोभिदा दंता । तओ तासिं दसण-सिरि-सोभा-समुदएणं समक्खिप्पमणाए भणिओ हं **चंदलेहाए**—पियदम ! कीस पुण महि-गोयरीणं दाहिणद्ढभरहगाणं दंता रज्जंति, विज्जाधरीणं [.....]? ति । मया भणिदा— सुंदरि ! महिगोयरीणं अवि सुद्धदराओ असणपाणोसहिओ, तेण तासिं दंता मलं कलकं च गेण्हंति पायद-जणपदस्स ण दु उत्तमाणं । तदो तासिं ओसहीणं [३९]उवयोगाणुकूलत्थं सोभं दिंति दंत-रोग-पडिपादत्थं(?) च रज्जंति, न दु सोभत्थं, विज्जाहराणं पुण विसुद्धोसधि खेत्ताहाराणुभावेणं सुद्धयरं धवलीभवंति दंत-पंतीओ । दंताण य पयइ-धवलं सोभं पसंसंति पंडिय-जणा । तेण कारणेण विज्जाधराणं न रज्जंति [?दंता] ।

तओ सा पुणो वि भणइ—अज्जपुत्त ! कम्हि वत्रे केरिसा दंतच्छाया सोभइ ? मया भणिया— पिए ! सव्व-सत्थेसु धम्म-सुदा विव जहा सव्व-वत्रेसु अविरुद्धा धवला दसणप्पभा । तह वि पुण विसेसेणं कसण-वत्रस्स धवला दंतच्छाया सोभइ। मरगद-गोरस्स पुण पोम-रागा, पियंगु-सामस्स य अव्वुज्झादा(?), पउम-गोरस्स य [४०]अद्धरक्खसा(?), कणग-गोरस्स य जंबूरसगा, ससि-गोरस्स कसिणा इंदायुधा वा सोभं दंति(?देंति) ।

सा मे पुणो भणइ—पियदम ! कहेहि मे दंताण [४१]पासवण-रंग-वट्टिया-विहाणं वेइ(?) । तओ मया भणिया— सुयणु ! सुणाहि दंतान(? णं) खलु विदुस-जण-विहिदा विविधा रागा समक्खादा, तं जधा— पोमरागो कसिणो जंबूरसो अद्धरक्खसो राहुक्कंतो [४२]अड्डुज्झादो छप्पदो इंदायुधो य पुसिओ अवियत्तो य, मूल-भेदे पुण तेसिं इमे सुणह सव्वस्स वि ताव दंतरागस्स पढमं इमा सामन्ना परिकम्मणा पढमताए च्चिय कसाय रुक्खदंतमणेणं(?) दंता दंत-मंसाणि य गाढं उग्गस्सति(?), दाढा-मंसाणि य तिक्ख णहरणेणं उक्कच्छि(?त्ति)ज्जंति । जस्स मंस-विद्धी ण दु सव्वस्स, तओ कढिद-तिफला-गंडूसेहिं पासिज्जंति । पच्छा विभीतय-वट्टी धारिज्जइ, तओ हरीदकि-वट्टी धारिज्जइ, तओ आमलगवट्टी धारिज्जइ । ताहे पुणो वि कढिद-तिफलाए पक्खालिद-वयणस्स बीय-वज्जियाणं पिट्ठाणं अंबिलिया-फलाणं तिन्नि वट्टीओ धारिज्जंति । एसा ताव सव्व-रागाणं पासवण-विधी । तत्थ ताव पोमरागस्स पढमं चिय निप्फीलिद-घणालत्तय-रसेणं विमल-कडच्छय[४३]-

कढिदावतारिएणं दंताणं परिलालणं घणं कीरइ, तओ पच्छा लक्खाए हिंगुलएणं रत्त-चंदणेणं पट्ठिया-लोद्धेणं य देसुवउसु(?) वि समभागेसु सलिल-पिट्ठेसु पुव्व-सज्जिया वट्टी दिज्जइ, रत्तिं दियसं वा धारेइ जाव लग्गो रागो, अवसाणे पुणो वि सिद्धालत्तय-रसेणं परिलालणं कीरइ । केसिं ४५चि पुण अलत्तग-रसो चेव केवलो दिज्जइ, अहवा मधुरो कसारादी(?) कीरइ, नालीए पाणियं पिबइ पिद्धं च तंबोलं समाणेति, लवणं व रसाण य जहन्नेण सत्तरत्तिओ हारो । एसा पोम-राग-विही ।

कसिणाणं वट्टी तं जहा—तिफला लोह-चुन्नं कासीसं लक्खा एदाइं पंच-भागाइं, अंबकंजिणएणं(?) पीसिज्जंति । तओ एरंड-पत्त-पुड-वेढियाइं नेह-भावित-भायण-निक्खित्ताइं धन्नमज्झे निधाविज्जंति, जहन्नेण त्ति-रत्ति-ठिदा वट्टी पुव्व-पडिकम्मिएसु दंतेसु दिज्जइ जाव तेल्ल-गोमुत्ताण य पत्तेयं गंडूस-धारणं कवलियावसाणे कीरइ । एस कसिण-रागो । एदो च्चेव छप्पया उप्पाइज्जंति जहा कसिणाण सु(?उ)वरिल्ला अग्ग-दंता चउरो तिक्ख-णहरणेणं उक्कच्छि(?त्ति)ज्जंति, हेट्ठिल्लाओ य दो वि दाढाओ उक्कत्थि(?त्ति)दा य ण(?) प(?म)ट्टिया-लोट्ठेणं उग्घसणं घणं कीरइ । एसा छप्पि(?प्प)दय-दव(?दंत)-विधी ।

जंबूरसयाणं पुण तं जहा—लक्खाए दो भागा आमलगद्धभागेणं रत्त-चंदणं चउत्थेणं पिंडहलिद्दा चउत्थेणं विवि(?पिव)रिमूलं एदेसु अंबकंजिया-पिट्ठेसु वट्टी कीरइ, एसा वि एरंडपत्त-घदभंड-धन्न-मज्झे णिक्खिवण-विधाणेणं धारेउं तहेव दिज्जइ, अवसाणे तहेव तेल्ल-गोमुत्त-गंडूस-धारणं च कीरइ । एसो जंबूरसयाणं विही । एदस्स चेव रागस्स दसणग्गे पोमरागो दिज्जइ सो अट्ठ(?द्ध)रक्खसो त्ति भण्णइ । जस्स पुण दसणस्स उत्तम-पोमरागा अग्गा कसिणा सो रहुक्कंतो त्ति भन्नइ । जस्स पुण दसणस्स उत्तमा(?), ताणं अग्ग पोमरागो कीरइ, सो अदुज्झइओ(?) नाम । अपरिधारिणी विही- पोमरागस्स कसिणस्स य अंतरा तदिओ पुण हलिद्दा रागो कीरदि, सो इंदायुधो नाम । पुसिदा(?) रागो पुण कच्चएसु उप्प[?रि] दिज्जदि विवित्त-रंगो वुत्तो त्ति । अन्ने वि एवमादिणो कुसल-जण-कप्पिया इच्छाए रागा कीरंति मंजिट्ठा हिं[illegible] गंतुगेवरीयादीसु । सव्वे य पुण रागा रहस्सिदा(?) कीरंति कदामलक-तेल्ल-मत्थगाणां(?) असिणादकाणं(?), सुभयाणं नरनारीणं लहुं लग्गंति थिरा चिय भवंति, दूभगाणं दुक्खेण वि लग्गंति न भवंति य ते थिरा, न य सोभं देंति।

मज्झिमाणं पुण मज्झिमा होंति । **इदि दंत-राग-विधी** ।

तओ **अच्छराए** भणियं—पियदम ! णूणं **चंदलेहा** मरकत-गोरे नियया णणे दंताणं सोभाकरं पउम-रागं अभिलसइ, जओ एसा दंत-विधिं पुच्छदि त्ति । **चंदलेहाए** भणियं—पियदम ! णूणं नत्थि किंचि एरिसं, किंतु सव्वा वि सिक्खिदव्वा देसी भासा कला य विदुसेणं, सव्वत्थ हवइ जोग्गो पुरिसो कणियार-फुल्लं व ।

एवं पियाणं विविध-पुच्छ-जंबुल्लग-विलोभिओ अभिरमिउं विविधं च भत्त-खन्न-पाणं सवयंसो उवजीविउं तदो पविट्ठो नियत्थाणयं संतेउरो । एवं गमेऊणं जइ कोइचियसो(?कइचिय-दिवसा) तओ पडिपेसिया मे **बालचंद्रा** सगासं **सुवेगा-वेगवई**-सेसाण वि विज्जाणं गहणं करेंति त्ति । तेणं तओ तीए गदाए समाणीए तओ कइवाहेगस्स(?) अन्नदा य अत्थाणि(?ण)-वर-गदस्स मम जाणु-णिसुट्ठिदो(?णिवडिदो) **सुदरिसणो** नाम पडिहारो विन्नवेइ—सामि ! उत्तर-सेढीओ **मंदरदेव**-संवज्झो(?) **वदाढो(?)** नाम खयर-राया दोच्चेणं तुह सगासमागओ । सो य वारे चिट्ठइ । संदिसह से पहेसणित्थभ(?) ण वा त्ति। तओ से मया सिढिल-चिर-विलंबिणा अणुन्नादं पयोयणं ।

सुस्सागतं पवर-विज्जाधर-रायचक्क-सहिदं आगास-फालि-उक्खित्तस्स(?) रदण-पादपीढ-सणाह-कणगासण-सीहासणोवगयं पुणरवि पडिगार-परंपरावडिओ विणएणं उवगम्म मम कदप्पणाम विदिन्नाणुरुवो(?) जण-पुव्वयो(?) सोवयारकमकुसलो(?) दत्त-परमत्थ-तत्त-ग्गहणामय-कडच्छय-संडासग-समाणो(?) हु णरपदीणं हद्धा(?) जह-भणिद-संदेस-कारिणो य ननु तत्थ कदु(?डु)क-वयणवादगं जा(?) समाहदा वि सेलपइणो व्व खुब्भंति सप्पुरिसा । अवि य,

न तु तिक्ख-कणग(?कंटग)-विद्धो वि केसरी कणग(?कंटग)-मद्दणं जाणइ ।
कण(?कंट)गस्स पेरयम्मि दुकदम्मि सूरत्तणं लहइ ॥

तं जहा संदेस-वादिणो न रूसिदव्वं दूदस्स । अवि य,

अविकल-समुहावत्ति कत्थइ अइ-राग-पेरियं मोत्तुं
पभुणो जो दु ण साहइ तं दूय-विणासियं जाण ॥

अहवा पभु-संदिट्ठं जधुत्त-वयणं निवेदयंतस्स ।
रूसिद-पर-पक्ख-विहिद-मरणं पि सलाहणिज्जं ति ॥

तं सुणह महाराय **मेहरध**-सुतस्स सव्व-विज्जाहर-लोग-बलवगस्स मंदरगिरि-सरिस-कप्पस्स **मंदरदेवस्स** देव ! संदेसं जहा—किन्न विदिदं वो ममेतम्मि सरिदं(?) चिरकाल-परंपरागदं अणुवमं च बलं, अणुरत्तानि य मे मित्ताइं, समुचिदानि य मे बलाइं, साहीणं य मे पभूदं पुन्नोदयोवज्जिदं पोरिसं, मदिदुग्गाइं मे मंतिणो, निव्वूढरा(?) य बहुविहा जोहा । एवं च कज्जं नाऊणं अत्तहिदं अणुट्ठेध । अवि य, तुमे अजाद-पक्खेण व खगेण जहा अविज्जाधर-वसंसि(?वंसि)एण बहवे किर विज्जाधराणं अविणया कया । मम भाया **घणरथो** तुमे **णंदव**दे(?) वीसत्थो छलेण घटि(?घादि)ओ । मम भगिणीओ तुमे सयमेव अदिन्नाओ पडिवन्नाओ । तं ते पु(?दु)च्चरियं इदाणिं पासमुवागतं तं विदितं वो होतु । मा भणिहिध कापुरिसो इव **मंदरदेवो** अणाइक्खिऊणं आगओ । तओ सज्जा होह, गदिं वा अत्तणो विमग्गधेति ।

तओ सोऊण एव-निट्ठुरं पभासंतो मम पक्खिएहिं विज्जाधर-राईहिं कोवुग्गाखिण(?)-फुलिंग-पिंगल-जलंत-जालावलि-कविल-मालाकुलाहिं नयण-चडुल्लाहिं(?) वि सरोस-दुक्खाहिं समतिक्खत्तो किह वि न विद्दाए त्ति वराओ रोस-वस-चउलदविओभिभो(?) भंगुर-पुरं च(?व) अइ-विसम-दसण-समक्कंताधरोट्ठ-वदणा वलयुग्गदजलिणद(?) दिणकर-कर-निकराकरितकवोला(?) इव दिट्ठीविस-भुयंगमाद्धचंदो(?) त्रिरिक्ख(?)-वयणा संवुत्ता, जादा य महोदधि-क्खोभ-ललिद-सरिस-विब्भमा समत्था सममत्थाणा(?), जातं नयणुव्व(?) ति अमरिस-किरणुव्वमंत(?)-पज्जलियं वयणं **ससिप्पभस्स** तु पलयुग्गद-दिणयर-च्छायं, तह रुसिदेण फरुसं नीससियं तत्थ **वायुवेगेण** जह पलय-मारुएणं व, धणियं संचारिया वुच्छा(?) **विहसितसेणेण** य रोसितेण तह विहसियं सउमत्थं(?) जह फुरिताधर-दसणंतरेसु तडि-संभवो जाओ । वयणं व **चित्तसत्तुस्स** सफरिसं दित्तसत्तुकतारं(?) जादं जलिद-विलोयण-तडि-कवलं पलय-मेहो व्व, हसियं च **सत्तुसेणेण** निट्ठुरं तत्थ वयण-कलुसेणं फुडिदऽट्टहास-विहुरंत-धज(?) जध संचालिया धरणी कोव-कविलाणणेण य **असणिवेगेण** पाडिया दिट्ठी कुंतम्मि विसम-वलिता असणि व्व, पु(?फु)रंत-किरणो ज्जा(?) वामम्मि भुया-सिहरे दाहिण-कर-घाद-महण-संजणिओ (?) **णिसध**स्स

णिसजधरि(?) संनिभम्मि पूसायते **जलणो**। हुंकारितं च विसमं कलिणो उदितेण **सीहदाढेणं**, जाएसिंहरिवुप्पिच्छो(?) करि व्व रोमंचिओ दूओ(?) । अगणित-पडिपक्खेण य हसियं अट्टट्टहास-उम्मीसं **देवरिसभेणं** सपरिद(?) पडिसुआ-सद्द-गंभीरं दाहिण-कर-निम्महियं अमरिस-पुत्रेण **गोरिमंतेण** उद्धदिसमंसवम्मंवा(?) संसग्गं न सुणिततु(?) । अइ-रुसिएण य तहिं णयणग्गि-फुरंत-तारगा चित्ता(?) **चित्तपइणा** दूदस्स कदं(?) दिसा-चक्का । **पवणजवेण** य धणियं आसममाणेण असरिस-**जलिओ** वच्छत्थलम्मि **जलणो** मंदर-कंडओ व्व से जणिओ, **हरिवेगेण** सरोसं भवणे हुंकारितं सुगंभीरं जह-फुरिद-दिसा-चक्कं दर त्ति धरणी-तलं फुडियं, अहियं व समंजिट्ठो(?) दीसइ **मातंगदेवे(?वो)** णयणग्गी-पलय-घणोदर-संभुद-तडिच्छडाडोव-सरिसो व्व । **सीहजसेण** सरोसं सीहेण सकेसरं व नियय-सीसं धुणिऊण अमरिसुण्हा दूतम्मि निवेसिया दिट्ठी । दोसु वि भुयासु समयं ऊरु-विणिक्खित-अग्ग-हत्थासु हसइ **वराहग्गीवो** वराह-अवणाडितं काउं । तह दाहिणोरु-पट्टं **मयूरसेणेण** संदिदं(?) तत्थ जह तप्पभवघणेण धूमेण विवण्णिदो दूओ, अमरिसवस-तंबच्छे भिउडि-करालम्मि **डंडवेगस्स** सेउप्पमणा(?) हेट्ठा अलियमिव निग्गयं रुधिरं, रोसायासुब्भिणा वंदा(?चंडा)-वेगेण **चंडवेगस्स** आढत्ता वो दुज्जे(?) सेअणदी(?) से निडालम्मि, वदणम्मि **दधिमुहस्स** विपयलुग्गय(?) जलित-पूर-सरिसमिपरिसूरग(?)-जवलं पिव लोयण-जवलं सयं जत्थ(?) अइ-चिरस्स सत्तू-दीसहिदि(?) विणीद(?)-रोस-पसरेहिं दीहं **पभंजणेण** वि **पभंजणेणेव** णीससितं, अइरित्तं पि भत्तं पि(?) भणंतो दूतो अवज्जो त्ति वज्जते कारी(?) । विज्जु व **विज्जुवेगस्स** काहिति कित्ति वराओ महाणुभागस्स अम्ह पभुणो त्ति । तेण वयंसेसु सह **हेमदाढेसु** हसितं पि (?) ।

एयम्मि देस-काले पुणो वि दूतेण सामि-भत्तीए भणियं वीसत्थदरं-मा खुभह । अणुद्धता सुणह, इहइं तु

अन्नह त्थिय(?च्चिय) वीसत्थदरेहिं तीरते एक्को समरम्मि ।
अण्णह च्चिय बलवय-पडिपक्ख-पुरओ य सघरम्मि ॥

स(?अ)न्नह च्चिय कामिणी-सत्थे य सुहड-वंदे य कीरइं ।
असरिस-लिंगं अन्नं चिय दित्त-सत्तूसु ॥

तं अलं वो बलवय-विरोधेणं । अवि य सुणह,

जम्हि य अमरिस-संधुक्खिदम्मि चलियम्मि सकल-बल-दिन्न-सन्नाह-भासुरे व्व विलुलित-हत्थ-मच्छ-तिमि-सुंसुमार-कल्लोल-लोल-पाताल-विम्हले खुभित-सागरो सकलो, तह य सुर-रमण-मणहराबद्ध-मुद्ध-गंधव्व-सूरो कप्परुक्ख-वल(?)-पहद-रदण-भूसणुज्जलो चलदि मंदरो सेलो विकलित-किरणजाल-परिमंद-तेयसो णव-दिवाकरो डवति(?) उज्जलाणय(?)-निसागरो मुयति मंतियं(?) विमलं जस्स जसप्पयाव-घण-विइतवत्तिणो(?) सुरगणम्हि तं चंद-राग-तरंगभच्छि(?) नियरोयर(?) विरोधो वहदि संकिओ तिमिरं समर-काल-कुविते य सितिमतिति(?) तिवग्गोव देसहिअं(?), अवरं लुलिदं जलधरंतरक्खुडित-महिधरं चलदि मेदिणी-पट्टं, तम्मि रिवु-दंड-सद्दे सुरिंद-कप्पिम्हि(?) यंदरमणा(?) मे । अत्थाणी(?) खोभेउ जह असुहावज्झे(?) होज्जा । तं एस परमत्थो । अत्थसत्थ-विरुद्धो हु सो बलवय-विरोधो, णूणं वो पच्चंत-देस-परिबुद्धिदाणं रन्न-मयाणं व निच्च-सच्छंदाणं अत्थसत्थ-परोक्खाणं मंतेमि तिवग्गोवदेस-रहियाणं य नत्थि वो कोइ उवदेसओ जओ वंदिद-मंदराइच्चं कथं **मंदरदेवं** दंडेण सामइतुमिच्छह ? । तं अलं वो एदेण असग्गाहेणं । सरणागय-वच्छलो हु **मंदरदेवो**, सामं चिय तुब्भं तेण सह जुज्झइ त्ति ।

ससिप्पभेण य रन्ना भणियं—सामं से रण-मुह-मारियस्स दर-दड्ढस्स अग्गिणा सरीरं काहामो ।

एत्थंतरे **अंसुमंतेण** भणियं—भो दूत ! सुणाहि ताव । इतो एक्कस्स किर कुटुंबियस्स उच्छु-करणं गोमायुगेहिं विणासिज्जइ । तओ तेण कुटुंबिएण वडिकुंडित्थ(?)-पासएणं किह वि एगो जुन्न-सियालो गहिओ । सो य णेणं सेस-सियाल-भेसणत्थं घासिऊणं(?) रयग-संतिए कुंडे निबोलितो, तओ नील-वन्नो संवुत्तो, कत-पडिसराकंडकुदूलो(?) य घंटं गले बंधिदूणं विसज्जिओ, सावदाउलं अडविं पविट्ठो । घंटा-सद्द-बोधितेसु य अवलोगितो सावत-गणेसु। तेसु य अपुव्व-रूव-धारी तेसु आहेवच्चं हवितो(? ठवितो) य ते मंमं कथाकंचहोधे(?) त्ति । न य णं जाणंति सावदा को वि एसो। अन्नदा य सो कुलुय-कुलबोलं(?) सोदूणं उम्मंटाइतो उन्नुइऊणमाढत्तो(?) । तओ सद्द-विसेस-विन्नाद-कारणेणं सीहेण कलि-कुलिसाहदो खयं नीओ । एवं **मंदरदेवो** वि चित्तगदि-रज्जच्छु-करणावहार-लद्ध-माहप्पो महाराय-**वसुदेव**-मइंदोवरि उदावरिओ(?) खयं जाहिति त्ति ।

तओ दूतेण भणियं—भो **अंसुमंत** ! न हु सक्का वालोवसियासु(?) **मंदरदेवो** जेतुं ति ।

एत्थंतरे मया सणीयं वे(?धी)रेऊणं खुडिद-विज्जाहरत्थाण-मंडलं अंतोसरोस निहिदएणं ईसि-दंसित-दसणं परम-निट्ठुरतो सदक्खं भणिओ मे दूतो—किं वो दूत ! तेण तुब्भं **मंदरदेवेणं** मंदबुद्धिणा अहं वाधी विव वड्ढमाणो एव-चिरं उवक्खिदो ? किं तेण एदं चेव कारणं अज्ज विन्नातं ? किं वा सो एव-चिरं(?र)-कालं विसपयुत्तो आसि ? उताहु वाधि-पीलितो वा वराओ ? जति एसो एवं सव्व-बल-समुदितो बलवओ य, तो कीस तेण एवच्चिरं विधीरितं ? एदं से असमत्थत्तणं चिंतेमि । जं पि य भणइ मम भाता तेण घातितो त्ति, तं भण इदाणि तुमं ताव अप्पमत्तो ह[वे]ज्जासि जह मदा भाउणो पधेण ण पेसिज्जसि तह णं करेज्जासि । जं च भणइ मम तेण भगिणीओ सयमेव अदिन्नाओ पडिवन्नाओ, तत्थ वि णियमा महोदधिं पिव महा-नदीओ महापुरिसं उवेंति इत्थि-रयणा य । जति एसो एव साधीण-परक्कमो तओ कीस तेण तावस-रूवेणं भगिणि-वग्गएणेण(?) य ओसही मग्गिता ? एसा वि से असमत्थता जं च सो भणइ जहा हं आगच्छामि त्ति। तं का सत्ती तस्स दाहिण-सेढीए पादे ठवेउं ? एस य अहं सयमेव तस्सोवरिं चलिओ। गच्छ, भण, होहि सज्जो त्ति । जं च पुणो पुणो समत्त-बल-वाहणेण ईसरिंदेण य ममं बीहावेसि, तत्थ णणु समत्त-मंडलं चेव चंदं सिप्पीकयो(?) घसति। अवि य, आसंघंतो रहु गणस्स पच्चक्खं तिहुयणस्स सयलस्स परिहरति [स]सीण बिंबं सकलं घसइ । नूणं सो हीण-बलो जेण पुरा दूत-पेसणं कुणइ । दूतं न वेय निसिरइ पडिय-तमसासणे(?) सूरो अववादो च्चिय एसो णिवतीणं हीणसत्तसाराणं रणयणु(?) वेणु-गहणे दूतं किं हुतवहो छुभइ ? । तं अहो इमं देस-कालोववन्नं **मंदरदेव**-सगासाओ दूतागमणं निय कादरत्तण-पगासकं मम सिरि-समुदय-वद्धावगं । अहमवि एदाइं दियसाइं निव्वावारो दुक्खं अच्छितो, थाणे य अहं तेण सुहप्पसुत्तो सीहो इव कंडेण विबोधितो। अवि य, तेण मम ससुरस्स **चित्तगइस्स** रज्जं हरंतेण महंतो हु अवराहो कओ। तं च से **उदधिघोस**-णगर-भोगं किमिराग-वत्थुरागाधिकार-कारण-पज्झिता(?) विव जलूकाए रुहिरं जहा एस इदाणिं उग्गलेमि से । तं वच्च, दूत ! भण तोत्ति(? होहि) समरसज्जो त्ति । एस अहं सयमेव आगओ हि(?ति) । एवं बहुप्पगारं फरुसिओ विमाणितो गओ जहागदं दूतो ।

अहाहं ससुरेसु सुहीसु य सह संमंतेदूणं, तओ आवाहिता मे सव्वे वि सबल-वाहणा रायाणो जुद्ध-सज्जा । तं जहा—

असणिवेगो, सीहयसो, वराहग्गीवो, सीहदाढो, विज्जुवेगो, दधिमुहो, दंडवेगो, हेमदाढो, पवणजवो, पभंजणो, चित्तगदी, हरिवेगो, मातंगदेवो, ससिकंतो, मयूरसेणो, गोरिमंतो, वायुवेगो, देवरिसभो, सत्तुसेणो—

अन्ने य बहवो सिद्धादेस-वयण-गहियत्था दाहिण-सेढि-वासिणो **वासव, वज्जपाणि, रयणंगद, पिंगलगंधार, मइंद, विज्जमाइणो** पुव्व-सेवा-निमित्तं सव्वे वि सबल-वाहणा ममं समल्लीणा । एवमादिणो सव्वे वि मम संबंधिणो मित्ता य विज्जाधर-रायाणो सव्वे सव्वावाहित-सयल-समुदया जाता दंड-जत्ता-सज्जा । मया य **मंदरदेव**-संतियाणं आतोज्जाणं निनद-माहप्पं सोत्तूणं कारिता मे नियय(?)तोज्जाइं सव्वाणि वि सीदधम्मो(?)नीहिताइं, परिमंतिताणि य मे सव्व-परातोज्ज-घोडणीए सीहमुहि-विज्जाए विदिदवाज्झेणं(?) । विसज्जिताओ य मे दंड-जत्ता-संपट्ठिएण सव्व-पत्तीओ नियय-पिइयाइं सपरिवाराओ, नवरं **मेहमाला**दियाओ उत्तरसेढीयाओ छ जणीओ **मंदरदेव**-सगोत्तिआओ सत्तरस य महिगोयर-रायसुताओ **देवरिसभ**-घरे **अच्छरा**-सगासे ठवियाओ ।

तओ हं पूएऊण अरहंते **णाइंद**-विज्जादेवते य पडिलाभिद-साधु-जणो संन्नद्ध-बद्ध-कवएहिं विज्जाधर-बलेहिं महता हय-गय-रह-पहकर-संकुलेहिं बलेहिं निरुस्सासाइं दिसा-मुहाइं करंतो सुरपति-विमाण-सरिसेहिं विमाणेहिं वइत(?)-सयल-नहंतरालो ण्हाओ कय-बलिकम्मो सव्वालंकार-भूसिय-सरीरो विउरुव्विद-पवर-मणहरूसित-सय-विजय-वेय(ज)यंती-कणग-घंटा-पडाग-सित-छत्त-पंति-कलियं सव्व-रयणमयं भूतजाणं समारूढो हं धरिद-धवलातपत्तो संचारित-चारु-चामर-जुवलो सूत-मागध-मुह-मंगलियादिसु थुव्वमाणो 'जय-जय-जयाहि'ति-सुभ-सद्द-संपूरित-दिसा-चक्को उप्पइओ पवण-पुतगेसुत्तरिअ(?) भूसणुच्चलित-मणि-कर-कराल-पेलवित-दिणकर-करोज्झा(?घो) आखंडल-कुंडलाधुणणमाण-गंडत्थलुच्छलित-मणि-करुज्जल-कवोलो भिन्निदनील-मरकत-फुल्लादसि-कुसुम-सामलं गगणं तह पडु-पडह-भेरी-झल्लरि-दुंदुभि-घण-निनाद-संखसतापूरमाण-णहमग्गो वेदड्ढ-सिहरम्मि विविध-मणि-कणग-रयण-हेम-लताभरण-पादव-समुज्जलं

लंघेऊणऽब्भंतर-हुत्तो खणमेत्तेण य तओ सजल-जलधर-निवहावासपुरं(?रे)ण समुद्दं विदारयंतो व्व पत्तो पत्तल-दुम-संड-मंडियं पमुदिद-खयर-वर-मिहुण-लंघणुल्लिहित-तणु संचालित **वद्धणपुर**-प्पदेसं ।

तं च महा-गइंदं पिव दुल्लंघं रिवु-हरि-वंदाणं, तं च अवसव्वं काऊणं पडिय **मंदरदेव**-संतिएहिं उवतितो हं सुरपति व्व णंदणवणोवमेहिं सव्वोतुग-कप्पपादव-समुज्जलेहिं उज्जाणेहिं । तेसु य ललित-लता-घरोवसोभिदेहिं निय-खंधावार-निवेसं कादूण सण्णिद(?) सद्दो ठिओ हं । पेसियं च मे **मंदरदेवस्स** [दूदं] जहा सुए पभाए जुद्धमिति। तक्खणं चेव कदं बल-दरिसणं मम दूत-पुरओ । पडियागतेण पणतेण [तेण] कहितं मे तस्स बल-वाहण-पमाणं जुद्धं च सुए पभातम्मि । अह य पुव्वं पुव्वावरण्हकाल-समए सहसा घोरंधयारेहिं सविज्ज-उप्पात-भयाणएहिं काल-मेघेहिं सम्मं(?व्वं)तओ छन्नाइं दिसा-मुहाइं, आढत्ता य ते तडि-कुडिल-पिंगलुज्जला निट्ठुर-खर-फरुस-गज्जितस्सरा जलधरा मम बलोवरिं वयित्तं(?) दिहंसुवसग्गं(?) दिसं, महा-घोरं सप्प-वरिसं च मोत्तूणं तेसु य सप्पेसु जो जहा खज्जइ विज्जाहरो सो तक्खणं चेव विसम-विस-घारिओ कालं करेइ।

तं च तहा-भूद-सु(?उ)वसग्गं दट्ठूणं चिंतितं मे—एतं जं सुणिज्जइ **आदिपुराणे** जहा **भरह**-सामिणो चिलाताराधितेसु मेहसुहेसु(?) रूवठितेसु उवसग्गो कओ, तं एते वि **चिलातवद्धण**-णगराधिवा णूण चिलायमयुब्भवा मेच्छा तं देवरूवं पडिवन्ना । एवं चिंतेऊणं तओ मया तक्खणं च देवता-दिन्ना गोरि-विज्जा म(?स)हत्थ-धरिता आगासे अस्सत्थविधेका(?) सव्व-विस-विरामोवसग्ग-पसमणी महोसही, तीए य ठवित-मेदीए खंडेण विलयं गता सह सप्पेसु जलधरा, जे वि मिता ते वि तप्पभावेणं सुह-पसुत्ता इव पडिबुद्धा । नाइ-चिरस्स य पुणो ताणि पेट्ठादेणं(?) सहसा महा-विगराल-घोर-वदणेहिं महा-वियड-बोंदीधरेहिं कालड्ढरत्त-घण-सामलेहिं विडप्पमुह(?) सरिस-जलित-जाला-सहस्स-कव(?वि)ल-पिंगल-पलित्त-मुह-सोत्तेहिं विविध खभरभ(?) तुरग-ऽच्छभल्ल-वदणा विद्दुम-णिवह-महिधरुज्जत हत्थी-बीभत्थेहिं दर[?.....] द्धियंत(?)कुडल-सिर-कलेवर-मडय-णकरकरंताहित-हत्थेहिं(?) अइ-रुक्ख-रोस-रत्ताणणेहिं गय-वग्घ-दीवि-सलभ-ऽच्छभल्ल-चम्म-परिहाणेहिं विउवद्धिद(? विउरुव्विद) विविध-घोर-रूवेसु गहित-विविध-सूल-दल(?)- कुलिस-चक्क-खग्ग-मोग्गर-सत्ति-कुंत-सर-चाव-

पाणीसु परम-दुव्विसह-घोररूव-मयकर-भुयंग-गोणस-धकंधेसु(?) तेसु अब्भाहता मम संतिएसु विज्जाहराणमाणीकिणी ।

तं च रक्खस-सेन्नं दट्ठूणं चिंतितं मे—अरहति एतमवि विज्जाधर-बलवय-सत्तु-विउरुव्वितं ति ।

तओ मया तं देवदा-दीणं(?दिण्णं) ओसहिं मद्दतेयंविऊणं (?) वहिताणि(?) मे नाग-दिन्नाइं खग्ग-खेडयाइं । ताव य पेच्छामि रयणियरेसु तं जीवितं(?) मम संतियं सेन्नं । तओ हं **ससिकंत-वायुवेग-पवणजय-चित्त[वेग]-सत्तुसेण-विहसियसेण-निसढ-गोरिमंत-मातंगदेव-देवरिसभादी**सु खयरराईसु महा-बलवएसु सहितो अभिपडितो हं तम्मि रक्खस-सेन्ने । ते य मया खणेणं हत-विप्पलात-विणासित-णायका संवट्टइ(?य)-वातेण व घणा दिसादिसिं धाडिता रक्खसा । तओ तेसु धाडितेसु **अंसुमंतेण** सहसा अवगत-तिमिर-जलधरं परातं विव विज्जाहराणं लद्धपसरेसु य मम संतिय विज्जाधर-राय-पवर-मत्त-मातंग-निवहेहिं भज्जंति कुसुमिताइं परुणित-मधुकराणि व **मंदरदेव**-संतियाइं उज्जाण-वणाइं, रुअंति व मत्त-गय-पिल्लणावमाण-हताइं किन्नर-विरुतेहिं काणणाइं निम्मूले सुद्ध-पविट्ठाणय पबरुज्जाण-कप्प-पादवाणं किलकिलायंता जीवं पिव उड्डेंति विहग-संघाता, मत्त-गय-कराकड्ढिदुल्लूरिताओ सवेदणाओ विह वेवंति कप्प-पादव-लताओ, निद्दय-दंताभिघात-दूसिताइं व विमल-कुसुमंसुपातेहिं उववत्ताइं, सुव्वंति य गत-चारुत-पडिसुत-सद्द-विरामंतरेहिं **मंदरदेव**-काणण-वण-देवताओ रुअमाणीओ । ताव य मउलावित-सकमल-भरो अत्थं गओ दिवाकरो । उद्दायिता य संनिहिद-बहु-भूत-पिसाय-सुर-वंतरा जाव बलि-होम-हुतासण-करण-पूइता संज्झा, तदवगमे य बहु-सत्त-विगत-विरुता सीवतसतामवि(?) सत्थकुसुकाला(?) विराइत-विग्गहा विमल-गहगण-रिक्ख-तारयाभरण-भासुरा उवागता रत्ती ।

अह मम संतिएहिं विज्जाहरेहिं पउत्ता आय-रक्खा, बद्धाइं दिसा-मुहाइं, ठविया जारिया मंति-वग्गेण य **अंसुमंत**-पमुहेणं सह संमंतेऊण अप्पमाए पडिवन्ना, परम-गंभीर-रिवु-हिदय-फोडणकर-दिन्न-जाम-निग्घोसो, कय-सिद्ध-नमोक्कारो पडिवन्नो हं वीर-सयणं, जाम-सद्द-निद्दयुद्दाम-पसर-चुरिद-दप्पाण य सद्धदुलाणि(?सद्दुलाण) व गइंदाणं गुलुगुलुगुलु-रवेणं खुब्भंति व दिसा-मुहाइं । तत्थ य कहं वि निद्दं लहिदूणं पसुत्तो हं सकल-

पसुत्ते य ममासन्न-संठिए खयर-लोगे । पुणरवि विबुद्धो हं अहाहं तत्थ सुत-पुव्वं पिव कण्णगाणं सइर-संलावं सुणामि, पेच्छामि य तत्थ पुव्व-दिट्ठाओ कन्नगाओ पंच वि **मंदरदेव**-भगिणीओ, तासिं पमुहा **मंदरदेवा** णयम(?णाम)। तीय य ममासन्न-ठिताए भणियं—अहो ! सुह-पसुत्तो विज्जते अज्जपुत्तो । जाणामि से जइ ताणणुन्ना सा वि एतं से तलिमंकदेसं दुरूहिदुं भुया-पंजरंतर-गता पेच्छामि त्ति । तओ मया दरुम्मिलित-लोयणेण चिंतितं- एदाओ हु पंच वि ताओ कन्नगाओ जेसिं कएण मया अस्सत्थ-विधि-को(?ओ)सही परिचत्ता आसि ।

तओ ताए कन्नगाए पुणो भणियं—अहो ! हु ता अम्ह कदेण तदा अज्जपुत्तेणं किह किह वि सा दिव्वोसही हारिता मया पुण दीणाए मुहच्छायाए(?) वारितो इव आसि, न पुण जाणामि अज्जपुत्तेणं तं कारणं विन्नातं ण वेति । भणंति य पुणो सव्वाओ वि—अहो ! अम्हं मंदभागयाए इमो अइ दारुणो विग्गहो पयत्तो । ण जाणामो जमल-हिदयाओ किं पि दाणिं करेमो । एसो ताव हिदयस्स वल्लभो, **मंदरदेवो** य भाता होदि । अन्नतर-विणासेणं तु अम्ह वसणं उवणमेज्ज । जइ सो चिर-काल-मणोरहाभिलसिओ अज्जपुत्तो अम्ह भाउणा मारिज्जइ, तओ अम्हं पि हु नत्थि जीवियं । अहमवि(?अहवा) अम्ह सहोदरो अज्जपुत्तेण मारिज्जइ तं धम्मो(?) नत्थि जीवितं। एवं जंपिऊण दीह-मुक्क-नीसासा ताओ पुणरवि भणंति-हला ! दिट्ठो एस वल्लरमइसुगढजलसामाणो(?) हिदय-वल्लभो । उट्ठेह, दाणि वच्चामो त्ति।

तओ मया चिंतियं—अहो ! अतीव इमाओ वराइदाओ चित्त-दुक्खियाओ । तं आसासेमि णं ति एताओ । तओ रहसेण उट्ठेउं पयत्तो हं। ताओ त(?य) ममं उट्ठेमाणं दट्ठूणं दुतं पलाइदुं पयत्ताओ । तासिं च रभस-सयं-पट्ठियाणं भूसण-संचालित-मणमणाराव-गंभीरो सद्दो तीय भगिणिसंत(?) सद्दो अइ-मणहरो आसि । आकारिताओ य मया वि ताओ- न भेतव्वं न भेतव्वं ति, ठाह मुहुत्तं, जा किंचि भणामि वो । एवं भणंतस्सेव ममं ताओ सलंखलोरसित-भूसण-सणाओ(?) दुतं विदारेऊण धरणि-तल-विवरं अणुपविट्ठाओ । पडिबुद्धो य तेण मम सद्देणं आसन्न-पसुत्तो **अंसुमंतो** राया। तस्स य से सव्वं मया परिकधितं । तं च सोऊण सो हरिसिओ । तेण वि [भणियं]-साधु कयं सामि ! अणुकूला ते सव्व देवता । तुब्भं जयो । न एत्थ संदेहो । दिच्छिज्जइ हु इमम्मि समए रिवुसंतिया वि तीवि(?) पत्थयंतीओ ।

तओ निसावगमे महदा संख-पडह-भेरी-झल्लरि-पवर-तुरिय-काहल-णंदि-सद्देसु य अभिणंदिओ हं । उदिते सूरे णं खयर-णरपति-सूत-मागध-वंदितो मज्जिओ हं मंगल-सएसु गहिद-दिव्व-वास-जुवलो गोसीस-सरस-चंदणाणुलित्त-गत्तो [गो]रोयणा-विच्छित्ति-विरायितो सिद्धत्थ-सगोरोयण-हरितालिय-कत-मुद्धाणो मउडंतरे निहिद अस्सत्थ-विधि कत-कोतुअ-मंगलो पुव्व-संगदिय-देव-दिण्णाभरण-सार-भासुर-विज्जोतित-सरीरो **कुबेरकंत**-मुद्दा-विराइतो दित्तोसहि-पज्जलिओ विव सिहरचूला-समुब्भासिओ **मेरु** महिधरो, सिद्धाण पणमिऊण सुकय-सन्नाहो जय-सद्दाभिणंदिओ **अंसुमंत**-संगहिद-सोलस-चतुर-तुरंगम-सुपरिकप्पियं बालय-विमाण-सरिसं रहवरं-समारूढो हं । समूसियं च मे कणग-मणि-रयण-चित्त-दंडं समत्त-जालाकुलं कणक-घंटिया-किणिकिणेंत-सद्दाल-सूसरं **दमणेणं** छत्तं । दोहिं य उभय-पास-ठिताहिं ललित-वेसाभरणाहिं विज्जादेवय-कप्पियाहिं देवकुमारिताहिं संचारिताओ चामराओ । तह य गहिद-मत्थि(?सत्थ) गुढ-कवय-वम्मजालिय-उरताणक-सुकतसीसक्क(?)-पवर-सरसण्हाहाइं(?) सन्नद्ध-बद्ध-चिंधपट्टाइं सुकय-सूर-णेवत्थाइं करि-तुरग-जाण-रहवर-विमाणवर-समारूढाइं सव्वाणि वि मम संतियाइं विज्जाहर-बलाइं ठियाइं जुद्ध-सज्जाइं ।

ताव य दलिद(?)-मउड-कडग-कुंडल-केयूर-हार-पवर-पतरय-पलंब-पालंब-भूसणधरो **मंदरदेवो** मंदरो इव पयलित-कप्पद्दुम-निबद्धो दुत-संतुट्ठाइत-अणेग-भड-वंद-कलकला[?राव]-निवहो विज्जाहर-पवर-रायाणुजात-मग्गो रहवरेण चेव हय-गय-रह-पहकराणुयात-ऽखुभित-गंभीर-धीरो च्छद(?)-दिसाभोगो निग्गंतूणं पुरवरातो सुरपति-सरिसाए विभूतीए अल्लीणो ममणीकिर्णि।

अह य तत्थ **मंदरदेव**-संतिएणं पहत-वर-भेरि-झल्लरि-घण-कु(?तू)र-गंभीर-निनाद-भासुर-उद्धंत-संख-काहल-[हल]बोल-बहुलेणं सद्देणं उक्कुट्ठि-सीहनाद-च्छोलितगति(?)-कलकल-रवेणं फुट्टंति व दिसा-मुहाइं, पडति व गयण-तलं, दरइ व धरणी, खुभिता व महीधरा । तओ भणिओ हं नियय-विज्जाधरेहिं—देव ! सुणह, जारिसो हु इमो **मंदरदेवस्स**, दारेंतो इव महितलं, हरंतो इव मंदमइगलाओ, खुभितोदधि-जलि(?ल)द-णिस्सणो आतोज्ज-सद्दो सुणिज्जइ । तओ मया असहंतेणं भणिदं—अहं ण एदं पसंसेहामि । एदेणं चिय कारणेणं मया सीहधम्मोनाहिताइं(?) नियायातोज्जाइं

कारिताइं, परिमंतिताइं य मे सीहमुहि-विज्जाए । अह तम्मि देस-काले मम वयणेणं जमय-समयं पहताइं सव्वाइं वि संगामियाइं ममातोज्जाइं । ताणि य सजल-जलधर-पुरत्त(?)-क्खुभित-सागर-णिण(?णा)द-गंभीर-भेरव-रवाइं भेरि-झल्लरि-मुदंग-मद्दल-पडह-कडंब-भंभा-होरंरु(?)-दुंदुभि-सताइं गंभीरतरं रसिदुं पयत्ताइं । तेण य ममातोज्ज-घण-गज्जित-रवेणं नताइं **मंदरदेव**-संतियाइं मिय-वसह-गोह-गवेलग-दम्म(?) विणट्ठाणं मयपति-परिकुविद-गज्जिद-हुंकार-सद्द-आहताणि व मय-जूधाइं ससिरातोज्ज(?)-विज्जिताइं सव्वातोज्जाइं। तं च मम त्ता(?आ)गम-बुद्धि-पयुत्तं **मंदरदेवातोज्ज**-फोडणं नाऊणं विम्हयं गता उभय-सेढि-वासिणो वि सबला खयरराइणो ।

अह य उद्धंत-संख-काहल-खरमुहि-हुंकार-भेरव-रव-संकुलं उल्लालित-कुंत-कप्पिणि-तिसूल-धणुव-खग्ग-मोग्गरं महिधर-महद्दुमाकुलं पउत्तं जुद्धं । नवरं च परिफुड-पडह-रवातसोतिवला(?) गज्जंति गया हेसंति हया, उज्झडित कुरजवा(?) हतवलणघणा(?) णिणतंति रवा, वग्गंति भडा उद्धाइत-मत्त-महागया गुलुगुलुरवेण, घणं परियत्त इभं तं वट्टइ सेल-समाहत-खयर-महाबल-जोध-रवंवेणतसयव्वं(?) । अवि य रहा रहेहिं वारणा वारणेहिं हया हयेहिं ति पाइक्का पाइक्केहिं सह सपलग्गा सरोसा, वट्टति य देवासुर-सरिसं महा-घोरं कहक[ह]-उक्किट्ठ-सरित-सद्दाउलं कातर-हितय-फोडणकरं उट्ठेंत-पडंत-तरतरंत-बहु-मडय-संकडं परिणिंत(?) गिध-मंडल-घोर-सिवा-राव-भासुरं पविद्ध-छत्त-चामर-माट्ठिगुद(?)-कवय-सीर-संकदु(?डु)क्कडं जुद्धं।

एयम्मि देस-काले ससक्खरुद्धत(?)-घोर-मारुत-पणोल्लिदा इद्ध(?) रुद्द-जलधर-पवर-पादवोसुद्ध(?)-संकुल-पज्जलित-पिंगलुज्जल-विज्जु-वज्ज-णिघादच्छिज्जंत-महितलोरसित-घणित-पडित-भिन्न-निट्ठुर-रसंत-भीम-गंभीर-पडल(?)-तामिस्स-मोहितं तं बलं महंतं जायं, आढत्तं च घण-घोर-घाद-निछूढ-जीविदं नियय-वाहिणिं काउं सुसइ रसति किलम्मइ वेवति वित्थरइ विज्जइ भयेणं पाडिता पहाण जोधा वब्भधल(?) दुब्बलं जायं । ता तं नाऊणं बलं मया बलकाल(?)-मोहिद-मदीयं पडिमायारधिणा खलु विमोहितं **देवरिसभेणं**, अवगत-मोहेसु मम भडेसु संजणित-तिव्व-रोसेसु **मंदरदेव**-भडाण वि खणेण पडिसामिओ दप्पो, नवरि मम संतिय जोध-बलवय-पवर-पहकरक्कंत-भयं **मंदरदेव**-संतियं सेन्नं अवरण्णव-पूराहतं पिव

सिंधू-सलिलं जहा विपलाइदुं पयत्तं, पडिपहहुत्तं महावेगातो, तत्थ **मंदरदेवो** तं निय-बलं पलायंतं समासासित-नायकं पुणरवि ववत्थवेदूणं पुणो सह-बलेण सयं पि पजुज्झिओ । भणिदो य मया **मंदरदेवो**—किं भो ! एदेणं मणाहरपवंग(?)-बलेणं सवाए(?) माराविदेणं ? एहि इतो तुह मह जुद्धं होउ, उभय-तोव(?) बलाइं पेच्छगाइं भवंतु दोण्ह वि, जो जयति तस्स पणामं करेंतु उभय-सेढि-वासिणो विज्जाहर-राइणो । किमणेण महदा जणक्खएणं ति । तओ तेण वि तह त्ति पडिवन्नं, भणियं च—ममं पि एस मणोरहो चेव जहा तुमे भाति-वेरिणा सह सयमेव जुज्झियव्वं ति ।

तओ महता जत्तेण कह वि नियत्तिताणि मे नियय-खयर-बलाइं । दिट्ठा य मे ससुर-विज्जाहर-वुड्ढा य सक्खिभूदाणो साधेंति य भूदवादिय(?)-सिद्ध-गंधव्व-जक्ख-रक्खस-गणा जुद्ध-कारणाइं । पयत्तं च तस्स मज्झ य सुरासुरिंदाणं वि उत्तरुत्तरागयं(?) जुद्धं । तं च पवर-समर-सोवीराण महा-मइंदाणं वा मयगलाण वा **राम-रामणाण** वा सुसेण सह जुज्झिदुमुहाण व सुरासरपईण वा । पढमं घण-घोर-पहार-संकुलं जुद्धं वर-असनिवात-सरिसं तुमुल-जुद्धमासी । तओ अत्थ-पडियत्थेहिं वि मया सह जुज्झिदुमचाएंतो मुक्क-रहवरो धरणितलं विदारेऊण रसातलं पविट्ठो णट्ठेहित(?ति) चिंतितो मे अह य पुणो अचिरेण तओ नहंगणं पादुब्भूतो सो य ममोवरि आढत्तो विइत्त-रूवं घोरं सप्प-वरिसं मोत्तुं । तओ अहमवि नाग-दिन्न-खग्ग-खेडय-हत्थो अवतरिऊण रहाओ अभीओ वीसत्थ-थिर-लहु[ह]त्थो आढत्तो सप्प-वरिसं उप्पथेण पडमाणं अणेग-रूवट्ठिओ लहुताए खंडाखंडिं काउं विसम-खग्ग-गय-पहराइच्छेहि । अउ(ओ) वर-गरुडेहिं छाइज्जइ महितलं । दिट्ठो य मया नह-तलादो विउलेणं फडा-कडप्पेणं महा-मेह-सन्निकासेणं जलित-मणि-सिहेणं पविराइतो महानागो ममोवरि समावतंतो । तओ मया चिंतितं-अरिहइ मे एस सयमेव **मंदरदेवो** माया-जुद्धेण जुज्झति त्ति । ततो मे तक्खणं चिय गरु सहायवड्ढिओ [४५]उप्पत्तितूण समाहतो छेयताए व वज्जसारेणं । तओ तक्खणं चेव तं पमोत्तूणं महा-भुयग-रूवं जलित-जाला-मालाकुलो मह अनल-पव्वओ जादो । तओ अहमवि सलिल-धारा-विंद-सविज्जुतुप्पादेण गंभीर-गइत-गज्जित-रवो उवरि तस्स हुतवह-पव्वयस्स महंतो महा-मेहो संवुत्तो हं । **महागोरि**-पभावेण य खणेण मे धारासर-पहकर-विरावितो विलयं गओ अग्गि-महिधरो । सो वि एवं जं जं रूवं करेइ **मंदरदेवो** तं अहं तप्पदिघाइणा रूवेणं पडिहणामि ।

एवं मे सो बहुधा णिरत्थीकओ समाणो छड्डित-विज्जा-बल-पसरो लग्गो मे बाहु-जुद्धेणं । तओ दोन्नि वि निजुद्ध-कुसला दीह-बाहु-प्पहार-निस्सरपुर(?)-घणिद-परोप्पर-खित्त-दढ-गाढ-वेढ-निसुढित-लग्गा जाग्गंगण(?)प्पहार-दाण-करण-विणत्थ(?)-[४६]वीसत्थ-घोर-पत्थलुणुत्थलित-थणित-णत्थीयथात(?)-मंथितकरण(?)-उग्गिन(?)-भिन्नं जंणुग(?)-प्पहार-समुदित्त-घण-घोर-घात-सूस(?) त्ति । सइरोसित-मंथमथितुज्जोव-खेवणाभिहित(?) नियुद्ध-कुद्ध-पविद्ध-बंधुरुद्धत-णिजुद्ध-मुद्धाभिज्झाद(?)-बंधण-करण-कुसलत्तणेण य मया जुद्धंतेण विसमकरणुव्वत्त-वाहि दुक्खत्तो धरणि-तले खित्तो, तह जह सुचिरं धरणि-तल-गओ मुच्छा-वस-णिम्मीलित-लोयणो निच्चिट्ठो मओ इव मन्नितो मे ।

तं च रयणीए कन्नगाणं सुमरमाणो तस्स एवं चिंतयामि णवरं पुण परि(?) विज्जाधर-जोह-भय-दंसणा-हेतुं तस्स तहा-पडितस्स चेव मया उज्झय-खग्गेण णत्थो उरसि पादो । एयम्मि देस-काले कत्तो वि दुतमागंतूणं समुवट्ठियाओ पंच वि कन्नगाओ, बेंति य परुदित-कलुण-गग्गरस्सराणुविरइतंजलिपुडाओ— देव ! परित्तायध [४७]ताभिकुप्प(?) दाणेणं ति। तओ तासिं एवं जंपंतीणं पुव्वाभिप्पाएण चेव मुक्को मया **मंदरदेवो**। हत्थे य घेत्तूणं समुट्ठाविओ मे भणिओ य— भो ! वच्च, मुक्को सि मया एदासिं कन्नगाणं वयणेणं । मम पणामं काऊण वीसत्थो भुंजाहि नियय-रज्जं ति । तओ तेण भणियं—सप्पुरिस ! जिओ ते अहं सव्व-पगारेसु उभय-सेढि-विज्जाधर-राया-समक्खं । तं नूणं ममं पुव्वि अकत-पुन्नस्स निरत्थओ पुरिसकारो जातो । तं एतं मम संतियं रज्जं अच्छइ(?उ) तं अलं जीवियस्स रज्जेणं । ततो [४८]**भरत**-चरियमेव अणुचरिस्सामि । मया भणिओ—राय **मंदरदेव** ! केरिसं खु से **भरत**-राइणो चरियं ति । तओ खणमवि वेरग्ग-[४९]दहोअतण्हेणंभणितं—

सुणह, जहा मे मम भाता **घणरथो** घातितो । तओ सो तस्स पिय-पुत्तगस्स वध-कारणं तिव्व-संजात-दुक्खो 'मम पुत्तो विमयच्छी(? विसयत्थी) घातितो' त्ति तओ विसएसु विरागतं गओ । ताहे सो ममं णिखिलमेव रज्जं दादूणं **अमितयसाण** चारण-समणाणमंतिए निरवेक्खो पव्वइओ । तओ तेण एव कधिते मया तस्स तओहुत्तो कओ नमोक्कारो । तओ तेण भणियं— को(?किं) तुमं जिणवर-भत्तो ? त्ति । मया भणियं—बाढं, जिणवर-भत्तो ।

तओ सो महप्पा जहा-नाम-सत्त-सीलं ममं खमेदुं तक्खण-विमुक्क-रज्जो चतु-अमच्चेहिं समं गओ पितु-पात-मूलं भोगेसु निरवेक्खो पव्वज्जमब्भुवगओ । मया वि य सव्व-विज्जाधर-रायचक्क-सहिएणं तत्थ य गंतूणं जह धम्मायरिए वंपडिदो(?)-**मंदरदेवो** रायरिसी **मेघरधो** त्ति । खामितो य मे सुचिरं पाद-पडिएणं **मंदरदेव**-महप्पा, भणिदो य मे—संदिसध, कं तुह संतिए रज्जे अभिसिंचामि त्ति । तेण भणियं—अम्ह कणीअसो मे भाता आसि, सो वि मम अणुरागेण एहिं चेव निक्खंतो, अतो परं सेसस्स तुमं चेव भया(?भुंज)सि त्ति ।

तओ हं पुणरवि ते(?तं) विणएणं वंदिऊणं उभय-सेढि-विज्जाधर-राय-बल-सहिओ सव्विड्ढीए पविट्ठो हं **चिलातवद्धणं** नगरं । पेच्छामि य पविसंतो तं खयर-पुरवरं रयणमयुप्पतित-पवर-पासात-भवण-हम्मिय-कंचण-पागार-दार-तोरण-वलभि-सहाभरण-रंजियं जित-रय-मलं मणहर-जिणभवण-गराहण(?)- भासुर-विमाण-वर-जाण-संकुलं मणहर-राजाय(?)-सरसर(?)-पवर-जणभवणं रंजित-मिसिमिसिमिसंत-मणि-रयण-किरण-सहस्सुवरंत-दार्वितं कणस्स(?)-कणि(?ण)ग-मणि-जाल-विलसिर-रयण-ललित-चलित-विमल-घंट-सहस्स-संहात-सूसर-कणकणंत-मणि-रयण-खंधिया(?घंटिया)-जाल-किणिकिणिकिणेंतं सद्दाल-विविध-विमल-तप्पालिय(?)-गजगजगजेंत-मणि-रयण-कप्पपादव-पवण-पणोल्लियं वियित्त-रसमाण-कलकलकलाघात-बहल-रसमाण-परम-सुति-सुह-कलि(?ल)-सद्द-पसरितं मणमणमाणय-मण-हर-मालंखलोरसिद-सूसर-सद्दं वरुज्जाण-कुसुमित-चंपग-सुगंध-गंध-दुमागं मारुत-वेग-समाहद-दरिद-भमर-मधुकर-पहकर-परिगुंजमाण-गुमुगुमुगुमेंत-गंभीर-पादवं, परहुत-परितुट्ठ-कुकुकुलित-कलणाद-णादितं, वर-विविध-सव्वोतुय-सुरभि-वच्छ-कच्छय-सहस्स-संबाध-कुसुमितुज्जाण-मंडित-दिसागं, विविध-घण-पणीद-वीधि-सुविसद-विज्जाहर-लोग-कलकलुद्दाम-[?सद्द]-पूरितंबरतलं, पिय-कंठ-लग्ग-समुप्पतित-ललित-लुलित-क(?कु)वलय-मेहलकलाव-विलसित-कत-भूसणं, विज्जाहर-तरुण-तुरित-विक्खेव-धामं(?) व फुरंत-वल-लुलित-संघात-सरभसोवतणुलंघणुल्लहित-णभतल-दिसागं, अणेग-मत-सतसहस्स-चल-लुलित-विलसितामल-गगणतलुव्विद्ध-विइत्त-पासाद-संकुलं पेच्छमाणो, पेच्छिज्जंतो य भवण-पासाद-हम्मिय-विमाण-जाल-गवक्ख-धरुल्लोक(?)-ऽधिट्ठिदाहिं विज्जादर-वर-वधूहिं पत्तो हं **मंदरदेव**-

खयरिंद-रयण-घर-मंदर-पवर-कंदरुद्देसं ।

तत्थ य भीत-पयत-विज्जाहर-जणोवणीतं महग्घमग्घं परिच्छिऊणं विज्जाहरिंद-जय-सद्द-निद्दयुद्दाम-पूरित-दिसाचक्को सक्क-विमाणोवमं पविट्ठो हं मंदरदेव-संतियं सव्व-रतणं वेजयंतं नाम महा-पासादं, तं च अणेग खंभ-सत-सहस्स-सन्निविट्ठ-नी(?ली)ल-ठित-सालभंजिया-कलितं नाणा-मणि-कणग-रयण-खइतुज्जल-बहु-समसुविभत्त-रमणिज्ज-भूमिभागं कंचण-मणि-रयण-थूभियाकं अब्भूसित-पहसित-तिज(?विय)सित-कमल-जाल-वर-पंजरंतर-मणि-रयणुम्मिल्ल-किरण-पोंडरीय-तिलय-पंकय-वियसित-रयणद्धयं चारु-चित्त-पायारी(?र-)पंच-वन्निय-मणि-रयण-जलंत-कोट्टिम-तलं सुविरइत-काइलापह(?)-विहंग-जालद्धयंद-निज्झूह-चंदसालियं पविभत्त-कंत-करणेल्ल-विल्लकं बाहिर-उदूमित-घट्ट-मट्टं अब्भंतरतो पसत्थ-सुणिहित-चित्त-कम्मं फुल्ल-मणि-पउम-लता-वसंत-सागर-तरंग-मणि-रयण-भित्तिचित्तं पफुल्ल-वल्लि-वर-पुप्फ-जाति-उल्लोक-वल्लित-तलं उत्ताणक-णयण-पेच्छणिज्जं चंडागत-वात-वेग-रवुब्भमाण-सद्दं नाणा-विभागोदुणाहिउ(?)-भोग-साहिण-सव्व-दव्वं, ऊसित-सय-विजय-वेजयंती-पडाग-पडिमंडितऽग्गसिहरं, वेरुलिय-विमल-खंभं, नाणा-मणि-रयण-मुत्ता-दामऽलंकिदं, चंदण-घण-सुकद-तोरण-पडिदुवार-देसभागं, वंदण-वणमालुज्जल-विलोल-सोहं, गयराय-विज्जाहरगण-सीहमिहुण-सुणिमित-रयणमय-तोरणाउलं कणकणकणेंत-घंटावलि-चलित-मधुर-घोसं, मिसिमिसिमिसेंत-मणि-रयण-घंटिया-जाल-कलियं, सुविभत्त-वसह-दप्पण-उप्पल-सतपत्त-छत्त-सुकय-सिहर-सोभं, अवी(?)-सहस्स-कलियं, विज्जाहर-जमल-जंत-जुत्तं, ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रुरु-चमर-सरभ-संवर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं उवरि वितत-विताण-पलंबंत-चमराभारं, सुरभि-पविरइत-कुसुम-सयणेज्ज-चारुसोभं, कप्पूर-मलयचंदण-लवंगागरु-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-मघमघेंत-सुगंध-गंधगंधुदुभिसल्लो(?)-उल्लोइत-महितं गोसीस-रत्तचंदण-दद्धर(?)-दिन्न-पंचंगुलियलं निउणे सिमिसिमिसिमेंत-पणासितंधयारं रयण-गभत्थि-विज्जलित-दिव्वोसहि-पज्जलित-जलंत-जाल-सयसहस्स-परिमंडियं व मंदरसिहरं, चिरं मे अविम्हयेण निवन्नियं ।

अवि य, जं तं जंभायति व गवाक्ख-वातायण-वयणेहिं, निद्दायति व रच्च रयण-मज्झ-ठिद-पउमराग-रयणेहिं, हरिसियं पिव पवियंभिद-कणग-

कलसेहिं, पहसितं पिव विमल-फालिय-रयण-दंत-पंतीहिं, अवलोवि(?इ)यं व वर-मणि-रयण-सद-सहस्सेहिं, नीसेसति व सुरभि-कुसुम-पसरित-सुगंध-उत्तिहिं, णित्थणदि व वराभिरयण-संजोइतातोज्ज-गज्जिद-रवेहिं, उल्लवेति य सुअ-मदण-साकलाइव(?)-चकोर-पारावत-मयूर-कल-विरुत-निस्सणेहिं, उप्पइति णभतलं मणि-रयण-गविल्लरिल्लेहिं(?) सीह-कन्नएहिं(?) उला(?ल्ला)सित-वर-रयण-सामिद्धीए मंदरगिरि कंदरोदराइं ।

अवि य, तं आभासतं एदं सवामो कुसवाणाणं(?), ठाणं पिव णेव्वुतीए, निलयं पिव लच्छीए, वासघरं पिव सिवसिरीए, णिवत्थणं पिव कामस्स, सयणेज्जं पिव रदीए, आसंगं पिव रदीए-(?पिदीए), बंधणं पिव सोभाए, णिकेतं पिव धिदीए, आदरिसं पिव निम्माण-सिप्प-वत्थु-कम्म-चित्तासाणं, सिवोणं(?सोवाणं) पिव सिद्धीए, अत्थरय-मउ-मसूरग-भद्दासण-सोत्थिय-सिरिवच्छ-कलस-दप्पण-रयणकरंडय-कुया(?)संघाड-हडप्प-यथावापडफणा(?)-सहस्स-रयणमय(?यं) सम-मणि-कणग-रयण-भायण-खतपुरिम-संघादिम-वेढिम-गंधिमाभरण-विमं(?)-विगारयित-सोभं, धूव-घडियाउलं, **मंदर**-देवालयं [देवालयं] पिव बहु-काल-वन्नणिज्जं ति, बहुणा जइ(?)गुणेहिं अमर-वर-विमाण-वेलंबयं तं पासादं समभिरुहिदुं णंदी-सद्द-समभिणंदितो आवासितो हं । आवासिता य **मंदरदेव**-सचिव-विदिन्नेसु कणग-पासादेसु सव्वे वि विज्जाहर-राइणो सपरिवारा ।

तत्थ य महंत-सव्व-विज्जाधरपदीसु कद-विविधाण मज्जणाभरण-पाण-भोयणा य मण(?)गहित-मुहवासयस्स सव्व-विज्जाहर-राय-मंडल-मज्झ-गयस्स सीहासणोवविट्ठस्स ललित-कताभरणाहिं **मंदरदेव**-संतियाहिं महालक्खाहिं विलासिणीहिं संचारित-चारु-चामर-जवल-बाल[-वियणी]-वीइज्जमाण-देहस्स णड-णाडग-गंधव्व-सुति-रसित-पुव्व(?ण्ण)-कन्नस्स समतिच्छियं मे दु(?सु)हेण तं दिवसं । अत्थमितो य कमलाकराणं सोभं समक्खिवंतो दिणकरो । तओ मया सयमेव [.....?.....] सुइ-पवित्त-देहो पूइत-जिणहर-पडिमो कत-पडिक्कमण-वंदणो य पुणरवि खयरपति-सहिओ महापाणमासेविदूणं परम-सादु-जोग्गाहार-सुमुहो पदोस-काले पवर-नाडइज्जासु उवगिज्जमाणो य वीर-सयणतल-गतो पादोसिय-जाद-संथुते य सुहं पसुत्तो हं ।

सा य सयणेज्ज-सेवण-वम्मध-वावार-कारिया सुहा समितिच्छिया रदी ।

अह य तत्त-तवणिज्ज-पुंज-पिंजर-कारा पुव्वेण अमुल्लसिया-अरुण-सिहा । तओ पवर-नंदि-पुव्व-गाढं संख-सत-पवर-काहल-खरमुहि-हुंकार-चारु-गंभीर-सूसराइं वम्मकल(?)-कंसताल-पभिन्नाइं पहयाइं मे खयर-तरुणेहिं पाभातुक-तूराइं । आढत्ता य मे सुह-मंगलिय-पाढगा । अवि य-

वियसंति पंकयाइं सुपुरिस मउलंति कुमुय-संडाइं ।
उट्ठितो य सूर-सूतो अरुण-गिरि-सरण-वुब्भाइं ॥

वर-सुरहि-तेल्ल-पुन्ना वि वेविरा अरुण-निज्जिय-पभावा ।
निज्जायंति पदीवा णिद्दाणिद्द(?) मुंचाहि ॥

सयमेव तंसिल्लो अरुणो भवमहितरीणकंतीओ(?) ।
मलणाइदुं पयत्तो चंदो तुह सत्तु-वदणं व ॥

पंसुलि-कडक्ख-भीतो सुपुरिस-संखित्त-करण-कम्मंतो ।
अवरेण गओ चंदो कुलचंद(?) विमुहिदुं कालो ॥

उग्गायंति विहंगा थुणंति सग्गागता य वो नामं ।
जस-पडहेसु समग्गा पभाय-पडहा य वो दिन्ना ॥

तं सूर किरण-निम्मल-णिज्जित-णीसेस-णिय-माहप्पो ।
तावगं व ससी दुहितो मय-लंछणं वहइ ॥

मद-समुदितेण विमदा दप्प-सणाधेण वीरहदह(?)-दप्पा ।
मच्छरवंता णराधिवा अमच्छरा ते कदा ॥

निति पुणो विउलस्स निब्भयस्स सज्जण-सुभयस्स सुइ-मणुन्नस्स ।
अमयमइअस्स तुब्भं चरिदस्स वणिदं पावादो ॥

सीता सई पसन्ना गुणपुन्ना णिब्भया निवारितपया ।
राजस(?) जोण्हा गदा ते दूरं [?.....] ॥

जत्थ ण वच्चइ पवणो जत्थ पभा नत्थि चंद-सूराणं ।
तत्थ वि तमाल-धवलो तुज्झ जसो पायडो भमइ ॥

तुंगम्मि मेरु-सिहरे रयण-विवित्तम्मि सुर-वधू-सदेसु ।
तुज्झ जसो उग्गीतो सुरपदि-सदसी(?सि) य ससुरेसु ॥

कहितं च मो महायस, अज्ज सग्गागद-णिसग्गेहि ।
तुह किर पताव-भीतो, देविंदो कुणइ दुग्गाइं ॥

सामि सुदं च विवित्तं, तुह चरित-पबंध-ललित-संधीयं ।
कइलासाचल-सिहरे सिहिवधू-नाडयं रम्मं ॥

लिहितं च किर विइत्तं कागिणि-वर-रयण-विमल-खडिआए ।
ईसाण-सभा-सिहरे नामं ते रुद्दणागेणं ॥

तं साहूण सुहीण तक्कुय-सत्थस्स बंधवाणं च ।
सुहय सुह-सुक्ख-फलदो सुराण वर-कप्परुक्खो व्व ॥

तुमए रवि-ससि-सागर-मेरु-धरणिंदाण वसुमदीए य ।
अणुहरियं एक्केण वि बहूण गुण विड(?ड्ड)रिल्लीए ॥

कंति-गुण-केसरालं सील-सुगंधं विसाल-गुण-पत्तं ।
धन्ना सुत्त-विउद्धा तुह मुह-कमलं पलोएंति ॥

सूरेण बोधिताइं खयरिंद-वर-राइंद-सन्नाइं ।
तं पि विबुद्धो बोधय णरवर भिच्चारविंदाइं ॥

एवं बहुप्पगारं तेसु णहतल-गएसु गंधव्वेसु य थुव्वमाणो उवगिज्जमाणो य केसियावसाणेसुसुट्ठिओ(?) मुक्क-सयणिज्जो कत-पडिक्कमणो घुतघवणिज्जो(?) सुकत-पडिकम्मो सूरोदय-पगामियम्मि जोवलोइता(?) बोधि(?) निग्गंतुं वासघरातो बाहिं दिसा-मुच्छियाप(?ए) **रयणप्पभाए** कय-सुरभि-पुप्फोवगार-विलयाए विइत्त य कुलिपउमसूरउत्थते(?) उभयतो कतरिवोवंणे(?) सावस्सगे य सीहासणे निसन्नो हं । तत्थ य विमल-विइत्त-मणि-कणग-दंड-सोभिर-सुरभि-सिभरंत-चमर-भरग्गहत्थं खयर-वर-विलासिणीणं सलील-विलसंत-चारु-भूसणधरीणं पत्तेयं अट्ठ-सयं उभउपासं पवीयितं(?) मे । तह वि बालवीयणि-कणगभिंगार-कर-विमल-सक्कक्करि(?) पवर-हाडप्पय-दप्पण-तालिय-पवरावपय(?)-हत्थातो महा-लक्खाओ विलासिणीओ उट्ठिताओ म(?मे) ईसिं पिट्ठओ पुरओ य आणाग्गहीओ ।

एयम्मि देस-काले पडिहारावेदितागदेहिं कय-जय-सद्देहिं तेहिं जहा-जोग्गासणासीणेहिं तओ मम सव्व-विज्जाहर-मंडल-मज्झगयस्स ललित-चल-विमल-कुंडलुज्जल-हाडग-मणि-मउड-कडग-पदरग-फुरंत-कंत-केऊर-हार-त(?झ)लज्झलंकित-वितिमिर-मणि-किरण-रयण-चामीकर-परम-मोत्तियाब्भूय-विमल-चूलामणि-किरण-पसारित-भासर-गंभीराभरण-परिमंडिताए, आणत्ति-गहण-वावड-किंकर-वर-तरुण-ससंभाढिद(?)-पडिवयण-पुत(?)-निवेदण-

लुलित-बल-कुल-पुरिस-खोभित-वयण-संचाराए, पवण-बल-वेग-चालिग(?य)-कप्पदुमावलि-विभासुराए व्व मंदरगिरि-कंदराए, सुर-वर-पविचरित-दिव्व-सोभाए अतिसय-रमणिज्जाइ वर-चारु-परिसाय-मज्झयारे पसोभितस्स राईसर-तलवर-मलं(?माडं)बिय-कोडुंबिय-मंति-गणग-दोवारितामच्च-वीत(?ड)-पीढमद्द-णगर-णिगम-सेट्ठि-सत्थवाह-सेणावदि-दूत-पडिदूत-संधिवाल-सद्धि-संपरिवुडस्स दोवारित-महतरक-वुड्ढकंचुगि-वेत्तलता-गहण-वावड-संचरमाण-निरंतर-वूढ-तुरित-पचलित-कारणा वि ते रायंगण-गुविल-संचरण-णिवेदण-गुण-दोस-कहण-विन्नवण-पाणासण-निवेदण-पणय-प(?पु)च्छिज्जमाण-जोण(?)-जोक्कार-करणालग्ग-विग्गह-सुहस्स मम तम्मि समए णाण(?)-पडलग-चंगेरि-वर-तालियंद(?ट)-पुडक-रतण-करंडयादि-वित्थिन्ना **मंदरदेव**-सइवेहिं तस्स जणणीय अंतेउराण य अणुमतेणं विविध-सुरभि-कुसुम-सादु-फल-[?हत्था] धवल-वत्था **मंदरदेव**-संतिया एव णरिंदोवभोज्जा मम साधग-णक्खत्ते सावग-पुरिसाधिट्ठिदा, उवणीदा मे तेसु विविधा विपुला य रयण-विधि । सा य विविध-मणि-रयण-किरण-जाल-निवहेसु पसरित-पवरिंदायुधा रयमाणि व्व पभाए मम त्थाणि मंडल रयण-सभा भासुर-घर-कंदरं च तयं तेसु सविणयोवणीदा अणुरूवा भायणा, णत्था मे पुरओ । मए य सा चित्त-रयणुक्कडा आलिद्धा दाहिण-करेणं । तत्थ मे दिट्ठाइं तालियंट-पुडकवेलासु(?) य अवहाडितासु णत्थाइं अंडय-पोंडय-बालय-वागय-कीडगाइं च वत्थाइं । अंडयं हंस-लक्खण-गब्भादियं, पोंडयं कप्पासक्कसंवालादियं(?), वालयं कंठलकोयवकरल्लादीयं(?), वागयं गंभियवोद्दलगादिअं(?), कीडयं तिरीड-पट्ट-कोसेज्ज-वडयं (?) चित्तग-विप्पादि(?) । तं च सव्वं पिव दुव्वि(?वि)धं, तं जहा—अहतं धोतं रत्तं पइन्नयं । अहदं विविध-जुत्ति-मयमदादि-वासिदं, धोदं धूविदं, रत्तं संखातियंटितं(?), पइन्नयं अज्जुण-हाडग-कणगादि-वासितं। एवंविधाइं वत्थ-रयणाइं तत्थ दीसंति ।

एत्थंतरे मणि-रयण-कणग-मुत्ताहरणादिएसु विम्हिय-मणेणं आसन्न-देस-ठिएणं पुच्छिओ हं विणयोवगएणं **अंसुमंत**-राइणा—सामि ! इच्छामो एएसिं रयण-विसेसाणं आगरुप्पत्ति-लक्खण-गुण-दोसा णातुं जे तुज्झ मूले त्ति ।

तओ मया तस्स भणियं—महाराय अंसुमंत ! सुणाहि, इह खलु रयण-विधाणाइं भवंति। तं जहा—वइरं मुत्ता पउमरागो इंदनीलो मरगदं कक्केदणं पुलगो

विमलगो लोहितक्खो वेरुलिओ महानीलो विदुमं फालिओ संखो बंभमाणी(?) जोतिरसं गोमेदगो पुस्सरागो रायावत्तो सोगंधिओ चंदकंतो सूरकंतो जलकंतो सस्सकंतो गल्लगो हंसगब्भो अंजणपुलगो अंकं रिट्ठमिति एते मणयो । रयणाइं पुण तं जहा—हेमं रूप्पं तंबं तउअं कंसं लोहं कप्पूरं कत्थूरिया कुंकुमं । अवि य, पुरिस-मय-पक्खि-दुपद-चतुप्पद-पादसंकुलाणं महिरुहाण य णेग-विधाणं जे जह-गुणादिया पोग्गला सव्वे ते रयणं ति भणंति ।

तत्थ वइरं ताव सुणह, संख-कुंदेंदु-कुमुद-फालिद-वन्नाभच्छलसं(?) तिक्ख-धारं रण-रभस-दुद्धरं च माहिंदं वज्जं, कणियार-सिसतेज्जण (?) कुसुम-सन्निभं जवतिगुडाकारं(?) वारुणं वज्जं, नागकुसुंभासोअ(?) सुक-वदण पारावत-नयण गुंजद्ध-राग-किंसुकारण(?) सस-रुधिर-इंदगोवग-निभं च कोमल-संठाणं एदं वायव्वं नाम वज्जं, इमं च सीह-सद्दूल-दंतिरुह-लियण(?)निभं कोमलं सिंघाडग-संठाणं अग्गेयं नाम वज्जं, एतं च सिरीस-कुसुम-सेवाल-कदली-वंसपत्त-सुक-चासपिच्छ-भासं सव्व-संठाण-संजुतं एतं वज्जं वेण्हवं नाम विस्सुतं, इमं च गंभीर-लावण्ण-सलिल-भिंगंग-भुयंग-चकोर-मोर-पारावत-कंठ-सप्पभं दीह-सप्पमुहाकारं जम्म(?)वज्जं तु विस्सुतं, उज्जु कोडि-घणुत्तम-सुप्पमाणं च एवं गुण-संजुत्तं सुलक्खणं होइ वज्जं तु विसालं निम्मलं गुरुअं सुप्पभं घण-निव्वणं सच्छं तारं पसत्तं च वज्जं वाराएसद्दा(?) । पुत्तत्थिणी तु इत्थी वज्जं न धरेज्ज, णेव य कुमारी ईसालु अच्चंतं खलु णेच्छति पुरिसेसु संपत्तिं संपुड-भग-संठाणं तिकोणं वन्नगाकिर्तिं। एदाइं कुमारीए पुत्तत्थिणीए य पडिसिद्धाइ, सेसाइं धरिंति नाम णत्थि दोसो। आगरा पुण एदेसिं देवारंणसवर(?) महद्दहा महाणदीओ महोदधी य पहाण-वज्जाणं माणुस-लोए पुण दाहिणड्ढ-भरहे आगरा, तं जहा—कोसल कलिंग मातंग-विसय विंदातदसभारद्द(?) सोप्पारय पोंडीहेमं(?) चेति। एदेसु खेत्तेसु उत्तमाधममज्झिमाइं वज्जाइं समुप्पज्जंति । तत्थ कोसलं तु सिरीसभासेतं(?) वेदा तदुब्भवं आपीतं(?) व कलिंगाएभं(?) पवन्नं....दुप्पसद्धं(?) व लोहितं किण्हं सोप्पारय-वज्जं सामवन्नं च पुण्डयं णयखारेसु(?) विवन्नं गुरुअखवणेण(?) णेव पडिभाइ । ते येणतरइतोयं(?) महइ महाघोरं घयांवावि(?) फालिय लोभे काये(?) कुसला सव्वं ति । तेसिं पडिरूवं रंगेसु य विविधेहिं ताइ इमं घा(?) तेण भणियं णिसाणावहणखारलेहाण(?) उसिण-तिल्ल-ताडणेसु य परिच्छिज्जंति । ताण य सेत-सिद्धत्थएसु अट्ठयमादिएसु(?) विहिदुलेसु(?) य सुय वीस(?)-पसत्तेसु सह धारणं

कीइ। एवमादि सुलक्खणाणं वरण-विही । तत्थ तु विविडंतेसु(?) उत्तमाए मज्झिमाणं विविधाणं ति विज्जाणं कुसुमोधारणेसु य समतिप्पमाणेण य विविधं मुल्लं करेंति । इमानि पुण देवारन्न-सभा(?संभ)वाण सव्वाणि वि अणग्घेयाइं। तत्थ तु विविडंहिं(?) संवाणविवन्नियं(?) च कक्करं सोभणं तेसिं करेंति वीसभागेण पंडिता । तत्थ जं तंदुल-पमाणं वज्जं तुलिज्जमाणं जावतिए तंदुले तुलितस्स तहा अवि(?धि)यतर-वट्टि(?)-पमाणेण अधिगदर-मोल्लं णिद्दिसंति। णित्तेयं लिहितग्गं व वुत्ततेसुय(?) संजुत्तं जं पुरिसो वयसो(?) ते सय-भागेण पंडिओ वोमि(?)फलं विरूवं व विसट्टं वियडं घणं सम-भाग-समंतस्स सोधणं पितुभासितं इति मादि(?) विविध वज्ज-सोधणा समतेयं समं वा विसम-कोडी-समायुत्तं धणवन्नेण(?) गुरुसु य रादीसु य पूयितं णिच्चं । तत्थ य जं पुन्न-विसेसे सुभागतं(?) वज्जं तं मोत्तूण सेसाण इमा विधी किणिदव्वं,

साधए वज्जं विक्केदव्वं असाधए एवं
मंगलायार-ज(?जु)त्तो उ वज्जं धारए सदा,
ण्हातो सुमणसो संतो सुव्वतो समाहितो,
बंभचारी जितकोधो वर-वत्थ-णियंसितो,
णमिउं सिद्ध-साहूणं ताण पूयं अंवजंजिदु (?)
तिवि(?हि)-णक्खत्त-लग्गेसु अणुकूलेसु साहये,
सु य लोयेज्ज सयभूसणे वज्जं पुव्वं देहे गिहे वि वा ॥
सव्व-लक्खण-संपन्नं आसणे सयणे गिहे ।
देहे व धरितं वज्जं भवेज्जा रिवु-घातगं ॥
सेदं सुद्धं महा-तेयं वज्जं देवाण अरुहइ ।
रत्तं खत्तियवग्गस्स पीतं वेसाण अरुहइ ॥
सिरीसाभं च कण्हं च सेसलोगस्स भूसणं ।
एदेण कमेण धारिज्जसु इमे गुणा भवंति ॥
निच्चं वरदा देवा खत्तिया जित-विग्गहा ।
पीतकेसा सया-कालं सेसा अत्थित्थि-पूयगा ॥
भूदासिणि हु सुवन्नविग्घविणायग (?)
रोग-सोग-संभावया सचित्ता वि संजोग पयोगगरा ।

कलह-विणासणा सव्व-सिरि-समुदय-सुहोववेदाइं,

पधाण-वज्ज-धारणाइं भवंति सग्गमंगं च विद्धं च

आगुणं पाव-संजुत्तं भद्दं सयल-णिब्भेदं(?) केस-लोहित(?)-संजुत्तं विरूवं विकितं रुक्खं कक्कराधादु-वेढितं, दीहं हुंडं व कुज्जं सुसत्थिया पद-वायसं, एवमादि सव्वं अप्प(?प)सत्थं वज्जं अधारणिज्जं व निद्दिट्ठं ।

इतो मुत्ताणं सुणह आगारे गुण-दोसे य— तत्थ मुत्ताणं जोणीओ, तं जहा,

अच्ची णागा वंसा मच्छा जीमूता चेव बोधव्वा ।
काविल वराह सुत्ती संखा विह अट्ठमा जोणी ॥

एदेसिं मुत्ति समुब्भवं पभूततरं ताओ य महासमुद्द जलासएसु सुत्तीओ मोत्तियगब्भाओ सहावेणं भवंति, लोईयाणं पुण जहा णिट्ठिसाढमाधासु(?) सुत्तीओ मदाओ वक्कालवरिसीण(?) जलधराणं पिदुपादं पडिच्छइ, ते य बिंदुसु समाहित-वदिच्छत्थिदा(?), संवच्छरेण अणिंदिता मोत्तिया हवंति । तत्थ जे बिंदू निवडंति मारुतेण विभज्जइ से मुत्तट्ठितो(?) नाम मोत्तिया भणंति एसा लोइया सुती । अरहंताणं पुण समभावो चेव जोणीणं ।

तओ **अंसुमंतो** मम भणइ-सामि ! लोइय-सुतीए सुणिज्जइ जहा,किर जन्न-पसु-ववदेस-छल-घातितस्स दाणविंदस्स वेहाते सव्व-मणि-रयण-कणग-परिवज्जिओ लोगो निब्भूसणो य आसि ति । महाहिमवंताणि य विज्जुप्पहा सामरुज्झदि(?) हिदयो वा मधुरा पुव्वि ण आसासिते । अहवा तेसिं महिधराणं तुल्लप्पमाणा सतस्सवधभावेणं(?) वा विहिणा तस्स दणुइंदस्स लोइवेहावयवा(?) आसि । उदधी वा पुराअते णागरो असित तेअं सहस्सवेधी वा रसो जदि हवेज्जा तह वि दणुइंदहं असंखेय दीव-सागरा महिधरे कंधं भावेहिति सव्वा विमाणाइं वेति य भूतिभावस्स य कहमुप्पत्तीए वहइ वंझासुता-कासकुसुम-खरविसाणोदाहरणं एत्थ, जेसिं पुण आणा तं सिद्धं, निन्नय निरुहे सुक्कं व तंवालपत्तं(?) सव्वन्नु-विसय-निंदितं णेच्छंति भावस्स तं जाइणा । अवि य,

अभावे णत्थि भावत्तं, भावे णत्थि अभावता ।
अवु(?णु)प्पन्नेसु भावेसु, कस्स कत्ता पयावदी ? ॥

सभावओ पयत्ताणं, सभावतो.....(?) ।
णाहं कत्तेति भूताणं, जो पस्सइ [?सो] पस्सइ ॥

तं सभावो हि मयूरादीणं खगाणं चित्तता कहगाणं पयतिक्खता कतिक्खिर आयामिय मा दीणय पुरिसस्स भावेण वट्टभाव परिणदी तु पयावदी पविसिऊणं पुरीसवङ्कणं कुणह लोगट्ठिदि दव्वोक्खारण पोग्गल-पीणागाणं चंद-सूराण य कंत-दित्तीओ सभाव-सासताओ सुकय-दुकय-फल-विसेस(?से)ण य सरूव-संठिताओ पोग्गल-परिणदीओ । एवमेतं अन्नधा समदीए चिंतिज्जमाण लोगसुदीए य समं ण संभवति । अह तेसिं इच्छाए हवदु तणेण(?) रहस्सं । तं अलमेदेणं । सुणह तत्थ जं खलु मुत्तियं कक्करं फरुसं धिदुं(?) जद्धरं (?) जोति-वज्जिदं तं सव्वं अप्पसत्थं । ते भुव(?) महिगोयरेसु अद्धा सागरा भणिया तं जहा-सीहल ज्जावं(?).....(?)हेडयं कुबेरं पंडु वादोयच्छव्वदंतुदंसा(?) हस्सप्पमाणा य विपुला सुप्पभाता सुभाता सुभासणिद्धाणे(?) सीहला करसंभंगा(?) इसिं वारुणाभा य निडाला य णाकिंबला(?) णिसयाभा(?) य, तं च कण-समुब्भवा आपीत विसमा णिट्ठु(?) किण्हा सेता सक्करा सबला णेग-संठाणा मारलोग(?)-समुब्भवा णिम्मला णिहला सुद्ध-जोइमंता महागुणा कोमला मरणिज्ज(?) य मोत्तिया पार-उब्भवा अइमत्रामि(?) संठाणा सुप्पमाणा पभायुता, एतारिस-गुण-युता हिमया(?) ते तु मोत्तिया णवणीत-प्पभा सुद्धा निम्मला कोमला सुभा नातिवेला(?) महल्लारा सोरट्ठा ते तु मोत्तिया विमितं(?) खलितं वुन्नं(?) निव्वालं वन्नकालितं(?) पवित्तं वरि(?) सुद्धं व पांडुवा, मोत्तिय किण्हं सेयं च वन्नेणं सुप्पमाणं पभायुतं कोबेरं मोत्तियं जाणेजवलं(?) विसहरं लहुमेहिंदो(?) वरुणो विण्ह(?ण्हु) जमो अग्गी य मारुतो, एते सव्वेसिं पु(मु?)त्ताणं मणि-रयणाणं य देवता सुक(?क्क)तारक-संकासा माहिंदिम्म-लुव्वल(?)-हरिताल-कणग-पीताभं मोत्तियं वारुणं सुहं, अदसी-राय-पट्टाभं नीलं किण्हं व विण्हवं, जीमूतंजण-निट्ठाइंतं अइ-किण्हं जमदेवतं, जिनिद्दालिम(?) गुंजातं(?) तं पवणं व मारुतं वेतं(?) हेमंगियवोणं(?) पउमाभं अग्गिदेवतं, एदे दु पूयिता सव्वे, पवित्ता मोत्तिया सुभा ।

एदाइं च मोत्तियाइं लक्खणेसु नाउ(?) तओ सुदेवतसरिनामेसु(?) णक्खत्तेसु किणिज्जंति पूइज्जंति, जोण्हापक्ख-पदि(?डि)पदादीसु तिधीसु देवदाभरणेसु य कीर राईण य भूसण-धय-छत्त-चामराभरण-हय-गय-

सयणासण-गिहेसु य नियुज्जंति । सेस जणो पुण सिरेण धारेइ, जइ आगमं पमाणं करेइ । एतेसिं च ते गुणा जे वज्जाणं धारणे केदव्वं(?) मोत्तियं निच्चं चंद-णक्खत्त-साधके, विक्केदव्वं सेसेण मोत्तियं तु असावमे(? असाधगे) । ताणि य मोत्तियाणि गुंजासु धारिज्जंति । अवि य,

तंदुलेसु वरं वज्जं, वरं गुंजासु मोत्तियं ।
अक्खे लोहित-सव्वाणि मलयोवल(?)धारिणो ॥

चतुरो मासए(?) पुन्न, धारये जं महागुणं ।
महागुणं भवे तस्स, सुण्हं तणुय-संभवं ॥

अन्नाणि य एतो हीणाधियतर-वरण-मुल्लाइं अणग्घेयाणि ताणि वि विसेसमयाधियाइं अत्थ पुण महामदगलाणं संकिन्नाणं तेयमंताणं धवल-गइंदाण य संभवं दंतकोसे कुसुंभीसु जाणंति ताणि य बहुधा सट्ठाणज(?जु)त्ताइं होंति। विसेसेण य जे दंतिणो चंद-सूरोवगारेसु उत्तरायणेसु य जादा भद्द-गइंद-कुलुब्भवा य तेसिं उत्तिमंगेसु मोत्तियुप्पत्ति भवति । ते य गय-मोत्तिया बहवे वरिसोवलग-संनिभा बहु-प्पमाणा बहु-रूवा तेयमंत बहुभा(?)

पसत्था य पवित्ता य मंगला आयु-वद्धणा ।
रोग-सोग-हरा णिच्चं रन्नो विजय-वद्धणा ॥

ते वि य सव्व-भूसणाभरण-पहरण-सयणासण-भवण-वहणादीसु निउत्ता धरिज्जमाणा सव्व-सुह-कारया भवंति । ते य अणग्घे वेज्जंति(?) य अवेज्झा य निद्दिट्ठा । एत्तो इमं अन्न-सत्थ-समुब्भवं सुणध, जे किर महोदधि-जले महा-मच्छा तिमि-तिमिंगलादिणो तेसु मच्छेसु

मच्छ-लोयण-संकासं काय-गोलय-सन्निभं
जायते मोत्तियं दिव्वं बहु-संठाण-संजुत्तं ।
पसत्थं तं तु निद्दिट्ठं पविट्ठं(?त्तं) मंगलं परं
धारणीयमणग्घेयं, अवेज्जं तं पि मोत्तियं ॥
पंडिओ रूव-संपन्नो, अत्थमंतो निरामयो ।
सुभगो य भवे निच्चं, जो एतं धारए नरो ॥

एतं धारयंतो अकाल-मरण-विरहितो सदा भवति । इतो वराहं चेव सुणह—

दंत-कोसेसु हादीणं(?) धवलाणं कविलाण य ।
जायते मोत्तियं दिव्वं संख-कुंदेंदु-संनिभं ॥

बहुसो बहु-संठाणं, निच्चलं कोमलं सुभं ।
सुप्पमाणं पवित्तं च, सुप्पहं तेय-संजुतं ॥

धारंतो मुत्तियं तं च, वराहं अट्ठि-संभवं ।
सुत-धण-धन्नायु-बल-वद्धण-करं ॥

सव्व-वाहि-विस-दोसाण णासणकरं च सुहप्पदं जितामित्तं चोरग्गि-रायकु लारिपक्ख-पिसाय-भूत-जक्ख-रक्खस-विसवाल-सावद-सलिल-भयादि-रक्खणकरं च णिच्चं देव-गुरु-राय-पूजितो अपरायितो सव्व-जण-वल्लहो अकालमच्चु-परिवज्जिओ, अवेज्झं अणग्घेयं व देवयुत्तं व तं भवे। एवं वाराहं । इतो मेदयं सुणह बहल-घण-विवर-रुद्धं वा वायुक्खंधाहिं(?) सत्तमाहितो जईयाण पडति सति सलिलं तं बंधइ गोलरूवाइं ।

तत्थ जेत्थ सत्तगासब्भंतरेण वायु-विमुक्का निवडंति, ते वरिसोवलगा भवंति, पडिद-मेत्ता य णादि चिरेणेव विलिज्जंति । जे पुण एग-दुग-तिया तिवरिसातिक्कंता वायुगह-विणडिता परतो पडंति ते सोतामणि-किरण-सप्पभा महारूव-तेय-वन्ना य महागुणा य मोत्तिया भणिया । तं पुण जलदुब्भवं मोत्तियं दुल्लभं मणुयाणं । अवि य,

तं गेण्हंति पडंतं आगासे अमर-गुज्झग-गणा तु ।
तं च पहाणं जाणह सव्वासिं सव्व-मुत्ताणं ॥

तं जइ लभेज्ज कोइ वि पुरिसो पुन्नोदएण विउलेणं ।
सो लभइ दिव्व-सोक्खं, दिव्वं रिद्धिं च मणुओ वि ॥

अरहंत व चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा य एदे ।
लभेज्ज पयं तप्पभो वा मणूसेसु वि सेसाण य ॥

एदं देवेसु पुज्जइ कप्पदुमुब्भवाण वि पासातो इमं च तं मोत्तियं एदं पभूतं दीसइ, अमरवरेसु अणग्घयं वज्जं व।

इमं च अन्नं नाग-समुब्भवं सुणह—वासुकि-तक्खग-कक्कोडग-ककद्दम-कइलास-विज्जुभाणुआणं रवि-ससि-योगोवरागजादाणं दिट्ठीविस-णागयाण य सिरेसु मुत्तागरा होंति । जो विय अन्ने पवर-गिरि-काणणोदरंतर-दीव-वणविवर-विविध-जत्त(?)-वामलूर-निवासिणो देवा रन्न-निवासिणो य मणुएसु वि य जो सर-सरिय-महद्दुमुज्जाण-वम्मिय-घरंतरालेसु वसंति महाविसा णागा तेसिं पि सिरेसु मुत्तागरा होंति । ते य मोत्तिया आणील-वन्न-

तोय-णिद्धा-णिततला(?) निम्मला घणा नादिखुत्ता(?) महल्ला वावट्टा(?) संठाणा दोसमई(?) मंगला य पवित्ता य पसत्था विसणासणा धम्मत्थकाम-जणणा सव्व-संपत्ति-कारिणो सदा-संतिकरा य विसोज्झा(?) वावि बल-वद्धणा नाम-गच्छयसंभूता(?) मुत्ता रत्तोतेण(?) से बल-बुद्धी य रिवुणासो य जायते तुल्ल-गुणुप्पत्ती दीहा नामणीभव(?)। तेसिं पुण नाग-मोत्तियाणं नागमणीय इमा परिक्खा—कत-गोमय-मंडल-घरंगणे रूप्पभायणे णत्था जणयंति मेघ-वरिसं घण-निवहं बिंदु-पादं, जस्सेरिसाणि कम्माणि तं जाणे नाग-संभवं, सुयि(?इ)णा वत्त-पुव्वेण धारणीया दु सा भवे । ताणि य नाग-मणि-मोत्तियाइं इह पभूदाइं दीसंति । एदे दु अवेज्झा अणग्घेया ।

इतो वेणु-समुब्भवं सुणह—अंबर-दीवेसु विविधेसु महासेल-वणाडवीसु य विविध-सावद-भिल्ल-पुलिंदंधयारित-दिसासु विविधासु चितासु(?) य भूमीसु पउरच्छायासु य पयल-नील-मणि-मोत्तिय-निम्मल-वंस-लता-गहण-हरितंकुर-सोभितासु पंडुवाडमादिसु य विसएसु तत्थ जे वंसा सुप्पमाणा तेयमंता सुरूविणो सकला कोमलच्छाया जमलकप्प(?) व धारिणो निम्मलगा दित्ति-संजुत्ता सुप्पमाणा य बहूयते(? बहुतेया) बहु-रूवा मणोहरा ते मोत्तिया भणिया, ते य

संख-फालिय-कप्पूर-ससिपाद-समप्पभा

विविडा(?) खलिता सारबाहुसंताण(?)-संजुत्ता

पवित्ता य पसत्था य मंगल्लागुरु(?)कारगा

सव्व-सुह-संपत्ति-बलायु-वद्धणा

अणग्घेया अवेज्झा य वेणु-जादा य मोत्तिया।

एदेसु विवधाभरण-वरिदेसु(?) सव्व-सुह-संपत्ती भवति। एवं सव्व-मुत्तासु वि अट्ठुत्तर-सद-लता(?) सहस्स-संजुत्तं सुभ-लक्खणं नाम अलंकारियं सज्जिज्जित्ति(?सज्जिजति) उत्तमपुरिसाणं, सेसाणं पुण अट्ठ-सद्द-चदुसट्ठि-बत्तीस-सोलसट्ठगुणा य हा(धा)रणेज्जा, तं चेव सुभ-लक्खण-निवेसित-मणि-मज्झं मणिसोमणयं(?) भणइ । एवं अंसुविहत्था(?) पादसिरालंकारादीसु जरु(?)-जाल-कलाव-मुत्तावलीसु कडग-केयूर-कन्नवालयादीसु वि लाइंदाइ(?) सुहावहाइं मोत्तियाइं ।

एत्तो इमाइं सोगंधिय-फालिय-मणि-कुरुविंद-गब्भाइं देवारन्न-संभवाइं

अणग्घेयाइं रयणाइं पेच्छह णं ति । दाहिणड्ढ-भरहे पुण एदेसिं लंका-सीहल-दीवेसु मज्झ-नगिंदे य संभवो भणिओ । तेसिं च उत्तमाधम-मज्झिमाणं इमा विभत्ती—केइ भमर-चरणदेसि(?) कज्जल-जच्चंजणातिकिण्हा, केइ पउमदलाभा, केइ जंबू-रस-वन्ना, केइछ(?त्थ) राग-हीणा जे पुण ते तंब-नील-सवलाभा(?) वे सोगंधिय-पसमाणा(?) पउम-रागा दुतासाहबल(?) कक्कर-धातुविद्ध-मंदप्पभा य जेत्थ तु ते अरविंद-गब्भा तेयुज्जला य जे गुंजफल-प्पभा ते पूयिता फलिय(?)-संपउत्ता विमलप्पभा पवरा पउम-रागा, केइ पुण विमल-रोताग-कुसुम-कुसुंभ-कणवीर-रत्तुप्पल-निभा, केइ य नीलिकारन्न(?भ)मरंजणादसिभुयग(?कुसुम)-वन्न-नीलुप्पलामलासोग(?)-समप्पभा य, अन्ने चकोर-पारावत-मोरकंठ-सरिसप्पभा तहावरे जलित-हुतवह-किंसुक-सुकतणासोरु(?)धातु-समाण-रागा तह य वर-विद्दुम-रुधिरिंदायुध-राग-वन्ना आतंब-तंब-तरुण-पय-पल्लव-सन्निभा य केइ जहा(?वा)कुसुम-पाडल-बंधुजीव-गुंजद्धराग-सम रुधिर-समप्पभा य जंबूभयं(?णय)-गयणु-ज्जल(?) इंदगोवग-हेमंतरंतरविरतज्जतीहराय(?) केलि-सिरीसमुगवास(?) समाण-वन्ना, केइ असोग-हरिदाल-मणोसिलाभा सामा य पीत-णरलोहित-पीताभासा अणोवमा य सुहवन्न सुतेयवन्ना, एहे(?दे)सु सव्वेसु वि वणेसु अम्ह करिंणं चिरं निरखिज्जमाणोज्जलापत्ति(?) विसेसेण लोहित-राग-जुत्ता विय ते पहाणा पउम-रागा नायव्वा, सेसा रूव-निप्फन्ना स-जोणि-नामं लभंति जहा कसणा विय अंजण-पुलगा भमरंजण-रागाधिया हिरिच्छा(?) । एदेसिं चेव मज्झे जोइरस(?) मज्झ-रागादिणो वि सरूव-निप्फन्ना जंबूरसा य तेसु य सह जायंति । एदेसिं च धारणं सव्व-रोग-सोगहरं भण्णति, सदा य पभूत-धण-धन्न-रदण-मणि-कणग-रयण-संदया(?) विपुल-कुलालंकारा देव-गुरु-राय-पूयिता महाजण-वल्लभा य नीसेस-खवितेहिंक(?)-सत्तु-पक्खा एदेसिं धारणम्मि मणुया भवंति । एदेसिं च धारणं हेम-परिगदं करणिज्जं विसेसेण पुण पउम-रागो कणग-परिगओ धारणेज्जो । जे तु तत्थ पयतिरुक्खा कसाय-धातु-बाहुल्ल-विद्ध-विरूवा वितत्था किण्हा करालग्ग कागपदाकुला य फुडिता य ते सव्व मणीसु वि अहितावहा एगंतेण वज्जणेज्जा । अवि य केइ लोए कुसल-नर-समतिविगप्पिया कत्तिम-मणिणो ते गुरु-लाघवेसु खार-निसाणेसु तेय(?)-पत्तासु दिट्ठीसु परिच्छिदव्वा । जो य तेसिं पुव्व-वन्नियाणं भुयंगाणं सिएसु(?) वि समुज्जला पवर-सुचारु-रूवा भिंगंग-भुयंग-वेणु-सिहिकंठ-

समाण-वन्ना ललितुज्जल-दीवसिहाकारा मणिणो भवंति ते य धारेज्जमाणा आयु-बलु-वद्धणकरा य वण्ण-सोभग्ग-तुट्ठि-धण-धन्न-सिरीकरा य हत्थे निवस्स जइ ते मणिणो हवेज्ज परिसुन्ह(?).....सुत्त-कणगमय संविणद्धा सोधेमित्तफीत(?) मुदिदं सव्वं सतूइहा(?) य धीरउजीवइ(?) राउ(?य) लच्छि णा य तस्स मुणिणो मुल्लं काउं तीरइ। परिच्छा से णाग-सरिच्छा ।

अवेज्झो य सो मणी भणिओ । ते य इमे एत्थ पभूता दीसंति । नूणं **मंदरदेवो** एदे सरीर-लग्गे जह-विधीए ण चेव धरेसीय । अहवा परम-कल्लाणभागी तेण विहाणेण उज्झितु-कामो यतो मया पराइदो, अन्नहा एदेसिं धारणे अजेयो भणिओ । एदे य सव्वे वि मणिणो धणकरा भणिया, विसेसेण पुण पउमरागो कणग-परिगओ धारिज्जमाणो गो-धण-वद्धिं करेति ।

इतो इमे मरगय-मणिणो । एएसिं सुणह मणुएसु उप्पत्ति, तं जहा-जवण-विसए मंथरगिरि-सिरिपव्वदो **वरनित्ता**(?) य महानदी । एदेसु आगरेसु मरगदाइं भवंति । तेसिं पुण छ-पगारा, तं जधा—गारुलं, कायो(?), पुप्फगमणी, खमिओ(?), कीडपक्खं, सुरपतिपियं च । तत्थ गारुलं सुरपतिपियं कीडपक्खं च एदाइं परम-पवित्ताइं दिव्वाणुयाइं सुरपति-गहिदाइं उत्तमपुरिस-भोज्जाणि य । ते य एगागर-संभवा अणेगागर-संभवा य असिदा भिंगा सिरीस-कयलीवण-वंसपत्त-अस्सट्ठा(?), नील-सिहिकंठ-समाण-वण्णं तं गारुलं मरगदं परमं पवित्तं, धारिज्जदं तु गुरु-देवत-जोग-जुत्ता णिद्धा लहू-वलिता तोय-समाण-वण्णा खातोह(?) नीलगिरी कायमणी वि यतो वासाहतो(?) सवल-कक्कर-धातुविद्धो । पुप्फो मणी भवति राइरुक्ख(?)-वन्नो संठाण-तेय-गुण-वन्न-पहाण-जुत्तो सच्छो मयूतोणय(?)-मणोज्ज-उदार-रूवो संपूइतो य सो मरकत-तुल्ल-कप्पो खातो इति दूस नामधेज्जा, खमिओ त्ति एसेव भणंति सच्छं पसन्नमतिकोमल-तेय-जुत्तं जोतिंगणुज्ज(?)समाणवयं गुरुं च तं कीडपक्ख-सरि(?) नाम य मरकतं तं तु सुरचाव-नील-सरिसं जलितं वच्छद्धं(?) एवंविधं गरुल-तेय-समाण-रूवं जे धारयति कणगायित-मरकतं तु ते पूयिता जिणपदे गुण-रूवमंता खातिपरं परम-सोभणदं च जंति, आयुकरं धणकरं विसणासणं च रोग-पणासणं व मणोज्जकरं व निच्च-सोभग्गं तेसु य बंधणं च, तोयग्गि-सत्थ गह-वाल-रिपू-हरं च जे पुण तेसिं फरुस-कक्कर-धातुराई(?) विणट्ठाखयररुक्ख(?) लहुअज्जज्जहतासाहवं(?) निवन्न-संभवेग(?), रागहीणाइ(?), फुडा य ते सव्वहा वज्जणेज्जा, इमाइं पुण-देव-

रण्ण-संभवाई गारुल-कीटपक्ख-सुरवतिप्पियाइं । अवेज्झाइं अणग्घेयाणि य मरकदाइं ।

इमं च अन्नं कक्केदणं नाम मणि जातयपदस्स(?) दाहिणङ्क-भरहे जवण-विसए **जवणवदी** नाम नदी चलित-लील-तरंग-तोयादीयं(?) तोय-मज्झप्पसवं उत्तत(?) पवर-चामीकर-बालरवि-किरण-जलित-वालिंग दोवगारदत्त(?)-वन्नं कक्केदणं संभवति, तं पूयितं तिदस-माणुस-भुयंग-लोगे महागुणं रयणं । तत्थ वि य जं तु विरहेमं(?) मधुप्पगासं आत्तं च पीत-हुतवह-जाल-भासं उप्पज्जति तं तवणिज्जपत्त-परिवेट्ठितं तत्तातावंतोवेजदा(?) हवदि हुतवह सन्निगासं तविदुट्ठितं(?) च जई होई पुराणरूवं कक्केदणं भवति। तं तु खितिप्पगासं(?) आपूरकं(?आयुकरं) कुलकरं सुतनम्मयं(?) च मोत(?सोह)ग्ग-सुद्धि (? वद्धि)-धण-बंधव-वद्धणं कक्केदणं भवति जस्स सदा करे तं । जे पुण तेसिं मज्झे वि राग-गुण-सील-विहीण-तेया पभूत-दोस-लुलिता कलुणा विवन्ना धातुविद्धा य बहु कक्करवेढिता य ते अलक्खणा वज्जणिज्जा य । इमाइं पुण मंदरगिरि-कडय-संभवाई अपरिमित-गुणाइं कक्केदणाइं ।

इमे य अन्ने पुलगा नाम सुरपति-पूइता मणिणो । एदेसिं अगरा लवणजले महिंदे वंपदे(?पव्वदे) देय(?व)-गिरिवरे सिरिपव्वदे य मणुएसु । एएसिं च इमे चउरो भेदा, तं जहा—गल्ला अंकपुलगा कदली मासरा(?मसारा) य । अवि य, चित्ता सयपल्लवदला यमल-कोमला य सेतामला कुलग्घणंबुद-नीलवन्ना गोरोयण-गविल-पिंगल-सप्पभा य पवरा भवंति । सकला ते ससारा(?मसारा) मुद्दीयमाधव(?) मधुप्पतिम(?)प्पगासा कसणंजण-भमर-मे(?भु)यंगम-सप्पभा य केइ य हुदवह-जाता कुडिलग्ग- पिंगल-पिंगसिठ्ठाणतो(?) बहुविधा पुलगा । दुपदेविकलयचलित(?) मधुर-खर-सार-रूवा(?), केइ त्थ सफल-पुडफंकणफेणचित्ता(?) सेता य चंद-णवणीत-निभा तु केइ पदेवितिपुलग त्ति(?) मणीप्पहाणा ते पवर-कंचण-मरीइ-चकोर- णेत्ता आतंब-नील-कविलुज्जल-सुद्ध-वन्ना सेता य चित्त-वर-राग-विभासिता य सत्तपुव्व(?) कुसुम-चक्क-कय-लक्खणाउ, जे एवंगुणजुत्ता ते पसत्था पवित्ता य पुलगा भवंति । एवंगुणजुत्तं सुलक्खणं पुलकं कंठगमबद्ध(?) जे धारयंति ते सदा वि सव्वासुभदोसवज्जिता एगंतसिरि-समुदय-भावणा भवंति। अन्ने य तत्थ भिन्ना जंबूय-मयूर-जलोह-वण्णा

पारावत-भमर-गुंज-णिसन्नकारी(?) रुं(?सं)झारुणुज्जल(?) जलद-महासमूहा ते तारका(?) पुलक-नाम-सभा(?) भवंति । सरम्मं(?) महामलय-चारु-विइत्त-रूवं दूरत्थितं(?) मधु-कोमल-सुद्ध-वन्नं, एतंसि तं पवर-मंगल-जातविधं(?) जंबोलगं(?) बहुविधा वदंति, जं पुण तत्थ काकराभविया(?) गरुय सव्व कंकरुधिराणवदणवित्तं(?)हीणा वियंवियर(?) वामण-हुंडरूवं कबंध-स- वलारुण-नीला(?) अपसत्थ-मिय-पक्खि-सरीसिव-लक्खितं वा तं सव्वमप्पसत्थं वज्जणिज्जं च । एदाइं मणुयुब्भव-लक्खणाइं, इमाइं पुण दे(?दी)वोदधि-दी(?दे)वारण्ण-समुब्भवाइं पुलगवराइं ति ।

एत्तो य इमाइं सव्व-मणि-रयण-णराधिवाइं(?) मणि-रयणाइं भिंगंग-चास-बरहिण-कंठिंदचाव-नीलाऽधियतेयाइं सुरलोगपूयिताइं णिच्चं उत्तम-गुणाइं, एदेसिं [?संभवट्ठाणं] दाहिण-भरहे दाहिण-समुद्द-वेला-लग्गो मलयो नाम महिधरो । तस्स य अवरिं(?) बलय-जणवेम्मोयरि(?)-संठितो इय अणुरागो अत्थि **विदुरो** नाम महिधरो । जो मे(?वे)समणावासो इव पवर-वेरुलिय-विवित्त-कूडो अवि य,

भिंगंग-चास-सिहिकंठ-समाण-रूवं,
दिप्पंत-नील-सुरचाव-समाण-तेयं ।
अज्जावि यस्स सिहरेसु सदा फुरंतं,
वेरुलियं सुब्भ(?भ)वदि मेहरधेण वुट्ठं ॥

एवं तम्मि महिधरे महरिहमणिदितं च वेरुलियं समुप्पज्जइ । तत्तो य **कलिंगा**विसए भीमाडवीए णिम्मल-तरु-निवह-पविराइतो **नलो** नाम महिधरो अत्थि । तस्स य सिहरतलस्स **वावदी(?)** नाम मणिसिला अत्थि । सा अकंपा अत्थि ज्जा य तीए [प]च्चासन्ने य समंतओ विरुलियाकरा अत्थि। ते य मणिणो मज्जार-कोट्ठ-वन्ना, केइ पुण दुव्वंकुर-निकर-पउमिणि-पत्त-पुडग-वन्ना य । केइ त्थ विमल-सकल-भिंगंग-चास-मयूरगल-पव्वगा(?) इंदायुधातिनील-सिणिद्ध-तेया य तत्थ सुरपतिट्ठिया नाम वेरुलिय-मणिणो समुप्पज्जंति । अवि य,

भिंगंग-चास-सिहिकंठ-समाण-वन्नं,
नीलं सिरीस-कदली-दल-तुल्ल-भासं ।
सक्कप्पियं तितं(?), पवर-मणुन्न-रूवं,
वावीहरं भवति सुह-सुहावहं व ॥

किंचिदत्थ चंद-कुमुदागर-संख-गोर-रत्नं(? वन्नं) सविदुमंकुर-पउम-दल-पगासं आतंब-नील-कसणंजण-सप्पभं च इति एव तत्थ बहु-वन्न-गुणा मणी दु केयि पुण वदंति सेतं सक्कप्पियं ति, नीलं वायुप्पियं, भित्रंजणामल-सप्पभं विण्हुप्पियं, रत्तं वरुणप्पियं । परमत्थतो पुण जहा वइर-मुत्ताणं वन्नेसु देवता तहा वेरुलियाण वि । ताणि य सव्वाणि वि सिव-सुह-जय-सिद्धि-धण-धन्न-सिरि-समुदयकराइं आहार-बलकराणि य । ताणि धारयंतो मणुएसु वि परम-सुह-भोग-भागी सव्वीतीसव्व(?)-परिवज्जिओ सव्वत्थेसु य निब्भयो अपराइतो य पुज्जो य देवाण वि किमंग पुण माणुसाणं ? किंतु जे रत्तवन्ना वा मिस्सवन्ना वा जे य पुव्वोदीरित-ओस(?दोस)-संजुत्ता वेरुलिया ते सव्वे वज्जणिज्जा । सेसा चउरो वन्ना तेसिं पूयिता पंडितेसु । एवं सव्वेसिं पि मणि-रयणाणं गुण-दोसा कहिता मे ।

सव्वेसिं पि य कुसल-कप्पिया अत्थि पडिरूवा, तेसिं णिहसि(?स)-कुट्ठ-विलेवणादि खारुण्होदगंबिल-तेल्लमादीसु य परिच्छा कीरइ । एवं मणुयुब्भवेसु इमाइं पुण दीवोदधि-देवारन्न-सुयंसण-गंधमादण-नवलंता(?)दीसु महा-महिधरेसु समुप्पन्नाइं अणोवम-सिरि-समुदय-गुणाइं वेरुलियाइं अणुयाइं जिण-चक्कि-वज्जाणं सुदीए वि दुल्लभाइं अरहंत-चक्कि-बल-केसवाणं परं सुर-पणामिदाइं उवणमंति विज्जाहराण य महद्धियाणं तत्थ सव्वाणि वि मणि-रयणाइं विसुद्ध-जंतियाइ ताइं सलिल-दुद्धंबिल-पक्खित्ताइं सव्वं नियय-पभाए रंजयंति जाव न उट्ठिताइं दीवसिहा-सण्णीकदाणि य छायाए दीवच्छायं रंजयंति, परं सूरकंता(?तो) अग्गि-पादणेण परिच्छिज्जइ, ससिकंतो ससि-पच्चक्खं सलिल-पादणेणं, जलकंतो पुण अगाधमवि जलं कुसाविउ(?) सव्वं न सरदिदाकारा(?) इव जहा पगासयति, अयकंतो सेलकड्ढण-भामण-चुंबणेसु, नागमणि-नागमोत्तियाणं पुव्व-भणिया पडि(?रि)च्छा पज्जं(?) अधिकरणतालट्टिदा(?) अणयणघात(?) मोत्तिय पहरणेहिं जाति ण चुन्नीभवति, कीस पुण वरण-मुल्लविही य भणिया जेण इमाइं अणग्घेयाइं अइ-वित्थर-भयेण य त्ति ।

पउर-जणपदोवणीत-परिभोगा सुहं पविहरामि, अणुणियाणि य मया तत्थ परम-विध(?)-पीडित-सोयाविल-हिदयाइं **मंदरदेवं**तेउराइं । तत्थ य काणि इ अणुपव्वदाइं **मंदरदेवं**, काणि इ तत्थेव परिसंठियाइं । अन्नदा य **मंदरदेव**-सचिवो **सागरदेवो** नाम सो देविजणाणुमदओ उवगंतूण भणइ मे—

देव ! सुणह **मंदरदेव**-जणणीए देवीए **मंदिराए** विन्नत्ती जहा—'मम जेट्ठ-पुत्तो **मंदरदेवो** राया, सो य बालो चेव पिउणा सीहासणे रज्जे य ठावितो य अणायासेण पायसोगो(?) सिद्धविज्जो उत्तर-सेढीए अणन्न-सरिसो विजितामित्तो राया जतो(? जातो) । सुचिरेण कालेण य ततो पुणरवि कन्ना-युवलं पसूता हं । तासिं च कण्णगाण नामाइं **मंदरदेवा मंदरसेणा** य । लहुं पि य बिदियं पि कन्ना-युवलं पसूता, तासिं नामाइं **मंदरदेवदत्ता मंदरदेवगुत्ता** य । तओ अचिरेणं ततियमवि जुवलं पसूता, तह एक्का कण्णा एक्को य दारओ जाओ, तत्थ कन्नगा य **मंदरयसा** दारगो पुण **मंदरओ** त्ति। ताओ य कन्नगाओ रूवसिरीए अन्नोन्नं अतिसयंतीओ कमेण परिवड्ढिदाओ चउसट्ठि-कला-कुसलाओ सुगहित-विज्जाओ समजम्माओ विव समयं जोव्वण-सिरी-पसाधिदाओ । ताओ य कन्नगाओ पंच वि जणीओ पुव्वं चिय **अणंतसेणे**णं चारणसमणेणं विज्जादेवसु णेमित्तिएसु य तुह पत्तीओ णिद्दिट्ठाओ । तं संपयं एदं रज्जं कन्नगाओ य तुब्भं अरहति ।' एदं देवीए संदिट्ठं ।

तओ तस्स भणिदं मे—वच्च, एवं नाम, जं मे देवीओ आणवेंति त्ति ।

तओ तेण पडिनिवेदिते संते सुंदर-तिहि-करण-मुहुत्ते देवीए अंतेउरेसु खयर-राईसु महदा विभूतीए तासिं पंचण्हं वि कण्णगाणं विधिणा गाहिदो हं पाणिं । तत्थ य ताहिं पंचहि वि जणीहिं सुखधु-सरिस-रूवाहिं सुरवरो इव एगंत-रदि-पसत्तो जहा-सुहं अभिरमामि । तं **मंदरदेव**-जणणीए सव्वाणुकूलं ववहरामि त्ति तीए य अणुमदेण तस्स तिभीओ(?) तीए चेव देवीए **मंदरदेवंते**पुराण य दिन्नो ति-भागो, **बंधु-सुबंधूणं** त्ति-भागो **णंदोवणंदाणं** निद्दिट्ठो, सो दाणं ति, कतो य मे तेसिं सव्वेसिं पि पत्तेयं दो(?) अन्न-रज्ज-तुल्ल-विसयाणं रायाभिसेयो, पडिनिवेसितो य **उदधिघोसे** नगरे राया **चित्तगदी**, एगमणुस्सीभूताय, **बंधु-सुबंधूणो, णंदोवणंदा य हरिदेव-चित्तगदिणो** य भणिदा य मे 'परोप्परं अणुयत्तंता अन्नोन्नाविरोधेणं सरज्जाइं भुंजह वीसत्था । **मंदरदेवेण** य णिज्जिएण नत्थि वो संपदं दोसु वि सेढीसु अन्नो सो होज्ज(?) जओ भे भयं होज्ज त्ति ।

अह य मया तत्थ-गदेणं चेव **सामलि**-पिया **असणिवेगो** राया साधावितो सत्तु-दुद्धरिसं भगवंतं **महागोरि**-विज्जं, जेण सो सयमेव

अंगारगस्स निग्गहण-समत्थो जाओ ।

अन्नदा य पुच्छिताओ [मया] पंच वि पियाओ—अहं ताव अज्ज वि अपरिसमप्पितप्पयारो ण ताव कत्थइ निवेसं करेमि । तं जाव अहं सपुरं न वच्चामि ताव तुब्भे किं ताव इहं अच्छह उताहु मया सह परिब्भमह इ(ति)। ताहिं भणियं—अज्जपुत्त ! अम्हाहिं पुव्वि भादि-नियोगेणं परव्वसाहिं तावसरूविणीहिं य अडवीए दिट्ठो भे, तओ दंसण-मेत्त-विमोहिदाहिं पुण दंसणूसुदाहिं दुक्खेण एवदिओ कालो गमिदो णूणं संगम-काले य तुब्भेहिं इहागदेहिं अम्हं ए[ग]-समए णं वसणो य उसवो य आसि । भय(? तव) दंसणूसुयाणं दव्वट्ठ-लोभेणं य रयणी विज्जा-पउत्ता रक्खेसु दिसा-पहेसु धरणि-विदारणीए विज्जाए वज्जमुहीए धरणि-तलं हेट्ठा विदारेऊणं तुह समीवं महाउणीव(?)फले दिट्ठो य सि, तत्थ खणं अवीसत्थाहिं अ हिदय-गदं दुक्खं सप्पयोगं तुह निवेदिदुं तुह समुट्ठाण-काल-समए वित्तालुसत्तणेणं(?) पुणरवि धरणि-विवरेण चेव दुत अवक्कंताओ । तं एस परमत्थो जइ ताव एदाउ तदा अलद्धरसाणं वि अम्हाणं तुहोवरि तारिसा उक्कवा(?उक्कंठा) आसि, किमंग पुण इण्हि पीति-पणय-लद्धासादाणं किह तुज्झ वियोगे खणमवि धिदी भवति?'

मया भणियं- सच्चं एदं किं-पुण जणणी ते अहिणवकाला पिय-पुत्त-विउत्ता इदाणिं तुब्भासु विणा एगागिणी धिर्तिं लभीहिति ? तओ भे किंचि कालं अवस्समिहमच्छियव्वं ति ।'

तओ तासु 'तह त्ति' पडिवन्नं ।

एवं ताहिं पंचहिं वि जणीहिं सहितो जहा-सुहं अभिरमामि ति ॥

॥ इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए पंच-कन्ना-लंभो णाम सत्तवीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. नमः श्रुतदेवताईयै एवाहं पु., नमा श्रुतदेवतायै एवाहं पा. । २. कारय पु. । ३. सुवदट्ठो पा. । ४. वत्थव्वस्स पु. । ५. भायाच्छावन्नगा पु. । ६. वंव पु., बिंव पा. । ७. दुतलग पा. । ८. कंठेगुण पा. । ९. मकुट्ठामेल पु. । १०. कालइण पा. । ११. मरणादीयाइं पु. । १२. कहणोमत्तिल्लिय पा. । १३. घडगा पा. । १४. वब्भगीलेवणाइं पा. । १५. पिक्का पु. । १६. णीसहणुसेलेज्झं पा. । १७. बिंबल्लिदाणं पा. । १८. पेयाणय पा. । १९. ०सोलिय पु. । २०. परिसुक्खोलत्त पा. । २१. कोमामग पु. । ★ ★ एतत्चिह्नान्तर्गतः पाठः पा. प्रतौ एव । २२. तिलगोदा० पा. । २३. मणिमित्तं पु. । २४. संमुद्ध० पा. । २५. पलव पु. । २६. दंप्पिग्रा पु. । २७. रीययो होति पु. । २८. तावे पा. । २९. पीद पीठवक्खणा पा. । ३०. अणट्ठ-सुट्ठ पा. । ३१. पयसयस पा. । ३२. वतभलण० पा., ०भलण खेलण० पु. । ३३. विव्वो पु. । ३४. सवट्ठ० पु. । ३५. समुसुहो पा. । ३६. वलहतिला पा. । ३७. वय दंसा पु. । ३८. इव सर्सि पा. । ३९. उवलोगाणुकूलत्थं दसोभंदिंति पु., उवयोगाणुकीलत्थं दंत० पा. । ४०. अद्ध सहुकंता पा. । ४१. पासवणंत पु. । ४२. अट्ठुज्जादो पु. । ४३. कडत्थुय पा. । ४४. च पा. । ४५. णिप्पित्तिऊण पा. । ४६. वीसच्छहयच्छ घोर पा. । ४७. ताभिकुप्पहणेणं पा. । ४८. भेरव पा., भरह पु. । ४९. ०देहो पा. ।

२८. उव्वसी-लंभो

अह य मया तत्थ गएण चेव **सामलि**-पिता **असणिवेगो** राया साधारितो भगवति महागोरिं । अन्नदा य ममं विज्जाहर-रायाणो वि मे विन्नवेंति—सामि ! **वेदड्ढ**-सिहरे सिद्धायदण-कूडे पाएण सव्व विज्जाहरा जत्तं पज्जुवासिर्हिति । तत्थ तुब्भे वि वच्चह, पेच्छामो तत्थ ताव सासदाओ जिण-पडिमाओ । तओ मया पहट्ठेणं नमो जिणाणं ति वोत्तूणं पडिवन्नं गमणं । तओ हं पियासु पंचसु वि विन्नविओ—अज्जपुत्त ! इच्छामो तुब्भेहिं सहिदाओ जत्तं पेच्छिदुं ति । जत्तं दट्ठूणं पुणो अम्हे नियत्तामो । मया भणिदाओ—एवं नाम। उट्ठेह, वच्चामो त्ति ।

तओ हं तासु कय-पडिकम्मो सव्वालंकार-भूसितो सवयंसो सव्व-विज्जाहर-**चक्क**-सहिओ अभिवादिअ-गुरुजणो विमाणारूढो, महदा य हय-गय-रह-जाण-विमाण-सदसहस्स-समणुयातो, जय जय ति जय-सद्द-पूरित-दिसो णहंगणं समुप्पइओ । पुरओ य तुरित-समुप्पइत-विज्जाहर-जण-जणित-निरुस्सास-पूरितंबराभोगोपहत-पडह-दुंदुभि-रवो खणेण संपत्तो हं **वेदड्ढ-गिरि**-सिहरोवरि-संठियं पुव्व-दिसाय संसियं कूडवराधारियं सिद्धाययण-कूडं। पेच्छामि य विज्जाहर-जण-जाण-विमाणोच्छय-उप्पिजल-भूतं नर-गणं । समोवदिदो हं तत्थ दूरतो विमुक्क-विमाणो नमो गुरूणं ति वोत्तूणं खोखुब्भंतेसु(?) समंततो विज्जाहर-निवहेसु सिद्धायदण-कूड-सिहरं । फुट्टइ व आदोज्ज-गीत-वाइद-रवेणं तं गिरि-सिहरं । दिट्ठा य मया तत्थ समुवागदा पिया **अच्छरा** सह **मेहमालाए** सगोत्त-सहिदाए । उवगदाओ य ताओ सव्व जणीओ मम सगासे, पणमिऊण य भणंति—देव ! तुट्ठा मो जंसि अदण(?णह)-सीरो(?सरीरो) लद्ध-विययो दारुणाओ समर-संकडाओ विणिग्गओ त्ति। मिलिदाओ य चिर-काल-विओगुक्कंठियाओ परोप्परं **मेघमाला**दियाओ छप्पि जणीओ **मदंरदेवा**दियाणं पंचण्ह वि भगिणीणं परं परितोसमुवागदाओ ।

तओ मया सपरिवारेण महता विभूतीए महिदाओ जिणपडिमाओ सासय-सुहमिच्छा । तओ पच्छा अहं सपत्तीओ चोदित-मत्ती

विविधातोज्जाणुवतीए विज्जा-विउरुव्विए विदितघटाणुमएणपतिं(?) बंधिऊण जिण-पडिमाणं पुरओ मुह-मंडव-गओ सयमेव पणमितो हं व(?भ)त्तीए सतियंगहारंयायुक्तं(?जुत्तं) अट्ठ-सय-क[र]ण-बहुलं कत्थइ सोलसविध-पिंडबंधं पदंसयंतो चतुरोयगं(?) बत्तीसइभाए(?) कलितं नव-रस-संपउत्तं तत-विवत-घण-झुसिर-त्तत्तमोहमणुगत(?) तिविह-तिप्पइंग(?)- कलियं सत्त-सर-संपउत्तं [1]अणभिहद-गेय-पाढं सुकुमाल-पयोगं लोगच्छेरय-भूतं पणच्चितो हं । ताव तत्थ अंगहारया जहा—

धिरहत्थो अक्खित्ताणाउग्घट्टित्तु(?)[2] अवगइतो [3]विक्खंभावसितो तलमद्दिद-विक्खंभो तलमद्दितावसप्पितो(?) सत्थितो उड्ढितावसितो संभंतो अब्भुरिदो पासत्थिओ भमरगो मत्तखलितो मत्तविकीओ लिउएदे[4] विलवित्तो मदक्खित्तो अवसप्पिउ व परीत्थ[5] कडिच्छे दोपासच्छेदो आलादमंडलो [6]अपविट्ठो आलीढ पच्चालीढो [7]अक्कीलो सत्थियागतमंडलो[8] णुयिदो(?) पदिसंकित्रो परियच्छगो य नाणा करणा एते बत्तीसं अंगभा(?हा)रगा ।

एत्तो करणाणि य जहा— तलपुप्फं अविद्धं[9] निक्खुहितं [10]कुरुवितं अक्खिदं नितंबो गयहत्थगो कडिच्छेयो [11]जाणिओ समवाहुं णिकुट्टितं ललितद्ध-णिकुद्दगो(?) पादनिकुट्टगो [12]घणलयच्छिय(?) दिसासत्थिओ[13] रेयअसत्थिउ [14]विसालरेय दो घुणिदो चउरो पच्चालीढं अवक्खितो परिच्छिणं मदालसं [15]आदत्तणं उट्ठवाहं सनेउरं संमोदो विक्खित्त पट्ट सत्थिओ [16]पासत्थिओ पासत्थिओ सत्तलिएणं निकुवितं अक्खित्ता रयितं भंमर-सत्थिओ [17]आलाढसदेणदउत्तर(?) चक्कमंडलं उन्नतभूयं[18] आलातो दलरेयपादं भुयंगतासियं[19] भुयंगललितं भुयगारेइतं कुवितभुयंगसच्छारेइतं(?) विच्छिया-वलियं सत्थियारेइतं विज्जयरेतं विज्झविज्झंतं विच्छिदं वियं मेत्तल्लिरयिदं मत्तल्लिनेउरं नितंबविच्छिओ अट्ठ मत्तल्लीसकडं संठिदा पुत्तो ऊरूवित्तं उग्गदं अद्धद्धगं अवगदं । समोसरिदं एलगकाडितं जं पुव्वित्तं अट्ठहियं जणितं संडितं अवंसदिदं समोसरिद मत्तलीउ रोगदं अइक्कतं अवक्कंतं । हयक्कमं उज्जाणं । सुयीनेउरं तडिवक्क मंडोलापादंलंतक्खित्तगं(?) विद्धं पसारितं मयुप्पतंदंडं परिच्छिन्नं । लच्छिपदं ललितं खलितं विलवित्तं उछूढं मच्छुव्वत्तं विलसिदं रेयितं । सपादं नरच्छितीभमरगहरिसियं(?) अयुज्झतं अक्खित्तं दुसत्थियासिरिविलसितं(?) । तलमद्दिण्णयं ऊरुवलियं अस्सोक्कंतं चेव ति एवं अणूण करणमदं उवदंसेतो उवकरणेसु आणूकेसुयिणदनरूवेमि(?) रेयगा

इव जहा- बादरगो कडिरेयगो हत्थिरेयगो गीवारेयगो गोपिंडगो ।[?.....] जहा सिवपिंडापदगी(?) सीहवाहिणी तेक्खपिंडी(?) पउमपिंडी एसवदी अन्नगा रूवपिंडी धारापिंडी वरुणपिंडी जक्खतलपिंडी(?) महापिंडी लोहगवेज्जपिंडी रोद्दपिंडी यणद्द(?) अन्ने य पिंडी पहेसइव्वो(?) दोपमाणो(?)

णव-रसा जहा—सिंगारो हासो करुणो वीरो रुद्दो भयाणगो बीभच्छो अब्भुतो संतो य । एदे य णव रसे आणुपुव्वीए दाएमाणो सम-ताल-लयं सुकुमाल-पयोगेण दिव्व-गेय-संपउत्तं सव्व-जण-णयण-विम्हयकरं णच्चिऊणं जिण-पडिमाण पुरतो कत-प्पणामो परिसंठिओ हं । परम-विम्हिद-मणेण य विज्जाहर-लोगेणं अतीव पसंसिओ । भणति य— अहो ! देवस्स देवस्सेव अणुत्तरा सव्व-पयोगेसु आगम-सत्ती । पुणरवि कय-जिण-पडिमा-पणामो परिसंठिओहमेगओ पेच्छाघर-मंडवस्स देसे । तओ मम णट्टावसाणे एगा विज्जाहर-पवर-कण्णगा णव-सरद-काल-कुसुमित-सिय-कमल-विउल-[२०]मज्झमसर(?)-सरिस-लोयणा पउमाणणा पउम-गब्भ-गोरी पउम-सरिस-सुरभि-गंध-नीसासा वर-पउम-मुणाल-धवल-[२१]ललित-सिहर-सम-सहित-सुयात-सुद्ध-दसणा पउम-दल-कोमल-सरिस-सुकुमाल-कर-चरणाधरोट्ठी, पउमरागाढं[२२] सुहमाई परिहिदा वय(?) पउम-सरिस-सुकुमाल-कोमलंगुलि-तला, पउमराग-मणि-खंडित-वक्खरकंविदाणिय(?)-ककुंदरा, पउमद्द- पाणि-तला इव सा सिरी पच्चक्खा मंदर-सुपसत्थ-पीण-घण-जहण-थण-वदण-मालिणी बहु-जण-नयण-विम्हयुप्फलणकरी(?) करि-करोरु वामया य णासा य(?) सव्वालंकार-भूसिया नाणातोज्ज-समाहत-पक्खुभित-महासमुद्द-निनद-गंभीर-रवाणुरत्ता एगुजण(?)-नियोगेण जिणायदण-पुरओ पणच्चिया । णच्चंतीए य तीए सुंदरऽट्टकरण-वियाणियाए अवहितो अह य रंगसागरो । एसा य णच्चण-करण-वक्खित्ता वि ममं सिणेह-बह(?हु)लाए दिट्ठीए अभिक्खणं अणुबंधइ, पियदि व ममं मुद्ध-पमदसत्थमेहिं(?) अच्छिएहिं । तीसे य पासे य नाणाग(?आ)ओज्ज-वावड-कराओ विज्जाहर-तरुणीओ परिसंठिताओ । तासिं पि मज्झे तत्थ अदीव अइसय-रूव-कलिताओ दुवे कन्नगाओ पेच्छंतो न तिप्पामि । अन्ना वि य तत्थ एक्का विज्जाहर-तरुणी परम-रूव-सिरि-समुदयोववेया । सा वि तासिं सव्वासिं मज्झे आहिवच्चमिव करेमाणी, हंस-लक्खण-खोम-परिहिदा का वि रंग-जुवइ-मज्झ-गदा इव रायहंसी, तीए नट्टण-गदाए कन्नगाए उवज्झायत्तणं पिव कुणमाणी दीसइ ।

तओ पुच्छिदो मया आसन्न-ठिओ **दमणो**—कस्सेदाओ कन्नगाओ त्ति । तेण भणियं—अज्ज ! अत्थि दाहिण-सेढीए **तिरिस्सरियायावत्तं**(?) नाम विज्जाहर-पुर-वरं । तत्थ पुरा आसि राया **सुरिंदकुलो** नाम । तस्स **मागधीए** देवीए दो पुत्ता—**वासवो वज्जपाणी** य । बिइया **लच्छी** नाम देवी, तस्स(? तीए) पुत्तो **रयणंगओ** नाम । तस्स य **रयणंगयस्स** मातामहो **वज्जदाढो** नाम विज्जाहर-राया । तस्स **अमरावती** नाम जणपदो इहेव दाहिण-सेढीए, **अमरतिलयं** च से पुर-वरं । सो य **अमरदाढो**(?) राया अपुत्तो । तओ तेण परिणयभूएण णत्तियस्स **सुरिंदकुल**-सुयस्स **रयणंगय**स्स रज्जं दिन्नं । सो तत्थ संपदि राया वट्टइ । पिता य से **सुरिंदकुलो वासव-वज्जपाणी**णं दोण्हं वि रज्ज दुहा विभयिदूणं जिणप्पणीयं पव्वज्जं पडिवन्नो। **वासव-वज्जपाणिणो** य एग-णगर-ठिया चेव दो वि भायरो परम-पीति-संपउत्ता अपरिभूत-गोयरा अन्न-राईसु, जिण-सासण-भत्ति-गदा संपयं तत्थ रायाणो वट्टंति । तत्थ जा एसा कन्ना व(?ण)च्चति (ए)सा **वासवस्स गंधदेवी**ए दुहिदा **मंदारवदी** नाम, **मीणख** त्ति य भन्नइ । एदाओ से जादो दुवे पासेण कंसतालय-हत्थाओ परिसंठिदाओ दीसंति एदाओ **वज्जपाणिस्स सुंद-णिसुंदाण** देवीणं अत्तियाओ **रंभा-तिलोत्तिमाओ** नाम । जा य एदासिं सव्वासिं पि उवज्झायत्तणं करेइ, अदीव णड-णट्ट-गंधव्वेसु णिसदासेवा-निवेसावधारिणी(?) निराभरणा सिह(?त)तंस(?हंस)-लक्खण-गो(?खो)म-परिहिता एसा विवा सा(?) **अइरादेवी**ए अत्तिया **अलंबुसा** नाम । मया पुच्छिओ **दमणो**—कीस पुण एसा मुक्क सवण-भूसणा दीसति ? तेण भणियं—एस कय-विवाहा । जेण य एसा विवाहिता सो **भंडेण** मारितो । एसा य गंधव्व-णट्ट-सुत्ताणं पारंगता । गुरु-जण-नियोगेण य भगिणीणं उवदेसं करेइ । मम भगिणीए **अच्छराए** सा बालसही होइ ।

एवं तेण य कस(?य) बहुमाणं ताओ पुच्छामि । नट्ट-समत्तीए य सव्वासु वि तासु कओ मम पणामो । मया य ताओ साहुकारेण पूयिताओ। सा य **अलंबुसा** आगंतूणं **अच्छराए** कंठे लग्गा । तओ तीए सह ममं अल्लीणा कयप्पणामा य भणइ—सामि ! जइ वि सि सव्व-विज्जाहर-लोग-गुरू तह वि सि **अच्छरा**ओ मम भगिणीओ दीओ(?) भवति, तेण मे तुह उवरिं गब्भत्तणं(?) अत्थि । तं पुच्छामि ते, देव ! अत्थि एत्थ मम परिस्समे किंचि फलं ? अत्थि एदासु कन्नगासु किंचि णट्ट-गंधव्व-लक्खणं वा ?

मया भणिउ(? यं)-सुयणु ! पहाणो ते उवदेसो । तओ सा परितुट्ठा भणति--सामि ! अहे व्व एदाओ अज्ज मया तुब्भं पुरओ नियया वदेसेणं उवदंसिताओ तुब्भेहिं य पसंसिदाओ। अज्ज-पभिति अवगच्छामि सफलो मे परिस्समो त्ति । तओ सा भगिणीपदि त्ति काऊणं बहु मया सह परिहासिऊण अइक्कंता एगदो वेदियघरंतेणं ।

तओ निव्वित्ताए महिमाए मया **मेहमालादिया**ओ छप्पि जणीओ **मंदरदेवादी**यासु पंचसु वि भगिणीसु सह मेलिताओ सुसंतियाओ य बंधु-**सुबंधूणं णंदोवणं**देसु रायासु सह एगादय(?स) भगिणीओ पेतियं **चिलातवद्धणं** णाम णगरं जणणी-सगासं । **अच्छरा** पि य **अनिलवेग-तेयसारेसु** रदीसु सह **तातपुरं** विसज्जिता । मया पुण विज्जाहर-राय-चक्क-सहिदेण दिन्ना **अंगारगस्स** उवरिं दंड-जत्ता । गदो मोत्तूण य **अट्ठावद**-सेलं निविट्ठो **किन्नरगीते** ससुरंतेउरे **असणिवेगो सामलि**-पिता साधित-विज्जो **अंगारगस्स** अलंघणिज्जो जादो । तओ तं पट्ठियावेद्ध(?उं) [स-]रज्जे गओ हं सविज्जाहर-राय-चक्क-सहिदो **दिवितिलयं** विज्जाहर-नगरं । तत्थ वि अइ-भरक्कंतो जुद्ध-निज्जिओ सह जणणीए सुप्पणहीए पालीतो सपरियणो **हेप्पगो**। अभिसित्तो य मे तत्थ **दमणो** राया ।

तत्थ(?ओ) गओ हं **तातपुरं** चेव । कदग्घ-पूयो पविट्ठो मि अंतेउरं। दिट्ठाओ य मे तत्थ **साकेतय**-रन्नो दुहिताओ सह-**अच्छरा**ओ । अभिरमामि य तासु सहिदो किंचि कालं । अन्नदा य मे भणिताओ **साएत**-नराधिवस्स सुदाओ सत्तरस वि जणीओ—पी(?पि)ए ! जाणह जदि कुलघर-दंसणूसुयं, तओ नयामि ते **साएदं** नगरं ति । तासु वि सव्वासु कयंजलि-पुडासु भणियं—इच्छामो अज्जपुत्त ! तुब्भेहिं चेव सहिदाओ अम्मा-पितूणं पासं गंतुं जे । तओ मया चिर-काल-परव्वस-विउत्ताओ त्ति अणुकंपंतेण भणिदाओ—धिर्तिं कुणह, एस वो अचिरेण णयामि । एवं वोत्तूण मया ताहे विसज्जिता सव्वे विज्जाहर-राइणो स-नगराभिमुहा गदा मम य पणमिऊणं सयाइं रज्जाइं।

णवरं च मया **देवरिसभ**-सुदो **दमयंतो** विसज्जिओ **साएद**-णराधिवस्स पासं दूतत्तणेणं, भणिदा(?दो) य मे— तत्थ(? वच्च) सु(?तु)मं **साएदपुर**-पत्थिवस्स **अमोहसेण**-राइणो सगासं । तं भणाहि जहा, तुह दुहिदरो सत्तरस जणीओ **मेहरध**-सुदेण **घणरधेण** हरिइं(?उं) **णंदणवणं** नीदाओ । सो य **घणरधो नवसत्तिणा** विज्जाहरेण मारितो । ताओ कन्नगाओ **नवसत्ति** चेव

उवगदाओ, तुब्भं च दंसणूसुईओ संवुत्ताओ । तओ जइ तुब्भे आणवेह ताओ आगच्छंति इहमेव सह भत्तुणा । एदं आणं घेत्तूणं गतो **दमयंतो** । अचिरेण य पुणो आगओ भणइ—सुणह अज्जपुत्त ! अहं इतो उप्पदिऊणं गओ **साएदं** नगरं । जाव तत्थ पेच्छामि समइवग्गं(?) सअंतेउर-वरयाणं(?) हम्मिय-तलारूढं गहि[य]ग्घ-हत्थं उम्मुहं ममं चेव पडिच्छमाणं, उवडंतो(?) य मि अग्घेण पडिच्छिओ हं । भणिओ मि तेण राइणा— एहि रायपुत्त **दमयंत** ! सागदं ते । साहह, किंचि कुसली मम जामादा सुदाओ य ममं ति ? ।

तओ मया ईसिं हसिऊणं भणियं—रायं ! तुह को जामाता ?

सो मे उस्सारेउं कन्न-मूले भणही(?इ)—कुमार ! **अड्ढभरह**-प्पहाणो **बल-केसव**-पिदा, तव य भगिणी-पती मम जामादुगो ।

मया भणियं—एदं किह वियाणह ?

सो भणति— मया दुहितावहार-दुक्खिएणं हिज्जो च्चिय अइसय-नाणी **सुहम्मो** नाम महामुणी पुच्छिओ—भगवं ! केरिसं पुण भत्तारं मम दुहितरो उवगदाओ हवेज्जा ? तेण भगवता भणितं— जेण ताओ अवहिदाओ सो **अड्ढभरहा**हिव-पिया **हरिवंस**-कुल-तिलएण विज्जाहर-संकंतेण **अंधगवण्हि**-तणएण **वसुदेवेण** मारिओ । ताओ य कन्नाओ तं चेव उवगदाओ । मया भणियं— भगवं ! कदा पुण दुहितरो पुणो पावेज्ज ? तेण भगवता भणियं— सुए तस्स सालो **देवरिसभ**-विज्जाहर-राय-पुत्तो **दमदंतो** नाम कुमारो तेण विसज्जितो मुहुत्तोदिते आइच्चे दूतत्तणेण तुह सगासं एहिति । पच्छा पुण सो वि सह दारियासु सयमेव तुह सगासं एहिति । तेण य तस्स वयणेण एस अहं सपरिवारो गहिदग्घ-पूओ पडिच्छंतो ठिओ हं ।

तओ से मया तुह वयणं सव्वं निवेदितं । तेण य परम-तुट्ठेणं सदेवीजणेणं भणियं— अहो ! अणुग्गहिया मो । सागयं जामादुगस्स, मम य सुताणं ।

तेण पूइतो पडिनियत्तो इहागओ हं ति ।

तओ मया आपुच्छिओ राया **देवरिसभो** सदेविजणो । **अच्छ**राय कहं वि किच्छाहिं विसज्जिओ हं । ततो विउव्विय-दिव्व-विमाण-रयणो आरूढो हं तत्थ सह तासु य राय-सुतासु । **देवरिसभ**-सुया **दमयंत-अनिलवेग-तेयसारा** तत्थेव ममाणुन्नाए समारूढा । उप्पत्तिदूण य तओ गदो हं **साएतं**

नगरं **आदिअर**-चलण-वदिय-रसाणुग्गहिद(?)-बहुमाण-दट्ठव्व-पूयणिज्जं बहुजणस्स आसम-विविध-काणणुज्जाण-गुविल-वणसंड-मंडितं उद्दाम-सुरभि-कुसुम-भर-भासुरं नितंवतर(?)लग्ग-वग्गंत-जलतरंग-गग्गद(?दं) वलंत-वर-रायहंस-संकुलं सरोरुह-[२३]वर-वावि-वप्प-पप्पिण(?)-तलाग-पुक्खरणि-दीहियापंति-कदुरं(?) वर-कमल-विमल-[२४]कुलुफलणधे(?) कुवलय[२५]-संपयत्त(?)कुमुदकलूर[२६](?)-सुरभि-सीतल-जलोसंसित(?तं) रायहंस-कुलल-कारंडय-[रह-]मिहुणय-सुय-चास-बरहिण-चकोर-[२७]भार(?)-भासंत-सारस-मुक्कोस(?)-कोंच-कलयो(?बो)ल-बहल-मण-रम्मं किन्नरोगिज्जमाण-गंभीर-[२८]चीर-निग्घोस-घोसं अरहट्ट-पट्ट-[२९]णासुत्त(?)-कंत-णिणदंत-जंतकम्मं बहुल-गो-महिस-संकुलं पागार-दार-घर-तोरण-कुलं(?) सत्ति-कुंत-असि-परसु-सव्वलो(?ल)-भिंडिमाल-दुम(?)-दोण-मुग्गरोलग्ग-खग्गमतिदुग्गमुग्ग(?)-धणु-कणग-सेणकोसग्घी(?) बहु-जंत-संधि-तालग्ग-दुग्ग-पागार-गोपुरं(?) गगण-लग्ग-अदि-तुंग-सुग(?)पासाद-भूसिदं [३०]सितविइत्त(?)-घण-भवण-भासुरं विसद-हट्ट(?)-जण-पट्टणाउलं सुरभि-धूप-पडवास-चुन्न-लवली-लवंग-अगरु-तुरक्क-वरचंदणागुरु-समुद्दाम-वीधिसु सुगंध-घण-मघमघेंत-सुरलोग-संनिभं ईहिदोसपवरचक्कगादं(?)कणग-रयण-मणि-कोस-दूसण(?) सधन्न-पुन्न-ससलोग(?)-पुण्णलोग-सुणिविट्ठ-अतिधी-विसिट्ठजण-वणियलोग-वणिदाण कुलाकुलं सुहिजण-भवणेसु णिच्च पडुपडह-समुदिंग-गीद-अलिंगसगदा[३१]विग्गपंत(?) सरस-सचक्क-संजुत्तानादण-णट्ट-करण-सुरलोग-सन्निभं गज्जंत-मत्त-वर-वारण-कुलं मद-सुगंध-गय-दाण-राइतं गुलुगुलुगुलेंत-घण-सरिस-कुंजरं घणघणेंत-रह-तुरग-वंद-[३२]संसण्हित्ताकुलं(?) जिणवरिंद-भवण-कलयलुज्जलं समणय-सत्थ-सज्झाय-सद्द-गंभीर-भासुरं नरवरिंद-गण-वंद-दालिदं(?) निरुवसग्ग-सग्गोवमं सुहं इति एवंगुणजुत्तं तं पुरवरं पेच्छमाणो परम-रिद्धि-संपन्नं **उसभसामि-अजियाभिनंदण-अणंताई**ण चउण्हं पि तित्थगराणं जम्मण-निक्खमण-ठाणं निवेसिद-जिणायदण-मंडितं [३३]कुलघर-दंसणूसुईसु पियासु सहितो परम-विमाणारूढो **साएतपुर**-निवासिणा जणेणं परम-विम्हिएणं उम्हे(?उम्मुहे)णं दीसमाणो माया-वियय-वेजयंती-घंटा-पडाग-संकुलेण विमाणेणं ते[३४]वंतितित्तुच्चरिदेहिं(?) मणिसमूहेहिं गगणतलमुब्भासयंतो सुरवधू-सहिओ इव सुरवदी वालय-विमाणारूढो आवतितो हं मुंति(?अति)-वेगेण **सागेअ**-णराधिव-रयण-घर-मंदरोदरुद्देसे । महता य अग्घेणं सभड-वंद-[३५]परितुट्ठेण(?)

संतेउरेण रन्ना महदा विभूतीए पडिच्छिओ हं । पणमंतो य सरभसं तेण गाढं व अवतासिओ हं । मिलिदाओ य चिर-काल-वियोगुक्कंठिदाओ चिर-काल-वियोगुक्कंठियाणं अम्मा-पिऊणं । [३६]वज्झउ(?) सो य ताण समागमो अच्छेरयभूतो। दिव्वाभरण-वत्थ-भूसिदाणं अणुरूव-सिरी दट्ठूण लोगस्स वि तम्मि समयम्मि सुरलोग-गदा इव आवासि(?) अंतरप्पा। मया तत्थ किंचि कालं विलंबिउकामेणं विसज्जिता **देवरिसभ**-सुता तिन्नि वि जणा । पउर-परिभोगस्स य मम तत्थ अभिरमंतस्स वच्चंति केइ दियसा ।

अन्नदा य अहमेगागी कस्स-इ अणाइक्खिऊणं गदो हं **सिद्धत्थ**-वणुज्जाणंतेण नाग-दत्त-खग्ग-खेडय-हत्थो । परिब्भमंतो पेच्छामि य तत्थ संपत्ति-वसागदं उज्जाण-वर-विवर-गदं **माणसवेगं** विज्जाहर-नरपतिं । तं च दट्ठूण अहं परम-कुविओ तस्स वधाय [३७]उद्धावितो । सो य मया समणुबंधो उप्पतितो नहंगणेणं उत्तराभिमुहो पलाइउं पयत्तो । मया परम-कुवितेणं अवठब्भमाणो पत्तो **अट्ठावयं** सेलं । परम-कोव-लंघिएण य मया कज्जाकज्जं अयाणमाणेणं पुव्व-समरित-वेरेणं ति जिणायतणंतरल्लीणो पहतो पट्ठीए खग्गेणं। सो य खग्गो खेत्ताणुभावेण तस्स अपीडाकरो जाओ । तम्मि य तत्थ-गए पहतमेत्ते चेव भट्ठाओ सेस(?मे) विज्जाओ, पडिओ हं खड त्ति टंक-छिन्ने **अट्ठापद**-सेल-सिहरे । खग्ग-पहरातुरो य सो वि मम विज्जा-भंसणं सोऊणं परम-तुट्ठो भणइ—एदं ते सज्ज(?)फलं अन्नो(?न्ने)ण कम्मेण[३८] काहामि ते । एवं भाणिउं पलादो **माणसवेगो** ।

तओ हं विज्जा-भंस(?से)ण परम-दुक्खिओ खणमेत्तं मोहमुवगओ, अचिरेण य आसत्थो मिच्छामि दुक्कडं ति भणिऊण अरहदासायण-भीओ पडिओ हं जिण-पडिमाणं पाएसु । वंदिऊण य तत्थ उसप्पिणि-तित्थगराणं पडिमाओ, तत्थेव जिणायतणे परम-चिंतोवगदो एगागी बहुविधाइं चिंतयंतो कत्थइ गंतव्वयस्स असत्तो अच्छामि तिनकरंगाइं(?) **अट्ठापद**-सेलस्स अट्ठ भाराइं(?) अवलोएमाणो । एवं च तत्थ अच्छमाणस्स महं सहसा देव-निओग-वाइतो इव फुरिओ मे दाहिणो थणो गुज्झ बाहू य अधरोट्ठो । चिंतियं च मे थण-गुज्झ-बाहाधर-फुरण-कारणं ति । तओ मे सुमरियं देहप्पं(?प्फं)दण-निमित्त-निद्देस-सुत्तं, जहा—

चरण-तले महा-लाहं अट्ठाण-गमण अग्गम-तले वि, केवलं गमणाए पण्हीए पिय पाहूण ग्गगमणा य चलण पट्ठो वणा(?धण)-लाभं, जंघाए

देसिक्क-देस-पडिच्चाओ जाणु-संधीसु वलपरिधावणं(?) [३९]ऊरुपुरओ सेणावति-संदीणं पद-लाभाइं इट्ठ-समागमो वा [४०]ऊरु-पिट्ठतो असुद्धाणंउवए(?) अंतेसु य फुरंतेसु कोस-वद्धी, फासे [४१]सलक्खा पीई, हिदए सोगत्थपज्जवसाणं, कक्खाए पासएसु य परम-पय-पीति-लंभो, थणेसु अपुव्व-विसय-लाभो, वच्छत्थलम्मि पिय-लंभो, अंसे भोग-वद्धी, बाहूसु पिय-जण-समागमो, हत्थेसु अत्थ-लाभं, पट्ठीए पराजओ, [४२]कंठे भोग-भोयण-भूसण-लाभो, सव्वासु वि संधीसु अपाव-मंगलाइं वायु-ठाणाणि तुताणि(?उत्ताणि), केइं पुण जण्णुय-विरहियासु संधीसु एगंतेण असुभं समाइसइ, चुचुगे सुह-संपत्ती, अधरे पिय-समागमो, उत्तरेट्ठे [४३]वि एवं, नासाए गंध-लाभा य पीई वि य जायंति [४४]अडगं(?) [४५]अच्छीसु संपत्ते, कन्नेसु य सुत्त-सुणणं, नयण महो(?) पणय-जणित मन्नु-वसेण सोगेण वा अंसु-पयणं, वामंसु पादे [४६]पुरिसे नियमा रोत्तव्वं, दाहिणट्ठि-हेट्ठु(?)पाणीय आयाणुक्कंठा[४७] सत्त-विमद्दो वा, तत्थ पुण नियमा [४८]विपयोग सव्वओ परंतेसु णयणस्स अत्थ-लाभो परंओवरियुप्पणतीणयण(?) नासिगंतरे वि भिच्च-लाभो, नयणब्भंतरे पिय-संपयोगा, निडाल-ठाणुक्करिसं भुमयासु कसं(?ण्णं)तेसु य मित्त-सुय-दंसणत्थकरं, सिरे पुहवि-लाभो य इति ।

एवं पुरिसाणं दाहिणंग-पप्फंदणेसु आदेस-पडलं(?फलं), वामंग-पप्फंदणेसु आदेस-पडलं(?फलं) पुण तप्फल-विवत्ति-करणं भणियं— सामन्नेसु य सामन्नं विपरीतं चेव इत्थीसु फलं निद्दिसियव्वं, वामेतर-वासं(?) पसंसंति । तं एस परमत्थो एदेसु अंग देसे पाणेण सुकओ-विसेपवाणो(?) इत्थि-रयण-लाभो होहिति, पुव्व-पिय-पणइणि-समागमो वेति । एवं चिंतयंतो अच्छामि तहिं एगागी भट्ठ-विज्जो **अट्ठापद**-सेल-सिहरे ।

अह य सहसा पेच्छामि उत्तराओ दिसाओ भणियंजलिंद(?)नील-वेरुलिय-पवर ह(?म)रकद-मणि-किरण-सामलेणं नहेणं दिव्व-चारु-रूविणिं बालरवि-किरण-मणहर-अवहालि(?) लोल-कमल-गब्भ-गोरिं चल-ललित-पवर-कुंडल-[४९]डोलायमाण-वण-सोभं पप्पुरित-करणं पिव सोतामणिं, किमि-रागारुण-मणहर-विज्जाहर-पवर-भत्ति-चित्तित-[५०]नट्टसाडणज्झ(?) नियंसणं सखिंखिणी य सित-सुहुम-[५१]सुमिवरसोखपाओत(?) पल्हत्थ-पवर- निव्वरंत-मज्झ-तणु-दैसं, तिगिच्छरायारूढेण किरण-समोत्थत-सलिलं पिव पवर-वाधि(?) मणि-कणग-रयण-[५२]चल-वलय-कल-[५३]रसिर-मणहर-

कंचीकलाव-रसणोवसोभितं पीण-घण-जहण-भारंघण-भार-समक्खित्तामिव गोरवेण अहो(?हे) निवडमाणी विज्जाहर-पवर-कन्नगं [५४]उवडमाणिं(?) पेच्छामि । सा य उवत्तिनू(?ऊ)णं गिरि-सिहरे जिणायदणं थूभे य प[याहिणं] दादूणं पडिदा जिण-पडिमाणं पाएसु । मम तीए दिट्ठ-मित्तीए चेव दंसण-मित्त-पसादित-हिययस्स अवगता विज्जाभंस-चिंता । अवि य,

अइ दूसहं पि वसणं पुरिसा विधूणंति विदितमणुभावा ।
अभिनव-जुवति-मणोहर-दंसण-रति-राग-पडिबद्धा ॥

तओ सा वि कन्नगा चेतियाइं वंदिदुं पच्छा नीलुप्पल-मालोवसोभिताए दिट्ठीए ममं अवकिरंती विव पत्ता मे सगासं, अणुप्पयाहिणेण य पडिदा मे पादेसु, भणति य— अहं वो **रयणंगय**-विज्जाहर-राइणो सुताए **उव्वसीए** कन्नाए आणत्ति-किंकरी **ससिलेहा** नाम । सामि ! पादे पणिवयामि । मया चिंतितं— साधु कयं, जीए एरिसा किंकरी तीए सामिणी केरिसा भवीहिति? अहो से अच्छेरय-भूता रूवसिरी !

तओ सा मे पणमिऊण य भणइ— अहो दुरायारेण **माणसवेगेण** अम्ह सामिणो महा-वसणं उववादितं ति ।

मया भणियं— सुयणु ! आसि मे पमाणं(?वसणं) अहं(?ह) उवम(?ग)दं, पुण संपदं तुह दंसणेणं त्ति ।

तीए भणियं—वमा(?स)णभागी(?)सदा भवसु त्ति । किंतु सुणंतु अज्जपुत्तपादा ममागमणपओयणं ।

तओ मया भणियं— भणह, सुयणु ! जं कारणं ति ।

तओ सा मे णवुग्गदा इव चंदिमा पभासयंती दसण-[५५]प्पए(?) विधंती विव सललित-सुपभासित-सितच्छी भणइ— सुणह, अत्थि **वेदड्ढ**-दाहिणाए सेढीए **अमरतिलगं** नाम विज्जाहर-णगरं । तत्थ राया संपदं **रयणंगओ** नाम । तस्स **माणसाए** देवीए अत्तिया कन्नगा परम-रूविणी **उव्वसी** नाम । तीए पत्त-जोव्वणाए गहित-विज्जाए एगओ पुव्व-रत्तावरत्त-काले चिंता जादा, जहा, केरिसं पुण अहं भत्तारं पावेज्ज त्ति । एवं चिंतयंती पसुत्ता । तओ से सुमिणे एवमवत्थय-परिहियाए हत्थगहिओ दंसिदो दिव्व-रूवी पुरिसो । तं च सुदिट्ठं काऊण पडिबुद्धा । विबोध-काले य तं चिय सुमिण-दिट्ठ-पुरिसं पच्चक्खमिव पस्समाणा अच्छति । नवरं च तद्दिवसं चेव

तस्स रन्नो भागिणेओ **सूरवेगो** नाम रायसुतो उवगंतूण भणइ— मम(?माम)! दिज्जतु मे कन्ना **उव्वसि** त्ति । तेण रन्ना भणियं— जहा ममच्छंदेण होति[५६] तओ दिन्ना मया कन्ना, किं-पुण कन्ना-जणणी कन्नाओ पुच्छियव्वाओ । तओ तेण रन्ना एगंते किं पि भणिऊण विसज्जिता कन्ना-समीवं देवी । [५७]तीए त्थवासोएगासंपडिहंतीए(?) सप्पयोगं भणिया—पुत्त उव्वसि ! दिन्ना सि पिउणा **सूरवेगस्स** । अणुरूवो ते भत्ता । तओ **उव्वसी सूरवेगस्स** नामं पि सोउं नेच्छइ, तं सुमिण-दिट्ठं पुरिसं हिदएण परिवहंती फुडेहिं वयणेहिं मातरं भणइ— मे पुणो वि पुरओ सुणंतीए-**सूरवेगस्स** नामं पि गेण्हासि, तओ अवस्सं अत्ताणं सत्थेण विणासेमि । जणणीए भणिया— कहय, अन्नो को तुह रोयइ भत्तारो ? तीए भणियं— जो मे देवतेसु विहितो होहिति तं वरेहामि अहवा अलं दे(?चे)व मम भत्तारेणं ति । तओ जणणीए भणिया—सव्वा वि ता कन्नगा पिति-प्पदेया भवइ । तुमं पुण कीस सच्छंदा ? **उव्वसी**ए भणियं— अम्मो ! सयंवराओ वि अत्थि । तीए भणियं— जइ तुमं सच्छंदा असरिसं वरेज्जासि तओ किं लभसि [५८]कामकारं ? **उव्वसी**ए भणियं— नाहं असरिसं वरेहामि, अलंभंती [५९]कामकारं जीवितं परिच्चइहामि । **सूरवेगे**ण ताव मम अलं ति ।

तओ हं **उव्वसी**-वयणं असेवंत(?) [६०]निवेदितं देवीए **सूरवेग**-पक्खं, राइणा संदिट्ठा से जहा, एसो ते भत्ता अहवा तुमे जावज्जीवं बंभचारिणीए होदव्वं। सो वि **सूरवेगो** नाम भणिओ रन्ना—एसा हु कन्ना पुरिसव्वेसिणी संवुत्ता, नामं पि ते सोउं णेच्छइ । तं वच्च ताव [६१]सगिहं [६२]परीस(?) ति । एवं भणिओ गओ गिहं **सूरवेगो** । कन्नगा य **उव्वसी** तप्पभिती ओहत-मण-संकप्पा तप्पुरिसं सुमिण-दिट्ठं चिंतयंती कत्थइ सुइए वि तं अजाणमाणी य कामागल्लय-गहिता उम्मत्तभूता संवुत्ता । बहुसो परियण-विरहेसु य अमाणी ववगत-ण्हाण-विलेवण-भोयणा अवगत-गीत-गंधव्व(?व्वा) रयणकदाइ(?) वि(?अ)लद्ध-निद्दा कालं गमेदि । सा य तदवत्थ-पुव्व-लद्ध-पणया मया पुच्छिया- सुयणु ! का ते हिदय-वेदणा वट्टइ जओ ते एसा दिणवट्टी(?) जायइ ? तओ सा मम वीसवं(?सं)ती पयलियंसु-णयणा सुविण-दंसणादीयं तं पंथं(? सव्वं) ममं निवेदेइ । तओ मया भणिया— सुंदरि ! अत्थाणे ते सोगो । नारहसि एत्थ अधिती काउं। अहो ते अन्नाणं पदंसिदं । किं जं सुमिणे दीसति तं सव्वं सच्चयं होइ ?

तओ तीए भणियं— सुयणु ! सो मे पच्चक्खं पिव **सोमरूवाए** देवताए पयंसितो, ण तत्थ कायि(? किंचि) मिच्छा । मया भणिया— जइ अज्ज मम तुमं वा देवता तं पुरिसं पुणो दंस(?से)इ तओ सक्का पत्तियदुं ति । तओ तद्दिवसं पुणो वि कत-देवताराहणाए दिट्ठो य पुणो वि सुमिणे तीए सो पुरिसो । पडिबोधेऊण तीए मम कधियं जहा, दिट्ठो मे पुणो वि जहा-रूव-ठिओ सो पुरिसो । तओ मया भणिया—नाहं तुह अकारणुम्मत्तियाए पत्तियामि, तुण्हिक्का अच्छाहि । तीए भणियं— वयंसि ! का णाम अकारणुम्मत्तिया भन्नइ ? मया भणियं—सुयणु ! को नाम कस्सइ रूवं अच्छीसुं सुट्ठु पच्चक्खं दट्ठूणं पच्चक्ख-दंसिणो वा पासातो दु रूवं-गुण-लोभितो उम्मत्ती होइ सो कारणुम्मत्तओ भन्नइ । जं पुण तुमं जहा सुमिणाणं वात-पित्त-सिंभ-वसियाणं दंसणेण उम्मत्ती होइ सो य अकारणुम्मत्तओ भन्नइ । अवि य बहुओ लोगो सुमिणंतरेसु विइत्त-रयण-पुन्नाओ णिहीओ लभइ, किं तत्थ पभाते किं पि सच्चं होइ ? तं उवसम, अलं ते एदेण वितहेणं उम्मत्तणेणं ति । मा अरन्न-मई जहा मयतण्हं अणुपतंति खयमुवेहिसि । एवं मया बहुप्पगारं निब्भच्छिता समाणी तओ कलुणं परुदिता । चिंतितं च मे हिदएण- कट्ठं जायं । अत्थाणे एसा कम्मेण कारय(?) निरासीकता [कदा]यि जीवियं परिच्चएज्ज । अवि य सुणिज्जइ जहा किर सव्व-विसाण वि मयण-विसं दुद्धरं आसुकारिं च।

तत्थ ताव सुणिज्जंति कामस्स उट्ठाणे इमे दस वेगा भवंति, तं जहा,

पढमेल्लयं वेगो [६३]दिट्ठीए एसज्जत्ती(?) मयणरागो, बिदिए समागम [६४]सेविड्ढेति(?) उवायपुव्वेणं ततिए कदासु (?कहासु) रज्जइ, चउत्थे वेगम्मि [६५]मिहंतिवुभइ(?), पंचमम्मि य वेगे लज्जं छड्डेइ [६६]सवच्छा (?) अवगत-लज्जो य जणो वच्चइ सयमेव छट्ठ-वेगम्मि, सत्तम-वेगे मूढा, रुअंति विमुक्क [६७]तसुस्सूसा(?) ।

अट्ठम-वेगम्मि विसन्ने किंचि वि ण गणेइ लोग-वयणिज्जं, नवमम्मि मदण-वेगे [६८]दीणो निच्चेदणो होइ, सूसंतो जूरंतो तिप्पंतो मुच्छिओ निरावेद्धो(?) । पत्तो य दसमे वेगे पाणेहिं मुच्चए खिप्पं ॥

तं जहा,

से लक्खेमि तहा नवमत्थाण-गतं से मदण-विसं वड्ढइ ।
दसमत्थाण-गदं पुण से चत्त जीवित-निग्गालणं कुणइ ॥

एवं चिंतयंतीए मया विसन्न-दीण-वयणा भणिया **उव्वसी**— पिय सहि! अहो ते तीए देवताए सुमिणे तं पुरिसं दंसयंतीए अणात-परमत्थं महंतं वेरियत्तणं कयं ति ।

तिदसपति-पवर-पहरण-सरिस-मज्झदेसा कणग-रुइर-मणि-ंडित-वलय-मेहलाकलाव-कुंडल-मउडावभासित-तणू सरसारविंद-कमर(?)-चंपग-कण्णियार-कणग-चुन्न-वि(?व)न्ना विउल-कमल-दल-ललित-लोयणा इंदायुध-वन्न-कणग-मणि-खचित-खोम-जुवलावभासिरी सिरि व्व पच्चक्खा अह **ससिलेहाए** उवगंतूणं दंसितो सो वेउव्विय-पुरिसो अदीव-मणोहर-रूवो। तं च दट्ठूण तीए सपरुसऽहंकार-भिउडि-बद्ध-वदणाए भणिया **ससिलेहा**-हला सच्छंद-ललिदे ! को ते एस अपुव्वो पराओ पुरिसो इहाणीओ ? निब्भच्छइदुं इतो एस सिग्घं विणासिहिसि सह एदेणं । तीए भणियं— एस सो मया देवता-निद्दिट्ठो पुरिसो **अट्ठापद**-सेल-सिहराओ इहाणीओ । एसो हु सो सव्व-विज्जाहर-लोग-विस्सुओ अज्जपुत्तो **वसुदेवो** त्ति । किं भणामि इदाणिं एस दुक्ख-लद्धो हिदय-वल्लभो बहूणं विज्जाहर-राय-कन्नगाणं घरमागतो य निच्छुभउ(?निब्भच्छउ) त्ति ।

उव्वसीए भणियं—सिग्घं निब्भच्छतु, ण हु मे हिदए(? यं) एतम्मि पुरिसे पसीदति । अपुव्वो य मे एस पडिभायइ । नत्थि किंचि सुमिण-दिट्ठे एत्थ सारिक्खयं ।

तओ **ससिलेहाए** भणियं— सोभणइते(?) सुमिण-दिट्ठो किंऽपुव्वो पडिभाति ?

तीए भणियं—[?अ]पुव्वो मे हिदयस्स । अवि य, आसन्न-गयं पिव तं पियं मम हिदयं अंगाणि य निवेदिंति, ण पुण सो एसो त्ति ।

एवं भणंतीए वेउव्विय-पुरिसस्स तस्स सगासओ तीए ठवितो सो चित्त-पडो, न य सो तत्थ वि सारिक्खदाए अत्थि । तओ तीए एव-भणिए परम-विम्हिदाए **ससिलेहाए** तं अवहरिऊण वेउव्विय-पुरिसं, तओ दंसितो अहयं । तओ सा ममं दट्ठूण तक्खणं चेव नव-जलद-धाराहता इव कलंब-लता जहा अतीव [९९]विधायिता(?), भणति य चदुर-महुर-ललित-वयणा— हला ! द्रोहिए ! इहमाणितं पि नाम [१००]मुक्कंविताए(?) पियं एवच्चिरं पच्छन्नं धरेसि । अहो! ते परम-निग्घिणं हिदयं । एवं भणंतीए ससंभम-चलित-

ललित-दू(?भू)सणाए अब्भुट्ठेऊण भणियं [ती]ए—सायत(?सागतं) पिययमस्स । भणंतीए कओ मम पणामो । मया य उक्कंठ-समय-कालोववादण-कुसलेण रोताक-कुसुम-पल्लव-ज्जुति-सरिसे करतल-जुयले घेत्तूण हक्खुत्ता अवतासिता य मे पियं संलवंतेण, अवक्कंता य ततो तक्खणं चेव **ससिलेहा** संवरित-दुवारे यसागिह(?)[?.....] गंधव्वेण वियाह-धम्मेण वियाहिता **उव्वसी**, आरोविता य मे सोवाण-परंपरा-सुहारोहं सयणीयं, संपादिता य मे भारियत्तेण । कत-सलिल-कज्जो भुत्त-भोयणो तीए सहिओ अभिरमामि। तीए य सह विज्जा-पच्छादितस्स सुरलोगगतस्स व सुहेण वच्चंति कइ दिणाणि।

अन्नदा य मया पुच्छिदा पिया **उव्वसी**— पिए ! ण दीसइ इदाणिं सा तुह कम्मकरी चेडी जिया(?जीए) मि **अट्ठापद**-सिहराओ तुह सगासमाणिओ । तओ सा पहसमाणी भणइ मं—अज्जपुत्त ! कहं जाणह सा मम कम्मकरी? मया भणितं— पिए ! तीए मे पढमं **अट्ठापद**-सेल-सिहरे पणमंतीए भणितं, 'सामि ! अहं ते **उव्वसीए** रायकन्नाए किंकरी **ससिलेहा** नाम पाए पणिवयामि।' एदेण कारणेण जाणामि जहा सा तुह किंकरी । तओ तीए पहसिऊण भणियं— दुभिक्खं खलु तारिसाणं सहीणं भणइ । अज्जपुत्त ! ण सा मम किंकरी । सा हि **वेदड्ढपुर**-पत्थिवस्स **महिंदविक्कम**स्स विज्जाहर-राइणो **ससिकंता**-देवीए अत्तिया **ससिलेहा** नामं मम बाल-सही । तं च सोदूणं अहं परितुट्ठो, साधु अहो ! से सहि-किच्चे विगत-कुल-माण-गव्विता।

एवं वट्टंते चेव आलावे आगता तत्थ **ससिलेहा**, पणता य मया दिन्नासीसा परिसंठिदा **उव्वसी**-सगासे । भणिदा य **उव्वसीए**— हला ! सुमरति ते अज्जपुत्तो, कओ सो इदाणिं य इहमागओ । तीए भणियं— अज्ज तव कुलपुरिसपुरासन्नं ते **केवलभद्दगं** उज्जाणे कारणेण गता आसि । तत्थ य मया सयं अदीसमाणीए दिट्ठाओ **अलंबुसा मंदरपदी** य **रंभा तिलोत्तिमा** चत्तारि वि जणीओ । तासिं च अहापयत्तं आलावं सुणामि । **तिलोत्तिमाए** भणियं— तह य पुण जाणइ कोइ कत्थइ संपयं **देवरिसभ**-जामाता वट्टइ, अतीव-उक्कंठिता अहं तस्स मुह-दंसणस्सेइ । **अलंबुसाए** भणियं— पुच्छामि ताव विज्जं ति । तओ सा विज्जं पुच्छिऊणं भणइ— हला ! सो वो संपदं भगिणीपती वट्टति पच्छन्नो **उव्वसी**-सगासे अच्छइ विदितो य राइणो

रयणंगयस्सेइ । मा य इदं रहस्सं कस्सइ कहेज्जाह । तं च सोऊण अदीव **मंदरपदीए** विवत्तीभूतं वयणं । तं च सोऊण अहं संकित-हियया तुरियं इहं पत्ता । तं एसो परमत्थो । नलो(?) इदाणिं वीससियव्वं, कदाइ ताओ गुरूणं ते परिकहेज्जा ।

एवं वट्टंते आलावे सहसा ताओ वि चत्तारि वि जणीओ आणावेदिताओ तत्थेव पविट्ठाओ । दिट्ठो य अहं तासु वीसत्थ-पगासो अच्छमाणो । पणदाओ य सव्वाओ वि ममं । **मंदरपदीए** मम पणामं काउणं ईसिं सईसं पिव [७१]अकनोदूणं(?) सन्न हिदया उव्वसीए कंठे ।

सव्वाओ वि ताओ कमेण **उव्वसी**ए अवतासिताओ । **अलंबुसा** य वासघर-दुवार-पट्ठीए पेल्लेऊणं दुवार-पह-निसन्ना विणएण य ममं पुच्छइ— अज्जपुत्त ! सुहं वो सरीरस्स ? मया भणिया— सुयणु ! अदीव मे सुहं । **मंदरपदी** पुण मम किंपि पणयकुविता इव जहा पट्ठियादूण(?) परम्मुहा ठिता सईसा विव ण तु लज्जाए, पेच्छंति य मे ईसिं लज्जोणत-वदणाओ **रंभा-तिलोत्तिमा**ओ, करेंति य सणियं मया सह परिहासं परिहासकुसला **अलंबुसा**। तासिं च आगमे विवन्न-वयणा **उव्वसी** संवुत्ता । तं च लक्खेदूण **अलंबुसा**ए भणिया पिया **उव्वसी**—हले **उव्वसि** ! दिट्ठा सि, गच्छामो इदाणिं। एस पुण ते पिओ सयल-विज्जाभायणभूतो । एस ते पयत्तेण रक्खणिज्जो। एवं वोत्तूण विणिग्गदा मह भगिणीसुतं निग्गच्छंती एस **मंदारपदीए** अगहितनामाए समूए(?) भणियं—धिरत्थु इत्थियाणं ति । तं च सोऊण **उव्वसी**ए रोस-रविय-रत्त-लोयणाए भणियं— [७२]मम्मादो(?) दुज्जणो होइ । तओ तासु गतासु **उव्वसी** संत-हिदया जाया । ताहे तीए स-नगरं विसज्जिता **ससिलेहा** । तओ तीए गदाए **उव्वसी** ममं भणइ—अज्जपुत्त ! उट्ठेह, इतो अवक्कमामो त्ति । न युत्तमिहमच्छिउं ति । मया तीए अणुअत्तीए तह त्ति पडिवन्नं । अवि य,

अजिर्दिदिया मणूसा विसय-महारज्ज-पास-डि(?णि)बद्धा ।
करभ व्व रज्जु-बद्धा जुवतीण वसाणुगा होंति ॥

तओ सा ममं अंतद्धित-रूवं घेत्तूण सयं पि अंतद्धिया आगासे समुप्पतिता खणमेत्तेण य बहुं अद्धाणं गंतूणं उवतिदा **मालदिवत**(?)-सिहरे संसित पढम-जिणातावण-भूमि-निबद्धो सत्तूणं अलंघणिज्जो वि भंडकिणो(?) तावसस्स सुरभिकच्छवे(?) आसमपदे । तत्थ य विविध पादवोवसोभिदे

कुसुम-लता-विताण-परिणिट्ठ-अट्ठसु सुगंध-पवण-वासित-हरिता भिलेहड-मर(?) मधुकर-पहकर-विरुत-परिगीदमाण-दुम-निवहे विज्जोवणीत-पउर-परिभोगे सहपियाए अभिरमंतो गतं पि कालं ण याणामि ॥

७१इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए उव्वसी-लंभो नाम अट्ठवीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. अणभिहदागयपीढं पु. । २. ०उघट्टिड पु. । ३. विज्झंभा० पा. । ४. लिउपाद पा. । ५. परावेत्थ पा. । ६. अपिविट्ठो पा. । ७. अकालो पु. । ८. ०मंडला पा.। ९. अवविट्ठं पा. । १०. ऊरुविंतं पा. । ११. जाणिउं पा. । १२. घणतलय० पा. । १३. ०सत्तिओ पा. । १४. ०रेयदो चउरो पा. । १५. अवत्तणं पा. । १६. सत्थिओ सत्तलिएणं पा. । १७. आलीणसं ण पा. । १८. ०तपूतं पा. । १९. 'भुयंगतासियं' पु. प्रतौ नास्ति। २०. सज्झ० पु. । २१. तलिंत पु. । २२. ०रागाइ सु० पा. । २३. ताधिचंप्प वण्णिणा पा. । २४. कलुफलवणाध पा. । २५. ०लयत्त कुमुद पु. । २६. कल्लेर पा. । २७. भारि पा. । २८. वार पा. । २९. णायुत्त पा. । ३०. मितिवि० पा. । ३१. ०विग्गपत सर० पा.। ३२. संसत्तित्ता० पा. । ३३. जिणघर पु. । ३४. तव्वत्तित्तु० पा. । ३५. परिच्छट्ठेण पु.। ३६. चज्झउ पा. । ३७. उट्ठितो पु. । ३८. कमेण पा. । ३९. ऊरुओ पा. । ४०. ऊरुहि पिट्ठितो पु. । ४१. सलक्खी पा. । ४२. कंठे भोयण लाभो पु. । ४३. वियय पा. । ४४. अडेगं पु. । ४५. इच्छीसु पा. । ४६. सुरिसे पु. । ४७. ०क्कंवा पु. । ४८. विखयोग पा.। ४९. लोलाय० पा. । ५०. नट्टमाट्टणघ- पा. । ५१. ०वरभोपणउत पा. । ५२. -वर - पा.। ५३. सरिर पा. । ५४. तुवड० पा. । ५५. पप्पए पा. । ५६. होहि पु. । ५७. तीपत्थवातोएगासंपडिदंताए पा. । ५८. कामवारं पा. । ५९. कावकारं पा. । ६०. मिवेहित पु. । ६१. सगंगिहं पा. । ६२. पसीस पा. । ६३. विहीए पु. । ६४. सविडुंति पु.। ६५. मिद्तिबुभनइ पा. । ६६. सइच्छा पा. । ६७. त्तसुसूसो पु. । ६८. हीणो पु. । ६९. विधीयिता पा. । ७०. ममुक्कंविवाए पा. । ७१. अकलोदूणं पा. । ७२. माम्मोदो पा. । ७३. ★इति वसुदेवहींडि मध्यम कांडे द्वाषष्टितमो उव्वसी-लंभओ नाम परिसम्मत्तो ।छ।। पु. । ।छ।। द्वाषष्टितमो उव्वसी लंभओ नाम परिसमत्तो ।छ।। पा. ।

२९. चतुकन्ना-लंभो

अह मम पिया-सहितस्स तम्मि आसमपदे वसंतस्स एक्को **भूतगो** नाम तावस-कुमारो [?मिलिओ] । सो मम अतीव अणुसप्पइ ओलग्गइ ममं पियं च **उव्वसिं** पुप्फ-फलेसु । तं ममं पिताए य अतीव संपुण(?ण्ण) य निरव्वया(?) जाया । अन्नेसु गुरु-सीसासु पुप्फ-फलाइं उवहरति । सो पुण दियसतो खणमवि मम पासादो ण फिट्टइ । पियाए य पुव्वोवदिट्ठं किंचि वे(?वि)ज्जा-पुरच्चरणं पदं अतीरितं अत्थि । तस्स आराधणा-निमित्तं सा दिणे दिणे भगवओ आदिकरस्स चलण-कहितराणुवास(?)-सणाहे **हिमवंत**-सेल-सिहरे ममाणुमदेण दो-पहरियं पुरच्चरणाणुयोगं एगागिणी [१]दादुं, ततो मम **भूतग**-सहितस्स पासं आगच्छइ ।

अन्नदा य एतीए गदाए पुरच्चरण-भूमिं अहं तावस-कुमारक-सहिओ आसमपदाओ निग्गंतुं बहिता एगं अइ रमणीयं कुसुम-लता-विताण-कलियं परम-गंभीर-सुरभि-सीतलं ससलिगं(?) असोगविधियं उवगओ । तत्थ रत्तासोयस्स अहे पुढवि-सिला-पट्टग-णिसण्णो **भूतग**-सहिओ वियोगं विणोदमाणो [२]प(?अ)च्छामि । एवं च ताव एवं ।

इतो य **वासव**-सुता **मंदारपदी** सिद्धायतण-कुरु(कूड)-जत्ता-पभिदिं चेव मम दंसण-पेल्लिता विविधाइं हिदय-संतावाइं अणुभवति, पुणो य मम बहु विज्जाधर-कन्नगा-सामन्नं णाऊणं असहत्तणेण चिंतेइ "अलं मे एदेण बहु-विलया-जण-सामन्नेणं" ण य पुण हिययस्स तण्हं निवारेइ । अहं पुण कारणं ण याणामि । सा य किर **अलंबुसा**ए लक्खित-कारणा पुच्छिता—हला **मंदारपदि** ! जप्पभिति ते सयल-जिय-लोय-भूसणो **वसुदेवो** दिट्ठो तप्पभिति चेव ते [३]अस्सत्थं मुहरागं लक्खेमि । तं जइ ते एरिसं किंचि काम(?मा)गल्लयं अत्थि तओ मे फुडं तं साहइ(?ह), जा तेण सह समागमं चिंतेमि । सा य किर लज्जावसेण निण्हवइ, भणइ य— जइ परम(?) तुमं चेव अभिलससि,

जइ एवं मंतेसि । **अलंबुसाए** भणियं—कीस तुमं चेव अभिलससि, सव्वमहं(?) तं अभिलसामि । कीस पुण सारदिय-विमल-पुन्न-चंदे दिट्ठी [?न] रमेज्ज अट्ठ(?ह) ताव अहं तं पत्थयामि नवरं सो चेव सणं(?मं ण) न पत्थयति । तीए भणियं—कीस तुमं सो ण पत्थयति ? तीए भणियं—किं तुमं अजोग्गो ? । **अलंबुसाए** भणियं — अहं अन्नेण चालिया चेव हत्थ-गहण-मेत्तेण दूसिता तेण कारण(?णे) अभिमाणेण नेच्छइ पत्थमाणिं पि ममं सो उत्तम-पुरिसो । पत्तियाण वि माणिणो मइंदा [४]पच्चक्ख-परिव्वातितं अभिलसंति । तं एस परमत्थो । तुब्भ पुण जइ एरिसं अत्थि तओ सब्भावं मे परिकहेइ(?ह), जा(?) तेण सह समागमं करेइ(?ह), को ते ततो अन्नो लट्ठयरो अत्थि ? एवं बहुप्पगारं पि भणंतीए **अलंबुसा**ए सा संतेण(?) ण याति, भणति य— भइणो ! णत्थि एरिसं किंचि । तं लक्खेति य **अलंबुसा मंदारपदिं** एव ताव ण्हाण-विलेवणालंकारं मम करेते(?ति) किच्छप्पाणागतं मिज्जंति(?) । तओ **अलंबुसा**ए चिंतितं ए(?ण) ताव तस्स कदेण [५]परमाविहिप्पंता(?) वट्टइ[६] । न य मम [७]सब्भावं गच्छइ । [८]एसो य विसमो वाधी, मरिदव्वं से समावडियं । तओ सा तीए मम य समागमोवायं चिंतयंती ममं च विज्जा-पभावेणं आसमपदं [?ठिदं] नाऊण एगागिणी कदाइ पत्ता तं आसमपदं । दिट्ठो य अहं तीए असोगवीधिया-गओ। सा वि य मया दूरओ पिदिरिच्छादुगं(?) समितिच्छंती लक्खिता[९] । दूरत एव मम पणामं कादुं अद्दंसणमुवगता । तद्दिवसं च मया पिया **उव्वसी** पच्चूसे पुरच्चरण(?णं) भणिदा[१०] । अहं असोगवीधियाए[११] वूअएण-**(?भूतगेण)** सह अच्छीहामि, तत्थ ते आगंतव्वं । तेण य कारणेण तत्थ चिरं अच्छिओ मि, ण य उइदाए वि वेलाए देवी **उव्वसी** आगच्छइ । तओ मया भणिओ [१२]**भूतगो**—वयंस! कदाइ देवी आसमपदं चेव गदा हवेज्ज । उट्ठेहि ताव वच्चामो । तओ गओ हं तेण सह आसमं । तह य **अलंबुसा** ममं भालेऊण गदा **मंदारवदी**य सगासं, न य तत्थ **मंदारपदिं** पेच्छइ । तओ तीए विज्जा पुच्छिया—भगवति! कत्थ संपदं **मंदारपदी** ? तीए भणियं— एण्हिं चेव तवोवणं गदा जओ सि तुमं इहमागया । तं च सोऊण **अलंबुसा** तक्खणं चेव पुणो वि तवोवणं पत्ता । दिट्ठा य तीए तत्थ एग पासे तवोवणस्स **मंदारवदी** रिसिकन्नगा इव वण-विवर-गदा किं पि झायमाणी । तीए चिंतितं—साधु कतं मया विणसितं(?) [१३]जहा नु एसा इहं चेव विणोदण-निमित्तं आणेदव्वाओ, नवरि [१४]सयं चेव आगता । तं दंसेमि ता से तं हिदय-दइतं जा से धिती

होइ । एवं [१५]चिंतेऊणं अल्लीणा तीए सगासं। तओ तीए भणिदा **मंदारवदी**— हला ! किं कारणं इहमागदा सि ? किंचेमं दयिदजण-समागमाणुरूवं दिणकर-किरणेहिं कंपि स(?अ)वत्थंतरं णयसि ? **मंदारपदी**ए भणियं— भइणो ! मा मे उवहसह, दुल्लहो हु इमस्स हिदयस्स पियजण-समागमो । विसमावत्थंतर-गदं अइ-माण-भारक्कंतं खु मे हिदयं न हु व(?ए)रिस-पिय-समागम-भायणं होइ । **अलंबुसा**ए भणियं— कीस एवं संलवह ? **मंदारवदी**ए भणियं— जो एदस्स हिदयस्स वल्लभो य सो जणो परायत्तो । **अलंबुसाए** भणियं— हला ! परायत्तो वि जणो गुणेसु नियययायत्तो किं न कीरइ ? तीए भणियं— भइणो ! अइमाणियं खु मे हिदयं, न हु एवं बहु सामन्ने अभिरमइ । **अलंबुसाए** भणियं—भइणो ! छड्डेह माणं । न हु आसाए माणस्स इ(?य) एक्कहिं अवकासो अत्थि । अवि य—

आस व्व ण कायव्वा, सुंदरि ! माणो व्व ते पमोत्तव्वो ।
आसाय य माणस्स य, पत्ति(?अत्थि) अहि-मंगुसं वेरं ॥

तं एस परमत्थो । अवसर माणं, जं [१६]वो पियं, तओ पणमेइ(?हि), कहेहि किमेदं एत्थ आगमण-पयोयणं ति । तीए भणियं— एवं एत्थ आगमण-पयोयणं जं से चिंतिज्जमाणं पदणुं पि मणोरह-पूरणं अत्थि । एदेण निव्वेदेणं इदाणिं तवोवणं[१७] *किंचि आसइदुं तहा करेमि जहा मे अन्न-भवे वि ताव ण एवं विफला मणोरहा होंति । तओ सा एवं भणंतीए हत्थे घेत्तूण आकड्ढिया भणिदा य— एहि, इमाइं तवोवण-*पेरंताइं मुहुत्तमेत्तं पेच्छमो त्ति। तओ पच्छा गुरुजणाणुन्नं जं जाणसि तं करेज्जासि । तओ इहागदाए तुमं पि मे एत्थ वंदेठा(?दिट्ठा) तओ आढत्ता तीए सहिदा विविधाइं कुसुम-लता-विदाणाइं पलोएदुं। तओ **मंदारवदी अलंबुसा**ए पुच्छिदा—किह ताणि(?) तुमं इहमागदा ? तीए भणियं—मया सुतं जहा सो तव भगिणीवदी अज्जपुत्तो सव्व-विज्जाहर-राया **वसुदेवो उव्वसी**ए सह न नज्जइ केण वि कारणेण म(?इ)मं तवोवणं आगदो । तस्स दट्ठव्व-लोभेणं इहागदा मि । तओ इहागदाए तुमं पि मे एत्थवं(? त्थेव) दिट्ठा । तओ तीए दीहं नीससिऊणं भणियं विमणाए—तं अत्थि ते कोइ दिट्ठो मे(?) पुरगो असोगवीहियाओ त्ति । तओ ताओ रय(म)णीय-तवोवण-संडाइं पेच्छमाणीओ कमेण ललित-पादुद्धराओ कल-मणहर-णिणद-भूसण-रवेणं **मंदारपति**-संतिएणं तं वणं पूरयंतीओ [१५]पुहताओ तं असोगवीधियं । तओ पह(?) **अलंबुसा**ए भणियं—इमं खु

तं [१९]असोगवीहिया-सिलातलं । ससिले(?णे)हं निज्झाइऊण चिंतेमि—द(?ध)त्रं खु एतं सिलातलं जत्थ सो हिदयवल्लहो[२०] मे निवन्नो आसि। अहमवि एत्थ व(?ख)णंतरं निसीज्जा । हिदय ! दे एत्तिएण वि ताव ते सातं करेमि । एवं चिंतयंतीए भणियं **मंदारवदी**ए—भइणो ! बलियम्मि अहं उण्हातवेण किलिस्सामि, ता कहंचि ताव मुहुत्तं वीसमेज्जा । तीए य पडिभणियं–हला! एदं असोगवीधियाए सिलातलं, णणु एत्थ उवविसदु। **मंदारवती**ए भणियं—एवं करेमि । **अलंबुसा** चिंतेति एत्तियं बहुं **मंदारवदी** ण य ममं सकामं करेमि(?) । तओ तम्मि सिलातले निसन्ना **अलंबुसाए** भणिया— हला **मंदारवदी** ! पेच्छ ताव को रमणीओ हु इमो असोग-वर-पादवो, [२१]एसा य से सक्खोव(?) माधवी लता कुसुम-जोव्वण-सणाहा सजोव्वणा इव कुमारी अतीव विरायइ । तं एहि एदस्स असोग-वर-पादवस्स एदीए माधवि-लताए सह वियाह-संबंधं करेमो । तीए भणियं—नाहं एरिसं [?करेमि], एसो हु एतीए वासंति-लताए पुव्वतरं परिग्गहिओ । ण य अहं अन्नस्स वि कस्स वि अन्न-परिग्गहिएण सह समागमं करेमि इच्छामि वा । **अलंबु**साए भणियं—अणिच्छंतीय वि ते अहं बला करेस्स(?स्सं) इ(?इदि) जंपंती उट्ठेउं तीए लताए असोगस्स य परिहासा संजोगं करेइ । पण्हवाइ(?) दोण्ह वि एक्कहि मेलेदुं भणइ—हला ! एसो हु असोग-वर-पायवो राया **वसुदेवो**, एसा य माधवि-लता तुमं । एसा हु अहं तुब्भं वियाहं करेमि ति।

तओ **मंदारपदी** रहसेण उट्ठेउं 'न हु न हु हला ! एदं सहिस्सं, ण मे अन्न-जण-परिग्गहिएण एदेण कज्जं' ति भणंती तीए हत्थातो तं लतं विक्खविय अन्नदो पट्ठिया । ताव य मया वि आसास(?सम)पद-गदेण भणिओ **दू(?भू)तको**—वयंस ! गता एत्थ देवी, आगच्छ असोगवीधियं । दिट्ठा य मता(?या) तत्थ **अलंबुसा मंदारपदी**ए सह परिहसंती । तीए य मम कओ पणामो । दिट्ठा य मे मद्दंसण-लज्जिता परम्मुही **रभसेण** संपट्ठिया **मंदारपदी** ।

अवि य,

मम चेव दंसणाभिकंखिणी मम चेव य दंसणे ।
सलज्जोणद-वदणा परम्मुही पलायइ ॥

अवि य,

इहं पि(?ति) दंसणं पवसितस्स समुहागयस्स लज्जंति ।
कंतस्स कुमारीओ करेंति दोलायणं पेम्मं ॥

तओ तं परम्मुहिं वच्चमाणिं दट्ठूण पुच्छिता मे **अलंबुसा**— सुतणु ! का एसा परम्मुही वच्चइ ? तीए भणियं—एसा हु **मंदारवदी** मम कम्हियि कारणेण पणय-कुविता परम्मुही [२२]संपट्ठिया । तं एस ते अंजली कता, एहि एदं मम कदेणं पसादेह करेह मे पसादं । एसा हु ते बहुमाणेण काहिति वयणं ति। तओ मया भणिओ **भूतको**— वयंस ! विसमे हं निउत्तो **अलंबुसा**ए । कदाइ ममं **मंदारवदिं** पसादयंतं दट्ठूणं देवी **उव्वसी** अन्नहा परिगणेज्ज । सा हु मम वियोगकातरा मम चेव कज्जे तवोवणे परिकिलेसं अणुभवंती अच्छइ । न याहं परिहासेण वि देवीए विप्पियं करेस्सं । जा दयिदमवि बंधुवग्गं परिच्चइदुं इह अवत्थंतरं हं अन्ने अणुभवति (?वामि), किह तीए चित्त-पीलं काहामि ? । **दू(भू)तकेण** भणियं— देव ! महाणुभावा उ देवी ण सा एत्तिएण कप्पीहिति, करेहि से वयणं मा ते एसा अदक्खिन्नालुयं परिगणेहिति । मया तंनिदो(?भणिदो)—तुमं जाणासि, एसो भे(?) तव वयणेण पसादयामि **मंदारवतिं** ।

अलंबुसा पुणो पुणो भणइ— देव ! एसा हु पिय भगिणिया मे कुविया गच्छइ । एहि पडंते(?) गिण्हहि, धरेहि णं ति ।

तओ हं **अलंबुसा**ए सह **मंदारवदिं** गच्छंतिं अणुसप्पामि । तओ **अलंबुसा**ए भणियं—हला **मंदारवति** ! पसीय, मा कुप्पह, एसो असोगपादवो अज्जपुत्तो भविय पसादेउं आगतो । तओ **मंदारवदी** ईसिं अद्धच्छी-मेत्तेण अवलोगेदुं सललितं भणइ—उम्मत्तिया सि तुहं(?मं), असोगो हु पादवो, कह सो अज्जपुत्तो भविहिति । अह सो अज्जपुत्तो भविय जइ ममं पसादेति तओ मम किं एत्थ ? अहमं(?यं) सच्चेव माधविलता भविया(?य) एस दा(?) अच्छीहामि, उवसप्पदु तं चेव लतं ति । **अलंबुसाए** भणितं—वयंस ! पेच्छ, कुविया केरिसया(यं) जंपति । पसादेहि णं ति । **भूतगेण** भणियं— भे रायं ! खु दाणिं एदं असोग-णामग्गहणं वरणं ति । मया भणियं— वयंस ! पुव्व-पवुत्ता एसा काइ कहा(?) जस्स पसंगेण एसा परिकुविय त्ति ।

एदम्मि देस-काले अदिट्ठ-रूवा आगता तत्थ देवी **उव्वसी**, एगंते गहण-वण-विवर-गदा ममं **मंदारवतिं** पसादयंतं पेच्छामि(?पेच्छति) सह

अलंबुसाए । ताव य मया गच्छंती अंमेदूण(?) गहिदा पढमंते(?पडंते)[२३] **मंदारवति**, भणिया य मे—अए **मंदारवदि** ! पसादेइ(?ह) अइ कोवणे ! पसीय वाहि(?) णणु त्यक्तं(?) अवणियत्तीयदु । **उव्वसी** सकोवा तं कारणं पेच्छमाणी चिंतेइ—पेच्छ, पेच्छ, ताव किह अज्जपुत्तो ससंभमो **मंदारवदिं** पसादेइ ! अहो से णिदाह-मज्झ-काल-संतत्त-वण-मोक्खंवुद्धत(?) जीहा इव जुवदीसु चंचलं मणं !

अहं च ससंभमं लग्गो **मंदारवदिं** भणामि— सुयणु ! पसीदय णारहसि मम पढम-पणइणो पणय-भंगं काउं । **मंदारवदी** पुण चिंतेइ—अए ! सच्चं जाव एस अज्जपुत्तो हवेज्ज न व ? त्ति, सचकिता दर परियत्तावलोयणं काउं पुणो वि संपट्ठिया । भणिदा य मया—सुयणु ! नारहसि मम पसादं अकाउं गंतुं जे । उत्तरिज्जय-कोण-गहितं विधारयामि[२५] पुणो पुणो सु(?मु)द्ध लडह-कडक्खावयक्खण(?)-काम-सर-पहारेहिं सल्लेमाणि व्व सललितं अवलोकेति मे भणति य सणियं—अव्वो ! सुणह णा(?मा) णं मुयामि । भणिदा य मे वत्थ-पल्लव-गहिदा णिच्छोडय(?) पट्ठिदा गहिदंसुगवलिव-कडी(?) सचकित वर-गमण-णमित-तणु-मज्जा कुणसिउद्दस्स(?) खेदं तिवलि-तरंगाउलं [२६]थणस्स । तओ **मंदारवदी** चिंतेइ—जाव च्चिय मे एसो [२७]आकारं ण मुणइ तावच्चिय गच्छामि निच्छोडेउं । ते(?ए)वं चिंतयंती हत्थ-समक्खिद-वत्थ-पल्लवा अभिउडि-वदणा भणइ मं— अमुं वाहिं ममं अत्ताणं [२८]अकारण-वोरद्धं(?) करेंतो इमं पि जण**मुव्वसीए** लाघवं णेहिसि ।

एवं भणंती मम हत्थाओ अंसुअं खिविऊणं उप्पतिता नहंगणं, गदा स-नगराभिमुदी । तओ मया भणिया **अलंबुसा**—सुयणु ! कओ मम **मंदारवदी**ए पणय-भंगो । किमिदाणि करणेज्जं ति । तीए भणियं— देव ! [२९]सामाहुणा(?) एसा गच्छामि तहिं चेव पसादेस्सं ति । एवं भणिदुमुप्पतिता **अलंबुसा** । **उव्वसी** पुण चिंतेइ— मम नाम अंतरेणं एरिसं अज्जपुत्तेण करणिज्जं ति । कस्स दाणि एतं कहेज्जउ ? सव्वहा कस्सइ मणूसा सप्पणीयगा(?) नाम । एवं चिंतेदुं [३०]पुप्पत्तणकंठा(?) गदा आसमपदं । मया वि य भणितो **भूतको**— भो ! नाम(?न मे) देवी इमं एरिसं दट्ठूणं कुविदा पडिगदा हवेज्ज, होज्जा हं तीए दिट्ठो कदाइ मे संकमदि हिदयं । तेण भणियं— जाव ताव जाणामि । एवं जंपंतो गओ **भूतको** । गदेण य दिट्ठा अतीव दुम्मणा देवी । भणिदा य तेण— देवि ! एसो हुं राया

असोगवीधियाए चिट्ठइ, पेच्छह णं ति । तीए भणियं— दिट्ठं मए जं दट्ठव्वं, न मे कन्नाणं(?) कज्जं[३१], ण य नियय-जीवितेणं ति । **भूतगेण** य आगंतूण मम कथितं—देवी हु दट्ठूण तं कारणं कुविता य गदा य तवोवणं ति । मया सविसादेणं भणियं— वयंस ! कदं **अलंबुसाए** वेरियत्तणं । किमिदाणिं करणेज्जं ? तेण भणियं— एहि, तहिं चेव गच्छिय पसादेमो ।

तहिं गदा मो तीए सगासं । दिट्ठा य मे पिया एक्कतो[३२] अइमुत्तय-लता-मंडव-गता रुयमाणी । उवगंतूण य मया भणिया— देवि ! किमेवं रुज्जइ ? पसीय, णत्थि मे कोई मज्जातातिकमो । तीए भणितं— मज्जातातिकमो तुह अत्थि नत्थि वा तुमं चेव जाणासि, मया पुण जाणेज्जइ जियंतेसु जइ न वेसेज्ज(?) तं पच्चक्ख वलीयं दिट्ठं मे, अलमिदाणिं जीवितेणं ति । एव भणंती गाढतरं परुन्ना । पडिदो य से अहं पादेसु । बहुविधं पियं चिरं भणंतो पादपडिओ ठिओ हं । न य सा पसीयति । भणिदो य मया **भूतगो**— वयंस ! तुमं तहा ममं वोच्छाहेदूण तम्मि कज्जे, किमिदाणि ण किंचि वि मम हिदं भणसि ? ततो य सो तेण मम ववं(?) **मंदारवति**-कोव-कारणं **अलंबुसा**-भणियं व सव्वं परिकधितं । तओ सा कहं चि पसादिता, भणिता य मे पिया-किह नाम तुमं अकारणे चेव मम एवं कुविता सि ? तीए भणियं— पियदम ! आसंधिताणुरागातो खु जणे(?णा)तो थेवो वि सिणेहातिक्कमो महंतं दुक्खमुप्पादयति । तओ मया भणिया पिया—पिए ! पिहुलसोणि ! का सत्ती मम तुह पडिकूलं ववहरिउं ? । तओ सह पियाए परम-मुइतो तं दियसं च गालेऊणं बिदिय-दिवसे अट्ठमीए पभातं(?ते) जहा **हिमवंत**-सिहरे भगवतो **बाहुबलिस्स** नाणुप्पत्ति-भूमीए चारण-समण-[३३]जुयलं वंदयमवदित्रं(?) एदं च तावसाण अंतिए सोऊण भणिया मया देवी—तुमं ताव अच्छाहि **भूतगेण** सह, जाव अहं भगवदो **आदिकर**-तणयस्स नाण-भूमिं मुणि-जुवलं च वंदिउं गहिद-पोसहो लहुं चेव आगच्छामि । एवं भणिउं आरूढो हं गिरि-सिहरं च । एयं ताव एवं ।

इतो य **मंदारपदी** मम वयण-वदियर-गुण-तरुप्पन्नाणुरागा सउक्कंठा कत्थइ धिदिं अलभमाणी तमेव असोगवीधियं आगदा, चिंतेति य कीर [३४]वीभूत-हिदया तुह नाह नाम तुमं दे हिदय माणुस्सियं समुव्वसिदुं । तम्मि समए इदाणिं दंसणं पियस्स जणस्स मणोरहो त्ति इच्छसि सव्वहा नत्थि मं दरपराधीनस्स धीरता, को य पुण दाणिमवसो जणो होति जस्स कतेणमतीव

णिकरुण-बद्ध-सिणेहं हिदयं कढकढेह । एवं उक्कंठति य अचिंतितोवगदं वहिज्जा(?) अइ-लज्जालुयाए तं जणं अ सुदिट्ठं करिय किमिदाणि परितप्पइ दाइदा पराधीणस्स य तस्स दंसणं पि ते इदाणिं अइ दुल्लभं तं कहं एयं उक्कं[?ठं] इदाणिं विणोदेमि त्ति चिंतेउं तं चेव असोगवीधियं समल्लीणा, किं-कारणं, उक्कंठ-कारणं चेव उक्कंठं विणोदेइ ।

तओ सा दीहं नीससीऊणं चिंतेइ—एस सो पदेसो जत्थ सो सयल-महि-मंडल-तिलगो राया समादिट्ठो इहं तेण पडंते [३५]सण्हासभणिता(सहासं भणिता)—**मंदारवति** ! न [३६]अणुअइ कोवणे पसीय नियत्तियतु अंमो(?) तं चेवमेव एदं **मंदारवदि** त्ति नामं तेण संलत्तं अइ गरुयं जादं चिंतेति य परम दुक्खिता अज्ज सा वि **अलंबुसा** नागच्छइ इहं को दाणिं मे तस्स कहाए इमं परम-दुक्खिद-हिदयं विणोदेहि त्ति । इतरी वि **अलंबुसा** तीए मण-वेदणा-वियारं जाणंती चिंतेइ—न दीसइ अज्ज **मंदारपदी**, कत्थ मण्णे गदा होज्ज ? पुणो य चिंतेति— जहा तीय सो राया दिट्ठो ण सा तं पदेसं मोत्तूणं अन्नहिं धिर्तिं लभीयति । तं गच्छामि ताव तं चेव तवोवणं । उप्पत्तिदूण य संपत्ता तं तवोवण-पदेसं असोगवीधियं च, पेच्छदि य एसा हु **मंदारवदी** उक्कंठा-पराधीण-हिदया किं पि पलवमाणी अच्छइ । तं सुणामि ताव से अहं पच्छन्ना ठिया वीसत्था पलविताइं ।

मंदारवती पुण मदण-वियार-वेदणा-खित्त-चित्ता सणीयं भणइ— अवि णाम सो राया अज्ज इहं पुणो आगच्छेज्जा । एस य [३७]असोग-पादव पतपिता(?)व विन्नवेमि भणंतिय[३८] कयंजलिपुडा— सामि ! असोग-वर-पादव ! अहं ते पिय-समागमाभिकंखिणी परम-दुक्खिता विन्नवेहि(?मि), करेहि मे पसादं जहा ते हिज्जो [३९]अव्वव्वो(?) च्चिय सो जणो इहमाणितो तहा पुणो वि तात ! अज्ज आणिहि । अणुकंपसु ममं मंदपुन्नं । दुक्खित-जणाणुकंपी हु सज्जणो [हो]इ ।

अलंबुसा तओ सोउं चिंतेइ— अम्मो ! अतीव त(?क)रुणं खु वट्टइ । तं करेमि नाम किंचि हिदय-विणोदणं । ममं वि एसा लज्जइ, न जुत्तं च सलज्जं जणं पडिभिंदितुं । तह वि से करेमि किंचि विणोदं । एवं चिंतयंतीए दित्रं से **अलंबुसाए** दंसणं, भणिता य ती[ए]—हला **मंदारवदि**! इहं [४०]पडंतेण [४१]राइणो पडं गेण्हिय किं पि भणाविता तं सद्धा मे अज्ज ममं पि तस्स रूवेणं तं चेव ते तस्स संतियं अणुकरणं [४२]करेंती अहं पि तुमं

किं पि संतावेज्ज त्ति । **मंदारवदी** ईसिं हसिऊण भणइ—णो(?भ)इणो ! अप्पा हु [४३]तं एस सद्धा-सुलभं [४४]एदं एवं करेह । **अलंबुसाए** भणियं—को दाणि अन्नो गुणो विज्जाहर-भावस्स सच्छंद-साधीण-विउव्वणाए य ? तं जाव ताव लताघरयं पविसिय तस्स रूवं करेमि । एवं भणिऊण पविट्ठा असोगवीधियं । तत्थ तीए अवितहं विउव्वियं मम संतियं रूवं वेसगहणं च **मंदारवदी** सुण(?) णिय हिदयं समासाय तह य सयमाला(?) लज्जाहिण एसा सव्वं चेव अज्जपुत्तो आपडिभिन्नक्कमं घरं चेव भवाहि, जेण केण-इ रूवेणं **अलंबुसा** विणोदेइ ण तत्थ तुमे [४५]उव्वसियव्वं ति । ताव य मम रूवेणं असोग-लता-घरातो विनिग्गदा **अलंबुसा, मंदारवदी** य तं दट्ठुं चिंतेति—अम्मो ! जाणंती वि हु अहं एसा **अलंबुस** त्ति, तह वि तस्स तहारूवट्ठियाए सद्धसेणं ण सक्केमि से पुरओ ठाइदुं[४६] । एवं चिंतयंती लज्जिता एगदो संपट्ठिया दरप्पयाता य **मंदारवदी**, गहिदा **अलंबुसाए** य पडंते, भणिया य तीय विज्जा-पभावेण मम चेव सरिस-गिराए—अइ **मंदारवति** ! कोवणे! पसीय णणु णियत्तदु । सा सचकित-गमणा ईसिं अवलोकणा य चलिय-नयणा चिंतेइ—ण केवलं वेसो [४७]सरो वि सो चेव । तओ पुणो य पट्ठिता पुणो य भणिया गहियंसुअ-कोवणाए **अलंबुसाए**—पसीय, नियत्तीयतु, मा अत्ताणयं आयासेहि विज्जा-गहियंसुअ वलित-कडी सचकित-वर-गमण-[४८]नमित-[त]णु-मज्झा [४९]कुणसि उदरस्स खेयं(?) तिवलि-तरंगाउलि-वलस्स(?) तओ **मंदारवदी** ईसिं पहसिता-अहो [५०]सो मे हवितूणं(?) अक्खराणि वि ताणि चेव भणति लज्जं ति अलमित्तियमिदाणिं सुवाहिं मित्ति मा णु मुयति .....(?) ।

नवरं च एदम्मि देस-काले **उव्वसी भूतगं** भणति— कुमारग ! कदायि अज्जपुत्तो असोगवीधियंतेण आगच्छेज्जा, तं उट्ठेह तत्थ चेव वच्चामो । तओ सा तेण सह संपट्ठिदा असोगवणियंतेण, भणियं य पद्धदंतेण(?) रिसिकुमारगेणं होति मा धिदी देवस्स भत्तुणो ते तुमं अपेच्छंतस्स असोगवीधियंतेण [५१]आगओ होहिति गच्छामो तत्थ । **उव्वसीए** य भणियं—धिरत्थु खलु मज्झ, तह नाम सो पियदमो मया अकारण-कुवियाए णिग्घिणाए चिरं अव्वायामिओ, अज्ज वि मे संप(?क)दि हिदयं । तेण भणियं—देवि! विप्पियं कुव्वंतो वल्लहो जणो सुहावेइ चेव, जत्थ पणयो तत्थ कुप्पीयं ति। तओ पुणो **उव्वसी** भणइ— [५२]**भूतग**-वयणेण अहं भणामि, जहा अकारणे मम

पुण अज्ज वि संकदि हिदयं न वि कारणेण महाराओ तहा पडंते गेण्हिय **मंदारवतिं** किंपि किंपि भणावेति य । तेण भणितं—भो ! जति पुणो देवं **मंदारवतीए** पासेण वि वच्चंतं पेच्छिज्जामि तओ जाणेज्जाह सव्वं चेव एतं ति ।

एवं संलवंताइं गदाइं असोगवीधियं । दिट्ठा य तत्थ **उव्वसी**ए ममेव रूवधारिणी **अलंबुसा मंदारवदी**यं अणुसप्पंती । तओ **उव्वसी**ए सकोवाए **भूतगो** भणिओ— कुमारक ! पेच्छ किमिदाणि हु इमं ति । सो य सलज्जो तीए मुहं निज्झायंतो भणति—कट्ठं, तहा वि णाम एसो मम पुरओ तुह [५३]राणसउइं(?) वोल्लिय पुणो वि अवगत-लज्जो **मंदारवतिं** समल्लियइ ! पेच्छंतो वि य एदं पच्चक्खं पि तह वि न पत्तियामि । मा णाम एसो चेव राया हवेज्ज । अहवा नूणं अज्ज वि **अलंबुसाए** चेव तीए पसादणा-हेउं असत्थिउ(?) [५४]दक्खिन्नता(?) नूणं न सक्कइ उव्वरियं । तओ [५५]परम-मन्तु-खिन्ना **उव्वसी** परुयमाणी भणइ— कीस णं ण पेच्छदयति(?)[५६] एस ठिता एस ते सुपुरिसो मित्तो य होय(?इ) मम पुण वत्थको(?वंचको) अत्थि । भणिदा य तेण—होइ अलं मन्तुणा, इहं ताव गहण-लताघरंतर-ठिदा सइरालावं से सुणामि, तओ नाहिसि किं अहं पच्छादेमि णं णप(? ण व) त्ति । सा य तह त्ति वोत्तूण लताघरंतर-गदा वीसत्थ-[५७]वोल्लियाइं तेण सह सोउमारद्धा। [५८]**मंदारवदीए** भणिदा **अलंबुसा**- होउ इदाणिं मुंचह मं कदायि एत्थ गोयर-गदा **उव्वसी** एयं एरिसयं पेच्छेज्ज तओ मे सा लहुइ ति स(?सं)भावेज्जा। **अलंबुसा**ए भणियं—सुयणु **मंदारवति** ! किमेतीए बीभावेसि ? किं वा मम **उव्वसी**ए ? नाहं तीए बीहेमि । **उव्वसी**ए भणियं— कुमारग ! सुणाहि से वयणाइं । ममोवरि केरिसो अज्जपुत्तो ? । तओ **अलंबुसा** परिहास-लक्खेणं **मंदारवदिं** भणइ— सुयणु **मंदारवदि** ! कामयमाणा वि सि ममं **वसुदेवं** तह वि भावं विणिगूहमाणि मम सब्भावं ण गच्छमि ण ते अज्ज मुयामि । **मंदारवदी** चिंतेइ, परिहास-लक्खणा मो परिभिंदति **अलंबुसा**, परिहासेण वि हु अहं एतं ण भणिस्सामि जहा हं कामयामि त्ति । भणिदा य तीए **अलंबुसा**—कहं जाणसि जहा हं कामयामि ? त्ति । **अलंबुसा**ए भणियं— सुयणु ! किं एत्थ जाणिज्ज ? केवलमेत्तं अधीरत्तेणं निगूहसि, इतरहा सव्वं च ते कहामि लक्खणं । अवि य,

कोमल-कंति-सगब्भं इमं खु ते य जा विलास-लायण्णं ।
अंगं कुणइ अणंगो सुंदरि लीहावसेसं ते ॥

तं एस परमत्थो । कामेतु मं मा य मम **उव्वसी**ए बीहावेसि । का य ममं **उव्वसी** होइ ? अवि य,

अहं तुम एत्थ दट्ठव्वत्तं ति निस्सारेउं इहागओ त्ति तं च सोऊण **उव्वसी** सणिअं गाढतरं परुन्ना । तओ **भूतगेण** भणिया— अलं, देवि ! मन्नुणा । एरिसं से अपुव्वं परियत्तं सभावं पेच्छमाणो बीहेमि से, मा मे माणं भंजेज्ज दे स राया । अहवा उप्पादण लक्खण से भणिया य **अलंबुसा**[ए] **मंदारवती**—सुयणु ! पसीय, दासे को कोवो ? [६०]मा य तुमं **उव्वसी** बीहेमि, **उव्वसिं** खु अहं अणुकंपाए दक्खिन्नेण य अणुवत्तामि । अवि य,

सव्वस्स वि एक्क सयणं एक्क एव पिओ भवति [६१]गहा ।
जहा एगो च्चिय होइ पिओ अन्ने कीरंति कारणवसेण ॥

जं वि से सुविढप्पइ तं सुहय परिव्वयं होइ ।
अहवा दक्खिन्ने(?न्ना)णुवत्ती अणुकंपा [६२]एत्थ कीरए लोए ॥

पत्तिय परमं पिय एक्कं चिय माणुसं होइ । जति तुमं **उव्वसी**ए दक्खिन्नाणुवत्ति पि नत्थि तओ किं मम **उव्वसीए** ? पत्ता य तुमं, परिचत्ता य मया **उव्वसी** । न एत्थ संदेहो । एवं च वयणं सोऊणं **उव्वसी** 'हा हा अहो ! अकज्जं दे तो किर मंरविंद(?) पाविय ममं परिच्चइस्सति [ति] दुक्खाहता मोहमुवागदा । **भूतगेण** य ससंभमेण सणियं भणिया ता— आससतु भवती आसन्नमंतं खु एदं दुक्खं ति ।

एयम्मि देस-काले **मंदारवतीए** भणिया **अलंबुसा**—हला ! [६३]इय अट्ठमीए आढवेऊणं पंच-नदि-संगमे भगवतो संजयंतस्स नागरन्नो य अट्ठाहिया महा-महिमा पयत्तो होहिति, तत्थ य दो विज्जाहर-सेढीहि न(?नि)खसेसाहि अवस्स मिलियव्वं । जो तत्थ विज्जाधरो विज्जाधरी वा सकल-कुलोगालि-सहितो सन्नेज्झं [ण] दाहिति तस्स नियमा विज्जा-भंसो भवीहिति । तओ तत्थ अहीण-काले वच्चामो त्ति । ताव य अहं पि चारण-समणे वंदिऊणं ताण सगासे केवलि-पन्नत्तं च धम्मं सोऊणं, पोसहिओ सोऊणं तेसिं चिय सगासे सव्व-विज्जाहर-निगाय-समागमं संजयंत-जत्ताए, ततो पुणरवि नाणभूमिं बाहुबलि-सामिणो चारण-समणे त(?य) वंदिउं पयत्तो हं असोगवीधियं । दिट्ठा य मे तत्थ मया मम रूव-ठिया **अलंबुसा मंदारवदीए** सह परिहसंती। सा य तक्खणं चेव मम रूवं मुत्तूणं पडिदा मे पादेसु, भणदि य ललित-

हासा—अज्जपुत्त ! एवं तुमं अम्हं इट्ठो जेण तुह चेव संतियं रूवं काऊण वीसत्थ-रमणेसु य अभिरमामि । विदियं च तं कारणं तासिं जह वयं ति दिट्ठाओ चेव परिब्भमंतीओ **उव्वसी**, पुणरवि भणिओ अहं **अलंबुसाए**—देव! तुब्भं दंसण-सद्धालुताए अम्हे एत्थ आगच्छामो, किंतु अज्ज सव्व विज्जाहर-जण-संपाओ **संजयंत**मभिसाए पयत्तो भवीहिति, [६४]तं आपुच्छीयसि तत्थ वच्चामो वयं ति । एवं वोत्तूणं अह **मंदारपदी**ए उप्पदिदं । गता **अलंबुसा**। मए य तद्दिवसं साहुणो वंदिउं पडिनियत्तेण गिरि-परिसरे सुहासीणं सारंग-मिहुणं दिट्ठं । तं च मुणिजण विरुद्ध-वेस-धरं[६५] ममं समंतागदं दट्ठूणं सहसा वितत्थं, तओ तत्थ सा तवस्सिणी मई वित्तासा हद-हिदया अइ-संभमेण सारंग-विउत्ता पलायमाणी । अह ते गिरि-णदि-दुरुत्तरे पडिवा(?दा) दूर पधादवियुता[६६] न नज्जइ तओ विसमाओ उत्तरीहिति पुणो न [६७]वि त्ति । सो वि मओ अन्नओ पलाओ । तं एदेणं अकामदेणं अधम्म-कम्मेणं दढं मे डज्झइ हिदयं न हु खलु ममं पि हु तप्पच्चएण पियाए **उव्वसीए** सह वियोगो हवेज्ज त्ति । अहवा [६८]सच्च-नियमधराणं साधूणं पभावेण न किंचि अकुसलं भवीहिति ति साधु-सगासे य मे चिरं अत्थिदं जति हु ण देवी ताव कुविता हवेज्ज, गच्छामि से सगासं। एवं चिंतयंतो संपट्ठिओ हं ।

अह य अदूर-देसे देवी **उव्वसी** रुयमाणी **भूतग**-सहिदं पेच्छामि । अल्लीणो य से अहं, ससंभमेण य मे भणिया— देवि ! किमिदं रुव्वइ ? न हु खलु मया चिरं कतं ति । तओ सा परम-कोव-गदा रुत-तंबच्छी ममं दट्ठूणं परंमुही ठिदा । आढत्ता य मे बहुविधाइं खिज्जिदुं। मया हसंतेण भणिया—पिए ! विसालच्छि ! को(?किं) मया कदं ? एवं भणंतेण गहिदा य पडंते, सा कुविदा भणइ— किं परिभवसि ममं ? अहवा कीस न परिभवसि, जा हं बंधुवग्गं उज्झिदुं तुह पिट्ठओ पवत्ता एगागिणी तावस-कन्नगा इव जहा तवोवणे परिवसामि । तओ हं सावेगो [६९]तं भणामि—पिए ! किं मया कयं ? तुह चेव अणुमदेण वंदओवगदो हं, न याहं तुह कड्ढिअं लीहं अइक्कमामि । [७०]तुह चेव पसादेणं [७१]विज्जा-भंस(?भट्ठो) जीवितो हं । का सत्ती मम तुह विप्पियं काउं ? किं मे उवरि [७२]निच्च भावाणुरत्तं एवं खे(?खि)ज्जसि मे ? पसीय, नत्थि मे अवराधो त्ति । एवं जंपमाणो पडिओ से अहं पाएसु। सा सरोसा भणइ— अवेहि, गदो हु दाणिं पाद-पडणाण कालो त्ति। का य ते [७३]भविय अहं कुप्पामि ? सुदिट्ठं मे[७४] करेहि । दुल्लहं पुण मम दंसणं भवीहिति जाव चेव मे तुमं ण परिच्चयसि ताव अहं चिय

निय जीविदं तुमं च [७५]एस दो वि समयं परिच्चयामि त्ति । एवं भणंती ममं पाद-पडितं अवधुणिऊण नहंगणं समुप्पइत्ता, खणेण य अद्दंसणं गया ।

तओ हं बहुविधाइं पलविउं पयत्तो - हा पिए ! **उव्वसि** ! मा मं अणवधारे(?राधे) परिच्चयाहि । पसीय, नियत्तीयदु, एस मतो हं तुह वियोगे त्ति । विलवदि [७६]य [?म]माणुवतीए **भूतको** वि कलुणं - अहमवि अकारणेहं परिचत्तो देवीए । हा सुयणु ! किं मे कदं ? नियत्तसु, नत्थि मे दोसो । मा मं परिच्चयाहि त्ति । एवं भणंतो परम-विसन्नो भणिओ हं **भूतगेणं**—देव! किह भणसि, नत्थि मे दोसो ? सव्वो च्चिय ते दोसो त्ति। किन्न सुओ सि देवीए मम पच्चक्खं **मंदारवति**-पुरतो अज्ज बहुविधाइं [७७]छडयंतो(?) भणामि [७८]य जहा तुमं पाविऊण एस **उव्वसिं** परिच्चयामि । तं च सोऊणं मया पगलिद-लोयणेणं भणियं—कट्ठं भो ! **अलंबुसाए** [७९]नासिता देवी [८०]संपदो(?दं) चेव मे तीय आगच्छंतस्स कधिदं 'देव ! एवं तुब्भे पिया जोणे(?) वीसंभ-कीलासु वि तव रूवं काऊण मया **मंदारवदीए** सह रिसं(?) त नूणं सा मम वेसधारिणी एरिसी [८१]निमंतयंती सुदा देवीए। **भूतगेण** भणियं— देव ! [८२]एवमेदं । मए वि भणियं देविय पुरओ मा नाम एसो, ण हवेज्ज चेव ते दइतो, विवरीदाणि से चरिदाणि दीसंति । ण मे हिदयं पतिज्जति ति । तं च तस्स वयणं सोऊणं अहिय वियोगुम्मत्तो सुट्ठुदरं विलविउं पयत्तो—हा पिए ! हा मधुरभासिणि ! हा ममऽकारण-कुविते ! हा मयच्छि ! कत्थ सि ममं अरन्न-मज्झे मोत्तूण विपलाता ? एवं विलवमाणो परमदुक्खत्तेण भणिओ हं **भूतगेणं**—हा महाराय! किं दाणि ते असुभं कम्मं कयं[८३] जस्स पभावेण ते इमं महा-वसणं समावडियं ति। मया य रुयंतेण चेव भणियं—अत्थि असुभं कतं मे अज्जेव मंदपुत्रेणं साधु-सगासाओ आगच्छंतेणं हरिण-मिधुणं विउत्तं । मे मंदपुत्रेणं एगतं सुहासीणं मुणि-परिय(?) विहिदपच्चयं णिहुतं मय-मिहुणं जओ विउत्तं, तेण विउत्तो मि दइदादो । एवं अहं तत्थ पलवंतो अच्छामि । सद्दाविदो य नवरि **भूतको** कुलवइणा, मया विसज्जिओ गओ आसमपदं । गदे य **भूतगे** अहं एगागी बहुविधाइं विलवंतो अच्छामि । एवं च ताव एवं ।

इतो य संजयंत-जत्ताए समागदा सव्व-विज्जाधर-संणिकाया । गदा य तत्थेव पिया **उव्वसी** । सा य तत्थ गत-मेत्ता चेव पिउणा **रयणंगदेण** नियय ज[ण]णीए [८४]तयातहिय(?) एसा सलज्जा [८५]अणंते(?) वि

पलायमाणी भणिदा [६६]अपेदूण(?)—पुत्त **उव्वसि** ! मा पलायसु, एत्थ कारणे णत्थि कोइ छलो । सुट्ठु ते कयं जं ते जगप्पहाणो पुरिसो सव्व-विज्जाहर-राय-वल्लभो **वसुदेवो** राया तुमे वरितो त्ति । अम्हं पि एस मणोरहो चेव । लोगोवयारेण स अम्हेसु भागिणेयस्स वि तग्गहण-कज्जे तया [६७]निट्ठुराविता सि, इहरहा तुमं पुव्वं चिय-चारण-समणेण तस्स चेव आइट्ठा, मया वि तस्स समव्वि(?प्पि)ता सि । तं सुट्ठु य ते कयं पुत्त ! मा लज्जाहि । सागतं ते। सुट्ठु य ते कयं जं अज्ज भगवओ संजयतस्स नाग-रन्नो महिमाए तुमे सन्निज्झं दिज्झ(?न्नं) ति । किंतु पुच्छामो ते कधं ति तत्थ ते सो संपदं भत्ता ?

तीए य रुयंतीए भणियं— तात ! विउलाइं से ससुर-कुलाइं अच्छइ, तेसु परिब्भमइ । पिताय(?) से पुण [६८]जाणामि एसा नूणं अम्हं लज्जाय अइ दुम्मणत्तणं अइगदा रुअंतिय जाणइ मम संतियं पच्चंतं । सो य तं संतेऊणं [६९]भीतोहिय **वासव-वज्जपाणीहि** सहिदो जिणायदण-वणसंडे एगत्थय आवासिओ । पयत्ता य उद्धंत-संख-पडह-भेरि-झल्लरि-मुदिंग-सद्दाउला महा-महिमा, एगंत-पमुदितस्स य विज्जाहर-जणस्स कलकलारवेणं फुट्टिदुं पिव पयत्ताइं दिसामुहाइं, गंधव्व-गीद-वाइदुक्कंठिद-हिदया य मम विओगे गाढतरं वियणुमुहा(?) संवुत्ता पिया **उव्वसी** उब्भंत-चित्ता कहं चि किच्छाहि दुक्ख-निरुद्धोरासा दिता(?सा)मुहाइऽवलोगेमाणी कत्थइ तो मुकुलोदर-निरुद्ध-मधुकरा इव नलिणी [७०]पमुक्क-कलुणस्सणा परुन्ना सुपिव(?) जत्तं मन्नमाणी ण कहिं चि धिदिं लभइ । दिट्ठा य सा तदवत्थ-गदा **वज्जपाणि**-सुदाहिं **अलंबुसा**ए य नाणुवि(?) तिन्नि वि जणीओ एगंते गिरि-कंदरोदरत्थं एक्कं अइ-गहणं कुसुमित-लता-विताणं **अच्छमंदरं** नाम उज्जाणं वणंतर पविट्ठाओ । तत्थ य **रंभाए** भणियं—अहं पुण [?ण] जाणामि कोइ एदं पि कारणं समुदितम्मि वि विज्जाहर-लोए अज्ज **उव्वसी** अतीव-दुम्मणा लक्खीयइ । तओ **अलंबुसा**ए भणियं— अहमेदं जाणामि । आगच्छह इमं कुसुमितयं पयति-गहण-संताणक-मंडवं पविसामो । एत्थ सुहासीणाण वो कहेहामो । तओ पविट्ठाओ संताणग-मंडवं ।

एयम्मि देस-काले **उव्वसी** परम-दुक्खिया सउक्कंट्ठेणं मुक्ककंठ-रोत्तुकामा मरण-ववसित-व्वया [७१]सतुत्थातणं(?) अयाणमाणी तमेव **अच्छरा**-संपदं उज्जाणं पविट्ठा, ठिता य तासिं समासन्ने अइमुत्ता मणु(?मंड)वे रोतुकामा य तासिं पुव्व-पविट्ठाणं तत्थ संलावं सुणइ, अमुक्क-सद्दा य सा तत्थ

रुयमाणी चिंतेइ-अहो हु[९२] ता पियाणुरागो सव्व-दुक्खाणं भायणं । जादा मि अवमाण-गहि[?दा] बहुजणस्स सोयणिज्जा अकदपुन्ना । एदं चेव तं **अच्छरा**-संपदं उज्जाणं जत्थ मे पुव्वकुमारीए कत्थइ अणासादित-सिणेह-विस-दुक्ख-कारणाए सुहं अभिरमिदुं । हा ! जह ते चेव इमे मरकत-लता-मंडवगा मंदार-पति(?पारि)यातय-संताणक-कप्पपादव-निवहा चंदण-दुमा य अधिअतरं मे य विरहे हिदयस्स उक्कंठं करेंति ।

एदम्मि देस-काले **अलंबुसा** वीसत्था तं[९३] तत्थागतं अयाणमाणी **रंभा-तिलोत्तमा**णं कारणं कधयिदुं पयत्ता- हला ! सुणह, जहा हं पाव-कम्मा **मंदारवति**-सहिता **उव्वसी**[?ए] अकमो(?अकामा) चेव अवरद्धा हं । तं च वयणं पच्छन्ना **उव्वसी** सोदुमारद्धा, सुणामि ताव [९४]किहेसा **मंदारवदी** य ममावरद्धा उ । **अलंबुसा** भणइ– सुणह, अज्जं चिय [९५]सुरभि(?) कत्थयि तवोवणे अहं अज्जपुत्तस्स **वसुदेव**स्स रूवं काऊणं **मंदारवदीय** सह रमिता हं परिहासेण य । मया तत्थ बोल्लियं जहा 'सुयणु **मंदारवदि** ! पत्ता य मया तुमं, परिचत्ता य **उव्वसी** ।' एदं च भणिज्जंतं तत्थ सयमेव पच्छन्नाए सुदं **उव्वसीए** । तं च सोऊण अणाद-परमत्था कुविया **उव्वसी**, मोत्तूण एक्कयं भट्ठविज्जं अज्जपुत्तं विलवंतं इहागदा । एदं से कारणं पुच्छमाणी विज्जाए परिकधिदं जं पुच्छसि जहा कीस **उव्वसी** दुम्मणा दीसइ, एदं तं कारणं ति। एवं खु मया एरिसाए परिहास-लीलाए अज्जपुत्तस्स वसणमुववादितं ति । एदं च अहं **मंदारवदी** य **उव्वसी**ए अकामाए चेव अवरद्धा । तं चिंतेहमिहमि दाणि अज्जपुत्तस्स एसा देव-दव्वाइं(?) एयम्मि कज्जे **मंदारवती** वि परम चिंतोवगदा तुब्भे समत्थेहिति अहवा तीए अहं चेव दूतिया कदा तुब्भं एदम्मि कज्जे पयडह लहुं ति । एदं व सोऊणं **उव्वसी** दुक्ख-निरुद्धोरुसायमाणी(?) चिंतेइ— हा ! कहं मे निग्घिणाए अविदित-परमत्थाए वि(?वे)लंबितो पाद-पडिओ पिओ अकारणे परिचत्तो । एवं चिंतयंती मोहमुवागदा। मोहं च उवगच्छंतीए तीए मुक्क-कंठाए महया सद्देण कलुणं आरसितं । सो य सद्दो सुओ तासु । भणिदं च **रंभाए**—नूणं आसण-ठियाए सुदं एदं **उव्वसी**ए ए(?रु)दंतिए आसरि(?रसि)तं ति ।

तओ तिन्नि वि जणीओ गताओ तत्थ, दिट्ठा उ य ताहि मोहमुवागदा **उव्वसी**। ताहि परिचारेऊण अवधरिता भणिदा य– आसस, कीस हरिसत्थाणे विसादं वच्चसि ? अचिरा पिएण सह समेहिसि । उट्ठेहि, गच्छ अकारण-

कोव-वसगओ(?आ) तत्थ गंतूण दंसणेण पियं विलवंतं समाससेहि । तीए आसत्थाए समाणीए भणियं—हला ! जो मए अकारणो(?णे) भट्ठ-विज्जो एगागी रुयमाणो छड्डिओ अन्ने किह तं निल्लज्जा पुणो वि संमुही पेच्छीहामि? **अलंबुसा**ए भणियं—जइ तुमं तस्स दंसणं न देसि, तओ अम्हे तं इहमाणयामो चेव, ता पच्चलियं पसादेहि ति । **उव्वसी**ए भणियं— हला ! कीस सो अकारण ति परिच्चायणी(?) मज्झ कदेण इह एहिति पसादेहिति। ताव ममं **रंभा**ए भणिया— हला भइणो ! अइ दुक्खसीला सि जो एरिसस्स वि नाम जणस्स रुससि, तं किं तेण दुज्जणत्तणेणं ? विसज्जेहिसि साभिन्नाणं लेहं, तस्स दंसणेणं सो सयमेव एहिति । **उव्वसीए** भणियं- तम्मि लेहं लिक्खिदुं(?) को वा से तं लेहं नेति त्ति । **रंभाए** भणियं—लिहह लेहं । अहं गच्छामि लेहेणं । अज्जेव णं घेत्तूणं आगच्छामि त्ति । **अलंबुसा**ए भणियं– हला ! एयं से लेहं ।

'अज्जपुत्त ! एसा हु अहं निग्घिणा अकारणे तुमं परिच्चइदुणं समुप्पन्न-पच्छाणुतावा जादा हं । तं जइ जीवंती इच्छसि तओ मे सिग्घं दंसणेण पसादं करेहि' त्ति ।

तदा **उव्वसी**ए कप्पलता-पल्लव-रसो लक्खा-रसाणुकारी गहिदो, तेण य लेहं लिहियं जहा-

अन्नि(?) अरण्णावासगे अज्जपुत्त [९६]कंठपरा(?) पादसुस्सूसिया **उव्वसी संजयंताय**तण-जत्तागद पाद-वंदणं काउं विन्नवेइ । एवं सा ते पणय-ललिदा णिणी(?) विप्पयोगे पच्छाताव-गहिदा अंसुमाला लच्छी[९७] सोआवत्थं कलुणं **उव्वसी** धारयंती जहा दीणा विमणसा सोयणीया सहीणं तुह विरह-वण-दवानल-विसमए डज्झंत-हिदय-संताणं, जीवावेहि महायस ! दंसण-जल-धारा-पादेणं । जइ अज्ज अच्छिम्मि ते पियदम ! ण लभामि दंसणं तुब्भ एतो सजलाहत वालव(?) व्व तरितं विलीहाणं(?) । इय एदं अत्थं नाऊण जहा मे जीवंति संभावेह तहा करेज्जाहि' त्ति ।

एवं लिहिऊण तए स-नाममुद्दाए मुद्दितो बिदियं च लक्खण [९८]य करेणं पडिपउमेण(?) घणं अप्पीलिता [९९]नेह मुद्दा, भणिदा य तीए **रंभा**-हला! एस लेहो सिग्घं घेत्तूण वच्चाहि । तह करेज्जा जहा हं अज्जेव अज्जपुत्त-सणाहा होमि। भणिदा य नवरि **अलंबुसा** वि **उव्वसीए**– भइणो! तुमं पि ताव मम वयणेण पियं भइणियं **मंदारवदिं** घेत्तूण भणाहि, जहा न

तुह एत्थ दोसो, इह [अहं]चेव अवरज्जामि [म]या हु तुम निक्कारणाए अन्नहा संभाविता । सो य दुज्जणो सुयणं अन्नहा संभावेति, अहं चिय एत्थ अवराहे कणीयसं भगिणिं पसादेस्सं ति । एदम्मि देस-काले महता इद्धि-ज्जुइ-समुदएणं महिमा-निमित्तं आगओ तत्थ **धरणो** नागराया । वंदितो य सो सव्व-विज्जाधरेहिं ।

अह य नागराइणा तरिदं उग्घोसावितं **संजयंत**-भत्ति-गोरवेणं महदा महदा सद्देणं-भो भो ! सुणेंतु सव्व विज्जाहर-निकाया, जो विज्जाधरो विज्जाधरी वा इदाणि य(?स)समत्ताए अट्ठाहिदाए महिमाए कओहिवाहि(?) अद्ध जोयणे गओ इह आगच्छइ पविसति वा सो संकुलप्पकुलो(?) भट्ठविज्जो भवीहिति ।

एयं च घोसणं सोऊण संपट्ठिदा वि लेहेण पुणो नियत्ता **रंभा** । तं च नियत्तं दट्ठूणं 'हा ! अइ दुल्लभो मे पिओ जातो' एव भणंती **उव्वसी** दुक्खं मोहमुवगदा पडिदा धरणितले । सगोत्तीहि जल-कण-सित्ता तरिदं [१०]संचारिदुं दुक्खोववात-संधुक्खिता समासासिता भणिता य—सुहय ! किमेदाणीं मोह स-मणोरहं धरेह, नत्थि मे किंचि जीवियं । एवं सा मरण-करुण-दसं उवागता। तं च तदवत्थं कलुण-विलावं दट्ठूण ताओ वि महता दुक्ख-सोगरच्छदाओ(?) सावेगाओ रोइउं पयत्ता[ओ] । एवं च ताव य(?एदं) ।

अहं पि एगागी तम्मि अडविप्पदेसे पिय-विउत्तो कलुणं सोयंतो अच्छामि । एदम्मि देस-काले तं दियसं संजयंत-जत्तं **चलिदेण** एगागिणा किह वि कारणवसेण णहतलं गदेण दिट्ठो हं सत्तुणा **माणसवेग**-विज्जाधरेण वसण-पत्तो । सो य ममं दट्ठूण परम-तुट्ठो मम घायणोवायं चिंतेउं पयत्तो । ताहे सो तावस-रूवं काऊणं आगओ मम समीवं । पुणो य णेण चिंतिदं भट्ठविज्जो वि हु एसो अवज्झो मम, विसेसेण पुण एत्थ **आदिकर**-चरणा-णुग्गहिदे खेत्ते । पुणो य नाग-दत्त-खग्ग-खेडय-साहज्जो तह वि जदि व(?ए)सो इतो कहं वि निग्गच्छेज्जा तओ अन्नेण केणइ उवाएण एदं घादेज्जामि । एवं चिंतयंतो वि[illegible]ग-पभावेणं मम संतियं वसण-कारणं वियाणंतो ममं भणइ— देव ! किमिदं रुव्वइ ? जाणामि ते अहं नाण-पभावेण एदं पिया-वियोग-जणितं च वसण-कारणं । तं मुयह विसादं । एस ते आसन्ने चेव पिया **उव्वसी संजयंत**-महिमाए तुमं आसाए परिच्छमाणी अच्छइ । आगच्छह तत्थ वच्चाहि इत्थ त्ति वेलंवतु(?) वच्चसि आसन्ने हु

तं आयदणं, एहि अहं ते पहं कहामि । तओ हं 'बाढं' ति भणियं(?उं) तेण सह संपट्ठिदु-मेत्तस्स य मे चारु जंबुआ मयूरा पयाहिणं गदा य(?इ)मे य सउणे दट्ठूणं अतीव परितुट्ठो हं । अन्नत्थ य पुणो य चारण-समण-जुवलं असोग-वर-पादव-गतं सुहासीणं दिट्ठं मे । तं च वंदिऊणं पदाहिणं च काऊणं वेगेण संपट्ठिओ हं तेसिं भगवंताणं दंसणे कदत्थमिव अप्पाणं मन्नामि । पुणरवि य अन्नत्थ पदेसे एव वासो पुन्न वयणो ममं तिन्नि वि लोए णिऊणं फलिते रुक्खे णिलीणो, तं च दट्ठूणं मया सुमरितं सकु[न]रुते एक्कं सुत्तं—

जदि कज्जे पयलियस्स दु वासो घेत्तूण किंचि कीरंतु ।
[१०१]पाउणा [१०२]ति-चउ-लक्खं देइ सहस्सं तु दाहिणओ ॥

जत्थ व तत्थ वि दिट्ठो पुव्वण्हे अन्न-पाण-सुह-दाता ।
अवरण्ह-काल-दिट्ठो दइता-जण-संगमं कुणइ ॥

साधूण पुण भगवंताणं दंसणे पुण सव्व-सुह-संपत्ती भणिदा । तं एस ताव अवरण्ह-कालो वट्टइ । पिय-जण-समागम-कारया हु मे धुवं एदे महा-सउणा । न केवलं **उव्वसि**-समागमं अन्नमवि महा-लाभं निवेदयंति एदे सकुणा मे । एवं चितंयंतो नाग-दिन्न-खग्ग-खेडय-हत्थो तावस-रूव-ठिदस्स सत्तुणो मग्गेण दुतं पधावितो हं । इच्छदि य सो ममं बंधेऊण ण य[१०३] उच्छह(?) य अणुच्छहमाणो(?) य विज्जा-पभावेण उवउत्तो **उव्वसिं** मरण-कद-ववसायं जाणिऊण अन्नमन्नयं व [१०४]सामाघाइणोवकयं(?) चिंतेउं तओ ममं भणइ— देव ! एदं पवणदसं संसियं महागंडसेल-सिहरत्थं भगवतो संजयंतस्स आयतणं दीसइ । तं एदाए दिसाए तुमं सइरं आगच्छेज्जासि, जा ताव अहं अग्गदेणं गंतूणं ठियाए **उव्वसी**ए तुह विरहे खणेण अत्ता ण विवाडेज्जासु । सा मे भाइणेज्जी होइ । तं जइ सा किहइ मरइ तओ नीससम्म(?) कुलं हयं होइ । मया भणिओ—किमत्थि ते आगास-गमण-सत्ती ? तेण भणियं— अत्थि । मया भणिओ— जइ अत्थि तो ममं पि घेत्तूणं चेव उप्पादिहि । तेण भणिओ(यं)-देव ! ण वट्टइ अम्हं अच्चंत-बंभयारीणं गिहत्थं परिवहित्तए । एस णो गुरुजणोवदेसो । किंतु आसन्ने चेव जिणायदणं, संपदि सयमेव आगच्छेज्जासि त्ति । एवं वोत्तूणं उप्पदिदो गदो य । धावामि य अहं पवण-जवातिरेय-गदी दब्भ-सूचि-कंटएहिं य तच्छि[य]-चलणो रुहिरबिंदु-पगलंत-चलणो तं दियसंतेण ।

इदरी वि य **उव्वसी** परम-तिक्खाभिहता परिदेवंती सगोत्तीसु सह रुयमाणी गमेइ दियसं । भणिदा य तासु परम-दुक्खिता—आससतु भइणी आससतु । बलियं खु ते दइय(?) कारणं । किमिदाणिं कीरइ ? **उव्वसी** य तासि कंठे अवलंबिऊणं भणइ—एत्तिएहिं दिणेहिं न नज्जइ भट्टविज्जो बहु-रिवू य पिओ मे कंपि अवत्थंतरं पाविहिति । तं आपुच्छेज्जह भइणो ! कुलविज्जा । तं संरक्खमाणी चेव [१०५]पवसामि । तओ इहेव णं दाणि तस्स वियोगं असहमाणी अत्ताणं परिच्चयामि त्ति । तओ ताहिं रुयमाणी भणिया-भइणो ! अदिट्ठरूवो गओ तासिं सगासं तत्थ विज्जाबलेण विदितलेहत्थो तं लेहं घेत्तूण तओ दुतं अवक्कंतो खणेण य अलियमलियं रुयमाणो पत्तो मम सगासं । णादि विकट्ठ ठिदस्स [१०६]आयतणंतो तं च रुयमाणं पुच्छामि रुयमाणो चेव भावणं रिसि कयव २(कधय कधय) किंचि कुसलिणि पिया **उव्वसि** त्ति । सो य सघग्घर-कंठो रुयमाणो भणदि-देव ! अप्पियं ते निवेदयामि। हतो हं अकदपुन्नो । खंडितं मे कुलं । अवि य, सुणह । अहं इतो तुह सगासाओ खणेण पत्तो आयतणं जाव तत्थ एगंते सा पिया ते परिवारिता सहीजण-मज्झ-गता रुयंती इमं तुह कज्जे पुव्व-लिहितं लेहं मुद्देइ । एयम्मि देस-काले उग्घोसावियं नागराइणा तत्थागदेण जहा—जो इहागओ असमत्ताए [?जत्ताए] खणमवि [१०७]पवसइ सो सकुलप्पकुलो भट्टविज्जो भवीहिति । एवं च उग्घोसणं सोऊणं सा तुह दंसण-निरासा 'हा दइतय' त्ति बेंती मोहमुवगता खणेण य तत्थमेव कालं गता । कुलकुलावियं च से परियरेण दो(?तदो) जह **उव्वसी** कालं गत त्ति । उवगदो य अहं तं पदेसं । दिट्ठा य मे सा कप्पपादव-लता इव परसु-परियत्तिय-मूला धरणि-तल-पल्हत्था । नीदा य तओ एगंतं विज्जाधरेसु अग्गिसक्कार-कज्जा(?ज्जे) । एसो य से लेहो जो तीए जीवंतीए थोवावसेस-आउआए लिहिओ तुहकदे । मया तत्थ संभमे पडिओ दिट्ठो । तं एदं गेण्हह त्ति ।

तओ मया अणिट्ठ-वयणाहत-हिदएणं सयं पिव मरण-कत-ववसाएणं पविसितुकामेणं संबलं जहा [१०८]गहिओ मरणावत्थगएण सो लेहो । पगलियंसु-लोयणेण य मे निव्वतिता पिया-संतिया नाम-मुद्दा लेहनिहित्ता उत्तर-नामयं व सहत्थ-लिहिदं पियाए, निवेसेदूण मदा सो लेहो चिरं उण्ह-मुक्कनीसासेण तओ भयंतेण उव्विल्लिओ वाइतो य मे किच्छहि । तओ महादुक्ख-समोत्थद-हिदएण "नीसंसयं मत त्ति रिसिणो पत्तियंतेण चिर-वीसरित-धम्मकज्जेण तीए विओगे मरण-कय-ववसाएणं भणिओ मे अयाणमाणेण सो कावडिय-

तावसो—भो तावस ! अहं इदाणिं पिया-वियोगे एस अत्ताणं गिरि-सिहराओ मोत्तुं ववसिओ, तो तुमं गेण्हह मम हत्थाओ **कुबेरकंतं** मुद्दं चूलामणिं च अन्नाणि य मे भूसणाणि, एदेसु मम नामेणं जिणायतणे पूयं करेज्जासि किंचि अत्तणा गेण्हज्जासि । एस अहं कत-ववसाओ परलोग-गदं पियं समन्नेमि ।

तेण य तावसेण भणियं— किं मम अच्चंत-तवस्सिणो अलंकारेण कज्जं ? तुह पुण वयणेण जिण-पूयं काहामि ति । एवं वोत्तूण अद्दंसणं गदो। गदो य सो तं आहरण-विधिं घेत्तूणं तक्खणं चेव ससहीजणाए **उव्वसी**ए सगासं । दाएति य मम संतियं आहरणविहिं नाममुद्दयं च, भणति य तत्थ सो पावो—देवि ! सो ते भत्ता परिचत्तो अरन्ने एगागी बहुं विलविऊणं पच्छा जाद-निव्वेओ ममं तत्थागदं भणइ—"सोम रिसिकुमार ! कत्थ चलिओ सि ?" मया भणियं— "संजयंत-जत्तं चलितो हं ।" ततो तेण इमं आभरणं नाममुद्दा य ममं दिन्ना य भणदि य "एयं मम पिया **उव्वसी**ए देज्जासि" त्ति। एव भणिओ सो गिरि-सिहराओ पडिऊण कालगओ । एदं च मया आणियं आभरणं ति ।

तओ **उव्वसी** तं मम संतियं आभरण-विसेसं तं **कुबेरकंतं** च मुद्दं हिदए निवेसेदूण मोहमुवगदा परुन्ना य ससहीयुता य । अहं पि चिंतेमि अलं मम इदाणिं तीए मरणे जीविदेणं, किंतु न जुत्तं मे बाल-मरणेण मरिउं। जुत्तं मे एत्थ पसत्थ-सिद्धायदण-खेत्ते गहण-वणंतरं कंचि पविसिउं भत्त-पाण-पच्चक्खाणेणं मरिउं ति । एदं च नाग-दिन्नं खग्ग-खेडयं च तत्थेव कहं चि णिक्खणामि ति एवं चिंतिदं सपत्तीए(?) गओ हं तं चेव अच्छरासंपदं उज्जाणं, पविट्ठो य तम्मि । तत्थ एगं असोगपादव-लग्गं संताणग-मंडवं, तत्थ निसीइदुं मरणोवायं चिंतेउमारद्धो । ताव य **उव्वसी** वि मम मरणं आभरण-दंसणेण फुडमिति उवलभिदुं पुच्छिदा य पडिपुच्छिता भणइ— णिग्घिण निरास णिरवेर [१०९]व खलितद किंचि दाणिं [११०]अवक्खसि जं तुमं पियमरणं सोऊण सहस्सधा ण फुट्टसि ? किम्मे जीवितं न क्कमइ निहीणकम्माए ? हा हा ! धिरत्थु खलु मदि पहाण-पुरिस-घादियाए किमहं जीवामि इदाणिं पिय-विरहिया ?

विलवंति य मम मरण दुक्खिदाओ **रंभा-तिलोत्तमाओ अलंबुसा** य। सुयं व किह वि तत्थ तं मम मरण-कोवं **मंदारवदीए** विज्जातावय-वरि(?) तक्खणं चिय मरण-ववसिता सा वि । ताहे **उव्वसी** वि परम-

सोसित-हिदया मरिय(?उं) निच्छि(?च्छ)या अंतद्धियं काऊण मीसारिय(?) सगुत्ती-सगासाओ अत्ताणं उक्कलं छेउकामा पत्ता समासन्न-ठियं एगं लता-मंडवं। तओ तीए कयं तत्थ विक्कणं(?) पल्लिपासियं(?) भणियं च तीए तत्थ गीतं छुभितुकामाए कलुण-रुन्नस्सणाए– 'सुणेंतु[११२] मे सुणेंतु जे केइ एत्थ सन्निहिदा देवा, ए[स] अहं पिय-वियोग-दुक्खित्ता(?ता)-अत्ताणं परिच्चयामि । तस्स य सरीर-परिच्चागस्स फलेण परलोग-गयं पि अज्जपुत्तं **वसुदेवं** समणुयाएज्ज त्ति । एव च जंपंतीए सो सद्दो मया सुओ । संजाणिया य मे जहा एस पिया **उव्वसी** इदाणिं मरणं ववसिता । एणतु(?) मता पुव्व मेच्छावादि हु सो वणोगसो । तं च सोऊण अहं तरिदं समुद्धाइदो सहरिस-दुक्खाहद-हिदयो, पत्तो तं पदेसं । दिट्ठा य मे पिया **उव्वसी** गहिद-पासगा गीवं पक्खिवंती तम्मि लताघरे । मदा य अदूर-गदेण आगारिता-पिए **उव्वसि**! मा साहसं, मा साहसं ति । एस अहं जियामि। पेच्छ ममं ति ।

तओ तीए मम संतियो सद्दो कन्नेसु य अमयमिव पडिओ । सा रभसेण य पवण-चवल-वेग-विहूता कप्पपादव-लता इव परावत्ता पढम-घण गज्जितं पिव अहिणंदमाणी वण-मयूरी व जहा सहरिसा समुद्धाइदा, पडिता य रुयमाणी मम पाएसु । मया वि य परम-दुक्ख-पीलित-कंठेण पियं भणंतेण हकुविऊण आलिंगिता । सयं(?सा य) मम गले लग्गिऊण परम-मन्नुइता कलुणं रोइतुं पवत्ता । ताव **अलंबुसा** के(?वे)इतो राया **रयणंगओ** सह भाईसु **वासव-वज्जपाणी**सु एस **उव्वसी** पिय-विउत्ता कत्थ वि अत्ताणं विवाडेति ति सुत-परमत्थो खणेण अंतेउराणुयातो अम्ह समीवं समल्लीणो । **उव्वसि**-रुन्न-सद्देण य उविकसिते(?) ममं दिट्ठा य तेण सपरिवारेण दुहिता अहं च । दट्ठूण य ममं दुहिता समागतं ततो समुवगदो, उवसप्पिऊण य तेण सपरियणेण संतिया **उव्वसी** कदा य मम महालिया पूया । आणंदिता य परं तित्रि वि ते राइणो । ताव य परियारियासु रुयमाणीसु दुतं निवेदितं— धावह, धावह धावहेइ सिग्घं, एसा हु **मंदारपदी उव्वसी**ए पियसहिताए मरणं सोऊण पिय-सहि-समागमं व से अयाणमाणी पच्छ(?एत्थ) माधविलता-मंडवे अत्ताणं उल्लंबेति मरिदुं ववसिता । तं च सोऊण भणइ **उव्वसी**—[११३]पहाव सिग्घं सोए (?मोएह) मे ससुह-दुक्ख-सहाइगं पिय-भगिणियं । तओ तेसु राईसु सयमेव परिधाविऊण मोइता पासयातो **मंदारपदी** । पुत्र-मणोरहाए य **उव्वसीए** अवतासिता खामिता य भणिता य तीए पुणो—भगिणि ! अवियोगो ते तुमे सह जावजीवा हं ।

ताव य सुत-परमत्था उभय-सेढि-वासिणो सव्वे वि ससुरा [११५]सल्ला(?व्वे) य विज्जाहर-राइणो [११५]वयंसा य मे **अंसुमंत**-पभिदयो वधुजणो य मे सव्वो सोऊण सुइ-परंपरा मम विज्जा-भंग-वियोग-दुहिदो सह व्व स विज्जाधर-रायचक्केण समल्लीणो परुदिदो य मे पादपडिओ, सव्वो वि सुहिजणो वधुजणो य । महदा कोलाहलं पयत्तं । नवरं च भणियं तत्थ रन्ना **देवरिस**भेण—किमेस लोगो इव अमंगलाइं करेइ ? महाणुभावो दु मम जामाता, अचिरेण य पुणो वि विज्जा-साधणं काहिसि(?ति) । एवं भणंति(?तेण) तेणं निवारितो विज्जाधर-लोगो । नीतो य मि महता विभूतीए विज्जाहर-चक्क-जयजयासद्द-संदाणिद-दिसाचक्को संजयंतायतणं ।

तत्थ चेदियाइं वंदेऊण अच्चेऊण य जिण-पडिमाओ धूवय-पुप्फ-गंध-मल्लेहिं, तओ पयाहिणेऊणं आवासितो हं **रयणंगद**-राइणो आवासे महता विभूतीए पहद-दुंदुभि-संख-समुद्धंत-तुरिय-रव-गीत-वाइत-निग्घोसेणं चलमाण-चामर-संपात-मज्झ-गओ । विधिणा मज्जिओ हं, गहित-वत्थालंकार-विलेवणो य भुत्तो हं भोयणं सव्व वधूवग्ग-सहितो आयंत-सुइभूतो य वयंसेहिं सेविज्जमाणो जिणमहं पज्जुवासिऊणं पओसे आवासं गओ । कधियं च मया वयंसाण जहाणुरूवं विज्जाभंसणं सुहदुक्खं च । वीसामित-वयंसो य सव्वंतेऊर-सहिदो रइसंभोग-संमुद्दो पसुत्तो हं सुहं दयिताजणेण य सहिदो । ज्जाण(?) उग्गीद मंगलगिरेण पच्चूसे पडिबोधितो हं गहित-मुहधोवणो य सुकत-पडिकम्मो चेइयाइं वंदिऊण गओ आवासं ।

तत्थ बाहिरोवट्ठाणे खणमेत्तं विज्जाधराणं अत्थाणं दाऊणं ताहे पुणो वि पविट्ठो अंतेउरं । तत्थ य मे सुहनिसन्नस्स **उव्वसीए** जहाणुभूतं दुक्खं एग-देवसियं सव्वं परिकधिदं, जहा सो सत्तू **माणसवेगो** अभिप्पाओ(?) य जाव लेहावसाण धरणादेस-घोसणा, तावसेण य आभरण-मुद्दाण य उवणयणं मरण-ववसणं च समागमावसाणं ति । मया वि य णियय-पच्चंतो तीए सिट्ठो । तओ तीए मम समक्खं आवाहेऊण पुच्छिया विज्जा-देवदा- भगवति ! को सो तावसो जेण अज्जपुत्तो अहं चेव वहेढिताइं(?) ? तीए कहियं जहा सो सत्तू **माणसवेगो,** अभिप्पाओ य से तीए सव्वो कधितो । एवं च देवदाए कहिए समाणे तत्तो **उव्वसी** पिउणा पित्तिएसु सद्दाविता ममं अणुयाणावेऊण य गदा अचिरेण य पुणो आगता कयप्पणामा य ममं भणइ— अज्जपुत्त ! जं ते राया **वासवो** भणिज्ज तं [११६]आवहेज्जामि(?) एस ते गुरुणा(?णां)

गुरुसु आणत्ति दिन्ना । मया भणिअं-तुह अणुमदे जम्मे गुरुवो आणवेंति । ततो आगतो य तत्थ राया **वासवो** । सो य मया गुरु-भावेणं नमितो निसन्नो य समणुन्नादे आसणे । ऊसारित-परियणो य ममं भणइ— देव ! सुणह अम्ह विन्नत्ति, अम्हे ट्ठिय **यावत्त**(?)पुराहिवस्स सुता **वासव-वज्जपाणि**णो एक्क पिदिउ य भाता एस **उव्वसी**-पिता **रयणगंदो** पुरहुत त्ति य मं भणइ—एयस्स सुता **उव्वसी** मम य सुता **अलंबुसा** पढमा बिदिया य से देवीए [११७]तहूद(?) गब्भाए मंदार-कुसुम-माला-दोहलो आसि । [११८]दिन्नोदित-दोहलाए य [११९]कण्णगा जाया । तीए नामं कयं **मंदारवदी** । कुलनामं पुण से **मीणगा**। **उव्वसि**-जणणीए वि तं चेव नामं ति तेण कारणेण सुट्ठु एसा तेण नामेण सद्दाविज्जति । भातुणो य **वज्जपाणि**स्स **सुंद-णिसुंदाण** देवीणं दो सुताओ। तासिं य नामाइं **रंभा-तिलोत्तमा** य त्ति । एवं सव्वाओ वि अम्ह सुताओ **अच्छर**-नाम-सु अंकिताओ, अम्हे वि सव्वे **सुरिंद**-नामंक-धारया चेव । सव्वाओ य मे सुदाओ परिवड्ढंतिओ कलाण विज्जाण य गहणं कारिताओ विसेसण य पुन्न-कला-कोसल्ले नट्ट-गुण-गीद-वाइदेसु य जाता अणन्नसमा **अलंबुसाए** उच्छंग-निवेसिता अच्छामि । नवरं च अन्नाए लक्खणाणि दट्ठूण भणितं तत्थ **अमतसारे**ण महानेमित्तिणा—र(? रा)यं, एस कन्नगा जगप्पहाण-पुरिस-भारिया [?होहिति । मया] भणियं— भो ! किं-वंसो य पुण सो पुरिसो होहिति ? तेण भणियं— **हरिवंस**जो अद्धचक्कवट्टि-पिया **वसुदेवो** नाम। मया भणियं— किह सो मया णादव्वो ? तेण भणियं—सो सव्व-लोग-विक्खाओ चंदो इव कत्थ न पायडो ? अभिनाणं पुण ते सो पढमतरं **रयणंगय**स्स सुतं **उव्वसिं** परिणेहिति । तं जाणेज्जासि । मया भणिदं—सोम्म! बिदिय-सुदाए मे **मंदारवदी**ए को भत्ता होहिति ? नेमित्तिएण भणियं— देव! न उ निमित्तं जिण-भासियं अन्नहा कीरउ त्ति । तओ सो मया असद्दहंतेण सोमोहदियाए(?) अहं निमित्तं [१२०]अपमाणं कहामि त्ति । अह मेरुगिरि चलिज्ज ठाणाओ ण य एयं अन्नहा होज्जा । अह य मया निमित्तं अप्पमाणं काउकामेणं **अलंबुसा** बालिया चेव **मेहकुड**[न]यर-पत्थिवस्स विज्जाहर-लोग-विक्खायस्स **अमितजन(?व)**स्स तद्दिवसं चेव नेऊण सपुरट्ठियस्स दिन्ना, कयं च तक्खणं चेव पाणिग्गहणं विभूदीए, वत्तेसु य मंगलेसु तत्थ तक्खणं चेव पुव्व-बद्ध-वेरो पिउणो से कइ ता सस्स(?) सव्वंतरित-विज्जाहर-बल-चक्कवट्टी-सबल-परियरो जुद्ध-सज्जो पडिदो दिवि तिलयाविदो **तिसिहरो** राया। तेण तक्खणं चेव घातितो **अमितजवो** । तओ हं निमित्तातिक्कम-

संकित-हिदयो कन्नं घेत्तूण निमित्त-देवया-भीतो सिग्घं पुर एवमागओ हं तत्थ य मे एगंते ठाऊण **वज्जपाणी** पुच्छइ—किमेदं एरिसं वत्तं ति । मया भणियं—पाणिग्गहणावसाणे मारितो **अमितजवो**, एवं वत्तं ति । ततो एयम्मि आगासाओ वाया पादुब्भूया—किह सो न मारिज्जइ सो सव्व(?अद्ध)-चक्कवट्टि-पितु-भारियाए हत्थे लग्गइ । तं च देवता-वयणं सोऊण भणियं **वज्जपाणि**णा—कज्जं ते कदमकिह(?) ताव लद्ध-परमत्थेण तुमे बला **अमितजवो** मारावितो त्ति । ण सुट्ठु ते कयं । तओ हं सुंदरं निमित्तातिक्कम-लज्जिओ जाओ, मुणिज्जह य तुब्भे जहा विज्जाहरेसु मारिओ य तुमे विज्जाधर-पवर-राया **तिसिहरो** । कालेण य सिद्धविज्जो दिट्ठो सुदो य अम्हेसु सयमेव विज्जाधर-म(?जा)दीसु य अभिज्जिदा य ते सव्वे विज्जाधरा य परं ते पभवंतेण वि दारुणो सत्तू **माणसवेगो** ण णादो [१२१]व गिलिओ । तं पि जाणामो **वेगवदी** पणय-कारणाणुवत्ती केवलं सा ते अति वल्लभा तं निमित्तं च ते विज्जा-भंसो जाओ उवागदाइं गंगा इव महोदधिं **उव्वसी** । सेसं **उव्वसि**-चरियं अम्हं व कन्नाण जं चरियं तं तुह विदितं चेव जाव तितो समयो । एतं एस मया परमत्थो कधितो मम तं दुच्चरितं जं **अलंबुसा** परहत्थ-गहण-मेत्तेण दूसिता, भावतो पुण कुमारी वट्टइ । तदिदं विवाहो होदु। **अलंबुसादि**याओ सुताओ **वज्जपाणि**-सुताओ य **रंभा-तिलोत्तमा**ओ चत्तारि वि जणीओ तुह पुव्व-दत्ताओ । तासिं संगह काउं अरहहेइ । मया भणियं—रायं ! भाति-सुता ते **उव्वसी** पुच्छियव्वा । एदं वयणं **उव्वसी** आसण-ठिया सुणइ, तेण य **रंभा**[ए] भणियं— रायं ! देव ! पुव्वदरं सा अम्हे पुच्छिदा, पडिवन्नं च एयं कारणं तीए । मया भणियं—अइ कोवणा हु सा, कहमेयं पडिवज्जीहि त्ति ? [१२२]तेण भणियं—निमित्तादेस-सुत-परमत्थाए पडिवन्नं ति। एवं भाणिउं निग्गओ **वासवो** । आगदा य मम सगासं **उव्वसी** । सा मे हसंती भणइ—साधु अहो ! पियदमो अणुवत्तियंतो [१२३]विहालु(?) जाओ । धन्ना हं जीए मम एरिसो भत्ता अणुवत्तिकारओ । सव्वहा ते दक्खिन्नं पवड्ढमाणयं होउ। मया भणिया [सा]-दिट्ठपच्चया हं किह ते ण बीहेमि ? तओ तीए हसंतीए भणियं—एदाए य व ते अणुवत्तीयदु । तुट्ठा ते अहं । तओ अणुयाणामि ते निय-भगिणिया-सुद-विवाहं ति ।

एयम्मि देस-काले उवगदाओ य रायादेसेणं मम पडिकम्मकारिताओ । पगीताओ य मे अविधवाओ मंगलाइं । पडुप्पवाइताणि य तुरियाइं । विसेसेण य अहं नियय-वधु-वग्गेण सपरिहास-जणिद-वयण-जंपण-सासूय-पय-

केलि-कोलाहलेण पसाधितो हं **ससिकंत**-देव-दिन्न-भूसण-विभूसिओ **कुबेरकंत**-मुद्दा-वियोविद-सरीरो अद्ध-साडिय-सूरोदय-देव-दूसिओ संताणग-कुसुम-बद्ध-सेहरो गोसीस-सरस-सुरभि-चंदण-विलित्तो कय-कोऊअ-मंगलो महता विभूतीए नीतो हं वेदि-समीवं । तत्थ **विण्हुसम्मेण** उवज्झाएण हुतो हुतवहो । पक्खित्ताओ य लायाओ । उवणीदाओ य कद-कोऊअ-मंगलाओ वेदि-समीवं चत्तारि वि ताओ **अलंबुसा**दियाओ कन्नगाओ ।

तत्थ य **अलंबुसा** पंचवन्न-सुइ-सुहुम-दुगूल-वसणा वितिमिर-दिवसकर-किरण-संचय-पूजित-जलिद-भूसणा कणग-तिलग-मंडिय-निडाला तवणिज्ज-लोल-कुंडलालंकित-कन्न-नासा अवदालिय-पउमगब्भ-वन्ना विविध-कुसुम-भूसण-धराणुनादिता उवणीदा मम सगासं ।

तह चेव ललिद-दोल-कुंडलुज्जोविद-उभय-पासट्ठिय-परिसूरिय-मंडिद-बालरवि-मंडल-सरिस-चदुल(?)-वदना हरिताल-भेद-निम्मल-सरिस-वसण-[१२४]संवुता चंपय-कुसुम-मालिता पकय-जण्णोववीता पविलंब-कणयसुत्त-विभूसिदा जहा-जोग-रयित-भूसणा कुसुमभरोवणता इव सा मधुमास-समय-सोभागिणी मल्लिता-लता चलय-मेहलोरसित-कल-निनाद-मधुर-निस्सणा पवियसिय-कोकणद-सरिस-नयणारविंदा जुवदी-रूव-ठिया इव चंद-कंती उवणीदा मम सगासं मंदार-(सुरभि)-कुसुम-सुरभि-वयणा **मंदारवती** ।

तह चेव ललित-चलय-भूसणा सकल-ससि-सरिस-वयणा णिसंणि(?) रयण-कणकावित्त-मेहला-कलाव-मालित-जहणा ललिद-विलास-गुरु-जहण- वादिणी(?) विमल-सहिद-सुइ-सिहर-दसणा वर-हार-चलिद-भरिद-वत्था पीण-थण-जवल-सिहरोवसोभिया [१२५]सहित-सुहुम-खोम-संवुडा कणग-नेउरोरसित-गंभीर-[१२६]झणमणा(? झुणिस्सणा) रवारंभारंकंता (?) जहण-भारुव्वहण-वियावडा[१२७] दुग्ग-दरिणं पिव दुगुणीभूत-मज्झे तिलोत्तमा इव **तिलोत्तमा** बहु-दिवस-वन्नणिज्ज-रूवा उवणीदा मम सगासं ।

तओ य चदुरो वि सरद-काल-पसाधितोवसोभाओ मम समीव ठियाओ ग्ग(?अ)तीव पसोभिताओ । गहिओ य मि पढमताए **वासवेण अलंबुसाए** दाहिणं पाणि । तीएं य पिट्ठओ तरतम-जोएण वच्छ-पल्लवेसु तिण्णि वि जणीओ लाविताओ महंता य विज्जाधर-रायमंडलयम्मि बहुजणेण य समुच्चारित-मंगल-गीत-वाइतातोज्जा, उक्कुट्ठ-सीहनाद-कल-गंभीर-द्धणि-सद्द-संदाणित-दिसाचक्को भमितो हं मंडलानि ।

वत्ते य पाणिग्गहणे आवासितो हं विउरुव्विद-दिव्व-सोभे पासादे । तओ सवधूवंदो सवयंसो महराया-मंडलेणं विधिणा सणट्टोवहारो पाणं उवजीविऊणं गीत-वाइत-रवेणं जिण-पूयासु य अइच्छिदं दियसं । आरूढो य मि पदोसकाले सोवाण-परंपरा-सुहारोयं(?हं) तप्पय-सयणीयं । उवणीदाओ य मे सहीहिं पासं चदुरो वि णव-पवउ(?वधुओ) । उप्पत्तिताओ य मे भारियाओ सपणीयगस्स य विरहे विरत्त-वेलाए परम-परितुट्ठाए पुण्ण-मणोरहाए **अलंबुसाए** भणियं—अज्जपुत्त ! अपत्तिज्जंतीय मम **मंदारवदीए** य मणोरहा पुण्णा । मया भणिया— केण य कारणेणं ? ति । सा भणइ— ममं ताव पर-[१२८]हत्थग्गहणे दूसिताए काउं **मंदारवदीए** अइमणताए[१२९] त्ति । तओ तीए [१३०]पुव्वुप्पन्न-पीति-पणयाणुरागाए णियय-हिदय-मणोरहा **मंदारवदि**-चरिदं च [१३१]अविल(?) सव्वं जहाठियं मम परिकधितं । जातो हं तं पि याणामि । एवं एगंत-र[इ]प्पमुदितस्स सुहेण समदिच्छिया रादी । जिण-भवण-पाभादुग-पडह-सद्देण य पडिबोधितो विज्जाधर-राईसु य कय-जय-सद्दो उट्ठिओ सयणेज्जादो, गहित-मुहधोवणो कय-पडिकम्मो करेमि जिण-महिमं । एवं मे सुहेण सव्व-सुहि-सहितस्स [१३२]समतिच्छिदा कमेण अट्ठाहिया महिमा ।

॥ इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-रइयाए वसुदेवहिंडीए चतुकन्ना-लंभो नाम एगुणतीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. ब्भपुव पा. । २. प्पेच्छामि पा. । ३. अवस्सत्थ पा., अवस्स तु पु. । ४. पच्चक्खे परिज्जातितं पा. । ५. परमावदिप्पं पा. । ६. वड्ढइ पु. । ७. सब्भाइं पु. । ८. रोसो पु. । ९. दूरं त पा. । १०. भणिहा पा. । ११. ०यापए पा. । १२. वूतागो पा. । १३. जहा एसा पा. । १४. अयं पा. । १५. चिंतिऊण पा. । १६. तो पु. । १७. ★.....★ मध्यवर्ती पाठः पु. प्रत्यां नास्ति । १८. पहताओ पा. । १९. असोगवणया पा. । २०. वल्लभो पु. । २१. पसेसक्खो पु., पासक्खा व पा. । २२. तं पट्ठिया पा. । २३. पढमंते पु., पढगंते पा. । २४. वणमोक्खंवुद्धतजाहा पु. । २५. ०यासि पु. । २६. घेणस्स पु.। २७. आकारणं पा. । २८. अकारणावारद्धं पा. । २९. माणाहु पा. । ३०. पुप्पन्नंणकंठा पु. । ३१. मे न्नाकज्जं पा., मेकन्नाणंज्जं पु. । ३२. एक्कंतो पा. । ३३. जुयमवदिन्नं पा.। ३४. तीभूतहिदया पा. । ३५. सेण्हा समंणिता पा. । ३६. न णुजाइ पु. । ३७. पादए पतपिता पु., पादपयतंपिता पा. । ३८. भणति य पु. । ३९. अज्जद्धो पा. । ४०. सुमंतेण पा. । ४१. राइणा पु. । ४२. कारंतीं पु. । ४३. ते पु. । ४४. पदं पा. । ४५. व्वसियव्वं पु. । ४६. ठाउं पा. । ४७. गये पु. । ४८. नामित पु. । ४९. मज्झा उदरस्स खेयं तिवलिवलस्स पा. । ५०. स मे हवित्तणं पु. । ५१. आगच्छउ पा. । ५२. चूतग पा., दूतग पु. । ५३. गण्णसडइं पा. । ५४. दुक्खिन्न ती नूणं पु. । ५५. परंममंउखित्ता पु. । ५६. त्ति पु. । ५७. वोलियाइं पु. । ५८. मंदारपति किमेतीएदीए भणिदा पु. । ५९. वो पा.। ६०. मया तुमं पु., माययुत्तमं पा. । ६१. ग्गहा पु., गाहा पा. । ६२. पच्छक्खीरए भोए पु. । ६३. अज्ज पु. । ६४. जं पा. । ६५. वेसाधरिं पु. । ६६. ०विमुत्ता मा नज्जइ पा.। ६७. नि पु. । ६८. सत्त नि० पु. । ६९. तिं पा. । ७०. तुब्भेव पु. । ७१. विज्झासंस पा.। ७२. तिव्व- पा. । ७३. अभविय भवं कु० पा. । ७४. से पु. । ७५. देसओ वि पा. । ७६. य माणुवत्तीए पा. । ७७. बडुयंतो पा. । ७८. भणाहि पा. । ७९. नामि देवी पा.। ८०. साएदं पु. । ८१. तिमंतियंती पु. । ८२. एवमेव मए पु. । ८३. असुभं कयं पु. । ८४. तेया० पा. । ८५. अणंतो पा. । ८६. अम्मेदूण पा. । ८७. निद्धूरा० पु. । ८८. जाणसि पु. । ८९. भीतीहिय पु. । ९०. पमुहा संवत्ताक्क० पु. । ९१. सिंततत्थतेणं पा. । ९२. हि पा. । ९३. तिं पु. । ९४. किहंसा पु. । ९५. मुरलि पु. । ९६. कंटवग पु. । ९७. अंसुमालोकुलत्थी पा. । ९८. पवारणं णडिख प० पा. । ९९. होह पा. । १००. संवारिदं पु. । १०१. पाउण पु. । १०२. ति तउ० पा. । १०३. उच्छहय पा. । १०४. सोमव्वा० पा.। १०५. पविसामि पा. । १०६. आयतणातो पु. । १०७. पविसइ पा. । १०८. गाहिओ पा. । १०९. वे पु. । ११०. अक्कखंसि पु. । १११. सुणंतु पु. । ११२. एहवे पु. । ११३. मे सुह- पा. । ११४. मल्ला पा. । ११५. क्यंसी इमे पु. । ११६. आवडेज्जामि पा. । ११७. तहूय पा. । ११८. दित्तो दित- पु. । ११९. य कय कण्णया पा. । १२०. असुमाणं पा.।

१२१. वालिओ पा. । १२२. तया पु. । १२३. वीहालआ पा. । १२४. संपता एवंएम कुसुम- पु. । १२५. सित- पु. । १२६. झाणमणा पा. । १२७. दुगा पु. । १२८. हत्थग्गहणोहसिताए पा. । १२९. ०मणत्ताइ पु. । १३०. पत्तच्छुप्पन्न पा. । १३१. अवलिं पा. । १३२. समच्छिदा पु. । ★इति चतुकन्नालंभो नाम सव्वग्गेण मज्झिम कंडे छवट्ठितमो लंभओ समत्तो ।छ।द०॥

३०. मयूरसेणा-लंभो

तओ निव्वत्ते महे भणिओ हं ससुर-विज्जाधरादीहि[१]— देव ! सव्वं ताव तुब्भे दिव्व-चरिता अपराजिता अवि णाम [२]तिदसेसु [३]दिविणा वि विज्जासुद्धि-चंदं व सव्व विज्जाहरगण-विंते(?दे)सु जहा एस सयमेव दिव्वचरितो देव-वंद(?) ण एदस्स किंचि कज्जं विज्जासु य सहाएसु आयुधेसु वा, एस सच्छंद-कीलितो जहा जहा रुच्चइ तहा पविहरति एवं अवित्तचरितो[४] दुतं सइउपतावो(?) निविट्ठो विज्जाधरेसु, तह वि भणामु ते देव! एक्कसि उज्जमह पुणो वि विज्जा-पुरच्चरणे, करेह उच्छाहं अम्ह अणुग्गहत्थाए। उच्छाहे सिरी वसति त्ति ।

मया 'तह त्ति' पडिवन्नं, 'एवं नाम, पविसामि पुरच्चरणं' ति । भणिदा य मया समागदा **अंसुमंत-भागेरहिदत्ता**दिणो य पंच वि भायरो **बंधु-सुबंधुणो णंदोवणंदा** य—भो ! सुणह सव्वे वि तुब्भे णिणय-विसय-वासि-विज्जाहर-भड-वंद-सहिता सव्विद्धीए सव्वंतेउर-सहिता सव्व-गंधव्वातोज्ज- गीद-वाइद-रवेणं सव्व-रयणामय-विउरुव्विय-विमाणारूढा णहयलेणं गंतूणं सएसु सएसु कुलघरेसु सयण-सद्दंसण-चिरुक्कंठिदस्स [?दंसणं] दाऊणं तओ इच्छाए विज्जाहर-लोग सरज्जेसु आगज्जाय(?) त्ति। तओ तेसिं गुरुणं वो तुब्भं दंसणेण सुय-दिट्ठ-परमट्ठाणं धिती भवाहि(?) ति।

तओ मम आणत्तीए तओ चेव जत्ताओ महता जुतीए[५] विमाणारूढा गदा कुलघराइं । विसज्जिता य मे सो उक्कंठिओ होति त्ति **चारुदत्त**-समीवे[६] तओ सुहवादीसु[७] **गंधव्वदत्ता** । गदा य सा तक्खणं चेव **चंपा**भिमुही । **बालचंद्राए** य सह विसज्जिता मे **गगणवल्लभं** नगरं **वेगवती** । ए सेमा(?सा)ओ य सयाइं पेसिताओ य मे वधूओ । णत्थाणि य मे व **देवरिसभ**-हत्थे **णागदत्ता**इं खग्ग-खेडयाइं सव्वाभरणाणि य, परं **कुबेरकंत**-मुद्दावभासित-तणू ठिओ हं । नवरं अहं तत्थागएण **भरद्दाए**णं सव्व-सहितेणं पुणो हं दिक्खिओ हं गोरिपुरच्चरणेणं । कट्ठमोणोवगतो तेसु एग-दिसाए

गाहेऊण मुक्को, पडिगदा य तेसु अहं तक्खणा चेव केण वि अंतद्धिएणं आगासेणं अक्खित्तो हत्थ-गहणेण, मुणिदो **माणसवेगो** मम हरदि । खणमेत्तेण मया दिट्ठं रूवं तस्स अभिप्पाओ एवं 'एदं चेव कट्ठभूतं दाहिण-समुद्दे पक्खिवामि' । तेण कारणेणं दक्खिणाभिमुहो हरइ । तओ मया तस्स दंसणे न कोवाहरेण छड्डियं कट्ठमोणं, हरदि य मे सो पवणजवो । एदं च ताव एवं।

इतो य **वाणारसी**ए णगरीए **मित्तवाहणो** नाम राया **भरहवास**-विक्खाओ । तस्स बाल-भाव-वयंसो संसत्त-पीति-पणयाणुरागो वेसमण-सरिस-विभवो **वेसमणो** नाम सेट्ठी । तस्स **माधवसिरि**ए भारियाए अत्तिया कणगवन्ना कन्ना **मयूरसेणा** नाम सुंदर-कर-चरणावयवा वर-णयण-[6]परिस-(?हा)सित-कमलिणी कसिण-केस-ललिदुत्तिमंग-भुमया-तरंग-अइ-संगयंग-पवर-तुंग-णास-णयणाभिभूसिता पवरिंदीवर-सुरभि-गंध-नीसास-वाहिणी सित-सिहरि-दंत-सित-किरण-कंत[7]-ललिताधरोट्ठ-वर-कंबु-कंधरा पवर-बाहु-ललिओवसोभिता पीण-सहिद-थण-जुवल-णमिदा तिवलि-भंग-तणु-ललित-मज्जिया पवर-कमल-पवियसित-नाभिया सिंधु-पुलिण-वित्थिण्ण-सोणिया तरि-सरिच्छ-अइ-रम्म-कुकुंदरा पवर-नाग-कर-सरिस-वरोरु अंजंपिया[10](?) कणग-कुम्म-सुपतिट्ठिद-संनिभ-वणिया[11] कणगमइ वि गिरिमंदर-संभवा लता चउसट्ठि-कला-कुसला सव्व-लक्खण-गुणक्खणी पवर-जोव्वण-भरक्कंता सुराण वि अच्छेरय-पेच्छणेज्जा ।

सा य रन्ना अनुमदेणं पिउणा सयंवरा मुक्का । तं च समयं से सयंवरावतारो महता विभूतीए जण-समुदाय-समाउलो वट्टति । सुज्जतेसु य पवर-मंचेसु आरूढा [12]वाइया(?) राय-सेट्ठि-सेणावदिप्पभिदयो बहवे, इतर-जण- जणपदो य समागदो । सा वि य कन्ना कय-कोदुगमंगला सव्वालंकार-विभूसिता गाहित-कुसुम-सिरिदाम-गंडा चेडिया-त(?च)क्कवाल-वरिसधर-महदर-परिखित्ता किड्डाविया-जण-सहिता अवतिन्ना रंगेणं य सा किड्डावियासु दाइज्जमाणं पि [?ण] कंचि वरेइ ।

तओ एयम्मि देस-काले दूरं गगण-तले संपत्तो तस्स अ(?उ)वरिएणं ममं हरइ **माणसवेगो**, ण य तत्थ-गदेसु धरणि-तले गतं किंचि वि दिट्ठीए लक्खीयइ । संपत्तीए य तम्मि पदेसे परम-रूसितेण य मया मुट्ठिणा पहतो **माणसवेगो** सिरे । तेण य से पहारेण किह वि सिरं ण चुन्निदं, मुक्को य अहं तेण निद्दय-पहारादुरेणं, पडंतो य तक्खणा चेव अण्णेण केण वि नहंगणे

संभाविदो हं । चिंतितं च मे—केण मन्ने अहं संभावितो त्ति । से य मे जणणि-संतिओ इव सीतलो पाणि-पायो [१३]परिभय(?भास)ति, पेच्छामि नवरि तक्खणं चेव अनिज्जमाणं(?) जक्खिणिं । कदा य मे तीए अंजली, भणिदा य मे— भगवति ! कओ ते अहं इमम्मि समए संभाविओ ? । तीए भणियं—पुत्त! मया इण्हि चेव **अट्ठावय**-जिणायदणं वंदिउं नियत्ताए चिंतितं, कत्थ पुण संपदं मम पुत्तो हवेज्ज ? उवउत्ताय दिट्ठो सि रिवुणा हीरमाणो। तओ हं पुरोवित्ता तुरियं तुरियं । ताव य तुमे वि सो पहदो, छडि(?ड्डि)तो य सि तेण नहंगणे । मया य तक्खणागदाए पडिच्छिदो सि । आणितो सि रिवुणा **वाणारसीए** नगरीए उवरियं णभुद्देसं एदं । तत्थ य नगरीए संपदं **वेसमण**-सेट्ठि-सुता य **मयूरसेणा** परम रूववदी कन्ना । सा य संयंवरा दिन्ना, ण ताव कंचि वरेइ । सा य तुह जोग्गा । तं एस सि मया संपदं सव्वालंकार-विभूसिओ कओ, सव्व-सुकय-परिकम्मो दिव्व-कुसुम-गंधग-सोभिदो कओ। पेच्छ अत्ताणयं ति । तओ मया अवलोगितं नियय-देहं, पेच्छामि य दिव्व-सुरभि-गंध-मल्ल-वत्थालंकार-भूसियं । भणदि— पुत्त ! अवतारेमि ते अत्थ। मया भणियं— भगवति ! अवतारेहि मे ।

तओ तीए अहं लोग-विम्हावणा-निमित्तं सयं अदीसमाणीए पुव्वि मुक्क-गंधोदय-दिव्व-कुसुम-धाराए अवतारितो हं नहाओ सयंवर-मज्झयारे उम्मुहेसु य जण-सएसु दीसमाणो । तओ लोगे कलकलाइतं कतं मम नमोक्कारेणं—एस भो ! अच्छेरय-रूवधारी देवो वा गुज्झगो गंधव्वो वा अन्नो वि को वि महप्पा रूवेणं वत्थालंकारेसु सिरीए समुदएणं गंधेण य आगरिसंतो पुहविं अवइन्नो णभातो त्ति । तओ अवरतं(?तरं)तस्सेव कन्नाए णिवाडिया ममोवरि दिट्ठी हास-समुस्सलि(?ल्लसि)त-णयण-वयणाए सललितकमुदार-लीलावस-गामिणी[ए] । रभसेण य समोसरिऊण वूढा मम गले तीए कुसुम-माला, सिरम्मि सिरिदामगंडं चेव । तओ मम पुन्नागरिसिदेणं जमय-समयं उग्घुट्ठं लोएणं, साधु भो ! सुवि(?व)रियं ति । धन्नो सेट्ठी जस्स दुहिता आगासव(?च)रं महाणुभावं पदिं पत्ता । तओ सेट्ठिणा अहं उवणीदग्घेण पुच्छिओ-देव ! कहेहि ताव को सि तुमं ? मया भणियं—अहं माहणो विज्जा-पभावेण आगासगामी आसि । तओ अज्ज भट्ठविज्जो इह पडिओ मि। तं च वयणं सुयं लोएणं । तओ सेट्ठिणा भणियं—देव ! जो सि सो सि, णमोत्थु ते । सव्वहा सुमुहुत्तागओ सि ।

ताहे तत्थेव महता विभूतीए तेण गाहितो हं **मयूरसेनाए** पाणिं । मम पाणिग्गहणे वट्टमाणे आगासे जक्खिणीए तीए गीयं वाइदं च वसुधारा य विसज्जिता कुसुम-मीसा । तं च जणपदस्स अच्छेरयं जायं । अंतद्धिदा य ममं आपुच्छिऊण पडिगदा जक्खिणी ।

वत्ते य पाणिग्गहणे अहं सेट्ठिणा सपरियेरेण कयग्घपूओ पवेसिओ वेसमण-भवण-सरिसोवमं भवणं । तत्थ मे भुत्त-भोयणस्स णाडय-संगीदद्धणीए समिदिच्छिओ दियसो, पदोस-कालेण य गब्भ-गिह-सयणेज्जोवगदस्स सहीसु उवणीदा मे पासं **मयूरसेणा**, आरोविता य मे पवर-निधुवणं देस-कालोववन्न-पिय-वयणुप्पादिद-वीसंभा य मे समवगूढा । तओ मया एक रससुक्खित्त सहिउभवणत्थकुरुजवला(?) समुद्देणं[१४] णागरक-करणेणं [१५]उच्छंगित(?) रइ-लक्खा संजोइदा रइ-कम्मं । तेणं अभिरमंतस्स य सुहेण पभाता रयणी, कय-सलिलकज्जा य सा अवक्कंता, उवणीदं च मज्झ वि मुह-धोवणं पसाधणं च पयत्त-सज्जियं । तओ निऊणासु पडिकम्म-कारियासु पसाधितो हं । सा वि कदा-दव्वावस्सया आगया मम समीवं **मयूरसेणा** । तीए सह परम-मुइतो इं(?हं) पउर-परिभोगे [१६]अडिमामि(?) । गदाणि मे सुहेण कादीय दिणाइं ।

चिरम्हे पुच्छिदा मया **मयूरसेणा**—पिए ! कह ते अहं अविन्नात-कुल-सीलो तक्खणावदिन्नो णभांतो वरितो त्ति । सा भणइ— अज्जपुत्त ! मम कन्नोवजंपियाए कीय वि देवदाए पढम-रादीए भणियं, 'पुत्त **मयूरसेणे**! तुह सयंवर-काले आगासाओ **अंधगवण्हि**-तणयो **वसुदेवो हरिवंस**-कुल-पदीवो अवतरीहिति, तं वरेज्जासि' त्ति । तं च मे पियं जायं । पभाद-काले य पिउणो कधितं च मे अतीव-पिययरं जायं । अवदिन्नाए य मे सयंवर-काले दंसेदि [१७]किड्डाविया विविधे रायादिए महारूवे पुरिसे, ण य मे तेसु मणो पसीददि । तं ताव देवदा-वयणं उ[?इ]क्खमाणी ण किंचि वरेमि, चिंतेमि य किन्न [१८]गभयं(?) अलियं भवेज्ज जदो ए[?व] चिरावयति । एवं चिंतयंतीए मम पुण्णोदय-चोदिदो अवतिन्नो तुमं, वरिदो य सि मया । तं ण सि मया अणाद-कुलसीलाए वरिओ ।

तओ मया भणिया— पिए ! वारिज्जा सि पिदरं अत्ताणयं च [१९]बहु [२०]एदं मया संतियं कुल-रहस्सं कस्सइ कहणिज्जं ति । तीए तह त्ति पडिवन्नं। एवं अहं तीए विन्नाद-कुल-सीलो पच्छन्नो य पियाए सह पवर-पाणोवयोगं कुणंतो रइ-संभोग-तप्परो परिवसामि ॥

[२१]॥ इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए मयूरसेणा-लंभओ नाम तीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥

पाठान्तर

१. ०धरादीसु पा. । २. तिदिसेसु पा. । ३. दिविणो पु. । ४. ०चरित्तो पु. । ५. जातीए पु. । ६. समीवं पु. । ७. ०वाहीसु पा. । ८. परिरासित पु. । ९. काठ पु. । १०. अंजंथिया पु. । ११. वतणिया पा. । १२. रूववाइया पु. । १३. परिभयेति पु. । १४. समुट्ठेणं पा. । १५. उत्थिगित पा. । १६. अडमासि पा. । १७. किट्ठविता पु. । १८. भमयं पा. । १९. तहु पा. । २०. पढमया पु. । २१. ।छा। वसुदेवहिंडीए मज्झिमखंडे मयूरसेणा-लंभो नाम सत्तसट्ठो परिच्छेओ समत्तो ।छा।

३१. ससिलेहा-लंभो

एवं अहं तीए रइद-भूसणाए सहितो अभिरममाणो गयं वि कालं न याणामि । अन्नदा य ममं पमदवण-गयस्स अच्छमाणस्स विविध-देस-वत्थालंकाराओ चदुर-मधुरालावणाओ रायंतेउर-ठितस्स सुरूवाओ परिवारि(?) तालियंट-पुडय-परियारियाओ व रइताणेग[1]-रय[?ण]-मणि-कण[?ग]-मंडियाइं अलंकारियाइं विविधाणि य कणग-खइदंतकम्माइं वत्थाइं[2] मं चत्ताइं मं न-वासमोत्थाइं(?) कत्तो वि केण वि आणेत्ताओ[3] ताओ घेत्तूण ममं उवगदाओ।

पमदवण-दुवारपालेण य ताओ पणमंतीओ ममं निवेदिताओ— देव! ताओ य **मित्तवाहण**-रायसुताए **रयणवदीए** कन्नाए वत्थालंकाराओ पणदिऊण पाहुडहत्थाओ णिय-परियारियाओ तुह सगासं विसज्जियाओ । मया भणियं— कओ सा मम जाणइ ? किं निमित्तं च विसज्जयति ?

तासु पणदासु भणियं— सामि ! सा अज्ज-दुहिताए **मयूरसेणाए** बालसहि-संबंधातो बहिणीपति त्ति य तओ विसज्जयति । तओ मयाणुणदाए पडिच्छिदाणि सयमेव **मयूरसेणाए** । मया ताओ पूएऊण विसज्जिताओ । एवं पुप्फ-फल-तंबोल-समालहणाइं च परियावि(?रि)या-हत्थे सा मे दिणे दिणे विसज्जेति । तीए य संतिओ **पियदत्तो** नाम दोवारिओ, सो वि ममं उवसप्पइ, अभिक्खणं ओलगति य वयंसयत्तणं च दावेइ । ण य पुण अहं जाणामि जह सो तीए दोवारिओ त्ति । तेण य मे सह णिरिस्सा[4] पीती जाया।

एव य गदेसु केसुइ दिणेसु सो **पियदत्तो** ममं भणइ— अज्जपुत्त! एदं कन्नापुराओ परियारिआण गमणागमणं एवं [5]नावमण्णितव्वं ति । अन्नदा य पुणो **रदणपति**-सगासाओ आगताओ परियारियाओ । तओ ममं सोवयारं उवगंतूण भणंति-सामि ! सा य कन्ना विन्नवेइ, मुहुत्तमेत्तं विसज्जेध मम पियसहिं **मयूरसेणं** । उक्कंठिया दट्ठुमिच्छामि । तओ हं तत्थ पुव्वागएणं भणिओ **पियदत्तेणं**—सामि ! विसज्जियदु अज्जदुहिता **कन्नापुरं**, अच्चंत

निरच्चयं सयण-वीसंभ-तुल्लं च इमस्स रायकुलस्स सेट्ठिकुलस्स य दीह-कालियं ति।

ततो विसज्जिआ मे, ममं पणमिऊण गया तासु सह रायकुलं वि य। अधाहं पमदवण-गओ कुसुम-माधवि-लया-मंडवगे अच्छामि [६]नाइसिरी(?) ण य **रयणवदि**-विसज्जिताओ मम विणोयणत्थे विविधातोज्ज-वावड-कराओ उवगदाओ मम सगासं [७]सद्धमज्झंतरोयत्थाण-परिगताओ परियारियाओ नाडगप्पओग-कुसलाओ । तं जहा, **कमलसेणा वज्जदत्ता सरस्सदी सिवगुत्ता कुसुमलता केत्तिणिया रदिमत्ता मित्तसेणा** य । एदाओ अट्ठ वि जणीओ पत्तेय सपरिवाराओ णियय-नामाइं साधेऊणं भणंति कदप्पणामा-सामि ! वयं **रदणवदीए** तुह सगासं विसज्जिताओ विणोदणत्थं, तं सुणह ताव अम्हं जहा सिक्खा-रूवं ति ।

तओ ममाणुण्णादे वीविवंचियव्वि(?) पवर-मुख-वंस-कंसतालय-रवाणुवत्ती एदाओ पणच्चिदाओ य मम हिदय-हरं । आगदो य तत्थ तम्मि समए **पिअदत्तो**, सो बेंति—अहं तासिं विसेसेण विज्जाधर-लोग-सिक्खिदाइं नट्ट-गीद-वाइद-पदाइं मम संतियाइं णट्टोवदेस-पदाइं अपुव्वाइं महाणुभागाइं णि य तओ सोऊण परं विब्भमं गताओ, ण रुच्चति तासिं तप्पभिति एयायरिउवदेसो परं हित-हिदयाओ भणंति य—सामि ! अम्हाहिं तुह सुणावणा कदाओ तुब्भेहिं चेव कद सुणावणा कदा णट्टुं(?ट्टं) च उवदंसियं ति । बेंति य पुणो अहो एदस्स आगमसु सत्ती सुराण वि पत्थणिज्जा, किं-पुण पुच्छामो [८]तेहिं वि अदोसेण कीस रे(?ते)ण एस माहण-लोग-विरुद्धो णट्ट-गीद-वाइदेसु आयरो कओ ?

मया भणियं—कीस विरुद्धो ?

तेहिं भणियं—माहणाण खलु वेद-विणय-झाणज्झयणेसु बंध-मोक्खेसु य अवि(?धि)यारो सुणेज्जइ, तुब्भे विरुद्धागमा दीसाधि(?) किहामदं.....(?) ।

मया भणियं—न एरिसं किंचि, सव्वाओ वि कलाओ सिक्खिदव्वाओ त्ति, ण पुण उवजीविदाओ अत्थागमादीसु कारण संबंध वदेसं काऊण मरवादं(?) ति जाइ जाणह ।

पियदत्तेण भणियं—अहो ! अयाणिया मो । अत्थि पुण तं किंचि लोग-समय-गतं जं अज्जपुत्तो न याणइ ?

मया भणियं—कीस गणियाजणोवदेस-सत्थं ण याणामि ? किंतु विरुज्जति मे तारिसो उवदेसो ।

तओ तासु सव्वासु वि पणदासु भणियं—सामि ! मा विसमं ववहरह[१०], मा एक्कदो कुणह ववदेसं, न एत्थं कोइ दोसो, न दु अग्गि त्ति भणिएण जीहा डज्झइ । तं इच्छामो तुह सगासे [११]महापिडयस्स [१२]जावणोवाय(?) हेउ पसायणाणुवत्ति आराधण-वण-मग्गण-पयोग-करणाणि य सा(?सो)उं ति ।

मया दु भणियं— ममेदं दूरओ विरुज्झइ उवदेसेदुं दह त्ति(?), मा तुब्भे ममं एत्थ कज्जे अयाणयं गणेहिह त्ति तेण कारणेणं कधेमि संखेवओ, सुणह पहाण-गणियाजण-करणेज्जं ति ।

इह खलु गणियाए आयदि-हेदु पत्थेमाणा दातारो अदातारो वा सव्व भूमा अत्तरिक(?अंतरिक्ख) रयाणो अभिगंतव्व तप्पव्वयं से रायभक्खिदा [१३]वेदरि(?) त्ति सेस [१४]कामा णं आढित्ता भवति । अन्ने वि य जे अत्थ संता अगरहिदा सज्ज-फलदा य ते सव्वे ओलग्गिदव्वा । किंतु [१५]वासेण सुणह, [१६]जस्सायत्तं सव्वं तं [१७]तणय(?)गुरुजणायत्तो वा सो निस्संको तेहिं वित्ति पंचवीस-गासवित्तो(?) जओ होइ, सो गम्मो दे(?हो)हिति । सो पढ[?म]-जोव्वण-कितो(?) थेरो वि जोसवितो(?) कुलजोइसो वि पयच्छइ अणुवत्ति(?) तोसिदो सा(?सो) गम्मो जो वि परिणति(?) भारियाजणो कामेउं अभिकंखइ । सो वि तरुणि-चरित-रंजितो तओ गम्मो, वुड्ढमवि समं अणुवत्तति एसा अत्थत्थिणीय तओ थेरो सुट्ठुदरं पयच्छइ ।

जो वि याणेज्जमाण(?) विपुलत्थ-भागी[१८] सो वि ओलग्गिज्जइ पुत्ते पुव्वाराविंतो(?) दाहिति । जस्स वि देसंतरे अत्था दायाणं सुणिज्जति सो वि ओलग्गियव्वो, रत्तो दूरातो वि आणेदुं दाहिति । जो वि वेसिय-सव्वत्थ-परम-जाणगो सो सुहावभोगो उवदेस-कला-कोसल्लयं च ततो होति त्ति ततो गम्मो।

जो वि लोइयसत्थेसु तीपंणितो(?) [१९]सया पणसंमतो-ववहार(?) च्छत्तापाविक्खी(?) पमाणभूतो वा बहु-जणस्स जे एवंगुणजुत्ता ते अत्थादाणकरसहा ववहार-कज्ज-सहायका पक्खभूता य भवंति । तप्पवयंवगा(?) लोए गोरवं लहदि। ततो ते गम्मा । जे वि बहुजण-पुरओ सिलाहेति गुणवदी इयं गणिया तोरेसे(?) अणंग-सत्थे कुसले जं वीसामण-मणण-संगहादीसु रतिकलासु य इति दिवियाणि(?) त्ति जो एवं थुणइ सो

दाहिति ओलग्गिओ तप्पच्चयं च गुणवातो(?) भविस्सति ।

तओ गम्मो जझविसुं(?) कादीसु(?) अव्वोच्छिन्ना वित्ती सो पउरऽन्नपाणोवकरणकत्ता भवीहिति । तओ धम्मो अकिलेसज्जिद-धण-विभवो वि सुहागदाणमत्थाणं तुल्लं गहण-मोक्खणं कुणइ, काउं सुहं दाहिति ।

तओ गम्मो सुभगो विमुहोवभोगो दाहिति य सत्तीए ।

तओ गम्मो मंद-रूवो वि गम्मो, किं-कारणं, जेण सो मंद-रूवं अत्ताणं जाणंतो पगास-जुवइ-संबंध-बहुमाणेण जहा-सत्तीए सारं णिसिरीहिति। जो वि परेसु पहसंघरिसी(?) अभिमाणारूढो य मुहयत्तणवाही अन्नकासीसु(?) सह विस्सट्ठिं उवगदो सो नियमा का(?दा)हिति ।

तओ गम्मो जो वि दूभओ सोभग्ग-[२१]रवावेणत्थे(?) जणपदे [२२]आरूढिं इच्छइ सो वि गम्मो, नियमा दाहिति सो ।

निय-भारिया-असंतुट्ठो जो अत्थवित्तो(?) य सो गम्मो, दाहिदि हु सो एवंलिंगवट्टणो[२३] सो वि कामए संगी दाहिति ।

तओ गम्मो जो वि अपुरिस-सद्द-कामी, सो उवकारी होहिति ।

तओ गम्मो [२४]पगामिच्छिग(?)कामो वि आयइहेउं दाहिति ।

तओ गम्मो जो य गंधव्वातोज्ज-वेणु-वीणा-णट्ट-पयोग-वक्खप्पा, कविया-गुणऽक्खाणय-चित्तकम्म-कला-कुसला ते वि आणुआतत्ताणेण(?) रज्जंति दिंति य वित्तं, उवदेस-कला-कोसल्लयं च तेसु होइ ।

तओ गम्मो(?म्मा) विसेसेण चित्तकारा उवत्तघाणकरेण(?) करणेणदेसाय(?) सुलभा भवंति, देंति य सो(?) ।

ततो गम्मो(?म्मा) सव्वे वि गंधव्व-तालायरादयो सुहोवणद-धण-विभवा परिच्चागसीला य ।

ततो गम्मो जो वि पुराणेतिहास-नाडग-कहासु अक्खाईयासु य कुसलो, [२५]सो वि सिंगार-रस-चोइओ पयच्छइ । अक्खाणय-कहा-कोसल्लयं च विइत्तंत(?) सो होइ गम्मो । एवं पाणुच्छाह-संपन्नो गंधाणुलेवण-पिओ य, सो वि आणुअत्ताए रज्जइ ।

तओ गम्मो जो वि दइववादी जहा दइवायत्तं सव्वं दव्वं दइवायत्तो य अत्थस्स [२६]निग्गमो, सो वि [२७]अणिद्धयं परमव्वयं व परिच्चयति ।

अच्चंत-गम्मो जो य रायकुलो [२८]गारवप्पभो सुभावज्जित-वित्तो[२९], सो पहाण-जणवदियरागओ(?) कामणुअत्ताए रज्जइ देति य कारणे समुप्पन्ने मागधो हवइ ।

तओ गम्मो जो वि सवित्तो सच्छंदणं अभिकंखमाणो पिउणो मरणं लहुं अभिलसइ । तस्स [३०]कुरकल्लाणममंतस्स व जहा पुव्वसेवा कायव्वा, अत्थम्मि सो दाहिति जो वि सइविभवे दाइएणं(?) [३१]पासातो थोगं भागं लभइ तेण असंतुट्ठे माणभंग-रोसिओ कदाइ देसंतर-गमण-कय-निच्छओ होति । सो वि तदातव्वो(?) निरवेक्खो तओ पेच्छाहेऊण विण्णाद-परमत्थाए सो गम्मो देज्जो(?) अत्तणो दव्वोवकरणेण [३२]वालेति(?) तित्थं करेति देति य ।

तओ सो वि गम्मो जो वि मद-भज्जिओ अभज्जो वा । ते वि रत्ता निरवसेसं पयच्छंति ।

तओ गम्मो जो वि सव्व-सयण-वल्लहो जुवाणो य, सो वि सच्छंद-ललितत्तणेणं पयच्छदि वित्तं ।

तओ गम्मो जो मि(?वि) इत्थि-संभोगेसु अभिरमदि, सवित्तो य सकज्ज-चोइदो दाहिति ।

तओ गम्मो सव्वेसिं वा समयं पयच्छंताण वहूण व जो सज्जफलदो बहुगुणो य ।

सो गम्मो जो वि पासंडी लज्जालुओ, सो वि अपगास-विहारायरो लोग-वयणेज्जं परह[रं]तो जहा-भणियं पयच्छइ ।

तओ गम्मो परमत्थेण [?.....] पुण पुण लिंगिणो सव्वे वि वज्जणिज्जा जइ वि सभोवकारिणो(?) हवंति, तेसु बहु दोसा दीसइ । अवि य,

जाहे जणेण चत्तं अप्पणियं णाण-दंसण-चरित्तं ।
ताहे तस्स परेसु(?) विणत्थणुकंपा पदणुयं वि ॥

एवं जाहिं अत्ताणयं धम्मोवदेसया धम्मसत्थाणि सुयंनियइ(?) तित्थकरा य परिचत्ता ते तीए कहमणत्थं ण काहिंति ? जो वि जत्थ आधिवच्चं आयोगं वा करेइ सो अन्न कामीणं ईसायंतो पभवंतो य धारणं कुणइ । तओ ते केणइ गुज्झ-रोग-ववादेण(?) सपयोगं निवारणेज्जा य । विप्पयोग-निवारितो कदा पभवंतो पच्चणीयो अणत्थ-संपादगो य भवति ।

तओ णं गम्मो णेमित्ती मुहुत्त-भार-कुसला(?लो), कदाइ मुहुत्ते जोगं जुंजेज्ज, जेण विणा अत्थेण निच्चं तत्ता(?) व परिणता होंति ।

तओ ते वि णं गम्मो जो विज्जूमंतो सव्व-जोग-विसारदो वा, सो वि तेसु बला वसीकरेउं भुंजति लद्धा[?व]गासो । तओ पढमं चिय वज्जणिज्जो

जो वि जक्खिणि-कामुओ सुणिज्जति, सो वि वज्जणिज्जो । किं-कारणं, कदाइ सा जक्खिणी ईसा-दोसेण किंचि वसणं उवहारेज्जा ।

गह-गहितो य वज्जणिज्जो कदाइण्णावेगो कंचि अंगं वि भंगेज्ज मारेज्ज वा ।

जो वि पमाणराइत्थिकामेक्को(?) सो वि वज्जणिज्जो, कदा मिसतो-पव्वयं(?) छेड्डावेक्खिणी हवेज्ज ।

सज्जे वि देव-योगिणो देवदा-मुक्का पहाणित्थि-कामुका व(?वि) वज्जणिज्जा, ते कदाइ पहाणित्थि-परिभोग-रंजिया परिभवेज्ज दूभगत्तणं वा पगासेज्ज ।

जो वि परपिंडोपजीवी अत्थ-संचयपरो य लुद्धो पिय-भुत्त-भंडो नियय-महिला-दासभूतो य ते वि वज्जणिज्जो ।

जो वि दारिया-जणट्ठजो(?) सो वि वज्जणिज्जो, सो वि पर-पुरिस-वतीयर-कुवितो किंचि अणत्थं उवहरेज्ज ।

तक्करो वि वज्जणिज्जो ततो वि तक्करो चेव भत्त-पदायग त्ति कदाइ वसणं लभेज्ज, कदाइ सो सपरिवद्धो [३३]अभिवीसासेउं पुव्वज्जियं पि [३४]हरेज्ज।

सव्वे य अणाद-कुल-सीला अपच्चितसीला(?) य रोगिणो कट्ठाभिभूता जक्खाएसग्गहिदा सव्वे वज्जणिज्जा । तेसु लोए अणाय-दी(?ही)लणा य [३५]तुच्छिदत्तणं च लहदि ते(?ति) ।

ततो अगम्मो जो वि मूलबंधादीसु कम्मेसु पयतितो सुणेज्जइ, सो सुबहुं पि देंतो नेच्छिदव्वो, तम्मि सव्व-जण-पायडा दोसा ।

जो वि अणिमित्ते रूसइ सो वि अणिमित्ते चेव कुप्पति विरज्जति य तओ अगम्मो।

जो वि बहुसो दोसवलियाणुकित्तणं(?) करेति, सो वि दिट्ठवेरो इव जहा वज्जणिज्जो ।

जो वि मोरवियाए(?) कारणे अत्थविसग्गं करेइ, मोरणामा जा मोरा इव पाउसकाल-समए जत्थ-तत्थ गओ एगागी विधिणा सहचरीसु सुवियाए कामरुताइं करेंति, तह जो अपत्तकामो वणं पयच्छदि सो मयूरो त्ति भण्णति। एगागिणिया जाण सन्ना सो कदाइ उवयार-भेदे न पुव्व मच्छातो(?) वियोगेउं इच्छइ । कदाइ उवयारेउं छलेण ववसेज्ज तओ सो तिविहोवाएसु परिच्छणिज्जो वज्जणिज्जो वा । गामेल्लओ मोरो भण्णइ अयाणगो वा, तं परिच्छेज्ज, जो वि लोगस्स केण वि कारणेण वेसंभं उवगओ सो वि आयतिए हेउं वज्जणिज्जो ।

विसेसेण कुट्ठरोग-परिगता वज्जणिज्जा, तओ कदाइ वाधि-संकंती हवेज्ज । कुत्थणा य त्ति दुग्गंध-मुहा विसेसेण कामुय-आयदीदाइदं(?)हेदुं वज्जणिज्जा ।

अन्ने वि जे एवमादी सुपायड-दोसा ते सव्वे वज्जणिज्जा । इति अगम्मा ।

इतो य पढम-समागमे पयत्त-रयित-सयणासण-पवर-रइ-जोग्गं ति सहिद वेसालंकाराए वेसाए [३६]सढो उदक्खणेज्जो आगमण-काले य महता संभमेणं थिर-सलज्ज-गंभीर-सिंगार-हास-करणुभज्जतीए(?) पियमणुकूल-मधुर-मम्मण-वयण-भासिणीए पढमं पडिच्छियव्वो विणएण य सबहुमाण-करणीय आसणप्पदाणं करणेज्जं । कदोवयारस्स य तस्स सुगहिद-वेसालंकार-धूवण-मयणंजण-कुसुम-तंबोल-मुहवासय-सुरभिगंध-वदामणाए(?) तेणणुण्णातासण-निसन्नाय कहा जोयणेज्जा, इमाणि य वयणाणि य भाणिदव्वाणि जहा तुब्भे वि दट्ठु जणवदिया रयट्ठिदा(?) रति-रसायण-पाण-संभोगकला-कोसल्ल-वियक्खणा अणंग-सत्थत्थ-कदागमा य सुणिज्जह । तं आरुहध ममं पितिवदेसमेत्तेण गणियाजणाणुरूवेण अणुगेण्हिदुं । अहं वो अणुरूवा सीसिणी तुब्भे चंदो इव सव्वत्थ-सीतल-सभावा कंति-जुति-गुणेसु उवविता, सो चेव कुमुद-सराणं जहा अणुवकद-वच्छलो सि निव्विन्नाणं वि अम्हारिसाणं ।

एवं ताव पुव्व-मधुर-वयण-चदुव(?र)-करणेसु अविक्खिवइ । तओ कमेण सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधादीसु उव[?च]रंती जाव न ताव रूढ-सिणेहाणुरागो भवति । पच्छा जति तं विन्नाणे अकुसलो रओ तस्स ससिक्खाए हिदय-करणं करेइ । अह पुण अणंगकला-कुसलो हवदि तओ तस्स संतियं

आगमोपदेसं अभिक्खणं कदाणुओगा गेण्हइ जेण य पयोगेण सो हीरति तं तं पयोगं जुज्झइ। अहवा भवणदियाण चेव किह महा तुब्भे अणुवत्तणेज्जा ततो जहा सो भणति तहा अणुवत्तति ।

अवि य, सद्धाए वि विसिट्ठा गणियाए सव्वा गम्मा जहा सिक्खिदा पवरदिट्ठा य सरूवट्ठिया सव्व-पयदीओ सव्व-मणुय-जादीओ य । स-कम्माणुठाइणो नियय-घर-चित्त-भित्तीए निवेसणेज्जा । तओ तत्थ कामिणो जम्मि मज्जंति(?) तेण सा उवचरति तेण य साभिप्पाय-गहित-चित्ताणं कुल-वंस-परिच्छा कीरति । तओ पयत्ते रइ-संगामे जहा सिक्खिदं पजुंजदि, रतावसाणे य सुवमाणं सुणायगं भणइ—आणवेध कदरेण पासेण तुब्भे सुवह। तओ जेण पासेण सो भणइ तेण सुवइ, इदरहा दुक्ख-सयणीय-दोसेण कदाइ विरागं गच्छेज्ज । परियत्तंतो व सयणे जति सो सयमेव घेत्तुं जं ण पवत्तत्ति (?ति) तओ सयमेव तस्स पुरओ वा दिसील(?) वा णादूण जहा-जोग्गं करेइ। किं-कारणं, 'कदाइ सो पमाणं करेज्ज-'पेच्छामि ताव किमहं एदीए इट्ठो ण वे त्ति सुवंती य, असुत्ते नायगे ण सुवइ विसिट्ठा [ग]णिया । किं-कारणं, कदाइ सो पुव्व-सुत्ताए चिंतेज्ज-'अहो ! एसा असिक्खिया जा ममम्मि असुत्ते सुवइ । अहं जग्गंतो अच्छामि एसा पुण सुवइ, नूणं से ममोवरिं अग्गहीदणा (?) ।' तओ विरागं गच्छेज्ज । अहवा पुव्व-सुत्ताए किंचि वलीयं पेच्छेज्जा निव्वेदणाए वा अंगं दुगं काउं सव्वं गीदं णिय छेज्जदिट्ठ-विलीगं(?) विगदसुतं(?) च दट्ठूणं कदाइ विरागं गच्छेज्जा ।

तओ तासु भणिदं—'सामि ! जइ पुण सो पुव्वतरं सुत्तो पच्छा सुत्ताए पुव्वदर-विबुद्धो किंचि विलगं पेच्छेज्ज, तत्थ किं करणेज्जं ?'

मया भण्णइ—तत्थ पढमं चिय सुवंती तं पुरिसं घण-जहण-भुयोरु-पंजर-परिग्गहिअं काउं सुवदि । जेण कद-जोगोवलंबस्सेव लहुं पडिबुज्झइ ण य सुत्तं अबोधेउं कदाइ गच्छइ । किं-कारणं, कदाइ सो चिंतेज्जा-'एसा ममं सुत्तं चेव मोत्तुं जुत्तीकय-संकेता अन्नस्स पासं गद' त्ति । एवं चिंतेउं विरागं गच्छेज्जा । तओ जइ केण-इ कारणेणं गंतुमेच्छसि ततो विबोधेउं गंतव्वं, तओ 'सा सलिल-कज्जेण गत' त्ति ण कुप्पीहिति ।

तासु भणितं—'सो य एयम्मि समए सुत्तो न सुत्तो व त्ति एयम्मि सुहुस्सास(?) सुपुरिसस्स कहं णादव्वं ?'

मया भणियं—पुत्तस्स लक्खणाणि पच्छिणि व्व लिंगं सेस-गहण-कारणेसु सूइज्जइ । अयाणंती वा तस्स नाम-गहण-मिसेहि मधुर-मम्मण-चदुरक्खरेहिं वयणेहिं सुमिण-लक्खेण अलिय-वत्तं करेइ । तओ सुत्तो वि संतो तेणेव सद्देणं विबुज्झइ, असुत्तो वा सुणइ । सुणंतो य चिंतइ—'साधु ! अहो ! एसा मम भावाणुरत्ता जा सुविणे वि ममं चेव लवती' ति रागं गच्छेज्जा। पडिबोध-काले वि गाढालिंगण-परिचुंबणं कुणमाणी विबुज्झइ, जदी पुण नायगो किंचि [थ]ण-जहण-सोणीतडं गुज्झंगं वा रति-परायणो परामुसेज्जा, तओ हत्थेण वत्थेण वा णेदं पदेसं पच्छायदि । तस्स पयाणुराग-वड्ढण-हेउं हिदयाणुकूलं ववहरेज्जा ।

तओ तासु भणियं—'यदा पुण किंचि गुज्झदेसे व लिंग-कारणं हवेज्ज, तत्थ किं करणेज्जं ?'

मया भणियं—तदा पणय-कोव-विग्गहदो य वयणं खवेज्जा, निल्लज्जेति य भणिदव्वो वत्तव्वो य मवसं(?अवस्सं) एदस्स दंसणे पुरिसो अप्पाउओ होइ, इत्थी वि य परमहमया(?) भवति । न याहं अत्तणो दोहग्ग-कारणा णिवारयामि । एवमादि जीविद-सिरसा(?) धणादीसु य निवारिदव्वो पयोएणं ।

तओ तासु भणियं—देव ! जदा पुण रतिकाले पुरिसो परिस्समं गच्छदि, तदा किं करणिज्ज ?

मया भणियं—[ए]वं तस्स मम(?ण)-विणोदणा-हेउं सुहो वादो वादव्वो । गाढालिंगण-विधारणा सुस्सास-कारावण संधारण-वीसामण अंगाणं कीरइ मधुर-सुरभि-सीतला य पवर ज(?जु)त्ति-ज(?जु)त्ता विविध-कुसुम-वासिता गंधा य तस्स उवहरिदव्वा । हरिसपुव्वएण य वक्खेवेण खणमेत्तं विधारणिज्जो भुमयाधर-णयण-णच्चण-विलास-विब्भम-वक्खेवेसु य [१९]विमोहिदं वीसामेज्ज । ता जाव रति-समत्थो जादो, रतावसाणे य विसग्ग-काले य पुरिसस्स भावेणं किंपि वेरग्गमिव संजायति । तओ तस्स रक्खणत्थे अत्तणो य खेद-विणोदणा-हेउ सलीलालिंगकरण-पव्वयदुदं(?) दइतो परिस्सईदव्वो दंत-णभा(?हा)वदारणालिंगण-चुंबणादीसु य घणं गुललेदव्वो तत्थ वदण-ऽधरोट्ठ-ललाड-सिर-गंडादीसु ताव दंसो(?) गीवाकय-भुयोरु-कडि-वच्छत्थल-अंस-पासयादीसु णादि-उब्भंडण हेसुण(?) कलोवगूहणं पारदोवग्गहणं हंसोवग्गहणं च पउंजमाणी चक्कवागोवग्गहणेण य तहा

सपुत्थाणेसु(?) सरभसोवसप्पण- परिचुंबण-ससद्द-मधुर-मम्मण-खलितक्खराणि य रुताणि करणेज्जाणि । अवि य,

लीला-विलास-विब्भम भुमया-वर-भंग लोल-नयणाणं ।
वेसित्थीण विलासा हरंति हिदयं मणूसाणं ॥

तहा हि ललिद-नेउर-जवल-कल-रसिर-लीलाविलासालस-सुकुमाल-चलणकमलेसु मदण-घण-पवर-राग-रुणिद-पविगसित-विउल-कमलामल-सरिसेसु लोयणेसु कोमल-चल-ललित-लदाकारेसु य गत्तेसु मणहर-कणग-समुग्गय-कुंकुम-निभेसु य थणेसु विलासिणीणं जो परम-[ल]लिद-विसंथुल-रति-भ(?भू)सणंकित-सरीरो सो सुरभि-परिमलवहो लोगम्मि कामी भन्नइ, पवर- रइ-संभोग सुभगो । एवं कदे कामी पवर-रइ-रभस-परिभोगक्खमो होइ । अवि य,

तह सो गुललेदव्वो निउणं सिक्कार-मणित(?)-विरुतेसु ।
जह रति-रहस-महद्द-संभोगपरो चिरं होंति ॥

एत्थंतरे तासु पुणो भणियं—सामि ! दिट्ठं नायक-समाहरणं । जं ता पुण नाइता(?का) तम्मि समए परिस्समं गच्छइ, तदा किं करणेज्जं ?

मया भणियं—परिस्संताए वि सो रति-परायणो ण निवाणुवा(?) केवलं पुण समत्थणेण मणण-सदेवणा वर-दसण-सुहं संकोयण-चल-णयण-करण-भुय-जंतण-गिणसंपण(?)-ताडणछु(?)-भिउडि-पीडण-निब्भच्छण-ललित- पहसण-हरित-दूय-छरण(?)-सणिय-पक्खाविक्खेव-थण-जहणुज्जाहण सरीर- संवल ते णासिगं समण सद्ध भुमयाधरोट्ठ-मुह-लोयणादीण गत्तावयवाणं साभिप्पायं संचालणं तक्कालाणुरूव-करणं करेंतीए अप्पाणं खणिदव्वं, तस्स य सरभस-कयग्गहणाकड्ढियस्स सिरसि कर-कमलं निवादए य से जहण-भुयोरुसु य पीलणामद्दणं करणीयं, 'अवसर णिल्लज्जे' ति य निब्भच्छंयतीय सविब्भम-भुमय-भंग-णयण-कमल-संचार-ललित-सकल-सद्दाणुविद्ध-बद्धं च काऊण कंतं सुप्पसारित-करण-ववदेस-सप्पयोगं वीसमेज्जा । अवि य,

णाह(?) रति-लोलं रमणी सूरदूसवे सुरभि-समरं कुव्वदि बरहिण-परहुत- कुक्कुड-पारावत(?) दारु-अरुणि-सोणीतड-गुज्झपदेस-परामुसणेसु य तस्स चित्तग्गहण-कारगितब्भावे(?) जाणियाए वेसाए संविलित-विलास-विब्भम-कयग्गहाकड्ढण-चुंबणादीहिं तस्स ददिए(?) करणे पयतितव्वं । अवि य,

किह सा हरिहितिमत्थं(?) जण वि पत्तम्मि सोहणा सह मए ।
सललिदब्भुतुत्तिक(?) कमंडलु अइ-मम्मणं खणइ ॥

इति विविध-विज्जाण पुच्छा सोणिततु(?लु)च्छलित-रइ-गुण-तरंगं ।
सयलम्मि कामि-मच्छा सुरत-समुद्दं विगाहंति ॥

पणयग्गह-लुत-विहुरा कोमल-पर-चलण-पंकयप्पहता ।
रज्जंति सुचिरकालं कंता-रति-विग्गहे पुरिसा ॥

ततो तासु भणियं— सामि ! जदा पुण नायगो कम्हिइ कारणे कोवं गच्छइ, सयणे वा परम्मुहो ठायइ कुविदो रयणीए, तदा किं करणेज्जं ?

मया भणियं—कुविदस्स दु पुरिसस्स पणयदो कारणदो वा विणासिणाहं वा पराहुत्तस्स य सयणेज्जे इमा चउव्विहा पसादणा भणिया । तं जहा—

सामेणं उवप्पदाणेण भेदेणं दंडेण वेति । तच्छप्पिय-मधुर-चदुर-सिंगार-वयण-चदुकम्म-सन्नादिसु सामं पउंजंति, जहा(?दा) तेण न पसीदति तदा उवप्पदाणेणं ।

तासु भणियं— देव ! अम्हे तावणस्स(?) चेव कदेणं पुरिसाणं चदुं(?) करेमो । किं वत्तसि उवप्पदाणिं(?णं) दामो ? त्ति ।

मया भणियं— न याणह तुब्भे किंपि दायव्वं उवप्पदाणं नाम, तस्स सुहासत्ति-जणणं मुहवासयं तंबोलं मुहिं(?) मधु-मेरग-मज्ज-गंडूसं वा पणामेति, चुंबणादीणि वा चदुकम्माणि, एदं उवप्पदाणं । जहा पुण एदेण वि ण पसीदति तदा भेदं पउंजंति । तओ नाम तस्स रतिकज्ज-वतियर-संभाविदाणं संभासमित्त(?) जणवयण-संकिणि वा ज(?जु)वदीणं दोसुकित्तणा कीरति, भण्णति य तुमं असु(?मु)ईए रागरत्तो जओ मे एवं चदुगारियं पि ममं न गणेसि इतिमादि भेदो ।

दंडो नाम कयग्गहाकरिसण-चमरोट्ठगहण-घ(?थ)ण-जहणाभिघाद-कुत्तम(?) त्ति पहार कामत्थमंघणादीसु दंडो, एदेण परावत्तेति । जइ तदा वि ण पसीयदि ततो पादपडणादीसु मम्मण-मधुर-वयण-रुअण-जीतसाधण(?)-अंत(?अत्त)-णिंदणादीसु भणति य—किं मम पियदम-अवमन्निदाए जीविएणं? विस-भक्खणुल्लंबण-गणचलण(?) मरुप्पवाद व देसकरणादीसु णियय-सरीर-पहार-पादणादीसु य जूरण-ससण-विसूरण-सरणागतरण(?)

रुसण-धरणितलातोवेडण(?)-सप्पओग-भित्ति-तड-पिडण-कलुण-जंपणादीसु। तह वि य अपसीदंते मरण-ववदेसेण निग्गमणं जाव दुवारदेसे । जदि तहा वि ण पसीयति ताहे तो परं ण याति सा पुण सो णाहिति एसा कलह-ववदेसेण मम पासाओ अन्नस्स कामुयस्स पासं गय त्ति तेण कारणेण तत्थेव रुयंती अच्छदि । जहा तह वि सो ण णियत्तेति ताहे तओ नियत्तिउं कलुण-रुन्नस्सणा पुणो वि से पादेसु पडइ । तह वि अपसीयंते किंचिकालं विमालेति जाव से पढम-रोसो पाउसकाल-सलिलोद्धत-पंको इव सयं सयमेव सरद-काल-समए पसादं गच्छइ । अवि य

रोसस्स पढम समए सुट्ठु वि दइतो ण संवेदव्वो ।
हंदि ण लहुं पसीदति खुभिदं व सकद्दमं उवगदा ॥

तओ विमालण-पसंतकोवस्स उदाहरण-कधा-कुसलाओ सहीओ लाइज्जंति अत्तणा विय लग्गइ । तओ अवस्स पसीदति, अह ण पसीदति तहा वि सो ण एग-पदे चेव विच्छिज्जति । कदाइ सो वित्त-गव्वितो परिमाणणापरो हवेज्ज 'पेच्छामि ताव किं करेति' तेण य कारणेण दीहाविक्खिणा भविदव्वं ।

अवि य,

अगुणे वि गेण्ह गुणे दीहं पेच्छाहि मा विरज्जाहि ।
जेण वि न होदि कज्जं तेण वि कज्जं पुणो होहिति ॥

पवसण-काले वि तस्स करुणं रुयंतीए भणियव्वं ।
पियदम किं ते पउत्थेण किं च तेण पडिप्पदि ॥

अहं तुमं कप्पं पि कत्तिउं जीवावेहामि, मा(?म)रिहामि अधण्णा तुह विरहे, कस्स मे परिच्चयसि किं ताहे तुमे कम्मणं पज्जेत्ता किं कदा हं हिदयं मे घोवी(?) होदि पसीद णियत्तह । तस्स य समक्कंत-पक्खियाण पुरतो वायणं करेंती भणइ—'भगवति ! तुह पसादेण मा मे पिओ पवसदु, पउत्थओ वा लहुं एउ ।' गदस्स मे(?से) कदाइ तप्पक्खियाण पुरतो निरलंकारा अच्छदि मलिण-देहा, तस्स कहाओ अभिक्खणं करेति । वायसे आगमणं कथयति, तस्स पूयं च ववदिसदि । कहामि से पडियारा देवसंते(?) संभंतो आदरेण ण्हाता सुसिप्पयताओ(?) वाईण य ववदेसेण देवत-पूयं करेति । एदेसु मे पिओ कुसलेण आणिदो त्ति वदमाणी वायसाण वि पिंडं दलयति । पदेसु

पदेसु मधुर-रुतेसु पियागमणं निवेदितं । अणत्थमिते य आदिच्चे तस्स तं सिताणि(?) वा पुरओ आदिच्चं खिंसति—'निग्घिण ! कीस मो पिय निधुवण संग-सुयाए(?) एव चिरेण अत्थमेसि ?' पभात-काले वि भणति-'अहो हु निग्घिणा एसा राई जा अज्ज एवं लहु पभात' त्ति. । एवं एदेण सुपगारेणं तोसिता कामिणो जावज्जीवं वस्सा हवंति, सव्वस्सं च पयच्छंति । अवि य,

कमलसिरि-तक्करेहिं(?) पहता मड(?द्द)ला सहरति(?) जदि ।
णयण-सरेहिं मणूसा किह णु हु वस्सा ण होंति त्ति ॥

तओ तासु भणियं— देव ! यदा पुण बहु-कालोलग्गितो वि मणूसो अभणितो सति विभवे ण किंचि पयच्छदि, तदा किह मग्गिज्जदि ?

मया भणिदं—तदा सव्वदेसं(?) सप्पयोगं च मग्गिज्जति । को पुण पयोगो तत्थ कीरइ महंतं वेदं ण वतति(?) । ताहे तस्स चेव पुरतो वेज्जा सद्दाविज्जंति, वेज्जा य भेदिज्जंति, कवड-वेदणा य से कधिज्जदि । वेज्जा य से महंतो वाधिमिति महंतेण उवकारणेण एतीए तिगिच्छा जइ हवेज्ज त्ति एवं वदंति । साधिकं णं तीस वेदणा इव भणइ—'मम घरे किंचि अत्थजादं णत्थि । किं करेमि ?' तओ वयंसिताओ भणंति—'वुक्कता(?) सि पुरिसे ओलग्गमाणी जा अत्तणो वि ओसह-मुल्लस्स वेज्जा णाणयत्तस्स(?) य ण यातामि'। भणंति य से सहीओ रुयमाणीओ वेज्जं— 'कीरतु एतीए तु तिगिच्छा । अम्हे ते नियया इं वत्थालंकाराइं पयच्छामो' त्ति । तओ एत्थ अवत्थंतरे सो अवस्सं दाहिति ।

अहवा जस्स तणयमयं(?) [४]घोरं फातां(?) य से कामिणो, सारत्तं तो अवणेदुं रतणीए तत्थ अग्गि दवावेति । तओ घर-डहण-ववदेसेण सव्वेसिं पि पुव्व-कामुयाणं दंडं पाडेति । अह कुदुमयं(?) घरं निरग्गिसरणं वा ततो तम्मि सयमेव पयच्छदि(?) वित्त(?) खत्तं खणावेदि । ततो सव्वस्सं मे हडं ति कामुए ति दुहइ ।

अहवा छणूसवेसु वि निरलंकारा ववहरति, कामि-पुरतो य भणइ—'नत्थि किंचि जोग्गं वत्थं अलंकारियं वा' । करेति ताहे सो वि 'एसा पयोगेण मग्गति' त्ति । जइ सत्ति अत्थि तओ पयच्छइ, असाधीणो वा भणेज्ज— अच्छसु जाव ताव घडावेमि किणामि वा कदो-इ । तओ जति लहुं देति सिद्धं चेव, असंपडंते वा अप्पाणिज्जं संतियं वत्थालंकारं जं सो

ण याणति तं केण-इ मित्तेण वा अन्नेण वा केण-इ तस्स व सुक्खिदाण(?) वा पुरतो कय-ववदेसेणं भासेति । तओ सो तं किणदि, मुल्लं वा सहत्थी(?) होइ । अहवा विकरण-ठियं अंगीकरेउं अत्तणो अलियं दंडं अग्गहं वा कारावेति । एसा चोर-परिच्छा इत(?ति) । आवसत(?) भत्तदाइ दावेइ एदेण ववदेसेण अत्ताणं गेण्हावेइ लहुं तओ से कामुया दंडं पडिच्छेदं करेंति । एवं अज्ज मे अमुगं कारणं ति अमुगो णगरच्छणो अमुकस्स से(?मे) संबंधिणो विवाहो निमंतणं वट्टाधरो(?) त्ति पुव्व तंबोल-वत्थ-मुल्लं वा अज्ज ववदेसेण वा मग्गिदव्वा देंति य रत्तहिदया ।

तओ तासु भणितं—रह(?त्त)स्स किं लक्ष(?क्ख)णं ?

मया भणियं—जदा तीए पीतमेक भोयणद्ध वच्चितं तंबोलं मुहवासय-सुहवदिणा(?) सवगरूवेसु अंग परिमलित-वत्थालंकारेसु य सज्जति, तदा रत्तो ति नायव्वो । एदेसु य कज्जेसु अजतंतं(?) आदत(?अदेंतं) च दूरतो वज्जेह त्ति ।

अह एत्थ अंतरे ममं **पियदत्तो** भणइ— नूणं खु अज्जपुत्तेण सुचिरकालं गणियासु सह वतियरो आसि, जओ एव-निउणा अब्भितरा य भावा लक्खित त्ति ।

मया भणियं— **पियदत्त** ! नत्थि एरिसं किंचि । ण मे गणियासु मणो पसीदति ।

तेण भणियं—देव ! किं वा सो पुरिसो कामित्तं सुभयत्तं वा उव्वहदि जो वेस-विलासिणि-सत्थे वडसंतोवबद्धो(?) कामरसं न पत्तो ?

मया भणियं—वयंस ! ण मे कावडिय-सत्थो ईसिं विहितयस्स रूव्वति । कीस पुण जेण अपरिमित अपरिच्छिद पुरिससामिणीओ एगंत-कवड-कद-विसम-चरिताओ सति वियणे दिज्जमाण गणियाणं एग पुरिसे रती णत्थि, एगेण सह ओबद्धं वि समाणी वि क्खण-मुहुत्त-परप्पर-गमण-पढम-दोसंतरेसु बहूणं पुरिसाणं उत्तिम-मज्झिमाधमाणं अत्थ-लोभेणं संगमं कुणइ । वारियाए गोभत्तकुंडयं(?) पिव जहा विविध-दुप्पदा(?द)-पक्खि-सिरीसिवेसु तिव्वमसुइजण-विद्दालिताओ(?) । अवि य—

जा से किड्डाविया सा अत्थक्के चेव अइ निट्ठुरकारिणी छुरिया इव एगंत-निसित-धार णिच्छोडित-हत्थणंगूला वग्घी विव एगंत-निग्घिणा

निव्वुत्ताण पसारित-करतला य बहु-दाण-खाण-पियण-परितोसिता वि निरत्थयं चेव बहुं पदाणेति(?) । अरे ! तुह कदेण अज्ज तीए बहुदाणं पयच्छंतो वि राणमित्तो(?) घरमागदो पडिसेवि(?धि)तो य रायपुरिसो मे संपदं चेव वेत्तं वत्थालंकारं गो-सदं च पयच्छइ, अमुगो भोयण-हंडियं पयच्छंतो वि तुह कदेणं एदीए निच्छितो, अमुगो मे एग-रादीए एत्तियं देइ, तुमं पुण रंको हि दाहिसि एमेव एस वुत्ता सदा चेव पत्थमोग्गिपरत्था(?) । इमो अण्णो दुगुणं भाडिं मज्जं मंसं कवोडिगाए य घेत्तूण घरमागओ । परिच्चयाहि एयं, किमेदेणं निब्भत्त-वोडेणं ? णीदुलह(?) मे घराओ । सा य पुण गणिया तीय पुव्व- सिक्खाविता भणति— अवेहि, एत्ति गच्छ रुम्माहि(?) मा सुसाण-सियालो विव जहा निरत्थयं बहुं व खाहि । एत वज्जेणं न मे अन्नेण वेसमणेण वि कज्जं जति वि सो रज्जं पयच्छति । एस मे जीवस्स व पभवति, ण मे एदेण विणा खणमवि जीवितव्वं ति ।

तओ सो पुरिसो उज्जओ चिंतेति, 'अहो ! अहं तीए इट्ठो, जा मे जणणि-विरोधेणं बला अणुयति' त्ति । तो तीए सव्वस्सं वि पयच्छइ । पुणो दर परिणताए चेव रादीए किड्डाविया से अलियमलियं पलवति-'हला ! उट्ठेहि। अहो लहु एस वल्लाय(?) पुत्तो । पभाता हु रयणी । उट्ठेहि, अज्ज ते राउलवारो देउलवारो संगीतवारो वा सामी वा घरमागओ,' 'एस य दंडवासी दुवारे चिट्ठइ।' एवमादि अलियं चेव बहुं पलवति । सा वि भणइ सरहोसरमाणी(?) सुवणं(?ण्णं) मे देहि । मा फुट्टसु, नाहं एदस्स पासादो इदाणिं उट्ठेमि, जइ वि सयं सुरनाहो सो । एवं दो वि विड-कवडाए रुसंतं गुललेंति पयदी य पसराणियाणं जं सुट्ठु वि परितोसिताओ पढम पदा(?दो)से सरलाओ होऊण जह जह परिणमयति रयणी तह तह सत्तुभूताओ भवंति । अवि य,

होऊण अमद-सरिसा पदोसकालम्मि भावियं गणिया ।
जह जह परिणमइ निसा तह तह वग्घी समा होइ ॥

सरसा होदि पदोसे मज्झत्था अद्धरत्त-समयम्मि ।
जह जह पभाति रयणी तह तह वेसा विसं होइ ॥

जह पडिसामिस-लुद्धो मच्छो समुवेइ भीसणं वसणं ।
गणिदा-चरित-गलग्गह-गहिता इय नासिसच्छाओ(?) ॥

मधुरं गायइ वाहो अवहिद-हिदओ य तं मओ सुणइ ।
तं तह निच्चल-नयणं बिदिओ असु-विक्खदं हणइ ॥

गायंतय-वाहो इव गणिया गुललेति कामुयं पुव्वि ।
चिर-लक्ख-लुद्धओ इ पच्छा तं कुट्टिणी हणति ॥

जाओ अत्थस्स कए पेहासण वि सुहदं पणासेंति ।
अप्पा जासिं वेसो कह ताण परो पिओ होइ ॥

वेसविलासिणि-सत्थे जइ होंतो पदणुओ वि सब्भावो ।
कुंदजअरसिदाणं(?) को वहंतो कुलवधूणं ॥

णेग-णर-णीय-भुत्तं कुक्कुर-कागाणं वीरयं चेव ।
गणिया खंड-सरावं कुलयो दूरेण वज्जेज्जा ॥

अविभावित-परमत्थं वसणाऽणत्थाण भायणं निच्चं ।
गणिया-जण-संसग्गि विदुसो दूरेण वज्जेज्जा ॥

हत्थेण दिन्न-मुल्लं परिभुत्त-विसज्जियं खल-जणेणं ।
उच्चिट्ठ-पत्तलिं पिव गणियं को सज्जणो छिवदि ॥

कवड-चडु-पंडिताणं अहिरिव एगंत-दसणसीलाणं ।
गणिया-गणियारीणं व(?ध)न्ना हु वसं ण पावेइ ॥

एत्थंतरे भणियं **पियदत्तेणं**—सामि ! कहिअं तुब्भेहिं नियय हिदयभूतं, किंतु प(?पु)च्छामि किवि(?किंचि), किह य पुण सामन्ने रइ-कज्जे गणियाण कामो अत्थागमो य पुरिसाण कामो अत्थणासो य ? कह दोण्ह वि वग्गाणं अनुकूले कामे विपरीता फलसिद्धी ?

मया भणियं— सुण, यदा **भरह**-चक्कवट्टिणो पुन्नेसु वि चदुसट्ठि-पिया-सहस्सेसु पुणो वि सेवा-निमित्तं नरवदीसु बत्तीस-कन्ना-सहस्साइं उवणीदाइं । ताइं सुभद्दए अणुवत्तेउण **भरह**सामिणा गणराईसु वलद्धाइं रत्ती तेसु सह सुवंति, दिवस्संतो चक्कवट्टिस्स विविधेसु चामर-बालवीयणि-कुसुमगंध- णीगंधपीसण(?)-कलस-कक्करि-साजजाकम्मत्त(?)-णट्टभाडग(?)-पयोगेसु णिउत्ताइं सुहि करेति । जेसिं राईणं ताओ रत्ति वि लब्भंति । तदु सामिणो विसज्जिताओ त्ति पभाते महता अत्थ-वत्थालंकारेसु विविधाए य विभूदीए बहुमाणेणं पूयेदुं पभाते विसज्जेति । तओ तासिं सच्चेव

ठिई लग्गा । ताओ य गणे वि लद्धाओ त्ति तओ गणियाओ । पुरिसा य सन्नाविया पुणो वि अत्थ-विड्ढवणा-समत्था अत्थउय विड्ढावन्ने इत्थियाओ एदेण कारणेणं पुरिसा पयच्छंतीति।

एवं एदीए कहाते **पियदत्तेण** तासु य विणोदेमाणो विविदो दियसंतो जयमे(?) यूयं(?पूए)दूण विसज्जिताओ । पडिगदासु य तासु अहमवि मज्जित-विलित्तो दीवप्पभा-कदुज्जोदो हिट्ठितो हं वासघरे । पदोस-काले य पिया **मयूरसेणा** पच्चइत-रायपुरिस-रक्खिता पवर-सिवियारूढा आगता सेट्ठि-भवण-दुवार-देसे, अवहरिऊणं विसज्जित-परियणे आगदा मम समीवं । दिट्ठा य मे व अपुव्वालंकार-वत्थ-भूसिता पणमंती चेव मया सयण-वरं समारोविदा। कुक्कुडावमद्देण य करणेण सरभसं अक्कमिऊणं लाभिता मे सुरत-रसं । रतावसाणे य अपरिसंविद-परिणयं तं वासघरं तदो संकमाणी दुदं परिउट्ठिता, उट्ठेउं तीए य मलिद-पगलिद-कुसुमभारावकिन्न-परिमिसितं अइ-सिढिलत्तणेण पढि(?डि)दं तीए कडीदो मणहरं कंचिदामं । तं च पज्जलित-विमल-सयल-पउमराग-मणि-खंड-मंडित-चामीकर-पवर-परिरंजिद-पतरय-ललित-घंटियाजालोवसोभितं सिता(?त)-मुत्ता-पगर-पवर-परिरंजिदं दिट्ठं मया अच्छेरयभूतं कंचिदामं ।

पुच्छिता य मे-सुयणु ! कस्स एदं ? ति ।

सा हसंती भणदि—एवं मे सहीए **रयणवदीए** ति । इह य तुब्भेहिं सुरति विमद्द-रति-रभस-वायाम-वियावडीकताए समुट्ठिदंतीए गलिदं मे विव (?) ।

अहं भणामि— सुयणु ! किं सा रायसुता सामवन्न ? त्ति ।

सा सविम्हया भणइ—किं दिट्ठा ते सामि ! **रयणवदी**, जओ से वन्नं जाणध त्ति ।

मया भणियं— ण सा मे कदाइ दिट्ठा, किंतु कंचीदामगदा य रयण-संजोगा वन्नं कथयति । गोरीणं काल-धवल-रयण-वज्जितेसु पउम-मणि-संजोगा आभरण-विधी सोभं देंति । साममवगद-कसिल(?ण)-पियंगु-वन्नाण य पउमराग-पीत-पूस(?)-चामीगर-सित-मुत्ता-पदर-संजोगा सोभं देंति । चंदगोरीणं सित-रयण-वज्जितेसु, पउम-गोरीणं पउम-राग-वज्जितेसु । एवं सेग्गाण विवन्न-वज्जिता आभरण-विधी सोभं देति । इमं पुण रत्त-पीत-सित-संजोगं, तेण जाणामि सामा रायसुता ।

तीए भणियं— अहो ! अणभिजादो भूसण-संजोगो । वदेमु जस्स दो सेसाण विधत्तसंगुत्त(?)-पदेसवासी जणो अवसो पंडिताणं पच्चक्ख-दंसणं पिव उ ति ।

पुणो य मे पुच्छिता—पिए ! कहय, को ते सहिए सह अज्ज संलावो आसि ? जदो गद य विदियसन्न(?) विन्नातं मे ।

सा मे भणइ— पियदम ! कधेमि, सुणह । अहं तुमे विसज्जिता गता सपरिवारा रायकुलं, पविट्ठा अंतेउरं । सुतं च मे, पमदवणं पविट्ठा **रयणवदी** । तओ पविट्ठा अहमवि पमदवणं चेव । दिट्ठं च मया तं अतिरेय-कुसुम-सोभा-समाउलं जं तं आयदणं पिव रिदूणं, भायणं पिव काम-सट्ठाणाणं(?), सुहासणं पिव लच्छीए, सहजादं पिव णंदणवणस्स, कुलघरं पिव मधुयराणं; आवासं पिव नेव्वुदीए, अवलोयणं पिव विहीए, कल्लाणमिव सुहाभिगम्मं सव्व-सत्ताणं, सुसाधुसालं पिव सुरभिगंधं, जिण-पादमूलं पिव सुह-सेवणीयं, सुचरिदं पिव कल्लाण-फलदं, सुप्पुरिस-जसो इव विक्खातं, जइ-धम्मो इव निम्मलं, सज्जण-सभावो इव सीतलं, सावण-मास-जलधरो इव गंभीरं, जणणि-हिययं पिव सुपसन्नं, रयणायर-कुच्छिमिव [वि]सालं, कुलवहु-चरियं पिव पच्छन्नं, कयपुन्न-मणोरहो इव सव्व-गुण-समुद्दिसं, मंदर-सिहरमिव समूसियं, सग्गमिव निरुवसग्गं, सिद्धिसुहमिव निराबाधं, सकमल-सीतलमिव जल-भरित-वावि-कलितं, सदा-कुसुमित-पादवं, सदा-मत्त-महुअरं, सदा-परवह(?)-परहुतं, सदा-वित-विणिवारित-दिणयर-किरण-प्पयारं।

तत्थ य रत्तासोग-पवर-पादव-जवणंतरे वधुजण-णेह-सीतले अइमुत्तय-माधविलता-विताण-परियारिते कुसुम-भार-भासुरे कणय-कमल-पत्तासण-गदा दिट्ठा मया **रयणपदी** किंपि ससोगा इव हिययं-णिहियं अत्थं अणुचिंतचंती, तरुण-तवण-सो(?ओ)भामिता इव बाल-मियंक-लेहा, जलधार-वट्ठ इव कोमुदी सयलारविंद-विउलायतच्छी, किंपि निच्चल-णयणा मणोवगदा ।

तिं च तहाभूदं पेच्छमाणीए ममं पि हिदए दुक्खं आसि किमेसा एतारिसा लक्खिज्जइ ? **कणगलता** य से परियारिया परम-वल्लभा सरित्ति(?च्छि)या सरिव्वयरूवा उप्पन्न-पीतिपणय-वीसग्गणुरागा रहस्सकरणुअभूदा समणुन्नाद-सरिस-वेसालंकारा, सा मे दूरतो महि-पिट्ठ-निसन्ना चलण-कमल-

जवलं उच्छंग-निहितं संपावेमाणी[४२] तं चिय अ चित्तं पिव आलेक्ख-पुत्तियं जहा निज्झायमाणी अच्छदि ।

अहं च तिं उवगंतूणं भणामि— पियसहि ! यालोएहि, अहं **मयूरसेण** त्ति । सा तु ण सुणदि ण पेच्छदि । तओ से परम-चिंतोवगदाए देवीए **कणगलता**ए कर-संपुडेण गाढं आपीडितं से चलण-जवलं, तप्पच्चयं व लद्धसन्नाए ईसिं समुन्नाविदं मुहं । तओ सा दीहं नीससिऊणं पवरिंदीवर-मालाणुकारिणीए दिट्ठीए ममं समणुबंधमाणी भणइ— सागदं पियभत्तियाए, कुसलं ते भत्तुणो ।

एवं जंपंती उद्धाइता, किंचि रूययंती लग्गा मे गले, पुणरवि य भणति— हला ! कुसलं ते भत्तुणो ।

मया भणियं—देवदा-पसादेण से णिच्चमेव कुसलं ।

तओ तत्थेव दोवि जणीओ नवरं च सा सासूयं ममं भणइ—हला ! **मयूरसेणे** ! ण हु से तेण निग्घिणेण कंटकसाहाण मज्झेण कड्ढिता सि जेण इमं करह-वाल-लट्ठिता इ[व] जहा खद-विइत्तं कयं अंगं ? भणदि य— हला ! **कणगलते** ! पेच्छ पेच्छ ताव जहा **मयूरसेणाए** जं णववहू-विच्छित्ति-संनिभं केण वि कदं से सरीरयं ।

एव परिहसिदुं पयत्ता मम य सरीराओ सुरभि-खोम-संसग्गि-वासितो सुरद-विमद्द-सदुत्तारो परिमल-गंधो, नीहरति तं च मम घायंतीय सा **रयणवदी कणगलतं** भणति— हला ! सुगंधा **मयूरसेणा** ।

कणगलतादीसु भणितं— अणुकूल-भत्तियाणं एरिसो चेव गंधो हवदि ।

पुणो य ममं परिगोल(?लोग)यंती परामुसती य भणइ— अहो ! विगततत्तत्थो इमीए भत्तारो जाणति जहा एस अणाधा जतो परिभविय कररुहेसु दसणेसु य एव देहे अधरे य वि वित्तिता(?चित्तिता) । तं मा मे पिय सही अणाहा इव जहा परिहूयदु अह णं एदं इहेव निरुंभिउं रक्खीहामि, न देमि सगमणाए(?) ।

मया भणियं सपरिहासाए— हला ! तत्थ वर-कमल-पइट्ठा इव वण-हत्थिणी जहा दुन्निवारिणीया हु इहमिदाणिं ।

अह तीए भणियं— सच्चं खु तं भन्नइ जहा सव्वो णीदो हतहसुहो(?) जहिं पूयिज्जति तत्थ ण लभति धिर्तिं ति । एवं परिहसंती पुणो भणइ— अलं परिहासेण हला ! कह पुण हु सो तुमं अवमन्नइ जादी(?) दुक्खसीलो वा भवति पाण-भोयणवेलाइ ति ।

मया भणिया— देवसीले ! कओ कओ दुक्खसीलता ? काले विधिणा ण्हात-कताभरणो कद-देवदा-पूओ मया सहिदो इच्छितं अर्णिदितं व भोयणं भुंजति ।

तीए भणियं— हला ! **कणगलते** ! जे रन्ना रज्ज-संविभागेण ण क्किता तो सोदुं साहिणो गिहवासिणो जणा ते णामि(?) अतीव हु जाणातोसिं(?) किं तस्स देवस्स य [४३]महंतो ण णिप्पदाणे जणो अणुरागं बंधइ।

मया भणियं— किं मूएसि(?) णव-पदाणेण तु मा सो गुणहारिया हु वयं। अवि य,

गुण-निहि कीरइ लोगस्स पियं सभाव-सुद्धस्स ।
अकुलीणाण [४४]खण्णाण य अत्थेणं कदं कदं होइ ॥

तओ तीए भणिदं– साधु थाणे भाणितं सव्वमेदं, ण तहा पंडिदा पदाणहारिया भवंति जहा गुणेसु रागं गच्छंति । किंतु एस ते तस्स भत्तुणो महंतो अवराधो जं तुमे तेण इय अणावच्च-कररुहेसु दंसणसु अ विकित्तिता।

मया भणिया—हला ! ण चेव एस अवराधो पडिभायति । एस मे अलंकारो सुरत-वतियर-रसक्खित्ताए ताइं कररुह-दसण-पदाणं उवसवमिय(?उस्सवमिव) सुहप्पदाइं मन्नामि । अभिमाण-सुसरभसं तंडवावहारं हं एदाइं निहदाइं पणवेपति(?)।

तओ तीए पुणो भणियं—हला ! नूणं पिओ ते सो दुजादी-जाया तस्स वियोगं असहमाणी ममिमदार्णि दंसणं वि न देसि ।

मया भणियं—एवमेवं न संदेहो अवि य, मह गुरुजणाभिवादण-काल-विउत्ताए सव्वित्ताए सो पुणो दंसणं समवेति ।

ततो सा ममं किंचि सहास-फरुसाए दिट्ठीए निद्दहमाणि व्व भणति—अहो ! से सरुधिरं पिव जह तम्मि माहणे सभावभावाणुरत्ता सि ।

एदम्मि देसकाले चेडियासु निवेदितं- सिद्धं भोयणं ति ।

तीए य अहं भणिया— पियसहि ! रत्ति-जागरण-खिन्नो मे मणो, किं पि सभावेणं चेव अज्ज ममं निद्दओ आसि । ततो मे आहारो ण रोयदि। संपदं संपादिदं च खलु कल्लपूवकपुरमड्डियं(?), तं तुमे जेमिहि त्ति ।

मया भणिया— हला ! अहमवि [ण] जेमेमि तुमे विण त्ति ।

तओ तीए चेडीओ भणिदाओ— हला ! पाणं आणेह, तं पि ताव पियंतु त्ति ।

मया भणिया—वयंसि ! णाहं पियामि ।

तीए भणियं— किं ण पीयसि चेव पाणं, हला **कणगलते** ! सुतं ते णणु किर सो दुजादी **कुसग्गपुरतो** वोक्कवादिदो(?) य किह मदाणि अप्पणा अप्पियंतो तुमं पायति ?

मदा य पडिसाधारयंतीय भणियं— सच्चमेतं ण सो पियति ।

किंतु उवणीदेसु दुजादिएसु परियण-पत्तोवणीदं घेत्तुं पाण-भोयणं गहितपाणा इट्ठेसु देवतेसु समासविदुं ममं भणइ— पिध पाणमिति ।

ततो हं भणामि— दय(?इ)तय ! पियह इट्ठ-कल्लाण जुदय संपत्तिकरं [४५]पच्छा मतं पया(?) । ताहे सो पादुं ततो पच्छा महं भणति— पिए! पडिच्छेहि ति । एवं भाणिदं गंडूसं घेत्तुं तं मे मुहेण मुहे पयच्छति । ततो मे पुच्छदि-पिए ! केरिसो से रसो ? तओ हं भणामि— अमदरसातो वि अधिअतरो ।

ततो सो ममं परिस्सइदुं पाएति, इतरहा सयं ण पियामि । ततो हं तीए समम्मयं किंचि पुच्छिदा, तं च से मया निवेदिदं जहट्ठिदं ति । एवं परिहसंतीण तुह संतियाए कधाए जादथोवावसेसं दियसाण य से तुह संतियाओ कधाओ वि तण्हताओ होइ । एव पुच्छिदूणं तओ तत्थेव दो वि जणीओ कल्लाणय-भंगणुव्वलणावसाणे मज्जिताओ कत-पडिकम्माओ य दो वि समयं जिमिताओ । ततो सा आदर-कतभूसणा ममं वासघरस्स अंतो अतिनेदुं भणति— पियसहि ! इमं ताव कंचिदामं सरणमित्तं गेण्हाहि । तं च अतिप्पमाणताएण मे जहणे घायइ । ताहे तीए कुसुमदामेण वेढिऊण मे कदि(?डि) ततो पच्छा बद्धं किंचिदामं । ततो कतवत्थाभरण-परियट्ट अवतासेऊणं इदाणि तीए विसज्जिदाणि, इहमागता मि । इह य विउल-रमित-वियावडाए मलि[?अ]-कुसुमाए गलियं कंचिदामं ति । एस दियस-वक्खेवो

मे तुह कधितो त्ति ।

तओ मया चिंतितं— तीए एवं करेंतीए णिय-जहण-पमाणं मम कधितं ति । एदेण य कारणेण जाणामि कामयति मे सा कन्नगा । एवं मया चिंतिते तत्थ केण वि अंतद्धिएण भणियं कन्न-मूले ममं-अइ आणामि ते वित्ता अहा तेणावि तंगुलो(?) विव जहा ज(?जु)वति-भावग्गहणेसु [illegible]च्च-रत्ता हिदयं[?.....] विणोयत्तं वयणं **मयूरसेणा**ए सुतं चिंतितं च मे णूणं पुव्वपत्तीए न मे काइ उदंतवाहिता इहमागता होहिति, ण य मे दंसणं उवगदा। तओ एवं तीए गहित-हिदयस्स समतिच्छिया राई । उदिते य सूरे कय-पडिकम्मो तीए राय-कन्नगाए वयणाइं अणुचिंतयंतो अच्छामि । अच्छति य मे पासे **पियदत्तो** ।

अह य **रयणवति**-सगासाओ आगताओ सुवेसाओ चेडियाओ । तासिं च एका चदुर-मधुर-वयणोववेदा मुदि(?मुद्दिय)-गहिद-करंडग-हत्था पणाम-पुव्वं ममं भणइ-अज्जपुत्त ! अहं वो **रयणपदि**-पादकिंकरी **कणगलता**, पाए पणिवदामि । एवं भणंतीए पणामितो मम करंडो । सो य मया **रयणपति**-बहुमाणेणं सयमेव पडिच्छिओ ।

तम्मि य समए **कणगलता**ए उस्सारिता एगंते **मयूरसेणा** । **पियदत्तेण** भणियं— देव ! उग्घाडेह ताव करंडयं, पेच्छामो ताव किंचि तुह रायसुताए विसज्जितं । ततो मया उम्मद्देउं उग्घाडिदो रयणकरंडओ । पेच्छामि य तत्थ एक्कं माउलिंगं बहुसो णक्खेसु विचित्तितं । तं च दट्ठूणं चिंतितं मे नीसंसयं मे कामयति सा कन्नगा । इमो य से मणाभिप्पाओ जहेदं माउलुंगं तह तुमं मए णहेसु चित्तेदव्वो । दिट्ठं च मे अन्नं पि तत्थ एक्कं सहयारफलं, तं वि वयणग्गहेण अद्धायूसिदं(?) । तत्थ वि कारणं एवं मे तुह अहरो आयूसिदव्वो (?) । ततो अन्नं पि कणग-युक्खारपत्त-कय-विलेवणं पेच्छामि। तं च अंगुलि-पदेसु आगरिसं दीसइ । चिंतितं च मे तीए एक्के एगीभाव-हिदय-मेलणं कधयंतीए पढमं सयमेव समालद्धं एताणुसेवतणु(?)-पवालंकुर-सरिस- गोपुच्छगाइं अंगुलिपदाइं दीसंति, पेच्छामि य तत्थ पुणो चातुज्जातय-वासितं कप्पूर-सुरभिगंधं खंडलड्डुयं एक्कं, सो य एक्कम्मि पदेसे अग्गवसणो कड्ढिओ दीसइ, एक्काए य सुसुगंधाए संकलाए खंडपूव-कलियाए समक्कंतो। तत्थ को अभिप्पाओ, अहं खंडलड्डुओ सा य सयमेव खंड-पूवलिया खु ते, पुण अभिप्पाओ एवं तुह अधरो मया दसणेसु खंडेदव्वो ।

पुच्छति य मे **पियदत्तो**—सामि ! किमेतं एरिसं पत्तागारं ? को वा एत्थ अभिप्पाओ ?

तस्स मया वीससंतेण सव्वो वि कधितो सो तीए संतिओ मणाभिप्पाओ । तं च सोऊणं सो परं विम्हयं उवगदो, भणति य— देव ! तुब्भे मोत्तूण को अन्नो एदं नाहिति । णीय जणपदो एवं अवमणे वा गणयंतो अविन्नात परिहास रणं(?) ण अत्तणेणं ति । अहो ! ते सइ सामत्थे(?) ।

ताहे मे सो भणइ— सामि ! एत्तो समालभणतो गेण्हाहि कतियि अंगुलाइं सेसं सव्वं पडिविसज्जेध ।

ततो मया तस्स वयणेण अग्गंगुलीए थोवं बंधेतूण विसज्जितुं पडिमुद्देदुं **पियदत्तेण** य दिन्न-सन्नस्स आगता तत्थ **कणगलता** । सा य मम अकत-पणामो(?मा) घेत्तूण करंडयं परिगता सपरिवारा । युतीमे(?) **मयूरसेणा** कतं रयण-पट्टिद-विसज्जिदं सामि-पुव्वज्झियं मया ण गहिदं चेव। तीए भणियं— कीस भे ण पडिच्छिदं ? कदाइ मे चित्त-पीला हवेज्जा ।

तओ हं तीए चरितं चिंतयंतो अच्छामि । बिदिय-दिवसे य ततो पुव्व-सूरे चेडियाओ आगंतूणं ममं कद-वंदणाओ भणंति— देव ! **रयणवदी** विन्नवेइ, विसज्जेह किर अज्जदुहिदरं **मयूरसेणं**, सह मया आसमपदुज्जाणे नाग-महिमं काउं गच्छतु त्ति । ततो विसज्जिता गता सिबियारूढा सपरियणा। आगताओ य **रयणपदि**-विसज्जिताओ नाडइज्जाओ मम समीवं । ताहिं मे कदो चिरं विणोदो । पूयेदुं च विसज्जिताओ मे । ततो अहमवि दियसं पउर-परिभोगो(?ग)मतिवाहेदुं पच्छावरण्ह-काले सावियं-परिसूसिते अणिंदे सुहासण-वर-गतो सहसा कुसारणा-सद्दं सुणामि । दूरतोसारित-जणवाद य पवर-करि-तुरय-रहवर-कारणुवाददाणुयाता(?) महता कन्नाजण-संपरिवुडा सिविय-गता **मयूरसेणाए** पासगताए पवियमाणी साति-जवलावभासिता इव चित्ता चित्त-दट्ठव्वरूवा, पवर य पीत-पट्ट-परिधाणा किमिराग-खोम-वर-संवुड-सरीरा मरगत-मणि-किरणंकुरा भिंगंग-मयूरकंठ-सरि[स]वन्नावभासिता पीत-लोहितेंदायुध-वलगवच्छिदा इव जलद-माला सितमसितरत्नकंतायत-मुद्द-लोयणा भिवन्न(?)-वर-कमल-मालिता मरगत-जल-वाहिणी व्व महाणदी **जउणा**, पीणच्छणंजघणकारणमितिभं(?) पुरकार-तणुमज्झा उट्ट(?) महासरिस-विउल-विग्गहा इव लोगनाली सुपसत्थ-कर-चरण-ऊरुजवलावसोभिता सव्व-लक्खण-विसिट्ठा धरिद-धवलातपत्ता संचारित-चारु-चामर-जवला अवसारित-

वच्छकं चुआ इसि णियय-मज्झे जोव्वण-सिरि ममं दंसयंती नागजन्नयाणीणं(?दं) देवदासेसं मम कज्जे परिवारयंती दूरतो परिसंवित-परियाणिया पियाए सह संपत्ता **रयणवदी**, ममत्थेण य पडिदुवार-देसं मम कय-विणय-कम्मा सिरेण।

तओ **मयूरसेणं** भणइ— सहि ! उदर, मि(?इ)दाणिं इमं ति(? ते) नियय-भवणं ति ।

एवं भणिदुं अवदिन्नं सा वि वत्त पियाते सिवियातो पुणरवि य तीए कयं मम विणय-कम्मो, भणति मम मुहावलोगणा— हला पियसहि ! परिस्समसु ममं, को जाणइ केवचिरेण पुणो दीसिहिसि, दुल्लहं खु इह इदाणिं तुह परायत्ताए दंसणं भविस्सति । एव भणंती मम दिसाओ परियत्ताए समालिंगिता पियाए, सा वि मम सव्व-दिसुहीट्ठिता, तं गाढं आलिंगणं ततो खमं सन्नेहि एसा अहमेतं तुमं ति काउं आलिंगिया मे तीय मुक्कमेत्ता उवगदा ममं **मयूरसेणा**, मया वि य पिय उक्कंठितो हं तुमं पि वेल(?) गाढं परिस्सता मे। संनिदा य मे रय[ण]वदी अच्छीसु एसो अहमेतं तुमं ति आलिंगिदा मि। सा य मे पुणो पुणो सावलोगा सन्नेमाणी व ममं [?म]दणाउरेसु अच्छिच्छोरेसु सिवियाए आरुहिऊणं गया स-भवणं । अहमवि पिया-सहिओ जहा-सुहं अभिरमामि ।

अन्नता य ममं पमदवणमंतविरहे **पियदत्तो** भणइ— अज्जउत्त ! जाव भिक्खं देध, जइ मे तुह पादसेवा विफला भवति ततो विवन्नो हं । एस परमत्थो । ततो मया सावेगेण भणियं— वयंस ! न भेतव्वं ति, कतो ते भयं समुप्पन्नं ति ।

सो विणओवगदो भणइ— सुणह सामि ! मया पुव्वि ण कहिदं इदाणिं कधयामि ते । अहं **मित्तसेण**-सुतो **पियदत्तो** नाम । अम्हे य कुलोगालीए चेव इमस्स रायकुलस्स पच्चयत्थाणं कज्जं, कारणेसु विसेसेण पुण मया बहूसु कारणेसु इमस्स रन्नो पच्चयो उप्पादितो । अवि य, रमंतो त्ति परिच्छिऊण अहं एतेण कन्नंतेउर-रक्खपालो निउत्तो । अणुण्णायं च मम [म]हादोवारिअत्तणं सव्वासिं वि ले(?वे)लासु य अणिवारित-प्पवेसो उप्पन्न-पच्चओ कन्नापुरं रक्खामि । एवं वच्चंते काले जप्पभिदिं तुब्भे इहागदा तप्पभिदि मे **रयणी(ण)वदी** अतीव ममं दाण-माण-सक्कार-परिग्गहियं करेइ।

अन्नदा य ममं **कणगलता**-सहिता विरहे भणइ— **पियदत्त**, वयंस!

देहि मे एक्कं हिदइच्छियं वरं जं अहं मग्गामि ।

सा य मया सावेगेण भणिया— अज्जदुहितरो ! मा मं एवं आणवेह। अहं वो दासो । तुब्भे चेव वरप्पदाणे गरुहाओ, नारहामि अहं तुह वरदाणे त्ति ।

ततो **कणगलताए** भणियं— **पियदम(?त्त)** ! चत्तो(?धन्नो) सि तुमं जस्स अज्जदुहिता सयं वरदत्थिणी । तं देह से हिय-इच्छियं वरं ति।

मया भणियं— असमत्थो हं तीए वरं दाउं ति ।

कणगलताए भणियं— जस्स वि सि वरस्स समत्थो, तं देहि ति। मा एदं पडियाइक्खहेति ।

तओ मया अइभारक्कंतेण जहा-समत्थे वरे मग्गिदे अइ रभसेण भणितं— वरदाणारुहा अज्जदुहिता चेव, नाहं वरदाणारुहो । तह वि मे जत्थ वाहुप्पवारो(?) अत्थि तं मग्गदु मे से(?अ)ज्जदुहिता ।

तीए य सयमेव भणियं— भणाहि दाणि तिन्नि वेले, जहा, जं वरं मग्गदि **रदनिवदी(रयणवदी)** जत्थ य मम सत्ती अत्थि सो मया जी[वि]तमवि मोत्तुं दिन्नो ।

ततो मया अविदित-परमत्थेण तहेव दिन्नं ति वयणं जहा देमि जहासत्तीए वरं ति, मग्गह सिग्घं ति ।

ततो **रयणवदीए** भणियं— जइ वरदोऽसि ततो एवं ताव नियय-कक्खागतं विकोसीकरह खग्गं ।

तओ मया तीए वयणेण अदसिकुसुम-पगासं विकोसीकदं खग्गं, तं जं दंसणमेत्तेण वि मण्णे रिवु-जीवहरं, किमंग पुण पहारेण ति । तं च कड्ढिदुं संविंभितो भणामि— भणह किमिदाणि एदेण कीरदु ?

ततो **रयणवदी** सयमेव संगहित-वाम-हत्थगे सहत्था अवणामिदुत्ति-मंगाइं नियय-गीवं धरेदूणं भणति– **पियदत्त** ! पच्छ(?एत्थ) मे [?उ]वरि एदेण खग्गेणं एगप्पहारेणं दक्खत्ताए सिरं पाडेहि मे, एत्थ ते अत्थि सामत्थं।

एदं च वयणं सोऊण मया भीतेण ऊक्कमित्त(?त्तं) पिव णियय-जीवियं लक्खितं । पवेवितो य मि भएण थराथरायमाण-गत्तो । पवणाहदं पिव कदलिपत्तं जहा भयवादेण पवेविदं मे हिदयं । भणिदं च मए विसन्न-हिदएण— सामिणि ! अलमेरिसेण परिहासेणं, जीवो हं मा मे हसं(?स) ति।

ततो **रयणवदी** सयमेव भणइ— पिदु-जीविदेणं पाएसु सुकदेणं एयं सवामि, जहा नत्थि एत्थ परिहासो । निव्विन्ना हं एरिसेण जीवितव्वएणं । अवस्सं मे मरिदव्वं । तुमे जइ सव्वं(?च्चं) दिन्नं [?वरं] तं पहर वीसत्थो, छिंदामि(? छिंदसि) मे एक्क-पहरेण सिरं ति ।

मया भणियं— जइ वि दिन्नं ति सव्वं(?च्चं) तह वि न [प]वहंति मे तुह उवरि पहरिउं करा । तुब्भं च सिरे छिन्ने मम पुण कत्तो जीविदयव्वयं ? अत्थि णणु णियय-सिरं पि मे छिन्नं चेव । तं अलमेदेणं । णाहमेरिसं ववसामि । नत्थि मे अत्तणो सिरच्छेदे मति त्ति ।

तीए भणियं—जइ मे तुमं न छिंदसि सिरं ततो हं सयमेव निय-सिरं छिंदामि । तह तुह तत्तियं(?) चेव ।

एवं सा सव्वायरेण सिरच्छेदं चोदेति । **कणगलता** य अतीव तम्मि समए विवन्न-वयणा लक्खीयइ । तओ ठितं मे हिदए नीसंसयं [४६]वुदायधादं(?) एदं कारणं भवति । तओ मया पणएण ससंभमं भणिदा— सामिणीओ ! दे ताव एदं सिरच्छेद-कारणं दुक्खं च मम निवेदेह, जेण हिदय-गदेणं इमं अति-दइदं सव्व-जण-मणच्छण-भूतं अत्ताणं अकाले परिच्चयह ।

तीए भणियं— किं तुह तेण निवेदितेण, जो सि असमत्थो तस्स मोयणा(?णे) ?

मया भणियं— सव्वं ताव अहं असमत्थो तह वि तुमं मरंतीए स्त्रो पासातो ममं पि जीविदं नत्थि । एदेण कारणेणं नियय-मरण-भीदो अवस्स [४७]पयादो(?यदा)मि दुक्ख-मोयणे । असमत्थो वा दुक्ख-मोयणस्स अन्नं किंचि उवायं काहामि ।

तीए भणियं— किं तुह तेण एवं, ततो कहेमि जो एस **वेसमण-सेट्ठिणो** जइ मे तुमं न छिंदसि सिरं । ततो हं सयमेव निअया(?नियय) सिरं **छिंदामि तह** वि तुह तत्तिअं(?) चेव ।

एवं सा सव्वायरेण सिरच्छेदं चोदेति । **कणगलता** य अतीव तम्मि सममात्ता(?संमता) । एदेण मे अवहिदं हिदयं। ततो जइ मे कह वि तं पच्छन्नं इहाणेदुं सक्केमि ततो मे अत्थि जीवितं, तस्स वा असमागदे पत्तिय अहमवि णत्थि । एस चेव केण-इ सत्थेण सयमेव अत्तणो सिरं पाडेमि ।

मया भणिया— कतो ते पुणो सत्थं हत्थ-पहमुवेहिति ?

सा भणति— अत्थस्स असति किंचि मम वि ण होहिति, विसस्स वा असति रज्जूए अत्ताणं विवाडेहामि । एस मे निच्छओ ।

तओ तिं बहुप्पगारं एव भणंतीं अवमन्निऊण उट्ठिओ हं । ततो निग्गंतूण कन्नापुराओ दुवारदेसमित्तो निसन्नो अच्छामि । चिंतेमि य विसम-संकड-गतो— अहो ! दुक्खं कन्नापुर-रक्खणं काउं ।

कणगलता य आगंतूणं ममं भणइ— **पियदत्त** ! न याणामि किं णाए विरोप्पाए भत्तमवि परिचत्तं । संपदं खु एसा अत्ताणं रज्जुणा विवाडेमि(?ति) । अतीव अणेगग्गा(?) लक्खीयति ।

ततो मया भणिया **कणगलता**- सुयणु ! साणुरक्खणं एयं करेज्जामि, जह हु एसा अत्ताणं न विणासेइ ।

एव चिरं तीय सहसा आलावं धरेंतेण मे चिंतितं-मा णाम एदम्मि चेव समए सा साहसं करेज्जा । एवं चिंतयंतो सरभसं उट्ठेदूणं सवेगे पविट्ठो कन्नाय अच्छणयं । पेच्छामि य नागदंतए उत्तरिज्जेण कन्नं कत-वेहाणसं थोवावसेस-जीवितं गयदंत-समक्खित्तं वियर्यंती य पलावमाणि **कणयलता**, सएण य समया ससंभमुद्धाइतेण अहो हतो हं मि(?इ)ति बेंतेणं केणइ अवन्नादामा णियता मे पासयातो ठविया य सयण-तले कहिं चि सजलकण-तालियंट-मारुत-धूत-देहा आसासिता, भणदि य लद्ध-चेता- केवच्चिरं मे रक्खीयध ?

ततो मया भीदेण भणिया— किं मे सुती(?) णत्थि देस(?) अहं एदं कारणं रन्नो निवेदेमि ।

तीए भणियं— **पियदत्त** ! परिचत्ता हु गुरु-लज्जा । कीस न कधेसि ? तह वि मया मरियव्वयं चेव । मताए किं मम राया काहिति ?

ततो तीए एव भासिते मया चिंतितं— कट्ठं खु कतं । माराविदा **रयणवदी** । अणेगेण गुरुजण-कतं पि लज्जं मरति असंदिद्धं एसा एस निच्छओ मे(?से) । एवं चिंतयंतेण पुणो भणिया मे जाताणुकंपेण— आससदु अज्जदुहिदा । ण भे मया णिच्छि(?च्छ)दो जाणिदो । एस ते अचिरा तेण दुजातिणा सह समागमं करेमि । णिय सक्कामोच्छिन्न(?) जीवं मे सो तुब्भे। एव मया भणिय मेत्ते तक्खणं चेव संणो(?) से मुहधोवणो, पुणो य मे

भणिदा— सुयणु! कत्थ तुमे सुहमच्छंतीए मम अधम्मेण सो दिट्ठो **मयूरसेणा**-सयंवर-काले णभतलातो अवतरंतो । मया भणियं— मम जीवितक्खएण ते सो दिट्ठो। किं-पुण भणामि ममं ताव जं होहिति विदंभावेंति(?) ताव जाव सकल्लाणयमंतस्स जहा पुव्वसेवं ताव करेमि ण य सक्कामो च्छिन्नकुढो इव जहा एक्क वाराए चेव तुह सगासं अइणेउं, कमेण पुण सव्वं करेमि । एवं भणंतेण मे धिदि कारिता मम एवं पत्तियाविता, किव(?ह) किह वि जीवितं धारेउं पयत्ता। आढत्तो य अहं तुह पादसेवं काउं, ण य वो रहस्सं भिंदामि। आढत्ता य सा सयमेव तुह ओलग्गं काउं, पुच्छति य मं दिणे दिणे किंतु मम कज्जे अज्जपुत्तं भणहि त्ति । अह मे पडिभणामि त्ति णिदो मे सो अज्ज कल्लेण अज्ज कल्ले त्ति अय भिन्नं रहस्सं ण व त्ति। विन्ना(?दिन्ना) सन्ना-हेउ ताइं मातुलिंग-फलादियाइं तुह विसज्जिताइं, तीए पयपत्ति(?) हेउं तुमं तओ मया विलेवणातो समालभावितो मणाभिलसितो य से अभिप्पाओ तुब्भेहिं मम वा किरि(?) दोसो य मया **कणगलताए** कधिदो, तीए कधिदो **रयणवदीए** । तं च सोऊण सा सुट्ठुदरं सन्नसुइ जादो(?दा) ।

पुणो य नागजत्तय-ववदेसेणं विणिग्गदा गदा य **मयूरसेणा** णुजत्तण(?) पउरएणं पडिनियत्ताय दिट्ठो य सि ताए दिट्ठो(?ट्ठे) य पावेज्जमाणे गाढतरा से मण-वेदणा जादा । अज्ज य रयणिं चेव सुत्ता ततो अज्ज निग्गहेण मे लग्गा भणइ य— **पियदत्त** ! जइ केणइ पओएण अज्जपुत्तं ण आणेसि, तओ निरासीभूदा अवस्सं अज्जेव जीवियं पयहामि । एवं तीए भासितं सोऊणं अहं दिट्ठ-पच्चया महता भय-डोलारूढो ण याणामि मूढ-हिदओ, किंपि चिंतेऊण य मे भणिया— देवि ! मा अत्ताणं विणासेहि, आणामि अज्ज पओसे पियदमं ते । तीए भणियं— जइ आणेहिसि तओ आणाहिसि जीवितं मे, अणाणेंतो वा हरिहिसि जीवितं मम। एदं च सोऊण अहं संसयारूढ-जीविदो तुह सगासमागतो हं । एत्तो देव ! महदा अय(?) तुह हत्थम्मि जीविदं ।

तं च सोऊणं मया भणियं— सोम्म ! विरुज्झइ एदं कुलयाणं जं गुरुसु अणणुन्नायाणं पासे पविसियव्वं । तं एसो परमत्थो । पिया मे **रयणवदी**। तुह विणा हं मरंतो वि एरिसयं ववसामि ति । तओ तेण य तन्नयदणेण(?) भणियं—कट्ठमिणं जायं, जायं मम तीए य अज्ज मरिदव्वयं ति। एवं भणंतस्स उक्कमंतं पिव जीविदं लक्खिदं मया । पुणो य मे सा

भणइ— देव ! कारुन्नं खु तत्थ वट्टइ । अइ बलवं अविवेयो अणंगो ज(?जे)ण सतत विणयोवयारसीला वि सा गुरुजण-चित्त-रक्खणी कुलया य खणेण महंतमवत्थंतरं णीदा । नीसंसयं खु सा अज्ज तुह अलंभे अत्तणो ममं च जीविदं खवेदि । अवि य, मा पुत्ते तं अविणीदं परिगणेहि वा सरिस-जण-संबंधोभिनिविट्ठ-जादरूवो कामो वा से अभिनिवेसो, जुत्तमेदं जं बलं पवरं पाद-सिहरं अभिलसति चंदप्पभा अणुरूवा सलाहणिज्जा पत्थणादी य।

मया भणियं— कह सा तुमं वा जाणह, जहा हं अणुरूवो ?

तेण भणियं— सामि ! मम य साविया‌ए **मयूरसेणाए** अ(?तु)ह संतिओ कुल-वंस-पभवो **रयणवदी**ए कधिदो । तं च सो परमत्थो । विन्नात-कुल-सीलं खु सा तुमं पत्थेइ, अणुरूवा य वो सा भारिया । कुणह पसादं **कन्नापुर**-पवेसेण देव ! जीवावेह ममं **रयणवतिं** च ।

तओ तस्स बहुं भणंतस्स दिन्नं से मया वयणं— गच्छह नाम किंतु पविसणोवायं चिंतिज्जासि ।

तेण भणियं— तुब्भे इतो नीसरिऊणं पुव्वावरण्ह-काले केणइ उवाएण **रयणवति**-संदिट्ठेण तत्थ पवेसेहामि ।

एवं मे तया पडिवन्ने कत-संकेतो अवक्कंतो । अहमवि भुत्त-भोयणो सह **मयूरसेणा**ए गालेमि दियसं, पुव्वावरण्ह-काले य ण्हादालंकित-विभूसितो य पमदवण-खडक्कियाए तरिदं विणिग्गंतूणं [४८]कतावगुंव(?ठ)णो मा मे कोई संजाणिहिति त्ति संकित-हिदयो नीसरीतो णगरीओ उत्तर-पच्छिम-दिसाभिमुहो वर-णदी-तीरेण यल्लीणो मि आसमपदुज्जाणे जिणायतणं च । तत्थ य मे पराए भत्तीए वंदिताइं चेईयाइं । चिंतितं च मे संकेत-भूमिं आगतेन मे अधम्म-ठाणे धम्मो पावितो । एवं चिंतयंतो सूरेण सह जुज्झमाणो अच्छामि । अवि य,

दइत-जण-संगमक्खण-कय-संकेतस्स ऊसुअमणस्स ।
वरिसोवमं च मन्ने कहं वि समतिच्छते दियसं ॥

णव-सुरद-लालसाणं पदोसकालाभिकंखमाणाणं ।
मदण-सर-खेदिताणं रिवु व्व कामीण आइच्चो ॥

ताव य पयणुपयावं जं च चक्कवाग-जवल-पीति-विघडंतं ।
राग-रसं दियसं चेव ण कालबाह तस्स अमरस्स व ॥

जहा रवि यस्स जाता तेय अहाणी(?) तिमिरायत्त-दिसा ।
पध मल बद्धच्छायं जायं विस नहंगणं ॥

अंतोनिरुद्ध मधुअरो णिय-मधुकर-रुत-महुर-सव्वत्ता ।
कर मुहल-कुले त मयु[?र]दलाइं आढत्ताइं परिसंजविदुं ॥

पंकयाइं दिणकर-विरह-परिकातराइं पवसंत-दयित-जण-वियोग-दूमिताइं ।

वर-जुवइ-मुहाइं पिव सरोरुहाइं मुकुलोदर-परिसंठिद-अवतीरित-सुरभि-केसरालग्ग-तणुं सुहि-वसणेसु कुलीणो बज्झति ॥

अमुक्क-पंकयं भमर-उलं, कुसुमभूताणि य णिसि-वियोगादुराइं रहचलण-ज(?जु)गाइं,

पसरंति य पवर-कलरवाइं, विच्छ पुलियाभिमुहाइं रायहंस-कुलाइ ॥

आमुच्चंति वच्छाया पाणिय महिलासु अवणा इव कामिणो

जहा महदुमा साहरंति य किरण-जालं [४९]अप्पहुयप्पतो व्व विग्गहं ।

जहा दियसयरो णिय-वास-गमणुसुएसु य विविधेसु आमुच्चंति **गंगा** णदिकूलाइं ।

[५०]विहय-संघेसु पधावियाणि य प्पूय कुसलंकिदाइं नियय-वासाभिमुहाइं वायस-कुलाइं,

सरस कीरा पुन्न पम्ह उण्ह घणीउ य अभिणव-कुलपसूदाओ, हंभारव-भरिद-दस-दिसीपधाउ तणय-हुंकार-दिन्न-कन्नाओ । गोउलंतेण पवियंभति य निसागमण-धाविताओ गो[उ]लाओ,

गेण्हंति य दीहरद्धणो खेदितो आयरिय-जणपदकुलेसु नियल-पहियजणो,

आयासेंति य दियस-चारिणो विया-पसु-पक्खि-सिरीसिवा सिवगणा य

पवियंभंति य निसागमण-हरिसिताओ य रयणिचारिणो जीवा

सावयगणा य रयणियर-कामिणं पिव निसन्नपाई व ॥

पंसुलिदिट्ठबलीयं(?) जहा अवधुणिऊणं खणेण अद्दंसणं गतो सूरो, पेलव-घण-पडल-राग-रंजित-संचस्ति-दिसाभागा वेसविलया इव खणमेत्त-

रागा उल्लसिया णहयलम्मि सहसा संझा, अग्गाहिता य देवकुलेसु वदलप्पिया पवरा य दिप्प-दीवा, चारिताणि य सुति-वयण-संपउत्ताइं सुरभि-धूवाइं, सकुसुम-वर-मल्लदाम- संपउत्ताइं, जादा य संझोवासणतप्परा य समण-माहण-गणा, काऊण य खणमेत्तम्मि दूररयारुणं व सयलं विय जियलोगं सहसा विमुक्क-धरतला य निद्धणं पिव कामुकं वेस-विलासिणी जहा गता विरागं संझा, उग्गाईऊण संझाकाल-समयंसि निद्दावसं उवगदाणि यणेसु खह-कुलाइं, हुतासणाणि य वपिं(?) दार्णि दियगणेसु हुतासण-कम्मताइं ।

ततो आलयमुवागदेसु खहकुलेसु, आयरिय-विणिव्वित्त-संझोवासणेसु, थुति-विलग्ग-मुहलेसु मुणि-गणेसु, गो-महिस-गवेल-वुहणा(?)-लग्ग वावडेसु गोव-कुलेसु, अग्गाहिदेसु वासघर-प्पदीवेसु, उदयातए(?) पित-परिरत्त-समत्त-मंडले य चामीकर-पवर-पत्त-मंडल-संकासे कुमुदाकराणं दकुद्द(?)णुद्दामकारय-तिमिर-घण-पडल-बहल-मरण-करणुज्जद-मयूहे, असदिजण-णयण-संतावकरे, रयणि-वधु-वदण-तिलग-भूदे, कमसो परिहायमाण-रागच्छाए दूरुल्लसित-कंति-पजत्त-लोगे मुह-दंसणे छेयजण-करण-विन्नास-तच्छितापंडुर-गंड-मंडिदुद्दंड-पवर-कामिणि-वदण-मंडलालोअ-सस्सिरीय-सरिस-मंडले य उदिते रयणियरे पंसुलिजण-णयण-कडक्खयक्खित्त-पलित्त-डज्झंत-लक्खित-मयगंध-बहल-धूमुग्गमे मियंको(?के), तओ रयणियर- किरणप्पभाए पहसितेसु व पासादभवण-वर-हम्मियग्गेसु पव्वतेसु य पवर- कामिणि-कम्मंतेसु, णेहुवलणुमद्द(?)-चलणावर-करणाणुलेवण-सुरभि-पघंसण-धूवण-मयणंजण-रयण-णयण-कर-चरणा वर-सुस्सूस-केसधूवण-कुसुम-सग-कंचणभूय-घण- बंधण-जणण-कयग्गहण-कट्टण-समत्थ-वीसत्थ-दइतजण-संगमाणुरूव-वंसं जमण-सुरभि-कुसुमाल-सुरत-वायाम-सत्थ-वत्थ(?) गेण्हह(?) चंदण-कप्पूर-लवलि-लवंगागरु-कप्पूर-कक्कोल-जाइफल-सुरभि-फलवट्टि-सुंदर-वर-गंधचुन्न-वण्णय-सुगंध-वर-वासग-गहण-केयूर-कडय-कुंडल-मणि-रयण-हार-मेहला-कलाव-रसण-दाम-खिंखिणि-वामोरुजाल-मणि-रयण-घंटिया-भरण-करण-सयज्झ(?)-रयण-काम-संधुक्कण-तप्परासु कामिणीसु दूत-संपेसण-करणमुज्जतासु पंसुलीसु चिरकाल-विलंबिणीसु य तासु ईसाए सकंपितासु सयमेव संकेत-पधावितासु पुरिस-वेसेण अभिसारियासु कामिणिजणोवदिण्ण-पवरासण-विसोभितासु वेसत्थ-विलासिणीसु णाइ पइरित्ततणं संचारिसु रत्थासु— एवं संपत्ते फुड-णक्खत्त-ताराकिरणुज्जले पदोसे ममत्थ एगागिणो

अच्छमाणस्स आगतो दोवारिय **पियदत्तो** । सो मे कतप्पणामो विणएण भणइ—सामि ! मया सहीणं पइरेक्खतणं पेक्खंतेणं एवच्चिरं अच्छियं, मो(?मा) मे एवं अवराधं गेण्हिसि। मया भणिओ— भद्दमुह ! णत्थि ते अवराधो । तओ तेण भणियं— सामि! अतीव ते **रयणपदी** य(?अ)मत-पाण-तण्हाइता इव जहा सुरवधू मग्गं उदेक्खंतेण पवती(?) ससहीजणा अच्छइ । अवि य—

उक्कंठावस-पसरित-अंसुजल-पालित-पंडुर-कवोला ।
सा ते सुभय णियच्छति गदि-मग्गं मुद्धहरिणच्छी ॥

सा ते सक्कस्स व सयी पावउ वच्छत्थलं ति ।

ततो तेण सह संपट्ठिओ हं पुरवरीए रायमग्गं रयणीए वि जण-बहुलताए अविरहिद-संववहारं, कत्थइ जणवद-बहुलं कत्थइ पइरिक्क-विसरिस-च्छायं, कत्थइ ईसर-भवणोदरेसु गंधव्व-णिग्घोसो विविध-घर-मंदरोदरेसु देवकुलेसु य पवर-सभा-रयणपासाद-गिरि-कंदरोदरेसु य छेयजण-करण-तारिद आलिंग-मुत्तिग-ए(?प)णव-दद्दर-पडुपडह-लडह- परिहित-पडं व संगीत-सद्द-पसरंत-कंत-तल-ताल-कंसतालय-वंसज-रवायुत्त वित्त संजत्त गंधव्व-कव्व-णड-णट्ट-गीत-परितुट्ठ महमुकुहि(?ट्ठि)सद्द-जणबोल-कलकला-बहुलं, कत्थइ पविरइद-विविध-आपण-पाण-परिलग्ग- सग्गसम-[५१]सारवेणु-वीणाणुवत्ति गायंत-कंत-रणरणावि(?दि)संकुलं, कत्थइ बहु-विइत्त-वर-खज्ज-भोज्ज-दिज्जंत-सज्जवोजज्जलाकुलं वीवाह-करण-मुइद-जण-णयण-मणहरं, कत्थइ मधु-मेत्तेण [५३]मवुत्ता(?) पियदमेणं सविलासं [५३]चुंबिज्जदि रमणी-मुहेण दिन्न-गंडूसा, कत्थइ कुविय-पसाइणालग्ग-विग्गहो रभस-कयग्गहिदाकड्ढिद-उन्नामित-वयणाए विलोल-णयणाए दइताए अधरं वारकमलं पिव मधुयरो जहा पियति ददिओ(?) से लसित-कयग्ग-गहिदा सहि-मज्झातो पिएण मणरमणी(?), कत्थइ णिज्जइ अंतो-सइणेज्जं सुरद-सहिएण, कत्थइ पिय-पणयाहत-कोव-समुप्पन्न-हिदय-मन्नुक्कारो वंदि(?) सहिजण-पुरतो पेक्खामि णिसंसितं कंतं दूतिकाइ पडिच्छइ, कत्थइ पइरिक्क-जणिय-संकेतो, कत्थइ काइ पियं विय मोरिव्वपणं मनुक्कं वा, कत्थइ सुगंध-संगदत्तय(?)-संगहिद-वूडकडवंवादुपडुतय(?) परिधाणामूइद-कलवलय-सद्दाला निहुदुस्सास-पकंपित- पीण-पयोधर-फुडंत-उरदेसा पीवर-जहणुव्वाहण-खेतविता वुन्न-हरिणच्छी-वुप्पंकणिद(?)-मुहला नेउर-संवरिद-निहुत-संचारा

विगत-भया काइ पिया पियस्स अभिसारया जादि, कत्थइ ललिद-कयग्गहण-वाउला सइर-मुक्क- सिक्कारा रामिज्जइ पइरिक्के पिएण अभिसारिया धणियं, कत्थइ गाढालिंगण- परिचुंबण-रमणकरण-संजणिओ वेसविलयाण सुव्वइ सणिद-मुहा डक्कार-सद्दो, कत्थइ हय-गय-रह-पवर-पहकर-निवहाण संचरंताणं वार-समाणत्ताणं सद्दो घण-णिसन्नो गुयत्ति(?) ।

इति एवमादि कामि-कम्मत्ते करण-जत्ते पदोसे **पियदत्त**-सहिओ गदो हं रायभवण-पडिदुवार-देसं जण-संपात-विरहियं । तत्थ तेण ठविओ हं, कय-संकेताओ य आगदाओ तत्थ चेडियाओ अट्ठ जणीओ, ताहि य मे उवणीताइं दो चारियाणुरूवाइं कासायवत्थाइं । ताहि य परिहाविओ हं **पियदत्तेणं** कारावितो य तेण नियय-वेसग्गहणं । ततो हं महादोवारिय-वेसधारी खग्गपाणि ग्गहण-वेत्तलता-[५४]डक्करो तासु चेडीसु पुरतो असंखेतासु देसितपहो असंकित-गइ-गमण-पयारो **पियदत्त**-पयोग-सारक्खिता[?त]पत्तो कन्नंतेउरं आरुभिदूण य पासाद-दुवार-देसे ठितो हं, कओ **पियदत्तो** ममं भणइ— पविसध दाणिं तुब्भे, अहं पुण भेयणुबंधं सेवयामि । एवं वोत्तूण तेणेव पहेण पडिनियत्तो । पडिगदे य **पियदत्तेण** उवणीयाइं मे वत्थालंकार-विलेवणाइं चेडीहिं ।

ततो मुक्क-कासाय-वत्थो गहिद-सिद-खोम-णिवसणो पच्छा विधीए पसाधितो हं **कणगलताए** । ततो य अन्नमय-विहित-रुइर-वेसो सुरभि-मल्लदामालंकित-सरीरो **कणगलता**-देसित-पहो पविट्ठो हं **रयणवदि**-संतियं वासघरं । दिट्ठा य मया तत्थ सहिजण-संपरिवुडा सखिखिणीय-खोम-परिधाणा वत्थालंकार-विभूसिता पच्चक्खा तविणी विव लज्जा **रयणपदी** विव देवता । सा य ममं दूट्ठूणं पढम-समागम-सद्द-साहित-हिदया अब्भुट्ठेऊणं आसणाओ कत-विणय-कम्मा सलज्जा ठिया अहोमुही । तओ सा मया तक्कालोववन्न-करणेज्ज-विसारये(?ए)णं चदुर-मधुर-वयण-मणहरेहिं वयणेहिं अभिवीसासेऊणं पवर-करिकरोवमाहिं भुयाहिं आलिहि(?लिंगि)दा मया दिव्व-रयण-पडिपूरितो निधी आकारिसेऊण आरोविता मे सयणेज्जं गंधव्वपयोग-गीतोहिता(?) सणीयं मोयाविता मे, अह सन्नवरं(?) च **कणगलताए** समधिट्ठियं दुवारं । विणिग्गतो मे पासाओ अणागतं विय मया सह कत-केलि-परिहासो सहीजणो सो तधेव सीसंभमुहं(?) संकहासु य स चदुकम्मासु चउर-महुर-वयण-संपादण-कुसलं(?ल)ताए य वेसिय-पुव्वएण य उवयारेणं

अज्जिता मे सुरसं उप्पाडिया मे भ(?भा)रिया-गुण-सद्देहिं । अवि य,

सहरिस-गाढालिंगण-मुक्क-सिक्कार-विज्जंत-सुरभि-महुरस-सरस-चुंबणु-व्वेवत्ताव(?)-अधरोट्ठीय तीए सहिओ सुरवधु-सहिओ इव सुहं अभिरमामि । तीय दु समागमे मम सुरलोग-गओ इव आसि अंतरप्पा । एवं रइ-विमद्द-सुहं अभिरमंतस्स सुक्खेण समतिच्छिया रयणी । रइ-रभसक्खितो य दिट्ठ-पंणट्ठं पिव अइ संखित्तं रयणिं मन्नामि । ताव य तविय-सयणेज्ज-जलित-हुतवह- फुलिंग-पिंगल(?) जयसुमणामो(?) त(?) कोरिंट-कुसुम-सम, रुहिर-इंदगोवग-रत्तुप्पल-कमल-रोतागकुसुम- पारावतणयण-हिंगुल-सरिस, रत्तचंदन-गेरुय-गुंजद्ध-राय-किंसुय-सुअवयण- मणोसिला-भंग-भंडीर-बंधुजीवग-कुसुमरासि-संघात-सप्पभो कहं चि किच्छहि दयिद-जण-संगदाणं हिदय-दालणं व कुणमाणो सूरस्स अग्गदूतो पुव्वेण समुग्गओ अरुणो, जादं च अरुणप्पभा-[५५]समूह(?) दंडंमदं(?) मदच्छायं उद्धचक्कं पिव परिभोगो कयग्गह-रइरभसालिंगण-विउडिताभरण-मंडण-वलित-विसेसयं पिव पिया-वयणं किरण-मलित-विगत-सोभं नहंगणं तह चेव विउल-पायड-वियड-समवंगत्त-भामिउ अत्थउ सामिणि-भग्ग-पणय-रसं पि कामि-वदणं जहा पच्चूस-सिहा-संवरिय-मयूह-जालं गलित-कंति-सोभं न सोभते ससि-बिंबं रोमंदूण वरय णिव वधुं पभूद-जल-सोय-सद्धालुओ इव आढत्तो वरिदुं अवर [५६]समुह द्रद्रहं(?) विमल-चंदो, रयणी-विरय-नियर-रसण-रमणिज्जित-पित(?) आयड्ढंती सयल-नक्खत्त-वलय-मेहला-कलावं दिणयर-गुरुवेज्ज(?ज्जे)ण भीता इव पंसुली जहा विपलाइदुं पयत्ता । आढत्ता [५७]समाइदुं अरुणसिहा-परिपेलवप्पभा पवर-वासघर-प्पदीवा । अवरोदधि-विणिग्गदो पच्चूसकाल-सीतल-तुसार- सम्मीतो भवण-गवक्खंतरेसु विविध-कुसुम-वासितो पिय-परिमणो(?लो) सोद-गंध-सुभगो पवादो वादो, वीयति व पवर-वासघर-जालंतरासरितो रइ-गुण-परिभोग-खेद-पेलवं कामिजणं, जाता य मलिद-[५८]कुवलय-पल्हत्थ-चसय-मणि-कणग-भायण-पवर-तारावरे य विणिट्ठ वलवारिभुवय(?) विवलात कुसुम-सोभा-दुमातो व वासघरोदरागाढ[५९]-सिणेहाबद्धं व अरुण-[६०]समए वियोग-भीदं पियजण-हिदयंतरेसु विसरेति पेम्मं दिण-विरहागमण-कुं तप्पहार-घण-[६१]घातोभालित(?) निच्छुब्भंतो इव दीवच्छलेण [६२]पावड्ढितो कामो, पिय-विरह-कायराओ य दियस-विओगादुराओ कामिणीओ किह किह वि जीवितं पिव परिचयंती पियदमकडे अवितण्ह-माणसाओ य [६३]दिव्वय-रभस-रति-रयण-रसिदंगोलग्ग[६४]-वेलवाओ दर-

पल्हत्थ-णियंसण-वामकरुक्करिय-गलित-रसणो(?णाओ) दाम-कंचि-कलाव-कलवलय-चल-मेहलाकुलाओ, एगं पसर-पल्हत्थ-कणग-केसकलावो दाहिण-हत्थेण य मलिण-विब्भायमाण दीव [६५]सुहिंतहअण(?)-संपलग्गाओ, परिमलित-कुसुम-वर-वसणाभरणाओ, गलियंसु वयवलककज्जज्जाम(?)वसेण ललित-वग्गंत-[६६]थणभराओ, दयितापीत-संकुइद-राग-समुप्पसित-मधुकर-पीण-पीवर-वर-पाडलाधरोट्ठीओ, दइत-करुविन्न-कररुह-अंस-कडिखंड-मंडित-तणूयाओ, पिय-परिभोग-जणित-जागरण-खेदालस-ललित-लोयणाओ, रसणादामेसु य घण-घटिज्जमाणत(?)-वयणा मणि(?ण)हरच्छि-वायराओ(?), सविसेस-ललिद- संजात-सोभा-सिरि-समुदयोववेदाओ पच्चूसे परिमुक्क-निव्ववणाओ वियन्ननयं(?) पिव पियदम-सहितेसु पडिनिविट्ठाओ कामिणीओ निज्झायंति सुय(?) दीवप्पभाए जहणसु स्त्रेसु(?) दइद-निक्खद-णक्ख-पदं दीवस्स दंसियं पिव पच्चूसे पियदमाभिसज्झा वरदं सरभसमुट्ठिताण य सयणिज्जितो(?) दइत-वियोगादुरा गलिद-कुसुम-सुतापा परुन्ना इव धम्मे व्व भारजोसिताणं परियट्टित-वत्थभूसणालिंगित-वलित-हिय(?)अवयक्कण(?)-खलित-पडिनियत्ताहिं अवणीत-सोभिताणुरागाहिं अवसऊण-पडिप्पादणत्थं पिव पुणो वि भुंजिज्जदि पिय-दाम-पच्चूसाणिल-विच्छलिताणि य परिमल-गंधामोद-[६७]णदिएवूढाइ(?) वर-कामिणि-वासघराइं, पविकासिताणि य अरुणमित्त-किरणाहदाइं सुरभि-पंकय-वणाइं, मउलंति य सहि-विरह-कातराइं कुमुद-संडाइं, तूसंति य दिणागमण-समूसुताइं चक्काग-मिहुणाइं, उग्गायंति गो-सग्ग-काल-वलिता दयिता-जण-परिमणा(?ला)मोद-[६८]संदीविदुक्कंव(?ठ)-माणसा पावासुग-[६९]पुरिसा, पवियंवितो(?) वु(?खु)भित-सागर-जलधर-णिणाद-गंभीर-धीर-[७०]ववि(?)- पाभातुग-पडह-संख-सद्दो, उग्गाइऊण य संगी-मणुव(?) दीयते । ततो आढत्ता पाभातुगाइं पढम-पाढगा, पयत्ताणि य देवकुलेसु गोसग्गे य संगीत-[७१]सयाइं [७२]पिट्ठियंभित्तो(?) य पसरंत दति(?) वर-वसभ-ढेकित-सद्द [७३]समीसंतो तंरणय(?)-मंदीर-घोसो, नागराण य जलद-निस्सणो, अल्लीणा य पवर-पंकज-वणेसु तरिदं रायहंसा, वुब्भति य सरुत्संगे(?) कामिणी-मुह-कमल-वणं, ऊससंति य कामिजण-रमण-निद्दउपीलिताइं पज्झत्त-तलवरिताइं तक्खण-विमुत्ताइं भोगिजण-तरुण-सयणिज्जाइं, पसरति पच्चूस-समए केसिय-गंधव्व-सद्द-सम्मीसिओ धूवण-णियमणिवेदण-संज्झावास-थुइ-सद्द-संकुलो निग्घोसो ।

अहमवि य **रयणपदि**-रइ-रभस-गाढालिंगण-परिमलाणुवासित-

सुरभि-सरीरो रति-वायाम-वसेण अलद्ध-निद्दा-पयोयणो विमुक्क-सयणिज्जो कय-वयण-पक्खालणो सुकय-सव्वावस्सओ गहिद-णयणंणोदंस(?)-मुहवासगो वि(?ठि)ओ तत्थेव सह **रयणवतीए** । **कणगलदाए** उवणीदा विउला पसाधण-विही । तओ सा वि सहिजणेण पसाधिता जाया विउव्विताभरण-भासरा मेरु-कंदरा इव कप्पदुमाभरण-गंभीर-सस्सिरीय-रूवा ।

ताव य कमलब्भंतर-रोधित-पडिमुक्क-मधुकर-समूहो पुव्वदिसा-जणदतिए(?)मुहतिलओ उदितो तम-सोसणो सूरो । नवरं य मम पवेस-कारण-चिंताए विगद-सरीरो सव्वरत्तिं जग्गिऊणं कहिं चि पच्छिम-जाम-लद्ध-निद्दो सूरुग्गमकाल-पडिबुद्धो तरितं तत्थागओ **पियदत्तो** । सो मम पिया-सहिदस्स कत-विणयकम्मो भणदि— अकज्जं कयं मे जं अज्ज ण निक्क(?क्का)लितो अज्जपुत्तो, पमादो मे एस निद्दा-वसयस्स ।

ततो **रयणावदी**ए हसिऊणं भणियं— मम पुत्तेसु तुमं एवं चिरं सुत्तो, तं अच्छ इदाणि वीसत्थो । कओ अज्जपुत्तस्स अज्ज निक्कालो ? ति । एवं वोत्तूण पिय-समागम-सुमुहाए(?) **रयणवदीए** महरिहेसु वत्थाभरणेसु खायण-पियण-समालभणेसु य समुहवासो पूइतो **पियदत्तो**, तत्थेव निसन्नो मम **रयणवदि**-सहियं परम-विभूतिं पेच्छमाणो न तिप्पइ, भणदि य- अहो ! रूवाणुलक्खणा रूवा य दोण्ह वि जणाण समागम-संपत्ती । जइ दुन्नि निव्वाहिदुं तीरंति सिद्धिं वा वच्चंति ति ।

ततो **कणगलता**ए भणिओ **पियदत्तो**— अरे ! अरे ! लक्खण-पाठय! लक्खणाइं जाणासि, लक्खण-फल-सिद्धिं पुण कीस ण जाणसि ? किं एसा संपत्ती संता(?) होएज्ज ण व ? त्ति ।

पियदत्तेण भणियं– एस नेमित्तिआण गदि-विसओ, जं सा सता व त्ति । किं-पुण एत्तियं जाणामि न हु एरिसेसु लक्खणेसु दे विपदाइं परदार-गामियाइं भवंति । पढम सुतीए ॐजय वियोग लकर(?क्ख)णं जं होह त्ति। तं न याणामि पुण जावज्जीवाए एरिसेसु लक्खणेसु महिलाओ विदिअ-पुरिसं ॐअइसामेति (?) ।

एत्थंतरे मया भणिओ **पियदत्तो**— सोम ! इच्छामि तुह सगासे पुरिसित्थि-लक्खणाइं संखेवेणं निसामेदुं ।

तेण भणियं— देव ! का सत्ती मम तुह पुरतो लक्खण-संखेवं

वोत्तुं? तह वि कागधट्टत्तणेणं तुब्भं आणवेंताणं अवस्स जहा-सत्तीए भाणियव्वं । सुणह,

खलु आदित एव पुरिसित्थीणं कुसला देहच्छायं सत्तमाउं च परिच्छंति, ताणि परिच्छिऊणं माणुस्साणं कर-चरण-सिर-सरीराइं । तत्थ करतलाइं ताव संखेवेण सुणह । सव्वेसिं पि इत्थी-पुरिसाणं जाओ पयति-रत्ताओ संधं(?) वारुणप्पभाओ सुहुमाओ सिद्धाओ गंभीराओ रुइप्पभाय(?)-वन्नाओ करतलेसु लेहाओ । एवंगुणजुत्ताओ वि य जस्स मणिबंधे तिन्नि होइ लेहाओ दुहाभागो ण सो होइ इत्थी पुरिसो वि वा । परिच्छिन्नासु य करतल-लेहासु कओ पुन्नाकेतो(?) धणं पढमा कुल-लेहा दुगं [७६]सुद्धमणुवत्त त्ति, बिदिया धणलेहा त्ति, आउलेहा [७७]ततिया । तत्थ अंगुट्ठ(ट्ठु)ग्गम-संदिहाए[७८] लेहाए अच्छिन्नाए अभिन्नाए य सयलं विउलं च कुलं आदिसइ । ताए च्चिय विच्छिन्नाए विभिन्नाए हीणं खंडियं च कुलं समादिस्सइ[७९] । उच्चाइ तीए उच्च कुलं, नीयाए नीयं ति। तीए चेव दीहाए दीहं, हुसा(?हस्सा)ए हस्समिति । धणलेहाए य हत्थे अभिन्नाए य हीणं लभति पिउ-दव्वं सव्व य पि(?अ)च्छिन्ना-णिच्छिदिदाउ धणं से । ततियाए अच्छिन्नाए दीहादुं(?उं) आदिसंति कुलसाउ(?कुसला) विच्छिन्ना हीण य हीणाओ तेण जाणंति । तत्थइ जइ सा आउलेहा अंगुट्ठस्स पदेसिणीए य अंतरेणं विणिग्गदा होइ तदा काले तदाणुरूवं उक्कोसमाउं निद्दिसेज्ज । जइ मज्झ-पदेसेसु अ च्छिन्ना होइ जत्तियाए च्छेदा तत्ताइं मच्चूपदा य आदिस्संति । मज्झिमंगुलि-पदेसिणी-संतर-विणिग्गदाए व(?य) दुब्भाग(?) हीणं आउ वदंति । मज्झिमाणमिगंतरगदाए व(?य) दुब्भागमाउं आदिसेज्ज । एदेसिं चेव दोण्ह विभागाणं हीणाधियताए हीणाधियं वासमादिसेज्ज । जा पुण मणिबंधादो उड्ढंकरगामिणी सयल-लेहा सा यण(?) रयण-धण-कणग-कारिता लोगपुज्जा य । स च्चिय जइ अंगुट्ठं समेति तो कुणइ नरवदि-पवरं । अह य पदेसिणिं पत्ता तह वि निवो होति विक्खातो। अहवा मणिबंधातो पदेसिणिं जस्स संठिया लेहा सो होइ नरवरिंदो नरवति-तुल्लो व आयरिओ । मज्झ य मत्तायणवो(?) अहवा सेणावदी धुवं होइ । सिट्ठि कणिट्ठियाए अड्ढेति अन्नं व धणमंत सुहिदं व सुभगं वा स च्चिय काणंगुलीओनिद[८०](?) लेहा एदाओ अवितहाओ जइ अच्छिन्नाओ मंसलाओ भवंति। विसमसीलउ हीणासु हीण जा अवि य तराहिं अविकुला दुयंगुट्ठदरम्मि जव्वो(?) सव्वतो जस्स [८१]दीसई सुणिद्धो सो विज्जं च धणं पि य लभति । भन्नति य दियसजातो(?) तेण भगेणं तु सुभगभागी य सव्वे

ते । [८२]संझाए जाओ छित्तेण वि दिणम्मि, जह विरहिदे अच्छिन्नलेहे य अंगुट्ठे रत्तिजाओ सो आदिस्सति । अंगुट्ठोदरे वि जस्स जत्तियाओ लेहाओ तासु [८३]भादिभंडाइं आदिस्संति । [८४]अंगुट्ठ-पट्ठि-पव्वस्स पदेस-लीहासु पुत्तभंडाइं । जस्स य अपव्वेसु पव्वा संदीसंति सो वि उप्पन्न-भत्तपाणो नियदं सुहभागी णरो व णारी अ णादव्वो । सिरिवच्छ-णंदियावत्त-वद्धमाणग- पदाहिणावत्ता य आवत्ता दीसेज्ज, सोत्थियमय-कुलिस-चामर-वरकलस- चक्कंकुसादिणो जस्स करतलंगुलि-मग्गेसु जस्स जत्तिया पदाहिणावत्ता आवत्ता दीसेज्ज तस्स तावतियाइं चेव पुत्तभंडाइं आदिसे । पदाहिणावत्ते पुरिसे वामावत्ते य इत्थियाओ । हस्संगुलिणो परं पेसिणो तु [८५]पालत्ताणइं(?) घेत्तूणं [८६]हस्सतला हु ण खीविय(?) निच्चं दुहभागिणो हुंति । भगेण सुभगो निच्चं तीसं च यं(?सं)वच्छराइं सुहमेहदिं(?)[८७] पवेपसूतमन्नं(?) च पाणं च विसदा भवे तु मज्झेसु तु सतभागी सहस्सभागी इ होइ मरगेसु(?), संखेसु लक्खभागी पउमे कोडीधणो होइ। अच्छिद्देसु य सव्वंगुलि संतते(?) सुहभागिणो सदा हुंति । मज्झिम-पदेसिणी[?णं] घणमंतरेण पढमे वये सोक्खं, मज्झिमंगुलि-अणामिगाण घणंतरेण मज्झे वये सोक्खं, सव्व-विरलंगुलीसु य निच्चं सुहभागिणो हुंति । कणिट्ठिया दुहीणा(?) पिउणो मरणमादिसे, तीए चेव भग्गाए जणणि-घातं विणिद्दिसे, हत्थम्मि [८८]सुत्थिया जस्स सुवत्ता, णिद्धसंगता ते होंति धम्मसीला णिच्चसुही अरोगा य । अंतोसुहेसु(?मुहेसु) सत्थे(?मच्छे)सु णिच्चं सुहभागिणो, बाहिंसुभेसु(?मुहेसु) सत्थे(?मच्छे)सु पच्छा भद्दं समादिसे ।

जस्स पुणंगुट्ठे पदेसिणीणं अंतरगदो भगो होइ सो धणभागी पुरिसो इत्थी वा । एगपत्तीओ कर-चरणंगुलि-पव्वेसु जस्स मच्छा भवंति कुम्मा वा ते होंति सलिलवच्छी(?) तत्थ य सुहिदा असंदिद्धं । वावीहलं(?) व हत्थे दीसते जस्स सो सदा सुहिओ, केरिस न व त्ती य तहा ति सुविधिरलहा(?) विय [९०]सुहीदुं मं पाणो कलसो वा वि दामं वा जस्स पाणिसु पभूदं गोधणं तस्स वद्धमाणस्स भविस्सति ।

जस्स पुण पाणीहिं कसण विवन्ना [९१]इयराइणो(?) होइ ते हु दरिद्दा णिययं बहुदा(?) मंदवित्तीया । जेसिं वा नरिच्छा [९२]का य सियालस्स [९३]भलवग(?) सुणगा दीसंति करतलेसु दुते(?) तु कुवुत्ती य कूरा य [९४]अड्ढा य । दुसुरुइ(?)लेहा[९५] यवलेहा करतलेसु भोगीणं । गय-मच्छ-संख-पट्टिस-

कुंभकारंका य नरपदीणो।

एदाइं च करतल-लक्खणाइं, पुरिसाणं दाहिण-हत्थ-गदाइं ति पसंसिज्जइ, इत्थीणं वाम-हत्थ-गदाइं ति ॥ छ ॥

इति पुरिसाणं सिरं पदाहिणावत्तं कसिण-कुंचित-केसं छत्ताकारं व पसंससीयइ । इत्थीए वामावत्तं कुडाकारं वपूयितं सिरं ति । तत्थ दुण्ह वि वग्गाणं अद्ध-चंदागारं निडालं सुप[स]त्थं । तत्थ [९५]कुडे मरेभं(?) निडालं सद्धिमा(?) पुणो दुरे संसत्त त्ती संति रेखा आसी तं[?....] चउरेखं णदीवरं(?) पंचरेखं सतसायणो(?) । एवं जहन्न-कालाणं उक्कोस-काले सताइं सहस्साणि य पल्लोवमाणि य संभविज्जंति । पंचसु दीहो पुरिसो दु सुयतस्स ते भोगवंता पउमदलायतेसु य लोयणेसु गंभीर-सिणिद्धेसु विसालेसु य जुवइ-जण-मण-हारिणो होंति । गय- वसह-सीह-हंसाण सरिससामिणो(?) अवस्स पर पादेहिं [९६]विभवं ण गच्छंति अतेरेय(?) [९७]सुसरेण य पडिहता सदा भवंति। [९८]आणाभद्दे मंसुणोरोमसोदरा(?) य सदा सुहिणो निरत्थयाहिं [९९]व(?ध)णभागिणो य णरा सूरा पलंबवसणा(?) । सीहकटी होइ निच्च सुहभागी । एदाइं पुन सव्वाइं लक्खणाइं जस्स सतं(?त्तं) तस्स वहंति, [१००]सत्थहीणो(?) निरत्थयाइं । एदाणि य लक्खणाणि पुरिस[?इ]त्थीणं काणि य समाणि ।

इमं पुण अन्नं केवलं इत्थिलक्खणं सुणह, जीय तु हसमाणीए कवोलमूलेसु कुवलया होइ सा अग्गिकज्ज(?)-तुरिता, विणिग्गदे पावं कुणइ, जाव तु हसमाणीए गंड-णितंबेसु कूवया होंति सा भणिउं(?) भत्तारं पर-घर-चेडिया होति । अवि य जा विय नारी विकरालंगुकेसी य पिंगलच्छी बहु- रोमोवइदंगी य सा [१०१]मिमंडववे(?) पतिं देवरं वा अवस्सं घातेदि । अइ [१०२]अप्पकेसी नारी जा य [?हो]इ पिंगला सा हणति पदिं अचिरा कुलं [१०३]वाणयंवट्टइ(?) कदाइ जीये दु तिन्नि वि लंबाणि निडालमुदरं [१०४]फिडा(?) वेव सा हणइ तिन्नि पुरिसा ससुरं पतिं देवरं चेय ततो तेसु परपिंडेण जीवदि। [१०५]जा पुण पयदि-निद्ध-जीमूत-सरिस-वन्ना कणग-पउम-सरिस-वन्ना वा परहुत-रुत(?)-रायहंस-सरिसा लंबिता य निम्मल-मधु-वलिया पिंगलायद-लोयणा सा वि उ सयल सोक्खे पंच पुत्ते पसवइ, सयल-पुहविपति-भारिया य एसा पुरिसोवभोज्जा य । जा दु हंस-सरिस-विरुता मणहर-रत्त-लोयणा महिला सा तिन्नि पुत्ते पसवति । [१०६]तेण यरिदावुयं(?) होइ मंडूक-सरिस-

कुच्छा नारी धण-धन्न-परिवुडा होइ, सा पसवति एग सुतं जो पुहवी-सामिओ होइ । [१०७]सइमवु(?) मज्झा नारी सा य वधू(?) सरिसावलोगणा जाया सा पसवइ [१०८]दोन्नि सुते जे धण-धन्नाहिवा होंति ।

तिलगो जस्स निडाले दीसइ सुपतिट्ठिओ निद्धो य सा जणयति अट्ठ सुते धणसामी भुंजइ य तं च ।

जाए तु गच्छंतीए जाणू कीडेति नारी उअयकति[१०९](?) य सा कन्ना निच्चं दुहभागिणी होइ ।

चदुसु य [११०]हुस्सो दु-पंच[?सु] सुहुमो य सत्तसु रत्तो छसु उन्नतो य वन्नो ति गंभीरो बाहू णयणा य हणू वसणा धणमंतरं व दीहाइ जस्स पुरिसस्स नर(?रो) सो य पसत्थो य धन्नो य । [१११]गीवा पणयण(?) जंघा करणाणं चउं(उरं)गुली मज्झं चउसु वि हु(?ह) स्सो पुरिसो [११२]सुहुमेवइ(?) निच्चकालं पि। अंगुलि-पव्वा दसणा केसट्ठि य संधिणो णहा चेव जस्स सुहूमाणि पंच वि सो सामुद्दे पसत्थे दु [११३]पत्थो कुच्छपट्ठीण य सुह [११४]पट्ठि कडिगा य धन्नाणं (?)पुरिसाणं उणं [११५]ताइं छ पित्तणरविंदाइं(?)। जीहा-तालऽधरोट्ठ[११६]-णह-णयणा दसण-हत्थ-पादा य सत्त वि रत्ता जस्स दु सो धणपदि-संणिभो होइ ।

नाभी करलेहाओ नरवर, वाणी य जस्स गंभीरा ।
एवदि गंभीरस्स तु बहवे आणं पडिच्छंति ॥

अय[११७]कुच्छिण(?) [११८]दुवन्नो दंति उदरिणो य होंति महिपाला ।
ससवग[११९]मुदरमवन्नो(?) विभवे वि [१२०]छुहाइतो होंति ॥

घडपिठर[१२१]सुहमवन्ना(?) जणगा [१२२]मयुल्लंद(?)-अ(?आ)णणा दुट्ठा ।
अदि(?हि)-णउल-मुहा सूरा ससमुहा[१२३] णेव दीहाऊ ॥

वारेणपरादंमुहेण(?) णियदं पि भुंजतो अन्नं ।
वानर-वयणो पिसुणो मंस-रुई बद्ध-वयणो उ ॥

महिस-मुहो दुस्सीलो खर-मुहो दुब्भरो छुहालू य ।
वग्घमुहो पुण राया चंदमुहो सुभगो सोम्मा(?म्मो) दु ॥

दीह-मुहो महिपालो रणसूरो सत्तिओ य विक्खातो ।
वसभ-मुहो गोजीवी सेसमुहाइं अवन्नाइं ॥

एतो गय-वसभ-सजलधर गागररहनेमि(?) खुग्गिद-सागरो ।

दुभिसुरत्तक्खो(?) व सारस-वर-हंस-सरिस्सणो ॥

दुवन्ना सदा भणिया [१२४]खर-फरुस-खलिद-निट्ठुर-हीणस्सर(?रा) ।
काग-कीडय-गद्ध(?)-परिली-सरा य पयदि-[१२५]भिण्णा ॥

गब्भरस्सरा(?) य हीणाउया दरिद्दा य [१२६]वेब्भतो(?) पुण जो णिद्धमेव गंजण-जंबुफल-सरिसकणग-चंपग-मियक(?)-पंकया [१२७]नीरंतुदरय(?) गहंसफालिय(?) वर पउमराग-निद्धलोह-सवन्ना य धन्ना य सत्तिगा(?) य सुभगा य । इच्चे ते सत्तिगा(?) गुणा भणिया ।

तत्थ सिलेहवन्न(?) सरसत्त-संजता इच्छिज्जंति । तत्थ वसिणो(?) होतो वरतत्तो(?रो) वन्नो, वन्नातो वरतरो सरो, सराओ वरतरं सत्तं । सव्वं सत्ते पतिट्ठियं ।

तत्थ तयाए अवि(?धि)यतर-सिनिद्धाए सुहभागी णहंसठिताए(?) थण-नयण-सिणिद्धताए सोभग्गं, दंत-सिणिद्धताए भोयणं, केस-सिणिद्धताए गंध-मल्लाणुलेवणं, निद्ध-गंभीरेणं सरेणं आणा-अप्पडिहदा होई । सुभगा य मोर-णयणा वित्तत्था पारदारिया भणिया । संमीलण(?) कागच्छा दुस्सीला तारिसा होंति। खर-पलग(?)-सरिसच्छा दुव्वच्छा य होंति अप्पाऊ । सू(?मू)सय-मज्झारच्छा चोरा, जीयंचपहरच्छा(?) जं पुण भग्गकरालं विसमोद्ध-दंतुरं किसं चड्डं वंक-नासं व एताइं सत्त मुहाइं जासिं पुरिसाणं इत्थीण वा ते दूरतो वज्जणिज्जा ।

जे वि अभिन्न-काणा(?) होंति नरा तह दु वंकनासा य ।
निम्मंसु-ग(?क)वोला चिय तिन्नि वि पुरिसाधमा भणिया ॥

सरसाधण-सरिसच्छे सूर-सि(?स)रिच्छ-णयणे य तिरिए अभिन्नकाणे मत- पवनवीससे(?) पुरिसे । सस-सियाल-काक-पदग-भिन्न-पाततलो नरो नियय-घरे नियमा ण वसइ, अह वसति तो ण चिरं वसइ । पयदि-विच्छिन्न-पातो पुरिसो जुवती [१२८]व हूतभगो(?) होइ दुग्गदो य, न एत्थ संदेहो।

उव्वद्ध[१२९] पिंडआउमत्थं(?) सत्थेण लभइ पुरिसित्थी । तिलपुष्प(प्फ)- सरिस-नासो पुरिसो य सया महाधणो वावि(?) जइ[१३०] तिंगाल-सरिस-करतलोदरा तित्थगरा चक्कवट्टिणो वावि(?) । रत्तच्छं न य अच्छा वयंति । ण य पीतयं चयइ लच्छी, दीहभुय सस्सिरीयं ण य मत्थंक्कं (?मच्छंक्कं) धणं चयति । विउलसिरा धण- धम्मभाइणो वि यवच्छिणो(?)

वन्ना अवराइताए च्चिय विपुल कडी चेय बहुपुत्ता। सुहमद्ध(?) सरीरस्स सव्वं वा सुहमुव्वते । ततो विणामिया मे सिट्ठा णासातो चियय(?वियय)-लोयणा घणं थिर [१३१]व तेसु अत्थिणो नरा भणिया। घण-पीणोवइत-मंसल-सरीरा सुहवा(?भा)इणो पयति-सिणिद्धा एतस्स ते भोगवंता पउमदला य । जीय तु सुसमा पाता धरणितले सुप्पइट्ठिया होंति सा विय लक्खणजुत्ता कन्ना सुहभागिणी होति । दीहंगुली दीहनहा जा नारी होति दीहनासा य दीहाऊसा भणिदा य सुतफलभागिणी होइ । जस्स पुण वाम-कुच्छीए निद्धवन्नो य कालो तिलओ दीसति ववमखीलो(?) सा सुतफल-भागिणी होइ नारी ण थूलजंघा। सुण चत्तारि असुभ-कम्माइं विधवा जारी वा परिव्वाई वा दासी वा । पातंगुली कणिट्ठा जीय तु महिलाय ण च्छिवे भूमिं, सा हणइ भत्तारं, जीवति नियेयेण कम्मेणं । पादंगुलीअ यामा धरणितलं जीए पावइ ण चेव सा हणइ पढमगब्भं मरति य विदिएण समयं तु जीय तुह समाणी ए सहस्सा अच्छी सुपाणियंतर दइतेण दाणेण य लोलाओ मुंचति सा हणइ भत्तारं । पट्ठमुही वुत्ता होदी, दीहमुही होइ सोयणिज्जा ओउव्वट्ठ(?) लउलजंघा जारी, पइ पोइता वा वि जाव दु रस्ससरीरा ससिवदणा रायहंस-गइ-गमणा गोपुच्छ-सरिस-जंघा उन्नत-हणु तंब-नक्खा य पउमदला य णयणा विच्छद-जहणा य घण-कराला य सा होइ एग-भुज्जा पुहवीपदि-भारिया चेव। णग-णगर-मगर-चक्कंकुस-कलस-पंकय-कदाका(?) हत्थेसु य पादेसु य सा जणणी चक्कवट्टीणं । हल-कुलिस-संख-पंकय-दप्पण-सोदमोगर(?)-करंका हत्थेसु य पादेसु य सा जणणी **वासुदेवा**णं । हल-मुसल-तुरग-गयपदि-पंकंतिकमा(?) जीय पादा य पउमचिंधा सा **बलदेवा**ण जणणीओ । पउमसर-मेरु-सागर-चक्कंकुस- कलस-दिग्गय-वविदं(?) जीसे कर-चरणेसु य सा जणणी चक्कवट्टीणं । इति एवमादि बहुविधो इत्थी-लक्खण-संखेवो **पियदत्ते**ण मे कहिओ, भणदि य—'देव ! का सत्ती मम तुह पुरतो [१३२]**सामुद्दवारणं** काउं। **किंपुण** एत्तियं तावजाणामि, जइ **रयणवदी**ए तुब्भं च लक्खणाइं ताणि अविसंवादीणि णंत्थे(?णत्थि) ते दीह-वियोगं ।

एवं तेण भणिते करतल-कदंजलिपुडाए भणियं **रयणवती**ए-एवमेतं इच्छामि । एस ते वाया देवदेसु ता अविसंवादिणी भवतु त्ति बेंतीए पुणो वि पूइतो **पियदत्तो** ।

एव तत्थ सुहकारियाहिं कहाहिं पउर-परिभोग-सुह-समुचिदाणं

विलास-हाव-भावेसु अभिरमंताणं सुहेण खणमित्तं पिव समतिच्छिदं दियसं । ततो पदोसकाले संपत्ते **कणगलता**धिट्ठिद-दुवारे ण्हविदो हं सयं **रयणवदी**ए-पम्हल-सुरभि-कासा[?.....] लूयिदंगो य परिहाविदो हं **रयणवदी**ए पवर-मियमद-सुरभि-गंधं च कारितं सखिखिणीयं हंसलक्खणं खोम-जुवलं । तं च खोम-जुवलं पासेसु पडवाएसु वासिदं, तं जहा— दस परिपेलव(?)-भागा, अट्ठ एला-भागा, मंसीवग्घणहाण(?)च्छ व्व(?च्छ) भागा, अगुरु-तुरुक्काण चतुरो भागा, एलापत्त-लवंगामि(? ण) तिन्नि तिन्नि भागा, एगो हरेणआणंद(?) भागो, कप्पूर चेव कालिता(?)[१३३] मालति-संवासिता सुरभी, एदे खलु पडवासा मे कदा आसि । इमे य मे मज्जमाणस्स ण्हाणं आसि, तं जहा— [१३४]सकप्पिय-पिक्का(?) कुंकुम-रसणा गहणं च आणुपुव्वीए भागा पंचादीया(?) एगुणं परंपराणुसेसाण ।

ततो हं पुणो ताहे **रयणवदीए** परमं सुगंधाए गंधजुत्तीए समालद्धो। तस्स य दव्व-विणिच्छयं अयाणंतेणं मया पुच्छिया **रयणवदी** —-पिए ! केवदिएसु दव्वेसु एस गंधजुत्ती निप्फज्जति ? किं णामधेज्जा वा ?

सा भणइ सुहेण - एते ताव रइप्पिया वासारंभप्पिया(?) ण्हाणा(?), एसा पुण जुत्तीए इमेसु दव्वनामेसु णज्जंति । तं जहा, दमणग मरुअग मुच्छापत्त(?) तयो सारससिजत्ता(?) ईसिं एसा **गंधपिसाई** सुत्तं विबोधेइ ।

तओ तीए इमो मम केसधूमो दिन्नो, तं जहा— तय-तगर-[१३५]मंसिवोरय(?)-वालय-सहिदस्स कमसो दु [१३६]णह-भागद्ध ज तस्स य गयस्स [१३७]मग्गा विवायंति । इमो य मे अन्नो पिया सव्वंगिओ तत्थ धूवो कुसुम-सगब्भ-चदुक्कयितणभित(?) सीसस्स उवणीतो । तं जहा— अगुरु भागा छ, मलयचंदण भागा पंच, तुरुक्क भागा चत्तारि, कुंदुरुय भागा तिन्नि, सज्जरस भागा दुवे, सक्करा भागा तिन्नि, [१३८]तह(?) भागो एक्को, कप्पूरस्स अद्ध भागो, कत्थूरिया चेव धारी(?) **मदणकरंबगो** नाम सुरप्पिओ ति भण्णति । अवि य,

अगुरु-मलय-तुरुक्क-कुंदरु-सज्जरस-सितनह-ससीण ।
छ-प्पंच-चउ-त्तिय-दु-भागा तियमेगमेगद्धा ॥
एसो मियमद-वेधो, वम्मह-संदीवणो महा-सुरभी ।
धूवो सुरजण-कंतो अह **मदणकरंबगो** नाम ॥

एदेणं धूवेणं धूविओ गोस-कुसुम-सयणेज्ज-गतो इमेसु य अणेगेसु[१३९] सुरभि-पडिवासेसु यणुवदिय(?) वातायदण-निक्खित्तेसु गंधेण अप्पाइज्जमाणो तं- जहा—[१४०]गांगया(?) पलंपलंबेववोरमसीणंदुव्वाधेस्स(?) य करिसं करिसं वतवलयपत्तस्स(?) *एदेणं धूवेणं धूविकासोसकुसुसि(?) याणज्ज(?) गतो विस्से* एसो ससिकरवेस्से(?) रति-रभस-करणमति-दक्खो जाणदि हिदय-चोरो पडवासो **चोर** त्ति नाम । एवमन्नासु य तत्थ कल्लाणग-पवर-सुरभि-जुत्तीसु मुहवासय-धूवचुन्न-तंबोल-गंध-वरिसादीसु सम्माणिदेहि [१४१]दिक्खिय-सुहो गमेमि तं रयणिं **रयणि(ण)वदि**-सहिओ ।

ततो तद्दिवसे अरुणोदय-काले आगतो **पियदत्तो**, भणदि य कयप्पणामो— अज्जपुत्तय ! ता अज्ज नीणेतु त्ति ।

ततो **रयणपदी**ए भणियं— **पियदत्त** ! इच्छामि एगं दियसं तुह पसादेण पियदम-परिवसियं ति ।

तेण अणुन्नाते ततो विविध-वन्नाण विलेवणाभरण-वत्थ-भूसण-मुहवासग-सधूव(?)-सुंवण-तंबोल(?) विविधाण पज्जत्त-परिभोगो **रयणवदी**ए चदुर- मधुर-लविदाए हित-रति-रभसोवगूहण-आलिंगण-परिचुंबण-परोप्पर-पसादण-चउकम्म-करण य भाणयक्खाणयण(?) पिय-भोयणादीसु उवगिज्जमाणो सुहेण गमेमि तं दियसं ।

ततो अन्न दिणे आगंतुं अरुणुग्गम-काले **पियदत्तो** निग्गमं मे चोदेति। ततो मया वि अविरत्तं चोदिदं, दिन्नं च तेण, एवं **कणगलता**ए वि अहोरत्तं मगिदुं (? मग्गिदं) । तं पि दिण्णं तेण । एवं जहा **पियंगुसुंदरी**ए, तहेव तहिं पि । ततो अन्नम्मि दियसे अरुणसिहा-वेलाए **पियदत्तो** आगंतुं मम भणइ-देव ! अज्ज सिग्घं निग्गच्छह जाव मे पाणे ण उक्कमंति त्ति । अह य तत्थ चेडियाहिं भणितो **पियदत्तो**— वयंस ! तुमं अतीव पंडितो, तं पुच्छामो ताव किंचि, कहेहि ताव कामिणो पयोस-काले पिय-जणं समेच्च पभात-काले विद्दवंति उदाहु पभात-समय-संगता पदोस-समए विद्दवंति ? तेण हसंतेण भणियं— किं एत्थ पुच्छिज्जइ ? पेच्छह, णणु पदोसकाले समये समिच्च समतिगय-पयोयणा पभाद-समये वियोग-वसणं अणुभवंति । एव भाणिदुं पुणो वि निग्गमं चोदिदे तओ तासु भणियं— अहो ! ते नागरयत्तणं विणासितं ! किमिदाणिं सि जाणंतो वि एरिसं भणसि ? न हि ते आगमो णु संचरिदं ति । एव भणिओ अवक्कंतो अन्न दियसे पुणो आगंतुं भणइ—

अज्ज अवस्स णिग्गंतव्वं । ततो सो भणितो **रयणवदीए**— हला ! किमिदाणि एस संवुत्तो पलवइ ? कदो एदस्स निग्गमो एक्कहिं चेव इदाणिं एदेण मया य जीवियव्वं वा । तं किमिदाणि पलवसि हला ! सिग्घं निच्छुभतु इतो **पियदत्तो** सावयसे(?) इह पुणोपदेसं दाहिति । एवं ताव पढमं निट्ठुरं भाणिऊण पच्छा पुणो संतिओ । ततो **पियदत्तो**(?त्तेण) सहिदाणि चेव विइदाए पाणभूमीए पासं उवजीवंताइं सुहं अभिरमामो । इमं च अभिरमंताणं गदाणि मो कदिइ दिणाइं।

अन्नदा य **पियदत्तो** बाहिरतो भीतो आगंतूणं भणइ— देव ! निग्गंतुमरहह । परिसंकइ सव्वं अंतेउरं, जणपदो य । अणेगा हु जणवादा णगरीए परिब्भमंति । मालिया भणंति— किमिदाणि अइ-बहुयं [१४४]चित्त-गुहणाकारणिज्जं पुप्फं कन्नापूरं पवेसिज्जति त्ति । तंबोलिया भणंति— अहो ! इदाणिं पंच-सोगंधिए महंतो आदरो ! ण एदं निक्कारणं गंध-वन्न-विलेवणं । पीसियाओ भणंति— अहो ! एदाणि पियदम(?त्त) कप्पर वेवेसु(?) विलेवणेसु महंतो पयत्तो । वच्चय-सेणी भणति— किमिदाणिं कन्नाए वत्थाणि सुरत-परिमल-गंधियाइं पुरिस-परिभोगत्थाणेसु य मलिणाइं लक्खीयंति ? ण्हाणघर-जलकम्मंतिया वि खंति- किमिदाणिं जलेण कन्नापूरे निच्चूसवो वट्टदि ? एवं वत्थभंजयाऽभरणसंजोगकारया य भणंति-महंतो हु इदाणिं संपदं कन्नाए वसण-भूसणेसु पयत्तो । सूवकारा भणंति— ण णज्जइ किंपि इमो इदाणिं अणुइतो विसेसओ कामिओ आहारो सज्जिज्जइ । [१४३]सरापइणो वि भणंति— अहो ! इदाणिं नीलुप्पल-णिउल-बकुल-पाडल-लवलि-लवंगेल्ल-वो(?वा)सिता इमा कन्नापुरे पभूता पाणविही पवेसिज्जइ । एवं सव्वेसिं पि मणो विसयमुवकारणमाणयणेसु(?)[१४५] अवि य परिसंकइ । राया वि भणइ— णुसर्ध(?ण सुट्ठु) मिदाणिं विणयवेलासु कन्ना दीसइ, किमेतं ति । अज्ज अज्ज-दुहिताए गुरुजणं अभिवादयंतीए केसु-इ किर लक्खितं जहा— अतीव उवनिग्गयाइ कडिखंड-सीसयाइं, विसेसेण य साहताभिपासयाइं(?), आपाडलो अधरोट्ठो, अव्वा तंबाइं णयणाइं, आपंडुतराइं गंडतडाइं, आपीता मुहच्छाय, सविब्भमा गदी, मदण-खेदालसाइं आगदाइं, सुरभी-परिमल-[१४५]गंधं ण एदं निक्कारणं ति।

अंतेउराणि भणंति— एदेसु ललित-नयण-भुमया-कडक्खियारेसु अन्नेसु य अवरविधेसु परिभोग-रस-विगारेसु य गइरयणकडक्खणुभंग(?)

विविध-विब्भम-पगारेसु पसूययाइं । अन्नोन्नं भणंति— न हु तं निक्कारणं ति। एगाए वुड्ढ-चेडियाए घरंगण-सोवियाए दंत-धोवणं छड्डियं दट्ठूण भणितं— संकेतो एतं कन्नापुराओ महापुरिस-दंतधोवणं विणिग्गदं ति । बिदियाए भणियं– किधिदं जाणध एदं महापुरिस-दंतधोवणं ? इदर-जणस्स किं न धो(?हो)ति ? तीए भणियं—संपदस्से(?) बहु कालो रायकुलेसु संववहरंतीए इत्थी-पुरिसाण य दंतधोवणाइं पेच्छमाणीए तओ जाणामि दंतधोवणाण विसेसं। इह खलु दंतधोवणप्पमाणं । तं जहा,

उत्तिम-पुरिसाणं महासाणं(?) लीलागहण-पमाणजुत्तं बारसंगुलं दंत-धोवणं दिट्ठं, सेसाणं दस अट्ठ सत्त य छ च्चेव विप्पवर-खत्तियस्स सुद्दजातीणं। तत्थ इत्थीए दंत-धोवणं नादि-थूलं कातरत्तं दंसोसेलि(?) सुकुमालं च्छणण-भय-दोसेण य सुवव्विदं(?) दीहबलिद(?) [१४६]कुच्छ गंडूरावगाढं मंथितं व सभावतो इत्थीणं दंतधोवणं, पायद-पुरिसाणं पि कदाइ होज्ज । तारिस सयं चेव महापुरिसाणं पुण सभावतो वि दारितु(?) लक्खण महप्पमाण णाति-दूर-मज्झित(?) महागइंद-कवलो इव दर-[१४७]चव्विंतप्पण(?) सिहरि-दंत-धोवण सहं अवि कच्छिदं दंतधोवणं, ततो जाणामि महापुरिस-दंतधोवणं त्ति(?ति) ।

चेडीजणो य भोयण-सेसं वो कणगपाति-गतं घेत्तूण बाहि विणिग्गदो। तं च दट्ठूण भणितं अंतेउर-वुड्ढासु- अव्वो ! अकज्जमिति । विणट्ठं खु कन्नंतेउरं । दोसु एक्कहि भुत्तं पुरिसेण इत्थीय । पेच्छसु इमं एक्कओ पुरिस-कवलाकरिसणं वग्घ-चरणोवदारियं पिव लक्खिज्जइ । एक्कतो विलयाए सललित-तणु-करतलंगुलि-[१४८]वियट्ठित-कमलंगहठाणं(?) लक्खीयइ। तं एस परमत्थो । एदं च सो विण्णवेमि अरुहध अप्पाणं ममं च रक्खिउं ति ।

ततो **रयणवदी**ए भणियं— जइ एवं ततो सुद्धतरं **पियदमे**ण निग्गंतव्वं । इहेव दो वि जणा मि समयं मरीहामो । ततो विमणसो निग्गतो **पियदत्तो** । सुणेज्जती य जहा फुडीभूतं रायकुले सगब्भं कन्नंतेउरं ति । ततो **रयणवदि** मम पादेसु पडिउं भणति— अज्जपुत्त ! मारविओ सि मया निहीणकम्माए । अज्ज अम्हं अवस्स मच्चुपदं आवडदि । एवं भणंती पादपडिया चेव रूयमाणी भणिया मया— उट्ठेहि पिए ! धिर्तिं करेहि । नाहं कस्सइ गम्मो । अह पुण तुह कज्जे उज्जयस्स मरणं होइ तह वि एदं सफलं

चेव ।

ततो मया एव भणिए सा रुअंती भणइ— पियदम ! जदि ते एवं निद्धारितं परिचत्तं च ते व मे कदेण जीविदं ततो संसइत-जीवितो भविय एदं नियय-जीविदं ममं चेव देहि त्ति । मया भणियं— दिन्नं चिय मे तुह जीवितं इह पविसंतेण । इदाणिं वि ते पुणो वि दिन्नं ति । भणाहि किं कीरतु त्ति ।

ततो सा सह **कणगलताए** कयंजली य ममं भणइ— अज्जपुत्त ! जइ ते नियत-जीवितं ममं दिन्नं, ततो जइ कतो य विण(?ण्णा)त-कारणत्थो न(?तं) स्त्रा गेण्हाविज्जसि, तओ ण तुमे मम संतियस्स कहेण जुज्झिदव्वं ति । अज्जुज्झंतेण ते गहणमुव्वेदव्वं । एत्थ किंचि कारणं अत्थि । ततो कीरदु मे पसादो । देहि वयणं न जुज्झिदव्वं ति । ण उट्ठेमि इतो पात-पडिता जाव मे वयणं देसि ।

ततो मया इत्थि-बुद्धि [१४९]विचिं[तं]तेणं हसिऊणं तीयाणुवित्तीए 'तह त्ति' पडिवन्नं । नवरं च तम्मि समए स्त्रो सगासाओ आगताओ कतिइ णाति-परिणतवयाओ [?....], ताओ य तुरित तुरितं फुरित-समया अह भंग-कुडिल व दाए विसम-कोव-पप्फुरित-वलिताधरोट्ठी [**रयण]वदिं** भणंति— हला ! सच्छंदललिते ! उट्ठेसि इमं गुरुजणो सद्दावयइ । ततो **रयणवदी** विसपडल-दट्ठ-कमला इव कमलिणी विवन्नवदणा, णयाणिण(?णयणाणि) ईसि अहिमकुलयंति, पफुरित-बाह-लोयणा, अतीव-कलुण-पलोयणा विमणसा य दी[ह]-उण्हा(ण्ह)-[१५०]नीसासामं(?) रयणिकाल-विउज्झमाणी विव चक्कवागी जह सावलोका पियदम-संतीए भवतु मम जीवितं व संसयं चेव अज्ज व त्ति भणिदु(?द)मेत्ता नवरि तक्खण चेव मम गहण-कज्ज-विसज्जिताणं सायुधावरणाणं आभीरहंताणं अभिपडंताण य आयुध-संख-समुट्ठियं खणखणा-सद्दं सुणामि । चिंतितं च आगता मे मम पिया, अहं च पियाए तहा निकायतो कहमहं एमेव पेच्छमाणो पसु व्व जहा निव्वावारो [१५१]नह(?हं)गणं उवरमामि। चिंतितं च मे— [१५२]कामअसेत्त(?) सुत्त-विहाणं पि ताव करेमि । जह गेण्हंति मे ततो सुत्त-विहाणं कादुं ठितो हं । आगदा य गहितायुध-घोर-पहरण-सज्जा [१५३]चत्तवे(?) रायपुरिसा । तेहिं य अहं सयणेज्ज-गतो चेव दुतं गहिओ, गाढं पच्छाबाहुओ तेसु सुबद्धो कओ । नीतो य मि तेहिं स्त्रो सगासं। तेण य परम-कविएण वज्झो अहं समाणत्तो । मंतिणा य भणियं— देव !

पुच्छीयदु ताव सो किं पि भणइ। रन्ना 'तह त्ति' पडिवन्नं । ततो सो मंती एव भणइ— अहो ! ते [१५५]वेसपुरिस-लक्खण-गुण-रूसिता देहच्छाया! किह ते [१५५]संकमेण णियोयिता ? भणति य रण्णो, पेच्छध, राय ! केरिसं से रूवं ? आय अणुत्तर-रायसिरि-अभिसंतं च से देहं । कामं न किंचि एदस्स असुलभं । अवि य

सामुद्द-गंध(?थ)कारस्स उवदेसो उत्तम-पुरिस-लक्खण-संजुत्तो सच्चो इव लक्खीयइ । ताव चेव इच्छा तुहं परिणती भोगसुहं सत्तया गुणो, वियसित- वर-पोंडरिय-सरिसेसु लोयणेसु णज्जते सूरो मेहावी बहु व सिद्ध जवदीप(?) लक्खिज्जइ । बहु एसो अतीव-पवर-मदगल-ललित-सद्दूल-सरिसो भणइ । विविध-जाण-वाहणा समुदयं लाय विसय समा कंपंत [१५६]वयणक्कारण(?) ज अंतर-खुभित-सागर-दुंदुभि-जलद-निस्सणो साहइ । [१५७]से सव्वत्त अप्पतिहत [१५८]अणाभोज्जं सयलं पुहविं एवमादि लक्खणेसु एसो अच्चंत सुहभागी ।

एवं पसंसितुं ततो भणइ मे— देव ! तं च सुगुमारंग-सरिसरूवओ च विसिट्ठं उत्तमेण तुमे भविय पायत-पुरिसाणुरूवं ववसितं ते णणु एदं समुज्जण(?) सव्वे [१५९]पुरवासिणो कहंति केण तत्थ दप्प पस[?म]णं करोति न इ ते को एत्थ [१६०]अभिएण अवहंतव्वो, सच्चं भणाहि एयं ते हियं भविस्सइ । कहेहि य, को सि तुमं जादीए ? किं-वंसिओ वा ?

एवं बहुप्पगारं पि भन्नमाणो अहं लज्जिओ [?ण] परिभणामि । ततो भणियं तेण मंतिणा- न एस किंचि पडिवयणं देइ । एवं मे जं करणेज्जं ति । ततो तत्थ रन्ना समाणत्तो एक्को दढ कढिणो पुरिसो अनिमित्त-रूसित-वदणो घोर-महिस-सद्दूल-सरस-कडक्खो कालो रत्तो निक्कट्ठ-घोर-निसितासि-मुज्जदहत्थो उवट्ठिओ मे पुरिसो, भणति य— दुरायार ! रायकन्नंतेउर-धरिस [ग!] समुट्ठं(?) ता अत्ताणं करेहि । एस ते इदाणिं जम-सासणं पेसयामि। एवं भणंतो धाऊणं खर-भिउडिबद्ध-वदणो पिदड्ढधरोट्ठो अभिपडिदुमारद्धो पहरिउकामो य असिणा [१६१]समुप्पएणं सहसा थंभिओ केणवि आगासत्थेण धारितो निद्दिट्ठो । अहं च मरामि त्ति जिण-नमोक्कार-करण-वक्खित्त-हिदयो सपरियणस्स रन्नो पेच्छंतस्सेव केण वि आगासेणं समक्खित्तो नीतो य अद्दंसणं जणपयस्स । चिंतितं च मे—को मन्नं(?न्ने) ममं हरइ ? ततो सीतलेणं साणुकंपेण य हत्थग्गहणेण जाणामि रिवुणो ताव एस पाणि-फासो न भवइ।

एवं चिंतंतो चेव नीतो बहुदेसु(?) केण वि अदिट्ठरूवेण, ठवितो ताव एक्कम्मि लता-जाल-परिमंडिते सकमल-जल-सोभिते महा-गिरि-सिहरे । पेच्छामि य नवरि तत्थ परिणत-वयं पयति-पसण्णवदण-सोहं सुरूवं इत्थियं ।

तओ तीए मया जीवित-सव्वस्स-दाइयाए कदो पणामो, भणिता य मे— अम्मो ! तुब्भं पसादेणं जीवितो हं ति । तीए भणितं—पुत्त ! जीवह बहूणि वाससहस्साणि । सुणह य किंचि मीसंतं । अत्थि वेदड्ढ दाहिणाए सेढीए **वेदड्ढपुरं** नाम नगरं । तत्थ राया मम जामातुगो **महिचंदविक्कमो**[१६२] नाम। देवी से मम धूता **ससिकंता** नाम । अहं से मादा **मोसिणा** नाम । **ससिकंताए** देवीए अत्तिया मम अंतिया(?) ससिलेहा[१६३] इव सव्व-जण-णयण-कंता **ससिलेहा** नाम, जा वि तुब्भे वच्छ विज्जासहाव(?) सिहरातो उवट्ठिया । मया भणियं— दो वि जणा, **ससिलेहं** पि । तीए भणियं— पुत्त ! सा हु तप्पभिति देव-पितु-चित्ताणुवत्ती य किं विसयं पग्गहं काउं अवयंती उण एहिअपण-परिगमंती(?) समागमाभिकंखिणी परसवीवग्गता(?) ववगत-ण्हाण-भोयण-विलेवणा परिरी(?खी)ण-दुब्बलंगी कहिंचि कालं गमेइ। तदावत्थ-गदाए य विरहे नियय-हिदया [१६४]कुंद(?) तीय सव्वं पुच्छिज्जंतीय मम परिकधितं च, भणइ य— अज्झिए! जइ सो नत्थि तओ अहमवि नत्थि । एस हिदय-संखेवो त्ति । तओ सा मया पियं भणंतीए आसासिता, भणिता य—पुत्त ! केवतियाउ [१६५]वस(?) मम तुह सरिसाउ दुहिदाउ अत्थि । धिदिं करेहि । सवे(?) अचिरा तेण सह समागमं करेसि। एदं च कारणं मया जहाभूयं सव्वं पिउणो जणणीए य निवेदिदं। ततो रन्ना भणियं परितुट्ठेण—साधु कदं । पाणेसे(?) सद्धाए स बहुपुव्वं चेव चारणसमणेणं पुच्छिएण तस्स चेव भारिया [आ]दिट्ठा । तं गच्छह आणेह से हिदय-रुयिदं वरं ति । इय तेण भासिते मया वे(?वि)ज्जा पुच्छिदा-भगवति! कत्थ संपदं **ससिलेहा**ए भत्ता वट्टति ? तीए कधिदं-**वाणारसी**ए नगरीए **रयणवदी**ए रायकन्नाए सह पच्छन्नो अच्छइ । सुए य बंधणं विहिति वज्झो य समाणप्पहिति **मित्तवाहणे**ण रन्ना । तं च सोऊण मया चिंतितं— तम्मि चेव समये हरीहामि, न ताव अज्ज हरामि । पावतु ताव एदस्स अविणयस्स फलं, जहा ण पुणो एरिसं करेइ बंधं(?) सिक्खावितो । तओ विदित-कारणा अज्ज रयणीए चेव आगया, तम्मि य रोद्द(?ध)समए थंभिओ मे सो पहारी पुरिसो, अवहितो य सि । ततो मया खणेण इहाणितो हिदय-गदमत्थ-[१६६]पुच्छा-नाहदुं(?पुच्छणाहेदु) च इह ठवितो सि । तं पुत्त ! भणध इदाणिं,

ससिलेहाए सगासं तुब्भे वच्चध ण व त्ति ।

ततो मया विरइतंजलिपुडेण भणिया— देवि ! पियकारिणी मे **ससिलेहा** । [णे]हि मे तीए सगासं । तओ सा ममं घेत्तूण उप्पईया, खणेण य पत्ता **वेदड्ढपुरं**, उवतिता य घरमंदरोदरेण । भणति य मे सा— पुत्त ! वच्च, ससुरं अभिवादेहि । दिट्ठो य मे राया रयणसभाए मज्झे कंचण-सीहासणोवविट्ठो विज्जाहर-वंद-मज्झ-गओ, सुर-विंद-मज्झ-गओ इव **महिंदविक्कमो** । सुसितो सो य ममं देवि-देसित-पहं वज्झमाणं दट्ठूणं अब्भुट्ठितो सीहासणातो, ससंभमुद्धाइतेण य तेण अहं पणमंतो आलिंगितो, सिरे य अग्घाइऊण निवेसिओ सुमधुरं सागयं च भणंतेण अद्धासणे खणमेत्तालाव-वीसंभिओ तेण हत्थेण घेत्तूणं पवेसिओ मंदरोदर-गंभीर-सस्सिरीयतरं बहुरयण-वियप्प-निम्मायं नियय-भवणं । तत्थ य रयंतेउरेहिं अहं महता अग्घेण पविसंतो चेव पूइतो हं, मज्झित-जिमित-कतालंकारो य ठवितो हं समयामवलद्धो(?) उवट्ठाणे, तत्थ य विज्जाधर-पवर-नाडइज्जासु उवणि(?गि)ज्जमाणो अच्छामि । चिंति[?यं] मे य - अज्ज ऋूण(?णुणं) ण सुंदरं दियसं रिक्खं वा, ततो रन्ना कन्नाए पाणिं न गाहितो हं । गुरूजण-विरहं च ल(?द)ट्ठूण सहियण-सहिज्जा आगदा मम सगासं **ससिलेहा** विउल-वियसित-णयण-कमला चलय-मेहलकलाव-नेउर-रवा कलहंस-सरिसिराणुयाता(?) इव संचारिमा कमलिणी अल्लीणा मम, पडिदा य मे पादेसु, भणति य मधुर-भणिया— अज्जपुत्त ! पियं मे जं तुब्भे अम्हं पुणो अणह-सरीरा उवसग्गाओ [१६७]फिडिति(?) त्ति । मया भणिया— करभोरु ! तुह पसादेण [१६८]जयंतो रिवु-महागतो चुरिओ त्ति । एव भणिए पणमिउं अवक्कंता। गदं च मे तं दियसं रत्ती य ।

ततो बिदिय-दिवसे महया विज्जाहर-रायाणुरूवाए विभूतीए रन्ना सअंतेउरेण गाहितो हं **ससिलेहाए** पाणिं । पदोसकाले य वासघरे पवर-सयणेज्जगतस्स उवणीया मे सहीसु पासं **ससिलेहा** । सा य मे तत्थ विधिपुव्वेण वीसंभेऊण उवउट्ठा रइ-सयणे अभिप्पसादिया य मे रति-कम्मंतरेण उप्पादिदा मे भारिया । अभिरमंतस्स मे सुहेण समतिच्छिया रयणी। संगीत-सद्द-पडिबोधितो य गहिद-मुहधोवणो सुकद-पडिकम्मणाए पियाए सहिओ सत्तस्सर-सीभरेण सुइ-सुहेणं [१६९]अणुपूतोज्जेणं(?) गंधव्वेणं आपूरमाण-कन्नो अभिरमामि पियासहिओ । राया वि **महिंदविक्कमो** मम

विवाहकरण-मुइत-हिदयो विरइताए पाणभूमीए सविज्जाधरो पाणं उवसेवइ । महता तुरित-गीत-वाइत-रवेणं वड्ढति य दाणिं सरद-कालो । अवि य,

नीराइत-गय-तुरग-मुइत-गोउल-मउल-कमल-सर-विमल-सलिल-सोहो मदगल-मदगंध-वासित-दिसामुहो कुसुमित-वर-सत्तिवन्नपादव-केतकि-वर-कुसुम-सुरभि-गंध-लोभिय-[१७०]परिभित-भमर-मधुकरि-पहकर-परिगुंजमाण- गुमुगुमुगुमेंत-मधुर-सद्दालो कलहंस-हंस-सारस-कारंडव-कुलल-चक्कवाग- किन्नर-जीवंजीवग-सउणगण-मिथुण-मुइत-मण-परि-कोलाहल-सद्द-संकुल-कमल-कुवलय-वणंतो ।

इय एरिसम्मि काले **ससिलेहा**-सहिओ भवण-मंदरोदर-गतो गयं पि कालं न याणामि ।

अन्नदा य अहं ओहत-मण-संकप्पं विवन्न-दीण-वयणं किंपि सचिंतं **ससिलेहं** पेच्छामि । तमहं तहागदं दट्ठुं परम-संभंतो पुच्छामि— 'पिए ! किमेदं बालसूर-कर-भिन्नारविंद-सरिसं वदण-कमलं कमलमिव हिम-हदं मउलाइज्जंतं लक्खिज्जइ ?' तओ सा कहेइ—'अज्जपुत्त ! सुणह, अहं बालिया चेव **तिसिहर**-सुदेणं **हेप्फएणं** मग्गिया । पिअरेण मे भणियं— मम सुता अज्ज वि ताव बालिया वट्टइ, तं ण ताव अज्ज वि अज्जमेदं कस्सइ देमि । जहा पुण पत्त-जोव्वणा होइ त्ति ततो को अन्नो तुह सरिसो वरो होहिति । ततो गच्छंते काले मम पिउणा चारणसमणो **धम्मपालो** नाम अइसय-नाणी विणएणं वंदिऊण पुच्छितो—'भगवं ! को मे सुताए भत्तारो होहिति ?' तेण भगवता तुब्भे निद्दिट्ठा । **तिसिहरो** य तुब्भेहिं चेव मारितो । **हेफओ** य तुमे चेव स-रज्ज-गओ [१७१]धाडिओ, **दमणो** य तत्थ राया तुब्भेहिं ठविओ । तुह पक्खिया य विज्जाहरा सव्वे एगपक्खिभूता दुद्धरिसा **हेफयादी**णं । मया भणिया— पिउ वा मम पक्खे ण विज्जाहर त्ति । तीए भणियं— **मंदरदेव** [१७२]वियया ओ आढवेउं सव्वे वि उभय-सेढि-वासिणो संबंधिणो असंबंधिणो य तुह पक्खिण मोत्तूण **हेफगंगारस-माणसवेग** जं च वा एवं [१७३]गुणेज्जइ । तओ अहं कालेणं तुमं अवगया, तदो एदं कज्जं **हेफओ** जाणिऊणं तुब्भं च विज्जा-भंस-विदित-कारणेण परिभवंतो नियय-विज्जाधर-वंद-परियालो इहागओ मम पियरं भणइ— कीस ते मम पुव्व-दिन्ना कन्ना मम रिवुणो दिन्न ? त्ति । तातेण भणियं— न तुह मया देक्कारो कओ । तया वि तुह मया मज्झत्थ-वयणं भणियं, जहा, पत्त-जोव्वणाए कन्नाए को अन्नो तुह सरिसो णयातो(?)

अधियतरो जाओ । तेण भणियं—को एत्थ महि-मंडले ममाहिंतो अधियतरो ? तो देवेण भणियं— जेण ते पिया मारितो [१७४]**चुल्लओ** स ते तुमं च स-रज्जातो जेण धाडिओ सो मे अधियतरो वरो लद्धो ।

ततो सो मम विक्खाहिउदोसण(?) पवण-[१७५]बल-संधुक्किओ इव हुतवहो जहा पज्जलिओ भणइ य-पितिघातगस्स रज्जावहारगस्स य तिक्खुत्तावरद्धस्स एस इदाणि से सव्वं णिज्जादेसि(?) । तो(ता)तेण भणियं— विज्जा तवं ति काउं तओ तुमं मम जामातुगं परिभवसि, तम्हा परिभवाहि । णणु एदेण ततो अविज्जाधरेण वि तुह पिता विज्जाहर [१७६]मीसरो(?) निहदो चेव य मे तदा विज्जाधर पक्खो इदाणि पुण उभयसेढि-सयल-विज्जाधरराय-चक्काधिपती वट्टइ । किं पि अणुकंपतो इव सो तुह मरिसेइ। अह पुण अणुबंधं करेज्जा ततो सुवत्तं चेव अन्नेसु चेव विज्जाधरेसु अच्छि-सन्नाए च्चिय भणावेज्ज । तं अलाहि एदेण अद्दुरिएणं(?), उवसमाहि सो विणासिहसि णिप्पडियारे, अलं परिस्समेणं ति। एवं संपतं तादस्स वायाकलहो वट्टइ तुब्भे य अविज्जा णयामि । कद्दिवसं ति अदिट्ठो चेव सत्तुवसं [१७७]तउ वणमीहिंसि(?) । एदेण मे कारणेणं महंतो हियय-संतावो वट्टइ ।

तओ सा मया हसिऊण भणिता— पिए ! अलं अधिति-कारणेणं। उट्ठित-दाढो वि हु मइंदो मयाणं अगम्मो चेव, विसिट्ठ-[१७८]पाढिओ वि दिट्ठीविसो पत्तियदट्ठुरसंघाण(?) दुद्धरिसो चेव । एवगतो वि णाहं **हेप्फग**स्स अन्नस्स वा कस्सइ गम्मो ।

एयम्मि देस-काले आगता रन्नो सगासाओ [१७९]**मेहरायं**(?इ) नाम चेडिया। सा भणति—सुणह, **हेफओ** पुणो वि [१८०]वदमाणो रायाणं भणइ एवग्गदे [१८१]वि राय ति(?दि)ज्ज मम **ससिलेहा** । अलं कर(?ल)हेणं ति । रन्ना पुण भणिओ— हो **हेप्फग** ! अम्हं कुले एक्कसि चेव कन्नगाओ पडिज्जंति, ण विदिज्जयं । ततो सो एवं भणिओ [१८२]संतो उवसंतो उवसंतदप्पो संपदं ववहारं मग्गइ । रन्ना पुण हसिऊण भणियं— गच्छ, एवं नाम । कत्थ ववहारं [१८३]देमि[.....?] परिणिट्ठियं च **सत्तिवन्नपुर**-पत्थिवस्स **चंदसीह**स्स पुरतो होदु ववहारो त्ति ।

ततो राया किं पि कारणं सदेवीजणो चेव सहविज्जाधरेसु संपट्ठिओ गतो **सत्तिवन्न**पुरं सह **हेफगेण** । तं उवट्ठेह तुब्भे वि दोवि जणाइं विणोदत्थं

सरद-सिरि-सोभिदं **वेदड्ढ**-महिधरं पेच्छमाणाइं तत्थ वच्चेवेइ(?) । ततो मया भणिया— पिए ! कीस पुण राया सदेवीजणो गतो त्ति । तीए भणियं— तत्थ **सत्तिवन्नपुरा**सन्ने सरद-सिरि-सोभिदं पवरं विज्जाधर-वरुज्जाणं अत्थि, ववहारोतो(रातो?) परिनियत्तो तहिं उज्जाणियं काउकामो, ततो सदेविजणो गतो। तेण य कारणेण अम्हं पि गमणायादिसिद्धि(?) गतो राया य । तओ मया सरदसिरि-दंसणूसुएण भणियं— गच्छामो त्ति ।

ततो पिया ममं कंवेलाएदुं(?) णिय ककुंदर-णिसन्नं च काउं तओ णहंगणं समुप्पतिता खणेण य उवतिता **सत्तिवन्नपुर**स्स बाहिं सजल-जलधर-संकासे जलधरोदया ण(?णा)म धारयं ति उज्जाणे, तत्थ सीयल-सुरभि-वर-पंचवण्ण-पडिसारित-कुसुमोवयार-कलिते सहपियाए मुहुत्त-मेत्तं परिसक्किऊणं तओ पच्छा एगस्स कुसुम-भर-भार-हासरस्स महुअरि-गण-गीत-णादितस्स सत्तिवन्न-वर-पादवस्स उवरि परिसंठितो हं । भणति य मे तत्थ **ससिलेहा**— पियदम ! एत्थ मुहुत्त-मित्तं णिरूवसु एगागी चेव अच्छाहि । जाव अहं गुरुजणस्स उदंतं वहिउं आगच्छामि । मया विसज्जिया । गताए य तीए उक्कंठाविय-हिदयस्स ममं तं उज्जाणं रमणीयं पडिभाति । चिंतितं च मे- अलियमिदं भन्नए लोए जहा रमणेज्जा ससिहरा सलिलं वर-काणणाणि सरदो य । पिय-विरहियस्स एदे सव्वे वि निरत्थया होंति । तं एसो परमत्थो रमणिज्जो एव चिंतयंतो अच्छामि । पेच्छामि य तत्थ पढम-पवण-विघट्टित-परिसडिताइं सुगंधाइं दधितरवलाइं(?) मुत्ताहल-सयल-सरिस-दंसणाकाराइं सत्तिवन्न-कुसुमाइं । करकत-तणूसु सुईसु उवट्ठितासु उवरोवर-[१८५]घणावलग्गाइं मुत्तालताउ व्व जहा जत्त-विरइताइं अतीव [१८५]पसोधिताइं। ताणि दट्ठूण मम बुद्धी समुप्पन्ना जइ पुण अहमेताइं [१८६]वन्नसुकुतालीसुत्ततंत(?) संगहिदूणं कुसुमलतासु हारं संजोएज्ज, बंधूक-कुसुमेसु य तरल-संजोगं उप्पादेज्ज । खणेण य मया तेसु जहा-चिंतितो उप्पाइतो हारो जो सिरीए दूरओ उभामेति इदर-हारं ।

नवरं च एदम्मि देस-काले स-सही-जणा परम-तुट्ठा उक्कीरमाणी आगदा **ससिलेहा** बाल-रवि-किरणालिद्ध-सुद्ध-पंकय-विबुद्ध-सरिस-वदणा । हसंती भणइ— पियदम ! पियं वो निवेदयामि । जितो **हेफओ** ववहारे । देहि मम किंचि पियक्खाणे । सा य तं सत्तिवन्नकुसुम-भा(?हा)रं दट्ठूण परम-तुट्ठा भणइ— जइ अन्नाए वि ते काए वि भारियाए तुह स-हत्थ-गंथितो

एरिसो कुसुम-भा(?हा)रो गले ण कत-पुव्वो, तओ अहं एदं परिहेमि । अह पुण अन्नासिं पि तुमं एरिसाइं करेमाणो चेव ततोऽहमेतं ण मालिसि(?मालेमि)।

ततो मया भणिया— पिए ! एताणि चेव तणगलग्गाइं सत्तिवण्ण-कुसुमाइं दट्ठूण अज्ज पढमताए ममेस बुद्धी समुप्पन्ना, न मे कदाइं एरिसं कतपुव्वं ।

ततो तीए परम-पीति-संपउत्ताए से कुसुमभा(?हा)रो कतो गलए । आगदो य तत्थेव सपरिवारो संतेउरो राया **महिंदविक्कमो** । तत्थ य सयलं दियसं महता उज्जाणसिरि-सरिसं समुदयोवभोगं उवजीविऊणं ततो सहरन्ना सपरिवारेणं दइता-विउव्वित-विमाणारूढो गदो **वेदड्ढपुरं** चेव । तत्थ विधिणा मज्जित-जिमितो कत-पडिकम्मो दिव्वाभरण-विलेवण-भूसित-सरीरो पदोस-काले वासगिह-सयणेज्जे पिया-सहिओ रइ-वायाम-किलंतो सुह-पसुत्तो सीतल-वात-वीइतंगो णहतले गतो हीरमाणो विबुद्धो हं, पेच्छामि य समुल्लीणय-लोयणो खग्गहत्थं **हेफगं** हीरमाणं । परम-कुवितेण य मया वाम-हत्थेणऽवलंबित-सरस्स-खग्ग दाहिण-हत्थ-मुट्ठिणा निद्दयं पहतो से उत्तिमंगे तहा जह तक्खणा चेव कत्थइ विसम-विहलिय-पडित-खग्गो मुह-णयण-णासागत-रुधिर-धारो निच्चेयणभूतो विसम-मुच्छा-निम्मीलिद-सव्विंदिओ सह मया पडितो धरणिवट्टे ।

अहं पुण पव्वयं वेव तदावलंबी[१८७] ण ईसिं पि दुक्खावितो ण य मे सो तदावत्थ-गदो [१८८]णिया(?) पुणो अहतो मे खणमित्तं व आसासिऊण पडिलद्ध-सन्नो किच्छ-पाणोवगतो उप्पतिऊण पलाओ [?**हेफगो**] । अहमवि रयणीए तत्थ एगागी चिंतयामि—'को न दु मन्ने एस प्पदेसो हवेज्ज ?' एवं चिंतयंतो एगत्थ पदेसे दुमलतंतरासीणो अच्छामि रयणीए खयं उवक्खंतो, सुणामि य तत्थ चउद्दिसिं च महता जलस्स कलकला-सद्दं । तं च आकन्नेंतो जूहभट्ठो इव कुंजरो एगागी ताव ठिओ हं जाव उदिओ अरुणो सूरो य ।

॥ [१८९]**इति सिरि धम्मसेन-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए ससिलेहा-लंभो नाम एगतीसइमो परिच्छेओ समत्तो** ॥

पाठान्तर

१. ०ताणोग पु. । २. मं चत्ताइंमंन पा. । ३. आणत्ताओ पु. । ४. णिरिम्मा पु. । ५. नाममण्णि० पु. । ६. नोइसिरी पा. । ७. सद्धसज्झं० पा. । ८. कतिणिया पा.। ९. तेकिं पु. । १०. अवहरेह पु. । ११. महापिंड० पा. । १२. जावणोपायं हेउं गमागं पुरिसेताणि पसाय० पा. । १३. वदरि पु. । १४. कामी णं पु. । १५. वसेण पा. । १६. जस्स सायत्तं पा. । १७. तंणय पा. । १८. ०चागी पा. । १९. मया यणं संमंतो पु. । ★....★ चिह्नान्तर्गतः पाठः पु. प्रत्यां नास्ति । २०. कासीसुहह पा. । २१. खोवोणात्थे पा. । २२. आरूढ पा. । २३. वदणो पा. । २४. पगासिच्छिग पा. । २५. को पु. । २६. निग्गमागमा पा. । २७. अणिव्वयं पा. । २८. गोरवप्पभो पा. । २९. सुत्तावित्तो पु. । ३०. कुरु पा. । ३१. पसातो पु. । ३२. काले ति पा. । ३३. अतिवीसासेउं पा. । ३४. हारेज्ज पु. । ३५. कुच्छिदत्तं णं पा. । ३६. सणो पा. । ३७. सेवाए पा. । ३८. सदाय पु. । ३९. विसोहिदं पु. । ४०. धरं फीता पा. । ४१. मज्झिमवेसाणं पु. । ४२. संबाधेमाणी पा. । ४३. महाणस्सथणप्पदाणे पा. । ४४. वेलाण पा. । ४५. यथा मतं पधा पु. । ४६. सदुयेदं एदं पा. । ४७. पयदामि पा. । ४८. कतावगुंवममो कायि संजणिहिति पु. । ४९. अप्पहुयंप्पं तो व्व पु. । ५०. विन्हय पु. । ५१. सीरस पु. । ५२. मवुन्ना पा. । ५३. चुंबिज्जादि मण पु. । ५४. डज्झरे पु. । ५५. समूहावंडंदच्छय पा. । ५६. समुद्धय पा. । ५७. सामाइदुं पा., समोइदं पु. । ५८. कुवलय सय पु. । ५९. ०घरो गाढ पु. । ६०. समुप्पे वि० पु. । ६१. घावातालित पु. । ६२. पवेड्ढितो पा. । ६३. दिद्दय- पु. । ६४. लुग्ग-विल० पा. । ६५. सहिंतुअण पु. । ६६. घावणभराओ पा. । ६७. ण दिएवट्ठाइ वर- पा. । ६८. संदीवदु० पा. । ६९. परिसा पु. । ७०. वति पा. । ७१. सथाइं पु. । ७२. पट्ठियंभित्ते पु. । ७३. समीसंतो पा. । ७४. मय पा. । ७५. अइसमेति पु. । ७६. गुट्ठमणु० पा. । ७७. ततितिंजिया पा. । ७८. संदिदाप पु. । ७९. ०दिस्सए पु. । ८०. उउदि पु. । ८१. दीस्सई पु. । ८२. संज्झाए पु. । ८३. तीसु पु. । ८४. अंगुट्ठो पव्वस्स पु. । ८५. पजेत्ताणइं पा. । ८६. हुस्स पु. । ८७. सुहमेहमेहदिं पु. । ८८. पुत्थिया पु. । ८९. सुदीदुं मं घाणो पा. । ९०. इराइणो पा. । ९१. को य विया० पा., कायसियाल्लस्स पु. । ९२. भल्लवग० पा.। ९३. अट्ठा य द पा., अट्ठा यं दु पु. । ९४. लेहा यव० पा. । ९५. फुडे पा. । ९६. विभवे पु. । ९७. ब्भसरेण पा. । ९८. आणाभद्द सुसणो पा. । ९९. थण० पु. । १००. सन्नहीणो पा. । १०१. मंडावंवे पतिं पा. । १०२. अप्पकेसी नारी पु. । १०३. चणे य वहूइ पा. । १०४. फिहा पु. । १०५. सा पा. । १०६. तेण यरियभूवं पा. । १०७. सयमवु पा. । १०८. दो तिन्नि पु. । १०९. ०कत्ति पा. । ११०. होस्सो पा.। १११. मीदा पा. । ११२. सुहु० पा. । ११३. पत्थो पट्ठीण पु. । ११४. पडिककाडिमाधवन्नाणं पु. । ११५. ताइं त्थि प्पित्तण० पा. । ११६. ०धरोट्ठ णायणा पु.।

११७. कुलिणा पु. । ११८. दुव्वन्नो पा. । ११९. ०सुदर० पा. । १२०. छुडाइंतो पु. । १२१. पिवर पा. । १२२. मयुल्लुंद० पा. । १२३. समुही पु. । १२४. खरुपरुस० पा. । १२५. सिण्णा पा. । १२६. वेन्नतो पु. । १२७. नीरु वुदरय० पु. । १२८. वदूतभागा पु. । १२९. पिंट्ठियाउ पा. । १३०. तिंजाल-पु. । १३१. ववेसु पा. । १३२. सामुद्दवराणं पु. । १३३. चेव फलिता पु. । १३४. सेकंप्पिय पा. । १३५. मांसि पु. । १३६. णेह पु.। १३७. मंग्गा पु. । १३८. नह पु. । १३९. अण्णेसु पा. । १४०. गंगेपीपलं पलं चेव वोरमंसीणं पा. । १४१. दिय-सुहो पु. । १४२. चित्तपित्त गुहणाकारणिल्लं पु. । १४३. सीरोपइणो पा. । १४४. ०कारयणेसु पु. । १४५. गंधो पु. । १४६. कुदं पु. । १४७. खव्वितं पु. । १४८. विंट्ठित पा. । १४९. वंचिदेणं पु. । १५०. नीसास पा. । १५१. गहणं पु., नहगणं पा. । १५२. कामअसेत्त पु., आसत्त पा. । १५३. चत्तवे राय० पु., च राय० पा. । १५४. तो वस पुरिसा पु. । १५५. सकामेण पु. । १५६. वयणु क्कारणु पु. । १५७. सस सव्वत्त पा. । १५८. आणा० पा. । १५९. पुरि० पा. । १६०. अलिएण पु. । १६१. समुप्पज्जएणं पा. । १६२. ०चंदमज्झमो पा. । १६३. सोमलेहा पा. । १६४. कुदं० पु., कुंद० पा. । १६५. वे मम पा., व मम पु. । १६६. पुव्वानाहदुं पु., पुच्छनाददुं पा. । १६७. फडि त्ति पु. । १६८. जियंतो रिवु मम्हा गतो पा. । १६९. अणुपूतोदेणं पु. । १७०. परिलिंगितं पा. । १७१. धीजिउ पा. । १७२. विप्पयाओ पु. । १७३. सुणेज्जइ मुह पा. । १७४. चुल्लत्तओ पु. । १७५. -वण- पु. । १७६. मीसगेतिहदो थेवस्स मे पु.। १७७. उणमीहिसि पु. । १७८. पदि वि दिट्ठी० पा. । १७९. महययं पा. । १८०. घादमाणो पा. । १८१. व पु. । १८२. सभा उवसंतदप्प पु. । १८३. दोसि पा. । १८४. पडणाव० पा. । १८५. पसाधिताइं पा. । १८६. वन्नसुकुतीलासुत्तंतं सगहिट्ठणं पु. । १८७. तदावलंब ण ईसिं पा. । १८८. णिणायपुणो पा. । १८९. ।।छ।। वसुदेवहिंडीए मज्झिम खंडे ससिलेहा लंभो नाम अट्ठसट्ठिओ समत्तो ।।छ।। पु. ।

३२. रयणवदी-लंभो

ततो उदिते आइच्चे एग-दिसं संपट्ठिओ पेच्छामि य विविध दुम-संड-मंडित-तडं महाजलं वेग-कलकलारवाउलं कंचि महानदिं । नदितीर-ठिओ य पेच्छामि अन्नत्थ पदेसे नदि-तीरट्ठियं चेव दू[?र]तो [1]आलोग-गतं सजल-जलधर-संकासं वणसंडं पवर-पारगतं । नदीए वणसंड-मज्झे धवलाइं पासाद-सिहराइं सूरोदय-पकासिताइं पेच्छामि । तं च दिसं ते[?ण] णदी-तीरेणं संपट्ठिओऽहं ।

नवरं समंततो जलरुद्धाइ दिसि-पहाइं पेच्छामि [2]तत्थ कतो पि णीसरो[3] समुद्द-मज्झ-भूतं पिव समंततो सलिलं । चिंतितं च मे नूणं **हेफएण** कि(?क)म्हिइ णदि-विड-प्पदेसे पाडितो हं । पुणो य मे चिंतितं— किह [4]मम **वेदड्ढपुरा**[5]लो(?ओ) कोइ गवेसणं न करेइ ? अहो ! अहं सणाहो वि णाम अणाहो । अहवा कस्स रुसामि ? नूणं न सक्कइ पुव्व-कदाणं कम्माणं पलाइदुं । भवितव्वता चेव ममं जत्थ जाणेइ तत्थ तत्थ णेति, आणेइ य सुह-दुक्खाणि य जुत्तीए संजोएइ । तीए चेव य भविदव्वदाए आवारितो नत्थि कोइ काले मम गवेसं(?सणं) करेइ । एवं चिंतेमि ।

चिंतितं च मे 'इमं महानदिं एक्कतो बाहुसु अवतरामि' । एवं चिंतयंतो पेच्छामि य अदूर-देसागदं तम्मि चेव अंतर-दीवे[6] एक्कं कुस-वक्कल-नियंसणं विक्खिन्न-वियड-जडाकलावं सुरूवं तावसं एज्जमाणं, मे सबहुमाणं अवगंतूणं भणति— **'देव ! भरद्दाओ ते रायरिसी समासगु(?सीसग)णो तुह कुसलवत्तं पुच्छइ।' मया ससुर-बहुमाणेण ततो अंजली कता । भणितो य मे सो- 'कहय कहय, कतो आगच्छह ? किं रायरिसी-समीवाओ ?' तेण भणियं—'देव ! [7]तुब्भे मे रिसिगण-बहुलताए ममं दिट्ठमवि ण संजाणह । अहं तस्सेव सीसो विस्सभूती** नाम ।' मया भणिओ— 'कहय, किमागमण-पओयणं ?' सो भणति— 'सुणह, देव ! रिसिणो आणत्ति जेणऽभिन्नाणेण तुह मया संजइ(?यं)तायदण-जत्ताए निव्वत्ताए सव्व-सहिएण भट्ठविज्जस्स पुणो गोरि-

पुरच्चरणं उवट्ठियं तं च सि पडिवन्नमेत्तो चेव मया मुक्को, मुक्कमित्तो(?त्त)-परिवु(?ज)णो [?रिवुणा]अवहरिदो, कुवितेण य तेण णट्ठियं पुरच्चरणं । एदेणं अभिन्नाणेणं मम वयणं ते अवस्स-करणिज्जं ।'

मया भणिओ—'भणह, जं रायरिसिणो वयणं' ति । सो भणइ-'सुणह आणत्तिं । बहुविध साधणिज्जा य सोवसग्गा य किर भगवती **गोरी**, अप्पोवसग्गतरा य भगवदी **पन्नत्ती** । तं संपदं ताव अलं तुह **गोरीए, पन्नत्ति**-पुरच्चरणं पडिवज्जाहि । अवि य संजयंतस्स भगवतो जं आयतण-खेत्तं तं सभावा सोवसग्गं चेव । किं-कारणं, जेण संजयंतस्स वि भगवओ तत्थ महंता महाभीसणा य उवसग्गा आसि । तुह य तेण कारणेण तत्थ विज्जा-[५]साधणं ण इच्छामि । तं अवसं [६]जोगेणं चेव तुमं मम दिवस-देवसियं वत्तं वहमाणस्स अज्ज **हेफग**-खेत्ता[१०] इमं पुव्व-विज्जाधर-पसंसित-विज्जेण उक्कोसितं साधण-खेत्तं उवागतो, तेण य एयं नाऊण इह तु **हेफगेण** निक्खेवणं अहं पन्नत्तिधारओ तुह पुरच्चरणोवदेस-कज्जे सिग्घं इह विसज्जितो । किं-कारणं, एत्थ खेत्ते ति-रत्ने(?त्ते)ण चेव पन्नत्ती सिज्झइ, निरुवसग्गं च [११]इदं खेत्तं ति।'

ततो मया भणियं—'सोम ! किं नामिया खलु एस णती ? एदं वा किं नामधेयं खेत्तं ? ति । सो भणइ— 'एसा **वेदड्ढ**-पायय-पवाहिणी [१२]**साणयपती** नाम महानदी, पेच्छसि रयत-धातु-संसग्गीए इमं पयतिधवलं जलं वहइ । एदं च जं पुरत्थिमेणं वणसंडं दीसइ महासोत-सिहर-पडिभित्रं लक्खिज्जइ एतं **संनिहित-विज्जागं** नाम सव्व-विज्जायतण-ठाणं । एदं पुण नदि-अंतरदीवं **हंसदीवं** नाम पुव्व-विज्जाधराण विज्जा-साधण-ठाणं अलंघनीयं य महिगोयराणं ।

एवं तेण कहिते मम परा तुट्ठी जाता । भणिदो य मे सो— भगवं! दिक्खेध[१३] मे पन्नत्ति-पुरच्चरणेणं ति ।

ततो तेण परितुट्ठेणं गोरोयण-हरिताल(?लि)यासु तेण सयमेवाणितासु समालट्ठो हं निडाले, अंस-सिहरेसु य सिद्धत्थ-चूडिया-सहियं च मे बद्धं मे दाहिणे हत्थे तेण धवल-कंकणं [१४]नियत्तियभत्तेणं(?) य उच्चरिता ममं तेण विज्जा । मया वि गहिया विणएणं । ताहे अवतारितो हं तेण उत्तरत्थाणं णदि-सलिलं । भणति य—'एत्थ [१५]ते [१६]लंपितत्थतदपण(?)मोवोवगदेणं मणसा विज्जं जवंतेणं तिरत्तं अच्छिदव्वं । ण य ते अणुकूलाणणुकूलेसु विविधेसु

उवसग्गेसु खुभितव्वं । तिरत्तातिक्कमे य सिद्ध- विज्जस्स ते अहं पुणो [१७]पासं आगच्छेस्सं' त्ति ।

एव भणिए तेण ठिओ हं पुव्वाभिमुहो निच्चिट्ठो लंबित-भुओ । सो य ततो अवतरिदुं जहागदं पडिगदो । अहं पुण चंड-जल-वेग चीजी(?वीची)-विच्छलित-देहो पडिहत्थ-मच्छ-कच्छ-भवरमरक[१८](?)-तुंड-विघट्टितो विज्जं जवंतो अच्छामि । गदं च मे दं(?तं) दियसं । अत्थमितो य दिणयरो । संपत्ते य पदोस-काले, [१९]वेगव(?) खणोदित-निसीयर[२०]-तिमिरापीडाए निसाए जल-मज्झे विवंचि-वेणु-वीणाणुवत्तीए अतीव सुइ-[२१]विसय-भरं जुवतीणं कोमलं गीत-सद्दं सुणामि । पेच्छामि य छेय-पुरिस-संपाडितं सुवेसाभरण-तरुण-जुवति-पडिपूरिदं अणूकूल-दिसोतसमायड्ढियं नावं एज्जमाणं । सा य संपत्ता मम सगासं, धरिदा य निच्चला णाविएणं । नवरं च जुवतीजण-परिकिन्ना अवतिन्ना ततो नावातो सुरूवा तरुण-जुवती । सा य मे पुरतो जल-मज्झे अंजलिं काऊणं पणता भणइ—'अज्जपुत्त ! अहं वो **रयणवदि**-रायकन्नाए किंकरी **कणगलता** पाए पणिवयामि ।' संजाणिता य मे वायाए अवर **रयणवति**-अद्धदेह-समाणा इमा **कणगल**ता संपत्ता । चिंतेमि य कत्तो एत्थ वेदड्ढ-पायवस्स [२२]पणादीवगमणं(?) **कणगलता**गमणं वा विज्जासाधणं ? विघातजणणी विभीसिया हु एसा। सा य सपरिवारा सप्पणामा ममं भणइ—'अज्जपुत्त ! सिद्धं वो विज्जा-साधण-पुरच्चरणं । आरुहध णावं' ति । मया चिंतितं साधु कदं अपुव्वा हु एसा सा विज्जा जीय [२३]सिद्धी दिणं वंदुरभिज्झति(?) तओ तं विभीसियं ति कादुं विज्जं जवंतो अच्छामि । पुणो य मे सा भणति-'सामि ! सव्व-विज्जा-पहाणा **रयणवति**- विज्जा तुह सिद्धा, सा ते उक्कंठा-भरिता पहं पलोएमाणी अच्छइ । तं एस परमत्थो, न वयं बिभीसियाओ । आरुहह नावं, वच्चामो' त्ति । न याहं किंचि तीए पडिवयणं देमि । तओ तीए [२४]संसत्ती(?)जं जणाए हियपुरं(?) ससहियाए[२५] अपारेमाणो पडिमं र(?)खुभियं आरुहिओ नावाए । तत्थ य [२६]मत्थडे(?) पल्लंके तार्हि[२७] पावितो हं । नवरं नावागतो वि संतो विभीसिय त्ति काऊण सुयामि। परिसंठिता य ममं पल्लंक-गदं अवरोवरेऊण **कणगलता**, सेसाओ जुवतीओ तेणेव कमेणं मधुर-तंती-णिणादाणुवत्तीए इमेण अत्थेण गाइदुं पयत्ताओ, जहा—

जो गहियं विणिच्छंतो[२८] दिट्ठविलीओ [२९]संसितो

[३०]णेच्छइ वाघारि(?) पुणो गंतु(?) [?.....]

इय तं तहाविहजं जं [३१]गणियारी पुणो पवेसेइ ।
उवदेस-गुण-समत्था सा भणदि सिक्खिदा नाम ॥

एदं च गीतं सोऊण चिंतितं न एस उवसग्गो, खु रायचरिद-निद्देसेणं मम **रयणवदि**-संसियस्स संतियं चरिदं एदासु कित्तिदं [३२]होणहु(?) एस पच्चंतो चिंतयामि, पडिसोदं व णदिं पादवसेण जहागदं चेव महाजवा पडिताणा[३३] वा समूसवित सीतपडा गरुलवधू विव तरिदं पधाविता दाहिण-पच्छिम-दिसाभागं भयमाणी अतीव य सोताण तंति-ताल-गीत-वाइत-सद्देहिं [३४]णपदो(?) पदोसे जल-मज्झ-गदो निसीह-वेलाए अदीव हिदय-पवरो । भणति य ममं जं घाड(?) संबोधेमाणी **कणगलता**-अहो ! अच्छेरयं जं अज्जदुहिताए पुन्नेसु विज्जाधर सा(?लोग)-गओ वि अज्जपुत्तो पुणो वि इहमागतो ।'

ततो मया चिंतितं 'जइ एसा **कणगलता** ततो कह एसा वियाणति जहा हं विज्जाधर-लोगं गतो ? अवितहं विभीसिया एसा । तं [३५]गच्छ(?) ण छलेसिमि।' एवं चिंतयंतो तुसिणीओ अच्छामि मणसा विज्जं जवंतो ।

पुणो य मे **कणगलता** भणइ— 'अज्जपुत्त ! अलमिदाणिं एदेण निच्छएणं, न य एत्थ विज्जा ण य पुरच्चरणं, मुयह मोणं । पयतित्थो होऊण सुहाइतप्पा पारेह खंडलड्डुएहिं' ति ।

तीए एव भणिए मम बलियतरा संका समुप्पन्ना—णियमा एस विभीसिया । ससुरेण य मे **भरद्दाएण** साभिन्नाणो विज्जा-पदायको तापसो विसज्जिओ, एसा हु भणइ सव्वं पि निरत्थयं एदं । अतएव एसा विभीसिया। ण मुयामि मोणं ति ।

एवं [३६]च णिज्जमाणो पडिसोत-जलेण नावाए पल्लंक-गतो णादि-चिरेण(?चिरेण) एगम्मि णदि-तित्थे अवतारितो हं । अवतारिज्जंतो य मि तत्थ परियारितो हं आयुधे य लोएणं कत-पणीवादेणं । नवरं च तत्थ एगो पुरिसो कओ वि धावंतो आगतो य सो तेसिं मम पास-ठियाणं भणति—'सुणध भो! रन्नो आणं । एण्हि ण सुंदरं णक्खत्तं पवेसस्स, सुए गुरु दिवसे उदिताइच्चे रोहिणीसु पविसीहिदि **रयणवदि**-भत्ता इहेव वणं, अज्ज सारक्खध' त्ति । तेहिं 'तह त्ति' पडिवन्नं । ण याहं पडिमं मुयामि, ण य मे पासादो खणमवि

अवसरदि स-सहीजणा **कणगलता** ।

तह य मम अच्छमाणस्स पभाता रयणी, उदितो य आइच्चो । उदिते य आइच्चे समतिच्छियाए रोद्द-मुहुत्त-वेलाए राय-सगासागताणं पुरिसाणं वयणेहिं पुरिसेहिं तहट्ठिओ चेव मंगल-जय-सद्दाभिणंदितो आरुहितो हं कणगमइयं सिबियं । पासतो य मे बाल-वीअणी-हत्थ-गदा **कणगलता** ठिता। पुरित-रव-गीद-वाइत-रवेण य अत्ताणं **वाणारसीए** णगरीए पवेसिज्जमाणं पेच्छामि । पेच्छामि य णयरिं ऊसितज्झय-विजय-वेजयंती-कुसुमदामावभासितं चंदण-कलसाकुलं णड-णट्टग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-पेच्छणय-सहस्स-संकुलं च पुरिं । चिंततिं च मे— किं मन्ने सव्वप्पवा हं **वाणारसिं** आणिदो हवेज्ज ? किं खु इदाणिं वट्टइ ? पसंसति य मे रूवं नागर-जणो पविसमाणस्स, मुंचति य मे पासाद-भवण-गवक्खंतर-संठिता[?ओ] णगर-विलयाओ कुसुमवासं, अचिरं महदा य जण-समूहेसु अभिथुव्वमाणो नीतो हं णरवइ-भवणं । स-णगरंतेउर-पउर-सहिदो य राया **मित्तवाहणो** अब्भुग्गतो मम य अग्घेणं । मुक्क-हिदय-वितक्केण य मे ताहे सिवियं मोत्तूण अभिवादितो णरवती । तेण य अवतासेऊण सिरे अग्घाईऊण य भणिदो हं—'देव ! जं मया अजाणमाणेण निट्ठुर-पडिकूलं च तुह ववहरिदं तं तुमे उत्तम-पुरिसे ण हिदए धरेदव्वं । अहं ते आणत्ति-किंकरो ।'

एवं भणंतेण हत्थे घेत्तूण पवेसितो अंतेउरं । तत्थ य खणमेत्तं आसणे निसीयावेऊण अभिवीसासेउं च मधुर-वयणेसु तओ विसज्जितो मि कन्ना-[अंते]पुरं । ततो हं अभिवादिओ गुरुजणोपदिट्ठो **रयणवति**-सगासं । अह सा मम विरह-सोय-पेल्लिता उवासतणु(?) खाम-सरीरा सहसा मम दंसण-समूसवित-रोमंचा पगलित(तं)सु वलिकन्न(?) लोयणा सरभसुद्धाइता पणमंती पिया **रयणवदी** मया धणियं अवतासिता, परिसंतिता मधुरं पियं च भणंतेण, णादिचिरेण मोइदा मे सोगं । णरवति-संदेसेण य विधिणा मज्जित-पसाधितो भुत्तो मि पच्छा[३७] भोयणं । भुत्त-भोयणे अ पियाए सह सुह-दुक्ख-कहासु गंधव्वेण य आपूरमाण-कन्नो, पुव्वावरण्ह-काले य आगदो राया **मित्तवाहणो** मम सगासं, निसन्नो य मे पासादो कणगपीढे, भणति य—देव! सुणध ममं अन्ताणकरं अविणयं ताणं च । अवि य, एसा हु **रयणवदी** कन्ना पुव्वं चिय नेमित्तिणा अद्धभरहाहिव-पिउणो भारिया आणत्ता । तं च अजाणमाणा अवियारित-पदत्थाण कस्स य पत्तजोव्वणं पि य पच्छामो पविट्ठो य तुमं

कन्नाण पुरं, अवमाणितो य सि मया [३८]प्पा(?घा)तिज्जंतो य सि अत्ताणो अम्हं च पुत्तेसु अवहरिदो सि केण वि । किंतु कन्नाए दरिसणं जायं ति महंता मे एस चिंता । ण य पुण जाणामि को वि एस, किं गोत्तो वा, वि(?किं) कन्नंतेउरं पविट्ठो । अन्नदा य **सुपाससामि**-जिणायतणे कतो य अतिसय-णाणी **धम्मयसो** नाम अणगारो समणो समोसरितो । सो य मे पइरिक्के विणएण वंदिऊण पुच्छिओ— 'भगवं! केण मन्ने **रयणवदी** कन्ना विहेट्ठिता ?' तेण भणियं— 'जो से इह भविओ भत्ता होहिति तेण सह संगता आसि । सा सयमेव णात-परमत्था ।' मया भणियं— 'भगवं ! तीए पुव्वं अद्धभरहाहिव-पिता भत्ता आदिट्ठो । साहुणा भणियं— रायं ! सो चेव सो । मया णीदं(?) पुच्छिदो-भगवं ! किं कुलो ? जो पुण सो कत्तो वा इहमागओ ? तेण भणियं—'**हरिवंस**-कुल-संभवो हु एसो पच्छन्न-रूवो कारणेणं पुहविं परिभमइ। ण य ते तस्स पडिकूलं एदं [र]हस्सं कस्स वि परिकहेयव्वं । जं पुण पुच्छसि 'कओ आगतो' त्ति, तं सुणह—

अत्थि ज्झंप(?) णदि-संसियं **कणगकूल**-दारासन्ने **संजयंतस्स** अणगारस्स **धरण**-णागरायस्स निम्मवियं आयतणं । एत्थ सो तस्स दवसग्ग(?)-कारणं विज्जाहर-पउत्तं **धरण**-नागरायागमणं विज्जाछेदेणं च पुणो य मज्ज(?ज्जा)ता-ठावणं च विज्जाधराणं संजयंतस्स य नाणुप्पदि-परिनिव्वाणाइं चरणेण य तस्स भगवओ आयतण-ठाणं वरिस[३९] वड्ढमाणग-जत्ताए य तप्पभिदिं सव्व विज्जाधराणं गमणं, तं सव्वं परिकहेदुं भणदि य तत्थ इदाणिं जत्ता आसि सव्व-विज्जाधर-समवायो य। सो **रयणवदि**-भत्ता पाएण तत्थ सव्व-विज्जाधर-राईणं जामाता वट्टति, तेण य विज्जा-साहणं कदं आसि । तयणु से[४०] परिभट्ठो उ निव्वत्ताए य **संजयंतस्स** जत्ताए तस्स भट्ठविज्जस्स ससुरेण विज्जाहर-रायरिसिणा **भरद्दाएणं** कंचणगुहा-दुवारे वत्थव्वेण **सच्च** णाम सीस-सहिदेण गोरिविज्जा-पुरच्चरणेणं दिक्खितो आसि। तेसु पडिनियत्तेसु रिवुणा विज्जाधरेणं अक्खत्तो इमं पदेसं नीदो, जुज्झमाणो य इह **मयूरसेणा**-सयंवरे पडिओ सो च्चेव णे धरितो इह संतो य [४१]अभिच्छंतो य अनिच्छंतो कन्नाए बालमरण-ववदेसेण अंतेउरं पवेसिओ। अवि य, अविदितो सो कन्नाए जह उत्तिम-पुरिसो त्ति **मयूरसेणाए** से कहितं। ततो तीए सो पवेसिओ, तुमे य गिण्हावितो य अमारिज्जंतो विज्जाधरीए हरिउं **वेदड्ढपुरं** चेव णीदो । तत्थ तेण **महिंदविक्कम**-सुता **ससिलेहा** परिणीता । संपदं तीए सह अभिरमइ।'

तं च मे सोऊण चिंता जाता-'अहो मया असमिक्ति(क्खि)तकारिणा कन्नाए [४२]सयमागओ भत्ता विराधितो ।' एवं चिंतयंतेण मया पुणो पुच्छिओ मुणी- 'भगवं ! होज्ज कोइ तस्स पुणो इहागमो ?' तेण भणियं— सो कत्तिय-मास-सुद्ध-चउद्दसि-रादीए ततो पुव्व-वेरिणा **हेफग**-विज्जाधरेणं हीरमाणो इतो आणिज्जिही ति । तं च पहणीहिति ।

तओ तेण सह इतो अइ दूरे उत्तर-पुव्वेणं **वाणारसी**ए अड्ढाहिज्जेसु जोयणेसु पियंगुसंडस्स पुरतो अदूरे **गंगानदी**ए अंतरदीवे **हंस**-नामंके पडिहिति गच्छति य ततो उप्पइदुं रिवु, सेसो पुण तत्थेव रयणीए अच्छीहिति। तओ हं सोऊणं परम-तुट्ठो जाओ । आसमुज्जाण-पदेसवासी य मे तावसो मम बाल-वयंसो **विस्सभूती** नाम सो य मे अणागद जाव तुह कज्जेण लद्धवीएण(?) परिघट्टितो । कहिताणि य से मया साधु-कहिताइं अभिण्णाणाइं, सो य [४३]अणावजेदग्गदो(?) **हंसद्दीवं** तुमं रक्खंतो अच्छइ, पडिदो [४४]सि(?) तम्मि साधु-भणिते राति-समए, दिट्ठो य पच्चूसे **विस्सभूइणा**, तेण य तुमं माणम(?) अन्नातो णासिहिति त्ति अम्ह णिवेदणा-हेउं साधु-कधितेहिं अभिन्नाणेहिं विज्जा-लोभितो विज्जा-साधण-कज्जे अजाणमाणस्स य तुह वंचणा-हेउं विवरीता नूणं वि वणसंडखेत्ताइं तुह कधिताइं। तुमं तत्थ ठवेऊण तेण तुरिदं इहमागंतूण मम निवेदितं । सो य मे तुट्ठेण पूइतो आसासितो(?ता) य मे **रयणवदी** तुह विरहेण दुक्खिता । **कणगलताए** य महाजण-सहिताए ससहिवग्गाए ममादेसेणं गंतूणं णावाए इहाणिओ सि । दिट्ठे य तुमम्मि स-नगरस्स मे अज्ज महंतो आणंदो जादो। तेण[४६] भणामि ते जो एत्थ मया अयाणंतेण तुह दंडो आणत्तो आसि, तं [४७]मरसिव(?ध) त्ति ।

ततो मया सदक्षि(?क्खि)णेण भणिओ(?यं)— 'नत्थि गुरुजणे अवराधो त्ति ।'

ततो निग्गदो राया, ठितो य वासघर-दुवारे **कणगलता** एवसुरतासव्व(?) तप्पिदुं काउं । ततो पच्छा मया तत्थेव आणाविता **मयूरसेणा** । सा वि मे पणमंती मम विरह-दुक्खिता परिसंते(?संठवे)ऊणं मोयाविदा सोगं । एवं अहं तप्पभितिं पिया-जुवल-सहिओ ण्हाण-विलेवण-णव-णाडयविहीसु य समक्खिप्पमाण-हिदयो गमेमि काणि वि दिणाइं ।

अन्नदा य मम राया सद्दावेऊण भणइ—'सुणह, अम्ह सगोत्तो

विहारवेखे(?) रायपुत्तो **मगधाधिवो** अद्ध-भरहप्पहाणो **कुसग्गपुरे** संपदं राया **जरासंधो** नाम । सो अम्हं सयणो तयस्सी(?) य । तेण य सुयं जहा **रयणवदी**-कन्ना भत्तारं उवगता । ततो तेण सबहुमाणं लिहिदं, जहा, विसज्जेहि मे सह जामादुगेणं **रयणवदिं** दट्ठुमिच्छामि । तस्स वयणं अतीव गरुयं, तं गच्छह तुब्भे सह वधू-खंडेणं' ति । मया तह त्ति पडिवण्णं ।

ततो सुंदर-दियसेसु कत-पत्थयणो महता करि-तुरग-रहवर-जोहवग्ग-सहिओ **कणगलता**ए सह **रयणवदी**ए संपट्ठिओ परिमे(?) **मयूरसेणा** एवं पी(?पि)या **रयणवदी** गयारूढा सह परियारियासु । अहं च से पुरतो चक्खु-मुहालोग-गओ तुरगारूढो महता बलेण संपट्ठितो हं **जरासंध**-संतिएहिं दूदेहि पदो(?णीदो) विविधेहिं गंधव्व-कव्व-कविताइं वागरण-छंद-[४९]सोविस(?)-सत्थकहा-पेयालणेसु य पंडिद-पुरिसुच्चारितेसु अक्खित्त-हि[य]ओ णादि विगट्ठेहिं(?) पयाणएहिं गदो, गदो हं पियंगुसंड-मस्से(?ज्झे)णं, कत्थइ **गंगं** अच्चियमाणो कत्थइ दुस्सील-महिलियं पिव कुलज्जो जहा दूरतो परिहरंतो उज्जय-मग्गवसेणं कत्थइ [५०]उत्तरकूलेणं दाहिणकूलेण वि कदाइ कमेण समतित्थिओ कंडवगवत्थुं अंबुदद्धिलं(?) संनिवेसं ।

एव य वच्चमाणो एगत्थ य निविट्ठो हं **भागीरहि**-तीर-गदे गहण-काणणोदरे महता वीसत्थेण खंधावार-निवेसेणं, तत्थ य वीसामिय-करि-तुरए य देसे कतो मज्झन्नो(?) य तत्थ य ण्हात-विलित्तो नियय-जण-परिवारो भुत्त-भोयणो पडिमज्झे कत-कुसुमोवयारो सह पियाए तं नितिवमीसितेणं(?) सुत-सुहेण गंधव्वेण उवगेज्झमाणो सुहं अच्छामि । पच्छाऽवरण्हकाले य वासकसज्जो मम कंधावारो विसत्थो चेव अब्भाहतो सकल-तक्कर-सत-सहिदेण **सुरसेणग**-सेणावतिणा पच्चंतिएण वीसत्थप्पहतो(?) वियडफडोरुगो मम संतिओ कंधावारो दिसोदिसिं पलातो । अहं च सरभसक्कंतो असन्नदो(?द्धो) चेव वणेय(?) तुरयारूढो बद्धखग्गो पूरितकोडंडो उबद्धवत्थाभरणो पडिओऽहं तक्कराणीए।

केइ पाइक्क-पुरिसा मम संतिया **रयणवदिं** परिवारेऊण अ ठिता । मम तक्करेसु सह जुज्झमाणस्स आकन्नाकड्ढिद-सरं कड त्ति मज्झे भग्गं धणु। ततो मया अ वि सातपत्तेणं जमदाढ-सन्निभेणं ओक्करिसं खग्गं, तेण य तक्कर-विमुक्काइं छिंदंतो छिंदामि तक्कराणं विसमावसिताइं(?) । भग्गं च तक्कर-बलं

निराणंदं तमहं अणुधावंतो दप्पेण दूरं अभिपतितो । ताव य सूरो उ वच्छमो (?पच्छिमो) वट्टइ। तह य पिट्ठतो मे खग्ग-पहर-संतावितेणं एक्केण तक्करेणं उल्लावितो—अरे महामुक्ख ! महमदेण वसीकद ! किमिदाणिं जुज्झसि ? जस्स कएण जुज्झसि सा वि तो अन्नतो हिदा रायसुता । तं च वयणं सोऊणं सहसा संजात-सोगसंको वेगेण [५१]अच्छित-दु(?तु)रंगो निउत्तो हं, गदो आवासं। पेच्छामि सुन्नं रणरणेंतं आवासं ति ण य पियाए । चिंतितं च मे—कट्ठं कतं, हिदा य **रयणवदी** । इमो अत्थमिओ य दिणयरो । कं णु दिसं विमग्गामि ? दिट्ठो य मया **रयणवदि**-संतिओ आयरक्ख-माणूसो घरेक्क(?)परिहाराभिहतो थोवावसेस-जीवितो रणभूमि-पडिओ । तेण य मे कहं वि किच्छाए कधितं, भणदि— देव ! धाव सिग्घं, एसा हु **रयणवदी** सह **कणगलता**ए तुह पत्थोप्पय-पडिएणं बितिय-तक्कराणीएणं निज्जइ, अदूर-देसे हुं संपदं वट्टइ । तुह पढम-तक्कर-वंदाणुआरिस्स [५२]अवक्खोडेण बिदियं तक्कराणीयं इह पडियं, **रयणवदि** [५३]आद(?य)-रक्खसो(?ओ) कालं गतो । ताव य ताण विसाएण ते च भीरुजणो जहा रयणपतिमिरेण(?) च्छणं णहंगण दिसी पहाय ।

ततो हि(?हं) परम-विसादमावन्नो-अहो पसा(?मा)दमिति भणिउं महदा दुक्खाहदो दुतं चोर [५५]कताए(?) पधावितो, सो य मम तुरंगो तक्कर-बाण-प्पहर-सल्लिओ [५५]सीयमाढत्तो(?) सहसा पडिओ कालगतो य ।

ततो हं परम-दुक्खितो अंधकाराए रयणीए पादेसु विसम-खाण-कंटक-तण-गुविल-गुम्मावला [५६]सच्छते(?) अडवि-मज्झे दूरं वीतीवडिओ । न य मे चोराणीयं कतो पि समासादिदं । उप्पध-प्पवन्नो व अदेसिओ अग्गोइंदे(?) दिसाए बहूइं पहावितो । ततो हं तत्थ भीमंधयाराए रयणीए विविधाणं सावदाणं वणगताण य रुताइं आकन्नेमाणो विसम-रन्न-मज्झेसु परिवदेमि(?) मूढ-दिसाभागो य एगम्मि गिरिवरे सिलातल-सयणे उव्वातो णुवन्नो हं [५७], ण य मे **रयणवदि**-हरणाभिदुतस्स[५८] णिद्दा समल्लियइ ।

ततो पभाताए रयणीए एगदिसाभिमुहो पयातो हं, पेच्छामि एगम्मि य पदेसे समंततो टंक-छिन्न-सेल-कडक-पडिगतो एग दुवारे निग्गम-पह-संनिवेसियं विसम-गइंद-संनिरोधण-सहं विसमालाणखंड-खीण-परियालिदं गयाणं सुहप्पवेसं दुक्ख-निग्गमणं महावारिं(?रं) पेच्छामि, तत्थ य विविधाइं गयग्गहणोवकरणाइं पवर-परिच्छद-[५९]वालुसलाका [६०]रूईया सगजामल-

अंकुस- वरत्तादीणि उवनत्थइ, पेच्छामि पासे इ से एक्कं गणियारि-सिक्खा-वेक्खण-वियावडं विविध-पुरिस-परिवारं महामणूसं पेच्छामि । सो य ममं दट्ठूण सपरिवारो अब्भुग्गदो कतप्पणामो य ममं भणइ— देव ! को सि तुमं? देवो दाणवो, गंधव्वो विज्जाधरो वा ? सयं पिव भगवं मगरद्धओ ? तुमं कदो वा इहमागओ सि ? किं निमित्तं वा दीण-मण-वदणो दीससि ? किं न हु ते विज्जाधर-पुव्वयस्स तुह विज्जाओ भट्ठाओ जदो पादेसु महिं परिब्भमसि ? दीण-वयणो य दीससि ? त्ति ।

तओ मया तस्स कधितं— अहं खु पयइ-माणुसो केवलं तु मम सत्थेण पयातस्स चोरेसु विणासिओ सत्थो, तम्मि य संभमे जुज्झमाणस्स किह वि मम अद्धा चेव अवहिता मे चोरेसु भारिया । तीए मग्गं पधाविओ रयणीए मुक्कपहो परिब्भमंतो कमेण इहागतो हं । तुब्भे य इदाणि कहेह कस्सेसा हत्थि-गहणी ? ।

सो मे भणइ—एसा **काकंदय**स्स रन्नो **भाणुचंदस्स** ।

एवं भणंतेण भणितो हं तेण— सामि ! णिसियध वीसमह मुहुत्तं ति ।

तओ हं तेण सयमेव-विदन्नाकुलीए निसन्नो, दिन्नं च मे तेण अडवि-वास-सरिसं आतिधेयं । तं च पडिच्छिऊणं **रयणवदि**-हरण-विमुहितो वि मुहुत्तमेत्तं आससिउं पयत्तो । पुच्छितो य मे सो तरुणो— सोम ! कतराओ दिसाओ एत्थ हत्थीण आगमो ?

तेण भणियं— सुणह, अत्थि इतो पुव्वाए दिसाए **काकंदी** नाम नयरी, णवम-तित्थयरस्स भगवतो **पुप्फदंत**सामिस्स जम्मभूमी । तत्थ संपदं राया मम मातुलो **भाणुचंदो** णाम । तत्थ य सतामत्तो(?) संकितो (?) राइणा **बिंदुगो** नाम महा-गइंदो। सो य सदा सुस्सीलो अ विवेउ[६१] रन्नो अ वल्लभो। सो कदाइ दियसतो रण्णो घरातोज्ज-रवेण बोधित-पयंत-दप्पो आलाणखंभं भंजिऊणं सुमरिद-सच्छंद-वणवास-सुहो पहावितो जवेणं, तेण बहुजणं विणासेंतो इमं परिचुन्नं[६२] वणं पविट्ठो माणुमग्गइ(?) पहावितो नियय बलाणि इह पत्ताणि । इमं च विसयप्पयारं समंततो पागार-संठितं महिधर-विवरं पविट्ठस्स समंततो निरुद्धाइं दुवाराइं । तस्स य गहण-निमित्तं इमा [६३]आवारी निरुविता। ण य सो दिट्ठदेसो गणयारीणं [६४]वारीणं वारीयवा(?) वसं उवेति। इदाणि अहं च तस्स रन्नो भागिणेओ **सुसेणो** नाम । तओ तेण रन्ना भणिओ

हं— **सुसेण**! जइ मे एस गइंदो किह वि न घेप्पइ ततो मम रज्जेण वि अलं। तस्स निबंधेण अहं सयमेव इहागतो । ण य केण उवाएण सो हत्थि गहणमुवागच्छइ ।

ततो मया भणियं— सोम्म ! अत्थि अहं दीससि(?) हु सो [?ह]त्थी इतो खंधावार-गलिओ आगच्छइ एत्थ वणं ति ।

ततो सो भणइ-देव ! दीसइ णागच्छइ पुणग्गहणं ।

भावय(?ताव य)आगओ तत्थ एक्को पुरिसो । तेण भणिओ **सुसेणो** ममं भणइ— सामि ! विसज्जेह ममं, जा हं लोगस्साइ जव्वं(?) करेमि त्ति।

मया भणिओ— अहमवि तुमे सह हत्थि दट्ठुमिच्छामि ।

तेण भणियं— अणुग्गहो मे एस, उट्ठेह पेच्छाव त्ति ।

ततो उट्ठितो हं । तेण सह पेच्छामि तं मदगलं अदीव-हिदय-हरणं। अवि य—

सो गइंदो पमत्त-गओ रवि-विसाल-करवाल-वीओ ।
दग-सप्पसत्थ-चतुर-रुइर-उन्नद-पुव्वकाओ त ॥
सहिताणुवट्टि विउल-पट्ठि-वंसो, परिणद-कदंब-
कुसुम-सरिस-मधुगुलिय-पिंगलच्छो ॥
सललित-वल-धूव-विउल-कन्नवालस्स
मणवरद(?) वा धीर-गंभीर-सुहडंबरो
एला-कुसुम-सुरभिगंधगंधी धवल-पीत-बिंदु-
गलितग-चित्तल[५५]-संचारिओ इव रयतमयो
महा-महिधरो विसाण-वर-विवर-लंबित-अचल-सूमाल
सकल-विउल-कमल-कोमल-कलावं नलिणिमणुकड्ढमाणो ।
एवंगुणजादीओ दिट्ठो य मे सो गइंदो ।

तं च मे दट्ठूणं भणियो **सुसेणो**—सोम्म ! धिर्दि लहह । अहमेदं कुंजरं गेण्हामि त्ति ।

तओ सो परम-मुदितो भणइ— देव ! जदि एवं ततो किं उवकरणं काणि वा उवकरण-दव्वाणि केवदिओ वा लोगो आणेज्ज ? त्ति ।

मया भणिओ— अलमन्नेण सव्वेण वि, केवलं का य सुघोसा सुलक्खणा य महती मधुरस्सरा य कतो य वीणा आणियदु ।

एवं च भासमाणस्स तं मम वयणं सोऊण मणूसेसु तस्स संतिएसु भणियं— जइ तुह एरिसा सत्ती, तओ ते कीस नियय-भारिया हीरंती न ताइता ?

बिदिएणं भणियं— अवस्स दाणि एस महती चेडीतो(?) चोरेसु य हडवीणो कतो । तओ रायपुत्तस्स पासे सप्पओगो वीणं मग्गइ । सप्पयोगं च हत्थि-गहण-ववदेसेणं **सुसेण**-सेणावइस्स पुरतो परितोस-निमित्तं गाइदुं इच्छइ ।

अन्नेण तत्थ भणियं—अहमेतं जाणामि । एसो ताव भारियावहार-संतावित-हिदओ रतातोज्जे गंधव्वे य अतीव कुसलो इट्ठ-पिया-विउत्तो य परम-दुक्खिओ वट्टति, पयतीय तलायराणं सभावतो कारत्तणं(?) ततो ति घत्तिदुं अचयंतो इच्छदि हत्थि-पुरओ वीणाणुसारेण गाइदुं । ततो जदि तार-गीतेन उवलोभितो हत्थी गहणं उवेहिति ततो सुंदरं, तप्पच्चय-तुट्ठो से सेणावइ **सुसेणो** तीए भारियाए [६६]सेघत्तं कारावेहि त्ति । एसो से अभिप्पाओ । अहवा गहणं ण उवेहिति ततो जाणइ 'किं मम इदाणि पिया-विउत्तस्स जीविएणं ? सप्पयोगं च एदेण दुट्ठ-हत्थिणा अप्पाणं मारावेमि' त्ति ।

एवं ते परिहसंति । **सुसेणो** पुणो नियय-पुरिसे उवहसंते हुंकारेण निवारिउं भणइ— 'अरे ! मा उवहस[ह] ससामी(?) जत्थ आकिदी तत्थ गुणा वि भविस्संति ।' भणति य मं विणयोवगतो—'देव ! जादा मे तुह दंसणे सिद्धी। अहो, कदत्थो हं जादो' त्ति ।

तओ तेण आणाविदा सुलक्खणा वीणा वलीयसस्स(?) तीए सो य मे कय-बलिकम्मागयस्स जदि मायारसीलमणुवत्ति(?)भावं व उग्गहिणो सगासाउ आगमिदुं आसरितो हं सुच्छेद वीणोगउंदंडादि(?) दूर गदो आसादयंतो आगारेमि, तओ सो तिव्व-रसाघुणिओ खणेण युगंतकालोवमो परम-भीम-दरिसणो सजल-जलधरो इव गुलगुलायंतो मम(मं)तेण पहाविओ । ततो मे विज्जाहरगेणं दिव्व-नाणेणं सव्व[६७]-संत-सुति-विसय-हारणं गीतं कमेण मधुरगं ता(?आ)करिसण-मंत-सहियं पगीतो हं ।

अह सो गइंदो तेण सद्देणं वसीकओ उवसंत-कोव-संभमो अवणत-पुव्वकाओ सुसीसो इव विणएणं समुवगतो, निसुढितग्गजाणू ठितो मे पुरतो।

तं च तहागदं दट्ठूणं [६९]विम्हयं गतो सपरियणो **सुसेणो** । तहाठियस्स य अहं पेच्छयदाए पमुहेणं चेव तरिदं समारूढो । तदो य मे जमलारंकुसेसु च [७०]चलणंगुट्ठेसु समणपिट्ठदेर(?) समप्फालितो मे कुंभदेसे, वसीकदो य उच्छिदं पि वक्कंमि । ता उवणीतो य मे **सुसेण**स्स सगासं गइंदो । तेण य मे परितुट्ठेण समारोवियं सपीढं [७१]समत्थं(?त्तं) भत्थि(?त्ति)कंरयं, सबहुमाणं च [७२]तेण गइंदे समारोविदुं णीतो हं **कागिंदिणगरीए** बहिं व **गंगा**-तीरे विणिविट्ठो **पुप्फदंत**-सामिणो जम्म-जिणायदणे, आमुक्क-गइंदेणं वंदिताणि मे चेदियाइं । पुणरवि गइंदारूढो पविसामि पुरिं, पेच्छामि य गयग्गहण-सुत-परमत्थेण रण्णा परम-तुट्ठेण उद्धंत-संख-पडह-मुदिंगाउला ऊसित-पवर-पडाग-सय-संकुला कोमुदि- विभूसिया सव्वा कता[७३] कारिता य नयरी । तं च पेच्छमाणो पुरवर-लोगेण य अभिथुव्वमाणो **सुसेण**-सहिओ अइगओ रायकुलं, संतेउरेणं रन्ना महदा अग्घेण पी(?पू)यितो पडिच्छिदो हं परितुट्ठेण य भणिओ— 'देवाणुप्पिय ! एयम्मि गय-ग्गहण-परितोसे किं ते पडिप्पियं करेमि ? किं वा पयच्छामि ते ?' मया भणिओ— 'रायं ! सत्थघाते मे तक्करेसु भारिया अवहिया । तं मे लभिऊणं देहि, जइ तुट्ठो सि ।' तं च मम वयणं सोऊणं राया किंपि सहसा पप्फुरित-अंसु-लोयणो ममं सिणिद्धाए गिराए समासासयंतो इव भणइ— 'सुम्म ! जइ एवं ततो अच्छह ताव वीसत्थो कंचि कालं इहेव मम घरे जं च घत्तामि ते पयोयणं ते भारियं' ति । एवं भणंतेणं तेण वि दोहंजोग्गो(?) अत्थणा य पासे दे नरपति-वयणेण य अह तक्खणं चेव कल्लाणगेसु सुरहीसु य अब्भंगितो हं विधिणा संवद्धिओ उव्वलितो य रायाणुरूवाए विभूतीए ण्हावितो हं ।

तदो ण्हाद-विलित्तो गहिय-वत्थालंकारो भुत्तो हं परम-सादु-भोयणं । ततो आयंतो सुइभूतो गहित-तंबोल-मुहवासगो **सुसेणेण** सह सइरालाव-संकहसुहं(?संकहासु हं) गच्छामि । ततो राय-सगासाउ आगओ पडिहारो । सो मे जाणु-णिसढितो विणएण भणइ— 'अज्ज ! राया भे सद्दावेति, आगच्छेध' ति ।

तओ हं **सुसेण**-सहिओ पडिहार-देसित-पहो अंतेउर-वर-गयस्स अल्लीणो हं राइणो । तेण य तत्थ सबहुमाणं कणग-पीढे निवेसितो हं स-देवि-जण-सहियस्स रन्नो सुह-निसन्नस्स[७४] पिट्ठओ विविध-कम्मय-समुज्जला सोहत्थं पट्टजइ(?व)णिया[७५] पुव्व य[७६] (?प)सारिता । सा य अतीव दीसमाणी

चित्तहारी मणूसाणं ति[७७] व कम्मय-समुज्जलं पेच्छमाणो ण तिप्पामि । सुणामि य किंपि अव्वत्तक्खरपदं जइणंतरिताए संवि(ठि?)ताणं सइरालाव-सद्दं जुवतीणं, न ऊण फुडं तं कन्नाण उवेदि सो सद्दो । चिंतेमि य नूणं को वि गुरुजण-लज्जालुओ जणो इहमच्छइ नवरं च समधुर-गिरो सो राया ममं भणइ—'देव ! जाव ते तीय भारिया एक्कतो इणिउणं घत्तं करेमि ताव चेव मम दुहियरं भारियत्तेणं पडिच्छह। ततो ते तं पि भारियं कमेण य लभिदुं अचिरेणेव अवस्स आणेमि।'

मया भणियं— 'रायं ! जाव तं परम-दुक्खितं घोर-तक्कर-पुरिस-हत्थ-गतं पियं ण मोएमि न लभामि वा ताव ण मे को(?का)इ सुरवधू वि अन्ना वरेदव्वा ।'

तेण भणियं—'जइ मम दुहियं ण इच्छसि तओ ते अहं पि भारिया-मग्गणं [?ण] करेमि' त्ति ईसिं पहसितो पुणो पुणो दुहिता-संबंधेण चोदेति। ततो मया चिंतितं— एस मे एवं कदे रदणिपदि-मग्गणे साइदुं काहिति त्ति। तओ पडिच्छामि कन्नगं ।

पुणो य राया सासूयाए हसितो[७८] भणदि—किं वो वियारिदं ?' ति।

ततो मया भणितं— 'तह नाम देध मे कन्नगं' ति ।

तओ तक्खणं चेव रन्ना विवित-जइणियंतराओ हत्थं घेत्तूणं नीससेणा[७९] चेव [८०]पिट्ठितातो कड्ढिता णियय-दुहिता । पेच्छामि य मम दंसणेण दिवि णिग्गदं सपुन्नलोयणं सयल-महि-मंडल-महिला-जण-रयणभूतं पियं **रयणवतिं** चेव । [८१]तं च दट्ठूण अहं तक्खणं चेव समूससित-हिदय-हरिसो परं विभयं गतो हं।

ततो हं [८२]तं पतिगेण्हिदुं परम-हरिसिओ । रन्नो वासघरंतेउराण वि अंतो अन्नं परम-मणहरं वासघरं, सह **रयणवदी**ए तत्थ आवासितो हं । तत्थ य मे सा गुरुजण-विरहिते वासग्गिहे गाढं आलिंगेऊण मम विओग-कारण-दुहिता समधुरं पियं च भणंतेण मोइता मे हिदयस्स सब्भावं, आगता य मे वासं कणगलता इव पियदंसणा **कणगलता** । सा वि मे पगलितंसु-लोयणा पडिपुच्छिता य संतिता मया बहुस्सिता य । तासु य सुय(?ह)-दुक्ख-कहासु मुहुत्तमित्तं ठिओ हं । ताव य कम्म(?) जाणिऊण उवगतो मम सगासं सयमेव राया **भाणुचंदो** । सो य मे समुप्पन्न-कोउगस्स परिकहेउं पयत्तो, भणइ—

'सुणह देवि **रयणवदि**-पच्चंतं । अत्थि **कासी** जणवए **वाणारसी** नाम नयरी । तत्थ राया **मित्तवाहणो** नाम । तस्स **भाणुमदीए** देवीए अत्तीया कन्ना [८३]**चंदमती** नाम । सा मया परिणीता । सा य मे इट्ठा महादेवी वा(?ठा)इदा। ततो य एसा मम **रयणवदी** कन्ना जाया । एसा य तत्थ चेव जादा तत्थेव संवड्ढिता तत्थेव य वि(?धि)दिंगता जदि कदाइ एत्थ आणिज्जइ ततो धिदिं अलभमाणी पुणो वि तत्थेव वच्चइ । गहिद-कलाभिहाणा य पत्तजोव्वणा जादा । संदिट्ठं च मया ससुरस्स जहा— 'पत्तजोव्वणाए कन्नाए अरुहध सयमेव वरं संपादेतुं' ति । तेण तह त्ति पडिवन्नं । तेण य तीए वर-कज्जे सातिसओ मुणि पुच्छिओ । तेण मुणिणा 'एसा अड्ढभरहाहिव-पिउ-भारिया' आइट्ठा । कालेण य तुमं पत्ता, पुणो य तुह विउत्ता, पुणो वि य समागदा। एवं व सव्वं जहाभूतं मम मणूसे सयं तत्थ गओ सि दिट्ठो सि तुमं मय(?या) अविन्नाएसु **जरासंध**-दूतेसु चोदितेणं सगेत्त(?सगोत्त)-बहुमाणेणं ससुरेण मे वधू-सहितो संपेसितो रायगिह-गमणाय तुमं । ममं च पुव्वदरं लिहितं एस ते जामाता सह धूताए मह वयणेणं **जरासंध**-सगासं चलिओ तह [?अ]डविमज्झेणं एहिति, संपत्तीए पच्चंतीय ता सणाहेदुं मह संतिया मंतिणो सचिवा य महता बलेण जणवयं तं णिग्गदो । तेहिं य अडवीए पदोस-काले दुवे तक्करायणीया **सूरसेणग-विरूवक्खा**णं सेणावदीणं संतियाइं सहसावत्तमाणं सदुतं समइमाणाइं लक्खिताइं अब्भाहताइं दिसोदिसं नीताइं संपत्तिवसेण य दिट्ठा तत्थेव तुह विउत्ता **कणगलता**ए सह विलवमाणी **रयणवदी**, सा मंतीसु संजाणिता अत्थिन्ना(?)य पणय-सिरेहि य तुह वियोग-दुक्खिता रुयमाणी संसिदा पुच्छिदा य कओ सि, चोरेहिं सभावितं तिपतीए(?) जहाभूतं कधियं तं ततो के इह घत्ता एगत्ता केइ **रयणवदिं** घेत्तूण इहागता । मया वि य सुय-परमत्थेणं अन्ने वि तुह कएणं विसज्जिता चार-पुरिसा वणंतेण । एसा य तुह वियोग-दुक्खिता रुअमाणी आसासिदा मया, भणिदा य—'पुत्ति ! मा रुयह । एस ते अचिरेण पिय-सणाहं करेमि । धिदिं लभह ।'

ताव य सुयं मया गहिओ किर केण वि गीद-विलोभिदो गइंदो । इह य णगरि-पच्चासन्नाय गओ संजाणिओ सि पुरिसेहिं जेहिं पुव्वि **वाणारसीए** दिट्ठो सि मम संतिएहिं ।

तओ मया सबहुमाणं महता अग्घेण पडिच्छिओ सि । भणितो य

मि(?सि) मया— किं ते पियं करेमि देमि वा ? तुमे य भणियं— भारियं मे चोरावहियं दवावेहि । ततो मया कारुन्नविएण दुक्खितो त्ति तुमं कधं हि तिच्छाभि(?किच्छाहि) धारंताणि मे अंसूणि । भुत्त-भोयणस्स य ते सप्पयोगेण उवणीता ते मया वधू, तं च ते ससुरपक्ख-बलं चोरहदासेसं किंचि मि(?इ)हमागदं किंचि **वाणारसिमेव** गदं ति । तं एस ते मया परमत्थो कधितो । सागतं च ते, अप्पणो रज्जं, जहासुहं अच्छाहि । दंसणूसुएण मे तुह मुहं दिट्ठं ति । पयट्ठिता य मे तुह समागम-लंभे तुट्ठेणं रन्नो **मित्तवाहणस्स** हता संपदं चेव।

एवं वोत्तूण निग्गओ राया । अहमवि पियाए सह सुह-दुक्ख-कहासु विणोदेमाणस्स अवगदं दुक्खं मण-चिंतितोवणीद-पउर-परिभोगो य गयं पि कालं न याणामि ।

॥ इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए रयणवदी-लंभो नाम बत्तीसइमो परिच्छेदो सम्मत्तो ॥

पाठान्तर

१. अलोग- पु. । २. नत्थि पु. । ३. णीसारो पु. । ४. मिमे पु. । ५. पुरालोगोइ पा. । ६. हीवं पा. । ७. मुज्झे पु. । ८. साहणं पु. । ९. योगेण पु. । १०. खेत्ते पा. । ११. इदं पा. । १२. सीणयपत्ता पा. । १३. दिक्खेह पु. । १४. निपत्तियभात्तणं पा. । १५. मे पा. । १६. लंपि तत्थ तट्ठएण पा. । १७. सायं पु. । १८. ०मरकर्क पा. । १९. काले खणो० पा. । २०. नीसियरि पा. । २१. वंसय पा. । २२. पणादग्गमणं पा. । २३. सिद्धा विणा वंदुर० पु. । २४. संपसत्ती पा. । २५. ससिहियतु पा. । २६. समत्थडे पा. । २७. तातं पा. । २८. विणिव्वंतो पु. । २९. संसिते पु. । ३०. णच्छइ पा. । ३१. गणयारी पा.। ३२. हो णु हु पु. । ३३. पट्ठिताणा पु. । ३४. पणं पदो पा. । ३५. गच्छ लेसिमि पा. । ३६. वि पु. । ३७. पत्थं पु. । ३८. पतिज्जंतो पा. । ३९. वरिम पा. । ४०. तणु या स पु. । ४१. अभिच्छंतो य कन्नाए पु. । ४२. समयमागओ पु. । ४३. अणादवगदो पा.। ४४. हिं पु. । ४५. निणदि पु. । ४६. तं पु. । ४७. मरिसिवि पा. । ४८. विहराव खे पा.। ४९. -सोवैस- पा. । ५०. उत्तरेण कूलेण पु. । ५१. अंच्छितदुरगो पु. । ५२. आव० पा.। ५३. आदि० पा. । ५४. कथाए पु. । ५५. सीयतिमा० पु., सीयपिमा पा. । ५६. मोच्छते पा. । ५७. हीं पा. । ५८. ०भिदुतस्स पु. । ५९. वेलु० पु. । ६०. सूईया पु. । ६१. ०विवेयो उ पु. । ६२. परिवुन्नं पु. । ६३. अवारी पा. । ६४. ०रीणं वारीय व पु. । ६५. वित्ताला पु. । ६६. सवत्तं पा. । ६७. संति पु. । ६८. -हारेणं पा. । ६९. विभयं पु. । ७०. ०ट्ठेसु मुब्भिसमण० पा. । ७१. समत्तं भत्थि० पा. । ७२. तेणइ पा. । ७३. रुता पा. । ७४. पिट्ठिओ पा. । ७५. जणिया पु. । ७६. ग्ग सा० पा. । ७७. तिं पु. । ७८. सासूयापहसितो पु., सासूयाए महितो पा. । ७९. नीससेण पु. । ८०. पिट्ठता पु. । ८१. तिं पु. । ८२. तिं पु. । ८३. चंद्रमती पा. ।

३३. मुत्तावली-लंभो

अह य मम तत्थ परिवसंतस्स **सुसेण** सह अतीव महंतो सिणेहो जाओ । राया वि ममं देवयमिव उवचरइ । **कणगलता**-सगासाउ मम नट्ट-गंधव्वेसु आदोज्जे य कोसल्लं सोउं राया ममं भणइ— 'देव ! इच्छामि मम संतियाइं णाडय-पेडयाइं सव्व-पयत्तेण सिक्खावितेणं तुह संतिएणं नट्ट-गीओवदेसेणं सिद्धा(?क्खा) विज्जंताइं ।' मया य तह त्ति पडिवन्नं ।

आढत्तो य मि वर-तरुणि[1]-नाडयाइं सव्व-पयत्तेण सिक्खावेउं रन्नो सुतासु य सह, सिक्खिता वि पुणो अणुयोगं देदि मम पासे **रयणवदी** । थोवेण य कालेणं सिक्खावियाणि य मे ताइं नाडयाइं । एयं च ताव एदं।

इतो य **आभीर**-विसए **वच्छगुम्मं** नाम नगरं, तत्थ राया बलवओ अयलराय-सरिस-सत्तो **अयलो** नाम । तस्स संतिओ **सुमुहो** नाम भोइय-बालओ सो तस्स रन्नो अदीव वल्लभो बहुप्पतिय(?) अत्थ-संपदाएण तेण णट्ट-गंधव्वेसु य से महंतो आयरो **भरहपुत्त**-पेडयाइं च पिट्ठओ परिवहंति । सो य **सुहुमो(?सुमुहो)** कदाइ **अयलराया**-संदेसेण **भाणुचंद**-सगासं दूतत्तणेणं आगतो, आगच्छंतेण [तेण] य **भरह-नाडग**-कुसलं नाडग-पुत्तं पिट्ठओ आणियं । तं च नाऊण रन्ना **भाणुचंदेण** तस्स य **अयल-रन्नो** य [2]तिसयरेण(?) मम सगासं सिक्खिदाणं नाडयाणं पेच्छा समाणत्ता । तदो सज्जिदे पेच्छाघर-मंडवे निसण्णो तओरो(?संतेउरो) सभडवंद्रो(?दो) राया **भाणुचंदो** । रन्ना य सद्दाविते आगतो य तत्थ **सुहुमो(?सुमुहो)** सपरिवारो आसीणो निसिद्धासणे(?विसिट्ठासणे) ।

तदो गहियाणुरूवे णेवत्थगवत्थिताइं चउव्विधातोज्ज-गंभीर-निनादाणुवत्तीए पणच्चिताइं नाडयाइं । ततो तेण मणुया अपुव्वेण विज्जाहरगेणं णट्ट-गीद-वाइदेणं [3]वेच्चेहि(?) य करणेर(?हि) य गं(?अं)गहारक-भाव-रस-पवराभिणएसु य नच्चमाणीसु नाडइज्जासु ओसत्ति(?) गाहिओ राया रंगसागरे य सह **अयल**-दूरे(?ते)ण तओ तं च मम संतियं उवदेसं नट्ट-गीदेसु

पेच्छमामाण य सुरलोग-गओ इव आसि अंतरप्पा य मे । खणेण रसणाणं(?) **सुमुहेण** य राया पुच्छिओ—'रायं ! को णु हु एयत्थ उवज्झाओ ? देवो णु माणुसो वा ?'

[?त]दा य रन्ना आह— निय-पासासण-निसन्नो एस मे जामाता, एतस्स संतिओ एस उवदेसो । सो ममं दट्ठूण भणइं- 'न केवलं चरिएसु देवो रूवेण वि देवो चेव ।'

एवं परम रंजित-हिदया समत्ते णट्टे उट्ठिया साधुक्कार-कल-सकलेक्क-मुहला परिसा सह राइणो । गयं च तं दिवसं ।

बिदिय-दिवसे य अहं **सुसेण**-सहिओ विविध परिसपरियासा(?) पादचारेण चेव विणिग्गओ पुरीओ, पत्तो **पुप्फदंत**-सामिणो जम्म-जिणायतणं। तत्थ चेदियाइं वंदिऊणं ततो **गंगातीरं** अणुसरंतो संतियं मधुवणं नाम उज्जाणं, तत्थ य खणमित्तं विणोदेदूणं नगरिएण(?) पडिनियत्तो । तत्थ पेच्छामि एकं पुरिसं वण-विवर-गयं परिदेवंतं, सो य मे उवगंतूण पुच्छिओ— 'सोम्म ! किमिदं परिदेवसि ?' सो भणइ— 'सामि ! अहं इव्वंत(?) गाम-वत्थव्वो दरिद्दभूतो अबंधवो य । मम य महिमा(?ला) गाम-घाते चोरेसु परव्वसा बंदिया णीया । सा य अत्थेण विणा ण मुंचइ, अहं च पुरवरी(?रे) मम केइ दट्ठव्वया अत्थि, तेसिं सगासाओ अत्थत्थी आगहो(?ओ) हं । इह सय वीसमंतो काल-सप्पेण एण्हि चेव खदो हं । ण य दाणि अत्तणो जातो ण य तीए भारिय त्ति । तं एस परमत्थो । देव ^विसतरोहिय(?) मे संपदं पिय लोक दं ^जा णंदं ण वरेमि अत्ता ण उक्कमंति मे सामि पाणा^ ए इहइं अणाधस्स ।'

तओ मया भणिओ—'मा भीयसु, अहं ते जीवावेमि ।' एवं भणंते अल्लीणो मे अह पडिदो य से(?सो) धस त्ति धरणीए, पेच्छामि य तस्स चलणंगुट्ठ- पदेसातो पयति-पसन्न-रुधिरं परिगलंतं, चतुरो य से दाढाओ निहित्ताओ पेच्छामि । चिंतितं च मे— विसमो हु ए(?) सप्पएण चतुरो वि दाढाओ निप्पीलिताओ । सुमरियं च सप्प-तिगिच्छाए सुत्तं, जहा—

जो दसिऊणं भुयंगो उदरं परिवत्तिऊणं दंसेदि, सो हु असु(? स)ज्झो भणिओ चदुसु वि दाढासु जो लग्गो ।

ततो हं जाणंतो वि त्तं(?तं) ^सुत्तं पितं उमज्जिउं पयत्तो । अचिरेण

य मे [८]आयासेण समुट्ठावितो विवंतो(?वत्तो), मुहुत्तमेत्तस्स य पुणो वि आगदो वेगो, सो वि मे मया मंतेसु उवसामिदो । एवं छव्वेगा मया तस्स धारिता। भणियं च मे ततो जसो(?ओ) इदाणि पुणो वि सत्तमो वेगो आगच्छइ, ततो से धुवं नत्थि जीवितं । जदि एस सो ण भवति जो मया चिंतितो ।

सुसेणेण भणियं— सामि ! को पुण एस तुमे चिंतितो ? त्ति ।

मया भणियं— पुणो कधेहामि ।

तदो मया तस्स सत्तम-वेग-परिक्खणा-भे(?हे)दुं दिन्ना विसंबंधा मट्टियाए सिहा विवरंतर-धारिताए य सम्मत्थ-विधेयाए देवदा-दिन्नाए ओसहीए खंडं पेसिऊणं उवलसिता तले णाइदं से मया नवरं च तहा वि कदे पयत्तो आढत्तो सो अंगाइं चलेदुं पवेदितो य (?घ)घरायंत-गत्तो छिन्नं सितं स तुरियं च पणीससितो एउ फेरितो य लोयणाइं खणेण सीत-रोमंच गेण्हइ खणे सीदं खणे जलधरो इव सेय-जल-बिंदु एसु(?) पवरिसइ । सहसा य कतप्पयतस्स वि मम विसं दत्थ वियण वियोग[९] लोयणो वलित-गीवो रसि कडिप्पदेसो मुह भासण य णागदकंसासंसु(?) पासिओ सिढिलिय-सव्व-गत्त संबंधिणो गह-गहितो इव बहुरूवो होऊणं उवद्धाइद-वेगो [१०]वीसरं रसिऊणं धस त्ति धरणितले पडिदो य मे भणिओ आरोगो जह-'दिण[११] वि नडो सि ततो धुवं मतो सि ।' मया एव-भणिदो सो पुरिसो तक्खणं चेव समुट्ठिओ साभाविय-रूवो पयतित्थो होऊण पडिओ मम पादेसु ।

तं च पेच्छंतो अहं **सुसेणो** य विब्भयं गदा । भणदि य मे **सुसेणो**-सामि ! [१२]कहमेतं ? ति ।

मया भणियं—एस नडो केण वि पउत्तो मम परिमाणेदि-किमेस केवलं गाहेउं जाणदि, उदुहुदुडुं (?उदाहु दट्ठुं) पि ।

ततो **सुसेणेण पुच्छिओ सो पुरिसो— 'भो ! अत्थि किंचि एरिसं ?'** ति । तेण भणियं— सुणह, तुब्भेहिं अहं [१३]तिया जणबहुलताए ण लक्खितो हं **सुमुहं** तिया [१४]**णंदिभडो** नाम भरहपुत्तगो । तुह सिक्खोवदेसं नाडइजणो(?) पेच्छमाणो विभयं गतो अहं य **सुमुहो** य । तेण य अहं सणीयं फुट्टेण(?) णच्चइ। किमेस केवलं सिक्खावेदुं चेव जाणइ उताहु दट्ठुं(?ट्ठुं) मि(?पि) । मया भणियं—काहामि ते परिमाणेणं । अज्ज य मया निक्कलिओ दिट्ठो सि । मग्गेण य मया आगंतुं [१५]परिमाणितो सि जं च सुट्ठु जाणदि सामि दट्ठुं ति।

एवं भणंतो पडिओ मे पादेसु, भणति य–खमह मम अविणयं ति।

मया भणितो— नत्थि ते अवराहो ।

पुच्छदि य मे **सुसेणो**— देव ! [१६]किदं तुब्भेहिं भणियं जइ एसणो (?सुसेणो)न भवति ।

मया भणियं— सुणह एतस्स मया रुधिर-दंसागतं कंड लच्छिंतं[१७](?) पिव [१८]निद्दयारं विस-विरहियं व[१९] लक्खितं । चिंतितं च मे पच्छा ण एस सप्प-डक्को, वियारा पुण एदस्स [२०]तज्जतो(?) लक्खिज्जंति । पुणो य मे चिंतितं आगम-सत्तीए [२१]अडक्को वि उ णवरं [२२]डक्को सक्केइ एरिसाइं रूवाइं करेदुं ति । ततो मे एवं चिंतिऊणं भणिओ दुल्लभं खु एरिसेसु वेगेसु सत्तम वेगे जीविदं, जइ एस सो ण हवहि(?दि) जं भणियं जइ णडो भवति [२३]पुव्वा वंचेवि य भणियं, पच्छा पुण फुडं चेव भणिओ ।

तं चेव सोऊण भणियं **सुसेणेणं** [२४]**भारहगेण** य-अहो ! देवस्स आगमसत्ती ।

तओ पविट्ठा मो णयरिं, आवासिता वासगिहे । अभिरमामि सह पियाए। पडिगतो दूतो ।

तत्थ गुम्म [२५]सन्नगा य पुणो मम राया भणइ— देव ! दे तासु सिक्खाविदु **गंग** ईयं करेह, जहा ण एस पुणो किंचि अविणयं करेदि ।

मया भणियं— सुट्ठु दाणि राइणो वल्लभो एस हत्थी ।

तेण भणियं— वल्लभो एस कारणेणं, बहवे हु मम हत्थिणो अत्थि[२६], तेण पुण [२७]णिकिव्वाए(?) को वि अन्नो पु(?ए)रिसो नत्थि महारण-रभस-विमद्दण-सहो जारिसो हु एसो ।

मया भणियं— किं राय [२८]पुच्छलिए(?) य हत्थीसु विसूरति त्ति।

तेण भणियं— सुट्ठु विसूरामि ।

मया भणिदो— यदि विसूरसि तदो भंडिज्जदु, किं विच्छलिय नागवणं, जा दे पज्जत्ते सुंदरे गइंदे घेत्तूणं देमि ।

तेण भणियं— सामि ! केवलं तुह खेदं पडिहरामि, इहरहा जए ताइं वि झाडवि वेदिरूय सकल-कोसल-कलिंग दा संणयाइं हत्थि-कुलाइं एदेसिं सव्वेसिं पि इह सन्निवादो भवति, णिच्चं पि **गंगा-णदीय** दाहिणं कूलं

अविरहियं पहाण-मदगलेसु । अत्थि इतो दाहिणकूलासन्नं [२९]**खग्गवणं** नाम वणं पहाण-गय-निसेवियं भंजइ [३०]सहीयच्छि(?) ततो कीरदु उज्जमो ।

मया तह त्ति पडिवन्नं, सज्जित्ता द(?य) मे सयमेव सत्तरसतं(?) महाविणा पुव्वं(?) धराणायार(?) पुरिसेसु भाता वि ताणं सगासे अप्पपुरिस-परिवारा गंतूणं दूरे [३१]उवितो निहुत नीसद्दे गय-तुरय-मणूसो नाग-हिदयामंतिदं वीणं वादेमि, गायामि य । तदो तेण सद्देण आकरिसिता मम सगासमागंतूण महागइंदा णिसुणिदग्गजाणु पुणो दिन्न कल्लाण प्पय-संठिता इव निच्चला निच्चेतणा ताव अच्छंति जाव पुव्व-गहिद-गइंदाणं करेणुयाण य [३२]गले संदाणिदा होंति । पच्छा गीद-वाइद-सद्द-विलोभिता चेव णेदुं आलाणिज्जंति सिक्खाविज्जंति य, एदेण उवाएण मया रन्नो गाह(?) हत्थिणो गहिता सिक्खाविता य ।

अन्नदा य पुणो आगदो **अयल**-राय-सगासातो दूतो । तेण य **भाणुचंदो** राया विन्नविओ— देव ! अम्ह राया संदिसइ, विसज्जेह किर जामादुगं मम सगासं सिक्खावेदु मे कतिइ णाडय-तरुणीओ, अतीव एसो अब्भुदोवदोसा(?देसो) सुणेज्जइ । पुणो इच्छाए एहिति तुह सगासं ति । एव कदे वयं तुट्ठा भविस्सामो, पीती य अच्चंतिया होहिति ।

तेण भणियं—अरे दूत ! गच्छ, खमितं ते मया दूतस्स मेव कादुं । अन्नहा एव भणंतस्स तुहे मया मज्झतो(?मज्जाता) कदा होंता । अरे ! भणध य तं **आभीर**-राय-मुक्खं किं मम जामाता णडो नट्टोवज्जातो वा अहवा वित्तीजीवणो [३३]वा हिदिट्ठो(?) त्ति जओ सो उम्मत्तो इव बहु पलवति ? जइ मम जामाता वित्ताविताए (?) अत्तणो नाडइज्जाणं उवदेसं करेति, ततो किं तेण एव संभाविदव्वयं होति ?

एवं बहु निट्ठुरं च भणंतेण [३४]निच्छूढो गतो दूतो । गेण्हामि य अहं तहेव रण्णो सयंवरे वच्चंते कम्हि य काले अन्नदा अहं अप्प-पुरिस-परिवारो तिसु करणीसु कतिपयेसु तुरंगेसु गतो हं हत्थिएणं अह ममं अणम्हि गइंदे व [३५]लद्ध-लक्खस्स अन्नदो(?दा) कोइ मणूसो आगंतूण मम निवेदेति— पेच्छह देव ! अच्छेरयं एस इदो अदूरे खग्ग-वण-विवरे णव-पाउस-काले जलधर-संकासो अन्न-गइंदो(?दे)सु गुणतरुस्सेध-प्पमाणो यामो महामहंतो भयाणगो हत्थी सल्लइ-वणं भंजंतो अच्छइ, करेह कोतुय-पेच्छणं ति।

तं च सोत्तूणं अह मम कोतुगो(?) निसद्दतुरगमणूसो(?) अ(?ग)तो

अहं तं अइ-गहणं [३६]सखग्गो खग-वियरितं खग्गवणं । दिट्ठो य मया दूरे गहण-वणंतर-रचिदे णं गहण-लता-विवर-गतो अइप्पमाणो गइंदो । तं च मे दट्ठूणं चिंतित-सो ऊण [?ए]रावणं सुरणागं तं च वेउव्वियं [३७]वेत्तगइ(?) गइंदं ? अन्नो एदप्पमाणो हत्थी मया ण दिट्ठपुव्वो । [३८]अहो सो णाओ साभाउमाणं(?) च अउब्भमाणो बहु एसो जस्स बले दीसति वत्तं खु सो जयइ। तं जइ एस किहइ घेप्पइ ततो पज्जत्तं मे ससुरस्स ।

एवं चिंतयंतेण मया णीसद्दं तत्थेव गहण-वणंतरेण [३९]उविदं णियय-सखायाणीयं[४०] ते तस्स चिंता संपरिहरंतस्स तेण नवरं च एगागी अहं खग्ग-खेडयाइं वीणं च घेत्तूणं अल्लीणो हं गइंदस्स नादि दूरे [४१]पसभावतो(?) तस्स गहण-वणंतर-ट्ठिओ निक्खेदूणं [४२]आसणे खग्ग-खेडाइं [४३]पावाइंदो [४४]महुर मुच्छिदं वीणं पगीतो य दिव्व-ना(?गा)णेण । तओ सो कुंजरो तं सद्दं वीसत्थो सइरं [४५]ममागणेंतो सइरं व गुल वज्झाणिकेस[४६](?) लता य लीलाए समुल्लूरेंतो अवहत्थितो य कार्णि वइणाइं(?) णोल्लेमाणो य [४७]रुटंत-भमर-महुयराइं पवर-ताविया णाइं(?) मद-वस-लीला-वियावडो सइरं आढत्तो ममंतेण आसरिदुं । अहं व सर-संचार-मुच्छणा-दिन्नोवयोगो ण सुट्ठु तस्स निच्छए ववओगं गच्छामि । आगंतूण य सो पु(?ए)रिसो णाइदूरे परिसंठितो ईसिं विलंबिउं पयत्तो ।

ततो हं तम्मि दिन्न-लोयणो वीसत्थो वीणं वाएंतो वण-विवर-पच्छन्नागतेहिं पट्टि-देसेण समल्लीणेहिं अदिट्ठेहिं बहूहिं मणूसेहिं समयं गहितो हं। न य जाणामि के वि एदे मणूसा । ताव य सो वि गओ महता खुभिय-जल-कलकल-समुद्द-गंभीर-जलहर-निनादो अभिपडिओ ममोवरि, उम्मोडिद-हत्थेण से उवरि निसुढमाणो पहतो मुट्ठिणा वामकुंभो । तेण य पहरणेण पहरमेत्तो महता करकर-रवं करेंतो सतहा सहस्सधा य फुडिओ, पडिओ य सो जन्न(?जंत)-गइंदो, उद्धाइया य तस्स देह-विवराओ सन्नद्ध-बद्ध-कवया गहितायुध-पहरणा बहवे छलिय-जोहा । ते य अभिपडंते य दट्ठूण मया च्छेमताए(?) निहित मणूसेणं पडिवन्नं नियय-खग्ग-खेडयं वा पडिवूहिद पढम-पुरिसं ममं गहिद-खग्गं दट्ठूण लीहं छेताविता जोहा न सक्केमि ते मज्जातं अइक्कमिउं ।

ताव य दूरावगता मम संतिया सहाया तं परचमुं दट्ठूणं अभिपडिया गहिय-पहरणा लग्गा तेसु सह जुद्धं । ताहे ते वि अन्नेणं महामहल्लेणं तुरगबलेण

वाहिता संपरिक्खित्ता सहसा अइभरक्कंता य पलाय(?या) मम संतिया सहाया। अहमेगो केवलं ठितो हं समंतओ वेढितो निरुस्सासो पर-बलेण तस्स य बलस्स य पमुहो सुद्धसामोवलंबसमणो वामेककुंडलधरो दाहिणमवलंबमाण-कण्णियाभूसणो समतुसन्नाह गहिय-णिज्जोगा उत्तराध सव्वस्से परिस्से समारूढो सुह-सम्म-दंसणो विविध-गहिद-पहरण-हत्थो तुरय-वंद-[४५]परिवारो । सो मे भणइ— देवाणुप्पिय ! सुणाहि । अत्थि **आभीर**-विसए **वच्छगुम्मे** णगरे **अयलो** नाम राया सुतपुव्वो तुमे वि, तेण तुह दंसणूसुएणं ससुरस्स ते **भाणुचंदस्स** दूतो विसज्जिओ आसि जह 'विसज्जेह मे सगासं नियय-जामादुगं तं ।' तेण य सो खलीकरेउं विसज्जितो । सुद-परमत्थेण य अम्ह रन्ना जायाणुसएणं तुह हत्थिग्गहण-[४६]करणुट्ठिद-वरणं णादुं एस जाव ण एहि [५०]जंतकारेहिं जंत-हत्थी इव(?ध) अरन्ने तुह गहण-कज्जे सज्जावितो, पेसिताणि य मया बलाणि महा-बलवगो वि इतो अदूरे अच्छंति, तओ परंपरेण अन्नाइं, अहं च बलवगो णियुत्तो म णाम **वग्घसेणो** । अहं च रन्ना आणत्तो— जदि वो सत्ती हवेज्ज तओ तं पुरिसं अणहसरीरं घेत्तूण मम सगासं आणेज्जाह। तओ सयमेव सरणं उवणसेज्ज[५१] । मा य तेण विणा इहमागच्छेज्जाह । तं एस परमत्थो मया कहितो। मणोरधेहिं तुब्भे इह अम्हे पच्चक्खं दिट्ठा, दिट्ठमित्ता य तुब्भे मया हिदएण परिच्छिन्ना । जाणामि य ण तुब्भे अणायुधा वि अम्हारिसाणं बहु वि पुरिस-सहस्साणं गम्मा । किमंग पुण पडिवन्न-खग्ग-पाणिणो ? तं जदि जाणध अज्ज बहु पाणवच्चा(?ज्झा) ण करणेज्जा तुब्भेहिं, तओ आगच्छह सयमेव, अरहव(?आरुहध) मम संतिए तुरंगे जा वच्चामो **वच्छगुम्मं** । अन्नहा पुण इह जुज्झंताण वि तुब्भं नरवदि-वयणातो णेव पहरामो, गहण-कज्जे, पुण तुब्भं [५२]जीदं पि पमोत्तूणं सव्वे समयं अध(?व)स्स अभिपडामो । तुब्भे पुण [५३]अणभिहंता णं[?जं] जाणध तं करेज्जाध ।

इमं तस्स वयणं सोदुं मया चिंतिदं-एस एद निच्छओ, किं पुण एदे मम पहरंति ? किं-कारणं, जेण रन्ना संदिट्ठं जहा 'अणहसरीरं आणेज्जाह' । एसो वि य ममं गुरुमिव भाव-परिग्गहिदं पूया-पदेणं बहु-वयणेणं आलभति। अवि य अणायुधो वि अहं सत्तो[५४], एदं परं च[५५] सयलं पि [५६]वूहिदं । किं-पुण न युत्तं मम खत्तियस्स एदं । एवं संलवंते कद-निच्छए य गहणंते य [?ण] अभिहणिओ तं अवस्सं राया मम किंचि कि(?क)न्ना-संबंधं इच्छइ।

तओ अलं मम अभिहणि(?दुं) कामं गेण्हंतु मे एदे त्ति । एवं चिंतिदुं भणिओ **अयल**-राय-संतिओ मंती **वग्घसेणो**— भो मंति ! पत्तियावेमि सम्मं जहा तुब्भे ममं ण पहरह वंचेइ(?) ।

तेण भणियं— सामि ! दंसणेणेव पडिच्छेद-पुरिसकारस्स अम्ह व सामिणो वल्लभस्स सयं व गहणमुवगयस्स को निग्घिणो तुमं पहरीहि त्ति । पहरंतस्स वि तुह उवरि दुक्खं पहरीयति । किमंग पुण अप[?ह]रमाणस्स। एवं भणंतेण तेण पत्तियाविओ हं । तओ सो मया भणिओ— आणेह मे तुर[?गं] ति ।

तओ तेण परम-तुट्ठेण अवतरिऊण कदप्पणामेण सबहुमाणं पियं च भणंतेण तो(?चो)इदो मे तुरंगो । तओ तत्थ आरूढो हं । सो विय दुतं अन्नम्मि तुरंगमे समारूढो । ताहे सो छिन्न-सरणिएहिं आसेहिं छेयारोह-संगेहिं[५७] बंधेऊणं ममं **भाणुचंद**-दुतं पयातो, जोयण कच्छाए य गउ समाणो अन्ने कयजोगो(?) आसो पेच्छमि । तओ मे तेसु हरति तओ वि अन्ने सु उण्ह उरिएसु जह तह कच्छइ कदाहारो **विंझगिरिण** मताणुसारेण थोवेसु दिणेसु [५८]घेत्तूण य जोयण-संतियं कंतारं णं चिरेण पवेसितो **वच्छगुम्मं** पुरवरं । पविसंतं च मे रूव-गुण-विम्हिय-मुहलाओ पयदि-पलंब-सम-सवण-दीह-विसाल-लोयणाओ [५९]मरहट्ठ-भीर-पडव-पवर-जुवतीओ पेच्छंति पसंसंति ममं विंभय-विताणिय-लोयणाओ । रायमग्ग-गतं दट्ठूण मं जणो भणइ— एस कोइ **अयल**-रन्नो पुव्व-संमदिओ देवो **वग्घसेण**-मंतिणा सह रायकुलं पविसतीति । पुव्वतरं व पेसितेसु पुरिसेसु निवेदिदं रन्नोऽरायणेण(?) अन्ने आगता सवडम्मुहा पुरिसा, तेसु किंपि परिकधितं केण **वग्घसेण**स्स, तओ तेण मह पासेण चेव रायकुलस्स नीतो स-भवणं, ठवितो य मि तेण लट्ठे उवट्ठाणे, ससंकं च मे हिदयं जादं 'ण सुंदरं जओ हं पासेण य रायकुलस्स इहाणितो'। पुणो य मे चिंतितं- तारिसं से वयणं सुणिज्जति जहा अणहसरीरं आणेज्जह त्ति । एदेण से वयणेण पुणो विस्सासो होइ । अह नूणं ममेस दारिया णिमित्तिया से सा दो दाउकामो । तओ जाणइ पसाधितो वा वि इह एहिति त्ति । एवं चिंतयामि ताव य आगओ(?आ) रायकुलादो बहवे पुरिसा अट्ठितावायामा तेण मे कदप्पणामा अभिवीसासयंता पक्खालिय-करचरणा वत्थकोण-संवरिय-[६०]मुहा विणएण उवागता । केइ मम अंगं संबाधेउं पयत्ता सिर-बाहूरुय-पट्ठीसु के व पादे व सोइता ।

एदम्मि देस-काले तेसु दिन्न-सन्नो विणिग्गदो मम पासादो **वग्घसेणो**, तेण भणियं— अहं तहा निसन्न कंत महिदो चेव सुबद्धो कओ । चिंतितं मे-वज्झमाणेणं एस मे विदिया दिसा मणा तो पूया तह वि अहं ण सिक्खामि। अवि य—

सव्वो लद्धो सुवं वओ[.....] ।

एवं चिंतयंतो तेहिं सुबद्धो कंदु (कादुं?) उच्चालितो हं रन्नो सगासं पवेसितो राय-घर-गोपुरद्दारे, णं पेच्छामि य पडि(?वि)समाणो पुरतो सवडंमुहाइ ह(?भ)वण-गवक्ख-हंमिय-जालंतर-संठियाइं मम दंसण-कोतुहल्लियाइं राया-वुड्ढंतेउर-कन्नंतेउराइं । दिट्ठा य मे तत्थ कन्ना सहीजण-संपरिखुडा हम्मिय-तल [६१]मग्ग ताण वुग्गा ताय व सितब्भसिहार(?) चंदलेहा परिणत-पियंगुमंजरी-णियर-सामवण्णा, आकन्न-पसंतसितमसित(?)-रत्त-कंत-पत्तल-सुकुमाल-कमल-विउल-सरिस-लोयणा, दीभावंग(?)-विभूसित-मणहर(?)मति-कंत-वयणारविंदा, ससि-सकल-सोम्मतरा[६२]-वदण-दंसणा, सुंदर-वर-कसण-कुंचित-केसभारा, संगत-वर-भूयसवण[६३]-नासाधरोट्ठ-भूसित-दंत-पंति [६४]लगितुन्नरोत्तर(?) व सुभ-गंडदेस-वर-कंधरा[६५], ललित-बाहू, [६६]सुकुमार-करतला, घण-सुणिद्ध-पडिबद्ध-थणहरा, रोमराई-कसणोलि-मालिणी तिवलिभंग-तणुमज्झ-वाहिणी, पीण-सोणि-थण-जहण-भार ललितोरु-जवल-सुकुमाल जंणिसुणि(?) गूढसंधि कुरुविंद-सरिस-वर-जंघ-जुवलया, महितलम्मि सुणिविट्ठया हुवलिणिया(?) रत्तपट्ट- जवल-सोभिधा(?दा) धर(?वर) वलयमेहला, सोणिसुत्त-कंचीकलाव-वामोरुजाल-विलसंत-नेउरा, ललित-चवल-कुंडला हेट्ठ-गंड-परिमंडिता-णणारविंदा अच्छेरय-रूव-धारिणी सिरी विव सा पवर-रायकन्ना दिट्ठा मया ।

चिंतित च मे-अहो ! इमा रूववदी कन्ना इमस्स अंतेउर-पवर-पंकय-सारस्स भूसिणी रायहंसि व्व ! पेच्छंतो य ततो रायंगणं विविध-भूसित-कलितं पवेसितो हं रायकुल-पडिहार परंपरावेत्तितो(?) य नीतो हं राय-सगासं । दिट्ठो य मे राया कणगासणत्थो सामावदातो पलंब[?....] समाणो, वामेक-कुंडलधरो विसाल-गंभीर-रत्त-लोयणो, [६७]पासतो य से **जरासंध**-दूता निसन्ना । अवलीवी(?लोइ)तो य अहं राइणा भणिदो य रायपुरिसेसु—देव ! एस सो आलोएह त्ति । तेण दट्ठूण वावालियं(?) सिरं। **जरासंध**-दूतेसु य पि(?पु)च्छिओ गया(?राया) — रायं को एसो ? किं

निमित्तं बांधवो(?बंधिदो) त्ति । राइणा भणियं— एसो णडोवज्झाओ तुब्भं भवस्सा(?भविस्स-सा)मिणीए **मुत्तावलीए** कण्णाए पहाण-रायकुल-गामिणीए पहाण-गम-सिक्खावणा-हेउ अब्भत्थिओ अन्न-देसाओ अहमागंतुं अणिच्छंतो बला मे बंधावेऊणं इहाणावितो । तं सिक्खावेसि(?दि) मे दुहिदरं **मुत्तावलिं** [६८]**जरासिंधु**-दत्त त्ति । एसो तुब्भं भविस्स-सामिणीए अभिलवदि(?)

एदं सोऊणं मया चिंतितं—अहो एस [६९]असंकितुगो(?) हिदयं दहदि मे। अहं हि किरादि(?)बला वंचिदूण इहाणीतो, ण तु सयमेव आणतूं(?)।

चिंतितं च मे नूणं तीए कन्नाए **मुत्तावली** नाम, जा मे इदाणिं चेव [७०]पवेसिज्जंतेण दिट्ठा । सा य अवस्स कस्सइ दिन्ना [७१]**जरासंधु**-सुता(?दत्ता) ण वा ? ।

तओ ते सुदेसु पुणो भणिओ राया-'देव ! कुलमालो हु एस णड्डोवज्झाओ केवच्चिरं खु एस बद्धो अच्छइ ?'

तेण भणियं— एसो दिव्व-णट्टं व गीदवाइदं जाणइ, तं जइ ताव एसो मम सुतासु य पउत्तेण उवदेसं काहिति पहाण-रायकुल-गामिणीए तओ लद्धं चेव मुंचीहामि । अह ण काहिति तओ बंधणे चेव एदेण मरियव्वं ति ।

एवं भणंतेण सद्दाविओ **वग्घसेणो** भणिओ य— 'एदुं(?दं) समरे णेदु जत्तदो उवचर इ रक्खा भि य त्ति ।' तेण पणिएण भणिओ-सामि ! एस मे पणदेण तेण चदुकम्मेसु य उ वसीणीओ न एस मया परक्कमेण घेत्तूणं संकितो तेण [७२]पउत्तं एस सयमेव उवागदो, इदाणिं बंधणे धरिओ आबद्धो य एसो [?न] कन्नं सिक्खावेदि(?हि) ति मुयह णं ति । तेण भणियं— वच्च सिक्खावण-कदुज्जमं मुइहामि । एव भणिते णीदो हं मंतिणा स-गिहं, निमंतितो य [७३]मि तेण ण्हाण-भोयणेसु, णयाहं बंधणपीलितो ण्हाणं भोयणं वा इच्छामि। तेण य अंतो गिहस्स पवेसेदुं मुक्काइं सव्व-बंधणाइं । तदो तेण पणतेणं पियं च भणंतेणं कहं वि अहं मज्जावितो भोय(?) ठवितो य मि तेण रायाणुरूवे सुसयणीज्जे ।

बिदिय-दिणे य स्नो र(?व)यणेण भणिओ हं पणदेणं मंतिणा— देव! राया ते वयइ जहा ण तुमे एत्थमणुगहेदव्वं जं तुमं मए कारणवसेण णट्टोवज्झाओ भणिओ य त्ति । जाणामि ते सत्तं पुरिसकारं च । एत्थ कारणं किंचि जओ मया एव भणियं । एत्थ कारणे सयमेव ते अहं [७४]पसादेस्सं।

किं-पुण भणामि ते अत्थि **रयणावलीए** देवीए अत्तिया कन्ना **मुत्तावली** नाम। सा य पुव्वि सुत-परमत्थेणं रूव-गुण-वन्न-नाहित-हिदएणं अइराइणा सयमेव **जरासंधेण** मग्गिया साणुग्गहं च दिन्ना तस्स विणा ण य से विवाहधम्मो कीरइ इच्छइ संपदं राया किं पहाणकुल-गामिणी-कण्णगं णट्ट-गुण-गीद-वाइदेसु सुणिम्माणि(?) काउं । ततो सुत-परमत्थेण रन्ना तीए सिक्खावणा-हेदुं तुब्भे इहाणाविया । जाणदि य राया जहा तुब्भे पहाण-कुल-वंस-संभवा [७५]वित्तिगा य ज(?जं) ण णट्टोवज्झाया । सा य कन्नगा पुव्व-सिक्खिया चेव चतुसट्ठि-कला-कुसला य अणण्ण-सरिसा य णट्ट-गुण-गीत-वाइदेसु, तह वि राया तुह संतियं उवदेस-ग्गहणं इच्छदि । तं ते अहं राय-वयणेणं विन्नवेमि, कीरदु पसादो णिसुआ हो जणगाधितं रायकण्णगं मेहावणी (?मेहाविणीं) जहोवट्टिदं [७६]गेण्हीति । तओ ते तीए गहिदाए राया तुट्ठो पूएदुं अचिरेणं ससुर-कुलं ते विसज्जेहिति । कुणह पसादं । जोग्गा हु सा तुब्भ सीसिणी ।

ततो मया तस्स णीयावत्ति-परितोसिएणं पडिवन्नं—'सिक्खावेमि णं' ति।

एदं च राइणो विहियं तउ राय-संदेसेण तेणाहं ण्हावित-विलित्तो गहिद-खोम-परिधाणो पवर-रहवररूढो णीतो चेव राइणो सगासं । ततो अवतरित रहवरातो **वग्घसेण**-मंति-सहिओ अली(?ल्ली)णो नरवइणो, तओ हं तेण य लोगोवयारेणं पणमंतो अब्भुट्ठेऊण आसणातो धणियं अवतासिओ, पियं च भणिओ । भणियं च णेण- भद्दमुह ! इमं ते अत्तणो घरं, अहं च ते पिता। तुमं पि मम जेट्ठ-पुत्तस्स देव-राउलस्स समट्ठाणीया अन्नसुओ होऊण सिक्खावेहि भ[गि]णियं **मुत्तावलिं** । अचिरेण ते सव्वं साधु भविस्सइ । जं च सि मया कारण-वसेण णडोवज्झाओ त्ति भणियं, तं कारणं पुणो कहेहामि ते ।

एवं भणंतेण निवेसितो हं कणग-भद्दासणे मुहुत्त-मेत्तं चदुर-मधुरासु कहासु अभिवीसासेउं तओ मंति-**वग्घसेणं** आणवेति- सोम्म ! वच्च, एदं देवगब्भं णेहि भगिणीयाए **मुत्तावलीए** सगासं । अज्जेव सुंदरं दियसं ।

तओ मंती ममं हत्थे घेत्तूणं निग्गदो राय-सगासादो गदो कन्न[?न्नंते] पुरं । ण य तत्थ कन्ना दिट्ठा मे, पुच्छिता य तेण वासगिहपाली **मदणिया** नाम चेडी-**मदणिए** ! कत्थ राय-सुता अच्छइ ?' तीए भणियं— सव्वं सिरि

[७७]समुट्ठिइं कामपलाधसवं(?) सदाकुसुमं पमदवणं पियं पि उवागदा तं च मे निमित्तं परिघेत्तुं बद्धा मो खोम-पल्लवे गंठी ।

तओ तेण च सह पविट्ठो हं सव्वोतुम(?ग)-सुरभि-कुसुम-भरिय-**पादव**-णिमितं सालं(?) कुसुम-रस-सादु-मुच्छिद(?)-अभिलिंत(?)-दरिद-भमिर-मधुयरि-पधकर-परिगुंजमाण-गुमुगुमुगुमेंत-महुर-सद्दाउलं पवर-पमदवणं। तत्थ य दिट्ठा मया रत्तासोय-पादव-जवलस्स माधविलता-विताण-गहण-समालिंगित सपउ मल्लिया-कुसुम-हत्थ-[७८]चावसोभितस्स अहो याणीगरूवतव्वरणवलीतकुलप्पासे(?) मसूरए निसन्ना परंमुही, **साणुमतीए** धाडियाए सुह-निसन्ना वा उच्छंग-णिरोविद-चलण-कमला किंपि वाम-करतल-पल्लत्थ-वदणा सचित्ता इव मणोवगद-निच्चल-नयणा ।

तओ सा **साणुमदीए** गाढावलीत-चलणा भणिता—सामिणि ! एस आगओ देवस्स पिउणो ते सव्व-रज्ज-कज्ज-मज्जात-चिंतणपरो मंती **वग्घसेणो** ।

तओ तीए ललितावलोगणाए कुवलयमाला इव वितिरिच्छा पेसिता मम(?मं) तेण लोयणावली, सविलिताए य सइर पडिसादिदा दिट्ठी सविणयं च अब्भुट्ठिया मसूरयातो सभावदो य ममं पणमिउकामा भणिया मंतिणा-देवधूते! कुणसु पणामं इमस्स दाणि महिदल-देवस्स, एस ते पितुणा उवज्झाओ विसज्जिओ ।

तओ तीए पयदि-विणीत-विणयाए सललितो णंदग्गालट्ठीए कओ मम पणामो ।

एयम्मि देस-काले राया वि **अयलो** सयमेव सदेविजणाणुयातो पच्छा बुद्धिणा सव्व-समादिट्ठ-बलिकम्मोवहारो आगदो य पमदवणं चेव, भणदि य मे उवगंतुं—देव ! उत्तमो मुहुत्तो, [७९]करेदु लहु समारंभो[८०] ।

मया भणिओ—आणिज्जदु लहुं बली(?त्ती)सलक्खणा वीणा य ।

तओ **वग्घसेणेण** भणियं—सव्वे ते णिय वीणा हत्थिवणाओ मया इहाणाविता ।

मया भणियं—सुंदरं खु एदं । आणिज्जतु ।

तओ तेण आणिया गहिदा य सकदं व मया [८१]रस्सदीव(?) गंधव्वाण य बलिकम्मं, निविट्ठो य सदेविजणो तत्थ वि राया मंतिणो य ।

अहमवि अणुरूवे आसणे समसूराए निसन्नो । गहिदा य मे कद-बलिकम्मा वीणा पियाए अंकमारोविता मे समुच्छणा मुच्छिया संजोइत-सेसातोज्ज-विधाणा आभाविता(?) उवदिट्ठाणि य मे कन्नाए आसारिय वड्ढमाणयादीणि तहा हं तप्पढमा(?म)दाए तिविहं [८२]आसारिदयं उवदंसयंतो तं जहा—

जेट्ठं पंचसट्ठि-कलं, कणिट्ठं णव-कलं

मज्झिमं तेत्तीस-कलं, कला पुण सत्तविहा

निक्खेवो [८३]परे सो सम्मा(?म्म) तालं सन्निवादमिति

तत्थ संकुचणा अग्ग-हत्थस्स [८४]आबाधो तस्स च दक्खिणतो तिरियगमणं विक्खेवो संकुचणं पवेसो [८४]समा दक्खिण पादे वामे तालो सम-पडणं दोण्हं पि सन्निवादो । तत्थ जेट्ठस्स कम्मो [८६]वच्चह(?) पुडापरियट्टो एक्को करणीओ ।

दो वि पाणि परियन्ता[८७], तस्स पुण पढमं संभावइ, तदो चदुकलो तालो ताव तियकलासु पुणरवि सम्मा भवति । तओ दुकलो तालो, पच्छा छसु कलासु संनिवातो भवति । तदणंतरं छक्कलो तालो दुकला वा संधा चदुक्कलो तालो ताव तियं समंतओ दुकलो तालो पच्छा छसु कलासु संनिवादो भवति । पुणरवि छकलो तालो दुकला सम्मा, ततो पच्छा चदुकलो तालो चदुकला सम्मा तो । ताहे चदुकलो तालो । ता छसु कलासु सन्निवातो भवति। एसो जेट्ठा सारितस्स य कम्मो । मज्झिमो आवाव(?)-णिक्खेव-विरहितो कणिट्ठो वा आवाव(?) निक्खाम-विक्खेव-विरहितो[९०] वि तिण्णि[९१] वि छस्स य अट्ठ ताला ति सन्निवाता । सह रस [९२]परणा एदं आसारिदयं चदुप्पयारं कला-वड्ढमाणेण य वड्ढमाणयं उवदंसेसी य सविसेसं ।

अवि य—

णाणुज्जला णयण-मणोहरा उ जिण[९३] पादवो तिहुयण-सेहरा[९४] उ ।

भुवण त्ति दो पढम गुरू पयासो जयदी महप्पा ।

सयच्छलणरामरेसो(?) पडिससरदमल(?) ससि-कर गुरु वित्त समदंसण विजित-कलि-कलुस-सरसिरुह मगर-करिवर-सुलिहिद-कर-चरण-जिण सुगइ (?) ।

एवमादिऽक्खरुच्चारणं पदंसिदुमाढत्तो ।

ततो सा मम तंति-सर-विरुत-मधुर-गीताणुवित्ती य तदणु सरिस-विहित-वेसाए गीता, तओ ममं पढमं पढमे सा रुचिरा । मे राया भणइ— सुम्म ! संखेवेण ताव गीदस्स गुण-दोसे जोणिं च सुणाविज्जतु कन्ना ।

तओ मया भणियं— एवं ! ताव सुणह तुब्भे कन्नगा य गेय-संखेवं । इह खलु नाभीमूलुब्भवा चरे तिच्छिया कंध-परिवट्टिता सुद्ध-संनिरुद्धा जीहा-वयणाणु-नास-दंतोट्ठ-पसरिया सत्त रसा(?सरा) पन्नत्ता । तं जहा—

सव्वं(?ज्जं) रे(?र)सदि मऊरो, कुंकु(?ज)रो रिसभं सरं ।
हंसा रसंति गंभी(?धा)रं, मज्झिमं तु गवेलया ॥
अह कुसुम-संभवे काले, कोइला पंचमं सरं ।
छट्ठं च सारसा कोंचा, णिसादं सत्तमं गया ॥

सत्त सरा अज्जव(?)-णीसिदा, तं जहा—

सज्जं रवदि मुदिंगो, गोमुही रिसभं सरं ।
संखो रवदि गंधारं, मज्झिमं पुण झल्लरी ॥
चदुट्ठलणपदिट्ठाणो(?) गोविया पंचमं सरं ।
साडंबरो धेवदयं महाभेरी य सत्तमं ॥

एदेसिं सत्तण्हं सराण संपयतिदाणं सत्त लक्खणाइं पन्नत्ताइं, तं जहा—

सज्जेण लभते वित्तिं, कदं च ण विणस्सइ ।
गावो सुरायमेत्ता(?) य, नारीणं होइ वल्लभो ॥
इत्थी पुरिसस्स भाणिदव्वा[९३] भिसा(?) भण ईसरियं ।
सेणावच्चं धणाणि य वत्थ-गंधमल्लालंकारं ॥
इत्थीओ सयणाणि य गंधारे गीद जत्ति विज्जणा वित्ती कलाविया।
हवंति कइणो पन्ना जे अन्ने[९४] अत्थपारया ॥
मज्झिम [९५]रसवंता उ हवंति सुहजीवीणो ।
खायती पियती देती मज्झिमं सरमासितो ॥
पंचमसरमसिता[९६] तु, हवंति पुहवीपदी ।
सूरा संगह-कत्तारो, अणेग गणेयगा ॥
रेवत रसमंता तु, ह जीविणो तु पला(?) य ।
कुवित्ती[९७] चोरा चंडाल मुट्ठिया ॥

णेसाइ-सरमंता य होंति य कलहकारिया ।
जंघचर लेहहारा हिंडगा भारवाहिया ॥

एदेसि णं सत्तण्हं सराणं तयो ग(?गा)मा पन्नत्ता, तं जहा— सज्जगामो, मज्झिमगामो, गंधउर(?गंधार) गामो य ।

सज्जगामस्स सत्त मुच्छणाओ, तं जहा—

मंगी, कोरव्वा, आहारी य रवयणी य सारकंता य
छट्ठी या सारसि त्ति य सत्तमी य सुद्ध सज्ज त्ति ।

मज्झिमगामस्स वि सत्त मुच्छणाओ, तं जहा—

उत्तर मंदा रयणी उत्तरा[९९] यसा ।
अम्मोकंता य सोवीरा, अहिवीरा होइ सत्तमा ।

गंधारगामस्स वि सत्त मुच्छणाओ, तं जहा—

णंदी य खुडिया पुरिमा[१००] य चउत्थी
उत्तरगंधारा वि य भणिया सा पंचमी मुच्छणा ।
अट्ठुत्तर माया मासा छट्ठ मुच्छणा दु णादव्वा ।
अह उत्तरा य सा कोडिमा य ता सत्तमा पु(?मु)च्छा ।

छट्ठा सागेयस्स, तं जहा—

भीदं दुदं उप्पिच्छि उत्तालं कागस्सरं अणुणासं च ।

अट्ठ गुणा गीदस्स, तं जहा—

पुन्नं, रत्तं, अलंकियं, वत्तं, पिघुट्ठं, मधुरं, समं, सललियं च ।

तिन्नि वित्ताणि गीदस्स, तं जहा— समं सुद्धि समं ।

[१०२]दोण्हि भणिदिओ गीदस्स—सक्कदा य पायदा य ।

णव(?सत्त) रसा गेयस्स, तं जहा— सिंगारो, करुणो, वीरो, अब्भुदो, रुद्दो, बीभच्छो, संतो य ।

[१०३]एगेगा वि णट्टो वि । उर कंठ सिर[१०४] वि सुद्धं व गिज्जते .म ऋयरभित-पदवारं(?) च्छदोस-विप्पमुक्कं, सत्तस्सर-सीभरं गियं णिद्दोसं संसारवत्तं [१०५]वाहदुत्त(?) [१०६]मलंकियं उवणीदं सोवयारं व मिदं मधुरमेव य।

केसी गायति मधुरं, केसी गायति खरं रुक्खं च ।
केसी गायति चदुरं, केसी य विलंबितं दुतं केसी ॥

गोरी गायइ मधुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च ।
सामा गायइ वदुक्खरं, [१०७]कणा(?) य विलंबितं [१०८]दुतं ॥

अंधा वि स्सरं[१०९] पुण [११०]पिंगला ।

सत्त सरा कओ संभवंति, गीदस्स का हवदि जोणी ?
कइ समया उमग्गा, केइ वा गेयस्स आगारा ? ॥

सत्त सरा णाभिदो संभवंति, गीयं वरुण-जोणीयं ।
पद-समया उस्सासा, तिन्न(?त्रि) गेयस्स आगारा ॥

अडि(?आदि)-मड(?मज्झ)-आरंभा ता समुव्वहंता य मज्झयारम्मि ।
अवसाणे य ब्भवेंता, तिन्नि वि गीदस्स आगारा ॥

तंति-समं वन्न-समं पाद-समं गह-समं लय-समयं च ।

नीसासूसासा समा संचार-समं सरा सत्त ॥

सत्त सरा तयो गमा मुच्छणा एगवीसति ।
ताणा एगूणपन्नासा समत्तं सर-मंडलं ॥

एसा गंधव्व महणीयाणुपुव्वीया ।

इतो पुण वंसाण(?णु) पुव्वी इमा भणिया, तं जहा—

मज्झिमो पंचमो धेवतो निसातो सज्जो रिसभो गंधारो य ।

तत्थ मज्झम्मि मच्छरा ता, अस्सकंता य पंचमे होति,

वे वद सर सइ [१११]रगा(?रागा) उत्तरं, मंदा णिसातम्मि

सज्ज सरम्मि [११२]हु रयणी,

रती रिसभम्मि पु(?मु)च्छण[११३] होइ ।

तह सज्जणा मुच्छणा विय सगंधारं सरम्मि णिद्दिट्ठा ।

जं जस्स मुच्छणाए गणं तं होइ पुव्व वि दियं तु ।

इति मज्झिम सर जत्ती सेसा एक्केक्क मुच्छा दु ।

[११४]सत्तहु मुच्छणाण य सत्त सरा एक्कमेक्क अन्नोन्न जत्ता ।

एक्केक्क सरंतरिया अणुपुव्व व्व परोप्परं तु दीसंति ॥

तह जं मज्झिमं तु एदं होइ ज [११५]न मुच्छ रा त मुच्छा य ।

ते सुद्ध मज्झमं कं पंचम सर विग्गहं कुणसु

उवक्कमेण एदे सत्त सरा संवर्दिति जत्तीया [११६]पिदुवच्छसु परोप्परं

एस निद्देसो[११७] वड्ढकारे सत्त तु ठाणे को जण पढम ठाणं देवाण व

उंकारं आदि [११८]निवेसेज्ज मच्छं [११९]तु अस्स क्कतं मुच्छं

उप्पा [१२०]वरणेण तीए विदियं तु । [१२१]अइरुडागार्यि(?) व ततियं ।

उत्तरमंदं चउत्थं तु । पंचम ठाणे रयणी, छट्ठे ठाणम्मि रादि णिद्दिट्ठा।

तह सुद्ध-सज्ज-मुच्छं सत्तम ठाणे निवेसेज्ज ।

अधरं पिय [१२२]संवादं मुच्छणं परोप्परं निसामेह ।

इतो [१२३]जीत्थंगुलाए(?) म(?मु)च्छा सा वारसं[१२४]यंमि(?) सुद्ध सज्ज त्ति । फुडा य ति मुच्छणा उज्ज त्ति य णीयाउ[१२५] व्वं गुणम्मि वसम्मि ठिदा[१२६] तं पि गणिऊण जाणह पडिवाडी भमिरमंडला- वत्ते रणे अह [१२७]पुच्छेज्जव्वा ते, संवादं मुच्छणाण वीयम्मि । ततो [१२८]सा हद पाउरणेणं भमिरं सरमंड गणेऊण फुडं तत्थ गोल्लग-पंचमं आभीर-पंचमं । [१२९]वोद्दराउ [१३०]केसियं आभीरकेसियं साधारियं [१३१]भिन्न-सज्जं सज्जगामो साडओ मज्झिम-केसियं व पदेसे व्वे वि मज्झिमं सरसंठाणाइणो(?) ताणा[१३२], तं जहा— मालव-केसियं ताणं कराउ हिंदोलओ य णट्ट-रागो [१३३]पाल्लग-केसियं सुद्ध-पंचमं पंचम-सभावा य एदे पंचम सर ठाई चेव देस-कालम्मि ।

एक्कं वि य ट्टक्ककेसियं मज्झिम गामो मज्झ केसियं च नीसादं । ममस्सितो सोवीरयं सपोरियं दोन्नि वि सज्ज सर ठाइणो ।

जे [१३४]अवसेसा ताणा सव्वे ते रिसभ ग(?ठ)इणो भणिया । वज्जिय जो सुरलोगो गंधारगता परिवसंति । एस वंसे सरमंडलाणुपुव्वी ।

इतो आउज्ज-संखेवो— इमो चउव्विधो, तं जहा— ततं विततं पू(?घ)णं सुसिरं च । तत्थ न तंती कचंवति(?) दुक्खरं तालायणं । वणंतिया सुसिरं च साट्टि णादव्वं ।

तस्स य चउव्विधातोज्जस्स तिन्नि पया, तं जहा—

तंतू ओघं अणुगदं च । अक्खर सरिसप्पहरं फुड पायड भणति धन्न सम जत्ति पदं सुविभत्त-करणं जत्तं ततं अणुणवदि मधुरमातोज्ज वरं ।

भूतलय विविध कप्पं उवरुवरि समावडंत समपाणिपादं आविद्ध-करण-बहुलं, उघंउघं [१३५]वाखोभितं रसइ कालं, समं पाणव पाणिजवं फुडप्पहारोरसंत-गंभीर-सणं [१३६]अणभिहद-गेर-गाढं वज्जं अणुगयं नाम तयं । एत आतोज्ज-संखेवो । णट्ट-संखेवो सुणध-

इह खलु भरथार(?) भवादीणि णट्ट-मुहुत्ताणं, तं जहा— बत्तीसं अंगहारया सभवा अट्ठसयं करणाणं सोलस पिंडिबंधा चतुरो रेयगाई णव रसा य हत्थो(?) पुण, तं जहा—

पताकातिपताका, कत्तरीमुहो, अद्धचंदो, अरालो, सुरातुट्ठो, मुट्ठी खेट्टगामुहो, परउमकोसो, सप्पसिरो, मयसीहो, तुरगो, समरगो, कमूलगो, कविट्ठो, सिंहरो, हंसपक्खओ, संदंसो, अलपउमो-हंसमुहो, मुकुलो, असंजुत्तो— करा एदे वो वीसं परकित्तिता ।

ततो संजत्ते हत्थेण सम्मत्तेण मे सुणेह, तं जहा—अंजली कको[१३७] वाकक्कंडो मुच्छिओ खडगो वद्धमाण उच्छंगो ढोलो, [१३८]पुप्फडो, मकरो, गयदंतो, वहित्थो[१३९], वद्धमाणो, विदिज्जओ एदे [१४०]संजुत्ता हत्था तेरस दुदाहिता णद्धा [१४१]भच्छे ।

इतो अन्ने संखेवेण सुणेह मो—

चदुरसो उव्वितो लतामुहो आरालो विप्पइन्नो खडगमुहो अविद्धवयणो सुईमुहो उव्वेल्लिओ रेइतो पेट्टितो उत्ताणो अवंचितो प(?पे)लवितो नितंबो केसबंधो तलक्खो गयहत्थो एक्कंवंचिदगो पक्खपज्जो वितगो गरुलापक्खो डंडपक्खो उरो-अद्धमंडलो पासद्धमंडलो उरगमंडलो [१४२]कम्मावेढिदो सत्थियगदो णलिणिपउम-भासगो[१४३] [१४४]अलवल्लवो उव्वणो ललितो [१४५]वदिलो य चतुसट्ठि करा एदे णामदा भणिया मया ।

अतो पसारितग्ग सहिदा [१४६]सज्ज हत्थस्स अंगुलीओ दु कुंचिदो वि य अंगुट्ठो पडागा[१४७] सो दु भन्नए एसो पहार पतो[१४८] एता [१४९]वाणभेदेण(?) पहरिसे य ।

सव्वे अह मंति य तहा निडाल [१५०]देसे तिदो भणिया धाखंरिस(?) जोह निरूवणो पुप्फवट्टिए य णेय संजुत्त करण कारित पविरइत तलंगुली हत्थो [१५१]सत्था य [१५२]पव्वव करणो पल्ल पुप्फोवगार सप्पादि विरयित [१५३]पुव्वा सत्थ जंदच्चंत च निद्देसं(?) [१५४]संसेत्थिच्छिय [१५५]तिव्वकरणो पुणरवि य

अधोमुहो दुकरणिज्जो परिवित्त [१५५]वयं बालं छिन्नं विरलं न गुत्तं च । एदस्स चेव, अंगुलीसु अधोमुहं पट्टित[१५६]बलासु वानुंमिवेल(?) वेलवग विक्खोभ सागरो [१५८]हदो ण णट्ट-विसारदा दो इत्ति [१५९]उच्छोहण सुहुम हायणं [१६०]तितुं गपोरक्खप्पहदं(?) [१६१]पक्खुक्खेवाभिणयं [१६२]एय करणे [१६३]परिघट्ट तलाघात मलिद घंसण पिट्ठ-करणादि एवं एदाए विधीए सव्वेसिं पहत्थाणं कम्म-लक्खणं च वित्थरओ मया भणियं । अवि संचिंतिज्जमाणो नत्थि [१६४]केइ अहत्थो णाम, तह वि इमे अन्ने वि दिव्व-करणा सहत्था, तं जहा—

उद्धो, [१६५]आविद्धो, अधोमुहो, अंचितो, अविद्धो, मंडलगतो, विद्धो, सत्थिओ, पिट्ठंगओ, सुमुहो— एदे दस प्पगारा पसारिता [१६६]वेदितेसु संजत्ता बाहूणं णादव्वा । कारणागदा [१६७]ण हवित्तेसु(?)

एसो हत्थ-भरण-विधि संखेवो । अहवा हला सव्व-संखेवो—

लय-ताल-समा पादा हत्थ-दिट्ठी-समा पयोगम्मि ।

वयण-समो वुदरोगो(?) संखेवो णट्टसुत्तस्स ॥

एवं मण(?णु)एसु नट्टणोवदेसु गीत-वाइदं च विसेसेणं । अत्थि पदेसं तिण्ह वि सुर-विज्जाधर-लोग-विहिदाउ । उत्तर चूलियाओ भाविय मया तत्थ [१६८]सलक्खणेसु परिकधिदाओ । एवं मे तेण [१६९]अत्तणोणुसारेण [१७०]कंपविदि दंसेदुं पयत्तो हं कन्नाए। निव्वत्ते य अणुकाले राइणा आणत्ता दोवारिया— भो ! अज्जप्पभिइं इत्थिदावस्स[१७१] कन्नोवज्झायस्स [१७२]निक्कास-पवेसो ण केणइ वि वेलाए वि [१७३]धारइतव्वो त्ति ।'

एवं भाणिउं राया सपरिसो उट्ठिओ । तओ हं पि रायघरासन्ने चेव दिन्नो आवासं । विसज्जियं च मे रन्ना तत्थ नगरपदि-जोग्गं सरयोत्ताणं पट्टाकुलिया तं चित्तय जमल य जवल दंडो [१७४]वा वणिया कलियं खोम-जवलाण य अट्ठ [१७५]सदं अट्ठ लंकारिय णिज्जंगा तंबोलिय-गंध-वन्नग-पीसियाउ य वालंग पाद सद्दया ण्हावया सूवकारा य विविधाणि य पवर-भंडोवगरणाणि पेढियाओ भोयण-भंडिया य समत्ता खदपूरिम[१७६] सकर णिम्माणा मणि-कणग-रयणमईया। अन्नय तप्पढम विउला रायरुहा भोयण-विही तं च सव्वं मया कारणवसेण रन्नो बहुमाणेण य पडिच्छियं मया । एवं सव्वं मे सुप्पत्तं । राइणो(?णा) कयं[१७७] । सिक्खवेमि य जहासुहं पमदवणे य मुत्तावलिं [१७८]काउहोय(?) सयं गहिद-वीणा उवदिसामि तीए सगंधव्व-णट्टं काहेइ(?) । तं चिय गहिद वीणा-वियावडं सयं गहित संकतालिया(?)

हत्थो तीय गंधव्वोवदेसं करेमि णट्टोवदेसं च । णयाहं विणा-अणुयोगेणं तीए सगासे कदाइ खणमवि अच्छामि । एवं वच्चइ को वि कालो । अहं च ति(?तं) देवता-सरिसं रूविणं कन्नं अभिक्खणं पेच्छमाणो तीए उवरिं अतीव कामवसगओ जाओ, निगूढभावो य णं उवचरामि ।

अन्नदा य मे सा कन्नगा रन्नो पच्छं(?) दवाविया, राया सदेविजणो तं दट्ठूणं परं विंभयं उवगतो । पुणो य मम तेण वत्थालंकाराइं विसज्जियाइं। रन्ना [१७९]सभडगणिजो(?) आसुं(?)[१८०] सीसिणी [१८१]विव विणीदा छेयतद्दारोय(?) संगहिदा(?) वाहण-कज्जे पवरा [१८२]सुवोवेगा णाम हत्थि[णी] कन्नागारा [१८३]यवण(?) नियत्तो य तत्थागंतूणं **वग्घसेण** मंती ममं भणइ— देव! एस ते राइणो(?णा) वाहि(?ह)ण कज्जे [१८४]वसोज्जा(?) पहाण करीणी विसज्जिता । एदं परिगेण्हह त्ति । सिक्खावेध य किर सव्वादरेण भगिणियं **मुत्तावलिं** ति । मया तह त्ति पडिवन्नं । परिग्गहिता य मे हत्थिणी, आलाणिदा ममावसाणे(?ममावासे) तस्स य मे भद्दस्स कणेभवरोवोवरणस्स(?) मया धिति-उप्पायणा-हेदुं दिन्नं बहु-सहस्स-मोल्लं णरवदि-जोग्गं अलंकारियं वत्थाणि य पवराणि । सो य मे अतीव चाडुगारओ देवदमिव ममं मन्नति। थेवेसु य दिवसेसु उप्पन्नो मम तेण सह पीति-पणयो वीसंभादियो । णायगुणा ममं च **मुत्तावलि** वदे(?द)ण-वसणं लक्खेऊणं भणइ— देव ! [१८५]अणेगागां(?) लक्खेमि । साहध किमेदं ति । मया य तस्स सीलसव्वएण(?) वीसमंतेणं कधितं सब्भूतं **मुत्तावलि**-दंसण-मदण-वियार-संजणिद-हिदय-गइं(?य) नियय-दुक्खं । ततो तेण भणियं— देव ! अइ दुल्लभा हु **मुत्तावली** । **जरासंधस्स** सा दिण्णा। तह वि जहासत्तीए करिस्सामि जत्तं ति ।

अहाहं अन्नदा वि पभाद-काले अचिरुग्गरे दिणयरे गदो हं पमदवणं, पेच्छामि य सुरभि-कुसुमिय-लदा-मंडवए कणग-पल्लंक-तलं कन्नं सुहप्पसुत्तं सुहीजणा(?सहीजणो) य से परिवारेऊण समंततो पासे णं निसन्नो अच्छइ । चिंतितं च मे— एसा नियत्तं साणुकाल-विबोधणा कीस पुण अज्ज एव चिरं सुव्वइ । तओ मया तत्थ अहंगुली सन्निदा **साणुमदी मुत्तावलीय** अद्धसरीर-समाणा । सा मे विणएण उवागदा, पुच्छिदा य मे— 'कीस कन्ना अज्ज एव चिरं सुवदि ? किन्नु हु से कायिग(?काइ) सरीर-पीला अत्थि ?' तीए भणियं— सामि ! अज्ज एदीय गणिम-दियसं उन्निद्दओ महंतो वट्टइ,

विसेसेण पुण अज्ज उन्निद्दयं आसि ण सुत्ता ईसिं वि अज्ज रत्ति, कदं च एण्हि पभाते निद्दं लभिऊण पासुत्ता । तं च सोऊण चिंतितं मे- सव्व-सयण-मज्झ-गदाए [१८६]हिट्ठ-सरीराए [१८७]साहीण-सव्व-सुह-समुदिताए य जं एदीए य उण्णिद्दय-कारणं ण तं [१८८]विणवज्जेणं(?) भूतं खु एसा वि मम दंसण-मयणापेल्लिया गूढं ताव दुक्खं अणुहवइ । एदं से पउरं उण्णिद्दय-कारणं मन्नामि। एवं चिंतयामि, ताव य सा वि ममागमणं[१८९] सहिजणेण [१९०]भण्णदि, सछुरिया(?) विबुद्ध निद्दावस-रत्तलोयणा ममं दट्ठूणं [१९१]सलील वियावडुट्ठाणा उट्ठिया य सयणिज्जातो, सविलिदो(?दा) णं चंदवदणा आगंतूण कतप्पणामा सणीयं पुच्छइ-सुहं उवज्झायाणं ति । मया भणियं— तुह [१९२]सुहवत्ता पुच्छणिज्जा जं पुण [१९३]ससुहकारणं(?) दुक्खट्ठा तं तु भावी णं चेव ।

ततो सा सलज्जा सभावतो [१९४]णादिप्पसूतभासिणी अहोमुखी तुसिणीया [१९५]ठिदा । ततो हं नातिचिरं तीए सगासे आसण-परिग्गहं काउं पुणो वि लहुं चेव संपट्ठिओ हं निय-आवासं, तेण नवरं च पयति-सुकुमालं भणियं **मुत्तावलीए**- हला, किमेस उवज्झाओ अम्ह सगासाओ चंडाल-गिहातो वक्कलउत्तो(?) जहा धिदिं अलभमाणो दिणे दिणे लहुं चेव पलायति ? [१९६]अव्वो किमेतं ति । एवं भणंतीए दिट्ठीए सण्णिदा सा णुसपीसाय(?)-वेगेण उट्ठिता [१९७]भणति य— उवज्झाय ! चिट्ठधे(?ध) इणोहव(?), अम्ह सामिणीय अविसज्जिता स-गिहं गच्छ(?च्छि)त्तए । एवं भणंतीए अभिधाईऊण गहिओ तीए वत्थ-पल्लवे, नियत्तिदो य निसीयाविदो य पवरासणे, भणइ य मम **मुत्तावली**- किमेतं गुरुणो लहुं चेव णीसरंति दिणे दिणे ? ।

[१९८]ततो मया भणियं— सुयणु ! ण वट्टति उवदेसकालओ परं पर-विलया-जण-मज्झे मणूसेण अच्छिउं ति ।

ततो सहिजणेण से भणितं—'चिंतेहि ताव सुहय, सयमेव केवदिया वा पुरिसा महि-मंडले **मुत्तावलि**-सगासे एवं संलभंति मुह-दंसणं वा । अहो! ते एस अणिउणता, जं एदी[?ए] सगासे लद्धपवेसो लहुं चेव णिगच्छेह ? सच्चं खु तं भन्नदि, जहा, ण गद्दभ-मंसं [१९९]यू(?)णागारे अभिरमइ कागो कणग-पंजरे ति ।

तओ **मुत्तावलीए** भणियं— होदु हला, मा एवं संलवह । ण हि मम गुरु गद्दभ-मंस [२००]कागेसु सह उवमीयदि । मम गुरु चंद-महिंद-मंदर-

महोदधि-दिवाकरेसु अणुसरिसो ।

सहीसु भणिया-कहमेतं ?

तीए भणियं— सुम्मत्तणेण ताव चंदो इव सरद-काल-सकलोदित-मंडलो, [२०१]रूव-गुण-विक्कम-गुणेसु पुण महिंदो इव अणण्णसरिसो, लच्छीए थिरत्तणेण य मंदरो इव देव-रमणो, आगमगुण-रयणेसु गंभीरत्तणेण य रयणागरो इव जहा विणमरो(?) एस [२०२]दित्त तेय ताएसु पुण मम गुरु सारदिय-दिणयरो इव दुन्निरिक्खो[२०३] त्ति ।

तेसु सहीसु भणिया- हला ! बहु ते उवज्झायस्स [२०४]कट्ठरं(?) लद्धं तं न केवलं पस्सपायामेत्तेण(?) चेव पियं कीरइ वत्थऽण्ण-पाण-समालण-तंबूल-धूव-पुप्फेसु वि पूइज्जइ पुज्ज-जणो ।

मुत्तावलीए भणियं चिय जहा अत्थीणं जो न रोयइ न हु सो जुवईण सासओ होइ । हिययं जा [२०५]सण दिज्जइ कडीय को डोहलो तस्स एवं जाणामि तेण भूताणं वाइतो वंसो ।

तओ पुणो वि मे भणदि **मुत्तावली** सविणयं—कीस पुण गुरु-जणो अज्ज विसेसेण साणुकाल दर संपट्ठिदा ?

मया भणियं—सिहरदसणे ! महंता मे सिर-वेदणा वट्टति । तेण तुमं दट्ठूणं चेव संपट्ठिओ हं ।

तओ सहीजणेण से भणियं—जइ सिर-वेदणा ततो न युत्तं चेव लहुं नीनेउ, इतो भे अच्छिवाई[२०६] एसा सिरोवेदणा विज्जाणुसहीया जारिसिया [२०७]दुहिता तइहं वेव(?द)णं विण्णादे व(?) अहा हं सुहासणगतो तरुण-जुवदीसु संवारि दुक्खे [२०८]वयं वादवीयितं(?) सुहं अच्छामि ।

अह मे सा पुप्फ-फलं जलं पणामेउं पुप्फ-फल-पडिपुन्न-हत्था विणयोवगता ऊसारित-सहीजणा [**सा**]**णुमति** सहिता **मुत्तावली** ममं भणति— उवज्झाय ! अज्ज मे पभात-समए सुमिणो कोइ दिट्ठो । तं ताव सोदुमरहध । अवि य—

जाणामि अज्ज सुमिणे ससिकर-गोक्खीर-हार-धवलेण सुहुत-हुतासण-किरणोज्जलित-सरिस-केसरसढो[२०९] दढ-[२१०]गाढंकुस-किरण-विदारिदुग्ग-वदणो अदीवसणहरो धवलो सीह-पोतो कणग-पंजर-गतो मम सगासं पिउणा सयमेव उवणीतो, भणिया [२११]य मि ते पुत्ति **मुत्तावली**, एयस्स

संतियाइं चरिदाइं [२१३]सिक्खेज्जा सि । एदेण चेव सह विणोदेहि त्ति। तओ हं तस्स अल्लीणा । तं च पेच्छंती ण तिप्पामि । चिंतितं च मे कदाइं एसो पंजरं भेत्तूणं पलायइ । तओ मे कणग-संकलाए पंजरंतेण [२१३]पासकताए सुबद्ध(?द्धो) कतो। तओ जाणामि तेण तंतूण तं पंजरं उट्ठावट्ठण सहसा वदणेणं तिक्ख-सित-दाढा-करालेणं मम विदारीयं उरं, विदारेऊण य तओ रुधिर-फुरंतं कड्ढियं मे तेण हिदयं गलिदं च । तओ हं तम्मि गलिदे समाणे रुहिरे(?)खिन्न-सरीरा समाणी पडिबुद्धा, चिंतितं च मे एस को वि महाणुभावो सुमिणो मए दिट्ठो। एस मे पढमं उवज्झायस्स कहेदव्वो । एदम्मि चेव कारणेण मया गुरुणो संपट्ठिया धरावियां मेमोमं(?), अन्नहा गुरुणो अविणीयं परिगणेज्ज । एवं आणवेह केरिसो हु एस सुविणो त्ति ।

तओ मया जाणंतेण सुविण-फलं जहट्ठिओ भणिदो य अत्थो । किंतु भणिया मे-सुयणु ! सीह-दंसणं ताव सुट्ठु सुविणे पसंतं ससवि(?) रुहिर-हिदयावहरणं पि सुंदरं चेव, रुधिर-दंसणं पि महंतं हिदय-गय-मणोरह-संपत्तिं करेइ, रुदितंसुपादे वि हरिसामोद-पीति-वद्धणं भणितं । [२१४]एवतियं चेव इच्छामि सव्वहा जेण मम हिदयस्स मणोरह-गब्भिणस्स हरिसो होइ । तह मे एस सुमिणो करेज्ज।

मया लवियं-सव्वहा उ इच्छिद-मणोरह-फलदो भवतु ।

ततो **साणुमदीए** भणियं-सामिणी, जाण ते सुविणत्थयं । तुह गुरुसु ण [२१५]सुदु(?ट्ठु) सुविण-फलं भणियं । इह [२१६]ते इदाणिं जहट्ठियं सुविण-फलं परिकहेमि।

तीए भणियं— सुयणु ! महापंडिता सि [२१७]विदितानि य ते सुविणत्था । तं कधय सुविण-फलं ति ।

तीए भणियं— सुणह, जो ताव अम्ह सामी तुह पिता सो ताव ते कुलदेवत(?ता)[२१८] स वण-जक्खो । जो य धवलो सीह-पोतो पंजर-गदो सो एस उवज्झाओ, सीहो जो सुधवलो बला बंधेऊण रण्णा इहाणिओ जं पुण पिउणा भणिया [२१९]एतम्ह सत्रियाइं चरिदाइं सिक्खमाणी एदेण चेव सह विणोदेहि, तं सुट्ठु सोभणं एदस्स ताव चरिदाइं दिव्वाइं ताइं तुमं एसा संपदं सिक्खिदा चेव, विणोद-कारणं पुण इह [२२०]भवायुधे [२२१]गहकाले गाणं वितीरती य सादिवुदं(?) एदम्मि चेव होहिति । तं जं पि य सीह-पोदो

कणग-संकलाए बद्धो तं पि य अमदमईयाए पेम्म-संकलाए एदं बंधीहिसि। जं पि य उदरं विदारेऊण हिदयं [२२३]गिलियं, तं पि पेक्ख पच्चक्खा णं नणु हियं चेव ते उवज्झाएण हिदयं ति । रुहिरपाडे(?दे) य ता एदस्स पासादेणं उत्तमा सिरी होहिदि । रुहिरंसुपादेसु य जातेसु संपदं हिय-गता चिंता, तीए उवसमकरो महंतो आणंदो होहिति । जं पुण पभात-काले दिट्ठो तेण आसन्न-सिद्धि-फलं हिय-मणोरहाणं निवेदेइ । एदं एदस्स फलं ति। तं च भणंते **मुत्तावलीए** कयंजलिपुडाए सिरेण पडिच्छियं ।

मया चिंतितं— साधु कदं **साणुमदीए** सुविणं वागरेंतीए । मम वि आसासियं हिदयं **मुत्तावलीए** वि पडिच्छमाणीए भावेण सुविण-फलं । निवेदिदं मे विसन्न-हिदयस्स जहा हं कामयामि ते । दुब्भिक्खं खु एरिसियाणं सुविणा लक्खणादियाण सुविण-वागरण-परितोसियाए **मुत्तावलीए** [२२३]दिन्नं महालयं अलंकारियं **साणुमदीयं** ।

ततो हं तं सोऊण निव्वुत्त-हिदयो गतो नियया‌वासं । अणुमग्गतो य मे तीए [२२४]परियण-हत्थे विसज्जिता विविधा भोयण-विधी वत्थालंकार-विधि य पहाणा पंच-सोगंधियाणि य तंबोलाइं मज्जण-विधि य । तओ सुट्ठुदरं अत्थ-गदं पिव पियं मन्नामि । तओ मज्जित-जिमितो गहित-तंबोलो पद-सदं चक्कमिऊण [२२५]सव्वंतोवट्टाण-गतो हं पविहरामि ।

ततो बिदिय-दिणे सूरोदय-काले गहिद-मुहधोवणो कय-दव्वा-वस्सओ रायाणं अभिवादेउं गदो हं कन्न(?कन्नंत)पुरं, तत्थ कण्णं अपेच्छमाणो पमदवणं चेव पविट्ठो हं । पेच्छामि य तत्थ कन्नं लताघरे **साणुमति**-वितिज्जयं निरत्थयाए भूमीए निसन्नं पगलियंसु-लोयण-जल-वरिसिणिं सतुसार-जल-लोल-बिंदु-चित्त-कमलं पिव कमलिणिं किं पि निद्दाय दुक्खाहदं [२२६]निहत-हिदयं मणमणमणस्स रुयमाणिं, अणुरुयति से य पासट्ठिया **साणुमती** ।

तओ तिं तहाभूदं पेच्छमाणस्स तत्थ ममं पि दुक्खावियं हिदयं । दिट्ठो य अहं अदूरागदो **साणुमदीए** । सा मे पदेसिणीय संनिभा(?दा) लूहेऊणं अंसुयाइं उवागता मम सगासं, पणमंती य मे पुच्छिता- सुयणु ! किमेदं कन्नाए रोत्तव्वयं ति । सा मे दुक्खुप्पन्न-हिदया परिकधेति- सामि ! सुणह, एसा पिउणा चिरोप्पाए मग्गमाणस्स अवि राइणो **जरासंधस्स** दिन्ना । ण य एदं कारणं एत्तीयं कालं वित्तायं जहा हं कस्सइ दिन्न त्ति । हिज्जो य पच्छाऽ वरण्ह-काले **जरासंध**-संधेया दूता चेव पादमूले पविट्ठा, तेहिं य अम्ह

सामिणो भणियं— देव ! अवि राया आणवेति विसज्जियदु कन्ना मम सगासं, अहवा संवच्छरे पुच्छिदुं दियसं [२२७]ठवेज्ज वारेजस्स जा हं सयमेव इहागच्छामि। एस अवि राइणा आणा । ततो अम्ह सामिणो भणिया ते दूता- पेच्छध ताव कतिइ दिणाणि जाव अहं संवच्छरे पुच्छिदुं दिवसं ठवेमि विसज्जेमि वा कन्नं ति। तह त्ति य तेहिं पडिवन्नं ।

एवं च कज्जं जहाभूतं, अज्ज पदोसे सव्वं पि सुंदरं एतीए एसा य मणेण तुब्भे अभिकंखइ एव एदं कारणं अहं जाणामि पुव्विं तुह गदमणाए मणोरहेसु असंघडंते उणि(?ण्णि)द्दयादी महदी हिदयवेदणा आसि । हिज्जो य सुमिण-दंसणे य दुरंजससिया(?) आसि ।

एयं व अन्नं **जरासंध**-कारणं सोऊण अज्ज सयला राती रुयंतीए गता । अहमवि [ण] धिर्दि लभामि ।

ततो अहमवि [२२८]एदं सोऊण अतीव विसन्नो अल्लीणो य से पासं। तओ तीए रुयमाणीए चेव परम-दुक्खियाए कदं मम विणय-कम्मं, [२२९]सगासं ण गदे य गाढदरं परुदिता । मया ततो सयं विसंसेण वि सा समासासिया भणिता य— [२३०]नागसमणार(?) अलं विसादेण, धिर्दि लभध, जाता वो अत्थ-सिद्धी । [? ....] मया भणिदा य- सोम्म, कधय कधय किह त्ति ?

तेण भणियं—तुब्भे पढमं विय मम संतियं पच्चंतं ण याणध तं ताव सुणध । अहं ताव महाराय **भाणुचंद भागिधे(?णे)यस्स सुसेणस्स** संतिया [२३१]संता **भद्दयसा** नाम तिमि(?सि)रि विणा इहाणाविते समाणे तेण धिर्दि अलभमाणेण विविध वुत्त गंधेय पुत्त-सहिओ तुह जीवंतस्स चावंता वहण कज्जे सउवायं इह विसज्जिओ हं । इहागते य मया दिट्ठो सयं चेव अणहसरीरो । तओ मया लिहिया तुह संतिया सरीरवट्टमाणी जहा ठिदा वुत्ता य विविध वेस-पडिच्छन्नाइं इहं चेव नगरे वसंति । अहमवि तुह आसन्न-वत्ता-लभणपरो इहं च लयाउताणं ओलग्गिउं पयत्तो, तेहिं पुच्छितो 'किं जाणसि ?'

मया भणियं-[२३२]आधारेण तत्तं तावगदाणं सुट्ठु जाणामि । तेहिं य अहं पडिच्छिओ दिट्ठ-कम्म-गुणाय रण्णो **अयलस्स** उवणीदो हं । तेण य [२३३]सतवेगाए करेणुयाए आधोरणग्गो निउत्तो हं । परितुट्ठेण य रन्ना करिसितेण पेसिता करिणी अहं च तुह चेव तं च मे कारणं [२३४]अब्भणीय जायं, चिंतेमि

य-अहो सपुन्नोहं, जो हं सामिणो चेव कम्मकरो निउत्तो सो महता जत्तेण इह वसता छलरिच्छलेहिं(?) दट्ठव्वो [२३५]सो ते पुन्नवसेण [२३६]णिव साधीणो जादो अट्ठलोवित-णामो य **भद्द** त्ति य इह नामं पगासेमि । तओ से[२३७] पुणो लिहियं **सुसेण** सेणावई राईणं जहट्ठियं कारणं ।

एव वच्चंते काले अज्ज अहं चिंतापरो तुब्भ संतियं कारणं हियएणं आलिहंतो अच्छामि । नवरं च आगओ मे पासं परिव्वायग-वेस-पडिच्छिण्णो **कुसलपुरिसो** नाम धुत्त-पुरिसो, सो मे परिकहेइ-भो भद्दयस ! सुणह, आगतो ह इहं सत्त अनियत्तया इव पवर-पुरिस-सय-सहिओ राया-भागिणेयो **सुसेणो सागसेणो** य महामंती । ते य कदसंकेदा इहेव सव्वे परिवसंति । मंति-सहिओ य **सुसेणो** [२३८]**पंड(?डु)**रंग-रूवेण बाहिं नगरस्स इट्ठ-वागरणत्था [२३९]हरगहण-ववदेसेणं अच्छदि । तं गंतूणं पेच्छाहि त्ति । ततो हं गतो तस्स सगासं । तेण पुच्छिओ हं खेमकुसल-वट्टमाणिं । मया तस्स सव्वं जहाठियं परिकहियं, कहियं च से मया **मुत्तावलि**-दंसणाएल्ल-कारणं तस्स मंतिणो य, तेहिं भणियं—सुट्ठु सुंदरं । गच्छ तुमं, तस्स कधेहि जहा एस संपदं कुसुमित-चूत-चंपगासोग-सहयार-पडिया [२४०]तस-पाडल-वर-बकुल-तिलग-वासंत-मल्लिया-कुसुम-सुरभि-वासित-दिसाभोगा परहुत-रुद-रइद-कुहुकुहु-कुदं(?हं)त[२४१]-परिलिंत[२४२]-भमर-मधुयर-पवर-परिगुंजमाण गुमुगुमुगुमेंत सुइ-सुह-सद्द-समुल्लइद-मुइद-खहकुल-[२४३]बल-कलाघात-सोभिद-वणंता, दाणि ण तणु समणं संसिर[२४५](?) पसरिद-किरण-समुच्छरिद-सुरभि-पविकसित-कुवलय-वणसंड-लग्ग-मधुयर-भमरगणोरसित-मधुर-मुणुमुणुमुणाराव-चतुर-वेधित-कामिणिजण-जणित-उक्कंठ-ऊसउरसित(?)-भीम-सद्द-समापूरमाण-काणण-वणुद्देसे पवसित-पतियाण जत्ति [२४६]दिहय सो ते साधीण-पियजणाणं पुण हार-चंद-चंदण-हम्मिय-मधु-मदिरामोद-पवर-वास-कुसुम-पउर-परिभोग-सुह-योगो य वसंत-मासो वट्टइ । एवं नगरस्स बाहिं रउगिरिवरं नाम पवर-उज्जाणं सदा-कुसुमित-पादव-लता-वियाणं, जस्स अ(?आ)सन्न-वि(?ठि)यं समुद्द-लीलावगं सिरि-तलागं सदा-सुरभि-सरोरुह-वासित-सीर(?)-गंभीर-पाणियं । तत्थ य चेत्तमास-तेरसीए राया **अयलो** संतेउरो सव्व-पयति-समगो(?ग्गो) सव्विड्ढीए सतलायरो विउल-पाण-विधि-विधाण-सहितो वसंत-जत्तं काउं निग्गच्छीहिति । तत्थ तुमं पि निग्गच्छीहि ति । पच्छ(?एत्थ) कन्ना **मुत्तावली** तीए आवासासन्ने तुब्भेहिं णिवसियव्वं । तद्दियसं च सूरत्थमण-काले महंतं अइ-भयाणगं वाद-विरसं उप्पातियं महा-भयकरं

पादुब्भवीहिति । एवं सो अवितह-वादिणा[२४७] णेमित्तिएण कधिदं, णत्थि संदेहो तम्हि य ।

मए तुब्भेहि य सयल राय दिणं सुवेग [२४८]करणाणग्गम(?) कज्जेति कण्णा-सण्णेज्झं ण मोत्तव्वं इह य पुरवरे पुव्वागदाइं पंच अणियत्तग-पुरिस-सद्दा(?दा)इं परिवसंति । मया वि सह **सागरेण** मंति-संगुत्ताइं सत्त-आयुवियसदाइं इहागताइं । ततो तेसु सव्वेसु वि [२४९]सह सितो अहं मत्तप्पमत्त वीसत्थ णिवेदणि णिब्भयो उप्पादिय वाद वरिस वियालिए जणे तम्मि समए परिहामि अवभण-वली(?) तुमं च कन्ना-सहियं ।

तं च सोऊण चिंतियं मे-कयाइ मे एस **भद्दो अयलराय**-पुत्तो एयं भणिज्ज ताव य तेण साभिन्नाणा दंसिया मम लेहा **सुसेण**-संतिया य, ते इमे वाइदा जाग तेसु तं चेव लिहियं । ततो मया परितुट्ठेण दिन्ना पियक्खाण-णिमित्ते **भद्दस्स** अट्ठ वत्थालंकार णिज्जोगी पहाणा । अहं च बिदिय-दिणे गओ कन्ना-सगासं, [२५०]संदिट्ठा इमे स [२५१]विता वहिता माणुसा **साणुमति** वितिज्जया पमदवण-गदा भणिया इमेसा- सुयणु ! किमिवसं उवागता ।

तओ तीए ललितावलोगणाए अवलोएऊण भणियं– ए(?) सुस्सागयं सामिणो । एवं पियं संलवंतीए कयं मम विणय-कारणं [२५२]कमे तीय सयमेवोवणीते आवस्सए आसणे निविट्ठो हं, निविट्ठा य सा वि मसूराए पुरो इमे [२५३]मणोदिहार(?) ताणियता(?भणिता) य मे— सिहरदसणे ! मम जीविदेणं साविदा सि सव्वं ताव कहय (?क)स्स कारणा अधिदिं करेसि?

ततो तीए सयल-ललित-चदुर-मधुर-भासिणीए भणियं— को अहं व(?त)व जदो ममं निय जीविदेण सावेसि ?

मया भणियं— अहं ते [?सा]मि दासो वि ।

तीए सचिंताए वि ईसिं हसिऊण भणियं— किह तुब्भे मम सामी दासा य ? नणु विरुज्झदि एदं ।

साणुमतीए भणियं— अहं एतं जाणामि । उवज्झायत्तणेण सामी, जं पुण नियल-संदाणिओ तुह विसएसु वसिहिति तेण कारणेण दासो त्ति ।

मुत्तावलीए भणियं—पडिहदा मि एवं भणंतीए । न एसो मम विसएसु वसीहिदि, अहं चेव एदस्स[२५४] विसएसु अविसएसु अणियलित-सत्तुस्स वसीहामि त्ति । एवं भणंतीए कीस ते सामी पभणितो त्ति ।

मुत्तावलीए भणियं— नाहं बुज्झामि तुह संतियाइं वंक-भणियाइं ।

साणुमदीए भणियं— जदि ण बुज्झसि ततो सुणह । जं ताव उवज्झाओ सामी तं पागडं चेव । जं पुण भणियं मे जहा नियल-संदाणिओ विसएसु वसीहिति त्ति तं सुणह, नियलाणि से तुह संतियाइं नेह-नियलाइं, विसया स-सरीरुब्भवा पंच सद्द-फरिस-रूव-गंध-फरिसा [? य रसा] । ततो तेसु णेह-नियलेसु संदाणिओ पंच-विसयारक्खिओ ते ए(?दा)सो भवीहिति । अवि य—

तुह पंच-विसय-रज्जं, वि पगी(?गा)संतेण तो अचिरकाले ।
णं रइ-व(?घ)रए वसीहिति, बद्धो तुह णेह-नियलेसु ॥

एवं तीए भणिद-मेत्ते तुट्ठा से **मुत्तावली**, दिन्ना य से तुट्ठाए महग्घ-मुत्ता-रयण-परिमंडिया मुत्तावली ।

एवं परिहसंतीण याण(?) मम ईसिं अवगदा ईह चिंता । पुणो य मे हिदयं लभिदुकामेण भणिया मया **मुत्तावली**-सुयणु ! अलं परिहासेण। कहेहि मे जं तं मया पुच्छिया सि, कस्स कदेण चिंताकुला दीसति(?सि)?। तीए भणियं— सयलं जं च भणिदं, किं मे हिदयं कड्ढसि ? तुह कदेण मे चिंता सरीरे वट्टइ ।

मया भणियं— सुयणु ! संपुन्नो हं, जं तुमं परिहासेण वि एवं भणसि, कओ पुण एतं एवं होहिति ?

तीए भणियं— काकी(?) ।

मया भणियं— सुयणु ! स(?सु)यं मया अज्ज रायकुले जहा तुमं अचिरेण सिज्झिहिसि **जरासंध**-सगासं ।

तीए भणियं— नाहं **जरासंध** सह संअ(?ग)च्छीहामि । अहं [उ]वज्झाएण समं ति ।

मया भणिदं— जति परिणामिऊण सुयणु मया सह वच्चसि, अन्नहा कओ ते मया सह गमणं ति ।

मया एव भणिते वियसिताणि सहरिसेणं णयण-वयणाइं, भणति य— एवं काहामि ।

साणुमतीए भणियं— तं जइ ममच्छंदेण ततो अणागदस्स चरणवधो

कारेज्जा अज्ज चेव जत्तं गंतूणं तु । चिरेण चिरविलंबणा कताइ विग्घकारिणी हवेज्ज ।

ततो मया पुणो वि दीवणा-हेउं भणियं—मा सुयणु ! अलमेरिसेण परिहासेण । इदाणि सब्भावो चेव, अहं इतो नीसरिदुं इच्छामि य तो[२५५] कहं मया इदाणि इतो नीसरियव्वं ति ।

ततो **मुत्तावलीए** भणियं— मया चेव सह गच्छेह ।

मया भणियं— कओ मम तुमे सह गमणं ? तुमं ताव एस अचिरेण णिज्जसि परव्वसा **जरासंध**-सगासं । तं किह मया सह गमीहिसि ? नत्थि ते सह मया गमणं, न याहं तुब्भे विधिणा(?विणा) खणमवि इह अच्छिदुं सक्केमि । तं जइ तुब्भे मम किंचि गुणं सुकदं वा सुमरसि, ततो ममं अणागदं चेव विसज्जेह जा हं पलायामि । न य णाम अहं तुब्भे अन्नेण इह रक्खिदुं तीरेमि। अहवा जदि विसज्जेह ता पुच्छियध अज्ज अहं अवस्स पलायामि।

मया एवं भणिते तरुणाओ दो वि जणीओ भणंति य मुद्धं मम भणिदो रुयमाणाए **मुत्तावली** किमिदाणि मे मरणावत्थ-गदं अणुकूलं भणितेसु, जीवावेऊण पुणो मारेसि सुंदरम्मि हुं विज्जावोदिउ इव विप्पसूत्तं उट्ठावेऊण पुणो मारणिं वाहेमि नारिहसि सामि ! ममं सरणावच्छगत्थगदुज्जी(?)

वि य भाव [२५६]ए वन्नं व उज्झिऊणं पसीय रम(?मम) ते अहं अंजलिं करेमि त्ति । तुह(?तह) चेव रुयमाणी **साणुमदी** वि पादे पडिया भणइ— सामि! मा सुहिसि, मा अम्ह सामिणी तुह विरहे अत्ताणं परिच्चईहिति । एसा हु तुह संगमासा पडिबु(?ब)द्धा [२५७]कु(?क)त्थ वि अडवि(?) पिव अवलोगणेण जीवदि । तं एस परमत्थो । अज्ज सुए वा जद्दिवसं वा इच्छह तद्दिवसं अज्जदुहितं पि घेत्तूण वच्चह सह मया ।

ततो तओ एव रुयमाणीओ परम दुक्खि[?या]ओ य, ता[ओ] मया भणियाओ य—जइ एवं ततो धिर्दि करेह, गमण-परिवत्थय(?) निच्छिताओ य मम वयणं उवदेखेज्जावि ति ।

तासु य भणियं— पत्तियावेह जइ चोरियाए उज्झिऊण न वच्चह ।

मया पत्तियावियाओ सव्व-पच्चएसु, ततो धिदिमंताओ संवुत्ताओ ।

ततो गदो हं नियया‌वासं । अणुवग्गएण मम **साणुमदि**-हत्थे **मुत्तावलीए** विसज्जिताणि [२५८]पत्थयण-निमित्तं तेरस [२५९]पादंक-सहस्साइं ।

ताणि य मे **भद्दयस**स्स हत्थे जोहाण परिव्वय-निमित्तं **सुसेण**स्स विसज्जिताइं, संदिट्ठं च मे तस्स, जहा— कन्नगा सयमेव मया सह गंतुमिच्छइ । तत्थ जं जोग्गं तं मम संदेसेज्जाह त्ति ।

तओ तेण पडिसंदिट्ठं—सुंदरं जादं । किंतु एवं पि वसंत-जत्ता चेव गुणकरी [?.....] ।

मया सह गंतुं 'तह त्ति' [२६०]पडिवन्नं ।

भणदि य मं **मुत्तावली** जहा— जद्दिवसं गंतुमिच्छह तं दिवसं मम [?अ]णागदेव परिकहेज्ज[२६१] । तहा हं किंचि पयोगं काहामि, जेण अम्ह णासियव्वय-संधी निरुवाया [२६२]णिव्वाहुआ य होहिति ।

मया तु री(?ती)ए अणुयत्तंतेण 'तह त्ति' पडिवन्नं । भेदीवाय(?) भयेण ण दु दियसं(?) सब्भावं वा परिकधेति(?मि)[२६३] ।

ततो मम तप्पमिदिं एक्केक्कं दियसं संगम-सतं पिव समतिच्छिदं । [२६४]कमेण संपत्ता एस जत्ता, उग्घोसावियं च रन्ना जहा 'कल्लं पभाताए रयणीए सव्व-पयदि-सहिएण मे संतेउरेण सिरिध(?व)णुज्जाणे जत्ताए गंध(?त)व्वं, तत्थेव य मधुमासा[२६५] गलणिज्जा सज्जेत(?ध) सिग्घं उवभोगो करणाणि य।

विसज्जिओ रन्ना मम सगासं **वग्घसे[ण]** णाम [?अम]च्चो जहा, तुब्भे विसउ(?) उदिते सूरे सिवियाण गए सद्दाए सपरिवारा एए [२६६]सिरिणीए [२६७]सारमम्ममलेग(?) **मुत्तावलीए** अणुगम्ममाणा सुवेवा(?गा)रूढा सिरिवणुज्जाण-जत्तं वच्चेज्जाव आमोदं अणुभवेहि[२६८] त्ति । अहमवि तत्थ संतेउरो सह पयदीसु वच्चहामि त्ति।

मया 'तह त्ति' पडिवन्नं, चिंतितं च मे— अणुवदिट्ठा[२६९] वे[२७०] दि अणुकूलया [२७१]मे एसगलच्छा । ततो अइच्छिते तम्मि दियसे रातीए, तओ उदिते आदिच्चे विविध-जाण-वाहणारूढो नगरजणो निग्गंतुं पयत्तो । आढत्तो[२७२] य स-अंतेउरो राया निग्गंतुं, आगदो य वसंत-जत्ताणाणुरूव-गहिद-पहाणुज्जल- णेवच्छालंकार-भूसिया सिबियारूढा सहीजण-संपरिवुडा[?.....] दोवारिया ।

[२७३]मदरकुंचुगियाणुयाता **हरिवंसार**क्खणे राया वयण निउत्तेण तुरगारूढेण णाराय-भरिद-तोणह-खग्ग-पाणिणा मा(?सा)रक्खिता पत्ता मया(?म) वासदुवारं **मुत्तावली** । ताव य अहमवि सुकद-पडिकम्मो

सव्वालंकार-भूसिओ निग्गओ गिहातो, दिट्ठा य मया **मुत्तावली** चल-चामराडोव-संपाद-सोभिणी स-हंस-विक्खेवा इव मधुमास-पसूता पंकय-णव-नलिणी सकल-समूसितातपत्ता पवराभरण-भूसिता पुण्ण-चंदा इव विमल-नक्खत्त-तारयाभरणा सरद-काल-रयणी । पासट्ठियाए **साणुमदीए** गहिद बालवीयनि(?णी) वारिता(?) रंभा-करुल्लालिय-बालवीयणा[२७४] इव सई भगवती, अवतरिऊण य सिबियाओ तीए कयं ममं विणयं, मया समणुण्णाता य पुणो आरूढा ।

ताव य [२७५]**रद्धा(?भद्द)यसेण** परिकप्पिता परम-सोभा-युत्ता कणग-खइत-पीढ(?)-कंबलत्थुरण-कदलिया-भार-चामरोवसोभित-सरीरा उभोपास-समोसरिद-[२७६]सूसर-गंधजम(?) जमलोवसोभिदा तवणेज्ज-[२७७]संकल-पीलित-कच्छा [२७७]वव विराइया कुंकुम-कालागरु-रत्तचंदण-मल(?ण)सिला-धातु-सिंदूर-पूरावत्थि त्ति पवर-सुंदर-कदंगरागा [२७९]से विज्ज(?ज्जु)-किरणुज्जला इव नव-पाउस-जलद पती सव्व सा(?स)मारोविद मम संतिय वत्थ पसेव्व य निवेसमणुब्भड मणि-कणग-रयणमय-जालएण पडिओ वि दप्पमुहा सव्व-गय-लक्खण[२८०]गुणक्खणीउ [२८१]वट्टविदा मम **भद्दयसेण सुवेगा** करणी दंव(?) समारभिऊणं [२८२]धवल-धरिता[?त]पत्तो संपट्ठिदो हं । [२८३]संपट्ठिता य मम मग्गेण रायसुता, चलंतस्स य मम संखो समुद्धंतो रायकुले सो य मे सऊणो परिग्गहिओ पढमदाए पच्छा पुण अन्नत्थ रभस- पयातो पुरिसो अन्नेण मग्गट्ठिएणं पुरिसेणं वाहित्ता तेण पच्चक्खालणा-कुविदेण भणियं— [२८४]मरहोमरमाणत्ति(?) । कीस मे [२८५]एग्गदेण पडिवाहरसि ? तं च मया दुन्निमित्तं हिदयेण परिग्गहितं, चिंततं च मे—एत्थ साहस-करणे पढमं सिद्धी होऊण पच्छा पुण किंपि विग्घं भवीहिति । एवं चिंतयंतो पयातो सुणामि णगर-मज्झेण अतिच्छमाणो जणस्स रूव-गुण-रंजितस्स अणुराग-भासिताइं 'अहो हु इमा अणुसरिसा उवज्झायस्स सीसिणीय रूव-सामिद्धी, नूणं [२८६]रन्ना ताइं एवमणुसग्गलग्गाइं(?) सोभंति त्ति । जदो एग [२८७]पहरेण विसज्जिताइं, निग्घिणो हु **पयावदी** राया य जो एदेसिं सरिस-रूवाणं संजोगं न करेइ ।' अन्नेण तत्थ भणियं— 'जहा एदाइं एग-मग्गप्पयायाइं पेच्छामि तहा अवस्स होहिदि एदेसिं संजागो ।' एदं च वयणं सोऊण **मुत्तावलीए** वत्थ-पल्लवे बद्धा निमित्त-गंठी । एवं जणेण य पसंसिज्जमाणा निग्गयाइं पत्ताणि मो सिरिवणुज्जाणं राय-वयणादिट्ठा । तत्थ पदेसे राया निवासाओ वि

कट्टंतरमि(?) तिलाग-तीरे निविट्ठ **मुत्तावली** अहमवि **मुत्तावली**-पडमंडवासन्न कुसुमित-लता-विताण-घर रणरवदिपुरि(?) सपयत्तं सज्जिए निविट्ठो, चिंतेमि य किं पुण राया अंतेउर-वा(चा?)रिणीं कन्नं एत्थ उज्जाणे मम पासातो निवेसिउं नूणं खु मम वीसासं पदंसेदि—नियय जहा हं एव तुह वी[?स]सामि जेण कन्ना तुह चेव पासे निवेसिया मए । चिंतयामि पुणो य मे चिंतितं अहो हु मया कम्मवसएण सुणएण [?इव] कुसल-रंग-गदेण नाणाविधाइं रूवाइं जण-पदंसिदाइं । अवि य,

कत्थइ वणेसु कत्थइ जणेसु खयरेसु कत्थइ नरेसु ।
पयत्तेसु सेविदो हं कत्थइ सेवामि सयमेव ॥
काऊण समर-समए विज्जाहर-पवर-पत्थिवं क्खोभंतो ।
तेण सुवविद संकिद आणा पणदेसु रमियं मे ॥
कत्थइ महि [२८८]राइण वि कम्मसो चिंतिज्जमाण [२८९]लहुआण ।
कारणवसेण सेवा [२९०]गुरूएण वि पउत्ता मे ॥
तं पुण सव्वं पि मह काम-रदी-राग-विलसितं आसि ।
जं पुण णड-सिक्खा वो भणियं **अचलेण** तं दहदि ॥
ण य एदं मम जोग्गं हीरइ विसंभिणो[२९१] वि जं कन्ना ।
तह वि अवमाणजुत्तो हियय-गदा सेसमिच्छुरइ ॥

तं एतं नरो विब्भा य निद्देसावसाणं पडुच्च नियय(?)णुरागं च कन्नागदं विणोदेतुकामे अवस्स मे हरणिज्जा **मुत्तावली** । एवं चिंतयंतो अच्छामि, ताव य विसज्जिताणि मम कन्नावासंतियाइं वत्थालंकाराइं भोयण-पाण-विहिओ य पवर-सुरहिहारिणीओ मल्ल[दाम]-च(चु)न्नक-विलेवणाइं च ।

ततो हं तत्थ सपरिवारो विधिणा माणेमि उज्जाणामोदं अभिरमिय समंततो पमुइतो जणो पाण-भोयण-विधिविधाणो य अणु(?) **सुमुहो** गंधव्व-गीत-वाइत-रवेण मत्त-प्पमत्त रति-कज्ज-तप्परो तओ पच्छावरण्ह-काल-समए विविध-जल-[कु]वलय-सरस-सुरभि-वर-पंचवन्न-कुसुम-परिगंधिताइं ईहामिय- उसभ-तुरग-नर-मगर-मयूरोवसोभिताइं माला-[२९२]सिरिदामगंड-क्कणिया(?)-कण्णपूरगा य एदाइं घेत्तूण **मुत्तावलि**-विसज्जिदा उवगदा मं **साणुमदी** । भणदि य मे विणयोवगता णि ते सयमेव सीसिणीए [२९३]गंधिताणि

तुह कज्जे एदाइं परिदेहणं ति।

ततो मया ससंभमेणं सबहुमाणं गहिदाणि परिहिताणि य । पडिगदा य **साणुमदी** ।

ताव य दिणकरो कर-भारुव्वहण-परिस्संतो इव आढत्तो [२९४]अंबरादेवि-नितंबे करावतारणं कादुं ज्जि(?जे) मेह-खंडाणि य समंततो दूरावगदा [२९५]ति दीसिदुं पयत्ताइं । चिंतितं च मे एसो हुं सो आदेसिओ आरंभपदेसिओ। कधितं च मे **भद्दयसेण**— सामि ! आगतो मम सगासं **सुसेण**-संतिओ पुरिसो, तेण कधिदं मे जहा, सन्निहिद-सव्व-जोहो[२९६] गहण-वणंतर-संठिओ[२९७] एस अदूरे **सुसेणो सागरसेण**-सहिओ वादवरिसे(?) वेला-समय-काले[२९८] पडिच्छमाणो अच्छइ। तं तुब्भे वि दाणि सव्वमिति करणेज्जं काऊण सज्जा तं समयं उदक्खमाणा अच्छा(?च्छे)ह ति ।

मया भणियं—किमहं सज्जो भवामि ? नत्थि मे किंचि आउहं आवरणं वा । सरीर-मेत्तेण पुण एस सज्जो वि(?ठि)तो हं ।

तेण भणियं— सामि ! सव्वं विय ते आउधं । अलमन्नेण तुह आयुधेणं ति ।

मया भणियं— एवं नाम, किंतु हत्थिनि(?णि) सज्जं करे[ह] ।

तेण 'तह त्ति' पडिवन्नं ।

ताव य मया चिंतितं— गच्छामि, ताव चिंतितं एदं **मुत्तावली** [२९९]करेदि गदो य मि सूरत्थमण-समए तीए संतियं अदूर-गदमावासं । पेच्छामि य नवरि **मुत्तावलिं** अंकारोविद-वीणा-विआवडं ममोवदेस-गुणं-गहण-गत-भावं सहीजण-परिवुडं सुहासण-वर-गदं अपरिसंठित-ताणा [३००]उयय(?) तंतीउ पुणो पुणो सारयंती । उवगदो य से । [३०१]अहं च ति य । तओ तीए ससंभमुट्ठिताए दिन्नं मम आसणं, भणदि य— साधु कदं, जं उवज्झाओ इमम्मि समए इहमागतो। ममं ताव इमं वीणं [३०२]संतणिऊण देह णं संचाएमि सारेदुं गाढाभरण-[३०३]बंधाए वीणा एवं भणंतीए पणामिदा मम वीणा सयमेव गहिदा । चिंतितं च मे— जदि एसा इदाणिं सुत्थिदं वीणं [३०५]किहइ [३०५]गिण्हहि(?इ) ततो एदीए महुर-गंधव्वागरिसितो लोगो ण सुइहिति इमं पदेसं न य सुंदरं इदं, जं इदाणि जण-सम्मद्दो इहं होहि । एवं चिंतेउं ततो अति संताणिअप्पोगेण सव्वाओ [३०६]चिंतंतीओ समयछिन्नाओ अवंव्वतु(?) अत्तणेणं

परुदिता इव लक्खीयदि । ततो मया परिहसंतेण भणिया— कमललोयणे ! अलं कोवेण, एदाओ पुराण-तंतीओ कोणयरुदिनुमिदखफलद्धुर(?)स्सराओ संवुत्ताओ । तं अलमेदासु । अखंतेसु पन्नाउ(?नवाओ) तंतीओ संजोएहामि।

एवमादि पियं भणंतेण संतिदा मे आढत्ता य अहं वायाए णट्टसुत्त-गंधव्वाण लक्खणं वक्खेव-पुव्वयं क(?प)रिकधेउं । ताव य अत्थमिओ दिणयरो, तो(?तओ) अह य अहुसाणाणादिसुपातित(?) सजल-जलधर-खर-फरुस-सरो रसित-मुक्क-हुंकार-तडतडाराव-गंभीर-गज्जित-तडि-कुडिल-पिंगलुज्जलो मुहलासु मारुत धूत-धूलि- धूसरागलिद-कय-करिभराइट्ठ(?) भग्ग [३०८]पादवुद्धि व्व पंचसु संगहिद-सयल-दिसाचक्को घोरंधयारिद-गयणयल-महितलाभोग-भासरा सार[?.....] णा पवणा, [३०९]संलाकलित धार-णिवाद-निट्ठुरा आढत्ता सलिलं मोत्तूण(?मोत्तुं) भयाणगा महामेहा । ताण य उप्पदिद-जलधराण सद्देण दंसणेण य सविज्ज वुक्खेव मारुत-खुद्धुत दुत दुसभाणं मय बंधु पि वग्घ रसित [३१०]वित्तत्थउ दीव उस्सुअ-हिदयं हिदय-दहितं लक्खेमि अकाले चेव किंपि भीदा इव अच्छइ ममं समल्लिदुं मणे[३११] **मुत्तावली** ।

एदम्मि देस-काले संज्झा-रक्खसीए जलधर- पवणेसु य निरालोइ-कएसु सव्व-भूतेसु मज्जवस मत्त [३१२]णिद्धेण खंदिजोदे(?) वग्घे सहसा पहद-घोर-तूर-णिणादेसु मुक्क कुइला [३१३]वेवजोवक्क(?) कलकला-र[व]-मुक्क-पुक्कार-बोल-बहल-कलिदा सन्नद्ध-बद्ध-कवयं सन्नाह-भर-भार-सुणिप्पाइत-अंतरिज्ज [३१४]वगणा(?) उरुभाइद [३१५]घंटमाला पवर-सुद्ध-बद्ध-चिंधपट्टा फर-पहकर-पवर-निवह-तारया-किरण-रंजित-दिगंता तउक्कारिद पुक्कारिय वग्घिद वकरितिपतिच्छंदण(?) नच्चण [३१६]घण करण कारण वेगा हिदय फोडण करलयाण गवरित(?) पवर-जोह(?) कलिद आतोवेति(?)। तप्पयारा अहिपडिता अयल-राय-बलं पक्खिवंता [३१७]सुयण **सागरसेण** मदिएसा(?) मत्त वीसत्थ जोध पुरिस निच्चेदण घण पवणो सलिल वात-धारा-वियोलितं तक्कर-घोर-भयहिद-हिदयं जातं सक्कज्ज भीसरण[३१८] वाउलं(?) अयल-बलं पुर जणवद बलं च भीमारुदं पयत्तं माभीताणपेच्छतेपुत्तं(?) ।

एदम्मि देस-काले **सुसेण**-पासट्ठिय दिन्न-सन्नो समारोविद-सव्वोवक्खरो(?) पुव्व-सभंडिवए करणीए अल्लीणो मम **मुत्तावलि**-सहियस्स पासं **भद्दयसो** । ताव य पर-सेण-संपात-संभंत-हिदओ अति-विउलताए

[३१९]सय-विसन्नाह असंबद्धो रन्ना पुव्व-निउत्तोवट्ठिदो अम्ह सगासं **हरिवंसो(वम्मो)**, सो य अविण्णाद-परमत्थो परम-भयभीत-हिदयो कन्नापहार-संकिद-मदी ममं भणदि-देव ! पडिदा [३२०]दु के वि पच्चंतिय-रिवुणो बलवंतो(ता?) कदाइ एदे [३२१]रयण बलेण बंदं(?) पि गेण्हेज्जा, तं अकालो इदाणि सिवियाए देवता-चोदितो ममं भणति-देव ! घेत्तूण भगिणियं सिग्घमारुहध[३२२] **सुवेगं** करिणिं, सारक्खह राय-कन्नं [३२३]ति य । चिंतितं अणुवदिट्ठा वेति । भणिदो य मे एवं कीरदु, किंतु तुमं सायुधो मम पद रक्खत्तणं कादुमरिहसि त्ति । तेण तह त्ति पडिवन्नं । तओ **भद्दयसेण** सिक्कारिता करिणी ।

ततो हं तं अण्णाद-परमत्थं चोर-संपात-भयभीत-**मुत्तावलिं** घेत्तूण आरूढो हं **सुवेगं**, पुरतो य मे [३२५]च्चुया(?) पंजर-परिग्गहेण अभिमुही आरुहिता य मे पिट्ठतो **भद्दयसेण साणुमदी** । ततो तीय पिट्ठतो मोग्गरहत्थो सयमेव विलग्गो **भद्दयसेणं** भणिओ तत्थ **हरिवम्मो**— सुम्म ! ण णज्जति हु अद्ध(?अंध)गारे चोर-परिमाणं, निरायुधो य उवज्झाओ सति वि [३२५]माहमुसिक्खागुणे(?) आउध-रहिओ किं करेदु ? तं तुह एस [३२६]णाराय-भरिदो तोणो खग्गं धणुं च ते पहाणं अत्थि । एताइं ताव ममं पणामेह, ततो तुमं पि सन्निहिदं सिग्घो करिणिं चेव विलग्गेहि ति । ततो सो 'सुद्धं(?ट्ठु) भणह' त्ति भणंतो णाति(?) असिं च पणामेइ मे, पणामिद-मेत्ते सरभसेणुट्ठाविदा **भद्दजासण(?जसेण)** करेणू ।

एदम्मि देस-काले भणिदो मया **हरिवम्मो**-सुम्म ! मे **अयल**राइणा **मुत्तावली** सिक्खा[व]णा-हेदु समप्पिया, तं सुसिक्खा से काहामि । किंतु मम वयणेण रज्जो(?ण्णो) भणेज्जासि जहा— 'जामादुओ अंजलिं करेदि, गदो य किर सभारिओ **इच्छिदं दिसं**' ति । तं च मम वयणं सोऊण भणियं **हरिवम्मेण**— देव ! णारहसि परिहासेण वि एवं वोत्तुं, भगिणिया ते एसा। नारहसि य भगिणीं हरिउं । वीससंतेण रन्ना तुहमेव समप्पिया । इतिमादि बहुं पलविउं पयत्तो । रायकन्ना-वयंसिओ चेडिया-चक्कवाल-[३२७]वद्दा(?वंदा)णि य समयं विलाव-बहुलाइं उक्कुविदुं पयत्ताइं-हा हा हिदा **मुत्तावली**, हिदा पिय-सही, हिदा पिय-सामिणी उवज्झाएण । अवि धाव धाव सिग्घं । महंतो कलकल-रवो पयत्तो । सो य तासिं उक्कुविद-सद्दो महता पवण-घणिद-धमधमधमासद्द-धसुधगो(?) रसित-असित-घोर-जलधर-गज्जिद-रवेण

तयह(?तह य) **सुसे**[?ण] भड-वंद संपद-का(?क)ल-कला-सद्द-पडिवन्नो[३२८] दुव्विभाविणीओ जणस्स, वट्टति य महता जुद्ध-संरंभो विणाद-करणेहिद(?) **सुसेण** योवितो(?) सणिग्गमपहो विकज्जोवित-विणा(?ण्णा)द- दिसाभोगेण य मया चोदिता उत्तर-पुव्वि दिसिं तेण **सुवेगा** गरुल-वधू विव पधाविता पवण-जइण-वेगा । **सुसेण**-जोधाए जइ परबलो वियोली(?) करेंति केइ मम निग्गच्छमाणस्स पासदो पिट्ठतो य मुहुत्तमित्तं पधाविता य जय-सद्द-मंगलासीसं पउंजमाणा आरक्खत्तणं मे करेंति । सुणेज्झति य पिट्ठतो घण-णिणद-सहस-मीसितो महता जण-कलकलारावो । अवि य—

जलहर-रसितेण णहं महता जण-कलकलेण महिपट्ठं ।
दोन्नि वि वुट्टंति(?) मणे विज्ज[३२९] करंकल्ल(?) रुधिराणि ॥

अवि य—

हरण-समय-समूसुइद-हिदया घण-रसित-विज्जु-विक्खेव-पवर-घोरंधगार-वित्तत्थ-माणसा तक्खण-सयण-वियोग-दूसह-सोग-संताविय-हिदया सघग्घर-कंठा कलुण-कलुण-समम्मण-वयणा मम उरं अंसूएहिं अभिसिंचयमाणी परुदिता **मुत्तावली**, भणति य मं— देव ! एस ते मया अंजली कता, विसज्जह मं, अत्ताणं सारक्खह । अवप्परेगेणं(?) भे अहं अक्खित्ताण एस सिद्धिकरो एसो णयो[३३०] । मोत्तूण ममं पलायध ततो तुब्भं रायाणो णु(?ण) बंधिहीति, अन्नहा मम कदेणं नागलोगम्मि ते कदंसुईहिति(?)। वरं मे अहं चेव तुह विउत्ता मरंती, ण य मे मम कदेण तुह मरणमावडंतं । विसज्जेह मं, सारक्खह नियय-जीवियं, सिग्घ वाहियाणि हु मम पिदुणो उवरज्जाणि । मया भणिया— सुयणु ! नाहं तव पिदुणो उवज्झा[?या]ण वा गंसो(?गम्मो), धिर्तिं करेहि ।

ततो सा सयण-दंसण-**सि**(?)-निरासा विलविउं पयत्ता [३३१]ताअंवतो(?) त्ति य जंपमाणी करुणतरं परुन्ना । तेण य मम दुक्खावियं हिदयं, चिंतितं च मे- मुयामि त्ति ।

ताव य **साणुमदीए** भणियं— सामिणि ! बहु-काल-मणोरहाभिलसिते हत्थ-पत्तम्मि हिदय-वल्लभे भाव-परिग्गहिदे भत्तारे किमिदाणिं पास-गते गामेल्लयत्तणं करेसि ? ण णूणं सोभीयति । जस्स कदेण **जरासंध**-

वीवाह-वयण-पच्चंतं सोऊण जीवित-पच्चागो(?) पवसितो, तस्स अंकल्लीणा [३३२]होव्वू(?दू)ण एसिसाणि(?) करेसि । अहो ! तव बालत्तणं [३३३]दाइदं देव-समीव यं दुमा(?), पुणो पिय-वियोग-उम्मादग्गहिदा दुक्खतरं मरीहिसि । एवं पि भन्नमाणी जाहे 'अव्वो तातो' त्ति कलुणं वाहरति । ताहे भणिओ मे **भद्दयसो**- सुम्म ! णियत्त मो(?मे) हत्थिणिं, मुयामो पच्चासन्ने **मुत्तावलिं** ति। एव मया भणिए गाढतरं परुन्ना, आढत्ता य मे वणिय(?धणियं) बाहासु समालिंगिदुं मम वच्छत्थल-णिहिद-वयणा मुयति अच्छीसु अंसुयाइ ।

ताव य मम पासप्पधावितेण **सुसेण**-संतिएण जोहेण गीदं इमेण अत्थेण

कारुन्नेण य [३३५]भएणं व अंक-गदं पणइणिं पियं जो दु छड्डुति ।
ण सो कामी ण य पुरिसो जो सितासातु(?) ॥

एदं च गीदयं सोऊणं मया चिंतिय—एवमेदं, न मुयामि णं एदं । तह वि मया अणुवत्ति-पुव्वयं भणिदा— सुंदरि ! जइ रुयंती ण घायसि(?), तओ अवतारयामि ते ।

साणुमदीए भणियं— सामि ! जदि जाणसि एदीए जीविदव्वं ततो मा अवतारेसि, एसा संपदं सयणाभिकंखिणी जादा, पच्छा पुण पुव्व पए जाणामि तुह वियोगे अवस्स जीविदं चयसि(?चइस्सइ) । एवं भणंतीए **साणुमदीए** ममं पिट्ठतो पसारितग्ग-हत्थेण ऊरुपिट्ठे समुच्छरंती ममं भणेदि— मा मुईहिसि, वाहिज्जदु सिग्घं **सुवेगं** ।

ततो मया णिय-उत्तरीएणं सवडम्मुही उबद्धा हिदय-दइता, अवलंबिता य मे वाम-हत्थेणं । दाहिण-हत्थेण य मे संगाहिओ अंकुसो, पादंगुट्ठेसु य मे तुदासवणपिट्ठादो(?) हत्थिणी पहाविया तुरिदतुरिदं [३३५]पेढिलगत्ता वि णं भावगत्ताइयं य(?) गदि-करण-कुसला । तईय पुण गति-विलग्ग- सुहासणकारिया चिर-सुहुम-सिग्घ-चलण-निक्खेवा वेग-समक्खित्त-कन्न-ताला भिप्पतेविद्धिवियोर(?) मारुत-वेग-भज्जंत-करकररवा पयत्ता **सुवेगा** एजवं(?) नाऊण वेगितं ।

ततो **मुत्तावलिं** भणइ देवि देवमिव भत्तारं [३३६]आसमुवच्छद(?) से नीमीलेसु य णयणाइं अ चंडप्पयाता हु **सुवेगा** अपुव्व-गदिं समारुअंती लक्खीयदि। एदम्मि देस-काले समरभूमि-विणिग्गदस्स पुरिसस्स एगदो[३३७] इमं मंगलोच्चारिणिं गिरं सुणामि । अवि य—

जो णिच्छिय-संपदि सुव्वति सलिलं अमतं व जलद-रूवेण ।
सो च्चिय तुह [३३८]वज्जधरो विधेउ सुह सम्मतं कंतं[३३९] ॥

कामयमाणस्स पियं उत्तम-कुल-वंस उत्तमं पदं ।
महा दयिता य महिंदो विधेदु किद इच्छियं[३४०] ॥

सोक्खं सो च्चिय [३४१]जलदरूवेण इंदधणूं वियडप्पमुक्केहिं ।
सलिल-[३४२]सरेहिं सरंतं रिवु-पक्खं सुरवहू हणउ ॥

सोम-यम-धणद-वरुणा विज्जधरीयाण चंद-सूरा य ।
बलि-चमर-धणद-सहिदा [३४३]विधेउ पंथम्मि ते सिद्धिं ॥

[३४४]जेणं भत्त सुरा सुरक्खिद उत्तमं तं कुण सव्व विग्घाइं ।
सव्वं तस्स अरन्ने हवंतु खेमा हिते णं पंथा ॥

तेण य सद्देण मया परियाणिओ एस **सुसेणो** संथुण(?) [३४५]नेमित्ति। ततो तमहं गिरं अभिणंदिऊण निच्छोडिता तरक्खो[३४६] सिग्घतरं पयातो । विज्जुज्जोएण विण्णाद-दिसिपहाभोगो निवडदि य जलद मुक्कं गज्जित-हुंकार-पेल्लित-सलिलं अभिसिंचंति ममं पिव वारेज्ज समेस्सिदं मेहा, उच्चारितो य मया **नागहिदयो** नाम मंतो-'नमो अरहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो वज्जपाणिणो, नमो एरावणाय। महासुरिंद [३४७]नागापदिसागया य आविसाविस अणुप्पविस इमं नागकन्नं सिग्घं पयादु पवणादिरेयजवाए ति स्वाहा ।'

एवमुच्चरिते मंते आगासेणमिव संपडिती चिरप्पयाता अवला इव लक्खीयइ । तीएगदिसामुहाइं परियत्तंति तरुराईओ । आइट्ठं पिव णहयलं पण्हच्छंति व सेला णिमज्जति व अधो धरणितलं वितिज्जति भूमि पणिच्छिवति कुंजर करेणुगा कत्थइ दुप्पयाता विता इव होज्ज ति मणे संका समुप्पज्जति, उदाहु भूमी चेव धावति त्ति उभयं पि धाव परिधावंति भुय करि वधू विव सरो इव [३४८]धणुज्जत विप्पमुक्को । अवि य—

सोहा अंसविमुक्का जाव ण पदि जवेण सट्ठाणं ।
ताव दुतं समतिच्छदि सम वियत रागा उदं करिणी ॥

समवगाढा य महालयं विंज्झगिरिं पादाभिगामिणिं अडविं पादव णव-घण-सामलं विविह-[३४९]विहय-गणं करि-जूह पविचरिदं [३५०]घोरमइंदारंजित-गिरितड-कडग-फिडंत-पट्टिस-सद्द-संदाणिदं दिसाचक्कं भीम-घण-तक्कर-भिल्ल-पुलिंदंधयारित(?द)-वणंतं वणमहिस-वग्घ-गयकुल-कलभ-महा-

खग्ग-वग(?)-दीवय-कोल-वहल-सीह-तरच्छच्छभल्ल-रुरु-चमर-सरभ-संवर-कुरर-कुरंग-मज्झा(?ज्जा)र-घोर-अयगर-कोसिय-विघुट्ट-भयंकरा-रावं दुज्जण-हिययं पिव भिल्ल-पुलिंद-तक्कराणं, कुलघरं पिव दाणंतिहाणं(?) पिव दुम-गणाणं आलयं पिव दोसाणं, संसारं पिव अणोरपारत्तणेणं । इय एरिसं अडविं गाहमाणा सागरं पिव महाणावा जवेण विगाहमाणा सुवेग भीर विसयत्थ गुम्म **गोतावरी**-विसयाण अचिरेण **विंझगिरि**-दीह-वत्तीणीय य(?अ)ति विसमं समल्लीणा, कत्थइ पयति-विसमं दुज्जणं बहु देसं पिव विंझं दूरतो वज्जयंती, कत्थइ पय त अकंड-दुम-गहण वणंगणाकुलं तं वि य सुयणं पिव पुणो समल्लियंती त(?क)त्थ इ मयपदि-रुंजिद-हुंकार-समाउलं सद्दं समागणेंति, कत्थइ गिरि-कुहरंत-पसरित-वणमहिस-रवसोरंकित-सद्द-समुप्पिच्छ-हिदया सह **मुत्तावलीए** कडतडंति, कत्थइ दुम-गहण-भज्जंत-मदगला मुद्धा मुद्ध विव लोद(?) मयगल [३५१]सुर-चडगर-सद्द-मद्दलं समाकत्तेंती, कत्थइ [३५२]सद्दूल-हद-मदगल-[३५३]णिणदंत-गहिर-सद्द-समूइद-हिदया **सुवेगाए**[३५४] धारणं कुणइ, कत्थइ रुरु-चमर-सरभ-संवर-अयकर-करि-कुवर-पवर-पहकर-पसरित-हरि-हरिण-कोल-कविकुल सालिभवगधघयसत(?) सीह-दीवि य सल्ल-तरच्छभल्ल-सूयर-सस-पसंत-गोह-[३५५]गोण-ससर-उंदुर-णउल-पसरित-सावद-गण-जूह-सय कर रसित पलायभूत सित भीत पलायमाण कंपिद हि(?दि)साभागो कत्थइ समुहा गइ रसिद उज्जत तल घसार वि गुणेण दर दंपि मयपदिं अवहत्थेण लीला [३५६]लदुगं पिव अवइज्जमाणी, कत्थइ रभसागदस्स रन्नेव वणकरिणो रसण भा विलासा हत्थे सा य तं पिव दाऊण तेण असंभावित-गहणवेग-वसेण समतिच्छते **सुवेगा**, कत्थइ दिन्न-फुरिसा य तीए समतिच्छिदा य वेगेणं अदिट्ठ-गंध-पिसुणिद य अणुधाववे(?दे) हत्थी, कत्थइ मयपदि-गज्जिद-कडगतडिप्पिडित-फुडित-पडिसद्द-दिसामुहुव्वाद-पूरिदंबर-तलं [३५७]सिय-सद्दाकन्नेंती उपिच्छ-हिदया, कत्थइ गिरिवर-कुहर-कंदरोदरि-घर-गंभीर-सिहर-लग्ग-दुमगण णदि-तड-कगवलग्ग(?) रसिर-महासउण-विरुत-कोकंतिय-बहल-कलाघात-निवहेसु अभिथुव्वमाणि व्व समतिच्छिदे इयतं गुलगुलगुलेंत-गय-जूह-संकुलं गुरुगुरुरुगेत-मय-राग-रंदिजं(?रंजिदं), घुरुघुरुघुरेंत-हरि-रसित-सूवरं, किलिकिलिकिलेंत-[३५८]कीलंत-विज्जयं, भगभगभगेंत भल्लुंकि-भासुरं, कडकड-कडिंत-गय-भग्ग-पादवं, सिलिसिलिसिलिंत-[३५९]नामं व(?) सालि-भंडियं, छिरिछिरिछिरेंत-समएतपासितं(?), समसमसमेंत-गय-कलहसंतिदं, हिणिहिणिहिणेंत-किंपुरिस-

सेवितं, तलतलतलेंत-दुमपत्त-चंचलं, फुरुफुरुफुरेंत-रिच्छच्छडाहदं धमधम-धमेंत-कण्हाहिगोणसं, किरिकिरिकिरेंत-[३६०]भिंगारपूरिदं,[३६१] कुलुकुलुकुलेंत-बज्झ-भूत-भासितं, करकरकरेंत-भसुया-समाउलं, धुगुधुगुधुगेंत-सलिलोब्भ-राउलं, सुरुसुरुसुरेंत-वणदाह-दारुणं, तिडितिडितिडेंत[?.....], फुडफुडफुडंत-तंदुगं, विंज्झगिरि-कुहर-पसरित-गयजूह-घणोरसित-गुलगुलाइं [३६२]कुवारित-सद्द-समुच्चरितं, गिरि- तड-कडग-सम-फिडित-फुरित-पडिसुया-सद्द-गहिण-[३६३]दिसागं, कि(?क)रिणि-कराहत-कुसुमित-लता-कामिणि-कुसुम-समालग्ग-पडिबुद्ध-कुविद-महुयर-रुज्जंत-म(?ध)णि-सद्दाउलं, अडवि समतिच्छिदे **सुवेगा** णिमज्जंती विव तरुगहणेसु, उम्मज्जंती विव महिधर-धारारोहणेसु, समाभिप्पायमिव जवेण पूरयंती कमेण य तिविव(?ध) तरुगहण संच्छल्ल(?ण्ण) विं[झ]-महिधरोद[र]-लग्ग-वाहिणि-**कालंजर**-सेल-सिहर-पसरित-जवं, अवरन्न-पवर-पणइणि विविह-सावदजूह-गयकलभ-मत्तमदगल-भल्लोलित-वणंतं सितल-गंभीर-विमल-सलिलं कमेण समुत्तिन्ना उत्तरेण एव[३६४] । ततो तीए उत्तर-कूलेण पुव्व-दिसाभिमुही पधाविता **सुवेगा** णेगाइं गिरि-णदि-[३६५]णिवहाणि य समइच्छिदा, धाविदा य रयणीए तिसु पहरेसु पंच-सत्तरि जोयणाइं ।

ए अम्ह संपत्ते सुवावित(?)-हिदया **सुवेगा** सीइदुमाढत्ता । कमसो य परिहायमाण-पदविक्खेवा पच्छा पदमवि चलिदुं न सक्केति । ततो दंतिय-सत्थं जाणिऊणं जात-णिद्धसंको पिया पदाहिरंउरं(?) चउरेण पीलयंतो उण सिऊण **सुवेगा** पक्कं ण जाव दाउमाढत्तो ण य सा पदमवि गंतुं [३६६]सक्केति पुणो य मे अवणदो वरिच्छाघण(?) अग्घो दंगयकणगायमच्छयं(?), लक्खिदो य से मया मडय-गंधो माणुस-मडय-पडिरूवो, चिंतितं च मे थोवावसेस-[३६७]जीविदगो गहिद य पावणेणं एवं चिरं धाविता । एवं चितयंतस्सेव मम दिहएणं(?) सह पडिता निरालंबा इव मम **सुवेगा** अहा हं 'कट्ठमिति' भणंतो **मुत्तावलिं** घेत्तूण महता वसण-विविध(?)-हिदयो अवतिन्नो हं करिणीतो, अवतारिता य मे **साणुमदी**, अवतिन्नो य **भद्दयसो**। तं च गयच्छुरणं जादरूवमेयं च गेवेज्जग मपसेव्व(?) य गदाणि य तत्थालंकाराइं **भद्दयसेण** अवकड्ढिताइ गय-कन्नदादो, एवं ते य सलिल पुन्न उ पुक्करिणीय तीरे लदाघरोदरे समच्छ(?च्छि)दं मे गयत्थुरणां उवरिं व से कदं अन्नं मुइद वच्छयं(?) ।

ततो सा जल-वरिसोल्ल-मुच्छा **मुत्तावली साणुमदी**ए परिधाविताइं वम्मपसेव्वय(?) कड्ढिताइं आहताइं आणोल्लाणि य पच्छाइं(?वत्थाइं) । सो य वि तायं पुरो परिट्ठिताइं जल्लोल्लाइं ।

भणिता मे **साणुमदी**— सुंदरी ! एत्थ(?पेच्छ) ताव सर-तीर-गते लताघरे एदं मया सयमेव समुत्थरणं(?.....) एत्थ [३६८]वीसमुत्थरेणं तु **मुत्तावली** [?.....] ततो ताओ तत्थ परमुव्विग्ग-हिदयाणुवत्तीओ[३६९] भणितो य मे **भद्दयसो**— सुम्म ! विवन्ना हु **सुवेगा** करिणी, जणणीमिव मम एसा कंतार-सहायिका अकालप्पयाता डहति मे हिदयं अहो ! अदेसकाले विवन्ना एसा । किमिदाणि सुहोसिता अणुचित-पदसंचारा **मुत्तावली** संचारेदव्वा ? बहु-सावद-भिल्ल-पुलिंदाकुला पयति-विसमा य इमा अडवी, चिंतेहि ताव जं एत्थ संपदं देसकालोववन्नं ति ।

तेण भणितं— सामि ! अत्थि इतो साधिय-दुजोयण-मेत्त **दुद्दरिओ** णाम संनिवेसो । तत्थ पच्चंतिय-विसय-सीमार(?ए) अत्थि राय **सुमणो** नाम, सो य तुह ससुरस्स रन्नो **भाणुचंदस्स** अणावधो(?), जाणदि य सो तुब्भे वि । असमुच्छाए(?असमत्था) देवी पादेसु पदमवि गंतुं, ण य **साणुमदी**। तं तुब्भे ताव इह एदीओ सारक्खमाणा अच्छह । जाव अहं तं रायाणं अणुव्वल-निमित्तं सभडवग्गं पवहणं च घेत्तूण लहुं चेव आगच्छामि ति ।

एवं भणंतो राय(?या) **हरिदं(?हरियंदो)** हत्थाभरणं च धणुं च ममं दाऊण अप्पणो खग्ग-हत्थो लहुं पधावितो । भणिदो य मे- सुम्म ! लहुकरणो होज्जासि त्ति। तह त्ति भणितुं गतो । अहमवि समुक्कंत-जीवितं दीह-पसारितग्ग-करं **सुवेगं** करिणीं भगिणिं पिव पिच्छमाणो दुक्खाभिभूतो किध किध वि न रोवामि, अणामित-चावो जत्तमंतो(?) बाहिं परिब्भमिऊण नाइदूरेण गओ हं **मुत्तावली**-सगासं, पेच्छामि य ति(?तं) तत्थ धरणिपट्ठे ठिदं हिदय-दयितं देवराय-साव[?व]स-निवडियं पिव देव-कुमारिं, परम-रुइर-वपु-सोभियं विज्जुलतं पिव जवतिसतं(?) वित्तभारयं(?) पिव धरणितड-पडिदं विज्जाभट्ठं पिव विज्जाधरिं, अवताडित-वदण-वन्ना व कामेण अंतिअतकूण(?) घण-विमुक्का रए(?) रयणीए पडिप्पमाणी पवर-चामीकरमएसु य आभरणेसु मणि-किरण-सुज्जलेसु विज्जोतेमाणि पिव अरन्नस्स । चिंतिदं च मे अहो मया अकरुणेण एसा विलवमाणी नाय-कन्नगा इव गरुलेण अक्खिविउं इह वणंतरे पक्खित्ता करुण-सोयणीया संपदं

वसणमणुहवदि । अव(?वि) नाम कहं वि अहमेदं पेच्छेज्जा अविग्घेण निब्भयट्ठाणमुवागदं ति । एवं चिंतयंतेण सइरं भणिदा मे— पिए ! किंचि पवर-सयणेज्ज-सुह-सुइता इधं धरणीए लभ णिद्दं ति। ण य मे किंचि पडिवयणं देदि । ततो मे जाणिउं सुत्तं ति । तओ तत्थ अणुपासाओ णुवण्णाए सो इह भणिओ हं **साणुमदीए**— देव ! एसा हु गय कन्नगा [३७०]गणितव(?) सायास-परिस्संता मया करतलेसु सइरं वादिज्जमाणी इदाणिं चेव निद्दावसं उवगद त्ति । ततो हं विसलित्तमिव वणप्पदेसं मन्नमाणो समंततो दिसावलोगणं करेमि, सगासे अच्छामि सुणामि य नाणाविधाण सावद-गणाणं वण-विहंगाण महा-सउणाण य रुताइं । ताव य पुव्वेण पवण-जवुद्धूता बहल-सिंदूर-रायारुण इव समुग्गता अरुण-सिहा । विविध-दुम-सुरभि-कुसुम-[?ओ]सहि-वासितो व वणगय-मयदाण-सुरभिगंधेण समिद्धो पच्चूस-काल-समए तुसार-सीतलो पवातो वातो, तह चेव विब्भ(?विंझ)-महिधर-णदितड-दुम-कडग-संपलग्गाणं महा-सउणाण रवणदावावाम(?)-दुक्खिताणं पवियंभितो पयति-भीसणो सद्दो, जातं च अरुण-किरणप्पभोभासित-सयल-णक्खत्त-गह-गण-दिसाण परिपेलवं ति उदय-पादोसिय-मंडणच्छायं पिव वधु-वदण-मंडलं नहंगणं [३७१]सीदायति। अरुण-पादा किरणा हं मयरणप्परा रय रुंजित भयुप्पिच्छ-विहलं गयकुलं पिव [३७२]जणवते अवलं मुहं पलायमाणं तिमिरं । अवगदं जलद-तिमिर-पडलं अरुण-पाद व किरणाहद-मण(?) परिहीण-कंति-सोहं, बलवय-पडिक्खोभासितं पिव सप्पुरिस-वदणं जहा परिपेलवीभूतं ससि-बिंबं, सज्जण-विरहातुराणि व ससि-विरहे परिसंकुचंति कुमुदवणाइं, तह चेव अरुण-पाद-संधुक्खिदाइ पियजण-गमण-दूताणंदिताणि व विकसिताइं पंकय-वणाइं, पवियंभिओ य पंकय-सरोदर-गदाणं पच्चूसिय-व(?स)उण-विरुत-पडह-परिबोधिताणं रायहंसाण सारसाण य सद्दो, जाणाति य सम्मुहालोगण-मिल(?)-समूसियाइं चक्कवाग-मिहुणाइं, वित्थरति य सव्व-दिसाभोग-पसरितो णिलयाभिगमण-कद-निच्छदाणं वणकोलुय-सद्दाण सत्त-[३७३]संपातण-रवो, कमेण य मकुलोदर(?) वो(?) ठिताणं भमर-मधुकराण नण-सोक्खं पि कुणंतो पुव्वदिसा-बंधु(?वधु)-वदण-तिलओ, उदयगिरि-कन्नपुरो, गयणतलागल(?)-चूलामणी, तुंग-तरु-पवर-महिधर-सिहरग्गलेसु य पसारित-किरणग्गलग्गहत्थो इव समुग्गतो दिणयरो । उदयंते य दिणयरे [३७४]दिगभिमुहो मय-पक्खिगणादि तु पलविता विसेसेणं पुण असिवा(?)

सूरोदय-दिसि-संसिदा[३७५] घोरं रसिउं पयत्ता, चिंतितं च मे न सुंदरं एदं इह खलु सउणरुते दुव्विव्वंदित्त(?) भणिदं सूरिदित्तं दिसादित्तं द्वादित्तं व तत्थ [३७६]सूर दित्तं नाम सूहाभिमुहं दिसादित्तं नाम अगाग्गेयी[३७७] जम्मदिसा [३७८]दिसासितं ठाणदित्तं नाम वण [३७९]दवड्ढ सुक्कडक्खसुसाण सुन्नकारादि सिंसितं सरदित्तं व । पयति निट्ठुर भयकर क्खरफरुस-विस्सरं भणियं केसिं पुण सूरक्कंतं विय दिसंदिसा दित्तं वदंति ।

तं जहा-अभिभूसियं सूरक्कंतं इंगालितं च अभिभूसियं पुरतो जलिदं सूरसगासं य इंगालीभूतं च सूरघोरं रसिदुं पयत्ता । चिंतितं च मे न [३८०]सुदरा पदं पिट्ठदो भणिय एदेसिं च इमा फल गाहा तहा इंगालिणी य समतिच्छियं भयं आगदं च दिएत्ताए आगमिमं च निव्व सिता य सउणा निवेदयंति तं एसा [३८१]ताव एसा वा सूरिदित्तं [३८२]दिसंति सिदा सरदित्ता य रोद्देसु सुत्ते सिग्घं समुवट्ठियं चेव भयं निवेदेति । ततो वाहेचेव 'नमो सम्मदिट्ठि-देवताणं' ति काऊणं मया अदि दढ वेगमदि बल-गुण-संपन्नं वज्जधरं गंडीव सरिसप्पहार-करणे तुल्लं पवर-सर-मूडण-समत्थं **अयलराया** भुय-कड्ढणा-बलसहं अप्फालियं, [३८३]निच्चलियं च मे वाचं तारा पवर पुत्रं भच्छा भरणं ठ(?ठि)दो हं समर सज्जो । सो य राया वधुगमणायास-खेदिद-तणू [३८४]सव्वित्ती विसमुद्दिय दारुण विरासेवित निद्दा गाढ पसुत्ता य णय मेव तातो भय मत्थइ तुब्भे इह संचारेंतो च्छालणविट्ठो ।

इदाणिं पुण एस ट्ठिओ हं अप्पमत्तो ततो **साणुमदीए**, कहिं चि सा समासासिता, भणिदा य मया— देवि ! विउल-कुल-संभूता सि, अलं विसादेण, धिर्दि करेहि, मा ममं पि रुअमाणी [३८५]वोयाली करेइ(?ह) । अचिरा अहमेते असोभणं दसं णसामि । एवं भणंतो वि अहं सव्वाओ वि दिसाओ निरिक्खमाणो पेच्छामि य पच्चासन्ने महाखं(?) वि पादवंति(?त)रियमहमद्ध-मेत्त-पायडं संधिद-बाणं पुलिंदं [?ए]गं । चिंतितं च मे-जदि कह वि विणिभिन्न रुक्खं विमंतरेण एदं घादेज्ज ततो एदं हदं दट्ठूण अवस्स पिया **मुत्तावली** वीससेज्जा। एवं चिंतयंतेण पुणो वि मे भणिया देवी-सुयणु ! मा भीयसु, न मे एदेण पहरेण काइ पीला, पेच्छ पुण एदं खं विणिलुक्कं पुलिंदं एग-णाराय-पहरेण हम्ममाणं ति । एवं भणंतेण मया वइसाहठाण-ठिदेणं लहुकारिणा आकन्नाकड्ढिद-विमुक्केण नाराएण तालितो सो महारुक्ख-क्खंधी, सो य नाराओ तं रुक्खंधें(?) पुलिंदं विणीसरिदुं परतो दूरं अणुसरितो । सो

य मेच्छो हिदयप्पदेसं भिन्नो [३८६]अरट्ठसंउ रसंतो तेणंतरेण विज्जु-णिहात-हतो इव अंजणगिरि विव महितले पण्हत्थो । अन्नो [३८६]अरट्ठसंउ वि बिदिओ तस्स परभागट्ठिओ महतेण [३८७]वाणा रीए(?) अविन्नात हतो थोवंतरं धाविऊण गिरिणदि-वेगुम्मूलितो इव पादवो महीए निवडितो । चिंतितं च मे- एसो वि नूणं तेणेव नाराएण निहतो त्ति । तेसिं च मे धाविदूणं अदूरपडिताणं गहिताणि मे कोदंड-भत्थाभरणाइं, अप्पमत्तो य घेत्तूण **मुत्तावलि**-सगासं अल्लीणो, भणिता य मे—पेच्छ सुयणु ! एव अहमेते सव्वे सोवियामि(?) । एवं पि भणमाणीओ पेच्छमाणीओ य ताओ तह वि जुवदि-सभावं न चेव छडंति, अतीव घरघरायंति नवरं च ते [३८८]छावंथुवधविद(?) हिदया समंततो खेलासु तोमरेसु य आढत्ता तं रुक्ख-कोडरं हंतु जे, [३८९]पुप्फुकारवीसरेणाहसरे(?) तं अस्त्रं देदुं पयत्ता। तेण य सद्देण अन्ने वि अपुव्वा बहवो पुलिंदा समंततो आगंतुं पयत्ता निपदं(?वडं)ति समंतओ खेला-खुरुप्प-कत्तिय-पलासि-भल्ली-तोमर-सद्दाइं तडतडंतिडा-सद्दं । **मुत्तावली** हिदएणं फुडुंति व दिसा-मुहाइं । तं च सोऊण दट्ठूण य **मुत्तावली** भीता ममं भणइ— अज्जपुत्त ! बहवे हु इमे दस्सूणो, तुब्भे य एगागिणो किह ण मारिज्जिहिह । असमिक्खद-ववसितस्स हु साहसस्स एरिसो विवागो जातो । तं संपदं पि ताव साहीणायुधो चेव उलंबेहि। ततो तेयामुय(?) मम्मग्गहणं एते साणुकंपा भवीहिंति, इतरहा ते एते निट्ठित-वाणंवाला(?) गहितं[३९०] तक्खणं चेव ते निज्जीवं काहिंति त्ति।

मया चिंतित एगंत-सुह-समुइता हु मुद्धा इमा रायसुता ण याणदि एगंत विराधिते इमे रिवुणो, जतो एसा एवं संलवति ।

ते वि या(?य) मि(?मे)च्छा समवकिरंता ममं पाहि समंततो अभिपडिदुं पयत्ता, मया वि य संवट्टय-जलधरेण व सरद-पवर-पहकर-परंपरुत्थिता मोयाविया चिय मे पुरोभागं, पिट्ठतो वि [३९१]समपाद-वक्खित्तिप्पदेसाणि आदेसिआ **मुत्तावलीए** [३९२]परम-भयुप्पेत्थ-हिदया कोमल कदली विव मारुत-समीरिता पवेवमाणी पगलिदंसु-नयणा ममं कंठे लग्गिदूणं कलुण-कलुणं सुह-लालिता अदिट्ठपुव्व-भय-भेसिता परुदिता, **साणुमदीए** तहेव य रुन्नं ।

चिंतितं च मे—अकज्जं जातं इदाणि अहमेतेसु एव समालिंगिदो जातो हं गम्मो मेच्छाणं । ताव य ते वि मेच्छा अंतरं लभिऊण तं पादवं समंततो गहण-वल्लि-परिक्खित्तम्मि पुणो वि जातो(?ता) ममागोयरो(?रा) ।

ततो [३९३]मुक्खवेल(?) उवविणंति दूरतो उवच्छूढेसु । ततो पच्छा समंततो अग्गि देइ, भणंति य— परम रूसिता एस सो अंतो भवीहिति, नवरं च पावगो पावको इव अवराधित-वेरिओ दूसह-धूमंधयारिद-दिसो धगधगधगेंत-जाला-सहस्स-पिंगलित- नहतलाभोगो पयलित्त त्ति दुम-लता-जाल-फुट्टंत-तडतडारावो निक्कारण-कोव-कुविद-दुज्जण-वदणोवमाण-दुप्पेक्खणिज्ज-रूवो महब्भयो भयकरो वित्तासित-पक्खिय-संघातो इव समुद्धाइतो समंता पागारं पिव रयंतो हुतवहो अणुकूल-मारुताफुलिंगजाला-विलोल-मालासु समंततो अभिपडंतीसु ऽप्पसुतवादिं पिव बहुस्सुतो हेदु-सहस्सेहिं आढत्तो अग्गी तं पादवं सव्वतो समुच्छरिदुं फुट्टंत-वेणु[३९४]-संघात-तडतडारावेण फोडेति हिदयं **मुत्तावलीए** ।

ततो देवी तं महब्भयं जलणं दट्ठूण वण-दव-जाला-परिगता इव मई आकन्न-वित्थारित-लोयणा महता वित्थारित-भोगेण अच्छन्न-जाला ववि(?लि)-फुलिंगागार-परिस-गब्भेण धूमेणाविल-रुधिर-विब्भंत-कंतच्छिरागा अंसु-वरिसेण अभिहणंती व तं हुतवहं । इतो ततो धूमस्स मुह(?) अभिरमंती च्छिन्नाभि(?)-समूससंती सह **साणुमदीए** भणदि य मं धूमेण निरुद्धकंठा भीता रुयमाणी— अज्जपुत्त ! निद्धाय वमितो(?) न खलु सक्केमि खणमवि इह विचरितुं। ततो हं तीए संतियाए वेदणाए दुक्खवित-हिदओ वि अविसन्नो [भणामि]-'किं भणसि कल्लाणि ! मा भीयसु, सहसु ताव मुहुत्तं, न चिरं ते इमं दुक्खं भवीहिति ।' एव भणिया मम वच्छत्थले मुहं निवेसेऊणं सिंचंती ममं अंसु-सलिलेण मंदं मंदं परुदिता, सणीयं भणति मे-अहो मम निहीणकम्माए कदेण सामी मारिदो त्ति । ततो साणुमदी वि हिदएण अइभिन्नेणं विसन्नरूवा ण सक्केइ किंचि वाहरिदुं ।

तओ मया चिंतियं—अह गच्छंतस्स नियमा अग्गीतो भयं भवदि, बाहिं पुण विणिग्गदस्स जुज्झमाणस्स संसइताइं ण य मे दिट्ठभया सत्तुणो आसन्ने ठाइस्संति, अहं पुण ते दुगुण-तिगुण-सर-गोयर-गदो वि अभिहणीहामि । तं सेयं मे इतो निग्गंतुं । एवं चिंतेदुं भणिदा मे **मुत्तावलि-साणुमदीओ** एवयणीया(?)-भो ! मे मग्गेणं निग्गच्छह [३९५]मयच्छी भेह । अहमेत अज्ज स वि एस अचिरेण निद्दु(?ह)णामि । ततो हं च्छेयताए अग्गतो अग्गिदुवारं काऊणं विणिग्गतो वणंतराओ, ताव ताओ दो वि जणीओ अग्गदो काउं तेण चेव पहेण संपट्ठितो हं वो [३९६]दुद्दारियाभिमुहो । ततो ते मेच्छा सद्दूलं

पिव हिता(?) मे साहामिया जहा साणुसया गच्छंतमणुगच्छंति । अहं मज्झे अह केइ पुलिंदा सो(?आ)रियभासा-विसारदा, ते य मे समविक्खिवंता भणंति-वज्झ ! कत्थ गदो जीविदं लभीहिसि ? [३९८]ओलंबह लहुं इधेव णं, अहवा एस अचिरेण जम-मुहं पेच्छसि त्ति । एवं भणंते अगणेमाणो ताइं दूरं गंतूणं पेच्छामि गिरिधारा-निरुद्दे(?द्धे) गयदुवारं पहप्पवेसं, तं च पुव्वतरं तत्थागदेसु अन्नेसु मेच्छेसु समचिट्ठियं। चिंतेमि य सव्वे चेव मन्ने मे(?मि)च्छा ओलंबणं ति । णयाहं एत्थ [३९९]देसिओ एव चिंतेदुं पुणो वि एगं विसमं पादवं आसइदुं ठिदो हं, रक्ख(?रुक्ख)-विवरंतरे य निसीयाविताओ मया **मुत्तावलि-साणुमदीओ** । अहं पुण मंडलिताकड्ढित-चाव-नाराओ सव्वतो समंता अप्पमत्तो मुव्व(?)-खत-रुधिर-गलंत-सित्त-देहो अच्छामि जुद्ध-सज्जो।

ताव य पुएण विअसि(?अ) संपडिदा पुलिंदा समंततो परिवारेदुं व चिता पउब्भिता(?) य पंच-सर-सत-निवातेहिं ततो हं पववरिता(?) विधाण-गतो इव समंततो परिब्भमंतो ते पुलिंदे बाण-वरिसेण जलधरो इव समोअरिदुं पयत्तो, छिंदामि य तेसु विसज्जिता सर-पहर करे खुरप्पेसु नवरं च अपुव्वेसु य भिन्नसन्नेसु पुणो पुणो अभिपडंतेहि मेच्छेहिं तं सत्तु-बलं वड्ढिउं पयत्तं । मया य तेसिं पहाणो अभिपडंतो रणे एक्क-नारायप्पहारेण विवडितो पुलिंदो राया। अन्नस्स तस्स मम सेढिगता पंच पुलिंदा । ततो तेहिं तवेवुणोद्धिता(?) सुट्ठुतरं पउत्थिदा । ताव य ममं पि वड्ढमाण पुलिंद जाव यस्समाणामसव्व-सायगा एगाव(?) से सरो वड्ढसि न य तासिं पासातो सति वि पुरकार(?) परक्कमे सुकदेसि पसरं लभामि, तओ तेण एगेण सायगेण अच्छगदेण **मुत्तावलिं** सद्दूल-वंद-मज्झ-गतं पिव हरिण-कण्णगं भय-विसात-वस-विसन्न-विद्दारित-सायणं **साणुमदिं** च भंत-हिदयं [४००]निरिक्खमाणो पसर-कुविओ [४०१]निद्दहाभवद्दिट्ठीए तो मत्थेण याभतं(?) एक्कं पा(?बा)णं [४०२]दंड-हारं पिव मोत्तुं विसहामि । न य तासु संदाणिओ [४०३]कट्ठे वल-सिला-रुक्ख-जुद्धेसु जुज्झिउं सक्केमि, सो य मे पुव्व-दिन्नो ममं लग्गो सरप्पहारो अतीव मे वेदणं कुणइ। उब्भिन्न-धरणिधा(?ध)रो य णं ठाय ति [४०४]रातोगलंबिया लाभति धावति मे कणगगिरि-सिहराओ वत्तु(?)धारा इव रुधिर-धारा, से णिग्गलित-सारं थोवी(?) होइ सरीरं निरासदाए य सहाय-रहिदो किह वि मोहं ण उवेमि ।

एदम्मि देस-काले मम **मुत्तावलि**-पेरंतेसु तरितं परिब्भमंतस्स

[४०५]अतिब्भसिक्खयकरो छत्तो संचलिद-पादाभिहात-संखोभित मंदाचारे गदो मम वम्मीय-विवरे दाहिणो पादो, तत्थ य पुव्वट्ठिदेणं महता आसीविसेण सत्तपतिएणं आसुजीवितविणा(?)-विसम-काल-सप्पेण खइदो हं पादलग्गो चेव समुक्खित्तो दिट्ठो य तासु दोसु वि जणीसु दो य(?अ)दसिकुसुम-संकासो गुंजद्धराय-सरिस-णयणो मया भुयंगो निच्छोडितो य मया पडिओ एगंते भयकरो भणिदो य मे विसन्न-हिदएण—धिरत्थु ते खलु पाव ! अहम भुयंगम ! [४०६]अच्छेक्लेदम्मसाणस्स(?) अहो दे विणासियं कन्नं ति ।

ततो **मुत्तावलि-साणुमदीण** वि भुयंगम-दंसणेण सह निवडि जाणिव महिट्ठियाणि गाढतरं विलाविउं पयत्ताओ, बेंति य— हा हा ! कयंत निग्घिण ! अहो ते निवसितो अम्ह उवरिएणं पात(?) भुयंग, हा हा ! किं ते एदं कतं तवोदितं अहं तं पि णाम अम्ह जीवितं तु उवज्झायं मोहणंतेण को ते गुणो पाविितो ? । एवं बहुं विलविउं पयत्ताओ। ताव य अहं पुव्वं चिय तेण पहारेण विणिस्सुत णिस्सस रुधिरोलद्धो पुणो सत्तपतिय-भुयंग-विसेण अति-दारुणेणं महा-मारुताइद्धो इव साल-पादवो जहा घुणिउं पयत्तो हं । [४०७]व य मणसाओ(?) य ताओ निरक्खमाणो चेव सहसा मोहमुवगदो हं, पडिदाओ य ताओ मम उवरिं विसम-भय-सोग-हिदयाओ य, हं च निच्चेदणो जातो, विण्णातो हिदसण-विसदो समो [४०८]हंकारणेहिय-मेच्छेहिं अवि धाविऊण गहितो हं, बेंति य— एतेण अम्ह बंधुणो भारिता, रोस-पसमणत्थं सप्प-मारिदस्स वि से सिरं छिंदामो त्ति । ताहे तुब्भं ते जत्तो पडिहरिदुमिच्छंति मम [४०९]सरीरं मेच्छा। ततो तेसु सह जुज्झमाणो मम अंतो रणंणत्तमाणं णमति(?) घरघरायमाण-गत्ता य सह **साणुमदी** य **मुत्तावली** इमाइं एगूणवीसं कम्माइं समयं पदंसेइ, तं जहा—

ममं निरक्खति, अत्ताणं पभणति, पतणु लज्जति, कलुणं परोवति, सभया वेवति, [४१०]अभया कुज्जति, मेच्छेसु सह जुज्झति, पहरंतरेणं अत्ताणयं छुभति, वलयं भिंदति, जीवितं उवालभति, मरणं ववसति, दीहं कंदति, पतणुं लज्जति, देवि(?वं) खिज्जति, मेच्छाकड्ढिदं च **साणुमदिं** हत्थातो ण छड्डइ, ममं च परियंचति, सप्पं च परिर्निदति, अणोरभं(?) रसति ।

कारुन्नविते य पुल्लिदे अहं मतो ति काउं मंदातरेहिं पडिद-महिंदद्धयो इव णीसेसं उल्लरितो हं । परं च एस सप्पुरिसो त्ति काउं अंतो हिदए जु पति सितेहिं अधो परिहाणां खामं नहि तम्मो । अहिताऊया तहिं **मुत्तावली**-

साणुमदीओ कयग्गहाकड्ढिदाओ(?) मेच्छेसु पुलिंद-पल्लि तेण पयट्टिताओ हीरिदुं पयत्ताओ । ततो **मुत्तावली** काल-पुलिंदाकड्ढिता घण-विवर-गता इव सोतामणी कलुणं सह **साणुमदी**ए परम महब्भयमणंतर महा-दुक्ख-वज्ज-संपात-सरिस-अणुयित [४११]संताव संत सरीरा दीह [४१२]कुल कुवित [४१३]अणोरसित कलुसद्दाल[४१४] रसिति(?) गिरि-कंदरोदर-पडिसुआ-सद्द-गंभीरा मणमणमणस्स फुलुफुल्लफुस्स सरसरस्स राया कीसूरोततितं(?) अरून्न वा धार न(?) कलुण-सद्देण विलवति य ममं विव सा भीता निच्चेदणं पि जा(?भ)णंती— हा सामि ! सूर सप्पुरिस एहि लहु एस हीरामि हरिउं पयट्टिताए जह थेवं पि मेच्छवसियाए मज्झ-हिदयेक्क-वल्लभ रोतुं पुण चिय[४१५] लद्धो सि विदुस्सेसुणररभीसुय(?) जंतो पयते सुसेवितं देहं(?) तं गंधाणुववन्न मज्झ अणुन्ना य दोसेण हा हा जाव अलज्ज ण कीस उक्कमसि का उवेक्खा ते वज्जसार निग्घिण एस पिउ ते वणे सु वदि उसुभयभुवणक्कंतं जं दुल्लहं अति[४१६] वर तणूणं पि तं [४१७]महाणाण वणे जादं भत्तं सियालीणं मा होज्ज माणए(?) तेए । **साणुमति** मज्झ मरणे जीविदं किंपि उविक्खदि ण पडइ णिम्मूल मुक्कं [४१८]पिए सुभतरं पि मन्ने होहिति मे किंपि दुक्ख-विक्खिरणं जं तुह मरणम्मि महं [४१९]ण [४२०]याणदि दससिक्करजीतं(?) हा पुलिंद रसिया(?) पियदम-मरणं पि दाणि अलभंती अवसा मोत्तूणं तुमं एस गदा हं स-कम्मेहिं जदि वि अलद्ध-रसा हं, तह वि तुहायत्त-जीविता अहयं, उपत्तिय(?) थेवेण वि सज्जण-हिदयाइं हीरंति उ अहवा अलियं-चिय [४२१]जवती(?) विड-कवडणा भयं एदं जं विलवामि महायस! असहंतीसु तुज्झ मरणम्मि । इह अरन्न-मज्झ दट्ठूण महद्दुमं व पल्हत्थं जं [४२२]न्न मदा तुह मरणे णूणं भविदव्वया अत्थि, एसा परव्वसा हं पियदम ! णेज्जामि वण-पुलिंदेहिं उवएण(?) विवर पसुत्त य ता मिया पुच्छियो होहि ।

एवं बहु विलवंती नीदा पुलिंदेसु पिया सह **साणुमदी**ए । ताव य अहं पि णिच्चेतणभूतो चिरं होऊण पच्छा [४२३]चेदं(?चेदणं) लभिदुं पयत्तो हं। ततो हं सुमिणंतर-गदा विव नियय-हिदयोवरि-णिक्खित्तं कस्स इ कोमल-पाणि-फासं परिवेदेमि । चिंतेमि य— कस्सेस पाणि-फासो ? किं मन्ने **मुत्तावलीए** हवेज्ज? त्ति । एवं चिंतयंतो खणेणं विगदो(?द)मोहो अवगद-विस-दोसो निक्खंदए विव विबुद्धो सुमरंतो हं तं जुद्ध-कारणं समर-गदं चेव अत्ताणं मन्निऊणं परम-रुसितो वेगेण अभिगज्जंतो समुट्ठितो हं । जाव तत्थ

ण किंचि माणुस-मेत्तं पेच्छामि, चिंतेमि य—कस्स मया पाणि-फासो आसादितो आसि त्ति । एवं चिंतयंतो विसादो(?दा)हद-हिदयो हा हा हदो हं, हियाओ निच्चेद[?ण]स्स **मुत्तावलि-साणुमदीआ**(?ओ) । आयुधं च विगम्म(?मग्ग)माणो ण किंचि आयुधं पेच्छामि, पेच्छामि अत्तणो देहं रुधिरोक्खित्तं । न य परामुसंतो तं बाणप्पहरं पेच्छामि, वेदेमि बाणय-वेदणा अत्थि इतर-साभाविय-सरीर-सरिसं तं पदेसं मन्नामि निव्वियारं च सपक्कइतसं(?) विस-दोस-विप्पमुक्कं अवगच्छामि । ततो सचिंत[४२४] य सोकक्कंतो किमेतं ति हिदएण चिंतयंतो ततो एगं महद्दुमं उम्मूलेऊम घेत्तूण य आयुध-कज्जे पद-निक्खेव-वसेणं हेल्लंतविडिमसालासातसंकुलं(?) तं हिक्खिविऊणं पधावितो हं पुलिंदाण पद-पद्धीए(?पद्धदीए), णादि-दूर-गदो य पेच्छामि सव्वे वि ते पुलिंदे अवउरण-बद्धंण(?बंधण)बद्धे दिव्वरूविणीए देवदाए अट्ठभुदा(?या)ए उज्जत-असि-परसु-सूल-सव्वल-चक्क-गदा-भिंडिमाल-कणग-हत्थाते नाइदूरे उवरिं णह[य]ल-ठिताए व दु फुड-भिउडि-कुडिल-धरणाए परम-कोव-दुप्पेक्खाए विमुक्क-हुंकार-निट्ठुर-स्सराए सूणामति(?)-सेवित [४२५]सविसेस मम सवडेम्मुहे आणेज्जमाणो दोहिं य सुरकुमारियाहिं परिग्गहिताओ पियं भणंतीहिं करतल-संब्भग्गिदाओ(?) दिन्न-हत्थालंबाओ कंचुग-परिधाण-नियंभ(?स)णावसेसाओ नीसेस-पूरिदालंकाराओ [४२६]हडोवरिमच्छाओ(?) पुलिंदेहिं मम विरह-विसम-वसण-गिरि-सन्निवाद-दूसिताए रन्नो कत-तंबच्छीओ, सव्व-काल-सुह-समुइताओ महा-दुक्खाभिहत-हिदयाओ, सव्व-सयण-[४२७]मुप्पसत्ताओ, जूह-विहूणाओ व्व गय-कलभियाओ परम-दुम्मणाओ पुरतो आणिज्जमाणीओ पेच्छामि । ताओ य तहाभूताओ अवहिद-भूसणाओ नीसेसमुल्लूरित-कुसुमभाराओ इव कप्पद्दुम-लताओ भीसमाणीओ हास-विसादेसु दोसु वि मम दालयंति [४२८]वि सबंधण हिदयं । ते य पुलिंदे वि मम बंधण-पीलितो घोरासीविस-नागपास-बद्धो तासिं दोण्ह वि [४२९]जणीण पडिदंसणेण मम अवगदो रोसो, संजाणिता य मे सा देवता भगवती **अच्चिमालिणी** । ततो तीए दंसणे च्छे(?च्छो)डितो मया पहरण-कज्ज-गहितो महद्दुमो । बहुमाणेण य से मया आलोए च्चेव कदो पणामो । अवतडि(?रि)ऊण य तीए महितले कतो वसो(?ममो)वरिं जणणि-हिदय-सुह-सिणेह-सीतलो हत्थो, भणदि य— पुत्त ! का ते इमा आवदी आसादित त्ति । मया भणिया कयंजलिउडेण— भगवदि ! अवगदा से तुह पसादेण

आवदी, अन्नहा पुण पाविता हु । तीय भणिदं— पुत्तय ! किम वि एदं ते तवच्छिदं(?) पुव्व-कय-कम्म-निवडिदं । इतरहा अवसणभागी तुमं अगम्मो य देवासुराणं पि ।

ताव य **मुत्तावली** वि सम्मं तएऽब्भुट्ठियं[४३०] दट्ठूण परम-घोर-वसण-विउलित-हिदया अप्पत्तियंती पच्चक्खे वि मम परिउज्जीवणं दसाणं च आणंदोमद(?)-बाहु-लोयणा रुयमाणी सह **साणुमदी**ए पडिदा मम पादेसु । मया य पगलित-नयणेण तासिं एत सुह-समुदएणं तं च सन्नं अणुसरंतेण ह(?हि)क्खविऊण देव-समयं समवगूढाओ सुइरं च रुयंतीओ किह किह वि सचदु-कम्मंसु य स(?सु)मधुर-वयणेसु संतिताओ मे । पुणो य मे **मुत्तावली** पादवडिदुट्ठिदा सघग्घर-कंठा सणीयं पुच्छइ— अज्जपुत्त ! सरप्पहर-भुयंगडक्कणे ते केरिसी वत्ता ? मया भणिदा-सुतणु ! पेच्छसु सयं चेव । सा णीरिक्खमाणी ण तं पहरं भुयंग-डक्कं वा पेच्छदि, केवलं तु सरीर-लग्गं सुक्कं रुधिरं पेच्छदि । भणति य सणियं—अज्जपुत्त ! किहमेतं ति । मया भणियं— सुयणु ! जहा मे [४३१]हिदए वट्टति तहा मण्णामि, भगवदीए मम जणणीए **अच्चिमालिणीए** देवयाए अवहरिऊण वेदणाओ [४३२]सव्वनीकदाधणामो(?) । एतं च ताव एदं[४३३] ।

ताव य **भद्दयसो** देसावलितो [४३४]तेणेव य पट्ठिय(?दंसिय)पहो तुरग-रह-वर-करिणि-वंद-सहितो महता तोनवग्गेण(?) पत्तो तं पदेसं राया **सुसेणो** । तेहि य दिट्ठं तत्थ [४३५]गयत्थरण तेय समरभूमि-पडिदा पुलिंदा वेणु-वण [४३६]सहे(?) च दट्ठूण परम-विसादा बंभणेण **भद्दयसेण** भणिओ **सुमणो**—सुमण कट्ठं जादं, अब्भहिदो ह विसमट्ठिओ जुवति-संदाणिओ एगागी राय-जामाता मेच्छेसु णज्जदि । से का वि वट्टमाणि सिग्घं वि[४३७] सेसो हणंति णादिदूर-पहावितेहि य अम्ह अणुकताए ठिओ हं तेहिं देवता-सहिओ संनिहितासु **मुत्तावलि-साणुमदी**सु बहु-नीसेस-पुलिंद-वंद-पास-ट्ठिओ । ते य ममं दूरतो चेव दट्ठुं भणंति किंचि सामिपाता कुसलिणो त्ति। मया भणियं—कुसलं मे देवीए **अच्चिमालिणीए** पसादेणं ति । एवं भणंतस्स पडिदा मे पादेसु सपरिवारा[४३८] **सुमण-भद्दयसा** मितुट्ठा(?) मो जसेसेच्छरणं(?जं सि मेच्छ-रण-)भंडणातो जा(?जी)वंतो सदारो य विणिग्गतो त्ति ।

मया भणियं-देवीए पसादेणं ति ।

ततो भणति **सुसेणो** राया— देव ! किमेतो(?ते) दुरायारा विवरिज्जंति ? दंसेज्ज दु एदाण जम-मुहं ति ।

मया भणियं— ण हं तमिदाणि एदे मारेदुं [?.....] एदेसु मे निच्चेतणस्स वि मम साडहरणं(?) विवज्जिदं, किंतु एदेसु मम भुयगविसेसे(?) वि तस्स [४३९]मुसिताओ **मुत्तावली-साणुमदीओ** । अहं च तं निच्चेतणभूतो, तं मग्गिदुं पडिविसज्जिज्जंतु एदे । ततो देवीए भणियं— पुत्त ! इमाणि ते सदारस्स वत्थाभरणाइं करिणि-भंडयं च सव्वं मया एतेसिं हत्थातो अच्छिन्नाइं । ततो मया भणियं— भगवदि ! जइ एदं, ततो विसज्ज एत्थ एदे । ततो देवीए विसज्जिता मेच्छा । मम तेण सिद्धं(?ट्ठं)-गदा जहागदं हदसेसा । ततो हं पुच्छिओ **सुमण-भद्दयसेसु**—देव ! का णणु एसा देवदा अम्ह पियकारिणी ?

ततो मया तेसिं संखेवेणं कहितो तीए भगवदीए सिणेहाणुराग-(?गु)प्पत्ति-पच्चंतो निरवसेसो जाव भय-दंसणं ति । इमं पुण से आगमण-पयोयणं याणामि । ततो देवीए भणियं— पुत्त ! किं एत्थ जाणेज्जइ ? ण कदावि वि तं पुव्व-कदोवगारो हिदयातो अवतरसि । अज्ज य तुह पुण वो [४४०]हिताए सपत्तीए मया चिंतितं-कत्थ पुण संपदं सा मम भाव-परिग्गहितो[?.....] परिवसति? किं वा संपदं [४४१]वट्टइ ? ततो [४४२]सउणादिट्ठो पुलिंद-सरप्पहर-[४४३]रूसिदो सप्प-डक्को पुलिंदावहित-पियजणो मोहोवगतो, दट्ठूण य तुरियं उप्पत्तिऊण तुह सगासं आगदा मि । ततो ते मया उरे हत्थं दाऊण अवहिताओ दोवि वेदणाओ, [४४४]सन्नीकतो य ते तक्खणं चेव णाऊणं य तुमं अवगद-विस-वेदणं ततो पधाविता हं **मुत्तावलि-साणुमदीणं** [४४५]सरण-वसिदाणं **पुलिंद-सहिदाणं** [४४६]आगासं । आसासिताउ य मया णहतल-गदाए भणिदाओ— मा भाय, अहं वो सामिणो जणणी तं जीवावेदुं तुब्भ सगासं आगता । एवं भणंती[?ए] मया थंभेऊण बद्धा नागपासेसु पुलिंदा, तुह इच्छा-परिपूरणत्थं [ण] मारिता मे, अणुकंपाए य च्छिण्णाणि य मे पुलिंद-हत्थातो सव्वाइं आभरण-भूसणाइं, परिणियत्तिता य मे सव्वे तुह सगासं। परव्वसा मेच्छा दोसु य वेउव्विय सरकन्नसुगासु(?) परिगेण्हाविताओ मया **मुत्तावली-साणुमदी**ओ तुह सगासं चालिताओ । ताव य तुमं पि आगओ चेव, एवं पुत्त, समागमकारणं ति ।

ततो तीए एव-कधिते मया व रइद-करंजलिपुडेण भणिया

भगवदी— कदत्थो हं जस्स [४४७]मसंपत्तस्सचितसि(?) अप्पमत्ता [४४८]जग्गसि। को य ममं अन्नो अत्थि तुब्भे पमोत्तूणं ति।

ततो जं मम मोहमुवगदस्स सगासे पुलिंदेसु सह जुज्झिउ विलवितं बहुप्पगारं **मुत्तावलीए** जलिय करणाइं कताइं हीरंतीए पुणो पुणो [४४९]सावयओक्खाए एतं तु सव्वं **साणुमदीए** मम निरवसेसं सिट्ठं ।

एवं तीए कधिते भणति मं **अच्चिमालिणी** देवी— पुत्त ! इदाणि कत्थ ते यणा(?णया)मि ? ।

ततो **सुमण**-राइणा भणियं— भगवति ! कदं तुब्भेहिं जं करणेज्जं, इदाणिं एसो मम संतियं सन्निसेवं(?वेसं) सदारगो गच्छीहिति ।

ततो तीए भणियं— सच्चं पुत्तय ! एवं करेहिसि ।

मया **सुमण**—बहुमाणेण 'तह त्ति' पडिवन्नं ।

ततो सा अमोहदंसणा **मुत्तावलीए** दिव्वाभरण-वत्थविधिओ, ममं ता उ गोसीस-चंदण(?णं) ए **साणुमदीए** य वत्थालंकाराइं कत्तो वि विधेउं तक्खणं चेव अद्दंसण उवगदा ।

भद्दयसो ममं भणइ— देव ! न केवलं एत्तिए **सुमण**राज-संतिओ [४५०]आवयोजत्तिए(?)[?.....]

मया भणिया-दूरे हु इतो वा(?च) **दुद्दारय**-संनिवेसो जतो अम्हेहिं वि दावियं ति । तावं ताण य मे एस वेला जात त्ति(?)[?.....] ।

मया भणियं—सोम्म ! सागयं चेव । तओ तेसु दह(?सह) गदो हं नाइ-दूरट्ठितं एसुइत(?पमुइत)-हंस-कारंड-चक्कवायमिहुण-मा(?स)णाउलं फुल्लुप्पल-कमल-कुवलयाइंण(?इण्णं) गंभीर-सुरभि-सीतल-जलं महा-पुक्खरिणिं ।

तओ हं रुधिर-धोवणत्थं समवगाढो, समवगाढा य मम मग्गेण **मुत्तावली**, आह(?ढ)त्ता य सयमेव मम किंपि अव्वत्तं भावसूयगं सलज्जं पियं च भणंती रुधिरं धोएदुं । मया वि तीए अंसुपडलग्गा(?ग्गं) [४५१]कुवियंसं(?) सयमेव पियं मधुरं च भणंतेण सोपितं(?) से मुह-कमलं। एगंते यले **साणुमदि** सहिदा मज्जिद-पडियागता दिव्व-गहित-वासा ताहे मया देवदा-दिन्नेणं अलंकारिएणं पसाधिता **मुत्तावली** । **मुत्तावलीए**य सयमेव

पसाधिता सम व सुह-दुक्खेसु **साणुमदी**।

एदम्मि देस-काले उवट्ठिदा अम्हं **सुमणेण** चदुज्जातक-करवर-वेविणो (?) खंडलड्डुया, ते य मे पज्जत्तं पक्खेऊण पीतं नीलुप्पल-कल्हार-कमल-सुरभि-वासितं सलिलं । ततो कत-पज्जत्तस्स उवट्ठितो मे **सुमणेण** सदावस्स(?) रहवरो । [४५२]तं चेव **मुत्तावलि-साणुमदी**सु सहिदो विलग्गो हं, संगहिता [४५३]य **भद्दयसे**ण हया, धरावितं च **सुमणो**ण मम(?मो)वरि णिययातपत्तं । पयाता य मो [४५४]चउद्दरे कमेण य दाएति मो अणुपासप्पयातो राया **सुमणो** विंझगिरि- कंदरोदराइं सिहरधराणि य तस्सेव पमुइत-गयवधू-अर(?)-हरिण-मयूर-कुल-संकुलाइं गिरिणदीय निगुंजाइं द वण महिसदोहि ताइं दाए दाए सिय(?), अहं पि ताइं, **मुत्तावली**ए अछुद्धाणि य ।

पयति-वण-गहणाइं उक्कंठणयाइं अरन्न- वणप्पदेसाइं पेच्छमाणी **मुत्तावली** सुमरिऊण अम्मा-पिउणं दुक्ख-पीलित-हिदया पुणो वि रोविउं पयत्ता । ततो तं परोयमाणी अहं आलि(?लू)हिऊणं अंसुयाणि करतलेसु परिपुच्छमाणो सणीयं च चदुर-मधुर-देसकालोववन्न-वयणे[ण] पियं च संतयंतो भणामि—सुयणु ! किमिदाणि मे संदग्गं(?) अंसुपादेसु निद्दहसि ? तदा [४५६]मुच्चंती वि ण णियत्तसि, इदाणि एवं करेसि। किं एत्थ भन्नदु ? अहो ते सुविहेढितो[४५७] अप्पा । अहं च एवं भाणिऊण अह [४५८]वरकुरव मज्झदेसे निसन्नो वामदेसे पल्हत्थवंदणो(?) अहोमुहो अधिदिं काउमाढत्तो।

ततो **साणुमदी** ममं दट्ठूणं **मुत्तावलीं** भणइ—अज्ज-दुहितरो ! तदा तुब्भे **जरासंधे** उणउत्ति(?) होऊण सुत-परमत्थाओ एयस्स कज्जे मरणं ववसिदाओ । तं किमिदाणि संपदं एदस्स देवकप्पस्स पासल्लीणातो होऊण दिट्ठ-चरित-माहप्प-गुणाओ य एदं मण-वल्लभं पियं परिकिलेसध ? अहो ! ते ण सुंदरं अत्तं ति ।

ततो **साणुमदी**ए च एव भणिता ममीणा(?समाणा) **मुत्तावली** संकित-हिदया अणिमिसाए दिट्ठीए मम मुहं वियसिय-कमला व बाल-रवि-[४५९]बिंबं ज्झाइउं पत्ता। सुचिरं निहालेमाणी जाव य अहं लेप्पजक्खो इव विलप्पकपो(?) अच्छामि, ताहे उप्पल-पत्त-सरिसेणं दाहिण-करतलेणं ममं वदणं णित्थ(?) हत्थ-मणिबंधे गेण्हति, वाम-हत्थेण य [४६०]सरइरं पसारित-दुवंगुलीएणं अहोमुह ट्ठिद मम कन्ना मे उपयत्ताणि[४६१] य संचाएति मम मुहं आदर(?) लग्गाविउं णामेउं अहोमुहस्स पट्ठियस्स न मे संचाएति दिट्ठी

संपाउणियं, असंपाउणमाणी य दूर विसमुव्वत्ताण-णयणा हेट्ठतो अवरंमुही मम मुहं जोदुं पयत्ता ।

ततो हं तक्खणं चेव अधिति-मुक्क-कारणो वा लाभवति-बोधितं पिव सज्झसभरारविंदं सु(?मु)द्ध-पलोयण-गदं तीए वयण-पंकयं दट्ठूणं पहसितो । पहसित-मेत्तस्स य मे पहसंती चेव सा लग्गा मे गले । ततो हं परम-परितुट्ठो फुल्लिता-लतालिंगितो इव चंपग-वर-पादवो अतीव पसोभितो हं । भणिदा य मे लद्ध-हिदएण—सुयणु ! किमेदं अधिर्तिं करेमाणी मम हिदयं संतावेसि ?

तीए वि य सिय-दंतप्पभा-कदुज्जोअं सुमधुरं समीयाकं(?)—कीस मे तुब्भेहिं अहं अणाइक्खिऊण सब्भावं व च्छलेण अणिच्छमाणी विव जहा अवहिता ?

मया भणिया— अहं कीस तुमं पिऊणा इक्खिऊण परमत्थं छलेण अवहरविदो ?

तीए भणियं— तुब्भेहिं अहं दिव्व-णट्टं सिक्खावेदव्व ति, तेण कारणेण अवहिता, णं(?ण) दुट्ठु-भावेणं ति ।

मया भणियं— तुमे च मम च णट्ट-सरिदत्तणं करेदव्वं ति, तेण तुमं मया अवहिता, ण तु(?दु)ट्ठ-भावेणं ।

एवं मया भणिए **साणुमदीए** मुहं पलोइदुं पहसिता, [४६३]पहसेंती मम हिद-मोहं[४६४] ।

ततो **साणुमदीए** भणियं—का हिता वो एसा [४६५]अज्जपुत्तस्स णट्टोवदेसत्तणं ति, जति मे तुब्भे उवज्झायाण रूव वित्तिं कप्पेहिध ।

मया भणियं— जइ मया एदीए उवज्झायत्तणं करेंतीय उवज्झाय-वित्ती अणुरूवलद्धा होंती, ततो अहं पि एदीए इदाणि तदाणुरूव-वित्तिं कप्पेंतो त्ति ।

मुत्तावलीए भणियं— जहा अहं चेव तुह उवगदा, तदा कस्स वित्तिं मग्गसि ?

मया भणियं— जहा तुमं ममं चेव उवगता ततो कस्स मे वित्ती कप्पेतव्वा ?

इ(?ए) वं परिहसंताइं अवगतवित्ता(?चिंता)इं अति व्वतासोरवेण(?)

सुमणराय-भडवंदाणुताइं एवं वच्चंताइं कमेण पत्ताणि मो **चदुद्दारय**-लोगेण सकोतुगेण पेच्छिज्जंताइं, रन्ना **सुमणेण** कदग्घपूताइं, पविट्ठाणि मो **सुमणराय**-गिहं ।

ताव य [४६७]गर्विदं(?) दियसं अत्थमितो दिणयरो **सुमणदेवी**-जण परिक्खिन्नाइ **मुत्तावली** पविट्ठा रायघरस्स उवरिम-भू[?मि]णो खुद्धाणं(?) सुरविमाण-परिमाण-परिछंद-भूतं चित्तभूमं(?मिं) । अचिरेण य मणहरं अहमवि य **सुमणराय**-भि(?दि)न्न-अ(?ह)त्थालंबो आरूढो एक्कक्कं वेदड्ढगिरि-सिहरं(?र)-सकामं(?संकासं) हंमिय(?यं), तत्थ य अहं **सुमणेण** तेहिं कुसलेहिं पुरिसेहिं वि विधिणा कल्लाणग-सुगंधिहिं अब्भंगेहिं अब्भंगिओ विधिणा य संवाहितो विगद-परीसम-खेदो णं आहय-गंधव्व-गीद-वाइद-रवेण तिविहेण सलिलेण मज्जाविओ पम्हल कसाइल्ल-[?लू]हिदंगो य अहत-पवर-वत्थ-परिग्गहिदो, सुरभि-गंध-मल्लालंकार-भूसिद-सरीरो । पदोस-काले ठिदो हं उ लद्धो(?ट्ठे) उवट्ठाणे, पेच्छामि य ममावासगिहस्स जालंतरेण अन्नम्मि उवंततरिते कोट्ठए दीवप्पभा-कदुज्जोदे **सुमणराय भद्दयस साणुमदी** च **मुत्तावलीय** पाणिग्गहण-कज्जे किंपि किंपि [४६८]मंतइंताइं । पुणो य **सुमणो** ममं आगंतूणं भणदि– देव ! सज्जो भे आहारो जोसेव(?जेमेध) त्ति ।

मया भणिओ– रायं ! न ताव **मुत्तावली**ए अजिमिताए जमेमि त्ति, तं गच्छह नियय देवीजणं **साणुमदिं** च संदिसध भुंजावीय(?ध) **मुत्तावलिं** ति ।

ताहे सो निग्गतो मम सगासातो नाइचिरेण य पुणो आगदो ममं भणदि– देव ! णेच्छइ रायसुता देविजण-वयणेण भोत्तुं जे, तं तुब्भे सयमेव अरुहध भुंजावित्त(?) तुम्मं(?) संतेदूण जेमावेध **मुत्तावलिं** ति ।

ततो हं उट्ठिओ संभत्तेण समारूढो हं चित्तभुम्मं, पेच्छामि य चित्तभुम्म-दुवारे सव्वोवकरण-कत-कज्ज-पज्जत्तं उवहित-पुन्न-कलस-णव-सुधोवहित-समुपयत्तो(?) च्छतसन्निहितलायं(?) वेदिं सुकयं पास-ट्ठिद णादि-परिणित-सव्वो राय-जणं ततो तत्थ-गतं ममं **सुमणो** कतप्पणामो विन्नवेइ– इच्छामो खलु तुब्भं **मुत्तावलीप**(?ए) मत्त(?सह) इहेव पाणिगहण-संबंध-कारणं दट्ठुमिति ।

मया 'तह त्ति' पडिवन्नं ।

कणगपीढ-निसन्नस्स य मे च तत्थ य अन्नमय(?यं) कतं मे वराणुरूवं पडिकम्मं । उच्चारिताणि य मे रायंतेउरेसु मंगलाइं । भणदि य मे **सुमणो**— देव ! एस **हरिसेणो गोयमस्स** गोत्तो अम्हं कुलायरिय माण हो तं एदस्स संदिवस्स व कतरेण(?) कुलायारेण [४६९]हु णिज्जो तुह [४७०]तवणाहो(?) ।

मया भणियं— **गोदमस्स** गोत्ता चेव वयं खत्तिया य, तओ खत्तियाणुरूवेणं धम्मेणं हुणेज्ज हुतवहो । अतो तेण हुणिऊण हुतवहं पक्खित्ताओ चउरो लायंजलीओ ।

अह य देवीजण व य परिकिन्ना कत-परिकम्मा सव्वादरेण राय-जणणीए उवणीता मम सगासं **मुत्तावली**, गायं(?हि)तो य मि महता गीत-वाइत-मंगल-रवेण तेण उवज्झाएण **मुत्तावलीए** पाणी, वत्ते य पाणिग्गहणे अहं **सुमण**-देसित-पहो पत्तो चित्तभुम्मं सुरविमाणातिरमणेज्जं । तत्थ य सव्वदोभद्द-कणग-पल्लंके पट्टकुलियाए [४७१]उभयोकसोवाहणे सज्जित-पवर-सोम्माण-परंपरा-सुहारोहो सुगंध-पुप्फ-गंधाधिवासे ते ठिदो हं । **सुमण**-देवीजणेण य **साणुमदि**-सहिएण उवणीदा **मुत्तावली** मम सगासं । पडिनियत्तो य देवी जणो। निवेसिता य मम अंके **साणुमदी**ए **मुत्तावली** । ततो उवगदो **भद्दयसो**, **सुमण**-वयणेणं ममं भणति— उवणीयतु हो(?भो)-यणं ति । मया 'तह त्ति' पडिवन्ने उवणीदं रवा(?राया)णुरूवाए विधीए रायाणुरूवं भोयणं, **कणगवइ**-दिन्नं च मधु-घत-खंडसक्करा-वेविगब्भं(?) परमन्नं । तं च से संतेऊण कुलघर-वियोग-दुक्खिता कहं हि किच्छाहि जेमाविता **मुत्तावली** मम हत्थ-पणामित-कवला । भुत्तं च मया वि सह तीए। भुत्त-भोयण-कामा णं गहित-कर-वयण-पक्खालणं सुगहित-मुहवासयाणंतरं अवकड्ढिऊणं निग्गता **साणुमदी** नवरं **मुत्तावली** किं [४७२]पिंडतयगदंविकं(?) उव्विह(?व्व)हंती छल परियत्ता मम पायदतेण सिरं काऊण सुत्तं उत्तरीएणं संवरेऊणं तुसिणीय अ सुत्ताविहाणं काऊणं ठियं। ततो हं तीए अणुयत्ति-पुव्वयं सयरं उट्ठेउं किं भणामि— देवि ! किमिदाणि मे कदं जं तुमं मे[४७३] रोसिता ? दे ताव सुयणु ! पडिवयणं, को [४७४]संएवगो(?) देवि ! भणह जइ तुह मम सगासे धिती णत्थि, ततो ते अहं [४७५]पिवरा पुणो वि **वच्छगुम्मं** णयामि। भणह जं हिदय-गदं ति । करेह मे पसादं । संभावितो हं तुमे । एवमादि बहुं भणंतस्स जाव ण किंचि पडिवयणं देति, ताहे से अहं पउम-

दल-कोमलेहिं हत्थेहिं रत्तासोग-किसलय-दल-कोमले पादे सणीयं ता सप्पयोग(?गं) व संबाधेउं पयत्तो । तहा वि न किंचि वाहरति, नवरं पुण पादे अवहरिदुमिच्छदि, न य संवायति । ततो से अहं पादे संवाधेंतो कमेण अंतो नियंसणस्स पयति-सुहुमाओ गोपुच्छियाओ जंघाओ संवाधेउ पयत्तो । ततो सा अवाहरंती पसारितेहिं निवारेइ । तओ अतिक्कमिऊण जाणु ते कणग-दल-थंभ-सरिसे ऊरुए संवाधेदु पयत्तो । ततो सा अवाहरंती अणंगभंगाहताइं अंगाइं अवकड्ढंती [४७६]य नियय-हत्थेहिं मम हत्थे भणिदुं पयत्ता—अव्वो ! किमेतं करेह ? भो भो एस एरिसो सभावो ।

मया भणिया— देवि ! तुमे चेव वण एस वारो दिन्नो त्ति । [४७७]सा य जत्थिप्पदी व [४७८]ब्भंभंथणस्सप्पभो(?) भासितं करेमाणी ईसि पहसित-वयणा सुणमाणी(?) मम हिदयं सणीयं भणति— मया तुह एस वारो दत्तो त्ति ।

मया भणिया— जेण सि मम उवरि कायं अवहरिऊणं पादे पणामेऊणं अन्नदो सिराणुवत्ता, ततो चिंतेसि नूणं मम [४७९]जीत-हिदयाण सामिणी परिस्संता पादे संवाधेदुमिच्छति ।

ततो तीए भणितं— जइ तुह पादा संवाहण-कज्जे पणामिता ततो कीस पुण सरमाणो(?) जंघा णारु(?) [४८०]मज्जतं अइक्कमसि ? एत्थ ते [४८१]दंडो अ भवति ।

मया भणिया— देवि ! जति एवं ततो मे करेध अणुरूवं दंडं प्पयाण-परिच्छेदं(?) । एस ठिदो हं ।

एव भणिदे उट्ठिदुं पहसमाणी णिसन्ना मे उच्छंगे ।

नागवधू-भोग-सरिसाहि य भूया-लताहिं धणिदं गले अवलंबिऊण सललिय-मधुरं वयणं भणइ— अज्जपुत्त ! तम्मि ते मज्जातातिक्कमे एस दंडो त्ति ।

मया चिंतितं सुंदरो हु एस दंडो त्ति । तओ मे पहसमाणेणं पियं च संलावंतेणं कता मे रति-रभस-सद्धालुई, कमेण य उप्पातिता मे भारिया। रतावसाणे य कत-सलिल-कज्जा उवगंतूणं पडिदा मे पादेसु भणदि य— अज्जपुत्त ! खमीयतु अवराहो जं मता गुरुजणस्स संभरंतीए बहुधा चिंताविता मे ।

मया भणिता[४८२]—पिए ! नत्थि ते कोई अवराहो, पियजणेण खलियं पि ललिदं चेव । अवि य,

सा तुमं चिय [४८३]जा मम कज्जे अधितं(?तिं) करेह । अहं ते ऽचिरेण तहा काहामि जहा तुमं बंधुजणस्स तुह दंसण-कज्जियस्स मिलाहिसि। एवं तीए पवीसंभेदु(?संतेदुं) अभिरमंतो गतिं(?तं) वि रतिं(?त्तिं) ण णाहित्थ।

पभाते य उवगदा **साणुमदी**, सा मे संदिट्ठा-सिग्घं [४८५]देसि(?विं)-सवत्थ ससीसपादो च करिकायंजले(?) द्रोणीए [४८५]वोलेदुं पयत्था(?पच्छा) पुणो वि [४८६]कल्लाणगेसु सुरभीसु अब्भंगेदुं विधिणा उव्वलित-ण्हावित-सुअलंकित-विभूसितं कल्लाणग-भुत्त-भोयणं मम समीवं उवणेज्जासि ।

सा य 'जहाणवेह' त्ति जंपंती देवीं हत्थे घेत्तूणं **सुमण**-संतिया चेडीजण-परिवुडा पविट्ठा पमदवणं ।

ततो अहमवि गहित-मुहधोवणो [४८७]**सुमण-भद्दयसे**सु कत-पडिकम्मो पूएऊण कुलदेवते अरहंते वि(?ठि)दो चित्तभुम्मे णंदणवणुज्जाण-सरिस-रूवे, ण्हात-जिमितालंकारिता य उवगता मम सगासं **मुत्तावली**, निसन्ना मयाण्णुनादा कणग-भद्दासण-सावस्सए समासणे(?ममासण्णे) । उवणीदं **सुमणेण** [४८८]मधु। ततो सज्जिताए पाणभूमीए णट्ट-गीत-वाइत-रवेण परिविबोधिज्जमाणो सह **सुमण-भद्दयसे**सु **सुमणंते**पुरेण य सेविज्जमाणो पाणं उवजीवामि, पज्जोसिय-चदुकम्मं पियं व भणंतो पियं **मुत्तावलिं**, देति य पिया मए सह पीतद्धपीतं मधु **साणुमदीए**, देमि य सयमेव सबहुमाणं छक्कं(?) कंचण-चसएण **साणुमदीए** । एवं सुह-अभिरमंतस्स गताणि मे दस दियसाणि । एक्कारसमे दियसे ममं सुहासण-वर-गतं **भद्दयसो** विन्नवेइ—देव ! ईसाण देवराय-भत्तो, वसभवाहण-कतरवो[४८९], ससि-किरण-गति-सभूति(?) गहिद[४९०]-रागो भगवदो दुवारे चिट्ठति । सो तुमं दट्ठुमिच्छति ।

मया भणियं— पविससु(?तु) ति ।

ततो पविट्ठो पडिदो मम पादेसु संजाणितो य **सुसेणो** त्ति, पणमंतो य मया आलिंगिते(?तो) भुयासु, पुच्छिदो य मे कुसलं । तेण य भणियं—सव्वसो कुसलं तुह पसादेणं ति । तुब्भे पुण कुसलं पुच्छिदव्वा । मया त तस्स अणुरूवासण-णिसण्णस्स सव्वं पहगदं सुह-दुक्खं परिकधिदं, कहेऊण

य मे पुच्छितो- सोम्म ! अत्थि कोइ अम्ह मग्गेण **अचलराय**-संतिओ विणिग्गदो आसि ? । तेहिं भणियं—अम्हेहिं [४९१]अव्वव(?) वितिय दिवसे वि रक्खितं, न य किंचि [४९२]कू(?) अ विणिग्गदं से समागच्छंताणं चेव एत्तिओ कालो गहितो।

मया भणियं—किं एत्तियं कालं भगव(?) रूवेणं चेव आगदो सि?

तेण भणितं—[?.....] ण व त्ति । अज्ज मे एदं रूवं कतं, किं-कारणं तुह अत्ताणं दंसेतुकामेण तुब्भे इह गते उलभिदुं एत्थ णगर-प्पवेसे एरिसं रूवं कतं मे जहा तेरिसेण रूवेण सह रट्ठ(?) णगरे अच्छिदं ति ।

ततो मया हसिऊण भणितो—सुयं दिट्ठं तुह रूवं, सया सफलो य ते ववसाओ कओ त्ति ।

ततो परिव्वायग-रूवधारी इह उवागदो मम सगासं **सागरसेण**-मंती, सो वि [४९३]सेणासंसावेऊण(?) पडिदो पादेसु, मया अवतासित-विमुक्को निसन्नो दत्ताणुत्तासन्ने जोग्गे । ततो **भद्दयसेण** भणितं सपरिहासं— किं भो ! एगवासीणं चत्त-मित्त-कलत्ताणं पासंडियाणं [४९४]एत्थ रायकुले पविसितव्वं ति।

ततो तत्थ अदूर-ट्ठियाए **साणुमदीए** भणियं—नूणं सव्व-देवयाणं पासंडाणं य अत्तिए [४९५]भणिओ अज्जपुत्तो जहा एदे इह पविट्ठा ।

सुमणेण भणियं—अहमेणं जाणामि, [४९६]अत्थत्थं पविट्ठा दूर विरुद्धं एदं जं एगंतिया रायकुलं [४९७]पविसंति सेवंती य नूणं खु एदे पासंडचरिदा परितंता अकारवासं तितिछंति(?), ततो सामिं सेविदुं आगदा ।

मया हसिऊण भणितं— जइ एवं ततो कीरदु एदेणं आगारवासाणुरूवो एसो ।

मया भणिते **सुमण** वयणाण [४९८]चत्तभा(?) कासवय-परिकम्माणि य पुरिसेसु अब्भंगिदुव्वलित-मज्जित-पसाधित-गहिद-वत्थालंकारा उवगता मम सगासं पूयिदा य स(?म)या वि भावेणं, तद्दिवसं चेव भुत्त-भोयणा ममं भणंति— सामि ! उट्ठेध, वच्चामो **कागंदिणगरिं**, दुक्खं खु तुह विरहुक्कंठिओ राया **रयणपदी** य [४९९]कालद्धमे(?) त्ति ।

मया 'बाढमिति' भणितं । आपुच्छिओ राया **सुमणो** ततो तेण उवट्ठावितार्हि(?इं) वाहणाइं । ततो हं सह पियाए **साणुमदीए** य रहवरं पवर-

तुरंग-सुजुत्तं समारूढो हं । संगहिदा य **सुसेणेण** सयमेव तुरंगा । तव्व-(?ओ) य पवर-करि-तुरंग-रहवरारूढा **सुमण-सागरसेण-भद्दयसा** [५००]सपरिवारा सपरिवारेऊण ममं पयदा सुह वसदि पादरासेसु य वसंता भारे **सुचंद** रन्नो विसयपालेसुयिज्जमणा कमेण पत्ता, सा पुत्ता सो(?) पुव्व-निवेदिता **कागंदी** अकाला कोमुदिं परिसेडिदं च पुरिं पेच्छमाणो रन्ना सह परिजणेण कदग्घभूया(?पूओ) महता विभूतीए पविट्ठो य भवणं । देविजण-परिकिन्नाओ **मुत्तावलि-साणुमदी**ओ य गदाओ **रयणवदि**-सगासं । तीए सबहुमाणेण पुव्वविणयि(?) पूइदा **मुत्तावली,** महता वत्थालंकार-परियारिया-जाणा(?णो)वकरण-गामदाणेसु पतिप्पदेएसु । अहमवि गुरुजण-सगासे मधुर-वयणासिव्वाद-परियंदिदो मुहुत्तमेत्तं कदासण-परिग्गहो गुरुजणाणुन्नातो पविट्ठो **रयणवदि**-सगासं, तीए [५०१]य परमाणंद-निब्भर-बाहु-लोयणाए अग्घेण पडिच्छिदो हं । पणमंती य मया आलिहि(?लिंगि)ऊण परिसंतिता, परिचुंबिता य मे, भणदि य—पियदम ! साहासो(?) अतीव जं से अणह-सरीरो [५०२]कुसली य रयणभंडाण(?) हितो अडवीओ य विणिग्गतो त्ति ।

मया भणिदा—साधुजणप्पसादेण सव्वं मे कुसलं । कधिदं च मम पणदाए **कणगलता**ए जं मम हरणे **रयणवदी**ए विओगमविदं दुक्खमणुभूतं ति। ततो मया सद्दावेऊण **मुत्तावली रयणवदीय** हत्थे समप्पिया, **साणुमदीए कणगलता** य ।

तार्हि भणियं—अज्जपुत्त ! किमेतं ति ।

मया भणियं—जह एतार्सि बंधुजण-वियोगे सोगो न बाधति, तहा णं करेज्जाह ।

तार्हि पणतार्हि 'तह त्ति' पडिवन्नं । भणियं च **रयणवदीए**— अहं **मुत्तावलीए** जेट्ठ-भगिणी [५०३]पदे सुस्सूसिया य, जं एसा मम आणत्तिं दाहिति सा मे सिरेण पडिच्छिदव्वा, एदीए दत्तं मया भोत्तव्वं ।

एवं तीए भणिए य तुट्ठेणं भणिया— साधु पिए ! अहो मे(?से) उत्तमं णाइअत्तणं दाइदं ति । एवं भणंतेण पूयिता मे **रयणवदी** । जातो य तार्सि पि सिणेहो, उप्पातिता कुलघर णिमिति(?) रमणिज्जं [५०४]त(?ता)रावती-मुत्तावलि-साणुमदीणं, ततो हं तत्थ तार्हि दोहिं वि सहितो परम-पीति-संपउत्ताउहिं जणिताणुराग-धितिमंतार्हि पउर-परिभोगेण नरवदि-भवणे तार्सि चेव णच्च(?ट्ट)-गीद-वाइद-हसित-द्दवकरणं(?) हद-

हिदयो अभिरमंतो गदं पि कालं न याणामि ।

अन्नदा य ममं अंतेउर-वर-गतं गुरुजण-चोदितो जाणपदितुट्ठिदो(?) **मुत्तावलि-साणुमदीएसु** सक्खं **सुसेणो** विन्नवेदि— देव ! ससुरस्स ते **अचलराइ**णा संतिओ दूदो महदा भड-चडगरेणं सयमेव **वग्घसेण** मंती तुह **भाणुचंद**स्स य रन्नो विविध-गहिद-पछन्न-पाहुडो इहागतो, रन्ना **भाणुचंदेण** उवणीत-पाहुडो पूइतो संपदं तुब्भे **मुत्तावलिं** च दट्ठुमिच्छदीति ।

मया परम-तुट्ठेण आणत्तो—सिग्घं पविसतु त्ति । **वग्घसेण**-णामग्गहणेणं **मुत्तावली** समयं दुवे भावं [?दं]सेदुं पयत्ता, तं जहा— लज्जं हरिसं च ।

ताव य पडिहार-देसिय-पहो अइगदो मम सगासं जक्ख-पडिभास-रूवधारी **वग्घसेणो** । सो य दूरतो चेव पुणो पुणो पणमंतो उवगदो मम सगासं। असन्नपाणतो य सबहुमाणं मया अवतासितो, कुसलं च पुच्छिओ सरीरस्स । ततो सो पणदोन्नदो **मुत्तावलीए** आणंद-बाहु(?ह)-भरित-लोयणो समल्लीणो, सा वि य तं पिउणा(?णो) सव्व-रज्जं-पुरंतेउर-कोस-बल-वाहण-वित्तयं सव्व-कज्जेसु वीसास-सहागयं(?यगं) सम-सुह-दुक्ख-सहायगं च अद्धसरीरं पिव णरपदिणा(?णो) पच्चक्खं पिदरं पिव दट्ठूणं **वग्घसेणं** लज्जितोणत-वदणा पुत्ता **मुत्तावली** । तेण पिदुणा व जहा [५०५]उवसप्पिऊणं सयं पि पगलित-णयणेणं हत्थे घेत्तूणं संस(?त)यंतेणं भणिदा—होदु देवि ! अलं दुक्खेण लज्जितेण य । ण तुमे किंचि लज्जणयं कदं, नणु अणुग्गहीतो राया सह पदीसु तुमे महागंगाए विव पुव्व-महोदधि इमं पुरिस-महोदधिं उवेंतीए। तं अलं विसादेणं, धिर्दि लभह । आणह य मह भत्तुणा पिउणो हिदय-मणोहरं पुत्त-वयण-सदेसं ।

ततो अंसुआइं [५०६]लूहेऊणं भणइ— **वग्घसेण** ! कथ(?ह)य कहय किं पि कुसली राया मम विरह-कारण-जणिद-दुक्खा देवी च त्ति ।

तेण भणियं— देवि ! सव्वं सुकुसलं । गेण्हह मुह-धोवणं जाधो(?) सव्वं कज्जं जहट्ठियं पडिकहेमि ।

ततो तीए गहित-मुहधोवणाए भणिओ **वग्घसेणो**—कहय कहय गुरुजण-संदेसं अज्जपुत्तस्स ममं चेति ।

ततो ऊसारित-परियणो मम पिया-जवल-**साणुमदि-कणगलता**सु य

सहिदस्स कधिदुं पयत्तो, भणइ— सुणह सामि ! गुरुजण-संदेसं, एसा हु **मुत्तावली** कन्नाभावे **समुद्दसेण**-णेमित्तिणा अद्धभरहाहिव-पिउ-भारिया निद्दिट्ठा। तं च रन्ना परिग्गहितं । वच्चते य काले समवधारिएण सव्व-नरपति-पयत-पणत-कमल-जवलेण **जरासंधे**णं रन्ना दूतजण-सगासाओ सुत-परमत्थेण **मुत्तावलि**-रूव-गुण-वन्ननाहत-हिदएण अम्ह राइणो दूता विसज्जिता जहा 'दिज्जतु मम **मुत्तावलिं**' त्ति । [५०७]ततो दूत-हत्थ-पडिसंदिट्ठं 'को व अन्नो कन्नाए पइ भवइ मोत्तूण अधिराय ?' त्ति । हिदएण य अद्धभरहाहिव-पियरं अधिरायं परिग्गहेदुं [५०८]अणलिय(?यं) ति दिणा(?ण्णा) रन्ना, ततो एव भणितो(?ते) दूता जहा अधिराइणो कन्ना-रयणं न अन्नस्स । तं वच्चध संदर्किंचितेमि(?) ताव पुणो एज्जाह । एव भणिता गदा दूता । तेण य पुणो पुच्छिओ णेमित्ती—सोम्म ! मम कन्ना तुमे जगप्पहाण-पुरिस-जवल-पिदु-भारियाऽदिट्ठा, तं च संपदं **जरासंधो** चेव होज्ज उदाहु अन्नो कोई ?

तेण नाण-चक्खुणा अवलोएऊण भणियं— देव ! ण होति तव कन्नाए भत्ता **जरासंधो** । तुह जामाता संपदं **कागंदीए भाणुचंद**-घरे जामादुगत्तणेण चेव अच्छदि ।

एवं सोऊण रन्ना पूइतो नेमित्ती विसज्जितो य इहं तु[?ह] दंसणत्थे राइणा सप्पयोगं दूतो **सुमुहो**, तेण य तुब्भे दिट्ठा णियय-णाडयाइं सिक्खावयंता। तेण य तत्थ गंतूण जहट्ठिया तुब्भे गुणा य वागरिता नियय-रन्ना णिवेदिताइं । तं च सोऊण तेण इमस्स रन्नो पुणो वि पेसितो दूतो । तेण य निगूढभावेण भणिओ इमो राया जहा, किर पेसेध जामादुगं ममं पि कन्नगं सिक्खावेदुं । अचिरेण पुणो एहिति । एदेण य अण्णाद-परमत्थेण सो खलीकरेउं विसज्जितो । ततो अम्ह राइणा कुविएण सप्पयोगं तुब्भे हराविता, मया चेव नीदो सि **महद्दुरं** । मया स वणेट्ठपउ(?) णिवेदितो सि **अचल**-रन्नो । तम्मि य समए पुणो वि आगदा **जरासंध**-दूता । तेहिं भणियं— ठवेज्जदु हंणाय(?) दियसं, अहवा विसज्जीयतु कन्न त्ति । ततो राइणा दूताणं भणियं— जं मम धूता पहाणकुल-रायगामिणी सा मे णट्ठे गंधव्वे य [५०९]विसेसं कारवेदव्वा(?), तं वच्चह ताव जाव सिक्खाविदा [५१०]पुणो छम्मास [?आय]रियाण पासे सिक्खावेज्ज ति ।

एदम्मि देसकाले तुब्भे तस्स नगरपट्ठ(?) निवेदिता । ततो रन्ना किंपि हिदएण चिंतिऊण तुमं बंधणबद्धो अत्तणो पासं **जरासंध**-दूत-समक्खं

पवेसाविंतो । तेसिं च दूताण परिकहितं 'एस णडो उवज्झाओ त्ति मया बला बंधावेऊण अणिच्छमाणो इहाणाविंतो ।' किं-पुण, राया एवं भणइ बंधं च ते आणावेइ, जाणइ **जरासंधो** संपदं च बलवओ ण तस्स विउब्भिदुं तीरइ । तं जइ इहेव **मुत्तावली** एदस्स देमि ततो सोऊण **जरासंधो** अवस्स कुप्पदि। तं मया क[?त]हा करणेज्जं जहा एसो सयमेव कण्णं [५११]हरिऊणं गच्छदि, न य **जरासंधो**-से(?स)यं पयादाए [५१२]हिदाए वा एकत्ताए मम [५१३]रूसीहिति। तं एसो कन्नं जहा तहा वा हरावेदव्वो । तं पुण तहा करेमि जह **जरासंधो**(?ध)-जणो य [५१४]छिद्दं ण लभइ । तेण कारणेणं दूताण पयतीण य रंजणाहेदु तुब्भं बद्धा सकलीकारं(?) पवेसिता **जरासंध**-दूताण पुरतो, बाहिकरणीए य णिंदंते णडो उवज्झाओ त्ति निद्दिट्ठो सि । पडिगदा य दूता। तुब्भे य निउत्ता सिक्खावणा-कज्जे अणिवारित-प्पवेसो य कदो सि, किं-कारणं, वरं एदेसिं सिणेहो उप्पज्जतु त्ति । सयंवसाण य वीसत्थ-जणिताणुरागाणं एक्कहिं वासो वारसिहितिं(?) चिंतति निच्चकालं **जरासंधो** णतीयं(?) भीतो राया जइ एताइं इओ पलाइउं वच्चेज्ज समयं रिट्ठणच्छेयं(?) ण संचाएइ वोत्तुं जाणइ पुण तुब्भं सिणेहाणुरागं, ताव य पुणो आगया सुणिच्छिता जाता भणदि– देव ! कन्नं णिज्जतु **कुसग्गपुरं** अहवा ठविज्जदु दिवसं जं इहं अधिराया [५१५]आगच्छदि । तेसिं च रन्ना भणियं— अच्छह ताव जाव अहं संवच्छरे पुच्छामि, ततो ठविद-दियसे इहेव णं आगच्छहिति अधिराया कन्ना वा तत्थ णेज्जिहिति ।

एव वक्खेवेसु तत्थेव वरे(?धरि)ज्जइ दूदा ताव य वसंतजत्ता गदा य तत्थ तुब्भे वि नरपति-संदेसेण य कन्ना तुह चेव सगासे तुज्झणं(?उज्झाण)-गदा विपरिसंठिया । तत्थ य देवीजणेण पयदीसु य राया भणिदो—'कीस कन्ना अंतपुराणं दूरतो निवेसिता ?' राइणा भणियं—एवं से णिज्जंताणां(?) को देव उवज्झाओ सेवा-परितुट्ठो लहु गाहेहिति । एदं पडिवयणं देदि, नवरं च पुव्वावरण्ह-काले **मुत्तावलि** जणिण(?णणी) देवी ममं च सद्दाविवि(?विऊण) राह(?या) भणइ— जाणह किमेस **मुत्तावली** मया एगंते निवेसिता ? अम्हेहिं भणिदं— देव ! ण याणामो । सो भणइ— एस कन्ना एयस्स देव-उवज्झायस्स णेमित्तीसु आइट्ठा । **जरासंधो** य बलवओ बला हरति कन्नं । तं अहमेताइं अज्ज रयणीए पच्चक्ख इवयं(?) पुरिस परिवासइ[५१७] चोरियाए जणपदस्स एवंतातो चेव विसज्जाहामि काले पुणो

मिलीहिंति । एवं वो [५१५]विदितं होदु । ततो देवीए भणिदो राया— देव ! अइ-दुल्लभ-दंसणा मे **मुत्तावली** भवीहिति । ण य जाणीहामो एसो कन्नं घेत्तूण कंपि दिसं गमिहिति, तत्थ(?कत्थ) वा एसो त्ति किह मे वं(?सं)ति ? ।

राइणा भणियं— देवि ! [५१९]एसो णु णायामि, [५२०]अचिरा सुत-सहितो हंतूण रणे सपुत्तबंधवं **जरासंधं** सविज्जाहरं **दाहिणड्ढ-भरहं** भोच्छिदि सोलस राई-सहस्स-पणिवडिदो । वदेंति य सिद्धा जहा एदस्स जेट्ठ-भाउग-सुतो सयल-तेलोक्क-बंधू अट्ठ-सहस्स-लक्खणंकित-सरीरो सिरिवच्छय-वच्छि(?त्थिय)उरत्थलो बावीसइमो धम्मवर-चक्कवट्टी अरहा **अरिट्ठणेमी** णामा होहिति । एदस्स पुण सुता हल-मुसल-चक्क-गय-धारिणो **जरासंध-कंस-केसि-चाणूर-णमुइ**-मुट्ठिय(?) रयरजीत(?) [५२१]विद्दवया सितजल(?)-सरिस-रूवा **बलदेव-वासुदेवा** भविस्संति । तं जो एरिसो सो कहं ण [५२२]सुणीज्जहिति ण णिच्चेहि(?) वा । तं एस परमत्थो **अज्ज.** पदोसे [५२३]वुत्तगं पेच्छिज्जामि सणियं च एतं किमज्ज(?) पयट्टेज्जामि अड्ढरत्ते **अवस्स** एदाइं रहस्सं च्छिदिऊण विसज्जेमि ।

ततो सुत-परमत्थाए देवीए तह त्ति पडिवन्नं । ताव य [५२४]वाद वरिसेसु [५२५]निरुसतासंपिक्कदं(?) जीवलोगं पडिदा य पच्चंतिय-चोरा । ततो पमत्त-मत्त-निच्चेदण [५२६]जोधवग्गे उरसंधि(?) वट्टंते राया कन्न-रक्खण-निमित्तं चेव संणहिदुं तं पदेसमुवगदो, जत्थ तुब्भं आवासो, णवरं व **मुत्तावलि**-सहीजण(?जणाण) कहिदं जहा **मुत्तावली** उवज्झाएण हिद त्ति । तं च सोऊण राया अंतो परम तुट्ठो बाहिं अलियसावेगो भणइ— कयरं पुण दिसं दी(?ग)दा जाणध त्ति । कन्नारक्खेण य **हरिवंसेण** भणइ(?णियं)— देव ! वो भएण से करिणि-समारूढस्स य तस्स समप्पिया ततो सा कन्ना **साणुमदि**-सहिदं मम य आयुधाइं हरिऊण अंधगारेण ण णज्जति कदो वि विनिग्गओ । तेण य गच्छंतेण चोराणीओ पि [५२७]उवसंतीतं(?) । तं च सोऊण अंतो अदीव हरिसितो राया सणीयं च ममं भणइ— **वग्घसेण** ! जाद च्चिय मे कज्ज-सिद्धी । **सक्केण** य [५२८]**पोलोमी** इव हिता तेण य [५२९]निय भारिया णदि य जहा तस्स निग्गमे चोरा उवसंता तहा जाणामि एदं **भाणुचंद**-संतियं बलं आगदं आसि । तन्निमित्तेण चेव एकं(?वं) चिंतेदुं ततो अन्नतो अलिय [५३०]वाविकं(?) काऊण चिरस्स नियत्तो राया जादो य अलिय-चिंतापरो । [५३१]ताहे पदाणिदं च लोगे दूताण य जहा उवज्झाएण सह पलाता **मुत्तावली**

चोरित्ताए त्ति । ततो पुणरवि रन्ना [५३३]जण-पुरत्थे पविति(?) य वोरेणयंगा(?) दिसासु बहवे धाडिता पुरिसा, कतं च अंतेपुरेसु [५३४]आरोवणं य ।

सुत-परमत्था **जरासंध**-दूता गता **कुसुमपुरं** । तुब्भं च उदंतं पंथ-जोगखेमं च णाउकामेण रन्ना विसज्जिता पच्छन्नं चेव चारपुरिसा । ते य तुमं सपत्तीयं इह **कागंदी**ए परि(?वि)संतं दट्ठूण य पडिगदा **वच्छगुम्मं** । ततो तेण सगासे राया तुज्झ कुसल-वट्टमाणी नाऊणं निव्वुदो जाओ । पूइदा य पियक्खाण-निमित्ते चार-पुरिसे(?सा) । ततो राइणा देवि-सहिएण अंतो अंतेउरे मम समक्खं दोण्ह वि तुब्भं चेव चित्त-करणेण य पड-लिहिदाणं महदा विभूदीए कदं विवाह-कज्जं । ततो रन्ना तुब्भ वीसासणा-हेउं तायं(?इं) पडय-लिहिदाइं दोण्ह वि तुब्भं रूवाइं विउला य वत्थालंकाराणि जोग्गा तुब्भं उग्गाहिउ अहं रन्ना अद्धसरीर-सामिणो(?समाणो) विविध-गहिद-पाहुडो साभिन्नाणेसु लेहेसु तुब्भं सगासं विसज्जितो हं, **भाणुचंद**-दूत-ववदेसेणं कमेण य इहागदो, **भाणुचंद**स्स रन्नो सपाहुडो समल्लीणो । ततो तस्स विदितेण इहं तुब्भ सगासं समल्लीणो अवि य भणिदो च्चिय तुमं पुव्वं पि राइणा **अचलेण** जं कारणं बद्धो सि णडोवज्झाओ य भणिदो सि तं कारणं पुणो पुणो कहेहामि एदं तं कारणं ति।

एवं भणंतेण तेण पणामिता मे सदारस्स विउला वत्थालंकार-पाहुड-विधी साभिन्नाणा य लेहा रन्नो देवीए **मुत्तावलि**-जणणीए संतिया, तेसु वि माणध [५३६]अन्नो लिहिदो ततो उवणीतो तेण अम्हं पडय-लिहिताणं वियाहो । सो य मे उव्वेल्लिओ पडओ, तत्थ य दिट्ठं मया निय-रूवं **मुत्तावलि**-हत्थालग्गं तज्जातं लिहिदं तं च दंसियं **मुत्तावलि-साणुमदीणं** । ततो परितुट्ठाओ दो वि जणीओ । भणिता य **वग्घसेणेण साणुमदी—साणुमदि**! सुट्ठु ते राया देवी य तुट्ठाइं जं तुमे तारिसे वि समए **मुत्तावली** ण रेइता(?)। एवं [५३७]भणंतेण सा वि पणामिता णरवदि-विसज्जिता विउला वत्थाभरण-दाय-विही । भणिताओ य तेण दो वि **मुत्तावलि-साणुमदीओ य— राया भे देवी य आणवेंति ण किं ण(?) तुब्भाहिं उक्कंठा करणेज्जा अत्तणो सामिस्स सगासे णिरू सूई सुहं अत्थि(?च्छि)दव्वं अहं तु अचिरेण तहा काहामि जहा सुहं अम्हं मिलीहिह। समत्थिदो तुब्भं धिदिं उप्पादणाहेउं लेहेसु विउल-पाहुड-सहिएसु अम्ह सामिणो राया भाणुचंदो** त्ति ।

ततो **मुत्तावलीए** भणियं— **वग्घसेण** ! एरिसा मे भगिणीयाए

रयणवदीए धिदी उप्पाइदा जेण अहं कदाइ गुरुजणस्स सुमरामि ।

तं च सोऊण तुट्ठो **वग्घसेणो** । **वग्घसेण**-दूतागमणे य **मुत्तावलि-साणुमदीणं** जादो अणुत्तरो हिदय-परितोसो । ममं पि आणंदियं हिदयं । पूइदो य मया परम-तुट्ठेण **वग्घसेणो** विउलेण य महता पत्तागारेण **अयल** स्त्रो खमणाहिओ(?) **भाणुचंदेण** विउल-पडिपाहुड-पूइतो विसज्जितो पडिलेहेसु य **वग्घसेण** मंती गतो **अयलपुरं**, स्त्रा य **भाणुचंदे**ण नियय॑तेउराणं भिच्चाणं परियणस्स आणत्तं जो इह कोइ **मुत्तावलीए** ईसिं वि हाणंकोवेज्ज(?) सो मे वज्झो कदि(?दो) होति । जेट्ठ पुत्तो य वि दिन्ना **मुत्तावलीए** पीतिदायं पंचवीसं गामा ।

ततो अहमवि पिया-जवल-सहितो एगंत-रति-पसत्तो गयं पि कालं ण याणामि ।

***॥ इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए मुत्तावली-लंभो णाम तेत्तीसइमो परिच्छेओ समत्तो ॥**

पाठान्तर

१. तरुण पु. । २. तियरेण पु. । ३. विच्चेहि पा. । ४. विसतेरोहिय पा. । ५. जी णंदं ण पु., जा दं ण पु. । ६. पाणा इं अणा. पा. । ७. सुत्तं उमज्जि० पु. । ८. अघोसेण पु. । ९. वियोय पा. । १०. वीसंरससिऊणं पु. । ११. हिण पा. । १२. किह० पा. । १३. भिज्जो पा. । १४. तिमा पा. । १५. परिणामितो पु. । १६. किं दं पु. । १७.लच्छिलं पा. । १८. तिद्दयारं पा. । १९. हक्खितं पु. । २०. तज्जंतो पा. । २१. डक्को पु. । २२. दक्खो पा. । २३. पुव्वी वंदेवि पा. । २४. भारहगो ण पु. । २५. मन्नदा पा. । २६. हत्थि पु. । २७. णिकिच्चाए क्कोवि पु. । २८. छलि य हत्थीसु पा. । २९. खग्गवणं पा. । ३०. सही य ततो कीरइ दु पु. । ३१. वविवो पा. । ३२. गते सुंदाणिदा पु. । ३३. वाहिविट्ठो पा. । ३४. णिवूढो पु. । ३५. लद्धस्स पु. । ३६. स खग-विय० पा. । ३७. वेत्तगइंदं पु. । ३८. आहा से उसोभाउ माणं पु. । ३९. वविदं पु. । ४०. ०याणी तस्स पा. । ४१. यमतावातो पा. । ४२. आसणा खग्ग खेडयाइं पा. । ४३. पावाइंसो पु. । ४४. मुहु मुहु रच्छिदं पु. । ४५. समागणेंतो पु. । ४६. ०वण्णाणिकेस पा. । ४७. रुतु-भमर- पु. । ४८. परियासे पु. । ४९. कारणुट्ठिद पा. । ५०. जातकारेहिं पु. । ५१. ०णसेज्जावा पा. । ५२. जीवं पा. । ५३. अभिहं० पु. । ५४. सत्तेण पा. । ५५. चमुं पु. । ५६. पडिवूहिदं पा. । ५७. सांगहिंउं एहिं बंधे० पु. । ५८. छेत्तूण पा. । ५९. महरद्ध पु. । ६०. सुट्ठो पा. । ६१. मणुगा ता पा. । ६२. सोमतरा पु. । ६३. -भूसवण- पु. । ६४. लग्गितुत्तरोत्त व पु. । ६५. खंधधरा पु. । ६६. कुसुमाल पु. । ६७. पसत्तो पु. । ६८. जरासिंध पा. । ६९. असंकिउगो पा. । ७०. पावेसि० पु. । ७१. जरासंघ- पा. । ७२. उत्तरं पा. । ७३. मे पा. । ७४. पसाहेस्सं पा. । ७५. वित्तगा पा. । ७६. जहोवट्ठिदं पा. । ७७. समुदितं कमे पा. । ७८. योवासाभि० पु. । ७९. कीरदु पा. । ८०. समालंभो पु. । ८१. रसद्दी व पु. । ८२. असा० पु. । ८३. पार पु. । ८४. आवाबाधो तस्से व दक्खिणा- पु. । ८५. सस्सा पा. । ८६. वव्वाह पु. । ८७. परियत्ता पु. । ८८. ति पा. । ८९. तिण्णं पु. । ९०. परा पा. । ९१. जिणा पा. । ९२. सहराओ पा. । ९३. ०दव्वा इसरियं पा. । ९४. अच्छे पु. । ९५. ०वंते पु. । ९६. सरमासितो पु. । ९७. कुक्ती पु. । ९८. डिडगा पु. । ९९. ०उत्तरा पु. । १००. पुरिसा पु. । १०१. छादा पु. । १०२. दाणि पा. । १०३. एगेदेगा पु. । १०४. सिरि पु. । १०५. चहेदु जत्त पा. । १०६. मालंकियं पु. । १०७. काणा पा. । १०८. दुतं केसी पु. । १०९. वि स्सतं पु. । ११०. मंगला पु. । १११. रग्गा पा. । ११२. दु पु. । ११३. पुच्छणे पु. । ११४. सत्तन्न पु. । ११५. तं पु. । ११६. पिव वुच्छमुदु पु. । ११७. निदोसो पु. । ११८. निसेविज्ज पा. । ११९. सु पा. । १२०. मरणेण पु. । १२१. अइरुग्गपिं पा. । १२२. सव्वादं मुच्छा पुणोप्परं पु. । १२३. या छ गुला ए पा. । १२४. वारस यंमि सज्ज त्ति । पु. । १२५. णीयादुं पु. । १२६. ठिदी तं पि गुणि

वसंमि ऊण पु.। १२७. पुच्छेव्वा पु. पुच्छेज्ज वा पा.। १२८ साह पाऊ० पा.। १२९. वोदराउ पु.। १३०. कसियं पा.। १३१. भिन्नकज्जं गामो साडउ पु.। १३२. ताणे पु.। १३३. पोल्लग पु.। १३४. अणभिहरद गे गाढं पु.। १३५. कवो ताकक्कंडो पा.। १३६. आससी ताणा सज्जो त रिसभ पा.। १३७. च पा.। १३८. पुप्फुडो पा.। १३९. विहित्थो पु.। १४०. संजत्ता पु.। १४१. भत्थे पु.। १४२. कमावेड्ढिदो पा.। १४३. ०पउमसासगो पा.। १४४. अलं वल्लवो पा.। १४५. विदिलो पु.। १४६. सज्ज० पु.। १४७. पहागा पु.। १४८. पातो पा.। १४९. वणे भेदे० पु., वाण पहरिसे पा.। १५०.देसे भणिया रवंतिस पा.। १५१. सत्थीय पा.। १५२. पच्च व पु.। १५३. पुव्वी सत्थं ज पा.। १५४. सत्थिच्छिय पा.। १५५. विव्वकरणो पु.। १५६. वियं पु.। १५७. बलासु चनुमि विलवग पा.। १५८. हादी पा.। १५९. वच्छोहणं पा.। १६०. सिं तु पा.। १६१. पिक्खुक्खेठाभिणयं पु.। १६२. ०वा भणियं पा.। १६३. परिपट्ट तलपोत पु.। १६४. केइ अह० पा.। १६५. अविद्धो पा.। १६६. वेट्टितेसु पु.। १६७. णट्ठविसु पु.। १६८. सुल० पा.। १६९. अत्तणाणु० पा.। १७०. कं म विदि पा.। १७१. दोवस्स पा.। १७२. निक्कास-पवेसा पा.। १७३. धारितव्वो पु.। १७४. व वणिया पा.। १७५. सद्दं पु.। १७६. ०पूरित पा.। १७७. कन्नं पु.। १७८. का हो य पा.। १७९. सभंड० पा.। १८०. असुं पु.। १८१. वाव विणीदो छेव्व तद्दारो पा.। १८२. सरोवेगा पु.। १८३. यवयण नियत्तो पु.। १८४. वेसोज्जा पु.। १८५. आणगग्गं पु.। १८६. दिट्ठ पु.। १८७. सीण पु.। १८८. विणवोज्जणं पु.। १८९. ०गमणे पु.। १९०. लभणाद पु.। १९१. सीतील पा.। १९२. सुह पसुत्ता पु.। १९३. महुकारणं पु.। १९४. णोदिपेसूत० पु.। १९५. दिट्ठा पु.। १९६. अंवो पा.। १९७. भणिय पु.। १९८. इतो पु.। १९९. मूणायारे पा.। २००. काणमु पा.। २०१. अच्छिकाई पा.। २०२. दुहित तेइहं वेवणं वि णे देव पा.। २०३. वयवोदवीयितं पा.। २०४. केसरमद्धो पा.। २०५. गाढंकुरकिरण पु.। २०६. रूव गुणेसु पु.। २०७. दिच्छा तय० पु.। २०८. दोन्निरक्खो पा.। २०९. कद्दरं पु.। २१०. सणेज्जइ पु.। २११. या म तो पुत्त पु.। २१२. साकज्जामि पु.। २१३. पासगतकताए पु.। २१४. एवं तियं पु.। २१५. ण सुविण० पु.। २१६. इह दाणिं पु.। २१७. विदिमा मिय पा.। २१८. ०देवनं सव्वणे सरेका। पु.। २१९. एतह पा.। २२०. भावायुधे पु.। २२१. ग्गकाल पु.। २२२. गलियं पा.। २२३. महामालिया पा.। २२४. परियारियाण अत्थे पा.। २२५. सव्वंतरोवट्ठाण पा.। २२६. हत-हिदयं पा.। २२७. ठवेमि पु.। २२८. एवं पु.। २२९. संगासं पा.। २३०. भागस० पु.। २३१. सन्नां पा.। २३२. आधोरण त्तं तावयाणं सुट्ठु पा.। २३३. सतुवेगाए पु.। २३४. विब्भ० पा.। २३५. से पु.। २३६. णिव्व पा.। २३७. सो पु.। २३८. पुंडरंग- पु.। २३९. ०त्था रग्गहण पा.। २४०. ते स- पा.। २४१. -कुदेंत पु.। २४२. परिलित पा.। २४३. -बह- पु.। २४४. वणंतो पा.। २४५. संमि पसरिद पा.।

२४६. दिह प सो पा., दिह य सो साधीण- पु. । २४७. वादिणो पु. । २४८. कारणाणु ग्गमे पु. । २४९. सहतो पा., हसितो पु. । २५०. दिव्वा पु. । २५१. चिंतो पु. । २५२. काम तीय पा. । २५३. मणादि० पा. । २५४. विसएसु अणियलित- पा. । २५५. वो पा. । २५६. ववन्नं व ऊध्वेऊणं पा. । २५७. कुच्छंवि पा. । २५८. अत्थयण पु. । २५९. पादंका ससहस्साइं पु. । २६०. पडिवन्नाण पा. । २६१. ०कहेज्जह पु. । २६२. निबाहुआ य पु. । २६३. परिकधेति पु. । २६४. कामयम संपत्ता पु. । २६५. ०मास गोलेणिज्जा पा. । २६६. सिगिणीए पा. । २६७. सा से गम्ममालग पा. । २६८. अणुभवदि पु. । २६९. ०वदिट्ठो पु. । २७०. वेदि पु. । २७१. मे गलच्छा पा. । २७२. आरुढो य पा.। २७३. मदरकुंविचुगिजाणुजाता पु. । २७४. बालव्वयणा पु. । २७५. रूढासेण पु. । २७६. सूरथंढ० पु. । २७७. संकुल पा. । २७८. वंव विराईया पु. । २७९. से पु. । २८०. गणुक्खीणी पु. । २८१. वड्ढविदा पु. । २८२. चेवलवरित्ता पु. । २८३. संपडिदो पा.। २८४. महा मरण० पु. । २८५. पग्गदेण पु. । २८६. रभाताइं पु. । २८७. पहकरेण पा. । २८८. यरणा वि कमं सो पा. । २८९. लहुत्थाण पा. । २९०. गरूएण पा. । २९१. वि संहिणो पा. । २९२. सिरदामं डिक्कणिया पु. । २९३. गविताइं पु. । २९४. अंबरे पा. । २९५. भिंगीसिदुं पा. । २९६. -जोगो पु. । २९७. संतिओ पु. । २९८. कालं पु.। २९९. करो दि गिदो यं मि पु. । ३००. उय तंतीउ पु. । ३०१. अहं तिय पु. । ३०२. संतिणिऊण पु. । ३०३. बंधाहुए पा. । ३०४. कहिइ पा. । ३०५. गिण्हाहि पु. । ३०६. वितंतीओ पु. । ३०७. ०फसट्टुर- पु. । ३०८. -पादवुथि पु. । ३०९. सलकेलित पु. । ३१०. वित्तत्थउ पु. । ३११. माण पु. । ३१२. णिव्वेण खदि जो पु. । ३१३. व्रवजोवक पु. । ३१४. वगणा पु. । ३१५. घंटमालदा माला पा. । ३१६. नच्चाण करण० पा., नच्चण घण करणवेगा पु. । ३१७. सुथण पु. । ३१८. तीसरण पु. । ३१९. मय विसन्नाहे असंलद्धो पा. । ३२०. दुक्खे वि पु., दुकेव पा. । ३२१. रयणि पु. ३२२. ०मारुवह पु. । ३२३. ते या पु. । ३२४. मे च्चया पु. । ३२५. माह सु सुधो रहिओ पा.। ३२६. णसय पा. । ३२७. वद्धाणि पा. । ३२८. पडिविन्नो पा. । ३२९. करकेल्ल पु. । ३३०. सिद्धिकारणा पा. । ३३१. भा अं वाता पा. । ३३२. दोद्ध ण० पा. । ३३३. दाइहं देव समी य तुमा पा. । ३३४. तएणं पा. । ३३५. पेढेल हु गत्ता विणंतीवि गदि० पु.। ३३६. आसमुविच्छद्दे पु. । ३३७. एगहो पा. । ३३८. विज्जधरो पु. । ३३९. एगहो पा.। ३३८. विज्जधरो पु. । ३३९. कतं पु. । ३४०. इत्थियं पा. । ३४१. जलथ इंद० पा. । ३४२. सरिहिं पु. । ३४३. विधितुं पु. । ३४४. जिण भत्तं पा. । ३४५. तेमिति पु. । ३४६. तक्खो पा. । ३४७. नागापरिसागया पु. । ३४८. धणुज्झंति पु. । ३४९. मयण-गणं पा. । ३५०. थार मइंदो रुंजित पु. । ३५१. -खुख-उगर पु. । ३५२. सदूली- पु. । ३५३. -णिणिदंत- पु. । ३५४. सुवेगावेगाए पा. । ३५५. -णेण- पु. । ३५६. लेदुगं पु. । ३५७. सियं ससमा कन्नेंतीउं पु. । ३५८. कालंत विअयं पा. । ३५९. नामाव- पु. ।

३६०. भिंगारी पु. । ३६१. सरिदं पा. । ३६२. कुंवारित पु. । ३६३. दिणदिसागं पु.। ३६४. णवाए पु. । ३६५. णवहाणि पा. । ३६६. सक्केमि पा. । ३६७. जीविदणा पा.। ३६८. वीसम तु पा. । ३६९. ०णुवन्नाओ पु. । ३७०. गतिउ पा. । ३७१. संहीयति पु.। ३७२. जणवेले पु. । ३७३. संघातण पा. । ३७४. दिकराभिमुहो पु. । ३७५. संनिदा पा. । ३७६. सरिदत्तं पा. । ३७७. अगागोया पु. । ३७८. दिसंसितं पा. । ३७९. दट्ठ पु.। ३८०. सुदरे एदं पा. । ३८१. ता वा सि वा पा. । ३८२. दिसं संसिदा पा. । ३८३. निव्वन्नियं च तारा० पु. । ३८४. सव्वित्ता व समु० पा. ।। ३८५. वायाली पु. । ३८६. अट्ठरसं पा. । ३८७. वाणीराए पा. । ३८८. छवंधुवधविढ- पा. । ३८९. पुप्फंब्रारवीसरेणोह सरेण पु. । ३९०. गिण्हितं पु. । ३९१. सब्भाद पु. । ३९२. भयुप्पिच्छ पु. । ३९३. मुक्खवलु पा. । ३९४. वेल्ल पु. । ३९५. मे य वीभेह पा. । ३९६. हुन्द्धारिया पु. । ३९७. अहं मुज्झे पु. । ३९८. ओलंबिहि पु. । ३९९. देसिओ पु. । ४००. निरुक्खमाणो पसाणो पसर- पु. । ४०१. निद्दहाभवदिच्छए पु. । ४०२. दडंदारं पु.। ४०३. कवेलसिन्नारुक्ख पुट्ठेसु पु. । ४०४. रालंतिया लभति घावति पु. । ४०५. अतिझसिक्खय० पा. । ४०६. आच्छक्ले० पा. । ४०७. व य सण साउ निरक्ख० पा.। ४०८. हंकार सेहिय- पु. । ४०९.सरीरं पु. । ४१०. अब्भया कुब्भति पु. । ४११. संतान्न पु., यंताव पा. । ४१२. कुंलु पु., कव पा. । ४१३. आणोरतोरसितक्खलु सद्दाला पु.। ४१४. सद्दालो पा. । ४१५. चेय पु. । ४१६. असि पा. । ४१७. महणो ण वाण जादं पा. । ४१८. पिप सभरतं त्ति मन्ने पु. । ४१९. म पा. । ४२०. यादि दससिक्करजते पु.। ४२१. जवली पु. । ४२२. जं तु । ४२३. वेदुं पु. । ४२४. विंभया सोक० पु. । ४२५. सेविसेम मम सव० पु. । ४२६. हाडोवरि० पु., हडोवरिवनच्छओ पा. । ४२७. विणमुप्प० पु. । ४२८. व संबधण- पु. । ४२९. जणणीणं पा. । ४३०. तएन्नुहियं पा.। ४३१. विट्ठति पु. । ४३२. सवत्तीकदाधणामे पा. । ४३३. गदं पा. । ४३४. तेणव पयदि य तुरग० पु. । ४३५. गयत्थ त य पु. । ४३६. संहं पा. । ४३७. विस्ससो पा. । ४३८. सपरिचरो पु. । ४३९. सुस्सिताओ पु. । ४४०. वो दितीए पा. । ४४१. वेड्ढइ पु.। ४४२. सेउविणा० पु., सउहिणा पा. । ४४३. दूसितो पा. । ४४४. सव्वन्नीकताओ पु.। ४४५. सरणवरणवसिदाणं पु. । ४४६. आनासं पा. । ४४७. मम एम संपत्तस्स ठितस्सि पा. । ४४८. जग्गमि पा., यगासि पु. । ४४९. मावयओ पा., सावयक्खाए पु. । ४५०. आवजत्तिए पा. । ४५१. कुविसं पु., कुवियं पा. । ४५२. ते पु. । ४५३. य से सेण पा., य भद्दसोण पु. । ४५४. धरोवितं पु., धरार्चितं पा. । ४५५. चउद्दारे कंतेण कमेण य पु., चउद्दारे य दाएति पा. । ४५६. सुव्वंती पु. । ४५७. ०हेदितो पु. । ४५८. रवकुरव पा. । ४५९. -विव बिंभब्भाइंउपयपत्ता पु. । ४६०. सरइंरं पसा० पा. । ४६१. ण य सचाएन्ति पु. । ४६२. अवरहाविदो पा. । ४६३. पहसंती पु. । ४६४. -सोहं पु. । ४६५. अज्जपुत्त सुरदणट्ठोददेसत्तणं पु. । ४६६. अति व तासो रवेरवेण पा. । ४६७. गितिदं

पा. । ४६८. सम्मंतइंताइं पु. । ४६९. णु णिज्जा तुह पु. । ४७०. तवहो पा. । ४७१. उभयोकतोवाहणे पा. । ४७२. पिंडित० पा. । ४७३. मं पु. । ४७४. संएवग्गो पा. । ४७५. पविरा पा. । ४७६. य सतो पा. । ४७७. सो पु. । ४७८. व ब्भंभंवणस्सप्पभो पा. । ४७९. जात- पु. । ४८०. मज्जंतं अइक्कमिमि पु., मज्जअइक्कमसि पा. । ४८१. आभावाति पु. । ४८२. भणियं पा. । ४८३. जागे पु. । ४८४. देभिं पु. । ४८५. बोलेदुं पा. । ४८६. वलाणगेसु पु. । ४८७. सुमुहाण- पु. । ४८८. मधुरं पा. । ४८९. कतंखो पा. । ४९०. गहिच्चइ रागो भवदो पा. । ४९१. अवव्व पु. । ४९२. जू अ विणिग्गदं सं समा० पा. । ४९३. सेणा संसावेवेजणं पु. । ४९४. पच्छा पा. । ४९५. सणिओ पु.। ४९६. अत्तच्छं पु. । ४९७. पविसंति य नूणं पु. । ४९८. वत्तभा० पु. । ४९९. कालद्धमे पु., कीलमे पा. । ५००. भद्दयसा सपरिवारेऊण पु. । ५०१. स पु. । ५०२. कुसल पु.। ५०३. पदेसुस्सुयया पु. । ५०४. तं रावती पु. । ५०५. अव० पा. । ५०६. वूहेऊणं पा.। ५०७. तेण दूरतं हत्थ० पु. । ५०८. आणलिय पा. । ५०९. विंदि से सं कारदव्वा पु.। ५१०. पुणट्ठमास पा. । ५११. हिरिऊणं पा. । ५१२. हिदोए वा पा., हिदाए व वा पु.। ५१३. रूस्सीहिति पा., रूवीहिति पु. । ५१४. छिद्दं लभइ पा. । ५१५. आगच्छदि तेच्छदि तेसिं पु. । ५१६. देदि पु. । ५१७. परिवाराइं पा. । ५१८. तिदिनं पु. । ५१९. असाणु० पा. । ५२०. आचिरा पा. । ५२१. विट्ठवया पा. । ५२२. णिसुज्झोहिति पु. । ५२३. वुत्तागं पा. । ५२४. थाद पु. । ५२५. निरूस्सासं पा. । ५२६. जोधव्वगो उस्संधि पा.। ५२७. उवसंतं ति । ५२८. पालोमदी व पु. । ५२९. मियवारिभ णदिय पा. । ५३०. वाव्विकं पा., वाविवं पु. । ५३१. वाहो रदाणिदं वे लोगे पु. । ५३२. जेण पुर जणत्थे पु. । ५३३. वोरणग पु., दोरेण यं गा पा. । ५३४. आरोवण यं । पा. । ५३५. एसु पा.। ५३६. अच्छो पु. । ५३७. भणंती सा वि पा. । ★ ॥ इति वसुदेवहिंडीए मज्झिमकंडे मुत्तावलि लंभो नाम सत्ततिमो उद्देसो संमत्तो ॥ पु.

३४. विमलप्पभा-लंभो

एवं अहं तत्थ अक्खिप्पमाणो **रयणवदि**-चरिद-गुण-रयण-मालाए, [1]विभूसिज्जमाणो मुत्तावलीयस(?) व्व **मुत्तावलीए**, उवसेविज्जमाणो सुरिंदेण व णरिंदेण, ओलगिज्जमाणो **सुसेण**-सेणावइणा इव सुसेणावदिणा, नाडय-वर-तरुणी-गीद-वाइद-रवेण सुयमाणो पडिबोधिज्जमाणो य, उप्पाएंतो धिर्तिं **मुत्तावलीए** सुहेणं अभिरमामि ।

अन्नदा य अहं **सुसेण**-सहितो [2]उदविप्पसूत-जइण-तुरंगारूढो [3]अवस्स वागुरा वं परिक्खित्तो सूरोदय-काले इव [4]माह-मास-जोण्ह-पक्ख-तेरसीए णगरीतो बाहिं विणिग्गतो णगरोववणाइं पलोएदुं पयत्तो ।

एदम्मि देस-काले दाहिणोदधि-विणिग्गतो पच्चूस-काल-सीतलो संचालित-सयल-[5]पावनिहो(?) पादव-निवहो सुरभि-वणरुह-वासितो [6]एगवारोपवागदोपहो(?) तंवउन्नक्खेउणं(?) **पभंजणं** उद्धाइदो आगासेणं पिव लंथि(?बि)त भागेरहि-सलिलोहो गरुलो इव अविणाद-विक्खेवो दिव्व-कारण-चोदितो इव दाहिण-दिसाभिमुहो आसो । अहमवि य जिण पाणावसेस[7]-मद-दोस-सिढिलगत्तो किंपि य भविदव्वदाए जादो हं परप्पणेयो, तम्मि समए एवं तेण हरिदुं पयत्तो । अवि य

तह गदस्स वि मम अत्थि तस्स निरुंभणे सत्ती, णयाहं म(?स)ति वि [8]सत्तीए किंपि देवता उसउसउ[9](?) इव निवारेमि । भणियं च साधारेणं जहा—

जं जेण पावितव्वं, सुक्खं व दुक्खं व जीवलोगम्मि ।
अवसो व तत्थ वच्चइ णिज्जदि च बला कदंतेण ॥

एवं मम हीरमाणस्स पिट्ठदेसेण लग्गो तुरग-वग्गुराए **सुसेण** सेणावदी सव्वादर-पधावितस्स चक्खु-पहातो मोचितो हं तुरंगेण पहर-मेत्तेण य दियसस्स तेण अहं पवेसिओ महाभयं रन्नं । बहूणि य जोयणाइं परिधाविऊणं मूल-हतो पडिदो मदो य सो तुरंगो । तओ हं तस्स तं अस्स-भंडयं घेत्तूण णाणा-

मणि-रयण-कणग-परिमंडिदं णिद्दक्ख-पादवक्खंधीए वि [1]लावेदुं पट्ठिदो एग-दिसाभिमुहो करिणि-जूह-हरिदो इव कुंजरो किं पि य भविदव्वदाए मूढदिसो संवुत्तो । ततो मूढदाए अंधेल्ल-मइंदो इव गमामी तत्थेव परिब्भमामि, ण य जाणामि कहं पि गंतव्वं ति । एवं परिब्भमंतो अल्लीणो हं एक्कं बकुल-तिन्न(?ल)य-चंपगासोग-सज्ज-ऽज्जुण-कुडय-कलंब-जंबु-सरि(?)-सत्तिवन्न-सहयार-चारु-चंचम्मण(?)-लोद्ध-णंदिरुक्ख-वड-गोविराल(?)-लकुय(?)-पाडलि-छत्तोव-सिरीसिबिंव(?)-विलयंव(?)-णिव-कोसंब-जाति-जूधिय-समण-मल्लि-संदाणिम(?)-सुरभि-कुसुम-भार-णमिद-पादवाइन्नं कोकिल-मयूर-किंणर-जीवक-सउल(?ण)गण-मिहुण-विर(?रू)तावणादिदं सिहर-वर-भासरोदर-णिगुंजं कुसुम-वासिता(?त)-पवण-संदादिद-सुरभि-सीतल-रमणीयं गुमुगुमुगुमेंत-भमर-मधुयर-भमंत-सकमल-जल-सुरभि-सीतल-गंभीर-पवर-पलंबो[2]ऊपररुरित(?)-परिमंडितं सिहर-वर-कुहर-दरि-घर-णिरुद्ध-तडि-कडग-कूलड(?)-विउलित-भलंता-गिज्जंत-भमर-मधुय[?रं] सजलधर-रसित-गंभीर-णिणाद-सद्द-पडिसद्द-भासरं कुहरागत-मुइत-मत्त-गयजूह-रसित-परिरसित-गुलगुलुगुलाइत-रसुहर(?)-मणहर-सद्दभूसणं रुरु-चमर-सरभ-संवर-हरि-हरिण-पवर-परिजूध-पसरित-वरंत(?) वीसत्थ-सुहि-मदगण-पादवतर(?) निसन्न-किंव(?न्न)रुग्गिज्जमाण-गंभीर-गीतवरुतोवसोभितं(?), अंतद्धित-वंतर-सुरमिधुण-विज्जाहर-भरित-सिहरघरं, सन्निहित-सव्व-रितु-सोदा(?हा)-समुदीयं महालयं महा-महिधरं पेच्छामि ।

तेण य सिरि-समुदय-सोभा हत्थेण(?) अणिज्जमाणो इह सणीयं समारूढो हं णियतिप्पतितो तं महिधरं, अभिगदो वा सियस्स निज्झर-परंपरा-वडिद-गंभीर-सीतलं वण-संडं । अवि य—

जं तं सन्नेति व ममं किसल-कोमलंगुलीएसु,
लता-विताण-करतलेसु उवलोभेति,
सुरभि-पंचवन्न-वर-कुसुम-हत्थएहिं निमंतेदि व,
कुसुम-सत्थर-सुह-सीतलासु छायासु फलति व
फल-भरित-णमित-पादवगेसु अवभा(?ता)सेति व
कुसुम-वलय-भावितासु अतिभुयासु तीए विव
पवण-संचालित-सुरभि-सीतल-साहुलि-तालितेसु अणुवाएति व

कुसुम णीसामे गंध-निवहेसु, अवलोकेति व

विवरह(?) वरुण-पल्लव-पत्त-संचएसु छंदेति व

सुरभि-सीतल-सादु-फल-पवर-भोयण-विधीसु अभिथुणति व

मधुर-विहगोरस(?सं)त-कल-णिस्सणेसु उवगायति व

मधु-म(?मु)इत-मुच्छित-भमर-मधुकर-विरुतेसु णिसीयति व

भणदि विउल-विमल-सकुसिम(?) सिलासण

संवए सुणेहि त्ति

पभणभि(?ति) तणु पवण-वेग-चालित-डारुकुंचारुतेसु(?),

उवहसइ व सित-कुसुम-दंसणा दीसंत पंति कलितेसु,

विवर-वदणेसु, [१२]पुक्कारेति व मम समागम-हरिसित-

मुइत-परहुत-मयूरेसु अदमण(?) किन्नर-रुदेसु,

वज्जदि व पवण-भिज्जंत-सद्द-मद्दल-णिणाद-गंभीर-

सुर व मंदुग्घोसेहिं

णच्चति व वाद-वस-वलित-किसलय-ललित-दिन्न-घण-ताल-सद्दा(?द्द)-अणुणच्चमाण-मोर-णच्चण-घणे

उल्हादेति व सव्व सुहब्भवहि विविधेहिं समुदय-गणेहिं ।

एवमादि-गुण-कलितं णंदणवणोवम-लच्छीयं तं वणसंडं पविसिऊणं सुरभि-सीतलस्स [१३]कुसुम-भरितस्स चंदणवण-पादवस्स अहे कुसुम-सत्थर-निसन्नो हं आससिदुं पयत्तो, चिंतेमि य— अहो ! इमं वणसंडं रमणीयं साधुजण-समोसरण-जोग्गं वा एदेसु दोसु वग्गेसु विणा ण सक्कमि ह(?हं) मुहुत्तं पि अच्छिउं, किं-कारणं, दंसण-मेत्तेण चेव सो मणसुज्झाणं(?) धम्म भरिति भागवद्धणं इमं वणसंडं समुदिन्नो हु मोहो पुरिस-महिलाण साधु-समोसरणे जिण-वयण-दीवियरहं मुहधार(?) उवसमिज्जइ इदत(?इच्छित) जण-समागमेणावि । एदेण कारणेणं एदं साधुजण-समोसरण-जोगं पियजण-समागम-जोग्गं वा उज्जाणं ति— एवं चिंतयंतो महितल-पडिंत-कुसुम-निविद्धण व अच्छामि ।

अह य सहसा मम निडाल-देसं ओहसमणी(?) सुरभि-सीतल

पडिता कुसुम-धारा । तं च मया उच्छंग-पडिद-कुसुम-वुट्ठिं दट्ठूण चिंतितं— नूणं खु एसा पवण-संचालित-साहुणि(?लि)-संघंस-विमुक्का निवडति त्ति । पुणो य ण चिरेण पडिदा बिदिया ण दिआयाणयह(?), अचिरेण पलोएमि अणवलोगंतो य चिंतयामि-किं मण्णे काकि(?इ) वणदेवता अन्ना वा वंतरी काइ मया सह परिहसति । एवं चिंतेमि, तावय वणंतर-संकमण विवुंद(?) पप्पुडिदा वलय-मेहलकलाव-णेपुराणं उवरिम-देस-ठितं सिजित-रवं सुणामि। तेण य सद्देण मया समुल्लासिद-वदणेण अवलोकितं अ(?उ)-वरिएण, पेच्छामि य तत्थ चंदण-दुम-साहुलि-णिरुद्ध-देहाओ दो पवर-विलया-लदाओ उत्तत्त-पवर-चामीकर-णियर-संचय करणियार-कमल-केसर-बालरवि-किरण-कुसुम-सरिसवन्नातो, वर-चिहुर-भारविवरंतर-णिहिद-सुरभि-कुसुमभारा-वणगु(?दु)त्तिसं(?मं)गाओ, कणग-प्पत्त-निव्वत्त-सरिस-निडालदेसाओ, रत्तंत-पयति-मणहर-वर-केस-भूमीओ समसरणपलंबावग्ग-हेमकुंडल-दंड-मंडित-गंडप्पदेसाओ, णव-सरदोदित-बालरवि-किरण-बोधित-सयल-सरोरुह-सरिस-दीहावंग-पसारित-लोयणाओ, य- तुंग-नास-बिंबाधरोट्ठा सुइ-दंसण-भूसिताओ, अण्णोण्णातिसएण घण-पीण-सुयात-सव्वंग-सुंदर-लक्खण-देहधारिणीओ, तुंग-वर-सिहरि-उव्वणब्भड(?) घण-णिरंतर-पीण-जवल-सेल(?)कलिताओ, सुरतावह-रोम-राइ-जलवाहिणीओ, विउल-जहणत्थल-पुलिण-सोभिताओ जमल-जवल-वाहिणीओ विव महाणदीओ । दोवि अत्तियंति विरायंति विविध-राग-वत्थ-भूसणधरीओ, विसेसेण पुण ताण एक्का चारु-तरुलतावलोकणा तिवलित-रंभा उर-करतल-मिद-मज्झदेसा, मुत्ताफल-सकल-समायोग- तवणेज्ज-भूसण-भूसिता, वेरुलिय-विमल-फालिय-भारग-मणि-रयण-विसुद्ध-सुमसि(?समि)द्ध-मेहला-रुद्ध-मुत्थ-जहणत्थला, कणग-वलय-णेउरालंकिद-कर-चरण-पंकया, सरसारविंद-केसर-तालावलग्ग-वर-कन्नपूर-परिचुंबित-गंडप्पदेसा, विइत्त-राग-वरसण-गह(?हि)द-णिज्जोगा, वसंत-जुत्ता इव बहु पेच्छणे(?णि)ज्जा रूवातिसया ।

[१५]तं च दट्ठूण चिंतितं मे— साधु [१५]एदीए रूवं अणुसरिसं इमस्स उवय(?व)णप्पयार-विणोदस्स । जइ पुण एसा कह वि मम वसं उवणमेज्ज ततो सक्का इह उज्जाणे निरूसिएण बहुकालं म(?ग)मेउं, चिंतेमि अ पुणो— का णु हु एदाओ एव अतिसय-रूवधारिणीओ **रंभ-तिलोत्तिमा**ओ णंदणवण-सारिक्खताए इमं उववणं दट्ठुमागदाओ, उदाहु नाग-कन्नगाओ विज्जाधर-

कन्नगाओ वा इहमागदाओ त्ति । णवरं च अच्छि-वियारेसु लक्खिताओ मे जहा ण एदाओ सुर-कन्नगाओ, एदाओ विज्जाधर-कन्नगाओ भविस्संति । तं आलवामि ताव एदाओ किमेत्थमागदाओ । एवं चिंतयंतो उट्ठितो, भणिताओ य मे— सायतं पच्चक्ख-वणसंड-देवताणं ति । कत्तो भे आगमणं ? किं निमित्तं वा इहमागदाओ ? त्ति ।

एव भणिते मया ताओ सहसा अद्दंसणं गताओ, अद्दंसणं च गच्छमाणीसु गतं पिव मम तासु सह हिदयं जीवितं च । भणिदं च मे—

हा हा णारहह सुतणु, मम अव्वाहारेण गंतुं जो ।

नियत्तह देह दरिसावं, एस मे अह [१६]सरसुवगदो(?) ।

न धरेमि जीवितं तुब्भ सुदंसण-मेत्त-जणित-राग-विस-घारितो ।

अमोहदंसणाओ[१७] दो(?दे)ह मा मे विलवंतं इहमेगागिं विसज्जेह ।

जदि दंसणेण पसादो कतो भे ततो वाहारेण वि ममं जीवावईतुमरहध, मा मे दंसणमेत्ते संजणिय-मदण-वेग-वस-णत्थलेच्छट्टूणं[१७](?) वच्चाध ति ।

जति ण णियत्तह ततो [१८]मम्म मिमद(?) इहेव अणसणेण तुब्भं पुरिसवज्झो होहिति ।

एव अहं तीए कन्नगाए दंसणे उम्मत्तो इव तत्थ बहु पलवामि । ताव य मम मग्ग पधावितो **सुसेणो** महाजइण-तुरंगारूढो अवधूतसययो(?)-मम णेहाणुराग-पडिबद्धो एक्को चेव दिसाभागेण तं अरन्नं अणुप्पत्तो, णवरं च तस्स वि तत्थागदस्स अइवाहच्छिन्नो अविसामिओ मुत्त-पुरीस-णिरोहेण पडितो य तुरंगो । तम्मि य [१९]मादूसमाणे(?) तेण अविसादिणा घत्तमाणेण दिट्ठो सो मम संतिओ मद-तुरंगो, अस्स-भंडयं च । तं च दट्ठूण सो समासत्थो, असभंतो य ममं मग्गिदुं पयत्तो, संपत्तिवीसोण(?) य समारूढो तं चेव पव्वन्न(?त)-वरं अइगतो य तं वणसंडं । दिट्ठो य तेण अहं उम्मत्तभूतो तहा विलवंतो, अकन्नंतो य ममं समल्लीणो, पडिदो य वीसत्थस्सेव मम पादेसु, भणति य— अज्जपुत्त ! तुट्ठा मो जं वो कुसलिणो मया दिट्ठ त्ति । किं-पुण पुच्छामि ते किंचि, किमेतं अत्थि लिंग-संबद्धं किंपि पलवसि ? ।

मया भणिदं— सोम्म **सुसेण** ! तुह चेव पसादेणं अहं **वच्छगुम्म** वितोआवतीओत(?) एण्हं पि । ताव ममं विसमादो आवदीओ मोएहि त्ति ।

ततो सो कडि-लग्गं खग्गं गहेदूणं भणति— आणवेहि कतो ते भयं,

को वा [२०]अज्जं मरतु ति(?) त्ति ।

मया भणिदो— ण याणामु [२१]कोइ रिव(?वु) संपदं जहागदो,

केवलं मम णियय-देह-समुत्थिदो । को मम सत्तू परिभवं करेइ ? त्ति ।

तेण भणियं— किह पुण अनिमित्तो चेव तुह भगवं अणंगो अंगं धाव(?बाध)ति ?

मया भणितो—न हु सो अनिमित्तो बाधते, अत्थि निमित्तं ।

तेण भणियं—केरिसं निमित्तं ?

मया भणियं— इमाणि मे कर-गहिताणि कुसुमाइं निमित्तं ति ।

तेण भणियं— इमाणि ते अन्नाणि ताव वणे धरणितल-पडिदाइं कीस णिमित्तं होंति ?

[२२]मया भणियं— इमाणि मे हत्थट्ठियाणि बाधंति, ण वणसंडप्प-विप्पकित्ताणि त्ति ।

तेण भणियं— जति हत्थतल-गदाणि बाधंति ततो छड्डेहि हत्थातो ।

ततो मया भणिओ— वयंस ! अलं परिहासेण । ण जाणसि मम वेदणा जओ एवं परिहसंतो अच्छसि । सुणह ताव क(?का)रणं । मया विवन्न-तुरंगेण भमंतेण इह सेल-सिहर-पवर-वणसंडे [२३]आगदेणं कुसुमंजलि-वरिसणाओ[२४] संचालित-वलय-मेहल-कलावा महुरज्झण(?णि)-राव-गंभीर-कल-निनद-सद्द-भासराओ आगासे पादव-विवर-सालंसिदाओ(?) [२५]दो वि रूविणीओ विज्जाधर-पवर-कन्नगाओ दिट्ठाओ । तासिं च मे एक्कीए अवहियं हियय [२६]सबंधणं, मे आलविदुकामस्स य ममं अद्दंसणमुवगदाओ । ततो हं ताणं दंसण-मोहित-हिदओ कातरत्तणेणं पलविउं पयत्तो । आगदो य एत्थंतरे तुमं ति ।

तेण भणियं— देव ! जाओ आगासगामिणीओ अद्दंसणमुवगदाओ ण ताओ अम्हं महिगोयराणं पुणो वि सुलभाओ त्ति । तं अलं तासु । उट्ठेहि वच्चामो सणीयं स-णगरिं [२७]तेणामति(?) ।

मया भणियं— सोम्म ! इहेव णं मया मरियव्वं, दट्ठव्वाओ ताओ त्ति एस निच्छओ मे ।

तेण भणियं— कट्ठं कतं । अइ महंता हु पदिन्ना । कओ विज्जाधरीओ इह गदेण दट्ठव्वाओ ?।

एवं भणंतो मया भणितो— सोम्म ! अत्थि मम आगच्छंति पुव्व-पढिताओ विज्जाओ ताव उद्दिस्स [२८]ना(?ता)व णं इहेव णिरसणो अच्छामि जाव सिद्धाओ ततो अवस्स सिद्धविज्जो वा इहेव मरणमुवगच्छीहामि त्ति ।

ततो सो एदं मम णिच्छयं सोऊणं परम-विसादोवगतो इतो ततो य तम्मि वर-काणणोदरे गिरिसिहर-कंदर-दरीसु य अधितिमंतो अस्सद्धेयं चिंतयंतो सुन्न-हिदओ तासिं कन्नगाणं मग्गणं काउमाढत्तो ।

अहयं एक्कं अतिसय-रमणीय-वर-परम-सुरभि-गंभीर-वणसंडं पविट्ठामो । तत्थ इ तेण कस्सइ अवत्त-परं [२९]पितक्क(?क)र-वयणं ईसिं अवधारितं । ताहे तेण ततो विरइतंजलिपुडेण भणितं— जति अत्थि एत्थ कोइ दिव्वो विज्जाधरो व्व अणुभावो णमामि अहयं । पुण तुह विण्णप्पयं एक्कं, सयल-महिलोग-तिलओ [३०]विंब्भय सुरगणाणं पि तुरगेण इहाणीओ भव्व पिया **राम-कण्हाणं** । सो कं पि इह दट्ठुं सुंदर-जुवदीण जवलयं ललिओ तासिं चेव वियोगे जातो उम्मत्त-भूतो । तेण इ कता पइन्ना इहइं [३१]चिय मए हु दट्ठव्वा, तासु अदीसंतीसु य इहेव मुत्तव्वयं जीयं । सच्चो सच्चपदिन्नो तं सो जति मरति एत्थ रन्नम्मि उद्धितणेत्तं[३२] वसुहं तो होहिति [३३]सुन्नयं भवणं जासिं च कएण इह मम सामी मरति दंसणुम्मत्तो तासिं [३४]मदा ण वि अगा(?) किंचि [३५]संदेहं ण [३६]मा एज्जा, तेण असुभेण ताओ भविऊण [३७]विधविध-[३८]भवसताणि ण लभेज्ज मणुय-जम्मं, तम्मि हते पुरिस-सीहंपि(?हम्मि) । तं एस पुणो पुणो वि अहं पाए पणमामि णभतलचरीणं, तासिं वर-विलयाणं [३९]जाहि य उम्मादिदो [४०]सामी । जं तु पुणो दंसणयं अब्भुद-रूवस्स जीवलोयम्मि तम्मि मते संते[४१] होहिति णिब्भूसणो [४२]लोगो । जइ इच्छिअह ताओ हिदएसु अणुत्तणं व जदि अत्थि जाणंति व मह विणयं मित्त गदे अच्छि विसओ [४३]व्व ते मित्तवयण-परिपेल्लितस्स हिदयम्मि कढकढायंतो दे तु पर [४४]गणाउ दंसणयं भाव-पणदस्स ।

एवं तेण भणित-मेत्ते पुरतो असोग-पादव-ठिदाओ तेण ताओ च्चिय दो विं विज्जाधर-कन्नगाओ [?दिट्ठाओ] । ततो सो दिट्ठो(?ट्ठाए) रिट्ठो इव जीविदं लभिऊणं निव्वुदो जातो । उवगतो य तासिं समीवं विरइद-कयंजलि पुणो भणति य पणाम-पुव्वं— भो भो लोगसुंदरीओ ! कीस इमं सुणीहोंत(?)

य लोगं उवेक्खेध? एदं वो अहं पादकिंकरो विणयोवगतो विन्नवेमि, सुणह सामि पुरा सुणेज्जति लोइय-कहासु, कोइ किर महाणुभावो राया अस्सावा(?व)हितो वणं अतिय(?ग)तो। तेण य तत्थ संपत्तीए एगम्मि पउमसरे समागदा देवगणिया **रंभा** दिट्ठा । सा य तेण राइणा साभिलासेण अब्भत्थिदा— भयसु ममं ति। तीए य **रंभदाए** णेच्छिओ सो माणुसो त्ति काउं । ततो सो तद्दंसणुम्मदितो तत्थेव अत्ताणयं णासिदूण ट्ठिओ कालगदो य । सा य **रंभा** देवलोग-गता देवराइणा सव्व-देवेसु य णाय-परमत्थेसु पुरिस-घातिय त्ति काउं सव्व काउसव्वत्थि(?) सुरलोग-असंकासा कदा । तीए य पणदाए देवराया विन्नवितो— कता हं सुरलोग-सामन्ना भवीहामि ? । तेण भणिदं— जदा ते सो चेव राया इक्कम्मंतेण परितोसितो होहिसि(?ति) । ताए भणिदं— देव! मदो कत्थ सो मया परितोसेयव्वो ? इंदेण भणियं— सो तत्थेव **भरहवासे** इदाणिं रायाघरे आयाइस्सति, तत्थ सो **निसढो** नाम महिद्धी राया होहिति(?सि) । तत्थ तं **उवचरेज्जा**सि बहुं कालं, ततो विगद-सावा होहिसि। ततो सा सव्वं आदेसं तहेव कादुं चिरेण विगद-सावा सुरलोगं गता ।

तं भणामि वो तुब्भं पि तं चेव [४६]पि णिदरिसण(?णं), सा(?मा) पहाण-पुरिस-वज्झं काहिह, [४७]मा य काम-कम्मं संजातं विणासेइ(?ह) । अल्लियध देवय(?देध य) दरिसणेणं पत्था हं तुब्भं पि सब्भं ण समागओ होहिति । सूरो च्चिय कमलाण बोहण-सहो, थाणे च्चिय गुणा य तं वच्चंति। तं एस परमत्थो, तुब्भं पि हु मम सामि सो ऊण अन्न रूवाणुरूवं सयलम्मि तिहुयणे ण पेच्छामि । अहवा ठायंतु ताव रूवगुणा पुरिसगुणा य, तं वच्चंति। मम सामि[?स्स]-वसण-दुक्ख-दासत्तण-उवगदस्स दया करेह । एदं अणुकंपं(?) सामि-जीवितेण । ततो तेण एवमादि बहुं भणिताओ ताहे ताओ किंपि सणीयं परोप्परं संलविऊणं ईसिं पहसियाओ, बेंति य— अहो इमस्स पुरिसस्स मुहे विणय-संकला वसति, मन्ने कट्ठं पि हु एसो पूजं पावेज्ज पसादेज्ज य [४८]पच्चयं पि।

एवं भणंति य— अहो ! ते सत्तूण वि हिदय-पसाय-करं वयणं। तं आगच्छ, वच्चामो ते सामिणो पासं ति ।

ततो सो मह तासु परम तुट्ठो उवगदो मम सगासं, पणदो य मं भणति विणएण— देव ! एताओ ताओ पादवंदणं करेंति, पेच्छह णं ति ।

ताहे ताओ वि पणमिऊणं मम णादिदूरे निसन्नाओ पीयंतीओ इव मम णयणंजलीसु, अवतासिंतीओ इव सिणेहेणं, वन्निविंतीओ(?) इव लज्जाए, अवहरंतीओ इव णयणेण रूवेणं च, पभासयंतीओ इव तेय-मरीईहिं, धवलेंतीओ इव दसणप्पभाए, रयमाणीओ इव अवरच्छवीओ, [४९]पाउतणंतीओ(?) इव अणाघाताए [५०]छवीए । ततो ताओ अदूर परिसंठिताओ वि मया विमुत्तासत्थेण[५१] वि चिरेण भणिताओ— सुस्सागदं कमलपत्तलच्छीणं। अहो ! अणुग्गहिदा मो पुण दंसण-कारणेण, साहह इदाणिं के इह दूतो(?) तुब्भे आगताए त्ति।

तओ तासिं जा सा मम हिदय-वल्लभा सलज्जा इव अहोमुही ठिता, जा पुण सेसा बिदिय कन्नगा सा सइरं सलज्जं च भणिउं पयत्ता— सुणह, एसा कन्नगा **निवतिलय**-विज्जाधर-णगराधिवस्स विज्जाधर-चक्कवट्टिणो **वि(?ति)सिहरस्स** दुहिता **सुप्पणहा**[५२]-देवीए अत्तिया **विमलप्पभा** नाम, **हेफयस्स** विज्जाधर-रन्नो कणीयसी भगिणी । एतीए [५३]णातिपत्तजोव्वणाए पिता तुमे चेव मारिदो **विज्जुवेग** सगासे । काले य पुणो अवरज्झमाणो **हेफओ** वि तुमे स-रज्जातो धाडितो [५४]चूलहिमवंत-सेल-सिहरे सभिच्चवग्गो निविट्ठो दु [५५]एसा ठितत्ताव(?) पत्तजोव्वणा जाता **हेफएण** य णेमित्ति [५६]**वीस(?स्स)कम्मो** नाम सो पुच्छिओ— [५७]कस्स मम भगिणी **विमलप्पभा** भारिया होहिति त्ति । तेण भणियं— ण दाहिसि[५८] तुमं अत्तणो इच्छाए, किं-पुण भणामि णिमित्तादेसेणं, एसा कन्नगा जो [५९]**सेव्वल्लत्तय**(?)-सुताए **चंदलेहाए** भत्ता सो भवीहिति । **हेफएण** भणियं— होदु होदु । ण सो **विमलप्प**भाते भत्ता होहिति, णाहं पिति-घातयस्स भगिणिं दाहामि । **सुप्पणही**(?)ए देवीए तह त्ति[६०] भणियं । ततो **वीस(?स्स)कम्मेण** भणियं— ण णिमित्ते अलियं अत्थि, एवमेतं, जो वा अन्नो उत्तम-पुरिस-भारियाए हत्थे [६१]लग्गीहीति तस्स सतधा सिरं फुट्टीहिति । **हेफएण** भणियं— कुमारी चेव अच्छीहिति । णवरि पुणो [६२]दिज्जहिति ।

एताए य तुब्भे पुव्वं चेव विज्जाधर-समिदीसु **दिवतिलयं** च पेल्लमाणा पच्चक्खं दिट्ठं(?ट्ठा) । ततो एसा बहुधा हिदएण तुब्भे अभिकंखमाणी ण कदायि धिर्दि लभदि । रन्नो य **तिसिहरस्स भद्दमुहो** नाम मंती, तस्स **मदणयसा** नाम भारिया, तीए दुहिता अहं **मदणमंजआ**(?**जुसा**) णाम । मम य एदीए य बालभावुप्पन्नो महंतो सिणेहाणुरागो । तुह दंसणासद्धा-समुट्ठिदं व

दुक्खकारणं एदीए य मम निवेदितं । ततो अम्हं [६३]विदित-णेमित्ति-वद(?य)णाणं एदंमे(?एदम्मि) कज्जे [६४]समत्थेंतीणं परोप्परं भणिता मया एसा— अज्जदुहितरो ! अत्थि एरिसं किंचि महिलाणं पेमाणुराग-वीसंभठाणं जारिसो सुणिज्जति भत्तारो तं तु देवेसु चेव सो भत्ता विहिदो जस्स कदेण परितप्पसि ते, [६५]तं बहुणा पि काले ण अन्नहा होहिति । [६६]तं अलं ते स-कज्ज-करणुट्ठिदेण[६७] कादुण उट्ठेहि, सयमवे(?मेव) वच्चामो ते विणिद्दिट्ठि(?ट्ठ)स्स भत्तुणो पासं । मया एव भणिदा [भणदि]-पुच्छह भगवतिं **महापण्णत्तिं** ति। ततो एतीए पुच्छिदा **पण्णत्ती** । अज्ज चेव पच्चूसे तीए कहितं— सो अज्ज चेव **काकंदीतो** वाततुरंगक्खित्तो **कालंजर**-वत्तणिं [६८]गमीहिति । तत्थ विवन्न-तुरंगो सेलसिहरं आरूहीहिति । तत्थ **णम्मता**-कच्छए वणसंडे तुब्भेहिं सह मिलीहिति । तं च सोऊण वयं इहमागताओ । आगतो य अज्जपुत्तो । दट्ठूण य ते रूवं परं विंब्भयं गदा एसा अहं च । ततो मया भणिता एसा— उवगच्छह णं । एस एगागी एसो तुह चेव पुन्ने सुहं तुह समागमाणुरूवं पदेसं आणितो । दुक्खं खु पियमाणुसं एरिसे रमणिज्जे पदेसे एक्कयं लब्भति । तं उवसप्पह णं ति । ततो एदीए भणियं— हला! दुक्खं खु अणाद-परमत्थो पिओ पच्चिल्लअं भणइ, जह अहं वो वरयामि त्ति। तं पुव्वं ताव पेच्छदु ममं, जदि से ममोवरिं दिट्ठी रमीहिति ततो सोभीहामि(?) एदं वरयंती उदाहु मम दिट्ठं संतं अवज्झाणिहिति, ताहे इहेव अत्ताणं विवाडेहामि । ण य एतेण अवमन्निता जीवं धारेहामि ।

एवं कत-संगारासु उवरिं वण-विवर-गतासु कुसुम-संपात-भूसण-सद्द-संबोधितस्स दिन्नं ते दंसणं, भाव-परिमाणणा-हेदुं च पुणरवि अदंसणं गदाओ । अदूर-ठिदाओ य सुणामु ते वयणाइं दंसणं च वो दातुकामाणं आगदो एस सइवो । ततो तुह एदस्स वयणं उवज्झिऊणं पच्छा एदस्स विमग्गमाणस्स विणयोवयार-वयण-परितुट्ठ-हिदयाहिं दिन्नं दंसणं, **आगताओ य तुब्भ** पाद-मूलं । तं एस परमत्थो । एस तुह अच्चंत-बद्धवेरं **पुणो य ससिलेहावहारे** दुगुणतरुप्पन्न-मच्छरं णियय-कुलं परिच्चिइऊणं सयंवरा तुह सरणमुवगता, तं एण्हि तहा करेज्जाह जह से पच्छाणुतावो ण भवति ।

एवं तीए भणिते मया रभसुद्धाइतेणं अहोमुही अच्छमाणी लज्जोणत-वदणा अवतासेऊण भुया-लतासु पियं भणंतेण हिक्खुत्ता, पवेसिता य इ-जोग्गं लयाघरयं । तत्थ कुसुम-[६९]सयणीयता(?त)ल(?ले) गंधव्व-

[७०]पयोगत्थी-[?वि]याहिता तहा मे अभिरमामि जहा मे सुरत-रसा चिरकालुप्पन्न-वीसंभा इव [७१]संदीसितुं पयत्ता। रतावसाणे य ममं भणइ— अज्जपुत्त ! अदीव **मदणमंजगा** सव्व(?मम)-पियसही [७२]सुमविगणत(?)-[७३]तप्परा य अभिलसति एतं तं पुहरुच्चदि(?) ततो [७४]हमेतं एदस्स तुह पच्चक्खं पयच्छमि त्ति । मम य तं पिजं(?यं) जादं । भणियं च मे— पिए । एस मे पसादो कार(?करे)दु । ततो तीए सद्दाविता **मदणमंजगा**, मया वि सद्दावितो [**सुसेणो**] [?दो] वि समयं उवागताइं । ततो **विमलप्पा-(?प्पभा)ए मंदणमंजगा** [७६]हत्थो घेत्तूण हत्थे दिन्ना, मया वि य सा **सुसेणस्स** [७७]हत्थोहत्थिं पणामिता । सो य तीए घेत्तूण गंधव्वेण विवाह-धम्मेणं अन्नम्मि लताघरे [७८]णीदूण विधिणा [७९]भारियं उप्पाएति ।

ततो ताओ दो वि जणीओ रमिद-विमुक्काओ हरदे अवगाहिऊण ण्हादुत्तिण्णाओ उवगताओ अम्ह समीवं । उवणीतो व पियाए विज्जा-वियप्पिते(?तो) दिव्वो आहारो पाण-वीही य । ततो य विज्जा-विउव्विद-विउल-परियणाइं । भुंजामो भोयणं तह चेव सहयार-बीयपूरय-नारंगफल-रस-वेदितं य विज्जादेवतोवणीदं कप्पपादव-प्पसवं महा-मधुं सुरभि(?) अहं **सुसेणो** य । पिया सहिदा विउव्विय-कणग-वि(?च)सएसु पउमिणि-पत्तेसु य उवजीवमाणा माणेमो **णम्मदा**-कच्छयं **कालंजर**-सिहर-मंडयं वणसंडं देवा इव नंदणवणोवगता सुरंगणा-[८०]समग्गा मुइदा अभिरमामो । एवं तत्थ दो वि जणा पियाए विज्जा विहिता पउर परिभोगा वेउव्विय-परियण-परियारिया इच्छाए अभिरमामो ।

एव य अभिरमंताणं दस दिवसाइं मुहुत्तं पिव समतिच्छाइं, नवरं एक्कारसमे दियसे विणओवगओ मम **सुसेणो** भणइ— अज्जपुत्त ! [८१]सज्जभाययंए(?) गदा पियासु सहिता गयं पि कालं न याणामो । किंतु अलद्ध-उदंतो राया अंतेउराणि य तुह वियोगे संपदं महंतं वसणं उव्वहंति । ततो जुत्तं अज्जेव गमणाए ति । ततो मया सुमरिता **मुत्तावली**, चिंतितं च मे—सच्चं भणति **सुसेणो**, विसेसेण **मुत्तावली** मया विउत्ता कुलहर-वियोग-काहला बहुं अधिर्तिं काहिति । एवं चिंतेऊण मया भणिता [८२]वच्छग-गता संतयंतेण **विमलप्पभा**— पिए ! भणह, किं करेमो ? गच्छामो **कागंदीं** उदाहु **इहेव अच्छामो** ? त्ति । तीए भणियं—सामि ! अहं कुल-गुरु-विरुद्धा, ममं तत्थ मणं णत्थि । जत्थ तुह रुच्चति तत्थ वच्चामो त्ति । मया परितुट्ठेण

भणियं— पिए ! जति एवं ततो विउव्वाहि विमाणं ति । ततो तीए सहसा विउव्विअं सव्व-रयणामयं लोअच्छेरय-भूतं महालयं महा-विमाणं । तत्थ समारूढा मो सह पिआसु, उप्पतितं च लुलित-वेजयंती-घंटा-पडागमालाकुलं णहंगणेण विमाणं । खणेण मण-जइण-वेगं विचित्त-पेच्छणिज्ज-रूवं जण-निवहेसु दीसमाणं [८३]उवतितं **कागंदीए** णरवति-भवणंगण-दारे । विन्नात-कारणो वि राया सदेविजणो तक्खणावगत मम वियोग-दुक्ख-कारणो तक्खणं चिय अग्घं घेत्तूण निग्गदो । आगदा य गहिदग्घ-पूयाओ **रयणवति-मुत्तावली**ओ । ततो हं अवइन्नो **सुसेण**-सहिदो विमाणाओ, पसंसंतो य णगरि-लोगो भणइ— धन्नो हु राया जस्स एदारिस-गइप्पयार-ललित-चरितो अच्छेरयं [८४]पुणो खयरीसर-कुल-वल्लभो य जामातुगो । पयोगेण सहसमागदो **सुसेणो** वि आगतो विमाणेसु पच्चक्खम्मि तो अहो अच्छेरयं ति एवं जणेण बहुधा पसंसिज्जमाणो रन्ना सदेवीजणेण पूइतो य महता विभूतीए स **विमलप्पभा-मदणमंजआओ** पवेसिताओ अंतो अंतेउरं चेव । अहमवि खणमेत्तं ससुरं पज्जुवासिऊणं अइगतो अंतेउरं । तत्थ य पविउ(?एदीओ) मम विरह-संताविताओ दंसणमेत्तेण चेव पविसिताओ [८५]मे **रयणवदि-मुत्तावलीओ** । रन्ना वि **भाणुचंदे** रयणवति-सरिस-विभवाओ सव्वोपक्खर-[८६]पवियाविउवभोग(?) सरिस परिहाराणं ति दावण [८७]गाहण सुमुहाओ कदाओ, विसेसेण **मुत्तावलि-विमलप्पभाणं** [८८]वि विउप्पादिता व जहा ताओ कुलघरं मुविगे(?सुविणे) वि ण सुमरंति । तं च मे अतीव पियं जादं । भणामि य अहं ताओ तिन्नि वि जणीओ अभिक्खणं— पिए ! जाणह तुब्भे तिन्नि वि जणीओ जहा हं निच्चकालमणवट्ठित-गदि-प्पयारो कम्म-वसेणं, ण पुण मम विज्जाधरेसु देवेसु य परिगहिदस्स अकाल-मच्चु-भयं किंचि वि अत्थि । तं जदा हं सयंवसो परव्वसो चाइदो कदो इ गदो णीदो वा हवेज्ज, तदा ण तुब्भेहिं [८९]असिपिअ(?) ण अधिहिं करणेज्जा । जदा अहं सरणज्जा(?रज्जा)-वट्ठिओ होमि, तदा सव्वासिं पि खिप्पं संगालणं काहामि त्ति । एवं नाऊण घिदिं करेज्जाह।

[९१]एवं अहं ताओ अभिक्खणं [९२]नीराएसि(?) । एवं मे तिसु वि पियासु सहिदस्स रन्ना **सुसेणेण** य सेविज्जमाणस्स एगंत-विसयसुह-मुच्छितस्स अभिरममाणस्स गदो मे विसिट्ठो कालो ॥

॥ **इति सिरि-धम्मसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए विमलप्पभा-लंभो णाम चउतीसइमो परिच्छेओ समत्तो** ॥

पाठान्तर

१. विभूसिज्जमाणो मुत्तावलीए उव० पु. । २. उदविप्परूत- पु. । ३. वयस्स पा. । ४. मास-जोण्ह- पा. । ५. पादनिहो पु., पादविनिहा पा. । ६. एवागदो पहा तंव पु., एगवारोप संत व पा. । ७. ०वसेण पा. । ८. लंतीए पु. । ९. उसउ इव पु. । १०. तावेदुं पु. । ११. रुरिरुत पा. । १२. फुक्कारेति पा. । १३. जलकुसुम पु. । १४. तिं पा. । १५. एदाए संतीए रूवं पु. । १६. सुरसु० पु. । १७. लेच्छेट्ठूण पा. । १८. मम्मंमि पा. । १९. मदेसमाणो पा. । २०. अज्ज मरपु ति पु. । २१. क्काइ रिट्ठ पा. । २२. तेण पु. । २३. अणादेणं पा. । २४. वरिसिणीओ पा. । २५. हो वि पु. । २६. संबंधणं पु. । २७. त्तेणमति पु. । २८. नावेणं पा. । २९. पित्तक्कंरं पा. । ३०. विसय पु. । ३१. चेव पा. । ३२. णोत्तं व मुहं तो दोहिति पु. । ३३. सुन्नयं ज सुहं भवणं पा. । ३४. मदा णि वि अगीं पा. । ३५. सदेण्णं पा. । ३६. मा पट्ठा पु. । ३७. विधिं विधि पु. । ३८. भव सत सताणि पा.। ३९. जहो दु उम्मा० पु. । ४०. माणी पा. । ४१. संतो पु. । ४२. योगो पु. । ४३. वं पु.। ४४. गणोउ पु. । ४५. रत्ति सुर० पा. । ४६. वणि दरिस सा पा. । ४७. मया पा. । ४८. पज्जयं पु. । ४९. पाउणंतीओ पा. । ५०. थव्वीए पा. । ५१. सुतासाच्छण व चिरेण पु.। ५२. सुप्पणही पु. । ५३. णाभिपत्त० पा. । ५४. मूल हिमवंत पा. । ५५. एमा ठि तत्ता पा. । ५६. वीसंकममो पु. । ५७. का सा पु. । ५८. दाहित्ति पु. । ५९. सेव्वुल्ल० पा. । ६०. च्चिय भणियं पु. । ६१. लग्गाहीति पु. । ६२. दिज्जहितति पा. । ६३. विदिते पा.। ६४. समत्थेवीणं पा. । ६५. ते पा. । ६६. भे पु. । ६७. -करणुव्विदेण पा. । ६८.गामीहिति पा. । ६९. सत्थरगीय पु. । ७०. पयोगच्छायाविवा पु. । ७१. संवीसितुं पा. । ७२. सुसविव गहणत पा. । ७३. तहप्परा पु. । ७४. चंदुदुरुच्चदि पु. । ७५. हेमेतं पा. । ७६. हत्थे पा. । ७७. हत्था हत्थं पु. । ७८. णादूण पा. । ७९. भणियं पु. । ८०.समगा पु. । ८१. सव्वं भावे यं पा. । ८२. वत्थंग- पा. । ८३. उवणीदं पु. । ८४. पुणो य रीसर पु. । ८५. मया पु. । ८६. पवियारि उव० पा. । ८७. गहण समुहाओ पु. । ८८. दी विउपाहिता पु. । ८९. अंसिं पि० पु., असि पि ण पा. । ९०. दामि पु. । ९१. एवं ताओ पु. । ९२. भीराएसि पा. ।

३५. अंतिम परिच्छेओ

अन्नदा य अह पढम-पदोस-समए रति-सुहं अणुभविऊणं **मुत्तावलि**-सहिदो सुहं पसुत्तो केण वि पाद-[५]संवाव(?बाध)ण-गहण-पीलितो सहसा विबुद्धो हं, उम्मिलित-लोयणो य णिययाभरण-रयणप्पभा-कदुज्जोयं पियं **नीलयसं** पासामि । तिं(?तं) च दट्ठूण सरभसं उट्ठितो हं **मुत्तावलि**-पासातो, ण य तीए वितितं। मया चिंतिदं नूणं **मुत्तावली नीलयसाए** त्ति ततो मम विरहातुरा पुन्न [२]वंभण(?) य(?प)णया मे पादेसु पिया **नीलयसा,** पणमंती य मे धणिदं समालिंगिता, अंके [३]णीदा य हक्खुत्ता परिचुंबिता य, भणिता य मे— सागतं ते पिए ! इंदीवर-सरिस-लोयणे ! के(?कु)तो सि इमाए वेलाए एगागिणी इहमागदा सि ?

तीए भणियं— जहा णं **मावत्थी**तो इहमागदा हं, पाणवासो मे तहिं चेव । किं-कारणं, सा तुह विरहुक्कंठित-हिदया मुच्छिता प(?च)रमावत्थ-गदा अवगद-ण्हाण-पाण-विलेवण-भोयणा उम्मत्तीभूदा अत्ताणं णिंदमाणी परिचत्त-जीविता णिच्चकालं रूयमाणी किह [४]किह इकखणामदास(?) मए देवीए य आसासिज्जमाणी कल्ल अज्ज कल्ले ति भत्ता ते इह एहिति त्ति एव विलोभमाणीसु एत्तियं कालं जीवितं धरविता । संपदं पुण बहुल-पक्ख-चाउद्दस-मियंकलेहा इव दूरं परिहीणा **पियंगुसुंदरी** जीविता य सेसंपो(?) वट्ठति सुविणे वि तुब्भे उ पेक्खमाणी, हा अज्जपुत्त त्ति किं सि ममं मंदपुन्नाए परिकोवितो सि ? पसीय, एस ते पादाणं अंजली, देहि वाहारं, कत्थ सि पलातो ? त्ति जंपमाणी य विबुज्झइ । तं एस ते मया परमत्थो कधितो आलोए य खु तत्थ वद्धइ जइ ते तीए किंचि कज्जं ततो उट्ठेहि, नेमि ते तीए सगासं । तीए अज्जं पइन्ना कता-जइ अज्जपुत्तो नत्थि ततो अहमवि णत्थि । ततो तं एवं भणंतीं मरण-कद-ववसायं आसासेऊण विज्जा-देसित-पहा तरितं इहमागदा हं । तं उट्ठेहि तं जीवंती संभावेहि त्ति।

तदो हं एदं सोऊणं [५]सावगा(?) तत्थ तिण्हि वि पियाणं कुड्डे

पलेवएणं अणुमाणणा-वयणाइं लिहिऊणं **नीलयसं** भणामि— पिए ! णेहि मे **पियंगुसुंदरीए** सगासं ति ।

ततो सा परम तुट्ठा ममं घेत्तूण हम्मियदो णहतलेणं समुप्पइता । खणमेत्त पयाता य मे भणिया पिया— सुयणु ! तण्हाइतो मि, कत्थइ अवतारेहि धरणियं पाणियं पा(?पी)तुमिच्छामि । तओ तीए एगाए पउमखंड-मंडिताए सुरभि-सीतल-गंभीर-सुहावगाह-सलिल-तित्थए [७]सुत-कारंडय-चक्कवाय-हंस-पउराए दुव्वंकुर-पउर-सुकुमाल-हरित-परिमंडित-तडाए कुसुमलता-विताणघरय-परियारित-तीराए पवर-पुक्खरणीए समवतारितो हं । तत्थ य मया [८]विरंवित(?) [९]हुक्कंतिएण(?) सुरभि रतिसद्धालुयदाए(?) **नीलयसा** हत्थे घेत्तूण पवेसिता लताघरयं । तत्थ गदं च ममं **नीलयसा** भणदि— अज्जपुत्त ! कज्जं जायं । एस ते अंजली, नारहसि पियसहिं **पियंगुसुंदरिं** दट्ठूणं मया सह मिलिउं ति, विसमा हु तीए अवत्था वट्टति त्ति।

ततो सा एवं भणमाणी मया बलाकड्ढिता सकुसुम-पवर-पल्लवत्थुरणं आरोविता मे विपुलं सिला-सयणीयं, खणमेत्तं व तत्थ तीए सह कत-पडिहासो ततो कद-सलिलकज्जो य तीए कद-सलिल-कज्जाए सह कंठालग्गो णहंगणं समुप्पतितो । खणमेत्तेण य **सावत्थी**ए णरवइ-प्पड(?पहं) समोवडिता, अदूर-ठिएहिं य अम्हेहिं **पियंगुसुंदरि**-वासघरासन्नगतेहिं सयं अदीसमाणेहिं दिट्ठा **पियंगुसुंदरी कोमुदिया** सहिया मम विरह-चिंता-सोग-सोसित-खाम-कवोला हम्मियतलारूढा उदयगिरि-सिहर-लग्गा[१०] वित्तासहदा(?)[११] इव बाल-मियंक-लेहा अवगद-निद्दा **नीलयसा**-आगमण-दिसावलोगण-मुही अच्छमाणी । ततो **नीलयसा** य ममं अंतद्धिद-रूवं अंतद्धिया भणइ— इह ताव ठियाइं सुणामो से **कोमुदीयाए** सह वीसत्थ-मंतिताइं ति । मया तह त्ति पडिवन्नं।

एदम्मि देसकाले **कोमुदियाए** भणियं— अहो ! अज्जपुत्तेण अम्ह सामिणी अच्चंत-सुहलालिता, अच्चंत सोगभागिणी कदा । के दाणि तस्स लोगा भविस्संति ?

ततो **पियंगुसुंदरी**ए दर-पुन्नस्सणाए ण भणियं— हला **कोमुदीए** ! जइ अज्जपुत्तो **नीलयसाए** सह णागच्छति, ततो अज्जेव जीवितं परिच्चयामि। एसा मे पइन्ना ।

एवं तीए भणितमेत्ते **नीलयसाए** भणितं(?तो) हं— पियदम ! सुयं ते णदंसि(?) एरिसा हु अवत्था पियाए ते वट्टइ । तुब्भे पुण एगंत-पमुइता कामिणिजण-सहिता गयं पि कालं न याणह ।

पुणो य णाए भणियं-पियदम ! अच्छह ताव तुब्भे इहं पच्छन्ना जाव से अहं दंसणं दादुं भणामि— सुंदरि ! नागतो ते भत्ता, जं जाणह तं करेह। पेच्छामि ताव किं भणदि ।

मया भणियं— पिए ! अलं परिहासेण । कताइ एसा उक्कंठिता आसाभिभूता णाहिति भणितमेत्ते चेव जीविदं परिच्चएज्ज । ततो से लहुं दंसेहि ममं ति ।

ततो **नीलयसाए** अहं आगासातो सुंति(?) पुरतो से अवतारिओ, भणिता य तीए- पियसहि ! एस ते पिओ । कल्लाणि ! सुउवट्ठिदो, गेण्ह णं कंठे ति।

ततो सा ममं दट्ठूणं 'हा णिग्घिण !' त्ति बेंती पम्हुट्ठ-विणय-कम्मा लग्गा मे गले आसत्तवलयपजालित[१२](?) ललित-भुयासु रलादिप्पंत(?) मत्थय मणिप्पभा इव णागकन्ना चंद[ण]दुमासत्त विमल-जवल-फडाधारिणी । अहं ति(?तं) तहालग्गं चेव घेत्तूणं कोमुदिया-विन्नत्थे आसणे निसन्नो हं । सुचिरं च अच्छिदूणं तं सिढिल-गत्तं लक्खेमि ण य वाहिप्पंती(?) वि किंचि वाहरइ। ततो से दिन्नो हिदए हत्थो लक्खितो य से [१३]निरुद्ध(?) निरुस्सासो। चिंतितं च मे संकिद-हियएणं- किं मन्ने एस चिरं जीविऊण इदाणि स(?म)मागमणे पिया मदा होज्ज त्ति । ततो मया जाणंतेण रहस्सं परामट्ठाणि से वाम-हत्थेण [१४]ऊरियाणि(?) णवरं मे ताइं सेएण पाणियं पिव विणिमुयइ। ततो मे चिंतितं— ण मदा अणुहवइ व बहु दुक्खा मम दंसणेण महता संखोभाहदा मोहं उवगदा । अवि य,

मम उच्छंग-णुवन्ना निद्दय-दुक्खाहदा निरुस्सासा ।
जियति त्ति णवरि णज्जइ पसिज्जंतेसु ऊरुसु ॥

ततो मया सावेगेण भणितं— **कोमुदिए** ! मुच्छिदा हु पिया, सिग्घं सलिलमाणेहि त्ति ।

ततो तीए कणग-भिंगार-निसट्ठाए सलिल-धाराए अब्भुक्खित्ता मया वि करतल-दिन्नेण सलिलेण वदणे समत्थालदा(?च्छालिदा) संमज्जिता य

जल-कलसिन्नुकेवयवादपि(?) एदाय समासत्था । समुदित-दुक्खाय परिदित(?परुदितं) हिदय-खोभणकरं, **कोमुदिताए** य भणिता— सामिणि ! अलमित्तिएण मण्णुणा, णारहसि आणंद-काले सोग-कारणं दंसेदुं ति । ततो उवसंतो(?ता) परिसंतिया य मया अणुत्तालं भणंतेणं । ततो मुक्क-कंठग्गहणा उट्ठेऊण पडिदा मम पादेसु । पणमंती य मया आकड्ढिऊणं अंके निवेसिता। ततो **कोमुदिया**-विदिन्नेणं सलिलेणं मया तीए सयमेव सोइदं वदणयं । ततो सुक्ख-दुक्ख-कहाओ नाइचिरं करेंती **नीलयसाए** हत्थे घेत्तूणमाकड्ढिता एगंते ण्हाविता गहिद-वत्थालंकार-विलेवण-धूव-वंजण-सयणा(?) उवट्ठविता मम ताव य **कोमुदिया** परयदंमणीयं(?) । ततो हं तं तक्खुविऊणं पविट्ठो वासगिहं विलग्गो य रति-जोग्गं, तत्थ तीय सहिताभिरमंतस्स पभाता रयणी। अवि य—

काकंदि-पसुत्तत्थ(?स्स) **मुत्तावलि-ललितमो(?वेगा)**ण रत्तम्मा(?स्स) ।

सावत्थीए पभातं अन्न-पिया-लग्ग-हिदयस्स ॥

निवेदिदं च रन्नो **कोमुदियाए** ममागमणं, तेण य से(?मे) पियाक्खाण-परितोसितेण दिन्नं सद-सहस्स-सहिदं स(?म)म सरीर-लग्गं अलंकारियं वत्थाणि य। आणत्ता य रन्ना परम-तुट्ठेण णगरीए अकाल-कोमुदी। अहमवि पच्चूसे गहिद-मुहधोवणो पियासु सुकय-पडिकम्मो बाहिरोवट्ठाण-गदस्स सुह-[नि]सन्नस्स अल्लीणो हं विणएण[?.....] तेण य अहं पणमंतो सरभसमब्भुट्ठिओ हं अवतासेऊण अग्घादो सिरे निवेसितो य मि तेण अद्धासणे य । दिट्ठो मे तत्थ व(?बि)दिय सु(?स)सुरो सेट्ठी **कामदेवो**। तेण य अहं पूइतो, रन्ना संतेऊरेणं, भणिदं च रणा(?ण्णा)—अहो देवेण मम कामदेवस्स इह भवे चेव दो भव-गहणाइं दंसिदाइं पयति महिगोयर-राइणं पि हु अम्ह सुता देवेण विज्जाधर-राइणा कदा, अच्छेरयं ति ।

कामदेवेण भणितं— रायं ! किमच्छेरयं ?

उत्तम-सेवा-णिरता अचिरा पावंति उत्तमं ठाणं
कागो वि कणग-वन्नो मंदरगिरि-संसितो होति ॥

ततो पुणो राइणा भणियं—देव ! तुह पसादेण विज्जाधर-देवत्तमुवगदेसु मत्त(?ह)ता विभूतीए पूएस्सामो मम **कामदेवस्स** य संतिएसु

इहमागदेसु तेसु सहि[?तेसु] विमाणारूढेसु अम्हेसु वि संतेऊरेसु आगास-गमण-कोदुअं माणिदं, तं सव्वं तुह पसादेण । अच्छेरयं अहो सन्नवो(?) जातो।

ततो तेसु विसज्जिदो [?हं] पुणरवि य पिया-सगासं उवगदो । आणाविदा य मए **कामदेव**-धरा(?धूदा) तत्थ पिया **बंधुमती** । सा वि मे पणमंती आलिंगेऊण अद्धासणे निवेसिता सरीर-सुहं च पुच्छिदा सो(?मे) । ततो **पियंगुसुंदरि-बंधुमतीसु** वि मम कहितं—अज्जपुत्त ! त्तसं(?तुज्झ) पसादेण महता सुर-विमाण-सरिसेहिं महा-विमाणेहिं अम्ह भादुणो इहमागदा आसि, लोगच्छेरयं जा(?ज)णंता अणेग-विज्जाधर-भड-वंद-सहिता सुरलोग-सरिसं विभूदिं मे दंसेऊणं पितीसु पूइदा पडिगता य विज्जाधर-लोगं चेव ।

एदम्मि देस-काले अल्लीणो मम विणएणं परमुक्कंठित-हिदयो **गंगरक्खिओ** । से(?सो) य मे पुव्वासेणं ससुरं तेणं पूइतो मे महताभरणविभूतीए, छिन्नं से जावज्जीवाए दरिद्दं । ततो तिसु वि पिणा(?या)सु सहितो मण-चिंता-तावणं(?) च पवर-परिभोगो सुहं अभिरमामि । तत्थ याहं बहु-गलिए आसाढ-मासे ततो आगदो निदाह-सेस वासारत्तो य सगाजा(?) तत्थेव गलितो मे ।

अह अन्नदा कदाइं सरद-काल-समयम्मि वट्टंते पदोस-काले हम्मिय-तल-गयम्मि सयणे(?णि)ज्जे उवउत्त-रति-रसायण-पाणो तवप्पउ(?) **पियंगुसुंदरि**-सहितो सुहप्पसुत्तो पुव्व-परियितेणं सद्देणं अज्जपुत्त अज्जपुत्त त्ति वाहिप्पमाणो परिबुद्धो हं । ततो सुमीलित-णयणो पेच्छामि पियं **पवणजव**-सुदं **पभावदिं** पिव सरद-चंद्र(?द)-काति(?कंतिं) **पभावदिं** । ततो तीये(?ए) वंदितो हं दट्ठूण तिं सरद-दिणयर-बिंब-ज़्जुतिं पिव तेयप्पभाव-भासुरं । समुट्ठिओ हं तीए सगासं समल्लीणो । सा य मे पुणो वि पणमंती गाढं समालिंगिता, परिचुंबिदा य उच्छंगे य कादुं णिसन्नो हं । तत्थ सण्णिहिद-कणगपीढेण य विज्जा-पभावोवसोविता **पियंगुसुंदरी** चेव । ततो मे अभिप्पसादयंतेण भणिया **पभावदी**-पिए ! पिथुलसोणि ! सागतं ते। किंतु पुच्छामि ते किमहं अज्ज तुमे सुमरितो त्ति । तीए भणियं— कदा वा अहं तुब्भे ण सुमरामि ? अहं पुण एवं सुमरामि जेण तत्थ गदस्स वि तुह पासं अभिक्खणं अल्लियामि । किंतु इह महिला-पास-गतस्स आवावि(?दि)-काले पिए त्ति साण(?) गहिदा ण अल्लियामि अभित्राणं च ते **वाणारसीए**

मयूरसेणा-पास-गतस्स तत्थ ते **रयणवदि**मंतरेणं कंचिदाम-दंसणे काक(?) चित्तोवगदस्स विज्जा-पभावेण णात-परमत्थाए आवरेऊण **मयूरसे**णा एसोमत-विसय(?) । ततो तेण कन्न-मूले भणिदं मे— अइ अणामित अहो तेणादियं-गुलीए अवत्तएणं पर जुवदि-चित्त-गहणेसु निब्भरं तं हिदयं ति एवं ते अभिन्नाणं । ततो अहममि(?वि) तुह दंसणेण तप्पेऊण णयणाइं असमत्त-मणोरहा दीहं नीससिऊणं पडिगदा सणगरं चेव । अन्नदा य अहं पुव्व-रत्तावरत्त-काले चिंतेमि- अहो ! सति महप्पे अज्जपुत्तस्स **सोमसिरीए** हलियवदित्तणं(?) समणुभूदं, ण य णाम अहं पि निग्घिणा इदाणिं तीए पासं कदाइ वच्चामि । एवं चिंतेऊण बितिय-दिवसे गतो(?ता) हं **सुवन्ननाभं** नगरं **सोमसि[रिए]** सगासं । ततो सा परम-दुक्खिता मम गलिऊण दुह(तुह?) विरह-पवर-मट्ठ(?णट्ठ)-सुहं चिंता-खोम-परिकिलंत-तणु सोप्पणदाए(?) मंदमंदस्सणा परुदिता कलुणगाइं वयणाइं जंपमाणी य किहं व किच्छाभ(?हि) निवारिता लूहेऊण य अंसुयाइं सणीयं मम भणइ— वयंसि ! ड(?तु)मे वि अहं परिचत्ता ? ण देसिमिदाणि मे दंसणं ति । मया भणिया— वयंसि ! अवणी(?) एस सव्वमेतं ति । तत्थ ते खमावेमि त्ति । ततो तीए रुयंतीए भणियं— अत्थि पुण **पभावदी** जाणदि कत्थ संपदं अज्जपुत्तो त्ति । मया विज्जा-पभावेण भणिदा— पिय-सह(?हि) ! जाणामि । पुणो वि **पियंगुसुंदरि**-सगासे चेव वट्टदि । ततो सा महदा दुक्ख-समक्कंता कुहुकुहुकुहुस्स रुयमाणी भणइ— अहो ! मम मंदपुन्नाए जावज्जीवं बंदित्तणं जादं ति । ततो मया वि तक्खणुप्पन्न-तिव्व-दुक्खाए समासासिता, भणिता य— वयंसि ! अलमिदाणिं विसादेण । अवगदाणि दे इदाणिं सव्वदुक्खाइं। जिता ते भत्तुणा सव्व-विज्जाधर-रिवुणो देवीए **वेगवदि**-जणणीए बहुमाणेणं एदस्स **माणसवेग**स्स पव्वव्विरं(?) पिएणं ते मरिसिदं, इदाणि एदस्स गंधलोह-परिधारियस्स व सहयारस्स जहा आगतो पाग-कालो । तीए भणियं— क्क(?कु)तो मे एत्तियाइं पुन्नाइं जं अज्जपुत्तस्स **माणसवेग**-दस्सुयं जणणी(?जिणी)हिति ? । मया भणिया— धिर्दि करेहि । एस ते अज्ज माअसिवाए(?) गदीए अज्जपुत्तं इहाणेमि । तीए भणियं— वयंसि। अलसामि देणं । सो पुण **माणसवेगे**णं बंधेदुं बला मारिज्जहिति । मया भणिया— मा भीयसु । अइक्कंतो हु सो कालो जत्थ पत्ते(?) **माणसवेगस्स** गम्मो आसि । संपदं अज्जपुत्तस्स दु विज्जाधर सेढी च वसे वट्टति ।

दच्छिसि दी(?ही) दाणि अव(?चि)रेण **माणसवेगस्स** अलच्छि, लच्छि च विउलं णियय-भत्तुणो त्ति । अचिरा(?रं) दच्छिसि सयल-विज्जाधर-राय-चक्कस्स मज्झे णादिच्छदं रिवुदारेणं करेत्त मज्झे वुत्तं दणु इंद विणय कज्जज्ज दंसव्व सुरसमितिसमागमसहिदं इदं पिव सयं जादबिंबं । एव समासासेदूण तइं गलिते दियसे अज्ज पदोस-काले उप्पतिऊण इदाणिं इहमागतसि(? गतामि)। तं एस परमत्थो । निरिग्घिणि(?) पुछामे(?मि) ते । इदाणि का ते धिदी तीए तवस्सिणीए पर सत्थेण गदाए तह किलेसं अणुभवंतीए हो तो एसि माण सूअदा गहिदा । जदि तीए बंद(?ध) मोक्खं काऊण अणंगवसगो एव अभिरमसि ? । तं उट्ठेहि ताव वछं(?) वच्चामो त्ति, सोइज्जदु **सोमसिरी** । ततो मया दो(?वा)सघर-कुड्डे लिखिताइं तासिं तत्थ गताइं ति दोण्ह वि पियाण अणुमाणणा-वयणाइं । ततो भणिदा म[या] **पभावदी**— पिए ! णेहि **सोमसिरी**-सगासं ति ।

ततो सा घेत्तूण ममं तेणं चिय पुव्व-गदि-पहेणं पधाविता उत्तर-दिसं। तेण पवर-सुरवधु-समाण वेगो(?गा) भणिदा य मे णभतलगदेणं— पिए **पभावदि** ! सद्धा मे तम्मि चेव तदादिट्ठ-पुव्वे रातपाणियं(?) पादुं ति। तीए भणियं— पियदम ! अप्पा हु ते सिद्धाएसो वि सो च्चेव । सरद-कालो वट्टति सकमल-जलोवसोभितो । अवतारेसि(?मि) ते पियवणं ति । एव भणंतीए अवतारितो हं तम्मि पढम-सरे । भणति य— दइद ! पिय एदं पउमुप्प[ल]-सुरभि-वासितं सलिलं मि(ति) । मया भणिया— पिए ! पच्छा वि णाम पीहामि । तुब्भे स[हि]तो तं ताव सत्तिवण्ण-पादवं दट्ठुमिच्छामि । तीए भणियं— किं तुह तेण ? । मया भणिया— इट्ठो हु सो मम, दट्ठुमिच्छामि । ततो तीए अहं हत्थे घेत्तूणं परुटित(?)-वलय-मेहला-कलाव-कर-वसण-रसणावबोधित-भमर-मधुयर-विरुत-हुंकार-संवुतो पवेसितो हं सरद-काल-समय-कुसुम-सुरभि-वर-सत्ति[व]न्न-कुसुमोवभासितं वणसंडं, णीदो य तं सत्तिवन्न-पादवं विविध-लता-विताण-संताणिय-सव्व-दिसाभोगं सुरभि-वर-कुसुम-णिडित-दुव्वंकुर-हरिद-सत्थरोत्थर-महितल-नितंबं । तत्थ य नमिऊणं मया भणिया **पभावदी**— पिए ! तदा ति(?ते) मम इहगदस्स कदो पणय-भंगो । इदाणिं वि ताव इमं सत्तिवन्नं पादवं वणसंडं च माणोनिमि(?) ति । तीए भणियं— ण ण त्ति । इदाणि वि सो च्चेव **सोमसिरी** हिदय-गता ममं वारयति । ता(?ना)हं एरिसं करेमि । मया चिंतितं नूणं **पभावती** काम-तत्त-वियाणिया वणयालोलु(?) अहं । इच्छंती

ण्णोच्छति(?) संपतं ति एवं चिंतयंते सा वलो(?बला)कयग्गहाकट्ठ(?ड्ढि)दा परिच्चवि(?चुंबि)ऊणं समारोविदा कुसुम-सयणं । कदं च से मया तत्थ वणसंड-पवेसाणुरूवं सुरतं, केलि-परिहासाणुअं कदं से मया रइ-पसायणं ति। रतावसाणे य कत-सलिल-कज्जा ममं घेत्तूण उप्पइता नहंगणं, खणेण पत्त(?त्ता) **सुवण्णणाभं** सोमसिरि-सगासं च **माणसवेग**-पमदवण-दार समोवदिदा । दिट्ठा य मे **सोमसिरी** परम-चिंता-सोग-सोसित-सरीरा । भणिता य **पभावदीए**—वयंसि ! एस ते भत्ता मया इहाणीओ, धिदिं लभ । ततो सा ममं दट्ठूण सरभसमुट्ठिदा ए(प)णमंती य मया धणियं समालिंगिता । रुयमाणी य भणिता **पभावतीए**—पिय-सहि ! णारहसि रोनि(?दि)तुं । मा ताव पुणो अकद-सामत्थं अज्जपुत्तं रिसूपु(?रिवूसु) गेण्हावसि । उवसम भो(?रो)त्तव्वयातो त्ति । तओ सा भयभीता उवसंता, स(?म)मादेसेण य **पभावदीए** ण्ह(?ण्हा)विता अलंकिता विभूसिता य पवर-वत्थ-परिहिदा सुकत-पडिकम्मा उवणीता मम सगासं । मया **पभावइ**-विज्जा-विगप्पित-सयण-तल-गदेण उच्छंग-निवेसिता सुह-दुक्ख-कहाओ कादुं पयत्ता, भणिदा य **पभावदी**— पिए ! सेरेज्जा(?) चेव इदाणि गंतूणं **चक्कणाभातो** णयराओ खयरपति ता **सुवेगं** मम सगासं विसज्जेह। तं विसज्जिते ततो **सुवन्नमंजरिं** गंतूणं मम वयणेण णिययं विवरं(?) कतिपय-विज्जाधर-सहिदं घेत्तूण सह इहागच्छध त्ति । ततो सा एव भणिदा जइण-वेगा अचिरेण य सह पिउणा कतिपय-विज्जाधर-म(?स)हिएणं अंतद्धिएणं विज्जाधराणमागदा **पभावदी** । ताण अणसमयं च तेणेव कमेण उदगोदा(?वगदो) राया **सुवेगो** । ममं बहुधा अवरट्ठे एस समए भारिया एव चिरं इह वरिज्ज **साएतेण** वि वरिया ततो से अज्ज विज्जाधर-राय-मंडल समक्कंत संबंध दोसेण ठावेऊण अज्ज उदित(?ते) सूरे पिणयिणं(?) जहा सीतं तुब्भे उभय-सेढीसु वि संपदं चेव मम पक्खिया विज्जाधराणं चेव सव(?) लहुकरणे पूते मम वयणे जहा सव्व बल य समुदय-सहिता सिग्घं सव्व-विज्जाधर-रायाणो वयंसा य मे रयणीए चेव इहमागंतुं अदूरे अंतद्धिद सयबला दिक्खंतु अरुणोदयकालं विसासेण य मम वयणेण विसज्जिता उत्तरा सेढीए एगराण(?) चलंत **मग[?हाधि]व-चंदाभस्स** विज्जाधर-राइणो जहा तुमे सव्व-बलेणं सिग्घं मम संबंधि-विज्जाधरेसु सह आगंतव्वं ति । ततो मया इव भणिते समाणे रतेसु तक्खणं चेव दिसि दिसि दिसं व विज्जादेवताओ विज्जाधराओ विसज्जिता । मे

आणाए आवाहित-णियतेहिं वि णय बलाइं अदूरा देसे **आसाढगिरि**-से(?सि)हरस्स अन्नस्स [?.....] ।

मया भणिदा— देवि ! तुहाणुवत्ती बहुमाणेण **माणसवेगस्स** एवच्चिरं मरिसिदं, तं इदाणिं विदितं वो होदु णाहं एदस्स सावेक्खस्स मरिसयामि । एस परमत्थो ति ।

तीए भणियं— जाणामि, पुत्तय ! सुणामि ते चरिदाणि पभवंतो ण वि बहुं तुमे सु [१५]आणवत्तीए एदस्स खमितं, तह वि जाव बलाइं संगलंति ताव अंतद्धिओ अच्छाहि त्ति ।

तओ मया तीए बहुमाणेण तह त्ति पडिवन्नं । दिन्ना य मे **पभावदीय** जाइदा पन्नत्ती, ततो तीए मया पच्छादिता णियय-मुत्ती णवरं च उदिते सूरे **माणसवेगो** सव्वालंकार-विभूसितं **सोमसिरीं** दट्ठूण भणइ— णीसंसयं खु सो दुरायारो महिगोयरो इहागतो, जतो इमा अज्ज **सोमसिरि** यापक्खहत्थिणी(?) विव संभजता(?) दीसति । भणति य समच्छरो सासुयं— किमेसा अज्ज पदिवदा एव णडी पिव मंडिता सुमाणसा द(?य) दीसति, संगमे ममं जूरावेदिच्छइ(?) तं लद्धं खु जादं जं सो महिगोयरो पसूत सूणेकारं केण वि मम पमदवणं पवेसिदो। करेमि से मज्जादं, पेच्छदु अज्जेव जमस्स अइ-निट्ठुरं वदणं ।

एवं च सो संलवइ, ताव य अंतद्धिदा **अंसुमंत**-सहिया पडियागदा **पवणजव-वायुवेग**-संतिया दूता । पणमंतो य मया अवतासितो **अंसुमंतो** । निवेदिदं तेण ममं जहा उभय-सेढि-वासिनो(?णो) वि तुह संबंधिणो विज्जाहर-रायाणो सह बंधवेण सुहिणो य ते सव्वे सव्व-बलेण सहिदा उवगदा, अदूरे संणामित्त(?संण्णामेत्त)-पविट्ठिदा विज्जा-पच्छादित्त-बला य अच्छंति । [१६]इय सो णिवेदेति ताव य अंतद्धिद-रूवो **चंदयस-कुमार**-सहिदो आगदो मम सगासं **चंदप्पभो** राया । तेण य अहं पणमिदुकामो पुव्वतरं पणमिऊण भणिदो— [१७]आनिप्फुयं(?) देव ! सव्व-विज्जाधर-रायं ! मंडल-पमाणभूतो कीस कस्सइ तुमं पणमसि ? [१८]सव्वपयत्थेसु णमरुहो तुमं चेव कम्म-जेट्ठो य । किं-पुण, भणामि [१९]रुट्ठो ते अहं जं तुमे **मंदरदेव**-[२०]जिणंतेण जुद्ध-काले अहं णामंतितो त्ति ।

मया भणियं— रायं ! [२१]महंतो एस अवराहो, पसादेमि गुरुजणं ति।

ततो तेण सहरिसेण भणियं— अहं चेव पादे पसादेस्सं किंतु भणामि किं विलंबध, आहणवा(?ध) विज्जाहंसकारयं दुरायारं **माणसवेगं** ति ।

मया भणियं— रायं ! देवी **वेगवती**-जणणी जणणी व मम बहुमदा सिणेहमंता य, तीए बहुमाण-गोरवेण ण ताव निग्गच्छामि ।

ताव **माणसवे**गेणं आणत्ता णियय-विज्जाहरा गेण्हह इमं मम भएण पच्छन्न[-अच्छ]माणं दुरायारं महिगोयरं, सिग्घं बंधेध य अविलंबिदं ति ।

ततो तेण एवं भासिदे 'मम भएण पच्छन्नरूवो अच्छति' त्ति एदं वयणं असहमाणेण सामरिसं पहसंतेणं दंसिओ मदा अप्पा खग्ग-खेडय-पाणिणा य आगारिदा(?दो) मदा-अरे रे ! कुविज्जाहर ! नाहं तुह संतिएण भएण पच्छन्नो अच्छामि, ण य हं तुह संतियाण विज्जाहराणं गम्मो । सयमेव ममं उबद्ध(?) त्ति, जा ते दप्पं पणासेमि ।

ततो सो मम [२२]वद्धंभं(?) पेच्छंतो सुणंतो य मम गज्जिदं महा-मइंदरोधेतो(?धिता) इह(?व) [२३]गयपोताणाइं(?) चिरं णिविट्ठो इव लक्खितो मे, पच्छा एगागि त्ति य [२४]एसो मम [२५]परिभ(?ग)णंतो पुणो भणति नियय-विज्जाहरे—पहणह भो ! एदं सिग्घं महिगोयरं ति । एयम्मि देसकाले अंतद्धिएण थोवुप्पइतेण [२६]भे केण यि(?इ) मम पक्खिएण विज्जाधरेण गीदं इमेण अत्थेण जहा—

जेण वर-खयर-चक्की सूरो समरम्मि **तिसिहरो** णिहदो ।
ण हु सो केण इ वज्झदि वहकारओ एत्थ ॥

ततो सो एदेण गीदत्थेण सुट्ठुतरं परिकुविदो मम गहणकज्जे सन्न(?न्नि)हिदुं पयत्तो, णवरं च **वेगवदि**-परियणो मम पक्खेण उट्ठिदो **माणसवेगं** निवारयंतो भणइ— कीस एस वज्झदि ? णात(?ण ते) [२७]कामगारं देरंमो(?) ण एस तुह कत्थइ अवरज्झदि, तुमं चेव एदस्स अवरज्झइ भारियं अवहरंतो ।

तेण भणियं—नाहं तुब्भं [२८]मुणामि । एस मे अज्ज अवस्स घादेयव्वो।

ताव य आगासे वाया पादुब्भूता, जहा—

णिहदो **मंदरदेवो** विज्जाहर-लोग-बलवओ जेणं ।
ममपादेण(?) व सीहो ण हु सक्का सो तुमं हंदुं ॥

तं [२९]एसो च्चिय तुब्भं दारुण-रण-रभस-मज्झयारम्मि ।
मरुजाद-पादवस्स व कड्ढीहिति जीव(?वं) सूयतिदोस(?) ॥

[३०]सतपोसिदस्स(?) दुहं [३१]तिणस्स व हरित वड्ढितबलस्स ।
अक्कंतसोयरो(?) मयपति व्व भंजीहिति खंधं ॥

तं च सोऊण संकिदो **माणसवेगो** चिंतेदि—ण [३२]एदं निक्कारणं ति।

एदम्मि देस-काले भणितो सो जणणीए- पुत्त ! **माणसवेग** ! [३२]एदं सुणाहि, दे ताव उवसमाहि, मुंचाहि एदं असग्गाहं । अह ण मुंचति ततो सह एदेण तुहं वच्चंति तत्थ य पहरंसण(?) जो [३३]जेउदितेण(?) विसमे देदुं अणुसमयस्स जो जं जाणेज्ज सो तं करेज्ज ।

तेण संकिद-हिदएण अब्भुवगद वन्ना सह भरामि सह एदेणं ततो तेण एवं पडिवन्ने उवगदा देवी **अहीरवदी** मम सगासं, भणति य मे— पुत्त ! इमो हुं **माणसवेगो** [३४]ववहार-करणेज्जो ता तुब्भं किं भणह ?

मया भणियं—देवीओ सुणह, एस णीय पुरिसो मया पुव्वं चिय ववहाराओ भासितो, ण य तत्तिए ठिदो । एसो पुणो विय जितो ण चेव ठाहिति सो । तं नाहं एदस्स इदाणिं ववहारं देमि, मे इदाणि परलोग गय(?) ववदेसं। एस परमत्थो ।

ततो तेण एदं मम भासितं सोऊणं भीद-हिदएणं तक्खणं चेव विसज्जिता दूता **अंगार-नीलकंठ-हेफगाण** जहा एस सो तुब्भं सह मया [३६]अवराहिदो, तं सिग्घमागच्छह । [३७]हंमिहं जा एदं अज्जेव जमपुरे ठवियं पेसामो त्ति ।

तेसु य गदेसु दूतेसु पुणो वि पाद-पडिदा देवी ममं विन्नवेदि—इच्छसु ववहारं ति ।

ततो तीए वयणेण मया तह त्ति पडिवन्नं । भणिदा य मे देवि [३८]जहा ण सो जिदो व [३९]संतो ण [४०]वायइ अदो एदस्स किं करेव्वं ति ।

तीए भणियं— पुत्त ! ततो जं जाणह तं करेज्जाह ।

ततो मया भणियं— जइ एवं ततो पुच्छह एदं कस्स पुरतो ववहरिदुमिच्छदि ।

तेण पुच्छिदेण भणियं— पाएण सव्व विज्जाहर-राइणो एदस्स चेव

पक्खे, ण ततो तेसिं पुरतो ववहरामि । ववहारो पुण से होदु पयत्तंति(?) पुर-पच्छिएस(?पत्थिवस्स) विज्जाहर-राइणो **बलसीहस्स** पुरतो, सो मज्झत्थो सम्मं पेच्छीहिति।

मया 'तह त्ति' पडिवन्नं । ततो वलितो ममं आगारेउं तत्थ सपरिवारो **माणसवेगो** संतेपुराणुयातो से जणणीए । अहं च **सोमसिरि-प्पभावदी**सु सहितो सहीदो य दूरं नहतलगदेसु अंतद्धिदेसु बलसहिदेसु पवर-विज्जाहर-णरवदीसु अणु[?गम्म]माणो उप्पतितो हं णहंगणं । सव्वदि(?) य दूरे णहतलेण संपट्ठिदाणं विज्जाधर-बलाणं अदिट्ठ-रूवाणं घुमुघुमुघुमायंति गहिर-सुसरो सद्दो । तं अणुवउत्तो विज्जासु ण याणइ **माणसवेगो** किमेतं ति । खणेण पत्ता य मो पययंति(?) **बलसीह**-राइणो फुरि(?) दिट्ठो य सोपगते बाहिं पुरीए पवर-पुरिसधिट्ठाए सभाए सभडवंद-परिकिन्नो स(?सी)हासणत्थो राया **बलसीहो** । सो य ममं दट्ठूण अब्भुट्ठिदो भणइ— सागदं देवस्स । एवं भणंतेण वंदितो हं । दिन्नं च तेण ममं तं चेव नियया सणं । भणदि— देव! निसीयध त्ति । ततो तत्थ निसन्नो हं । **माणसवेगेण** य सासूयं भणिदो **बलसीहो**— कीस तुमं एदस्स महिगोयरस्स सायरं वंदेहि त्ति । मया भणियं— कहय एदेसिं जो संपदं सव्व-विज्जाहराधिवती वंदति । पणएण **माणसवेगेण** भणियं— किं भो ! इहं पि संबंधी एसो त्ति । तेण भणियं— किं खु जाणइ ण सुदं ते जहा मम भागिणेयी **पिंगलगंधार**-सुता **अमितप्पभाय** देवीए कन्ना **पभावती** [?.....] एदस्स पसादेण सव्व विज्जा एदस्स चेव दत्ता । न ताव से पाणिग्गहणं कीरति त्ति। ततो **माणसवेगेण** भणियं— ण मया जाणितं जहा तुब्भे एदस्स संबंधिणो त्ति, अन्नहा हं **ववहार-कज्जेणं ण चेव इह गच्छंतो व अज्ज वि अन्नत्थ ववहारत्थे वच्चामि** त्ति ।

बलसीहेण भणियं— कदरो वा सणो(?अण्णो) विज्जाहरराया जो एदस्स ण संबंधी ? तं अलं विसादेण । इहेव णं ववहरमाणाणं असंतेण अत्ताणं उवहणामि, असंतं पुण अन्नत्थ वि ण लभदि । तं एस ट्ठिओ हं मज्झत्थो जो असंतकारी तं वा हरेहामि । ततो तेण एव भणिदो(?दे) तस्स चेव पुरतो पयत्तो ववहारो । तत्थ माणसवेगेण भणितं— सुण रायं ! एदेण मम अंतेउरं धरिसिदं । भगिणी य मे एदेण अदिन्ना सयमेव पडिवन्न त्ति ।

मया भणिदं— मिच्छामेदं, णाहं एदस्स अंतेउरं अच्छीसु वि

पेच्छामि। मम एदिणा [४१]पुव्वामेव भारिया अवहिदा मणुयलोगातो । तीए वियोगे अहं खेतवितो विलवंतो एदस्स भगिणीए मम वधूरूव-ठियाए अहं पडिवन्नो, न य एदं अम्ह [४२]भाणिदुं वट्टइ । एस चेव एदं पगासयति । ततो भणति अंतेउर-धरसगो त्ति, तत्थ सुणह, जा सा एदेण पुव्वं मम भारिया अवहिदा सा एदेण अणिच्छंती देवता-वयण-भेसितेण पमदवणे ठाविता । तीए [४३]कड्ढण आगदो अहमेतेण पुव्वं पि खलीकदो । एसो य मया तत्थ वि **वायुवेगादीणं** विज्जाहर-रायाणं अग्गतो णिग्गहितो, ण य उवसमति ।

ततो **बलसीहेण** रन्ना णिकाय-वुड्ढ-सहिदेण भणिदो **माणसवेगो—माणसवेग** ! फुडं भणामि ते भगिणी ववहारे ताव तुमं न सोभसि । अम्हं पि एदं विज्जा-पभावेण पच्चक्खं चेव । जं पुण अंतेउर-[४४]धरिसगो त्ति भणसि, तं पि एसो मिच्छाकरेति । अवि य, तुमं चिय दोसकारी दिस्ससि[४५] जो से अणावरद्धस्स भारियं अवहरसि ।

तेण भणियं— ण सा एदस्स भारिया, सा ममं चेव भारिया ।

पासिणिएसु भणियं— किह सा तव भारिया होति ?

माणसवेगेण भणियं— सुणह, अहं कदाइ महापुरोधे णंए(?एणं) समतिच्छमाणो रमणीयं रायभवणं दट्ठुकामो भादुगेणं तत्थ उवरिमं भुम्मे समोवतितो । तत्थ य **महापुरस्स** रन्नो **महादेवी** अवर-भद्दासण-निसन्ना महादेवी-पडिरूवं बालियं उच्छं[ग-ग]दं परियंददि । अहं च तत्थ अंतद्धियरूवो पेच्छामि ति । तीए परियंदंतीए भणियं— विज्जाहर ! विज्जाहर! इमं बालियं गेण्हाहि त्ति । एवं भणंतीए मया भणिदं— देवि ! [४६]पच्छि(?त्थि)दा मदा एसा, जोव्वणत्थं पुण सा धज्जीहामि । एवं भणिदुं स-पुरं आगदो । पच्छा एदेण पडिवन्ना, सुत-परमत्थेण य मया पुव्वदत्ता काउं अवहिदा मे, ण हु एदस्स भारिया कादुं ।

ततो पासणिएसु भणिदो अहं— कहय तुह पुण कहं सा भारिया तप्पढमदाए हत्थमागदा ।

मया भणियं— सा मि(?मे) पुणो सयमेव दिन्ना ।

ततो पासणिएहिं भणियं— विज्जाहर, मं दारियं गेण्हाहि त्ति तदा [४७]तुमं हिसज्जासाधेतोसि(?) जो अवव्वं(?) भणिज्जासि, किं सा रायमहिसी जाणइ पेच्छति व तुमं जहा विज्जाधरो आगदो त्ति । उदाहु तं परियंदणयं चेव ।

तेण भणितं जं सव्वं तं अहम्मि(?) समए अंतद्धिदो सा ममं पेच्छइ किंतु [५९]सुदो मसं(?मं) तीए पडिच्छमाणो सद्दो । ततो **बलसीहेण** भणियं— जति जं परियंदणएसु भण(?णि)ज्जति तं सव्वं सच्चं हवेज्ज ततो [६०]सवलोगलरुयाइं(?) वहविज्ज(?) । अवि य पच्चक्ख सररोक्खवा(?) जति कल्लाहींती(?) ततो कन्नालिय-भएण वितियं अन्नाणं अन्नस्स असमिक्खिदेण दिज्जंति, अहवा कदाइ दिज्जवि(?दि) इत्थी कन्नग(?गा) कस्स य न य तं पमाणं होइ । किं-कारणं, जेण सव्वं लोगस्स पसिद्धं पितिप्पदेया हु कन्नगा। तं अलं काकतालिय-णाएण । जिच्चइ हु इत्थ **माणसवेगो** ।

एदम्मि देसकाले सण्णद्ध-कवया णिय [६१]सेणुया(?) गहित-विविध-पहरणावरणाइं णहंगणे तत्थेव तेण आवाहिता परम-रुसिता संपत्ता **अंगारक-णीलकंठ-हेफया** गगणतलं च वहिवहेहिं अच्छादयंतो(?ता), आगारियं च तेण णहतल-गदेहिं- रायं **माणसवेग** ! किमिच्छीयते पहणह एदं इदाणिमिच्छीयति(?) त्ति । ताव य ममं पि पक्खेण **बलसीहा**वहितो सबलवाहणो पत्तो तत्थ अंतद्धिद-बलो राया **पिंगलगंधारो** ।

एदम्मि समए मम वधणुज्जतमती सबलो समुद्धाइतो मया ववहार-परायितो मिलितो तेसिं **माणसवेगो** । ततो अहमवि अविसादी **पभावदि**-दिन्न-पन्नत्तिविज्जो वेउव्विद-बलो जुद्धकंखिओ सन्नहिदुं पयत्तो । आढत्तो य मे पक्खेण राया **[बल]सीहो** सभडवंदो । ततो हं सह **बलसीहेण** पुरीवो(?पुरदो)य उवरोध-कारणं परिहरंतो बाहिं विणिग्गदो हं णहंगणे जुद्ध-सज्जो, णवरं पडित-सव्व-बल-माहप्प-सिरी-समुदयाभरण-सोभा गुण-रूव-धारिणो गहिद-पहरणावरणा सन्नद्ध-तुरित-पयलित-हय-गय-रह-जोध-पवर-पहकर-**खुभित-लुलित-कणग-रूप्प-महि(?) रयण-कंस-तारयाभरण-पहकर-णिवह-दिप्पंत-सिमिसिमिसिमिंत-कंत-करणुज्जलेहिं बलनिवहेहिं** सजल-जलधर-णिणद-[६२]संपात-सरिसेहिं च्छादयंता णहंगणयं अभित्थुणंता य मणं(?मं) अभिणंदंता चेय जाया(?य)चिंता य तक्खण समागदा णं **पिंगलगंधार** सहिदा अल्लीणा मम सव्वे विज्जाहर-राइणो वयंसा य, तं जहा— **असणिवेगो, सीहयसो, वराहगीवो य सीहदाढो, विज्जुवेगो, दधिमुहो, चंडवेगो, पवणजवो, हेमदाढो, पभंजणो, देवरिसभो, दमणो, दमयंतो, अनिलयसो, तेयसारो, मातंगदेवो, ससिकंतो, मयूरसेणो, गोरिमंतो, वायुवेगो, सत्तुसेणो, गोरिसेणो, मित्तसत्तू, विहसितसेणो,**

निसढो, रयणंगओ, वासवो, वज्जपाणी, महिंदविक्कमो, चित्तगदी, चित्तरहो, हरिवेगो, हरिवाहणो, चंदाभो, चंदयसो, गंधारो, बलसीहो, अंसुमंतो, णंदो, उवणंदो, भागेरहिदत्तो, भगीरहिजसो, पियदत्तो, सागरदेवो, संमददेवो, बंधु, सुबंधू य । एदे च अण्णे य दसि(?) मित्ता मित्तमित्ता य विज्जाहर-राय-रिसयो य **भरद्दाय**-सव्व(?च्च)-**पण्णत्तिकोसिया**दयो मम रक्खा-णिमित्तं समुवागदा सव्वे वि पवर-विज्जा-विउव्वित-विपुल-बला विणएण समल्लीणा मे ।

ततो महता घण-घोर-पहद-भेदवधूर(?)-रवाइं अभिमुहीभूदाइं विज्जाधर-बलाइं । ततो मया णिवारिता णियय-पक्खिया विज्जाहरराया णो रिसयो य-भो भो ! सुणह, किमेदेसं अणाहाणं उवरिं सव्वबलाइं लग्गंति ? ण जुत्तमिह महं सह जुद्धेण जुद्धिउं । तं तुब्भे पेच्छगा होह । कहं वि किच्छाहि मया णिवारिता । अहं पुण सवयंसो अभिपडिदो सत्तु-खंधावारेसु । एदम्मि देस-काले ममं रिव(?वु)-णिग्गहाय अति [५३]वद्धमाणो(?णे) सुमरित-णियय-दुक्खकारणा सुमरित-पदिण्णा य ममं भणति **सोमसिरी**—अज्जपुत्त ! तह णं धारेज्जाह जहा हं अज्ज रण(?णे) [५४]सरणिहतस्स **माणसवेगस्स** रुधिरं चक्खामि ।

मया भणिदं—पिए ! एवं काहामि, धिरिं लभध ।

ताहे **अहं सण्णद्ध-बद्ध-कवयो** गहिद-पवर-पहरणो अज्जतासि(?) भुयंगमो पण्णत्ति-विउल-विउव्वित-विविध-बल-[५५]णिवहो खुभित-हय-गय-रह-वाहणह संघट्ट-घणघोर-हणहणासु(?मु)क्कस्सणा-आलग्गो सत्तुसेण्णेसु वणदवो इव वेणुवणसंडेसु । असहंता य ते मम उवक्कडं सप्पवादं मयपति-हुंकार-विसंथुलाइ व **मया भग्ग चत्तारि वि सबलवाहणा मम रिवुणो वेगेण पलाइदुं पयत्ता तिव्व-भय-भिन्न-हिदय(?या) मया य जाणंतेण खत्तधम्मं भगोंविणा(?) महोदूण(?) सोमसिरि-पदिण्णा-पूरणत्थे अणुबद्धो पुणो पुणो आगारंतेण माणसवेगो दुतं पलायमाणो, अभिधाविदूण गहिदो केसेसु मया छड्डावित-खग्गो य णत्थ-गेहिओ इव गोणो कड्ढमाणेण पेच्छंताण मम परक्कम-विंभिदाणं विज्जाहर-णिवहाणं उवणीदो सोमसिरि-सगासं । तीय मया सकम्मग्गहितो चेव णिहदो से धरणितले वाम-हत्थेण य वालगहिदस्स दाहिण-हत्थे य मे उज्जतो अतसि-कुसुम-णह-सामलो खग्गो य, भणिदा य मे सोमसिरि** एस ते तुह पुरतो सिरं पाडेमि, पिवह से रुहिरं ति ।

एदम्मि देस-काले सहसा णभंगणातो **माणसवेग**-जणणी अंतेउराणि य मो सव्वाओ विहारवं(?) करिंतीओ पति-भिक्खं पुत्तभिक्खं ति जायमाणीओ पडिदाओ समयं मम पादेसु । ततो मया तासिं अणुकंपंतेणं ण छिण्णं से सिरं किंतु **सोमसिरि**-पतिण्णा-पुरणत्थे मया इसि वत्थदो(?) स-खग्गो(?ग्गे)ण लंबिओ आगतं से रुहिर पभूतं जो वणंतं च मया सण्णिदाए **सोमसिरीए** दाहिण-पदेसिणीए आलिहिऊण कदं जीह गोणिट्ठचंवीय(?) भणति कदुगं से रुहिरं अण्णं पिवाहि मुत्त ति य एसो इदाणिं देवीए वयणेणं ति ।

ततो मया केस-गहितो कड्ढिऊण पाडिदो **सोमसिरि**-पादेसु परव्वसो य पच्छा पुण मया हत्थेण हत्थे घेत्तूण हत्थाहत्थिं पणामिदो देवीए **अंगारमतीए** अंतेउराण य । ताहि य [५६]खडतार्हि(?) पडिच्छिदो, भणिदं च मे— देवि! एदेण मे बहुसो पाणेसु वि मम पहरिदं, तह वि तुह बहुमाणेण पभवंतेण वि मया चिरं एस कोमलोवाती(?) विव उवेक्खिदो तं एस इदाणि कमागदो वि मया तुब्भ वयणाण **वेगवदी**ए सबहुमाणेण मुक्को मे । वारेध जहा पुणो मरिसं ण करेति।

ततो सो तार्हि खिज्जिज्जमाण लज्जंतो पडिदो मम पादेसु खमावेउं पयत्तो, मया य सपणयं पि बहुं [५७]अंबाडितो सुबहुं तो मे रुअमाणो पच्छा सव्व-विज्जाहर-राय-मंडल-सहितो पुव्वदेस-पुव्वसासितो(?) भणिता य दो मम य विज्जाधर-राईसु को ते अण्णो एरिसो सामि संबंधी होहिति । अवि य,

किं ण याणसि एदं सव्व-देवत-परिग्गहिदं ।

अणाद-परमत्थावरिदं साधित-विज्जं पि असिद्ध-विज्जं ॥

अविज्जं पि विज्जाहर-माण-भंजयं देवाण वि बुद्धि ।

विसविस्सरूविं(?) विस्स-चरिदं विस्सकम्मं च ॥

तं अलं मण्णुणा, एदं च एरिसो मे संबंधी होहिति । सव्वकालं भत्तिपरो सुस्सूसाहितो ते दिक्खालिया अक्कंडिता रज्जसिरी होहिति ।

ततो तेसु एवं भणिदो ममं पासादेणं पडिदो **सोमसिरीए** पादेसु । तीय वि से कतो उवरिं हत्थो ।

ततो पच्छा सव्व-विज्जाधर-राय-मंडल-समक्खं बलसहितो अहं तेण

अब्भुत्थेऊणं सबहुमाणं णीदो य पुरं, कतग्घपूयो य अहं तेण पवेसितो णियय-भवणं, दिस्सा(?ण्णा) य सव्वे वि विज्जाहर-रायाणं पवरा तेण आवास-पासादा परियारियणो य, पत्तेयं च कदग्घपूया सक्कारा । प(?पा)डिदो मया **माणसवेगो देवरिसभस्स** पादेसु, उवसंत-वेराणं च ताव(?ण) परा पीती जाता, सुवण्णं व वरेउं मया सयाइं सयाइं रज्जाइं विसज्जिता सव्वे विज्जाहर रायाणो वयंसा य । अहं उप्पण्ण पणय-ए(?पी)ती-पणयाणुराग-[५८]वीसंभो य तत्थेव धरिदो हं **माणसवेगेणं**, भणदि य— अहो ! अहं मंदपुण्णो अलच्छिभायणो य जेण मया एवच्चिरं देवदा णाराधिता । इदाणिं अवस्स आराधेमि त्ति ।

सस(?व्वे)-वि संवव(?) ण्हाण-समालभण-पाण-भोयण-सयण-वत्थालंकार-गीत-वाइत-णाडय-गंधव्व-कव्व-णट्टाणुवत्तीसु आणाविदा य मया तत्थोय(?तत्थेव) **वेगवती**, कतो य **माणसवेगेण** महंतो आणंदो, पूइता तेण संतेउरेण भगिणी सज्जिणीएणं(?) णिवेदितं च मे तेण पितिप्पदे य रज्जंस्सह(?)। तीए वि सयण-समागमे जाता परा पीती । भणदि य **वेगेणवदी(?वेगवदी)**-ण दु कता पि एदं मया सुविणो(?णे) वि चिंतितं जहा मम भादुणो अज्जपुत्तस्स कदाइ पीती भविस्सति । अहो मे एस अपत्तियंतीए मणोरहो पुण्णो त्ति ।

तदो हं तासु तिसु वि पियासु **सोमसिरि-वेगवदि-पभावतीसु** सहितो अभिरमंतो एगंत-रति-परायणो **माणसवेगेण** सव्वादरेण सेविज्जमाणो गदं पि कालं ण याणामि ।

अण्णता ममं **सोमसिरी** पणता विण्णवेदि— अज्जपुत्त ! पियरं उक्कंठिदा हं अम्हा(?म्मा)-पिऊणं जाणह ममं चिरकाल-विउत्तं ति । तं जति पसादो अत्थि ततो णेह मे **महापुरं** ति । ततो मया भणिदा— पिए ! एस ते अज्जेव णयामि । विदिललह(? धिदिं लभह) ।

ताहे मया संतेऊण बहुसु पिएसु अणुकमाणेसु पडिदिण्णा पण्णत्ति विज्जा सणगरं परिविसज्जिता य मे धेसु(?)प्पादणा-हेदुं **बालचंडा(?दा)** सगासं चेव **वेगवती** । ततो सुंदरे तिहि-करणे अहं सह पियाए **सोमसिरीए माणसवेग**-विउव्विदेण [५९][?वि]ऊरित-सित-वत्त-कंत-वियर्यंतीए विरायमाणं विविध-रयण-मणि-कणग-वत्थ-विधि-विधाण-गोसीसचंदणो(?णा)भरण-सुरलोइय-कुसुम-परिपूरिदेणं **सोमसिरि**-गुरुजणस्स विविधा(?ध)-

विवित्तपाहुड-भरोविदेणं(?) महामाणसवेग सहितो महय विज्जाहर-जण-जय-सद्दाभिणंदिदो गदो मगलतलणं(?) **महापुरं** णगरं । तत्थ जणस्स महता अच्छेरयभूतेण यंणवणेणं(?) अवइण्णो रायभवणे । मम य वधू-सहिदस्स समागमे परम-तुट्ठेण रण्णा आणत्ताइं पुरे अकालकोमुदी, आणत्ताओ य सिद्धायतणेसु पूयाओ । पूइतो य रण्णा संतेउरेण साधुवग्गो, तालाणि य णंदित्तराइणं(?) वित्तो आणंदो, अकरभर विज्जिताओ य कका(?या)ओ पयाओ, पुट्ठो य सव्व-सत्ताणं अणोघातो, णेव्वुत्तीय उवणीदा य रण्णा पाहुड विधारणा वि य पूयितो **माणसवेगो**, मया विसज्जितो गतो स-णगरं । अहमवि रण्णा दूइज्जमाणो पिया-सहितो **महापुरे** सुहं अभिर[मा]मि इति ॥छ॥

॥ इति सिरि-धम्मेसेण-गणि-महत्तर-कयाए वसुदेवहिंडीए मज्झिम-[1]खंडं समत्तं ॥ सेसं पुराए हिंडीए दट्ठव्वं ।

णमो भावसिद्धाणं ॥

णमो वसुदेवताए ॥

★★★★★

पाठान्तर

१. संछावण गाहणा पीडितो पा. । २. छंभण पु. । ३. णदा पु. । ४. किह ति क्खणा गदा सु पा. । ५. मुप देवीए पु. । ६. सावगो पा. । ७. सुत्त पसुत्त सीकारंडय- पा. । ८. विरं विर० पा. । ९. हुक्कट्ठिएण सुरति सुद्धालु० पु. । १०. -भग्गा पु. । ११. ०सहिदा पु. । १२. पज्झत्तित पु. । १३. तिकुरा पा. । १४. कुरियाणि पा. । १५. मावत्तीए पा. । १६. इह पु. । १७. व्वानिहुयं पु. । १८. पव्वयत्थेसु ण मारुदो पु. । १९. रुद्दो पा.। २०. जिर्णितेण पु. । २१. संतोसे हा एस पु. । २२. वडंतं पु. । २३. गयणातोणाइं पु.। २४. एसो पु. । २५. परिभवंतो पु. । २६. भोकणयि पु. । २७. काममारंद्दे मो पु. । २८. मुणामि पु. । २९. एसो तुह दंतं च्चिय पु. । ३०. सता पासिदस्स पा. । ३१. रिणस्स पा. । ३२. इदं पा. । ३३. तउदितेगउवसमे पा. । ३४. ववहारकरणुक्कन्नो पा. । ३५. मथ ववदेसं पु. । ३६. अवविदो पु. । ३७. हसिहं पु. । ३८. जदा एसो पा. । ३९. संते णे वायइ पु. । ४०. वाइ पा. । ४१. पुच्छामेव पु. । ४२. भाणिदं पु. । ४३. कुट्टण गदो पु. । ४४. वडिरिसगो पु. । ४५. दिस्सेस्स पु. । ४६. पिच्छिदा पा., पेच्छिदा पु. । ४७. साधेज्जी० पु. । ४८. तु मं वि सज्जा साधितो मि जो अ वं पा. । ४९. सुदो पा. । ५०. सवलोगाभरुयाइं पा. । ५१. सण्णु या गाहित- पा. । ५२. संघात पा. । ५३. वदमाणे पु. । ५४. सिर पा. । ५५. निवद्धो पु. । ५६. खडितार्हि पा. । ५७. अच्छडितो पु. । ५८. वीसंभेण पा. । ५९. ऊसितसितवत्त० पा. । ६०. कंडं पु. ।

३५. वसुदेवहिंडी-संगहणी

वसुदेव-भारियाओ, तं जहा—

१. जायखेडे **सामस्स उवज्झायस्स अस्सगाए** भारियाए सुता **सामा** १

२. तत्थेव **जितसत्तुस्स** राइणो **मंजरीए** देवीए अत्तिया **वियया** २

३. **किण्णरगीद(?दे)** विज्जाहर-णगराधिवस्स **असणिवेग**-राइणो **सुप्पभाए** देवीए दुहिदा **सामली** ३

४. **चंपाए सिवमंदर**-णगराधिवस्स **अस्सिदगदस्स** विज्जाधर-राइणो **मणोरमा** देवीए अत्तिया **गव्व(गंधव्व)दत्ता**

५. तत्थेव **चंपाए सुग्गीवस्स** उवज्झायस्स **विण्हुलाए** भारियाए अत्तिया **सा(सो)मदत्ता**

६. तत्थेव **सुग्गीवस्स** उवज्झायस्स **भंगिलाए** भारियाए अत्तिया **वियसेणा**

७. **रहणेउरचक्कवालपुरे** विज्जाहर-राइणो **सीहदाढस्स अंजणा** (**नीलंजणा**)य देवीए अत्तिया [**अ**]**णीलयसा**

८. **गिरितडिग्गामे सोमदेवस्स खंदिलाए** भारियाए अत्तिया **सोमसिरी**

९. **अयलग्गामे धणमित्तस्स** सत्थवाहस्स **सिरीए** भारियाए अत्तिआ **मित्तसिरी**

१०. तत्थेव **सोमस्स** माहणस्स **णंदिलाए** भारियाए अत्तिया **धणसिरी**

११. **देवसायपुरणगरे कविलस्स** राइणो **अमिलाए** देवीए अत्तिया **कविला**

१२. **सालगुह** सण्णिवेसे **अभग्गसेणस्स** राइणो **सिरिमदीए** अत्तिया **पउमा**

१३. **वियपुरे मेहसेण** राइणो **दाणीए** देवीए अत्तिया **आससेसा**

१४. **भद्दिलपुरे पुंडस्स** राइणो **सुयसाए** देवीए अत्तिया **पुंडा**

१५. **इलावद्धणे** णगरे **मणोरहस्स** सत्थवाहस्स **पउमाए** भारियाए अत्तिया **रत्तवदी**

१६. **महापुरे** णगरे **सोमचंद** राइणो **सोमचंदाए** देवीए अत्तिया **सोमसिरी**

१७. **सुवण्णाभे** विज्जाहर-णगरे **चित्तवगस्स** विज्जाहर-राइणो **अंगारवदीए** देवीए अत्तिया **वेगवदी**

१८. **अरिंजयपुरे विज्जुवेगस्स** विज्जाहर-राइणो **विज्जुजिब्भाए** देवीए अत्तिया **मदणवेगा**

१९. **सावत्थीए कामदेवस्स** सेट्ठिणो **हरिणमदीए** भारियाए दुहिदा **बंधुमती**

२०. **मच्छे एणियपुत्तस्स** रण्णो **सुभगाए** देवीए दुहिता **हेमयसा**

२१. तत्थेव [?.....]

अत्तिया **पियंगुसुंदरी**

२२. [?.....] **सुवण्णमंजरीए** देवीए [?.....]

२३. **पवणजवस्स** विज्जाहर राइणो **सम्मदाए** देवीए दुहिदा **पभावती**

२४. **कणगणाभे** णगरे **हेमयसस्स** विज्जाहर-राइणो **सुरभीए** देवीए दुहिता **हेमयसा**

२५-३१ तत्थेव णगरे **भरद्दायस्स** विज्जाहर राइणो सत्तण्ह देवीणं

सत्त दुहिताओ य सुहिताओ य—

सुयसाए देवीए दुहिया **सुवेगा**

सुंदरी देवीए दुहिया **सुलोगसुंदरी**

सुभाए देवीए अत्तिया **रंभा**

केसरीए देवीए दुहिता **केतुमती**

हरिसदाए देवीए दुहिता **सोतामणी**

विज्जुप्पभाए देवीए दुहिता **विज्जुमती**

मालिणीए देवीए दुहिता **हेममालिणी**

३२. **चिलायवद्धणे** णगरे **मेहरथस्स** विज्जाधर राइणो **अंसुमालिणीए** देवीए अत्तिया **मेहमाला**

३३-३७. तत्थेव णगरे **जलदमणस्स** विज्जाधर राइणो पंचण्हं देवीणं पंच दुहिताओ, तं जहा—

रोहिणीए	**अरुणवदी**
सुलसाए	**अरुणप्पभा**
सामाए	**अरुणवेगा**
गोरीए	**सुप्पभा**
सूरणीए	**सूरकंता**

पंच वि ताए उउणंदण-वणा लद्धाओ ।

३८-५४ **सागेते** णगरे **अमोहसेणस्स** राइणो सत्तरसण्हं देवीणं सत्तरस कण्णगाओ, तं जहा—

जयाए	अत्तिया	**वसुमदी**
जयवद्धणाए	अत्तिया	**वासवदत्ता**
पुंडरीइणीए	"	**सुणेत्ता**
सुप्पभाए	"	**सुंदरी**
पभावदीए	"	**सुजसा**
कुमुदाए	"	**सेसवदी**
रावणदत्ताए	"	**रतिसेणा**
पउमाए	"	**सीलमदी**
वसुसेणाए	"	**कुलवद्धणा**
वसुंधराए	"	**पिअदंसणा**
भागेरथीए	"	**लच्छिमदी**
अमलाए	"	**विमला**
भासाए	"	**विमलसेणा**
हंसीए	"	**गुणवदी**
चारुमदीए	"	**सिरी**

गुणदत्ताए " **सच्चसिरी**

ललिताए " **गुणसिरी**

५५. **ललिदाए** णगरीए **पभंजणस्स** विज्जाहर राइणो **सुरंगमाए** देवीए दुहिदा **विरया**

५६. तत्थेव **वायुपहस्स** विज्जाहर-राइणो अणिलाए देवीए अत्तिया **अणिलयसा**

५७. तस्सेव रण्णो **ललिताए** देवीए अत्तिया **ललितवेगा**

५८. **मातंगपुर** पत्थिवस्स **मातंगदेवस्स** विज्जाहर-राइणो **वेरुअंजलाए** देवीए दुहिता **वेरुलियामाला**

५९. **वेसालीए** णगरीए **मंडियस्स** रण्णो **वेइंदियाए** देवीए दुहिता **इंदसेणा**

६०. तस्सेव रण्णो **सबलाए** देवीए दुहिता **लक्खणा**

६१. **कोसलपुरीए** णगरीए **सुकोसलस्स** रण्णो अहयाए देवीए अत्तिया **सुकोसला**

६२. **उववियोसे** णगरे **चित्तगदिस्स** विज्जाहर राइणो **चित्तवेगाए** अत्तिया **चित्तलेहा**

६३. **अमरणंदणे** णगरे **हरिवेगस्स** विज्जाहर-रण्णो **उसुविगाए** देवीए अत्तिया **हरिकंता**

६४. **पेढपुरे** णगरे **हरिचंदस्स** रण्णो पुहवीए अत्तिया **कणगवती**

६५. **गोमणि[?व]द्धणे** णगरे **महासंघस्स** रण्णो **पउमाए** देवीए दुहिता **सागरदत्ता**

६६. **णागपुरे सुहुमस्स** रण्णो **णागयसाए** देवीए अत्तिया **मलयसेणा**

६७. **मंदाकिणीए** देवीए अत्तिया **अच्छरा**

६८. **कुसुमपुरे** णगरे **महासिहस्स** विज्जाहर राइणो **चंदवदी** देवीए सुता **चंदलेहा**

६९. **दिव्वोसहीपुरे ससिकंतस्स** विज्जाधर-राइणो **कुमुदाए** देवीए सुता **ससिप्पभा**

७०. **मयूरपुरे** णगरे **कोसियस्स** विज्जाहर-राइणो **लीलाए** देवीए धूता **(चंदवदी ?)**

७१. **कणगपुरे** तस्स विज्जाधर राइणो **सोणमदीए** देवीए सुभा(ता) **गोरिदत्ता**

७२. [?.....] **पभंजणवेगा**

७३. **चक्कणाभे** णगरे **वायुसुहस्स** विज्जाहर-राइणो **विज्जमदीए** देवीए दुहिता एव **माणसवेगा**

७४. **कंचणकूडपुरे णागंतुसेणस्स** विज्जाहर-राइणो **चंदिमाए** देवीए अत्तिया **चंदावली**

७५. **असोगपुरे वित्तसत्तुस्स** विज्जाधर-राइणो **रयणीए** देवीए सुता **संस्ता(?झा)वली**

७६. **सगलपुरे विहसितसेणस्स** विज्जाहर-राइणो **असितयसाए** देवीए अत्तिया **चंदवदी**

७७. **मेहपुरे णिसढस्स** विज्जाधर-राइणो **कमलिणीए** देवीए अत्तिया **कमलमाला**

७८-८२ **चिलातवद्धणे** णगरे **मेहलवस्स** विज्जाहर-राइणो **मंदराए** देवीए अत्तियाओ पंच-कण्णाओ तं जहा— **मंदरदेवा, मंदरसेणा, मंदरदत्ता, मंदरगुत्ता, मंदरयसा**

८३. **अरतिलए** विज्जाहर-णगरे **दणंगस्स** विज्जाधर-रण्णो **मीलकाए** देवीए अत्तिया **उव्वसी**

८४. **वियथावत्तपुरे** णगरे **वासवस्स** विज्जाहर-रण्णो **अइराए** देवीए अत्तिया **अलंबुसा**

८५. तस्सेव रण्णो **गंधमदीए** देवीए दुहिता **मंदरपदी**

८६. तत्थेव णगरे **वज्जपाणिस्स** विज्जाहर-रण्णो **सुंदराए** देवीए सुता **रंभा**

८७. तस्सेव राइणो **सुंदरादेवीए** अत्तिया **तिलोत्तिमा**

८८. **वाणारसीए** नगरीए **वेसमणस्स** सेट्ठिणो **वरवत्तीए** भारियाए सुता **मयूरसेणा**

८९. **काकंदीए भाणुचंडस्स** राइणो **चंडाए** देवीए दुहिता **रयणवई**

९०. **वच्छगुम्म**-नगरे **अलयस्स** रण्णो **रण्णा(रयणा)वलीए** दुहिता **मुत्तावली**

९१. **दिवतिलय**-सामिणो **तिसिहरस्स** विज्जाहर रण्णो **सुप्पतिणिहीए** देवीए अत्तिया **विमलप्पभा**

९२. **वसंतपुरे** णगरे **कणगरह**-रण्णो **सयताए** देवीए सुता **जितसत्तइणो** भगिणी **केदुमदी**

९३. **पुक्कलावली**(?ती)ए णगरीए **पिंगलगंधारस्स** विज्जाहर राइणो **असितप्पभाए** देवीए धूता बितिया **पभावती**

९४. **पोदणपुरे** णगरे **सोमस्स** पुरोहिदस्स **कुंडलाए** भारियाए अत्तिया **सव्वरक्खिता**

९५. तत्थेव णगरे **वियायस्स** रण्णो **भद्दाए** भारियाए दुहिता **भद्दमित्ता** ।

९६. **कोइल्लपुरे** णगरे **पउमरहस्स** रण्णो **सुरभीए** देवीए अत्तिया **पउमावई**

९७. **विसालाए** पल्लीए **असहप्पहारिस्स** रण्णो **कमलाए** देवीए सुता **पउमसिरी**

९८. **कुंचपुरे** णगरे **सुमित्तस्स** परिव्वायगस्स **सिरीए** गणियाए अत्तिया **ललिदसिरी**

९९. **रिट्ठपुरे** णगरे **सहिरस्स** रण्णो **सुमित्ताए** देवीए **रोहिणी**

१००. **गगणवल्लभे** णगरे **चंदाभस्स** विज्जाहर-राइणो **मीणकेसाए** देवीए अत्तिया **बालचंदा**

इति **वसुदेवहिंडीए** संगहणि पयं णाम संपयं सुणध, तं जहा—

सामा, विययया, सामली, गंधव्वदत्ता, सोमदत्ता, विययसेणा, अणीलयसा, सोमसिरी, मित्तसिरी, धणसिरी, कविला, पउमा, आससेणा, पुंडा, रत्तवदी, सोमसिरी, वेगवती, मदणवेगा, बंधुमदी, पियंगुसुंदरी, पभावती, हेमयसा, सुवेगा, लोगसुंदरी, रंभा, केदुमदी, सोदामणी, विज्जुप्पभा, हेममालिणी, मेहमाला, अस्सगमदी, अस्सगप्पभा, अस्सगवेगा, सुप्पभा, सूरकंता, वसुमदी, वासवदत्ता, सुणेत्ता, सुंदरी, सुयसा, सोगवदी, रयणसेणा, सीलमदी, कुलव्व(वद्ध)णा, सुदंसणा, पियदंसणा, लच्छिमदी,

विमला, विमलसेणा, गुणवदी, सिरी, सव्वसिरी, वेलया, अणिलयसा, वेरुलियमाला, इंदसेणा, लक्खणा, सुकोसला, ललितवेगा, चित्तलेहा, हरिकंता, कणगवती, सागरदत्ता, मलयसेणा, अवंतिवद्धणा, तारावदी, अच्छरा, चंदलेहा, ससिप्पभा, लीलावई, गोरिदत्ता, पभंजणवेगा, माणसवेगा, चंदावली, संझावली, चंदवदी, कमलमाला मंदरदेवा, मंदरसेणा, मंदरदत्ता, मंदरगुत्ता, मंदरयसा, उव्वसी, अलंबुसा, मंदारवदी, रंभा, तिलोत्तिमा, मयूरसेणा, रयणवदी, मुत्तावली, विमलसेणा, केतुमती, पभावती, सव्वरक्खिता, भद्दमित्ता, पउमावदी, पउमसिरी, ललितसिरी, रोहिणी, बालचंदा ॥छ॥

एवं वसुदेव-भारियाए सतं समत्तं । समत्ता य वसुदेवहिंडी-संगहणी।

समत्तं च वसुदेवहिंडीए मज्झिम-खंडं ॥

पा. प्रतौ - श्लोकाग्रेण गण्यमानं ससंग्रहणीक एकोन विंशति सहस्राणि ग्रंथाग्रं ॥१९०००॥